श्रीगणेशाय नमः ।

प्रकाशक नवलकिशोर-प्रेस, हज़रतगंज, लखनऊ

सत्रहवां बार]

सन् १९४८ ई०

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासकृत रामायण का
विज्ञापनपत्र ॥

अहो ग्राहकगणो ! लीजिये ! लीजिये !! विलम्ब न कीजिये !!!

विदित हो कि इस असार संसार में कराल कलिकाल के अवगुणों से ग्रसित जनों के लिये श्रीगोस्वामि तुलसीदासकृत रामायण ही परम आधार है जिसकी पुस्तकें अनेक प्रकार से इस समय पर्यन्त तक अनेक बार इस यन्त्रालय में मुद्रित हुई हैं जिनको कि विद्यागुणग्राही व रामभक्त्यनुरागी जनों ने अत्यन्त आदर से ग्रहण कर अवलोकन किया अतएव मैंने अब की बार उन्हीं सज्जनों, महज्जनों व विद्यारसामृतस्पर्शियों के विशेषानुराग से अवलोकन करने के लिये नवीन युक्ति से यह रामायण तैयार कराई है जिस के प्रत्येक काण्ड के आदि में एक चित्र उस काण्ड की संपूर्ण कथा का संक्षेप रूप से नियुक्त किया गया है और उत्तरकाण्ड के पश्चात् लवकुशकाण्ड जिसमें रामाश्वमेधादि कथाओं का वर्णन है संयुक्त किया गया है और प्रत्येक पत्रों के नीचे कठिन शब्दों के नोट भी लगाये गये हैं जिससे शब्दार्थों के समझने में किसी प्रकार का सन्देह नहीं रहता है और आदि में श्रीगोस्वामि तुलसी-दासजी का जीवनचरित्र तथा संकटमोचन व रामबाराखड़ी और बजरंगबाण व रामायण माहात्म्य तथा अन्त में सप्तदेवस्तुति, श्रीरामचन्द्रजी व श्रीजानकी-जी के चतुर्दशवर्ष वनवास का तिथिपत्र आदि संयुक्त हैं। यह अति अद्वितीय व अनुपम है ऐसी विचित्र रचनाओं से संयुक्त पुस्तक आज तक किसी यन्त्रा-लय में न छपी होगी इस कारण इसकी अधिक प्रशंसा करना ही क्या है ? केवल दर्शन ही से ज्ञात हो जायगा। आशा है कि रामरसरसिक पुरुष आदर से ग्रहण कर अवलोकन करेंगे और मुझ शुभाभिलाषी को आशीर्वाद देंगे— अग्रे किमधिकं बहुज्ञेष्विति शिवम् ॥

आपका कृपाकांक्षी—

प्रयागनारायण भार्गव,

मालिक नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ.

बालकाण्ड

अयोध्याकाण्ड

उत्तरकाण्ड

लवकुशकाण्ड

श्रीमद्गोस्वामि

तुलसीदासजीका जीवनचरित्र ॥

गोसाईं तुलसीदासजी सरवरिया ब्राह्मण थे व बांदाप्रदेशान्तर्गत राजापुरके रहनेवाले थे इनके गुरुका नाम नृसिंहदास था इनका जन्म शिवसिंहसरोजकार ने संवत् १५८३ का लिखा है और किसी २ का मत है कि संवत् १५८९ में इनका जन्म हुआ व संवत् १६८० में मृतक हुये गोसाईं तुलसीदासजी को भक्तमालके कर्त्ताने बाल्मीकिजी का अवतार लिखा है सो इसमें कुछ संदेह नहीं कि उनकी वाणी में ऐसाही प्रभाव दिखाई पड़ता है कि हृदयमें चुभजाता है और रामचरित्ररूपी अमृत की धारा को इस कलियुगमें प्रवाहमान कियाहै व सबको सुलभ है और निम्नलिखित ग्रंथ गोसाईंजी के बनाये हैं कि जो विख्यात हैं १ रामायण (रामचरित मानस) २ विनयपत्रिका ३ रामायण गीतावली ४ रामायण कवितावली ५ दोहावली ६ रामशलाका ७ हनुमान्बाहुक ८ जानकीमङ्गल ९ पार्व्वतीमङ्गल १० कड़का रामायण ११ बरवा रामायण १२ रोला रामायण १३ झूलना रामायण १४ छन्दावली रामायण १५ छप्पै रामायण १६ कुण्डलिया रामायण १७ वैराग्यसंदीपिनी १८ तुलसीसतसई १९ रामाज्ञा २० रामलला नहछू २१ कृष्णगीतावली २२ संकटमोचनादि जोकि प्रेमियों व उपासकों को सब जगह मिलसक्ते हैं और भक्तों के मुखसे निश्चय होचुका है कि जो कोई नियमकरके नित्य किसी रामायण का पाठ करता है निश्चय उसकी श्रीरघुनन्दनस्वामी के चरणों में प्रीति होजाती है व कामना करके कांड का पाठकरै तो सिद्ध होजाताहै व रामशलाका में जो प्रश्न करै तो ऐसे दोहे निकलैं कि जो

होनेवाली बात हो सो ज्ञात होजाय और तुलसीकृतरामायण को काशी जी के सब पण्डितों ने सभा करके सम्पूर्ण पढ़ा आदि अन्त सब वेदशास्त्र पुराण गीता के अनुकूल देखकर सबने अङ्गीकार लिखदिया किसी २ ने द्वेष करके बाद ठाना तो विश्वेश्वरनाथजी के अङ्गीकार करने से सबको अङ्गीकृत हुआ गोसाईंतुलसीदासजी अपनी स्त्री से विशेष स्नेह रखते थे एक दिन स्त्री अपने मैके में मा बापसे मिलने को गई तो गोसाईंजीको इतना वियोग हुआ कि सहन न होसका और ससुराल में पहुँचे इनको देख स्त्री को लज्जा आई सो क्रोधकरके गोसाईंजी से बोली कि यह मेरा शरीर अस्थि मांसका अनित्य है श्रीरघुनन्दनस्वामी नित्य निर्विकार पूर्ण ब्रह्म हैं तिनसों क्यों नहीं स्नेह करते कि दोनों लोक में लाभहो इतना कहने से गोसाईंजी पण्डित और ज्ञानवान् तो थेही पूर्वपुण्य के पुञ्ज उदयहुये ज्ञान वैराग्य की आँखें खुलगईं व वहां से चल काशीजी में आकर श्रीरघुनन्दनस्वामी के भजन कीर्त्तन में लगे गोसाईंजी शौचादि को वन में जाया करते थे और शौचशेष पानी को एक बेरी के वृक्षपर नित्य डालदिया करते थे उसपर एक भूत रहताथा उस पानी से उसकी तृषा मिटती थी एकदिन प्रसन्न होकर बोला कि तुमको कामना हो सो कहो गोसाईंजी ने कहा कि श्रीरघुनन्दनस्वामी का दर्शन करादे भूतने कहा कि यह सामर्थ्य मेरे में नहीं पर हनुमान्‌जी का पता बतलाताहूं कि कर्णघंटा पर रामायण की कथा होती है वहां हनुमान्‌जी सबसे पहिले ऐसे कुरूप से कि जिसको देखते डरलगै और घृणा हो आते हैं व सबसे पीछे जाते हैं इस पहिचान से गोसाईंजी हनुमान्‌जी को ढूंढ़ते चले जब उसी रूप में देखा तो चरण पकड़ लिये और छोड़े नहीं तब हनुमान्‌जी ने दर्शन दिया और कहा जो चाहना हो सो कहो गोसाईंजी ने विनय किया कि श्रीरघुनन्दनस्वामी का दर्शन चाहताहूँ तब हनुमान्‌जी ने कहा कि चित्रकूट में दर्शन होगा गोसाईंजी अति अभिलाष से चित्रकूट में आये एक दिन इस स्वरूप से दर्शन हुआ कि श्रीरघुनन्दन स्वामी श्यामसुन्दर राजकुमार के स्वरूप से वसन भूषण बहुमूल्य के पहिने धनुषबाण लिये घोड़ेपर सवार और लक्ष्मणजी गौरमूर्त्ति वैसेही सजावटके सहित साथ एकहरिण के पीछे घोड़ाडाले हुये जाते हैं यद्यपि

स्वामीकी मूर्त्ति मन और आंखों में समाय गई पर यह न जाना कि ये स्वामी हैं पीछे हनुमान्‌जी आये और गोसाईंजी से पूछा कि दर्शन किये गोसाईंजी ने विनय किया कि दो राजकुमार देखे हैं हनुमान्‌जी बोले कि वही राम लक्ष्मण थे गोसाईंजी उसी रूप का ध्यान करते हुये मुख्य मनोरथको प्राप्तहुये, एक हत्यारा पहिले रामका नाम टेरकर कहा करता कि हत्यारेको भिक्षादेव गोसाईंजी को आश्चर्य हुआ कि यह कैसा पुरुष है कि पहिले रामनाम लेताहै फिर अपने आप को हत्यारा कहता है उसको बुलाया और प्रेमशुद्ध जानकर अपने साथ भगवत् प्रसाद जिमाया काशीजी के पण्डितोंने सभाकरी और गोसाईंजी को बुलाकर पूछा कि प्रायश्चित्त विना किसतरह इसका पाप दूर हुआ गोसाईंजी ने कहा एक बार रामनाम लेने का क्या माहात्म्य है शास्त्र में देखो इसने तौ सैकड़ों बेर रामनाम उच्चारण किया आपलोगों को शास्त्रके वचन पर जो विश्वास नहीं तो अज्ञान का अंधकार दूर नहीं होसक्ता पण्डितों ने यद्यपि शास्त्रको माना तथापि बे विश्वास यह ठहराया कि विश्वेश्वरनाथ का नन्दी इसके हाथसे भोजनकरै तो सत्यमानैं सो गोसाईंजी ने नन्दी को उसके हाथ से भोजन धराया वह नन्दी ने खालिया तब सब पण्डितोंने लज्जित होकर नामकी महिमा गोसाईंजी की भक्तिपर निश्चय किया एक दिन गोसाईंजी के स्थानपर रात को चोर चोरी करने को आये तो श्री रघुनन्दनस्वामी धनुष बाण लेकर चोरों को डरवाते फिरे चोरी करने न पाये चोरों ने गोसाईंजी से प्रभात को आके पूछा कि महाराज वह श्यामसुन्दर किशोरमूर्ति परम मनोहर कौन हैं जो रातको चौकी देते हैं गोसाईंजी सब वृत्तान्त सुनकर प्रेममें डूबगये और विचारा कि इस सामग्री के हेतु परिश्रम व रातको जागरण स्वामीका अच्छा नहीं बहुत रोनेलगे उसीघड़ी सब धन सामग्री दानकरदिया चोर यह वृत्तान्त देखकर घरबार छोड़ भगवत् शरण होगये, एक ब्राह्मण मरगया उसकी स्त्री विमान के साथ सती होने जातीथी गोसाईंजी को दण्डवत् किया गोसाईंजीके मुखसे निकलगया सौभाग्यवती उसने कहा मेरा पति मरगया यह दासी सती होने जाती है अब सौभाग्य कहां ? गोसाईंजी ने उसके कुलमें भगवद्भक्ति करने की प्रतिज्ञा करायके पति को जिलादिया जब यह बात विख्यात हुई तो बाद-

शाह ने बड़े आदर से बुलाकर उच्चासनपर बैठालकर सिद्धता दिखलाने को विनय किया गोसाईंजी बोले सिवाय श्रीरघुनन्दनस्वामी के दूसरी सिद्धता कुछ नहीं जानताहूं और न इस झूठे खेल से काम रखताहूं बादशाह ने कहा कि अपने स्वामीही के दर्शन करादेव यह कहकर बंदि में किया गोसाईंजी ने हनुमान्‌जी का स्मरण किया उसी घड़ी वानरोंकी अगणित सेना ने बादशाही क़िले में ऐसा उत्पात किया कि प्रलयकाल दिखलाईपड़ा बादशाह जब पलँगपर से उलटागया तब ज्ञानशुद्धसे गोसाईंजीकी शरण में आया चरणपर गिरा तब सब वानरी सेना अन्तर्द्धान होगई तब गोसाईं तुलसीदासजीने आज्ञादी कि तुम दूसरा क़िला रहने को बनालेव यह स्थान रघुनाथजी का हुआ बादशाह ने तुरंत छोड़दिया गोसाईं तुलसीदासजी काशीजी को चलेआये, एक कोई भक्तों के वैरी ने गोसाईंजी के मारने को अनुष्ठान जपका किया गोसाईंजी ने एक पद महादेवजी का बनाया जिसके प्रताप से कुछ न हुआ वह आप लज्जित होरहा फिर गोसाईंजी बृन्दाबन आये नाभाजी से मिले उनकी रचना भक्तमालकी देख सुनकर बहुत प्रसन्नहुये और यह बात जो फैली है कि गोसाईंजी ने मदनगोपालजी के दर्शन के समय यह बात कही थी कि धनुषबाण धारण करोगे तब दण्डवत् करूंगा सो यह बात निपट झूठ और विना शिरपैरकी है काहे कि कृष्णावली में कृष्णयश गोसाईंजी ने गाया है सो प्रसिद्ध है सिवाय इसके सब जगत् को दण्डवत् किया है 'सीयराममय सब जगजानी। करों प्रणाम जोरि युगपानी' यह चौपाई जिसकी कही है भला सो कब भगवत् के सामने ऐसी हठवाणी कहसक्ता है इसबातके फैलने की बात यह है कि उपासक जिस देवता के मन्दिर में जाता है अपने इष्टका रूप ध्यान करता है यह रीति शास्त्र के सम्मत के अनुकूल है सो गोसाईंजी दर्शन को गये व परम मनोहर मूर्त्ति को देखा तो श्रीरघुनन्दन धनुषबाणधारी का ध्यानकरके दण्डवत् किया सो गोसाईंजी भक्तसांचे व सिद्ध थे इसहेतु मदनगोपालजी ने भी उनके ध्यान के अनुकूल रूप दिखा दिया जो कोई उससमय दर्शन करनेवाले थे उन को भी धनुषबाणधारी दृष्टि में आये इसहेतु वह बात फैली और किसी ने एक दोहा भी बना लिया बृन्दाबन में किसीने गोसाईंजी से प्रश्न किया

कि श्रीकृष्ण महाराज पूर्णब्रह्म और अवतारी हैं और नृसिंह, वामन, परशुराम, रामचन्द्र आदि उस अवतारी के अंश कला से अवतार हैं तुम श्रीकृष्ण महाराजकी उपासना क्यों नहीं करते यद्यपि शास्त्रप्रमाण से गोसाईंजी उत्तर देने को समर्थ थे पर माधुर्यभाव में प्रेमभक्ति को दृढ़ करते हुये ऐसा उत्तर दिया कि वह चुप होरहा और सिद्धान्त बनारहा सो वह यह है कि श्रीरामचन्द्र दशरथनन्दन को बहुत सुन्दर सुकुमार अंग मनोहरमूर्त्ति परमशोभायमान देखकर हमारा मन लगगया है कि नहीं छूटता अब जो तुम्हारे वचन उनमें से कुछ ईश्वरता भी है तो और अधिक व मनभाई भई ॥ इति ॥

अथ सङ्कटमोचननामाष्टक ॥

स० ॥ बालसमय रविभक्षकियो तब तीनिहुँलोक भयो अँधियारो । तेहिते त्रास भई सबको अतिसङ्कट काहुते जात न टारो ॥ देवन आनि करी बिनती तब छाँड़ि दियो रवि कष्ट निवारो । को नहिं जानत है जग में यह सङ्कटमोचन नाम तिहारो १ बालिके त्रास कपीश बसै तहँ जात महाप्रभु पंथनिवारो। चौंकि महामुनि शाप दियो दिशि चारि फिरे न सुपास विचारो ॥ कै द्विजरूप लवाय महाप्रभु सो तुम दासको शोकनिवारो । को नहिं जानत है जगमें यह सङ्कटमोचन नाम तिहारो २ अंगद के सँग कीश अनेक गये सिय खोज कपीश पुकारो । जीवत ना बचिहौ हमसों जु विना सुधिलै इतको पगुधारो ॥ हारिथके तट सिंधु सबै तब लै सियकी सुधि प्राण उबारो । को नहिं जानत है जगमें यह सङ्कटमोचन नाम तिहारो ३ रावण त्रास दई सियको तब रक्षक है करि शोक निवारो । ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाइ सबै रजनीचर मारो ॥ मांगत सीय अशोकसों आगि तौ दै प्रभुमुद्रिका शोक निवारो । को नहिं जानत है जगमें यह सङ्कटमोचन नाम तिहारो ४ रावण युद्ध अचानक कीन्ह सुनाग के फाँस सबै शिरडारो । श्रीरघुवीर समेत सबै दलमोह भयो तब सङ्कटभारो ॥ आनि खगेशहि को हनुमान सो बंधनकाटिकै फाँस निवारो । को नहिं जानत है जग में यह सङ्कटमोचन नाम तिहारो ५ बाण लगे उर लक्ष्मण के प्रभु प्राणतजो सुत रावण मारो । लै गृह वैद्य सुखेनसमेत सुखी गिरि द्रोण सो वीर उधारो ॥ आनि सजीवनि हाथदई तब लक्ष्मण के तुम प्राण उबारो । को नहिं जानत है जग में यह सङ्कटमोचन नाम तिहारो ६ बन्धु समेत जबै महिरावण लै रघुनाथ पताल सिधारो । देविहिं पूजि भलीविधि सों बलिदेन दोऊजन मन्त्र विचारो। जाय सहाय भयो तबहीं महिरावण सेनसमेत सँहारो । को नहिं जानत है जगमें यह सङ्कटमोचन नाम तिहारो ७ काज कियो बड़लोगनके तुम वीर महाप्रभु देखि विचारो। कौन सो सङ्कट मोहिं गरीब को सो तुमसों नहिं जात है टारो ॥ बेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कछु सङ्कट होइ हमारो । को नहिं जानत है जगमें यह सङ्कटमोचन नाम तिहारो ॥ ८ ॥

इति श्रीसङ्कटमोचननामाष्टकं समाप्तम् ॥

अथ बजरङ्गबाण ॥

दो० ॥ निश्चय प्रीति प्रतीति ते, विनय करै सनमान । त्यहिकर कारज सकल सिधि, तुरत करै हनुमान ॥ चौपाई ॥ जय हनुमन्त सन्त हितकारी । सुनि लीजे प्रभु अर्ज हमारी ॥ जनके काज विलम्ब न कीजे । आतुर दौरि महासुख दीजे ॥ जैसे कूदि सिन्धु वहिपारा । सुरसा के हनि मुष्टिक मारा ॥ आगे जाइ लङ्किनी रोका । मारयो लात गई सुरलोका ॥ जाइ विभीषण को सुख दीन्हा । सीता निरखि परमपद

लीन्हा ॥ बाग उजारि सिन्धुमहँ बोरा । अति आतुर यमकातरि तोरा ॥ अक्षय-कुमारहि मारि पछारा । लूम लपेटि लङ्को जारा ॥ लाह समान लङ्कजरिगयऊ । जय जय ध्वनि सुरपुरमहँ भयऊ ॥ अब विलम्ब क्यहि कारण स्वामी । कृपा करहु उर अन्तर्य्यामी ॥ जय लक्ष्मण प्राणके दाता । आतुर है दुख करहु निपाता ॥ जय गिरिधर जयजय सुखसागर । सुरसमूह समरथ भटनागर ॥ हनु हनु हनु हनुमन्त हठीला । यहिके मारु वज्रकर कीला ॥ गदा वज्रसम यहिके मारौ । महाराज प्रभु दास उबारौ ॥ ॐकार हुंकार प्रभावो । वज्रगदा हनु विलँब न लावो ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीशा । ॐ हूं हूं हूं हनुपरि शीशा ॥ सत्य होहु हरि सत्य पाइकै । रामदूत धरु मारु धाइकै ॥ जय हनुमन्त अनन्त अगाधा । दुख पावत जन क्यहि अपराधा ॥ पूजा जप तप नेम अचारा । नहिं जानत हौं दास तुम्हारा ॥ वन उपवन गिरि गृह के माहीं । तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं ॥ पांयपरौं करजोरि मनावौं । अपने काज लागि गुणगावौं ॥ जय अंजनीकुमार अनन्ता । शङ्करसुवन वीर हनुमन्ता ॥ वदन कराल कालकुलघालक । रामसहाय दासप्रतिपालक ॥ भूत प्रेत पीशाच निशाचर । अग्नि बैताल काममारी मर ॥ इन्हैं मारु त्वहिं शपथ रामकी । राखु लाज मर्याद नामकी ॥ जनकसुता हरिदास कहावौ । ताकी शपथ विलम्ब न लावौ ॥ जय जय जय धुनि होत अकाशा । सुमिरत होत दुसह दुखनाशा ॥ शरण शरण करजोरि मनावौं । यहि अवसर अब क्यहि गोहरावौं ॥ उठु उठु चलु त्वहिं रामदुहाई । पांय परौं करजोरि मनाई ॥ चं चं चं चलुचपल चलन्ता । हनु हनु हनु हनु हनु हनु-मन्ता ॥ हं हं हांक देत कपि चंचल । सं सं सहमि पराने खलदल ॥ अपने जनको क्यों न उबारो । सुमिरत होत अनन्द हमारो ॥ यह बजरङ्गबाण जो जापै । ताको भूत प्रेत सब काँपै ॥ पाठकरै बजरङ्गबाणकी । हनुमत रक्षा करैं प्राणकी ॥ यह बज-रङ्गबाण ज्यहि मारै । ताहि कहौ अब कौन उबारै ॥ दो० प्रेम प्रीति धरि कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान । त्यहिकर कारज सकल सिधि, किहे रहैं हनुमान ॥पद॥ पवनतनय यश जात न गायो । जिन मिलाय रघुनाथ सुकण्ठहि कपिकुलराज करायो ॥ १ ॥ आपु उलंघि सिन्धु कौतुक में दै मुँदरी सिय शोक नशायो । बाग उजारि मारि निशिचरगण जारि लङ्कगढ़ भस्मकरायो ॥ २ ॥ धीरजदै सिय लौटि राम पहँ कुशलभाषि जलनाथ बँधायो । रिपुहि जीति दै राज विभीषण लै सियसाथ नाथ ढिग आयो ॥ ३ ॥ बहुप्रकार सनमानि राम ज्यहि निजमुख ऋणी कहायो । तासु सुयश भगवन्त कहै किमि ज्यहि भरि अङ्क राम उरलायो ॥ ४ ॥

इति श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतबजरङ्गबाणःसमाप्तिमगात् ॥

दो॰ गुरु हरि[1] हर गणईश धी, सुमिरौं तुलसीदास।
करतगोपाल महात्म्यश्री, रामायण सुखरास॥

रामायण सुरतरु[2] की छाया ❀ दुख भय दूरि निकट[3] जो आया
सप्तकाण्ड स्कन्ध सोहाई ❀ दोहा लघु शाखा छविछाई
शुचि[4] सोरठा सीटका कोई ❀ पत्री बहु चौपाई जोई
छन्दन की शोभा अतिरूरी[5] ❀ जनु नवीन[6] अंकुर छविपूरी
अच्छर सुमन[7] रहे गहगाई ❀ अति अद्भुत सुगन्ध कविताई
विविधप्रकार अर्थ सोई फल ❀ श्रोता सुमति स्वादु जानै भल
भक्ति ज्ञान वैराग्य सरस[8] रस ❀ बीजदोय निर्गुण सगुण अस
मुनि भुशुण्डि शिव प्रथमहिं गाई ❀ सोइ गाई जगहेत गोसांई

---

१ विष्णु २ कल्पवृक्ष ३ पास ४ पवित्र ५ अनूठी ६ नये ७ फूल ८ रससमेत॥

दो॰ तुलसिदास रामायणहिं, नहिं करते अनुसार।
कलिके कुटिल[1] जीव ये, को करतो निस्तार॥

रामायण सुरधेनु समाना ❀ दायक अभिमत[2] फल कल्याना
गुणसमूह कवि सकै कौनगानि ❀ जासु प्रभाव सरिस चिंतामनि
राम अयन[3] रामायन आही ❀ बरणि पार पावै को ताही
रामायण अद्भुत फुलवारी ❀ राम भ्रमँर[4] भूषित रुचिभारी
श्री रामायण जेहि घरमाहीं ❀ भूत प्रेत तहँ भूलि न जाहीं
नहिं गमि तहां दरिद्रहु केरी ❀ तहँ श्रीमहावीर की फेरी
यन्त्र मन्त्र सगुनौती जेती ❀ रामायण महँ जानिय तेती
प्रीति करै रामायण माहीं ❀ तेहि सम भाग्यवन्त कोउ नाहीं

दो॰ रामायण सम नाहिं कोउ, सब उपमा उपमेय।
उपमा भाषा और की, कैसे कोऊ देय॥

त्रेतामहँ भे बालमीकिमुनि ❀ ते कलियुग भे तुलसिदासपुनि
शत करोरि रामायण भाखी ❀ इन मथि सार सुसूक्षम राखी
प्रथमकाण्ड है बाल रसीला ❀ जन्म विवाह रामकी लीला
द्वितिय अयोध्याकाण्ड प्रकासा ❀ पितु आज्ञा रघुवर वनवासा
पुनि अरण्य किष्किन्धा भाख्यो ❀ तहँ सुग्रीव शरणमहँ राख्यो
सुन्दर सुन्दरकाण्ड सुहावन ❀ युद्धकाण्ड महँ मारेउ रावन
सप्तम उत्तर परम अनूपा[5] ❀ उत्सव प्रभु कोशलपुर भूपा
अष्टम लवकुशकाण्ड बखाना ❀ अश्वमेध कीन्ही भगवाना
तुलसीकृत रामायण येती ❀ विविध प्रकार कथा है केती

दो॰ जग वारिधि[6] को पार नहिं, ऐसो है फैलाव।
तुलसीदास कृपा करी, रचि रामायण नाव॥

श्री रामायण स्वर्ग निसेनी[7] ❀ भक्तजनन कहँ आनँद देनी
श्री रामायण सदगुण माता ❀ अक्ष जाहि पढ़ि होहिं सुज्ञाता

१ टेढ़े २ वाञ्छित ३ घर ४ भौंरा ५ उपमारहित ६ समुद्र ७ सीढ़ी॥

पाप समूह तूलं की राशी ❀ रामायण धनंज्यकनकाशी
मोहपुंज तमकिरणि तमोरी ❀ कामअग्नि कहँ शीतलवारी
रामायण शशिकिरणि सुहाई ❀ संत चकोरन कहँ सुखदाई
धन्य धन्य श्रीतुलसिदास धनि ❀ जगहित रामायण राखी भनि
नीच ऊंच जेते नर नारी ❀ श्रीरामायण सब कहँ प्यारी
रामायण सों नेह लगावैं ❀ अधन अपत्य सो वित सुत पावैं

दो॰ रामायण सो नेह किय, सिद्धि होत सब काम।
है सब की कल्याणदा, पढ़ु सुनु लहु विश्राम॥

निगमादिक तेइ ब्रह्मकमण्डल ❀ रामायण तहँ थित गंगाजल
भागीरथ सम तुलसिदास पुनि ❀ भाषा प्रचुर कीन्ह जनु सुरधुनि
होत रहै इकठांव रमायण ❀ तेहिमग आवत पापपरायण
कछुक कानमहँ परिगइ बाता ❀ चलत पंथ कहुँ भयोपपाता
गिरतहि तुरत छूटि तनु गयऊ ❀ तहँ अद्भुत इक अचरज भयऊ
ताहि लेन आये यमदूता ❀ निजपाशन बाँध्यो मजबूता
अति आतुर हरिजन तहँ आये ❀ छीनिलीन्ह बहु त्रास दिखाये
रामायण पै सुनि यहि काना ❀ लै जैहैं बैठारि विमाना

दो॰ रामायण परताप सों, गयो पार्षदन साथ।
दूत चले यमके सदन, खीझत मींजत हाथ॥

निज दूतन देखेउ बिलखाता ❀ पूछी भानुतनय कुशलाता
किन तुमकहँ दीन्हो दुख भाई ❀ चार चतुर तुम देहु बताई
कहा कहैं तुमसों महराजा ❀ पूछत तुमहिं न आवत लाजा
कोइ इक मृत्युलोक बड़भागी ❀ तुलसीदास भयो वैरागी
रामकथा रामायण भाखी ❀ सो लोगन घर घर धरिराखी
जे जे विविध भांति के पापी ❀ मांसाहारी और सुरापी
ते सब मिलि रामायण सुनिहैं ❀ कहिहैं लिखिहैं पढ़िहैं गुनिहैं

१ रुई २ सूर्य ३ मनुष्य ४ धन ५ वेदादिक ६ गंगा ७ घर ८ यमराज ९ दूत १० शराबी॥

ते नहिं ऐहैं सदन तुम्हारे ❀ सत्य सत्य नृप वचन हमारे

दो॰ लेहु पास ये आपने, राखहु अपने पास ।
अमल[1] तुम्हारो उठो अब, सुनि यम भये उदास ॥

अपनी व्यथा कहै नहिं पाये ❀ तबलगि दूत और तहँ आये
कहनलगे रविसुतसों रोई ❀ तव चाकरी न हमसों होई
जग में कहूं न हुकुम तिहारो ❀ यह सुनि यम जँकि[2] रहेउ बिचारो
अहो दूत मोहिं कहौ बुझाई ❀ किन दीन्हों मम हुकुम उठाई
कहा कहैं कछु कही न जाई ❀ तुलसिदास इकभयो गोसांई
तिनकी रामायण जग व्यापी ❀ तेइ कीन्हें पवित्र सब पापी
गये हम एक अधम[3] गृहमाहीं ❀ अति दुख भयो जात कहिनाहीं
तहँ देखेउ यक कपि बलवाना ❀ उग्र[4] रूप सदृश हनुमाना

दो॰ प्राणन को गहकी भयो, तब हम भये अति दीन ।
शरणशरणतवशरणहैं, अस्तुति बहुविधि कीन ॥

तब तो है प्रसन्न कपिराई ❀ हमसन पुनि परतीति कराई
धरी होइ रामायण जहँवां ❀ कबहूं भूलि न जायहु तहँवां
जे श्रोता बक्ता रामायन ❀ कबहूँ मति जायहु तेहि आयन
अस हमसों कपि शपथ[5] कराई ❀ तब छूटन पायो सुनु राई
सुनि यमराज बहुत घबराये ❀ निकट बुलाइ दूत समुझाये
नाम रूप गुण कथा रामकी ❀ कियेउ न फेरी तौन धामकी
अजामील की सुरति करौजू ❀ और न कछु चितमाहिं धरौजू
थकि से रहे दूत सुनि बानी ❀ धनि धनि रामायण महरानी

दो॰ रामायण तेजश्वरी, सत भाषा शिरमौर ।
यमपुर जाको शोर है, समता[6] को नहिं और ॥

पातक महा लग्यो किन होई ❀ रामायण सुनि रहे न कोई
चाहै चारो फल को साधन ❀ करु रामायण को अवराधन[7]

१ राजशासन २ चकित ३ नीच ४ भयंकर ५ सौगन्द ६ बराबरी ७ पाठ ॥

रामायण सुनि पाप पराने ❀ जिमिहिमऋतुमहँमशकनशाने
कलियुग तरन उपाय न कोई ❀ रामभजन रामायण दोई
कथा रमायन की जहँ होई ❀ सो गृह घर माति जानै कोई
सो घर तीर्थरूप सम भाशै ❀ तहां गये सब पातक नाशै
पाप वास देही महँ तबलग ❀ श्रीरामायण सुनै न जबलग
उदय पुरामी पुण्य होय जब ❀ रामायण महँ मन लागै तब

दो० रामायण के सुनतही, छूटि जात प्रेतत्त्व।
जाके पढ़ते सुनत ते, सूझत है परतत्त्व॥

को जानै रामायण को रस ❀ यह तो है सन्तनकी सरबस
वनेज[1] सनेही अलिगण[2] जैसे ❀ भक्तन प्रिय रामायण तैसे
त्यागि भक्तजन ग्रन्थ अनेकू ❀ धारण किय रामायण एकू
भक्तन कहँ है भक्ति अनूपा ❀ रसिक जनन कहँ है रसरूपा
ज्ञानमयी तिनकहँ जे ज्ञानी ❀ तुलसी तारण तरण बखानी
काम क्रोध रुज[4] वश संसारा ❀ औषध रामायण अनुसारा
रामायण महँ नेह न जाको ❀ जीवत शव[5]सम जानिय ताको
रामायण जाकहँ प्रिय नाहीं ❀ वृथा जन्म ताको जगमाहीं

दो० रामायण अमृत कथा, लेत न ताको स्वाद।
तिनको निश्चय जानिये, हैं पूरे मनुजाद[6]॥

रामायण विधि कहौं विशारद ❀ सनत्कुमार सों भाषी नारद
सहित विधान सुनै जो कोई ❀ सहज मुक्ति पावै नर सोई
कार्त्तिक माघ चैत्र चितलाई ❀ नवदिन सुनै कथा सुखदाई
ब्रह्ममुहूर्त्त समय हो जबहीं ❀ कर्म[7] करे शौचादिक तबहीं
करे दन्तधावन[8] लटजीरा ❀ मज्जन करे धरे मनधीरा
पुनि रामायण पुस्तक अरचे ❀ प्रेम सहित गन्धादिक चरचे
ॐनमो नारायण मन्त्र भनीजै ❀ तीन आहुती होम करीजै

---

१ तदबीर २ कमल ३ भ्रमरसमूह ४ रोग ५ मुर्दासम ६ राक्षस ७ नित्यक्रिया ८ दँतून॥

मन बच कर्म पाप तन केरे ❀ छूटि जात नहिं आवत नेरे

दो० याविधिरामायण विधिहिं, जे करिहहिं चितलाय।
रामधाम ते जाइहैं, संसृति[1] दुखहि मिटाय॥

जो कछु कारज कहँ कोउजाई ❀ सुमिरि[2] चलै सो यह चौपाई
प्रविशि नगर कीजै सब काजा ❀ हृदय राखि कोशलपुर राजा
जो विदेश चाहै कुशलाई ❀ तौ यह सुमिरि चलै चौपाई
रथचढ़ि सियासहित दोउ भाई ❀ चले बनहिं अवधहिं[3] शिरनाई
भूत पिशाच जाहि जब लागैं ❀ यह सोरठा पढ़े सों भागैं

सो० वन्दौं पवनकुमार[4], खलवन[5] पावक[6] ज्ञानघन।
जासु हृदय आगार[7], बसहिं राम शर चाप धर॥

शत्रु निवारण चहौ जो भाई ❀ भावसहित जपु यह चौपाई
जाके सुमिरण ते रिपु नाशा ❀ नाम शत्रुहन वेद प्रकाशा
यह चौपाई जपै जो कोई ❀ अन्न आदि दुख ताहि न होई
विश्वभरण पोषण करु जोई ❀ ताकर नाम भरत अस होई
जो उत्सव चह विविध प्रकारा ❀ करु यह चौपाई अनुसारा
जब ते राम ब्याहि घर आये ❀ नित नवमङ्गल मोद बधाये
जो चाहै जगमहँ जय भाई ❀ अस्थिर ह्वै जपु यह चौपाई
सखा धर्ममय अस रथ जाके ❀ जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके
हैं बहुभांति कार्य जगमाहीं ❀ रामायण सों सब ह्वै जाहीं

दो० सकल भांति मनकामना, यह दोहा दातार[8]।
रामायण महँ खोजिकरि, करु याको अनुसार॥
वह शोभा सुसमाज सुख, कहत न बनै खगेश।
बरणैं शारद शेष श्रुति, सो रस जानु महेश॥

बरणौं एक रुचिर इतिहासा ❀ तुलसिदास जो कीन्ह तमासा
द्राविड़ अरु काशी महिपाला ❀ कहुँ एकत्र रहे कछु काला

---

१ जन्ममरण २ यादकर ३ अयोध्या ४ हनुमान् ५ दुष्ट ६ अग्नि ७ मन्दिर ८ देनेवाला॥

अतिशय प्रीति बढ़ी दुहुँमाहीं ❀ मन में कपट लेश कछु नाहीं
गर्भवती दोऊ नृप नारी[1] ❀ चली बात दोउन कहिडारी
द्राविड़ कही बात सुखरासी ❀ सुनहु नृपति काशी के वासी
जन्मै तव सुत[2] सुता[3] हमारे ❀ अथवा मम सुत सुता तिहारे
अस संयोग होइ जो नाहू ❀ हम तुम करहिं विवाह उछाहू
सौहैं करि यह बात दृढ़ाई ❀ सन्तत प्रीति रही अब भाई
सुखद समय आयो जब सोऊ ❀ निजनिज भवन गये नृपदोऊ

सो॰ कन्या भईं दुहुँ ओर, जानी जात न दैवगति।
कहि पठयो सुत मोर, द्रविड़ दूत काशी गये॥

यह छल होत भयो जिहि लाई ❀ सो वह हेतु[4] कहौं मैं गाई
द्राविड़पति निज गृह आयो जब ❀ रानीसों अस कहतभयो तब
जो होई कन्या दुहुँ ओरा ❀ तौ मैं प्राण तजब बरजोरा
सुनि रानी राजा मुखबानी ❀ मनमहँ बहुत भांति भयमानी
उपरोहितकहँ लिहिसि बुलाई ❀ नृप दुराय यह बात बुझाई
मम अहिवात तुम्हारे हाथा ❀ नहिं तौ प्रभु मैं होब अनाथा
रानी द्रव्य दीन्ह नहिं थोरी ❀ भइ मायावश द्विज[5]मतिभोरी
सेवक सेवकायनवश कीन्हेसि ❀ आदर मान दान बहुदीन्हेसि

दो॰ सेवक[6] एक दीन्ह तेहिं, वाराणसी बसाय।
तेहिते पायसि खबरिसब, तबयहुकिहिसिउपाय॥

पुत्र नाम धरि गुप्त रखायो ❀ द्वादश वर्ष न द्वार दिखायो
विदुर्षन कहेहु न कोऊ देखे ❀ व्याह समय सब कोऊ पेखे
मित्रमिलनहित चित अनुराग्यो ❀ नेगी पठे व्याह पुनि मांग्यो
अति आनन्द चल्यो मगवेगी ❀ काशी[7] नृपपहँ आयो नेगी
नृप मनमुदित पत्रिका बांची ❀ ले आयो बरात रँगराची
आयो व्याहन द्राविड़राजा ❀ खुलीबात उपजी अतिलाजा

१ रानी २ पुत्र ३ कन्या ४ कारण ५ ब्राह्मण ६ दास ७ काशी ८ पण्डितों ने॥

क्रोधातुर काशी अवनीशा ❁ कह कटिहौं द्राविड़कर शीशा
यहसुनिद्राविड़अधिकडेरानेउ ❁ निजछलसमुझिसमुझिपछितानेउ
दो० अतिसंभीत अतिदीन ह्वै, गो जहँ तुलसीदास ।
पाहि पाहि कहि पांयपरि, कहेउ करो दुखनास ॥
तब काशी नृपकहँ बुलवायो ❁ तुलसिदास हितकर समुझायो
सुतकहिसुता जो ब्याहन आयो ❁ होय पुत्र तौ होय बधायो
जो यह पुत्र होय महराजा ❁ करिय विवाह साजि सबसाजा
तुलसिदास वेदी विरचाई ❁ तहँ गणेश गौरी पधराई[1]
सिंहासनपै धरि रामायण ❁ नवदिन भरि कीन्हीं पारायण
जो कन्या वरवेष बनायो ❁ ताही को सन्मुख[3] बैठायो
वक्ता आप सो श्रोता भई ❁ दुनिया तहँ देखन सब गई
कथा सकल[4] जब बांचि सुनाई ❁ तासु शीश कर धरेउ गोसांई
दो० अरु यह चौपाई पढ़ी, रामै सुमिरि प्रसन्य ।
तिहिअवसर वर ह्वै गयो, श्रीरामायण धन्य ॥
मंत्रमहामणि विषय[5] ब्यालके ❁ मेटत कठिन कुअंक भाल[6]के
रामायण जब कही गोसांई ❁ प्रगटन हित काशी फिर आई
आदरकीन्ह न पण्डित काऊ ❁ कहैं जो हम सो करौ उपाऊ
जहँ अस्थान कहैं तहँ जाहू ❁ पोथी अब न देखावहु काहू
श्रीआनँदकानन ब्रह्मचारी ❁ हम शिरमौर सुमहिमा भारी
जो याको वे आदर करिहैं ❁ तौ हम सब लै शीशहि धरिहैं
गण आनँदकानन पहँ ततपर ❁ करत प्रशंसँ प्रसन्न परसपर
पोथी की चरचा पुनि कीन्हीं ❁ देखनहेतु सो लै धरि लीन्ही
कछु दिन पढ़ी सहित अनुरागन ❁ गये गोसांई पोथी माँगन
दो० पोथी दइ अरु अस कहेउ, होई आदर लोक ।
निजप्रमाणकरि लिखिदियो, इक अद्भुत श्लोक ॥

१ बहुतडर २ स्थापित ३ सामने ४ संपूर्ण ५ सर्प ६ माथा ७ प्रतिष्ठा ॥

श्लो० आनन्दकानने ह्यस्मिञ्जङ्गमस्तुलसीतरुः ।
कविता मञ्जरी यस्य रामभ्रमरभूषिता ॥ १ ॥
छं० धनिधन्यतुलसीदासजिन जगहेतुरामायणभनी ।
माहात्म्यअमितनकहिसकौंरसविषयमहँमोंमतिसनी ॥
निजबुद्धि के अनुसार कहि गोपाल सतगुरु की दया ।
रघुवीरयश की अधिकता श्रीसंतजन करिहैं मया ॥
दो० श्रीमत तुलसीदासजी, ह्वै प्रसन्न वर देहु ।
रामायण माहात्म्य सों, हरिजन करहिं सनेहु ॥
संवत वसु नभ नन्द कू, मार्गशुक्ल गुरुवार ।
एकादशि कहँ कीन्ह मैं, अपनी मति अनुसार ॥
रामकोट श्री अवधपुर, स्वामी रामप्रसाद ।
तिनकी महिमा को कहै, विश्वविदित मर्याद ॥
तिन ते गादी पाँचई, सो स्वामी मैं दास ।
लषणपुरीममजन्मक्षिति, रामनगर के पास ॥
मोजमनगर प्रसिद्ध द्विज, उत्तम पूरनदास ।
तस्यात्मज गोपालकृत, यह महात्म्य इतिहास ॥

इति श्रीद्विजगोपालदासकृतरामायणमाहात्म्यं संपूर्णम् ॥

रामकलेवा

छन्द

भोर भये अपने कुमार को जनक बेग बुलवाये।
सुनि पितु के संदेश लक्ष्मीनिधि सखन सहित तहँ आये॥
सादर किये प्रनाम चरन छुइ लखि बोले मिथिलेसू।
गमनहु तात तुरत जनवासे जहँ श्रीअवधनरेसू॥
विनय सुनाइ राय दशरथ सों पाय रजाय सचेतू।
आनहु चारिउ राजकुमारहिं करन कलेऊ हेतू॥
यह सुनि सीस नाय लक्ष्मीनिधि भरि उर मोद उमंगा।
सखन समेत मंद हँसि गमने चढ़ि चढ़ि चपल तुरंगा॥
कलनि देखावत हय थिरकावत करत अनेक तमासे।
मृदु मुसकात बतात परस्पर पहुँचि गये जनवासे॥
सखन सहित तहँ उतरि तुरँग ते मिथिलापति के बारे।
चारिहु सुतयुत अवधराज को सादर जाय जुहारे॥
अति सुखनिधि लक्ष्मीनिधिको लखि सखन सहित सतकारे।
रघुकुलदीप महीप हाथ गहि निज समीप बैठारे॥
तेहि छन सानुज निरखि रामछबि सखन सहित सुख माने।
लक्ष्मीनिधि मुखदरश पाइकै रामहु नैन जुड़ाने॥
तब श्रीनिधि कर जोरि भूप सों कोमल बैन उचारे।
करन कलेऊ हेतु पठावहु चारिहु राजदुलारे॥
सुनि मृदु वचन प्रेमरस साने दशरथ मृदु मुसुकाने।
चारिहु कुँवर बोलाइ बेग ही बिदा किये सुख माने॥
जनक नगर की जानि तयारी सेवक सब सुख पागे।
निज निज प्रभुहिं सँवारन लागे लै भूषन वर बागे॥
रघुनंदन सिर पाग जरकसी लसी त्रिभंगी बाँधी।
तिमि नोरङ्गी झुकी कलंगी ऊँचे रुचि पेचानि साधी॥
कनक कलित अति ललित मनिन की मंजुल मौर बिराजी।

सिंधुरमनि के सजे सेहरा जेहि होते मन राजी ॥
ताके कोर कोर चहुँ ओरन लगी रतन की पाँती ।
जगमग जोति होत चहुँदिशि ते लखि अँखियान अघाती ॥
कुंडल लोलै हलै कपोलै लगी अमोलै मोती ।
जेबदार जगमगहिं जराऊ जुगल जंजीरन जोती ॥
जालिमजोरी जुलफें जहरी जुवतिन जोबनहारी ।
छूटीं अलकें दुहुँदिसि झलकें मनहुँ मैन तरवारी ॥
रतनारी कारी कजरारी अति अनियारी आँखें ।
रसवारी बरबस बसकारी प्यारी आनन राखें ॥
अति अवरंगी रति रसरंगी चढ़ी त्रिभंगी भौंहें ।
मनहुँ मदन के जुग धनु सोहैं जिहि जोहैं सोइ मोहैं ॥
तिलक रसाल विसाल भाल पर किमि बरनौं छवि ताकी ।
जनु नवघन पर रीझि दामिनी नेक लियो थिरताकी ॥
अरुन अधर बिच दामिनि द्युतिवर दमकै दसनन पाँती ।
सन्मुख मुख कर जेहि दिसि बोलैं अजब छटा छहराती ॥
जगमगात अति श्यामगात जरतारिन को है जामा ।
ताके कोर कोर चहुँ ओरन जड़े रतन मनिग्रामा ॥
पीत सुफेटा सुछबि समेटा कमर लपेटा राजै ।
नवल पटूकौ करन लटूकौ कांधे पटुका भ्राजै ॥
मनिमय कंकन सुखप्रद रंकन बंकन कर बिच बाँधे ।
जनु पुर जुवतिन मन जीतन को जंत्र बसीकर साँधे ॥
दो०—बरनि सकै को राम को, अनुपम दूलह भेष ।
जेहि लखि शिवसनकादि को, रहत न तनहिं सरेष ॥
इमि साजि अनुज सहित रघुनंदन चारों राजदुलारे ।
बढ़े उमंगन चढ़े तुरंगन अंगन बसन सँभारे ॥
जे रघुवंशी कुँवर लाड़िले प्रभु कहँ प्रानपियारे ।
चढ़े तुरंग संग तेउ गमने राम रंग मतवारे ॥

बोले चोबदार लै नामन विरदावली अलापैं।
चंचल चमर चले दुहुँ दिसि ते छत्र सखा सिर ढापैं॥
राम बामदिसि श्रीलक्ष्मीनिधि सखन सहित तेउ सोहैं।
चंचल बागे किये तुरिन को बातें करत हँसोहैं॥
जगबंदन जेहि नाम जाहिरो रघुनंदन को बाजी।
ताको गुन छबि कहँ लौं बरनौं जोहि होत मन राजी॥
भूषित भूषन अंग अदूषन पूषन हय लखि लाजै।
चोटिन तनियाँ गुथी सुमनियाँ पगु पैंजनियाँ बाजै॥
जड़ित जवाहिर जीन जड़ी की जरबीली अति सोहैं।
पूजि पटा को छटा कहै को कामलटा मन मोहैं॥
ललित लगाम दाम बहु केरी अंकित नाम बिराजै।
सुछबि उमंगी झुकी त्रिभंगी मनिन अलंगी छाजै॥
जित रुष पावैं तित पहुँचावैं छन आवैं छन जावैं।
जिमिजिमि थमिथमि थिरकि भूमिपर गतिपगतिन दरसावैं॥
खीनी खट पीनी खुरथालैं बँधी नवीनी नालैं।
लेत उतालैं सिंह उछालैं करैं समुद्र इक फालैं॥
धावत पवन न पावत पीछू गरुड़हु गर्व गँवावैं।
रघुनंदन को बाजि लाड़िलो अनुपम कला दिखावैं॥
नाम समुद मुद देत जनन को जापर भरत बिराजैं।
रघुनंदन के दाहिने दिसि सो चलत चपल गति साजैं॥
रोकत बागे अतिरिस रागे गरवित फुरकन लागे।
झमक झमाकी लै गति बाँकी दै झाँकी सुख पागे॥
कहुँ नभ जीवन मुरन झँकावै कहुँ महि मोद मचावै।
अवनीतें अरु आसमान लों जनु सोपान बनावै॥
फाँदत चंचल चारु चौकड़ी चपलाहू चख झापै।
भरत कुँवर को तुरंग रंगीलो बरनि जात कहु कापै॥
चम्पा नाम चाल चटकीली जेहि पर रिपुहन भाये।

सब समाज के आगे निरतै मोर कुरंग लजाये ॥
जो कहुँ नेकहुँ हाथ उठावत कई हाथ उठ जातो।
बारबार चुचुकार दुलारत ताहू पै न जुड़ातो ॥
लक्खी घोड़ा लखनलाल को बाँको निपट चलाको।
उड़ि उड़ि जात वायुमंडल को परत न पग महि ताको ॥
तरफराय उड़ि जाय परत है लक्ष्मीनिधि हय पाहीं।
उचित बिचारि हँसे रघुबंशी रामहिं मृदु मुसुकाहीं ॥
तोप तुपक जूटै जहँ छूटै तहाँ जाय सो टूटै ॥
फुलझरिया सी झरत धरत डग करत अनेक तमासो।
ढुरकन मुरकन थरकन थिरकन बरनि जाय कहु कासो ॥
तकि तुरंग की चंचलताई लषन कि देखि चढ़ाई।
निमिबंसी रघुबंसी सिगरे ठगि से रहे बिकाई ॥
राम आदि जे कुँअर लाड़िले तेउ लखि भरे उछाहें।
रीझि रीझि तहँ लषणलाल को बारहिंबार सराहें ॥
इमि मग होत बिलास बिबिध बिधि बिपुल बाजने बाजे।
सुनत नकीब पुकार नगर तिय कढ़ि बैठीं दरवाजे ॥
कोउ तिय निरखि बदन की महिमा अति सुख महँ सो पागी।
भरी सनेह देह सुधि भूली रामरूप अनुरागी ॥
कोउ तिय देखि अतूला दूल्हा अति सनेह तनु भूला।
फूला नैन मैन मन भूला लागि प्रीति को हूला ॥
कोउ घूँघट पट खोलि सुन्दरी मणि मुँदरी लै पानी।
देखत दूलह रूप राम को आनँदसिंधु समानी ॥
दो०—कोउ सूरति लखि साँवरी, तोरति तृण सुख पाग।
मधुरी मूरति में पगी, निज मूरति सुख त्याग ॥
कोउ रघुनंदन छवि बिलोकि कै बोली सुनु सखि बयना।
राजकुँअर ये करन कलेऊ जात जनक के अयना ॥
इनको श्रीनिधि गये लिवाई आये चारिहुँ बेटा।

रँगभीने रघुबंसी छैला दशरथ राज दुलहेटा ॥
धनि यह भाग्य हमारो प्यारी निज भरि नैन निहारे ।
नतु दरसन दुर्लभ दूलह के रविकुल प्रान पियारे ॥
भाग सोहाग आज भल पायो श्रीमिथिलेस की बेटी ।
सुन्दर श्याम माधुरी मूरति निज निज भुज भर भेटी ॥
बोली अपर सखी सुनु सजनी भली बात बनि आई ।
हमहुँ चलैं सब जनक महल को हँसिये इन्हें हँसाई ॥
इमि मृदु बातैं करत परस्पर भई प्रेमबस बामा ।
सुनत जात मुसुकात अनुजयुत कृपासिंधु श्रीरामा ॥
तुरँग नचावत मन छबि छावत बाजत बिपुल नगारे ।
चोपदार जागरें अलापत जनक नगर पगु धारे ॥
द्वार समीप देखि अति सुन्दर मनिमय चौक सँवारे ।
राजकुँअर रघुबंसिन के तहँ ठाढ़ भये मतवारे ॥
उतर जाय लाहि सिया मातु की नगर सुवासिन नारी ।
कंचन कलस सजे सिर ऊपर पल्लव दीप सँवारी ॥
गावत मंगल गीत मनोहर कर ले कंचन थारी ।
परछन हेत चलीं रघुबर को बहु आरती सँवारी ॥
जाय समीप निहारि राम छबि दृग आनँद जल बाढ़ी ।
छकित रहीं बरबदन बिलोकति चकित रहीं तहँ ठाढ़ी ॥
रामरूप राँगि गई रँगीली लखि दूलह सुख सारा ।
तन मन रह्यो सरेख न काहू करैं मंगलाचारा ॥
प्रेम पयोधि मगन सब प्यारी धरि पुनि धीरज भारी ।
परछन अली भली बिधि कीन्हों रोकि विलोचन वारी ॥
लक्ष्मीनिधि तब उतरि तुरँग ते चारिउ कुँअर उतारे ।
पानि पकरि रघुनन्दनजी को भीतर महल सिधारे ॥
द्वीप द्वीप के जहँ महीप सब जनक समीप बिराजे ।
बैठे सभा सकल निमिबंसी सुत अंशी इव छाजे ॥

रघुनन्दन तहँ अनुज सखन जुत सादर जाय जुहारे।
देखत उठे सकल निमिबंसी जनक निकट बैठारे॥
कर गजरा कजरा दृग में सेहरायुत मौर बिराजी।
दूलह वेष बिलोकि राम को भई सभा सब राजी॥
तहँ कर कछु दरबार जनक ढिग दशरथ राजदुलारे।
लैके राय रजाय नाय सिर सासु समीप सिधारे॥
जहँ पिकबयना सब सुख ऐना बैठि सुनयना रानी।
इन्द्रानी को कौन चलावे लखि रति रूप लुभानी॥
चन्द्रमुखी चहुँओर बिराजें कोउ कर चमर चलावैं।
कोउ सखि देखि राम की शोभा आरति मंगल गावैं॥
तेहि छिन तहाँ गये रघुनन्दन मन फंदन वर वेषा।
देखत उठीं सकल रनिवासैं रह्यो न तनुहि सरेषा॥
करि आरती वारि मनि भूषन सादर पाँव पखारे।
चारि रंग के चारि सिंहासन चारिहु बर बैठारे॥
लखि छबि ऐना सासु सुनैना नैना पलक तजै ना।
भूली चैना बोलि सकै ना कहत बनै ना बैना॥
रामरूप रँगि रही रँगीली आँसू बह दृग जाहीं।
ताके जाके रही तनक नहिं डोलै मन मुद माहीं॥
इमि तहँ दसा बिलोकि सासु की राम गुनत मन माहीं।
काह भयो यह आजु रानि को पूछत में सकुचाहीं॥
चतुर सखी चित चरचि राम सों बोली मधुरी बानी।
यह तुम्हार गुन है सब लालन और न कछु उर आनी॥
सुनत बचन यह तुरत धीर धरि जगी सुनैना रानी।
बार बार बहु लोंन बलैया चूमि कपोलन पानी॥
माधुरि मूरति साँवलि सूरति तकि तृन तोरति रानी।
रीझि रीझि तहँ रामरूप पै बिनहीं मोल बिकानी॥
पुनि कर जोरि राम सों रानी बोली अति मृदुबानी।

उठहु लाल अब करहु कलेऊ जो जो रुचि हिय मानी ॥
यह सुनि सखन समेत उठे तहँ चारिहु राजदुलारे।
भूरि भाग्य अनुराग सुनैना निज कर पाँय पखारे ॥
रचना अधिक पदिक के पीढ़न बैठारे सब भाई।
कंचन थारी मृदुल सुहारी परसी विविध मिठाई ॥
रुचि अनुरूप भूप सुत जेंवत पवन डुलावैं सासू।
बूझि बूझि रुचि व्यंजन परसैं बरनि न जाय हुलासू ॥
स्वाद सराहि पाय पुनि अँचये सखियन पान खवाये।
बैठे पहिरि पोसाक सखनयुत विविध सुगंध लगाये ॥

दो०—राजअयन सब चयनसत, राजत राजकुमार।
जिनकी हासविलास लखि, लाजहिं लाखन मार ॥

तेहि अवसर सुधि पाय सखी मुख लक्ष्मीनिधि की नारी।
नाम सिद्धि परसिद्धि जासु गुन रूपसील उजियारी ॥
भाग सुहाग भरी उठि सुन्दरि नवयौवन मतवारी।
रसिकन रीति प्रीति परवीनी रतिहिं लजावनहारी ॥
अति गुनवान निधान रूप की सब विधि सुभग सयानी।
लक्ष्मीनिधि की प्रानपियारी निमिकुल की महरानी ॥
अलबेली सरहज रघुबर की बड़ी सनेह सिंगारी।
प्रीतम प्रीति निबाहनहारी राम रूप रिझवारी ॥
चंचल चपल चहूँदिशि चितवत देखन को अतुराई।
भरी उमंग संग सखियन लै तुरत रामढिग आई ॥
बदन चंद अरविंद लिये कर बिहँसत मन्दर सोहैं।
राजकुँवर कर पकड़ि लाड़िली बोली तकि तिरछोहैं ॥
चित के चोर किशोर भूप के बड़े चोर तुम प्यारे।
सुरति हमारि भुलाय साँवरे सासु समीप सिधारे ॥
उलटी बात कहौ जनि प्यारी आपन दोष दुराई।
तुमहीं रहिउ छिपाय छबीली सुनत हमारि अवाई ॥

हम आए तुम महलन भीतर तुमहिं न परयो जनाई।
भलो सदन तुमरो है प्यारी जहँ सब जाइ समाई॥
सुनत राम के बचन लाड़िली बोली मृदु मुसुकाई।
तुमरे घर की रीति लालजू इत नहिं चलै चलाई॥
सासु सुनयना के समीप महँ देत जवाब बनयना।
पानि पकरि रघुनन्दनजी को गइ लेवाय निज अयना॥
चारि सिंहासन दै तहँ आसन भरी हुलासन प्यारी।
बारहिं बार निहारि वदन छबि बहु आरती उतारी॥
मेलि सुकंठ मालती माला वसननि अतर लगायो।
अंचलसों मुख पोंछि राम को निजकर पान खवायो॥
जहँ रति रंभा सरिस सुन्दरी बैठीं किये सिंगारे।
कोउ कुसुमन को करनफूल रचि कोउ कलँगी कोउ हारे॥
ललित लवंग कपूर संग धरि कोउ सखि पान लगावैं।
कोउ कर पीकदान लिये ठाढ़ीं कोउ सखि चमर डुलावैं॥
कोउ जल शीतल भरे सुराही कोउ दर्पन दरसावैं।
निज निज साज सजे सब प्यारी रघुबर सन्मुख भावैं॥
कोउ जलतुरही ताल तमूरा कोउ करताल बजावैं।
कोउ सितार लै तार तार प्रति गूढ गतिन दरसावैं॥
कोउ उपंग मुरचंग मिलावैं दै मृदंग सुख थापैं।
कोउ लै बीन नवीन सुरन ते मनहुँ बसीकर जापैं॥
कोउ मृगनैनी कोकिल बैनी पंचम राग अलापैं।
परत कान में मधुर तानि निज बिरहिन के जिय काँपैं॥
इमि अभिराम धाम सोभा लखि राजकुँवर अनुरागे।
बातें करत सिद्धि सरहजसों परम प्रेमरस पागे॥
जे निमिराज नेवत सुनि आईं कोटिन राजकुमारी।
राम मिलन की बड़ी लालसा कहि न सकैं सुकुमारी॥
तिन यह सुन्यो कि सिद्धिसदन में आये चारिहु भाई।

तुरतहि तहँ पहुँचीं सब प्यारी जानि समय सुखदाई ॥
देखी राजकुँवरि सब आईं रामदरस की प्यासी।
अति सन्मान कियो सबही को सिद्धिसदन सुखरासी ॥
राम सुछबि देखन ते लागीं दृग आनँद जल बाढ़े।
चख भुक परे रूपसागर में कढ़हिं नहीं अब काढ़े ॥
मनिन मोर पर मोतिन कलँगी अलबेली अति सोहैं।
राजतियन को कौन चलैहै मुनियन को मन मोहैं ॥
चिक्कन चिलकदार चुनवारी अलकें मुख पर छूटी।
जोहत जहर चढ़त जुवतिन को जड़ी न लागत बूटी ॥
लखि छबि बर की श्यामसुँदर की भईं मीन सुखसर की।
तरकी तनी कंचुकी करकी दरकी चूरी कर की ॥
दो०—मन लोभा शोभा निरखि, भईं विवश सुकुमारि।
चकित छकित सब रह गईं, तन मन दसा बिसारि ॥
जे तिय मान अनूपरूप निज रहीं स्वरूप गुमानी।
ते लखि राम बदन की सुखमा बिनहीं मोल बिकानी ॥
अति सुकुमारी राजकुमारी सिद्धि सहित अनुरागीं।
तहँ प्यारी गारी रघुबर को देन दिवावन लागीं ॥
एक सखी कह सुनहु लालजी यह स्वरूप कहँ पायो।
कानन सुन्यो काम अति सुंदर की तुमको सोइ जायो ॥
बोली सिद्धि सुनहु रघुनंदन तुम हमार ननदोई।
एक बात तुमसों हम पूछें लाल न राखहु गोई ॥
होत ब्याह संबंध सबन को अपने जातिहि माहीं।
निज बहिनी शृंगीऋषि को तुम कैसे दियो विवाही ॥
की उनको मुनीस लै भाग्यो की वोई सँग लागीं।
एती बात बतावहु लालन तुम रघुबंस अदागी ॥
लखन कह्यो यह सुनहु लाड़िली जेहि विधि जहँ लिखि दीना।
तहँ संयोग होत है ताको ब्याह तो कर्म अधीना ॥

कहँ हम राजकुँवर रघुबंसी कहँ विदेह बैरागी।
भयो हमार ब्याह तुम्हरे घर विधि गति गनै को भागी॥
औरौ एक हास उर आवै अचरज है सब काहू।
तुम तो हौ सिधि वे लक्ष्मीनिधि नारि नारि भो ब्याहू॥
एक सखी कह सुनहु लालजी तुमहिं सकहि को जीती।
जाहिर अहै सकल जग माहीं तुम्हरे घर की रीती॥
अति उदार करतूति दार सब अवधपुरी की बामा।
खीर खाय पैदा सुत करतीं पतिकर कछु नहिं कामा॥
सखी बचन सुनि तब रघुनंदन बोले मृदु मुसुकाते।
आपनि चाल छिपावहु प्यारी कहहु आन की बातें॥
कोउ नहिं जनमें मात पिता बिन बँधी वेद की नीती।
तुम्हरे तौ महिते सब उपजैं अस हमरे नहिं रीती॥
बोली चन्द्रकला तेहि अवसर परम चतुर सुकुमारी।
सिद्धि कुँवरि की लहुरी भगिनी लक्ष्मीनिधि की सारी॥
लरिकाई ते रह्यो लालजी तुम तपसिन सँग माहीं।
ये छल छंद फंद कहँ पाये सत्य कहो हम पाहीं॥
की मुनिनारिन के सँग सीखे की निज भगिनी पासें।
खाटो मीठो स्वाद लालजी बिन चाखे नहिं भासें॥
बोले भरत भली कह सजनी तुमहुँ तो अबै कुमारी।
बरनहु पुरुष संग की बातैं सो कहँ सीखेहु प्यारी॥
रहे मुनिन सँग ज्ञान सिखन को सो सब सुने सुनाये।
कामिनि काम कला अब सीखन हम तुम्हरे ढिग आये॥
सिद्धि कह्यो तब सुनहु भरतजी ऐसी तुम न बखानो।
तुमरी तौ गिनती साधुन में लोक बात का जानो॥
भरत कह्यो तुम साँचि कहत हौ हम साधू परकाजी।
ऐसी सेवा करो कामिनी जाते होयँ मन राजी॥
आये अयन अपूरब योगी अस निज मन गुनि लीजे।

अधर सुधारस को दे भोजन अतिथी पूजन कीजै॥
एक सखी कह सुनहु सबै मिलि इनकी एक बड़ाई।
ऋषि मखराखन गये कुँवर ये तहँ हम अस सुधि पाई॥
इनको सुन्दर देखि कामबस त्रिया ताड़का आई।
सो करतूत न भई लालसों मारेहु तेहि खिसिआई॥
बोले रिपुहन सुनहु भामिनी नाहक दोष न दीजै।
जो करतूति बनी नहीं उनते सो हमसे भरि लीजै॥
बिन जाने करतूति सबन को तुम्हरे घर भो ब्याहू।
सोउ पछिताव न रहे पियारी अब करि लेहु समाहू॥
जाके हित तुम रोष बढ़ावहु सो मति करहु उपाई।
बैसिनि सेवा में तुम्हरे हम हाजिर चारिउ भाई॥
सुनि बानी रिपुदमन लालकी बोली कोउ सुकुमारी।
कहँ पाई एती चतुराई कहिये लाल बिचारी॥
की कहुँ मिली नारि गुन आगरि की गनिकन सँग कीनो।
तीनों भाइन ते तुमरे महँ लखियतु चिह्न नवीनो॥
रिपुहन कह भल कह्यो भामिनी भेदिहि भेदहिं जानै।
गनिका नारिनहूँते सौगुन तुम्हैं अधिक हम मानैं॥
हमरो तुमरो चिह्न लाड़िली एकै भाँति लखाई।
ताते सखी हमारि तुम्हारी चाही अवसि सगाई॥
सुनि नव उक्ति युक्ति की बातें बोली सिधि सुकुमारी।
सुनिये रसिकराय रघुनंदन आनँदकंद बिचारी॥
अति अभिराम कामहू मोहत मूरति देखि तुम्हारी।
कैसे बची होयँगी तुमते अवधपुरी की नारी॥
यों कहि रही चुपाय सुंदरी सिद्धि कुँवरि सुख अयना।
ताको हाथ पकरि रघुनंदन बोले अति मृदु बयना॥
दो०—जस मर्जादा जगत की, बाँधि दियो करतार।
राजा रंक यती सती, करत सोइ व्यवहार॥

अनुचित उचित बिचारि लोग सब तहँ तस राखत भाऊ।
तुमतो अपने अस जानति हौ सब ही केर सुभाऊ॥
यह सुनि भरत लषण रिपुसूदन हँसे सकल दै तारी।
सिद्धि आदि सब राजकुमारी तेउ अति भई सुखारी॥
यहि विधि हँसि हँसाय रघुवर सों दे दिवाय मृदुगारी।
नाना भाँति मनोरथ मनके लगीं करन सब प्यारी॥
कोउ सखि राम समीप जायके कहत कछू लगि कानै।
कमल कपोल परस कै प्यारी जन्म सुफल करि मानै॥
कोइ निज कोमल कमल करन ते चरन कमल प्रभु चापैं।
बार बार हिय लाय लाड़िली दूर करैं तन तापैं॥
रसिक सिरोमनि श्रीरघुनंदन नवल नेह अभिलाखी।
जस जाके हिय रही लालसा तस तेहिकी रुचि राखी॥
रघुनंदन तब कह्यो सिद्धिसों जो तुम देहु निदेसू।
तौ अब हम गमनैं जनवासे जहँ श्री अवधनरेसू॥
सुनि यह बानी राज कुँवर की काँपि उठीं उर आली।
सिद्धि आदि सब राजकुमारी बोलीं विरह विहाली॥
नेह बढ़ाय छकाय रूपरस आपु अवध जब जैहैं।
हम विरहिन के प्राण लाड़िले कहौ कौन विधि रहिहैं॥
सुनि इमि आरति बैन तियन के तब करुनारस साने।
कोमल चित कृपालु रघुनंदन प्रीति रीति भल जाने॥
बोले बचन भक्तभयभंजन सुनहु तियहु सब कोई।
अब मैं कहौं सुभाय आपनो तुम्हैं न राखहुँ गोई॥
शिवसनकादि आदि ब्रह्मादिक इनते और न भारी।
तिनहूँ ते तुम अधिक पियारी सुनु सिधि राजकुमारी॥
जो कोउ प्रीति करै मोरे पर होय सुजान अजानो।
प्रान समान सदा तेहि राखौं औगुन एक न मानौं॥
निजनिज प्रेमिन केरि जगत में सुनियतु बड़ी बड़ाई।

तिनतिन में बिचारि जो देखो सबमें एक खुटाई ॥
कर्म धर्म अरु धीर बीरता जोग सिद्धि चतुराई ।
ज्ञान ध्यान विज्ञान सुजनता राजनीति निपुनाई ॥
इतने जीति सके नहिं मोहीं कोटिन करैं उपाई ।
हार जाहुँ प्रेमी प्रानी ते तहाँ न मोर बसाई ॥
तुम तौ सबै प्रेम की मूरति सूरति की बलिहारी ।
सिद्धि आदि सब राजकुमारी मोहिं प्रानहुते प्यारी ॥
तुम्हरे हिय अभिलाष आजु जो सो सब भाँति पुजैहौं ।
लौकिक लाज बचाय लाड़िली तुमते बिलग न ह्वैहौं ॥
हम सब भाँति तुम्हार साँवली तुम सब भाँति हमारी ।
सत्य सत्य ये सत्य बचन मम मानहु राजकुमारी ॥
दो०—रघुनंदन के बचन सुनि, खुलिगे कपट किवार ।
बढ़्यो प्रेम सब त्रियन के, तनक न तनहिं सँभार ॥
पुनि धरि धीरज अली भली विधि जोरि पङ्करुह पानी ।
सिद्धि आदि सब राजकुमारी बोलीं अति मृदुबानी ॥
धन्य भाग हमरो रघुनंदन हमते कोउ बड़ नाहीं ।
बूड़त रहीं जगत सागर में राखि लीन्ह गहि बाहीं ॥
हम नारी सब भाँति अनारी किये प्रीति मुदमोई ।
राजकुमार रावरे के सम कीन्ह कृपा नहिं कोई ॥
प्रति उपकार होत नहिं हमते जस तुम कीन्हेउ प्यारे ।
चन्द्र समान होहिं नहिं कबहूँ जुरहिं हजारन तारे ॥
जहँ जहँ जौन करम बस हमको जन्म बिधाता देहीं ।
तहँ तहँ रसिकराय रघुनंदन तुमहीं मिलेहु सनेही ॥
वरु विधि कोटिन करै जातना या तन छिन २ छूटै ।
हमरी तुमरी लगन लाड़िले कौनहु जन्म न टूटै ॥
सुनि बानी करुना रस सानी रघुबर अन्तरजानी ।
सनमान्यौ सब राजकुमारिन कहि कहि कोमल बानी ॥

सबसो बिदा माँगि रघुनंदन अनुज सहित पगुधारे।
निकसे मानहुँ सिद्धि महलते चारुचन्द्र छविवारे॥
राहिनि पानखवावत साथहि चली सिद्धि सुख ऐना।
आए राजमहल महँ सिगरे जहँ श्रीमातु सुनैना॥
चरन प्रनाम कीन्ह रघुनंदन जोरि सरोरुह पानी।
बिदा हेतु पुनि वचन सुनाये कहि अति कोमल बानी॥
सुनि ये बैना सासु सुनैना भरे प्रेम जल नैना।
रहौ कि जाहु न कछु कहि आवै भूल गई सब चैना॥
पुनि धरिधरि अनेक आभूषण जे बड़मोल के जानी।
अनुज सखनजुत रामकुँवर को दीन्ह सुनैना रानी॥
सबसन बिदा माँगि रघुनंदन चले जनक ढिग आये।
जथायोग करि मान बड़ाई बहुविधि आनँद छाये॥
दो०—अस सब कहँ आनंद दे, गये अवध नृप पास।
कथा सुनाई नृपहिं सब, सुनि अति भयो हुलास॥

इति श्रीरामकलेवा समाप्तम्

❀ रामसलाकाप्रश्न ❀

सु	प्र	उ	वि	हो	मु	ग	व	सु	मु	वि	घ	धि	ई	द
र	रु	फ	सि	सि	रे	बस	है	मं	ल	न	ल	य	न	अं
सज	सो	ग	सु	कु	म	स	ग	त	न	ई	ल	धा	ब	नो
त्य	र	न	कु	जो	म	रि	र	र	अ	कि	हो	सं	रा	य
पु	सु	थ	सी	जे	ई	ग	म	सं	क	रे	हो	स	स	नि
ति	र	त	र	स	ई	ह	ब	ब	प	चि	स	य	स	तु
म	का	ा	र	र	मा	मि	मी	ह्मा	ा	जा	हू	ही	ा	जू
ता	रा	रे	री	ह	का	फ	खा	जि	ई	र	स	पू	द	ल
खि	को	भि	गो	न	म	ज	य	ने	मणि	क	ज	प	स	ल
हि	रा	म	स	रि	ग	द	न	ष	म	खि	जि	मान	त	जं
सि	मु	न	न	को	मि	ज	र	ग	धु	ख	सु	का	स	र
गु	क	म	अ	ध	नि	म	ल	ा	न	ब	ती	न	रि	भ
ना	पु	व	अ	ढा	र	ल	का	ए	तु	र	न	नु	ब	थ
सि	हू	सु	म्ह	रा	र	स	हि	र	त	न	ष	ा	जा	ा
र	सा	ा	ला	धी	ा	री	जू	हू	हीं	षा	जू	ई	रा	रे

दो०—जबहीं पृच्छक अङ्क पर, अंगुली को धरि देत।
ताके अगिले अङ्क ते, नवमाक्षर गनि लेत ।।
ऊपर को ऊपर लिखे, नीचे निम्न लिखेत।
रामसलाका प्रश्न यह, यथा उचित फल देत ।।

१–सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजहिं मन कामना तुम्हारी ।।
२–प्रविसि नगर कीजै सब काजा। हृदय राखि कोसलपुर राजा ।।
३–उघरे अंत न होइ निबाहू। कालनेमि जिमि रावण राहू ।।
४–बिधिबस सुजन कुसंगति परहीं। फणिमणि सम निज गुण अनुसरहीं ।।
५–होइहै सोइ जो राम रचि राखा। को करि तरक बढ़ावहिं साखा ।।
६–मुदमंगल मय संत समाजू। जिमि जगजंगम तीरथ राजू ।।
७–गरल सुधा रिपु करै मिताई। गोप्द सिंधु अनल सितलाई ।।
८–बरुण कुबेर सुरेस समीरा। रणसन्मुख धरि काहु न धीरा ।।
९–सफल मनोरथ होइँ तुम्हारे। राम लषन सुनि भये सुखारे ।।

मासिक पाठ-सूची

दिन	पृष्ठ	दोहा	दिन	पृष्ठ	दोहा
१	१६	शठ सेवक०	१६	२८६	जाय निकट०
२	३३	सदा सुमन०	१७	३०४	अत्रि कहेउ०
३	५१	चरित०	१८	३२३	तब मुनि०
४	६८	श्रवण०	१९	३४५	जातिहीन०
५	८९	जानि सभय०	२०	३६२	धनुष०
६	११४	सभय सप्रेम०	२१	३७७	सुनु माता०
७	१३१	अरुण नयन०	२२	३९७	सकल०
८	१४९	बारहिं बार०	२३	४२०	भूमि न०
९	१६६	मिले लषण०	२४	४३७	करि चिकार०
१०	१८२	नाम मन्थरा०	२५	५१५	काटत०
११	१९९	निरखि राम०	२६	५३५	राम प्राण०
१२	२१७	आरत वश०	२७	५५५	ताते सुर०
१३	२३४	त्तण त्तण०	२८	५७२	आवत०
१४	२५२	आपनि०	२९	५९२	शिव राखेउ०
१५	२६९	तेहि वासर०	३०	६०८	कामिहिं०

नवाह्निक पाठ-सूची

दिन	पृष्ठ	दोहा	दिन	पृष्ठ	दोहा
१	५८	पुनि पुनि०	६	३६७	नीलोत्पल०
२	१२८	प्रभुहिं०	७	४२७	कह्यु०
३	१८५	कद्रू०	८	५४७	वर्णाश्रम०
४	२४४	मलिन०	९	६०८	कामिहिं०
५	३०३	देव०			

श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीगोस्वामि

तुलसीदासकृत रामायण

बालकाण्डप्रारम्भः ।

मङ्गलाचरणे गणेशदेवादिवन्दना ।

श्लोक ॥ वर्णानामर्थसङ्घानां रसानां छन्दसामपि ॥ मङ्गलानाञ्च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥ १ ॥ भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ॥ याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम् ॥ २ ॥ वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्कररूपिणम् ॥ यमाश्रितो हि वक्रोपि चन्द्रस्सर्वत्र वन्द्यते ॥ ३ ॥ सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ ॥ वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ॥ ४ ॥ उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम् ॥ सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोहं रामवल्लभाम् ॥ ५ ॥ यन्मायावशवर्त्तिविश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवाः सुरा यत्सत्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः ॥ यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां वन्देहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ॥ ६ ॥ नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोपि ॥ स्वान्तस्सुखाय तुलसीरघुनाथगाथाभाषानिबन्धमतिमञ्जुलमातनोति ॥ ७ ॥

सो॰ ज्यहि सुमिरत सिधि होइ, गणनायक करिवरवदन।
करहु अनुग्रह सोइ, बुद्धिराशि शुभगुणसदन॥
मूक[2] होहिं वाचाल, पंगु चढ़ैं गिरिवर गहन।
जासु कृपा सुदयाल, द्रवौ सकलकलिमलदहन॥
नील सरोरुह श्याम, तरुणअरुणवारिजनयन।
करहु सो मम उरधाम, सदा क्षीरसागरशयन॥
कुंद इंदु सम देह, उमारमण करुणाअयन।
जाहि दीन पर नेह, करहु कृपा मर्दन मयन[3]॥
वंदौं गुरु पद कंज, कृपासिन्धु नररूप हरि।
महा मोह तम पुंज, जासुवचनरविकरनिकर॥

वंदौं गुरुपद पद्म परागा ❀ सुरुचिसुवास सरस अनुरागा
अमिय मूरिमय चूरण चारू ❀ शमन सकल भवरुज परिवारू
सुकृत शम्भु तन विमल विभूती ❀ मंजुल मंगल मोद प्रसूती
जनमन मंजु मुकुर मलहरणी ❀ किये तिलक गुणगणवशकरणी
श्रीगुरु पदनख मणिगण जोती ❀ सुमिरत दिव्यदृष्टि हिय होती
दलन मोहतम सोसु प्रकासू ❀ बड़े भाग्य उर आवहिं जासू
उघरहिं विमल विलोचन हियके ❀ मिटहिं दोषदुख भवरजनीके
सूझहिं रामचरित मणिमानिक ❀ गुप्त प्रकट जहँ जो जेहिखानिक

दो॰ यथासुअंजन आंजिदृग, साधक सिद्ध सुजान।
कौतुक देखहिं शैल वन, भूतल भूरि निधान॥

गुरुपद रज मृदु मंजुल अंजन ❀ नयन[5]अमिय दृगदोष विभंजन
तेहिकरि विमलविवेक विलोचन ❀ वरणौं रामचरित्त भवमोचन
वंदौं प्रथम महीसुर चरणा ❀ मोह जनित संशय सब हरणा
सुजनसमाज सकल गुणखानी ❀ करौं प्रणाम सप्रेम सुबानी

१ गणेश २ गूंगा ३ कामदेव ४ रात्रि ५ नयनामृत नाम अंजन ६ ब्राह्मण ७ सन्देह॥

साधु चरित शुभ सरिस कपासू ❀ निरस विशद गुणमय फल जासू
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा ❀ बंदनीय जेहि जग यश पावा
मुद मंगल मय सन्त समाजू ❀ जो जग जंगम तीरथराजू
रामभक्ति जहँ सुरसरि[1] धारा ❀ सरस्वति ब्रह्म विचार प्रचारा
विधिनिषेधमय कलिमलहरणी ❀ कर्म्मकथा रविनंदिनि[2] वरणी
हरि हर कथा विराजत बेनी ❀ सुनत सकल मुदमंगल देनी
वटविश्वास अचल निज धर्म्मा ❀ तीरथराज समाज सुकर्म्मा
सबहिं सुलभ सबदिन सबदेशा ❀ सेवत सादर शमन कलेशा
अकथ अलौकिक तीरथराऊ ❀ देइ सद्य फल प्रकट प्रभाऊ

दो० सुनिसमुझहिंजनमुदितमन, मज्जहिंअतिअनुराग।
लहहिं चारिफल अछततनु, साधु समाज प्रयाग॥

मज्जन फल देखिय ततकाला ❀ काक होहिं पिक बकहु मराला[3]
सुनि आश्चर्य करहि जनि कोई ❀ सतसंगति महिमा नहिं गोई
बालमीकि नारद घटयोनी[4] ❀ निजनिजमुखन कही निजहोनी
जलचर थलचर नभचर नाना ❀ जे जड़ चेतन जीव जहाना
मति कीरति गति भूति भलाई ❀ जब जेहि यतन जहां जेहिपाई
सो जानब सतसंग प्रभाऊ ❀ लोकहु वेद न आन उपाऊ
बिनु सतसंग विवेक न होई ❀ रामकृपा बिनु सुलभ न सोई
सतसंगति मुद मंगल मूला ❀ सोइफलसिधि सबसाधन फूला
शठ सुधरहिं सतसंगति पाई ❀ पारस परसि कुधातु[5] सुहाई
विधिवश सुजन कुसंगति परहीं ❀ फणि[6]मणिसम निजगुणअनुसरहीं
विधि हरि हर कवि कोविदबानी ❀ कहत साधु महिमा सकुचानी
सो मोसन कहिजात न कैसे ❀ शाँकवणिक[7] मणिगुणगण जैसे

दो० वन्दौं सन्त समानचित, हित अनहित नहिं कोउ।
अंजलिगतशुभसुमनजिमि, समसुगन्ध करदोउ॥

१ गंगाजी २ यमुनाजी ३ हंस ४ अगस्त्य ५ लोहा ६ सर्प ७ शाक का बेचनेवाला॥

सन्त सरलचित जगत हित, जानि सुभाव सनेहु।
बाल विनय सुनि करि कृपा, रामचरण रति देहु॥

बहुरि वंदि खलगण सति भाये ❀ जे बिनु काज दाहिने बांये
परहित हानि लाभ जिन केरे ❀ उजरे हर्ष विषाद बसेरे
हरि हर यश राकेश राहुसे ❀ परअकाज भट सहसबाहुसे
जे परदोष लखहिं सहसाखी ❀ परहित घृत जिनके मनमाखी
तेज कृशानु रोष महिषेशा ❀ अघअवगुण धनधनिक धनेशा
उदय केतु सम हित सबहीके ❀ कुम्भकरण सम सोवत नीके
पर अकाज लगि तनु परिहरहीं ❀ जिमि हिम उपल कृषीदलिगरहीं
वन्दौं खल जस शेष सरोषा ❀ सहस वदन वरणैं परदोषा
पुनि प्रणवौं पृथुराज समाना ❀ पर अघ सुनैं सहसदशकाना
बहुरि शक्र सम विनवौं तेही ❀ संतत सुरानीक हित जेही
वचन वज्र जेहि सदा पियारा ❀ सहस नयन परदोष निहारा

दो० उदासीनअरिमीत हित, सुनतजरहिंखलरीति।
जानुपाणियुगजोरिकरि, विनती करौं सप्रीति॥

मैं आपनि दिशि कीन्ह निहोरा ❀ ते निज ओर न लाउब भोरा
बायस पालिय अति अनुरागा ❀ होहि निरामिष कबहुँ कि कागा
वन्दौं सन्त असज्जन चरणा ❀ दुखप्रद उभय बीच कछु वरणा
बिछुरत एक प्राण हरिलेहीं ❀ मिलत एक दारुण दुखदेहीं
उपजहिं एक संग जलमाहीं ❀ जलजजोंक जिमिगुणबिलगाहीं
सुधा सुरा सम साधु असाधू ❀ जनक एक जग जलधि अगाधू
भलअनभल निजनिज करतूती ❀ लहत सुयश अपलोक विभूती
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू ❀ गरलअनल कलिमलसरिव्याधू
गुण अवगुण जानत सब कोई ❀ जो जेहि भाव नीक तेहि सोई

दो० भले भलाई पै लहहिं, लहहिं निचाई नीच।

१ चन्द्रमा २ अग्नि ३ यमराज ४ कुबेर ५ जिह्वा ६ चन्द्रमा ७ यमराजी ८ अग्नि॥

सुधा[1] सराहिय अमरता, गरल[2] सराहिय मीच ॥

खल अघ अगुण साधु गुणगाहा ❀ उभय अपार उदधि[3] अवगाहा
तेहिते कछु गुण दोष बखाने ❀ संग्रह त्याग न बिनु पहिंचाने
भलेउ पोच सब विधि उपजाये ❀ गनि गुण दोष वेद बिलगाये
कहहिं वेद इतिहास पुराना ❀ विधि प्रपंच गुण अवगुणसाना
दुख सुख पाप पुण्य दिनराती ❀ साधु असाधु सुजाति कुजाती
दानव देव ऊंच अरु नीचू ❀ अमिय सजीवनि माहुर मीचू
माया ब्रह्म जीव जगदीशा ❀ लच्छि अलच्छि रंक अवनीशा
काशि मगह सुरसरि क्रमनाशा ❀ मरु मालव महिदेव[4] गवाशा[5]
स्वर्ग नरक अनुराग विरागा ❀ निगमागम गुण दोष विभागा

दो० जड़ चेतन गुणदोषमय, विश्व कीन्ह करतार ।
संत हंस गुण गहहिं पय[6], परिहरि वारि विकार ॥

अस विवेक जब देहि विधाता ❀ तब तजि दोष गुणहि मनराता
काल स्वभाव कर्म बरिआई ❀ भलेउ प्रकृतिवश चूक भलाई
सो सुधारि हरिजन जिमिलेहीं ❀ दलि दुख दोष विमलयश देहीं
खलउ करहिं भलपाइ सुसंगू ❀ मिटहि न मलिन स्वभाव अभंगू
लखि सुवेष जगबंचक[7] जेऊ ❀ वेष प्रताप पूजियत तेऊ
उघरे अन्त न होइ निबाहू ❀ कालनेमि जिमि रावण राहू
किये कुवेष साधु सनमानू ❀ जिमि जग जामवन्त हनुमानू
हानि कुसंग सुसंगति लाहू ❀ लोकहु वेद विदित सब काहू
गगन चढ़ै रज पवन प्रसंगा ❀ कीचइ मिलइ नीच जलसंगा
साधु असाधु सदन शुकसारी ❀ सुमिरहिं राम देहिं गनिगारी
धूम कुसंगति कारिख होई ❀ लिखिय पुराण मंजु मसि सोई
सोइ जल अनल अनिल[8] संघाता ❀ होइ जलद जगजीवन दाता

दो० ग्रहभेषज[9] जल पवन पट, पाइ कुयोग सुयोग ।

---

१ अमृत २ विष ३ समुद्र ४ ब्राह्मण ५ कसाई ६ दूध ७ पाखण्डी ८ हवा ९ औषध ॥

होइ कुवस्तु सुवस्तुजग, लखहिं सुलच्छणलोग ॥
समप्रकाश तम पाखदुहुँ, नामभेद विधि कीन्ह ।
शशिपोषकशोषकसमुझि, जगयशअपयशदीन्ह ॥
जड़ चेतन जग जीव जे, सकल राम मय जानि ।
वन्दौं सबके पद कमल, सदा जोरि युगपानि ॥
देव दनुज नर नाग खग, प्रेत पितर गंधर्व ।
वन्दौं किन्नर रजनिचंर[1], कृपा करहु अब सर्व ॥

आकर चारिलाख चौरासी ❀ जातिजीव नभ जल थलवासी
सीयराम मय सब जग जानी ❀ करौं प्रणाम जोरि युग पानी
जानि कृपा करि किंकर मोहू ❀ सबमिलि करहु छांड़िछलछोहू
निज बलबुधि भरोस मोहिं नाहीं ❀ ताते विनय करहुँ सब पाहीं
करन चहौं रघुपति गुण गाहा ❀ लघुमति मोरि चरित अवगाहा[2]
सूझ न एकौ अंग उपाऊ ❀ मन मति रंक[3] मनोरथ राऊ
मति अति नीच ऊंचरुचि आछी ❀ चहिय अमिय जग जुरै न छाछी
छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई ❀ सुनिहहिं बालवचन मनलाई
ज्यों बालक कह तोतरि बाता ❀ सुनहिं मुदितमन पितुअरुमाता
हँसिहहिं कूर कुटिल कुविचारी ❀ जे परदूषण भूषण धारी
निजकवित्त केहिलाग न नीका ❀ सरस होउ अथवा अतिफीका
जे परभणित[4] सुनत हरषाहीं ❀ ते वर पुरुष बहुत जग नाहीं
जग बहु नर सुरसरि सम भाई ❀ जे निजबाढ़ि बढ़हिं जल पाई
सज्जन सकृत सिन्धु[5] समकोई ❀ देखि पूर विधु बाढ़इ जोई

दो० भाग छोट अभिलाष बड़, करौं एक विश्वास ।
पैहहिं सुखसुनि सुजनजन, खलकरिहैं उपहास ॥

खल परिहास होत हित मोरा ❀ काककहहिं कलकण्ठ[6] कठोरा

१ निशाचर २ अथाह ३ कंगाल ४ दूसरे का कहा हुआ ५ समुद्र ६ कोकिला ॥

हंसहि बक दादुर चातकही ❀ हँसहिंमलिनखल विमलबतकही
कवित रसिक न रामपद नेहू ❀ तिनकहँ सुखद हास्यरस एहू
भाषा भणित मोरिमति भोरी ❀ हँसिबे योग्य हँसें नहिं खोरी
प्रभुपदप्रीति न सामुझिनीकी ❀ तिनहिं कथासुनिलागिहिफीकी
हरिहरपदरति मति न कुतरकी ❀ तिनकहँ मधुरकथा रघुवरकी
रामभक्ति भूषित जिय जानी ❀ सुनिहहिं सुजन सराहिसुबानी
कवि न होउँ नहिं चतुरप्रवीना ❀ सकल कला सब विद्याहीना
आखर अर्थ अलंकृत नाना ❀ छन्द प्रबन्ध अनेक विधाना
भाव भेद रस भेद अपारा ❀ कवितदोष गुण विविधप्रकारा
कवित विवेक एक नहिं मोरे ❀ सत्य कहौं लिखि कागद कोरे

दो० भणित मोरि सबगुणरहित, विश्व[1]विदित गुण एक ।
सो विचारिसुनिहहिंसुमति, जिनके विमल विवेक[2] ॥

यहिमहँ रघुपति नाम उदारा ❀ अति पावन पुराणश्रुतिसारा[3]
मंगल भवन अमंगलहारी ❀ उमासहित जेहि जपु त्रिपुरारी
भणित विचित्र सुकविकृत जोऊ ❀ रामनाम बिनु सोह न सोऊ
विधुवदनी सब भांति सँवारी ❀ सोह न वसन विना वरनारी
सबगुणरहित कुकविकृत बानी ❀ रामनाम यश अंकित[4] जानी
सादर कहहिं सुनहिं बुधताही ❀ मधुकर[5] सरिस सन्तगुणग्राही
यदपि कवित गुण एकौ नाहीं ❀ राम प्रताप प्रकट यहि माहीं
सोइ भरोस मोरे मन आवा ❀ केहि न सुसंग[6] बड़ापन पावा
धूमउ तजै सहज करुआई ❀ अगुर प्रसंग सुगन्ध बसाई
भणित भदेश वस्तु भलि वरणी ❀ राम कथा जग मंगलकरणी

छं० मंगलकरणिकलिमलहरणितुलसीकथारघुनाथकी ।
गतिकूरकवितासरित की ज्यों परमपावन पाथकी ॥
प्रभुसुयशसंगतिभणितभलि होइहिसुजनमनभावनी ।

१ संसार २ ज्ञान ३ पुराण व वेदका सारांश ४ विहित ५ भ्रमर ६ मिलाप ॥

भवअंगभूति मसानकी सुमिरत सुहावनि पावनी ॥

दो० प्रियलागिहिअतिसबहिंमम, भणितरामयशसंग।
दारु विचारु कि करइ कोउ, वन्दियमलयप्रसंग ॥
श्यामसुरभिपयविशदअति, गुणदकरहिंतेहिपान।
गिराग्राम सियराम यश, गावहिंसुनहिंसुजान॥

मणि माणिक मुक्ताछवि जैसी ❀ अहिगिरिगजशिरसोह न तैसी
नृप किरीट तरुणी तनु पाई ❀ लहहिं सकल शोभा अधिकाई
तैसहि सुकवि कवित बुधकहहीं ❀ उपजहिं अनत अनत छविलहहीं
भक्तिहेतु विधि भवन विहाई ❀ सुमिरत शारद[२] आवत धाई
रामचरितसर[३] बिनु नहवाये ❀ सो श्रम जाइ न कोटि उपाये
कविकोविद अस हृदय विचारी ❀ गावहिं हरिगुण कलिमलहारी
कीन्हे प्राकृत जन गुणगाना ❀ शिर धुनि गिरालगति पछिताना
हृदय सिन्धु मति सीप सुजाना ❀ स्वाती शारद कहहिं समाना
जो बरषै बरवारि विचारू ❀ होहिं कवित मुक्तामणिचारू

दो० युक्ति बेधि पुनि पोहिये, राम चरित बरताग।
पहिरहिंसज्जनविमलउर, शोभा अति अनुराग ॥

जे जनमे कलिकाल कराला ❀ करतब वायसे[४] वेष मराला
चलत कुपन्थ वेद मग छांड़े ❀ कपट कलेवर कलिमल भांड़े
वञ्चक[५] भक्त कहाइ रामके ❀ किंकर[६] कंचन कोह कामके
तिनमहँ प्रथम रेख जग मोरी ❀ धृक धर्मध्वज धन्धक धोरी
जो अपने अवगुण सब कहऊं ❀ बाढ़ै कथा पार नहिं लहऊं
ताते मैं अति अल्प[७] बखाने ❀ थोड़े महँ जानिहहिं सयाने
समुझि विविध विधि विनती मोरी ❀ कोउ न कथा सुनि देइहि खोरी
एतेहु पर करिहहिं जे शङ्का ❀ मोहिंते अधिक ते जड़ मतिरङ्का[८]
कवि न होउँ नहिं चतुर कहाऊं ❀ मति अनुरूप रामगुण गाऊं

---

१ कहीहुई २ सरस्वती ३ तालाब ४ काक ५ छली ६ दास ७ सूक्ष्म ८ दरिद्री ॥

कहँ रघुपति के चरित अपारा ❀ कहँ मति मोरि निरत संसारा
जेहि मारुत[1] गिरिमेरु उड़ाहीं ❀ कहहु तूल[2] केहि लेखे माहीं
समुझत अमित[3] राम प्रभुताई ❀ करत कथा मन अतिकदराई

दो॰ शारद शेश महेश विधि, आगम निगम पुरान ।
नेति नेति कहि जासुगुण, करहिं निरन्तरगान ॥

सब जानत प्रभु प्रभुता सोई ❀ तदपि कहे बिनु रहा न कोई
तहां वेद अस कारण राखा ❀ भजनप्रभाव भांति बहुभाखा
एक अनीह[4] अरूप अनामा ❀ अज सच्चिदानन्द परधामा
व्यापक विश्वरूप भगवाना ❀ तेइ धरि देह चरित कृतनाना
सो केवल भक्तन[5] हित लागी ❀ परमकृपालु प्रणत अनुरागी
जेहि जनपर ममता अरु छोहू ❀ तेहि करुणानिधि कीन्ह न कोहू
गई बहोरि गरीब निवाजू ❀ सरल सबल साहिब रघुराजू
बुधवरणहिं हरियश असजानी ❀ करहिं पुनीत सफल निजबानी
तेहिबल मैं रघुपति गुणगाथा ❀ कहिहौं नाइ रामपद माथा
मुनिन प्रथम हरि कीरति गाई ❀ तेहिमगु चलत सुगममोहिं भाई

दो॰ अति अपार ते सरितवर, जे नृप सेतु कराहिं ।
चढ़िपिपीलिका[6] परमलघु, बिनुश्रमपारहि जाहिं ॥

यहिप्रकार बल मनहिं दिखाई ❀ करिहौं रघुपति कथा सुहाई
व्यास आदि कविपुंगव[7] नाना ❀ जिनसादर हरिचरित बखाना
चरण कमल वन्दौं सब केरे ❀ पुरवहु सकल मनोरथ मेरे
कलिके कविन करौं परणामा ❀ जिन वरणे रघुपति गुणग्रामा[8]
जे प्राकृत कवि परम सयाने ❀ भाषा जिन हरिचरित बखाने
भये जे अहहिं जे ह्वैहैं आगे ❀ प्रणवउँ सबहिं कपट छल त्यागे
होउ प्रसन्न देहु वरदानू ❀ साधु समाज भणित[9] सनमानू
जो प्रबन्ध बुध नहिं आदरहीं ❀ सो श्रम बादि बालकवि करहीं

१ वायु २ रुई ३ अथाह ४ चेष्टारहित ५ भक्त ६ चींटी ७ श्रेष्ठ कवि ८ गुणों के समूह ९ कही ॥

कीरति भणित भूति भलि सोई ❀ सुरसरि सम सबकहँ हितहोई
राम सुकीरति भणित भदेशा ❀ असमंजस असमोहिं अँदेशा
तुम्हरी कृपा सुलभ सब मोरे ❀ सियनि सुहावनि टाट पटोरे
करहु अनुग्रह अस जियजानी ❀ विमल यशहि अनुहरैसुबानी

दो० सरलकवितकीरतिविमल, सोइ आदरहिं सुजान।
सहज वैर बिसराय रिपु, जोसुनि करहिंबखान॥
सोनहोइबिनुविमलमति, मोहिंमतिबलअतिथोर।
करहुकृपा हरियशकहौं, पुनि पुनि करहुँ निहोर॥
कवि कोविद रघुवर चरित, मानसमंजु मराल।
बालविनयसुनि सुरुचिलखि, मोपर होहु कृपाल॥

सो० वन्दौं मुनिपदकंजु, रामायण जिन निर्मयउ।
सखर सकोमल मंजु, दोषरहित दूषण सहित॥
वन्दौं चारहु वेद, भववारिधि बोहित सरिस।
जिनहिंनसपनेहुँखेद, वरणतरघुपति विमलयश॥
वन्दौं विधिपद रेनु, भवसागर जिन कीन्ह यह।
संत सुधा शशिधेनु, प्रकटे खल विष वारुणी॥

दो० विबुध विप्रबुध ग्रहचरण, वन्दि कहौं करजोरि।
ह्वै प्रसन्न पुरवहु सकल, मञ्जु मनोरथ मोरि॥

पुनि वन्दौं शारद सुरसरिता ❀ युगल पुनीत मनोहर चरिता
मज्जन पान पापहर एका ❀ कहत सुनत इक हर अविवेका
गुरु पितु मातु महेश भवानी ❀ प्रणऊं दीनबन्धु दिनदानी
सेवक स्वामि सखा सियपीके ❀ हितनिरुपधिसब विधि तुलसीके
कलिबिलोकिजगहित हरगिरजा ❀ शाबरमन्त्र जाल जिनासिरजा
अनमिल आखर अर्थ न जापू ❀ प्रकटत भाव महेश प्रतापू

१ गंगाजी २ मक्खन ३ नौका ४ मदिरा ५ अज्ञान ६ समूह॥

सो महेश मोपर अनुकूला ❀ करौं कथा मुद मंगलमूला
सुमिरि शिवाशिव पाय पसाऊं ❀ वरणौं राम चरित चितचाऊं[१]
भणितमोरि शिवकृपाविभाती ❀ शशिसमाजमिलि मनहुँसुराती
जो यहि कथहि सनेह समेता ❀ कहिहहिं सुनिहहिं समुझिसचेता
ह्वैहहिं रामचरण अनुरागी ❀ कलिमलरहित सुमंगल भागी

दो० सपनेहुँ सांचेहु मोहिं पर, जो हर गौरि पसाउ।
तौ फुर होइ जो कहहुँ सब, भाषा भणित प्रभाउ॥

वन्दौं अवधपुरी अति पावनि ❀ सरयू सरि कलिकलुषनशावानि
प्रणऊं पुर नर नारि बहोरी ❀ ममता जिनपर प्रभुहि न थोरी
सिय निन्दक अघ ओघे नशाये ❀ लोक विशोक बनाइ बसाये
वन्दौं कौशल्या दिशि प्राची ❀ कीरति जासु सकलजगमाची
जहँ प्रकट्यो रघुपति शशिचारू ❀ विश्वसुखद खलकमलतुषारू[६]
दशरथराव सहित सब रानी ❀ सुकृति सुमंगल मूरति जानी
करौं प्रणाम कर्म मन बानी ❀ करहु कृपा सुत सेवक जानी
जिनहिं विरचिबड़भयउ विधाता ❀ महिमाअवधि राम पितु माता

सो० वन्दौं अवध भुवाल, सत्य प्रेम जेहि राम पद।
बिछुरत दीनदयाल, प्रिय तन तृण इव परिहरेउ॥

प्रणवौं परिजन सहित विदेहू ❀ जिनहिं रामपद गूढ़ सनेहू
योग भोग महँ राखेउ गोई ❀ राम विलोकत प्रकटेउ सोई
प्रणवौं प्रथम भरत के चरणा ❀ जासु नेम व्रत जाइ न वरणा
रामचरण पंकज मन जासू ❀ लुब्ध मधुप इव तजै न पासू
वन्दौं लक्ष्मणपद जलजाता ❀ शीतल सुभग भक्त सुखदाता
रघुपति कीरति विमल पताका ❀ दण्डसमान भयो यश जाका
शेष सहस्र शीश जगकारन ❀ सो अवतरेउ भूमि भयटारन
सदा सो सानुकूल रह मोपर ❀ कृपासिन्धु सौमित्रि गुणाकर

१ प्रसाद २उमंग ३ पाप ४ समूह ५पूर्व ६ पाला ७ छिपा ८ भ्रमर ९कमल १०झंडी ११गुणखानि॥

रिपुसूदन पद कमल नमामी ❋ शूर सुशील भरत अनुगामी
महावीर विनऊं हनुमाना ❋ राम जासु यश आपु बखाना

सो० वन्दौं पवनकुमार, खलवन पावक ज्ञानघन।
जासु हृदय आगार, बसहिं राम शरचाप धर॥

कपिपति ऋच्छ निशाचर राजा ❋ अंगदादि जे कीश समाजा
वन्दौं सबके चरण सुहाये ❋ अधम शरीर राम जिन पाये
रघुपति चरण उपासक जेते ❋ खग मृग सुर नर असुर समेते
वन्दौं पद सरोज सब केरे ❋ जे बिनु काम राम के चेरे
शुक सनकादि भक्त मुनिनारद ❋ जे मुनिवर विज्ञान विशारद
वन्दौं सबहिं धरणि धरि शीशा ❋ करहु कृपा जन जानि मुनीशा
जनकसुता जगजननि जानकी ❋ अतिशय प्रियकरुणानिधानकी
ताके युग[1] पद कमल मनाऊं ❋ जासु कृपा निर्मलमति पाऊं
पुनि मन वचन कर्म्म रघुनायक ❋ चरणकमल वन्दौं सब लायक
राजिवनयन[2] धरे धनु शायक ❋ भक्तविपति भंजन सुखदायक

दो० गिरा अर्थजलवीचिसम, कहियत भिन्न न भिन्न।
वन्दौं सीताराम पद, जिनहिं परमप्रिय खिन्न॥

वन्दौं राम नाम रघुवरके ❋ हेतु कृशानु[3] भानु हिमकरके
विधि हरि हरमय वेद प्रानसे ❋ अगुण अनूपम गुणनिधानसे
महामन्त्र[4] जो जपत महेशू ❋ काशी मुक्ति हेतु उपदेशू
महिमा जासु जान गणराऊ[5] ❋ प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ
जान आदिकवि नाम प्रतापू ❋ भयउ शुद्ध करि उलटा जापू
सहसनाम सम सुनि शिवबानी ❋ जपि जेई पिय संग भवानी
हर्षे हेतु हेरि हर हीको ❋ किय भूषण तियभूषण तीको
नाम प्रभाव जान शिव नीके ❋ कालकूट[6] फल दीन्ह अमीके

दो० वर्षाऋतु रघुपति भगति, तुलसीशालि[7] सुदास।

१ दोनों २ रामचन्द्र ३ अग्नि ४ तारक ५ गणेश ६ विष ७ धान॥

राम नाम वर वरणयुग, श्रावण भादौं मास ॥

आखर मधुर मनोहर दोऊ ❀ वरण विलोचन जन जियजोऊ
सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू ❀ लोक लाहुं परलोक निबाहू
कहत सुनत सुमिरत सुठिनीके ❀ राम लषणसम प्रिय तुलसीके
वरणत वरण प्रीति बिलगाती ❀ ब्रह्मजीव सम सहज सँघाती
नर नारायण सरिस सुभ्राता ❀ जगपालक विशेष जनत्राता
भक्ति सुतिय कल करण विभूषण ❀ जगहितहेतु विमलविधु[१] पूषण[२]
स्वादुतोष[३]सम सुगति सुधाके ❀ कमठ शेष सम धर वसुधाके
जन मन मंजु कञ्ज मधुकरसे ❀ जीह यशोमति हरिहलधरसे

दो॰ एक छत्र इक मुकुटमणि, सब वर्णन पर जोउ ।
तुलसी रघुवर नामके, वर्ण विराजत दोउ ॥

समुझत सरिसनाम अरु नामी ❀ प्रीतिपरस्पर प्रभु अनुगामी
नाम रूप दोउ ईश उपाधी ❀ अकथअनादि सुसामुझिसाधी
को बड़ छोट कहत अपराधू ❀ सुनि गुणभेद समुझिहैं साधू
देखिय रूप नाम आधीना ❀ रूप ज्ञान नहिं नाम विहीना
रूप विशेष नाम बिनु जाने ❀ करतल[५]गत न परहिं पहिचाने
सुमिरिय नाम रूप बिनु देखे ❀ आवत हृदय सनेह विशेखे
नाम रूप गति अकथ कहानी ❀ समुझत सुखद न जात बखानी
अगुणसगुणबिच नामसुसाखी ❀ उभय प्रबोधक चतुर दुभाखी

दो॰ राम नाम मणि दीप धरु, जीह देहरी द्वार ।
तुलसी भीतर बाहिरो, जो चाहसि उजियार ॥

नामजीह जपि जागहिं योगी ❀ विरति विरंचि प्रपंच वियोगी
ब्रह्मसुखहिं अनुभवहिं अनूपा ❀ अकथ अनामय[६] नाम न रूपा
जाना चहहिं गूढ़गति जेऊ ❀ नाम जीह जपि जानहिं तेऊ
साधक नाम जपहिं लवलाये ❀ होहिं सिद्ध अणिमादिक पाये

---

१ चाम २ चन्द्रमा ३ सूर्य ४ संतोष ५ हथेली ६ रोगरहित ॥

जपहिं नाम जन आरत भारी ❀ मिटहिं कुसङ्कट होहिं सुखारी
राम भक्त जग चारि प्रकारा ❀ सुकृती[1] चारिउ अनघ उदारा
चहुँ चतुरन कहँ नाम अधारा ❀ ज्ञानी प्रभुहिं विशेष पियारा
चहुँ युग चहुँ श्रुति[2] नामप्रभाऊ ❀ कलिविशेष नहिं आन उपाऊ

दो० सकल[3] कामना हीन जे, राम भक्ति रसलीन।
नाम सुप्रेम पियूष[4] ह्रद, जिनहुँ किये मनमीन॥

अगुण सगुण दोउ ब्रह्मस्वरूपा ❀ अकथ अगाध अनादि अनूपा
मोरे मत बड़ नाम दुहूते ❀ कियजेहियुग निजवश निजहूते
प्रौढ़ सुजनजन जानहिं जनकी ❀ कहहुँ प्रतीति प्रीतिरुचिमनकी
एक दारु गत देखिय एकू ❀ पावक युग सम ब्रह्म विवेकू
उभय अगम युग सुगम नामते ❀ कहउँ नाम बड़ ब्रह्म रामते
व्यापक एक ब्रह्म अविनाशी ❀ सत चेतन घन आनँदराशी
असप्रभु हृदय अछत अविकारी ❀ सकलजीव जग दीन दुखारी
नाम निरूपण नाम यतनते ❀ सोउ प्रकटत जिमिमोल रतनते

दो० निर्गुण ते यहि भांति बड़, नाम प्रभाव अपार।
कहहुँ नाम बड़ राम ते, निज विचार अनुसार॥

राम भक्त हित नरतनु धारी ❀ सहिसङ्कट किय साधुसुखारी
नाम सप्रेम जपत अनयासा[5] ❀ भक्त होहिं मुद मंगल वासा
राम एक तापस तिय तारी ❀ नामकोटिखल कुमति सुधारी
ऋषिहित राम सुकेतुसुताकी[6] ❀ सहित सेन सुत कीन्ह बेबाकी
सहित दोष दुख दास दुराशा[7] ❀ दलैनाम जिमिरवि निशिनाशा
भंज्यो राम आपु भवचापू ❀ भव भयभंजन नाम प्रतापू
दंडकवन प्रभु कीन्ह सुहावन ❀ जनमन अमितनाम कियपावन
निशिचर निकर[8] दले रघुनन्दन ❀ नाम सकलकलिकलुषनिकन्दन

दो० शबरी गीध सुसेवकन, सुगति दीन्ह रघुनाथ।

---

१ निष्पाप २ वेद ३ सम्पूर्ण ४ अमृत ५ बेपरिश्रम ६ ताड़का ७ बुरीचाह ८ समूह॥

नाम उधारे अमित खल, वेद विदित गुणगाथ ॥

राम सुकण्ठ विभीषण दोऊ ❀ राखे शरण जान सब कोऊ
नाम अनेक गरीब निवाजे ❀ लोक वेद वर विरद विराजे
राम भालु कपि कटक[2] बटोरा ❀ सेतु[3] हेतु श्रम कीन्ह न थोरा
नाम लेत भवसिन्धु सुखाहीं ❀ करहु विचार सुजन मनमाहीं
राम सकुल रण रावण मारा ❀ सीय सहित निजपुर पगुधारा
राजाराम अवध रजधानी ❀ गावत गुण सुर मुनिवर बानी
सेवक सुमिरत नाम सप्रीती ❀ बिनुश्रम प्रबल मोह दल[4] जीती
फिरत सनेह मगन सुख अपने ❀ नाम प्रताप शोच नहिं सपने

दो० ब्रह्म राम ते नाम बड़, वरदायक वरदानि ।
रामचरितशतकोटिमहँ, लियमहेशजियजानि ॥

नाम प्रसाद शम्भु अविनाशी ❀ साज अमङ्गल मङ्गलराशी
शुक सनकादि सिद्ध मुनि योगी ❀ नाम प्रसाद ब्रह्मसुख भोगी
नारद जानेउ नाम प्रतापू ❀ जगप्रिय हरिहर हरि प्रिय आपू
नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू ❀ भक्तशिरोमणि भे प्रह्लादू
ध्रुव सगलानि जप्यो हरिनामू ❀ पायउ अचल अनूपम[5] ठामू
सुमिरि पवनसुत पावन नामू ❀ अपने वश करि राख्यो रामू
अपर अजामिल गज गणिकाऊ ❀ भये मुक्त हरिनाम प्रभाऊ
कहउँ कहां लागि नाम बड़ाई ❀ राम न सकहिं नाम गुणगाई

दो० राम नामको कल्पतरु, कलिकल्याण निवास ।
जो सुमिरत भे भागते, तुलसी तुलसीदास ॥

चहुँयुग तीनि काल तिहुँलोका ❀ भये नामजपि जीव विशोका
वेद पुराण सन्त मत येहू ❀ सकल सुकृतफल रामसनेहू
ध्यान प्रथम युग मखविधि दूजे ❀ द्वापर परितोषत प्रभु पूजे
कलि केवल मल मूल मलीना ❀ पाप पयोनिधि[6] जनमन मीना

१ सुग्रीव २ फ़ौज ३ पुल ४ फ़ौज ५ उपमारहित ६ समुद्र ॥

नाम काम तरु काल कराला ❀ सुमिरत शमन सकल जगजाला
रामनाम कलि अभिमत दाता ❀ हित परलोक लोक पितुमाता
नहिं कलिकर्म न भक्ति विवेकू ❀ राम नाम अवलम्बन एकू
कालनेमि कलि कपट निधानू ❀ नाम सुमति समरथ हनुमानू

दो० राम नाम नरकेशरी, कनककशिपुकलिकाल।
जापकजनप्रहलादजिमि, पालहिं दलिसुरशाल॥

भावकुभाव अनख आलसहूं ❀ नामजपत मंगल दिशि दसहूं
सुमिरि सो नाम रामगुण गाथा ❀ करौं नाइ रघुनाथहि माथा
मोरि सुधारिहि सो सब भांती ❀ जासु कृपा नहिं कृपा अघाती
राम. सुस्वामि सुसेवक मोसे ❀ निजदिशिदेखि दयानिधिपोसे
लोकहु वेद सुसाहिब रीती ❀ विनय सुनत पहिंचानत प्रीती
गनी गरीब ग्राम नर नागर ❀ पण्डित मूढ़ मलीन उजागर
सुकविकुकवि निजमतिअनुसारी ❀ नृपहिं सराहत सब नर नारी
साधु सुजान सुशील नृपाला ❀ ईश अंश भव परम कृपाला
सुनि सनमानहिं सबहिं सुबानी ❀ भणित भक्तिमतिगतिपहिंचानी
यह प्राकृत महिपाल स्वभाऊ ❀ ज्ञान शिरोमणि कोशलराऊ
रीझत राम सनेह निसोते ❀ को जग मन्द मलिनमति मोते

दो० शठ सेवककी प्रीति रुचि, रखिहहिं राम कृपालु।
उपलकियेजलयानजिन, सचिवसुमतिकपिभालु॥
हौंहु कहावत सब कहत, राम सहत उपहास।
साहिब सीतानाथ से, सेवक तुलसीदास॥

अति बड़ि मोरि ढिठाई खोरी ❀ सुनि अघ नरकहु नाक सिकोरी
समुझिसहमिमोहिं अपडर अपने ❀ सो सुधि राम कीन्ह नहिं सपने
सुनि अवलोकिसुचित चषचाही ❀ भक्तिमोरि मति स्वामि सराही
कहत नशाइ होइ हियनीकी ❀ रीझत राम जानि जनजीकी

१ मारक २ वाञ्छित ३ पुरुषसिंह ४ जप करनेवाला ५ चतुर ६ शिव ७ कथित ८ पत्थर॥

रहत न प्रभुचित चूक कियेकी ❁ करत सुरति सौबार हियेकी
जेहि अघ बधेउ ब्याधजिमि बाली ❁ फिरि सुकंठ सोइ कीन्ह कुचाली
सोइ करतूति विभीषण केरी ❁ सपनेहु सो न राम हियहेरी
ते भरतहिं भेंटत सनमाने ❁ राज सभा रघुवीर बखाने

दो० प्रभु तरुतर कपि डारपर, ते किय आपु समान।
तुलसी कहूँ न राम से, साहिब शीलनिधान॥
राम निकाई रावरी, है सबही को नीक।
जो यह सांची है सदा, तौ नीको तुलसीक॥
यहिविधिनिजगुणदोषकहि, सबहिंबहुरिशिरनाय।
वरणौं रघुवर विशद यश, सुनिकलिकलुषनशाय॥

याज्ञवल्क्य जो कथा सुहाई ❁ भरद्वाज मुनिवरहि सुनाई
कहिहौं सोइ संवाद बखानी ❁ सुनहु सकल सज्जन सुखमानी
शम्भु कीन्ह यह चरित सुहावा ❁ बहुरि कृपाकरि उमहिं सुनावा
सो शिव काकभुशुण्डिहि दीन्हा ❁ रामभक्ति अधिकारी चीन्हा
तेहिसन याज्ञवल्क्यमुनि पावा ❁ तिन पुनि भरद्वाजप्रति गावा
ते श्रोता बकता सम शीला ❁ समदर्शी जानहिं हरिलीला
जानहिं तीनिकाल निजज्ञाना ❁ करतलगत आमलक समाना
औरौ जे हरिभक्त सुजाँना ❁ कहहिंसुनहिंसमुझहिं विधिनाना

दो० मैं पुनि निज गुरुसन सुनी, कथा सुशूकरखेत।
समुझि नहीं तस बालपन, तब अतिरहेउँ अचेत॥
श्रोता बकता ज्ञाननिधि, कथा राम की गूढ़।
किमि समुझौं मैं जीवजड़, कलिमलग्रसितविमूढ़॥

तदपि कही गुरु बारहिंबारा ❁ समुझिपरी कछु मतिअनुसारा
भाषा बद्ध करब मैं सोई ❁ मोरे मन प्रबोध जेहि होई

१ सुग्रीव २ वृक्ष ३ फिरि ४ पाप ५ शिव ६ हथेली ७ चतुर ८ ज्ञान।

जस कछु बुधि विवेक बल मोरे ❀ तस कहिहौं हिय हरिके प्रेरे
निज सन्देह मोह भ्रम हरणी ❀ करौं कथा भवसरिता तरणी
बुध विश्राम सकल जनरञ्जनि ❀ रामकथा कलिकलुष विभञ्जनि
रामकथा कलि पन्नग भरणी ❀ पुनि विवेक पावकक हँ अरणी
रामकथा कलि कामद गाई ❀ सुजन सजीवनिमूरि सुहाई
सोइ बसुधातल सुधातरंगिनि ❀ भवभञ्जनि भ्रमभेकभुवंगिनि
असुरसेन सम नरकनिकंदिनि ❀ साधु विबुधकुलहित गिरिनंदिनि
सन्त समाज पयोधि रमासी ❀ विश्वभारधर अचल क्षमासी
यमगण मुहँमसि जगयमुनासी ❀ जीवनमुक्ति हेतु जनु कासी
रामहिं प्रिय पावनि तुलसीसी ❀ तुलसिदासहित हियहुलसीसी
शिवाप्रिय मेकलशैलसुतासी ❀ सकल सिद्धि सुख संपति रासी
सद्गुण सुरगण अम्ब अदितिसी ❀ रघुवर भक्ति प्रेमपरमितिसी

दो० राम कथा मन्दाकिनी, चित्रकूट चित चारु।
तुलसी सुभग सनेहवन, सिय रघुवीर विहारु॥

राम चरित चिन्तामणि चारू ❀ संतसुमति तियसुभग शृँगारू
जग मंगल गुण ग्राम रामके ❀ दानि मुक्ति धन धर्म्म धामके
सद्गुरु ज्ञान विराग योगके ❀ विबुध वैद्य भव भीम रोगके
जननि जनक सियराम प्रेमके ❀ बीज सकल व्रत धर्म नेमके
शमन पाप संताप शोकके ❀ प्रिय पालक परलोक लोकके
सचिव सुभट भूपति विचारके ❀ कुम्भज लोभउदधि अपारके
कामकोह कलिमल करिगनके ❀ केहरिशावक जनमन वनके
अतिथि पूज्य प्रीतम पुरारिके ❀ कामद घन दारिद दवारिके
मन्त्रमहामणि विषय व्यालके ❀ मेटत कठिन कुअंक भालके
हरण मोह मद तम दिनेकरसे ❀ सेवक शालिपाल जलधरसे
अभिमत दानि देव तरुवरसे ❀ सेवत सुलभ सुखद हरिहरसे

१ नौका २ अग्नि ३ समुद्र ४ गंगाजी ५ सुन्दर ६ देवता ७ अगस्त्य ८ क्रोध ९ सूर्य॥

सुकवि शरदनभ मन उडुगनसे ❀ रामभक्त जन जीवन धनसे
सकल सुकृत फल भूरि भोगसे ❀ जगहित निरुपधि साधुलोगसे
सेवक मन मानस मरालसे ❀ पावन गंग तरंग मालसे

दो॰ कुपथकुतर्ककुचालिकलि, कपट दम्भ पाखण्ड।
दहन रामगुणग्राम इमि, इन्धनअनलप्रचण्ड॥
राम चरित राकेशकर, शरद सुखद सबकाहु।
सज्जन कुमुद चकोर चित, हित विशेष बड़ लाहु॥

कीन्ह प्रश्न जेहिभांति भवानी ❀ जेहिविधि शङ्कर कहा बखानी
सो सब हेतु कहब मैं गाई ❀ कथा प्रबन्ध विचित्र बनाई
जिन यह कथा सुनी नहिं होई ❀ जनि आश्चर्य्य करैं सुनि सोई
कथा अलौकिक सुनहिं जे ज्ञानी ❀ नहिं आश्चर्य करहिं असजानी
रामकथा की मिति जग नाहीं ❀ अस प्रतीति जिनके मनमाहीं
नाना भांति राम अवतारा ❀ रामायण शतकोटि अपारा
कल्प भेद हरिचरित सुहाये ❀ भांति अनेक मुनीशन गाये
करिय न संशय अस उर आनी ❀ सुनिय कथा सादर रतिमानी

दो॰ राम अनन्त अनन्त गुण, अमित कथा विस्तार।
सुनिआश्चर्य्यनमानिहहिं, जिनकेविमलविचार॥

यहि विधि सब संशय करि दूरी ❀ शिर धरि गुरुपद पङ्कज धूरी
पुनि सबही विनवौं करजोरी ❀ करत कथा जेहि लागु न खोरी
सादर शिवहि नाइ अब माथा ❀ वरणौं विशद रामगुण गाथा
संवत सोरह सै इकतीसा ❀ करौं कथा हरिपद धरि शीसा
नवमी भौमवार मधु[६] मासा ❀ अवधपुरी यह चरित प्रकासा
जेहिदिन रामजन्म श्रुतिगावहिं ❀ तीरथ सकल तहां चलिआवहिं
असुर नाग खग नर मुनि देवा ❀ आय करहिं रघुनायक सेवा
जन्म महोत्सव रचहिं सुजाना ❀ करहिं राम कलकीरति गाना

१ नक्षत्र २ लाभ ३ तमन्तुब ४ बे प्रमाण ५ कमल ६ चैत्र ७ पक्षी ॥

दो॰ मज्जहिं सज्जन वृन्द बहु, पावन सरयू नीर।
जपहिं राम धरि ध्यान उर, सुन्दर श्याम शरीर॥

दरश परश मज्जन अरु पाना ❀ हरै पाप कह वेद पुराना
नदीपुनीत अमित महिमा अति ❀ कहि न सकै शारदाविमलमति
रामधामदा पुरी सुहावनि ❀ लोकसमस्तविदित जगपावनि
चारिखानि जगजीव अपारा ❀ अवध तजे तनु नहिं संसारा
सब विधि पुरी मनोहर जानी ❀ सकल सिद्धिप्रद मंगल खानी
विमल कथा कर कीन्ह अरम्भा ❀ सुनत नशाहिं काम मद दम्भा
रामचरित मानस यह नामा ❀ सुनत श्रवण पाइय विश्रामा
मनकर विषय अनल वन जरई ❀ सोई सुखी जो यहि सर परई
रामचरित मानस मुनि भावन ❀ विरचेउ शम्भु सुहावन पावन
त्रिविध दोष दुख दारिद दावन ❀ कलिकुचाल कलिकलुषनशावन
रचि महेश निज मानस राखा ❀ पाइ सुसमय शिवासन भाखा
ताते रामचरित मानस वर ❀ धरेउ नाम हियहेरि हरषि हर
कहौं कथा सोइ सुखद सुहाई ❀ सादर सुनहु सुजन मनलाई

दो॰ जसमानस जेहिविधि भयो, जगप्रचार जेहिहेतु।
अब सोइ कहौं प्रसंग सब, सुमिरिउमावृषकेतु॥

शम्भु प्रसाद सुमति हिय हुलसी ❀ रामचरित मानस कवि तुलसी
करउँ मनोहर मति अनुहारी ❀ सुजन सुचित सुनि लेहु सुधारी
सुमति भूमिथल हृदय अगाधू ❀ वेद पुराण उदधि घन साधू
वर्षहिं राम सुयश घन वारी ❀ मधुर मनोहर मंगलकारी
लीला सगुण जो कहहिं बखानी ❀ सोइ स्वच्छता करै मलहानी
प्रेम भक्ति जो वरणि न जाई ❀ सोइ मधुरता शीतलताई
सो जल सुकृत शालि हित होई ❀ रामभक्ति जग जीवन सोई
मेधामहिगत सो जल पावन ❀ सिमिटि श्रवणमगुचलेउसुहावन

१ समूह २ प्रकट ३ अग्नि ४ तालाब ५ पाप ६ प्रसिद्ध ७ शिव ८ समुद्र ९ जल॥

भरेउ सुमानस शिथिल थिराना ❀ सुखद शीत रुचि चारु चिराना

दो० सुठि सुन्दर संवाद वर, विरचेउ बुद्धि विचारि।
ते यहि पावन सुभग सर, घाट मनोहर चारि॥

सप्त प्रबन्ध सुभग सोपाना[1] ❀ ज्ञान नयन निरखत मनमाना
रघुपति महिमा अगुण अबाधा ❀ वरणब सोइ वर वारि अगाधा
रामसीय सम सलिल सुधासम ❀ उपमा वीचि विलास मनोरम
पुरइनि सघन चारु चौपाई ❀ युक्ति मंजु मणि सीप सुहाई
छन्द सोरठा सुन्दर दोहा ❀ सोइ बहुरंग कमल कुल सोहा
अरथ अनूप सुभाव सुभासा ❀ सोइ पराग[2] मकरन्द सुवासा
सुकृत पुञ्ज मंजुल अलि[3] माला ❀ ज्ञान विराग विचार मराला
धुनि अवरेव कवित गुण जाती ❀ मीन मनोहर ते बहुभाती
अर्थ धर्म्म कामादिक चारी ❀ कहब ज्ञान विज्ञान विचारी
नवरस जप तप योग विरागा ❀ ते सब जलचर चारु[4] तड़ागा
सुकृती साधु नाम गुण गाना ❀ ते विचित्र जलविहँग समाना
सन्त सभा चहुँ दिशि अमराई ❀ श्रद्धा ऋतु वसन्तसम गाई
भक्ति निरूपण विविध विधाना ❀ क्षमा दया द्रुम लता विताना
संयम नियम फूल फल नाना ❀ हरिपद रति रस वेद बखाना
औरौ कथा अनेक प्रसंगा ❀ तेइ शुक पिक बहुवरण विहंगा

दो० पुलक वाटिका बाग वन, सुख सुविहंग विहारु।
माली सुमन सनेह जल, सींचत लोचन चारु॥

जे गावहिं यह चरित सँभारे ❀ ते यहि ताल चतुर रखवारे
सदा सुनहिं सादर नर नारी ❀ ते सुरवर मानस[5] अधिकारी
अति खल जे विषयी बक कागा ❀ यहिसर निकट न जाहिंअभागा
शम्बुक[6] भेक[7] सिवार समाना ❀ इहां न विषय कथा रस नाना
तेहि कारण आवत हियहारे ❀ कामी काक बलाक[8] विचारे

१ सीढ़ी २ पुष्परस ३ भौंरा ४ सुन्दर ५ मानसरोवर ६ घोंघा ७ मेंढ़क ८ बगुलोंकीपांति ॥

आवत यहि सर अति कठिनाई ❀ राम कृपा बिनु आइ न जाई
कठिन कुसंग कुपंथ कराला ❀ तिनके वचन व्याघ्रहरि व्याला
गृह कारज नाना जंजाला ❀ तेइ अति दुर्गम शैल विशाला
वन बहु विषम मोह मद माना ❀ नदी कुतर्क भयकर नाना

दो॰ जे श्रद्धा सम्बल रहित, नहिं सन्तन कर साथ।
तिनकहँमानसअगमअति, जिनहिंनाप्रियरघुनाथ॥

जो करि कष्ट जाइ पुनि कोई ❀ जातहि नींद जुड़ाई होई
जड़ता जाड़ विषम उरलागा ❀ गयहु न मज्जन पाव अभागा
करि न जाइ सर मज्जन पाना ❀ फिरि आवहि समेत अभिमाना
जो बहोरि कोउ पूछन आवा ❀ सर निन्दाकरि ताहि सुनावा
सकल विघ्न व्यापहिं नहिं तेही ❀ राम सुकृपा विलोकहिं जेही
सोइ सादर सर मज्जन करई ❀ महाघोर त्रय ताप न जरई
ते नर यह सर तजहिं न काऊ ❀ जिनके रामचरण भल भाऊ
जो नहाइ चह यहि सर भाई ❀ तौ सतसंग करै मन लाई
अस मानस मानस चष चाही ❀ भइ कवि बुद्धि विमल अवगाही
भयो हृदय आनन्द उछाहू ❀ उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रवाहू
चली सुभग कविता सरितासी ❀ राम विमल यश जल भरितासी
सरयू नाम सुमंगलमूला ❀ लोक वेद मत मंजुल कूला
नदी पुनीत सुमानसनन्दिनि ❀ कलिमलतृणतरुमूल निकन्दिनि

दो॰ श्रोता त्रिविध समाजपुर, ग्राम नगर दुहुँकूल।
सन्तसभा अनुपम अवध, सकल सुमंगल मूल॥

राम भक्ति सुरसरि तहँ जाई ❀ मिली सुकीरति सरयु सुहाई
सानुज राम समर यश पावन ❀ मिलेउ महानद शोण सुहावन
युग बिच भक्ति देव धुनि धारा ❀ सोहत सहित सुविरति विचारा
त्रिविध ताप त्रासक त्रिमुहानी ❀ राम स्वरूप सिन्धु समुहानी

१ कभी २ साफ़ ३ लहरि ४ किनारा ५ अङ्क॥

मानस मूल मिली सुरसरिही ❀ सुनत सुजन मन पावनकरिही
बिचबिच कथा विचित्र विभागा ❀ जनु सरि तीर तीर वन बागा
उमा महेश विवाह बराती ❀ ते जलचर अगणित बहुभाँती
रघुवर जन्म अनन्द बधाई ❀ भ्रमर तरंग मनोहरताई

दो० बालचरित चहुँ बन्धु के, वनज विपुल बहुरंग।
नृप रानी परिजन सुकृत, मधुकर वारि विहंग॥

सीय स्वयंवर कथा सुहाई ❀ सरित सुहावनि सो छविछाई
नदी नाव बटु प्रश्न अनेका ❀ केवट कुशल उतर सविवेका
सुनि अनुकथन परस्पर होई ❀ पथिक समाज सोह सरि सोई
घोरधार भृगुनाथ रिसानी ❀ घाट सुबन्ध रामवरबानी
सानुज राम विवाह उछाहू ❀ सो सुखउमँग सुखद सबकाहू
कहत सुनत हरषहिं पुलकाहीं ❀ ते सुकृती मन मुदित नहाहीं
रामतिलक हित मंगल साजा ❀ पर्व योग जनु जुरेउ समाजा
काई कुमति केकयी केरी ❀ परी जासु फल विपति घनेरी

दो० शमन सकल उतपात अति, भरत चरित जप याग।
कलिअघखलअवगुणकथन, ते जलमल बककाग॥

कीरति सरित छहूं ऋतुरूरी ❀ समय सुहावनि पावनि भूँरी
हिमहिमशैलसुता शिव ब्याहू ❀ शिशिर सुखद प्रभुजन्म उछाहू
वरणब राम विवाह समाजू ❀ सो मुदमंगलमय ऋतुराजू
ग्रीषम दुसह राम वनगवनू ❀ पंथ कथा खर आतप पवनू
वर्षा घोर निशाचर रारी ❀ सुरकुल शालि सुमंगलकारी
राम राज्य सुख विनय बड़ाई ❀ विशद सुखद सोइ शरद सुहाई
सती शिरोमणि सिय गुणगाथा ❀ सोइगुण अमल अनूपम पाथा
भरत सुभाव सुशीतलताई ❀ सदा एकरस वरणि न जाई

दो० अवलोकनि बोलनि मिलनि, प्रीति परस्पर हास।

१ पानी के जीव २ कमल ३ मल्लाह ४ परशुराम ५ नाशक ६ सुन्दर ७ बहुत ८ बसंत ९ तेज़॥

भायप भक्ति चहुँ बन्धुकी, जल माधुरी सुवास॥

आरति विनय दीनता मोरी ❀ लघुता ललित सुवारि न थोरी
अद्भुत सलिल सुनत गुणकारी ❀ आस पियास मनो मलहारी
राम सुप्रेमहिं पोषत पानी ❀ हरत सकल कलिकलुष गलानी
भव श्रम शोषक तोषक तोषा ❀ शमन दुरित दुखदारिद दोषा
काम क्रोध मद मोह नशावन ❀ विमल विवेक विराग बढ़ावन
सादर मज्जन पान कियेते ❀ मिटत पाप परितांप हियेते
जिन यहि वारि न मानस धोये ❀ तिन कायर कलिकाल बिगोये
तृषित निरखि रविकर भववारी ❀ फिरहिं मृगा जिमि जीव दुखारी

दो॰ मति अनुहारि सुवारि गुण, गणिगुणि मन नहवाइ।
सुमिरि भवानी शंकरहिं, कह कवि कथा सुहाइ॥
अब रघुपति पद पंकरुह[२], हिय धरि पाय प्रसाद।
कहौं युगल मुनिवर्य्य कर, मिलन सुभग संवाद॥
भरद्वाज जिमि प्रश्नकिय, याज्ञवल्क्य मुनि पाय।
प्रथम मुख्य संवाद सोइ, कहिहौं हेतु बुझाय॥

भरद्वाज मुनि बसहिं प्रयागा ❀ तिनहिं रामपद अतिअनुरागा[३]
तापस शम दम दयानिधाना ❀ परमारथ पथ परम सुजाना
माघ मकरगत रवि जब होई ❀ तीरथपतिहिं[४] आव सब कोई
देव दनुज नर किन्नर श्रेणी ❀ सादर मज्जहिं सकल त्रिवेणी
पूजहिं माधव पद जलजाता ❀ परसि अक्षयवट हर्षित गाता
भरद्वाज आश्रम अति पावन ❀ परमरम्य मुनिवर मनभावन
तहां होइ मुनि ऋषयसमाजा ❀ जाहिं जे मज्जन तीरथराजा
मज्जहिं प्रात समेत उछाहा ❀ कहहिं परस्पर हरिगुणगाहा

दो॰ ब्रह्मनिरूपण धर्म्म विधि, वरणहिं तत्त्व विभाग।
कहहिं भक्ति भगवन्तकी, संयुत ज्ञान विराग॥

---

१ शोक २ कमल ३ प्रेम ४ प्रयाग ५ कथा॥

यहि प्रकार भरि माघ नहाहीं ❀ पुनिसबनिजंनिज आश्रम जाहीं
प्रति संवत अस होइ अनन्दा ❀ मकरमज्जि गमनहिं मुनिवृन्दा
एक बार भरि मकर नहाये ❀ सब मुनीस आश्रमन सिधाये
याज्ञवल्क्यमुनि परम विवेकी ❀ भरद्वाज राखेउ पद टेकी
सादर चरण सरोज पखारे ❀ अतिपुनीत आसन बैठारे
करि पूजा मुनि सुयश बखानी ❀ बोले अतिपुनीत मृदुबानी
नाथ एक संशय बड़ मोरे ❀ करतल वेदतत्त्व सब तोरे
कहत मोहिं लागत भयलाजा ❀ जो न कहौं बड़होइ अकाजा

दो० सन्तकहहिं असनीतिप्रभु, श्रुति पुराण अस गाव।
होइ न विमल विवेक उर, गुरुसन किहे दुराव ॥

अस विचारि प्रकटौं निजमोहू ❀ कहहु नाथ करि जनपर छोहू
राम नाम कर अमित प्रभावा ❀ सन्त पुराण उपनिषद गावा
सन्तत जपत शम्भु अविनाशी ❀ शिव भगवान ज्ञान गुणराशी
आकर चारि जीव जग अहहीं ❀ काशी मरत परमपद लहहीं
सोकि राममहिमा मुनिराया ❀ शिव उपदेश करत करि दाया
राम कवन प्रभु पूछौं तोहीं ❀ कहहु बुझाय कृपानिधि मोहीं
एक राम अवधेश कुमारा ❀ तिनकर चरित विदित संसारा
नारि विरह दुख लहेउ अपारा ❀ भयो रोष रण रावण मारा

दो०प्रभुसोइरामकिअपरकोउ, जाहि जपत त्रिपुरारि।
सत्यधाम सर्वज्ञ तुम, कहहु विवेक विचारि ॥

जैसे मिटै मोह भ्रम भारी ❀ कहहु सो कथा नाथ विस्तारी
याज्ञवल्क्य बोले मुसुकाई ❀ तुम्हहिं विदित रघुपति प्रभुताई
राम भक्त तुम मन क्रम बानी ❀ चतुराई तुम्हारि मैं जानी
चाहहु सुना राम गुण गूढ़ा ❀ कीन्हेउ प्रश्न मनहुँ अतिमूढ़ा
तात सुनहु सादर मनलाई ❀ कहहुँ राम की कथा सुहाई

१ अपने २ साल ३ कोमल वाणी ४ वेद ५ लगातार ६ क्रोध ७ कर्म ॥

महामोह महिषेश[1] विशाला ❀ रामकथा कालिका कराला
राम कथा शशि[2] किरणि समाना ❀ सन्त चकोर करहिं जेहि पाना
ऐसहि संशय कीन्ह भवानी ❀ महादेव तब कहा बखानी

दो० कहौं सोमतिअनुहारिअब, उमा शम्भु संवाद।
भयउसमयजेहिहेतु[3] जेहि, सुनुमुनिमिटहिंविषाद॥

एक बार त्रेतायुग माहीं ❀ शम्भु गये कुम्भजऋषि पाहीं
संग सती जग जननि भवानी ❀ पूजे ऋषि अखिलेश्वर जानी
राम कथा मुनिवर्य्य बखानी ❀ सुनी महेश परम सुख मानी
ऋषि पूंछी हरिभक्ति सुहाई ❀ कही शम्भु अधिकारी पाई
कहत सुनत रघुपति गुणगाथा ❀ कछु दिन तहां रहे गिरिनाथा
मुनिसन बिदा मांगि त्रिपुरारी ❀ चले भवन सँग दच्छकुमारी
तेहि अवसर भंजन महिभारा ❀ हरिरघुवंश लीन्ह अवतारा
पिता वचन तजि राज उदासी ❀ दण्डकवन विचरत अविनासी

दो० हृदय विचारत जात हर, केहिविधि दरशन होय।
गुप्त[4] रूप अवतरेउ प्रभु, गये जानि सब कोय॥
सो० शङ्कर उर[5] अति छोभ, सती न जानहिं मर्म सो।
तुलसी दरशन लोभ, मनडरलोचन लालची॥

रावण मरण मनुजकर यांचा ❀ प्रभु विधिवचन कीन्हचह सांचा
जो नहिं जाउँ रहै पछितावा ❀ करत विचार न बनत बनावा
यहि विधि भये शोचवश ईशा ❀ ताही समय जाय दशशीशा
लीन्ह नीच मारीचहि संगा ❀ भयउ तुरत सो कपटकुरंगा[6]
करि छल मूढ़ हरी वैदेही ❀ प्रभु प्रभाव तस विदित न तेही
मृगवधि बन्धु सहित प्रभुआये ❀ आश्रम देखि नयन जलछाये
विरह विकल नर इव[7] रघुराई ❀ खोजत विपिन[8] फिरत दोउ भाई
कबहुँक योग वियोग[9] न जाके ❀ देखा प्रकट विरहदुख ताके

१ महिषासुर २ चन्द्र ३ कारण ४ छिपा हुआ ५ हृदय ६ हरिण ७ नाईं ८ बन ९ जुदाई॥

दो॰ अतिविचित्ररघुपतिचरित, जानहिं परम सुजान।
जे मतिमन्द विमोहवश, हृदयधरहिं कछुआन॥

शम्भु समय तेहि रामहिं देखा ❀ उपजा हिय अतिहर्ष विशेखा
भरिलोचन छविसिन्धु निहारी ❀ कुसमय जानि न कीन्ह चिन्हारी
जय सच्चिदानन्द जगपावन ❀ अस कहि चले मनोजनशावन
चले जात शिव सती समेता ❀ पुनिपुनि पुलकित कृपानिकेता
सती सुदशा शम्भु की देखी ❀ उर उपजा संदेह विशेखी
शंकर जगतवन्द्य जगदीशा ❀ सुर नर मुनि सब नावतशीशा
तिन नृपसुतहि कीन्ह परणामा ❀ कहि सच्चिदानन्द परधामा
भये मगन छवि तासु विलोकी ❀ अजहुँ प्रीति उर रहति न रोकी

दो॰ ब्रह्म जोऽव्यापकविरजअज, निर्गुण अकल अभेद।
सोकि देह धरि होइ नर, जाहि न जानत वेद॥

विष्णु जो सुरहित नरतनुधारी ❀ सोउ सर्वज्ञ यथा त्रिपुरारी
खोजहिं सोकि अज्ञं इव नारी ❀ ज्ञानधाम श्रीपति असुरारी
शम्भुगिरा पुनि मृषा न होई ❀ शिव सर्वज्ञ जान सब कोई
अस संशय मन भयउ अपारा ❀ होइ न हृदय प्रबोध प्रचारा
यद्यपि प्रकट न कहेउ भवानी ❀ हर अन्तरयामी सब जानी
सुनहु सती तव नारिस्वभाऊ ❀ संशय अस न धरिय उर काऊ
जासु कथा कुम्भजऋषि गाई ❀ भक्ति जासु मैं मुनिहि सुनाई
सोइ मम इष्टदेव रघुवीरा ❀ सेवहिं जाहि सदा मुनिधीरा

छं॰ मुनिधीरयोगीसिद्धसन्ततविमलमनजेहिध्यावहीं।
कहिनेतिनिगमपुराणआगमजासुकीरतिगावहीं॥
सोइराम व्यापकब्रह्म भुवन निकायपतिमायाधनी।
अवतरेउअपनेभक्तहित निजतंत्रनितरघुकुलमनी॥

१ शिव २ जो घटे बढ़े नहीं ३ मूढ़ ४ झूठ ५ अगस्त्य ६ सदैव ७ मलरहित ८ समूह॥

सो० लाग न उर उपदेश, यदपि कहेउ शिव बारबहु।
बोले विहँसि महेश, हरि माया बल जानि जिय॥

जो तुम्हरे मन अति सन्देहू ❀ तौ किन जाइ परीक्षा लेहू
तब लगि बैठि रहौं बट छाहीं[1] ❀ जब लगि तुम ऐहहु मोहिंपाहीं
जैसे जाइ मोह भ्रम भारी ❀ करेहु सो यतन विवेक विचारी
चलीं सती शिव आयसु[2] पाई ❀ करहिं विचार करौं का भाई
इहां शम्भु अस मन अनुमाना ❀ दक्षसुता[3] कहँ नहिं कल्याना
मोरेहु कहे न संशय जाहीं ❀ विधि विपरीत[4] भलाई नाहीं
होइहि सोइ जो राम रचि राखा ❀ को करि तर्क[5] बढ़ावहि शाखा
अस कहि जपनलगे हरिनामा ❀ गईं सती जहँ प्रभु सुखधामा

दो० पुनि पुनि हृदयविचारकरि, धरि सीताकर रूप।
आगे ह्वै चलि पंथ तेहि, जेहि आवत सुरभूप॥

लक्ष्मण दीख सती कृतवेषा ❀ चकित भयउ भ्रम हृदय विशेषा
कहि न सकत कछु अतिगम्भीरा ❀ प्रभु प्रभाव जानत मतिधीरा
सती कपट[6] जानेउ सुरस्वामी ❀ समदर्शी सब अन्तरयामी
सुमिरत जाहि मिटै अज्ञाना ❀ सोइ सर्वज्ञ राम भगवाना
सती कीन्ह चह तहउँ दुराऊ[7] ❀ देखहु नारि स्वभाव प्रभाऊ
निज मायाबल हृदय बखानी ❀ बोले विहँसि राम मृदुबानी
जोरि पाणि प्रभु कीन्ह प्रणामू ❀ पिता समेत लीन्ह निजनामू
कहेउ बहोरि कहां वृषकेतू ❀ विपिन अकेलि फिरहु केहि हेतू

दो० रामवचन मृदु गूढ़ सुनि, उपजा अति संकोच।
सती सभीत महेश पहँ, चलीं हृदय बड़ शोच॥

मैं शंकर कर कहा न माना ❀ निज अज्ञान रामपर आना
जाइ उतर अब देहौं काहा ❀ उर उपजा अतिदारुण[8] दाहा
जाना राम सती दुख पावा ❀ निज प्रभाव कछु प्रकट जनावा

१ बरगद २ आज्ञा ३ सती ४ उलटा ५ विचार ६ छल ७ छिपाना ८ बड़ा घोर॥

सती दीख कौतुक मग जाता ❀ आगे राम सहित सियभ्राता
फिरि चितवा पाछे प्रभु देखा ❀ सहित बन्धु सिय सुन्दरवेखा
जहँ चितवहिं तहँ प्रभुआसीनां ❀ सेवहिं सिद्ध मुनीश प्रवीना
देखे शिव विधि विष्णु अनेका ❀ अमित प्रभाव एकते एका
बन्दत चरण करत प्रभुसेवा ❀ विविध वेष देखे सब देवा

दो० सती विधात्री इन्दिरा, देखी अमित अनूप।
जेहि जेहि वेष अजादिसुर[3], तेहितेहितनुअनुरूप ॥

देखे जहँ तहँ रघुपति जेते ❀ शक्तिन सहित सकल सुर तेते
जीव चराचर जे संसारा ❀ देखे सकल अनेक प्रकारा
पूजहिं प्रभुहि देव बहु वेखा ❀ रामरूप दूसर नहिं देखा
अवलोके रघुपति बहुतेरे ❀ सीता सहित न वेष घनेरे
सोइ रघुवर सोइ लक्ष्मण सीता ❀ देखि सती अतिभई सभीतो
हृदय कम्प तनु सुधि कछु नाहीं ❀ नयन मूंदि बैठीं मगु माहीं
बहुरि विलोकेउ नयन उघारी ❀ कछु न दीख तहँ दक्षकुमारी
पुनि पुनि नाइ रामपद शीशा ❀ चलीं तहां जहँ रहे गिरीशाँ

दो० गईं समीप महेश तब, हँसि पूंछी कुशलात।
लीन्ह परीक्षा कवन विधि, कहहु सत्य सबबात ॥

सती समुझि रघुवीर प्रभाऊ ❀ भयवश शिवसन कीन्ह दुराऊ
कछु न परीक्षा लीन्ह गुसाईं ❀ कीन्ह प्रणाम तुम्हारिहि नाईं
जो तुम कहा सो मृषा न होई ❀ मोरे मन प्रतीति अति सोई
तब शंकर देखेउ धरि ध्याना ❀ सती जो कीन्ह चरित सबजाना
बहुरि राम मायहि शिरनावा ❀ प्रेरि सतिहि जेहि झूठ कहावा
हरि इच्छा भावी बलवाना ❀ हृदय विचारत शम्भु सुजाना
सती कीन्ह सीता कर वेषा ❀ शिवउर भयउ विषाद विशेषा
जो अब करों सती सन प्रीती ❀ मिटै भक्तिपथ होइ अनीती

१ बैठे हुये २ लक्ष्मी ३ देवता ४ बहुत ५ डरपी ६ सती ७ शिव ८ विश्वास ९ होनहार १० दुःख ॥

दो० परमप्रेम नहिं जाय तजि, किये प्रेम बड़ पाप ।
प्रकट न कहत महेश कछु, हृदय अधिकसन्ताप ॥

तबहिं शम्भु प्रभुपद शिरनावा ❀ सुमिरत राम हृदय अस आवा
यहितन सातिहि भेंट मोहिं नाहीं ❀ शिव संकल्प कीन्ह मनमाहीं
अस विचारि शंकर मतिधीरा ❀ चले भवन सुमिरत रघुवीरा
चलत गगन भइ गिरा सुहाई ❀ जय महेश भलि भक्ति दृढ़ाई
असप्रण तुम बिनु करै को आना ❀ रामभक्त समरथ भगवाना
सुनि नभगिरा सती उर शोचू ❀ पूछा शिवहि समेत सँकोचू
कीन्ह कवन प्रण कहहु कृपाला ❀ सत्यधाम प्रभु दीनदयाला
यदपि सती पूंछा बहु भाँती ❀ तदपि न कहेउ त्रिपुरआरांती

दो० सती हृदय अनुमान किय, सब जाना सर्वज्ञ ।
कीन्ह कपट मैं शम्भुसन, नारिसहज जड़अज्ञ ॥

सो० जल पयसरिस बिकाय, देखहुप्रीतिकिरीतिभल ।
बिलग होत रस जाय, कपट खटाई परतहीं ॥

हृदय शोच समुझत निजकरणी ❀ चिन्ता अमित जाइ नहिं वरणी
कृपासिन्धु शिव परमअगाधा ❀ प्रकट न कहेउ मोर अपराधा
शंकर रुख अवलोकि भवानी ❀ प्रभु मोहिंतजेउहृदय अकुलानी
निजअघसमुझि न कछु कहिजाई ❀ तपै अवाँ इव उर अधिकाई
सातिहि सशोच जानि वृषकेतू ❀ कहेउ कथा सुन्दर सुखहेतू
वरणत पंथ विविध इतिहासा ❀ विश्वनाथ पहुँचे कैलासा
तहँ पुनिसमुझिशम्भु प्रणआपन ❀ बैठे वटतर करि कमलासन
शंकर सहज स्वरूप सँभारा ❀ लागि समाधि अखंड अपारा

दो० सती बसहिं कैलास तब, अधिक शोच मनमाहिं ।
मर्म न कोऊ जान कछु, युगसम दिवस सिराहिं ॥

नित नव शोच सती उरभारा ❀ कब जैहौं दुखसागर पारा

---

१ वाणी २ त्रिपुरासुर के शत्रु, शिव ३ देखि ४ पाप ५ भेद ६ बराबर ॥

मैं जो कीन्ह रघुपति अपमाना ❀ पुनि पतिवचन मृषा[1] करि जाना
सो फल मोहिं विधाता दीन्हा ❀ जो कछु उचित रहा सो कीन्हा
अब विधि असबूझिय नहिं तोहीं ❀ शंकर विमुख जियावहु मोहीं
कहि न जाय कछु हृदय गलानी ❀ मनमहँ रामहिं सुमिरि सयानी
जो प्रभु दीनदयालु कहावा ❀ आरतिहरण वेद यश गावा
तौ मैं विनय करौं करजोरी ❀ छूटै वेगि देह यह मोरी
जो मोरे शिवचरण सनेहू ❀ मन क्रम वचन सत्यव्रत येहू

दो० तौ समदर्शी सुनिय प्रभु, करो सो वेगि उपाय।
होइमरणजेहि बिनहिंश्रम, दुस्सह विपतिविहाय॥

यहिविधि दुखित प्रजेशकुमारी[3] ❀ अकथनीय दारुण दुखभारी
बीते संवत सहस सतासी ❀ तजी समाधि शम्भु अविनासी
राम नाम शिव सुमिरण लागे ❀ जानेउ सती जगतपति जागे
जाइ शम्भुपद वन्दन कीन्हा ❀ सम्मुख शङ्कर आसन दीन्हा
लगे कहन हरिकथा रसाला ❀ दक्ष प्रजेश भये तेहिकाला
देखा विधि विचारि सब लायक ❀ दक्षहि कीन्ह प्रजापति नायक
बड़ अधिकार दक्ष जब पावा ❀ अति अभिमान हृदय तब आवा
नहिं कोउ अस जन्मेउ जगमाहीं ❀ प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं

दो० दक्ष लिये मुनि बोलि तब करन लगे बड़ यांग।
नेवते सादर सकल सुर, जे पावत मख भाग॥

किन्नर नाग सिद्ध गन्धर्व्वा ❀ बधुन समेत चले सुर सर्व्वा
विष्णु विरञ्चि महेश विहाई ❀ चले सकल सुर यान बनाई
सती विलोकेउ व्योम विमाना ❀ जातचले सुन्दर विधिनाना
सुरसुन्दरी करहिं कल गाना ❀ सुनत श्रवण छूटहिं मुनिध्याना
पूंछेउ तब शिव कहेउ बखानी ❀ पितायज्ञ सुनि कछु हरषानी
जो महेश मोहिं आयसु देहीं ❀ कछु दिन जाय रहौं मिसु एहीं

१ निंदा २ झूठ ३ दक्ष की बेटी ४ रखारी ५ यज्ञ ६ छोड़ ७ विमान ८ कान ९ बहाना॥

पति परित्याग हृदय दुख भारी ❀ कहैं न निज अपराध विचारी
बोलीं सती मनोहर बानी ❀ भय संकोच प्रेम रस सानी

दो० पिता भवन उत्सव परम, जो प्रभु आयसु होइ।
तौ मैं जाउँ कृपायतन, सादर देखन सोइ॥

कहेउ नीक मोरे मन भावा ❀ यह अनुचित नहिं नेवत पठावा
दक्ष सकल निज सुता बुलाई ❀ हमरे बैर तुम्हैं बिसराई
ब्रह्मसभा हमसन दुखमाना ❀ तेहिते अजहुँ करहिं अपमाना
जो बिनु बोले जाहु भवानी ❀ रहै न शील सनेह न कानी
यदपि मित्र पितु प्रभु गुरुगेहा ❀ जाइय बिनु बोले न सँदेहा
तदपि विरोध मान जहँ कोई ❀ तहां गये कल्याण न होई
भाँति अनेक शम्भु समुझावा ❀ भावीवश न ज्ञान उर आवा
कह प्रभु जाहु जो बिनहिं बुलाये ❀ नहिं भलि बात हमारे भाये

दो० कहि देखा हर यतन बहु, रहै न दक्षकुमारि।
दिये मुख्य गण संग तब, बिदा किये त्रिपुरारि॥

पिता भवन जब गईं भवानी ❀ दक्ष त्रास काहु न सन्मानी
सादर भलेहि मिली इकमाता ❀ भगिनी मिलीं बहुत मुसुकाता
दक्ष न कछु पूंछी कुशलाता ❀ सतिहि विलोकि जरे सब गाता
सती जाय देखेउ तब यागा ❀ कतहुँ न दीख शम्भुकर भागा
तब चित चढ़ेउ जो शङ्कर कहेऊ ❀ प्रभु अपमान समुझि उर दहेऊ
पाछिल दुख न हृदय अस व्यापा ❀ जस यह भयउ महापरितापा
यद्यपि जग दारुण दुखनाना ❀ सबते कठिन जाति अपमाना
समुझि शोचि तिहिं भा अति क्रोधा ❀ बहुविधि जननी कीन्ह प्रबोधा

दो० शिव अपमान न जाइसहि, हृदय न होत प्रबोध।
सकलसभहिंहठिहटकितब, बोलीं वचन सक्रोध॥

सुनहु सभासद सकल मुनिंदा ❀ कही सुनी जिन शङ्कर निंदा

१ मर्याद २ यज्ञ ३ हिस्सा ४ दुःख ५ माता ६ समझाना॥

सो फल तुरत लहब सबकाहू ❀ भली भाँति पछिताब पिताहू
सन्त शम्भु श्रीपति अपवादा ❀ सुनिय जहाँ तहँ अस मर्य्यादा
काटिय तासु जीभ जु बसाई ❀ श्रवण मूंदि नहिं चलिय पराई
जगदात्मा महेश त्रिपुरारी ❀ जगतजनक सबके हितकारी
पिता मन्दमति निन्दत तेही ❀ दक्ष शुक्र सम्भव यह देही
तजिहौं तुरत देह तेहि हेतू ❀ उर धरि चन्द्रमौलि वृषकेतू
अस कहि योगअग्नि तनु जारा ❀ भयउ सकल मख हाहाकारा

दो०सतीमरणसुनि शम्भुगण, लगे करन मख खीश।
यज्ञविध्वंस विलोकि भृगु, रक्षा कीन्ह मुनीश॥

समाचार जब शंकर पाये ❀ वीरभद्र करि कोप पठाये
यज्ञ विध्वंस जाय तिन कीन्हा ❀ सकल सुरन विधिवत फल दीन्हा
भइ जग विदित दक्षगति सोई ❀ जस कछु शम्भुविमुख की होई
यह इतिहास सकल जगजाना ❀ ताते मैं संक्षेप बखाना
सतीमरत हरिसन वर मांगा ❀ जन्म जन्म शिवपद अनुरागा
तेहि कारण हिमगिरिगृह जाई ❀ जन्मी पारवती तनुपाई
जबते उमा शैलगृह जाई ❀ सकल सिद्धि सम्पति तहँ छाई
जहँ तहँ मुनिन सुआश्रम कीन्हें ❀ उचित वास हिमभूधर दीन्हें

दो०सदासुमनफल सहितसब, द्रुम नव नाना जाति।
प्रकटीं सुन्दर शैलपर, मणि आकर बहुभाँति॥

सरिता सब पुनीत जल बहईं ❀ खगमृग मधुप सुखी सब रहईं
सहज वैर सब जीवन त्यागा ❀ गिरिपर सकल करहिं अनुरागा
सोह शैल गिरिजा गृह आये ❀ जिमि नर रामभक्ति के पाये
नित नूतन मंगल गृह तासू ❀ ब्रह्मादिक गावहिं यश जासू
नारद समाचार सब पाये ❀ कौतुक हिमगिरि गेह सिधाये
शैलराज बड़ आदर कीन्हा ❀ पदपखारि वर आसन दीन्हा

१ पावहुगे २ पिता ३ मूढ़ ४ वीर्य्य ५ थोड़ा ६ हिमाचल ७ खानि ८ प्रीति ९ नया॥

नारिसहित मुनिपद शिरनावा ❀ चरणसलिल सब भवन सिंचावा
निज सौभाग्य बहुत गिरि वरणा ❀ सुता बोलि मेली मुनिचरणा

दो० त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ तुम, गति सर्वत्र तुम्हारि ।
कहहु सुताके दोषगुण, मुनिवर हृदय विचारि ॥

कह मुनि बिहँसि गूढ़ मृदुबानी ❀ सुता तुम्हारि सकलगुणखानी
सुन्दरि सहज सुशील सयानी ❀ नाम उमा अम्बिका भवानी
सब लक्षण सम्पन्न कुमारी ❀ होइहि सन्तत पियहि पियारी
सदा अचल यहिकर अहिवाता ❀ यहि ते यश पैहहिं पितु माता
होइहि पूज्य सकल जग माहीं ❀ यहि सेवत कछु दुर्लभ नाहीं
यहिकर नाम सुमिरि संसारा ❀ तिय चढ़िहहिं पतिव्रत असिधारा
शैल सुलक्षणि सुता तुम्हारी ❀ सुनहु जे अब अवगुण दुइचारी
अगुण अमान मातुपितु हीना ❀ उदासीन सब संशय छीना

दो० योगी जटिल अकाममन, नगन अमंगल वेख ।
असस्वामी यहिकहँमिलिहि, परीहस्त असरेख ॥

सुनि मुनिगिरा सत्य जिय जानी ❀ दुख दम्पतिहि उमा हरषानी
नारदहू यह भेद न जाना ❀ दशा एक समुझत बिलगाना
सकल सखी गिरिजा गिरि मैनाँ ❀ पुलक शरीर भरे जल नैना
होय न मृषा देवऋषि भाखा ❀ उमा सो वचन हृदय धरिराखा
उपजेउ शिवपद कमल सनेहू ❀ मिलन कठिन मन भा सन्देहू
जानि कुअवसर प्रीति दुराई ❀ सखि उछंग बैठी पुनि जाई
झूठि न होइ देवऋषि बानी ❀ शोचहिं दम्पति सखी सयानी
उरधरि धीर कहै गिरिराऊ ❀ कहहु नाथ काकरिय उपाऊ

दो० कहमुनीश हिमवन्तसुनु, जोविधिलिखालिलार ।
देव दनुज नर नाग मुनि, कोउ न मेटनहार ॥

तदपि एक मैं कहौं उपाई ❀ होइ किये जो दैव सहाई

१ श्रेष्ठ २ युक्त ३ हमेशा ४ सुहाग ५ तलवार ६ स्त्री-पुरुष ७ पार्वती की माता ८ छिपाई ॥

जस वर मैं बरणेउँ तुम पाहीं ❀ मिलिहि उमहिं कछु संशय नाहीं
जे जे वर के दोष बखाने ❀ ते सब शिव पहँ मैं अनुमाने
जो विवाह शंकर सन होई ❀ दोषहु गुण सम कह सब कोई
जो अहिसेजे शयन हरि करहीं ❀ बुध कछु तिनकहँ दोष न धरहीं
भानु कृशानु सर्व रस खाहीं ❀ तिनकहँ मन्द कहत कोउ नाहीं
शुभ अरु अशुभ सलिल सबबहई ❀ सुरसरि कोउ न अपावन कहई
समरथ कहँ नहिं दोष गुसाईं ❀ रवि पावक सुरसरि की नाईं

दो०जो अस हिसका करहिं नर, जड़ विवेक अभिमान।
परहिं कल्पभरि नरकमहँ, जीव कि ईश समान॥

सुरसरि जलकृत वारुणि जाना ❀ कबहुँ न संत करहिं तिहिपाना
सुरसरि मिले सुपावन जैसे ❀ ईश अनीशहि अन्तर तैसे
शम्भु सहज समरथ भगवाना ❀ यह विवाह सब विधि कल्याना
दुराराध्य पै अहहिं महेशू ❀ आशुतोष पुनि किये कलेशू
जो तप करै कुमारि तुम्हारी ❀ भाविउ मेटि सकैं त्रिपुरारी
यद्यपि वर अनेक जगमाहीं ❀ इन कहँ शिव तजि दूसर नाहीं
वरदायक प्रणतारति भञ्जन ❀ कृपासिन्धु सेवक मन रञ्जन
इच्छित फल बिनु शिव आराधे ❀ लहै न कोटि योग जप साधे

दो०असकहिनारदसुमिरिहरि,गिरिजहिंदीन्हअशीश।
होइहि अब कल्याण सब, संशय तजहु गिरीश॥

असकहि ब्रह्मभवन मुनि गयऊ ❀ आगिलचरितसुनहु जस भयऊ
पतिहि इकांत पाय कह मैना ❀ नाथ न मैं समुझिउँ मुनिबैना
जो घर वर कुल होइ अनूपा ❀ करिय विवाह सुता अनुरूपा
नतु कन्या बरु रहै कुमारी ❀ कन्त उमा मम प्राणपियारी
जो न मिलिहि वर गिरिजहियोगू ❀ गिरिजड़ सहज कहहिं सबलोगू
सोइ विचारि पति करहु विवाहू ❀ जेहि न बहोरि होइ उरदाहू

१ शेषशय्या २ नीच ३ मदिरा ४ शीघ्र ५ ध्यान किये से ६ बल्कि ७ पति ८ हृदयमें जलन॥

असकहि परी चरण धरि शीशा ❀ बोले सहित सनेह गिरीशा
बरु पावक प्रकटै शशिमाहीं ❀ नारद वचन अन्यंथा नाहीं

दो० प्रिया शोच परिहरहु अब, सुमिरहु श्रीभगवान।
पारवती जिन निर्म्मयउ, सोइ करिहैं कल्यान॥

अब जो तुमहिं सुता पर नेहू ❀ तौ अस जाइ सिखावन देहू
करै सो तप जेहि मिलहिं महेशू ❀ आन उपाय न मिटिहि कलेशू
नारद वचन सगर्व सहेतू ❀ सुन्दर सब गुणनिधि वृषकेतू
अस विचारि सब तजहु अशंका ❀ सबहि भाँति शंकर निकलंका
सुनि पति वचन हर्ष मन माहीं ❀ गईं तुरत उठि गिरिजा पाहीं
उमहिं विलोकि नयन भरिवारी ❀ सहित सनेह गोद बैठारी
बारहिंबार लेति उरलाई ❀ गदगद कण्ठ न कछु कहिजाई
जगत मातु सर्वज्ञ भवानी ❀ मातु सुखद बोली मृदुबानी

दो० सुनहु मातु मैं दीख अस, सपन सुनाऊं तोहिं।
सुन्दर विप्र सुगौर वर, अस उपदेशउ मोहिं॥

करहु जाइ तप शैलकुमारी ❀ नारद कहा सो सत्य विचारी
मातु पितहि पुनि यह मत भावा ❀ तप सुखप्रद दुखदोष नशावा
तपबल रचैं प्रपंचै विधाता ❀ तपबल विष्णु सकल जग त्राता
तपबल शम्भु करहिं संहारा ❀ तपबल शेश धरहिं महिभारा
तप अधार सब सृष्टि भवानी ❀ करहु जाइ तप अस जियजानी
सुनत वचन विस्मित महतारी ❀ सपन सुनायहु गिरिहि हँकारी
मातु पितहि बहुविधि समुझाई ❀ चलीं उमा तपहितै हरषाई
प्रिय परिवार पिता अरु माता ❀ भये विकल मुख आव न बाता

दो० वेदंगिरा मुनि आइ तब, सबहिं कहा समुझाइ।
पारवती महिमा सुनत, रहे प्रबोधहि पाइ॥

उर धरि उमा प्राणपति चरना ❀ जाइ विपिनैं लागीं तप करना

१ झूठ २ प्रेम ३ संसार ४ नाश ५ तप के लिये ६ व्यास ७ बन॥

अति सुकुमारि न तनु तपयोगू ❀ पति पद सुमिरि तजेउ सबभोगू
नित नव चरण उपज अनुरागा ❀ बिसरी देह तपहि मन लागा
संवत सहस मूल फल खाये ❀ शाक खाइ शत वर्ष गँवाये
कछु दिन भोजन वारि बतासा[1] ❀ किये कठिन कछु दिन उपवासा
बिल्वपत्र महि परहिं सुखाई ❀ तीनि सहस संवत सो खाई
पुनि परिहरेउ सुखानेउ पर्णा[2] ❀ उमहिं नाम तब भयउ अपर्णा
देखि उमहिं तप क्षीण[3] शरीरा ❀ ब्रह्म गिरा भइ गगन गँभीरा

दो॰ भयउ मनोरथ सफल तव, सुनु गिरिराजकुमारि।
परिहरु दुसह कलेश सब, अब मिलिहैं त्रिपुरारि॥

अस तप काहु न कीन्ह भवानी ❀ भये अनेक धीर मुनि ज्ञानी
अब उर धरहु ब्रह्म वर बानी ❀ सत्य सदा सन्तत शुचि[5] जानी
आवैं पिता बुलावन जबहीं ❀ हठ परिहरि घरजायहु तबहीं
मिलहिं तुमहिं जब सप्त ऋषीशा ❀ तब जानेहु प्रमाण वागीशा[6]
सुनत गिरा विधि गगन बखानी ❀ पुलकगात गिरिजा हरषानी
उमा चरित सुन्दर मैं गावा ❀ सुनहु शम्भुकर चरित सुहावा
जब ते सती जाइ तनु त्यागा ❀ तब ते शिवमन भयउ विरागा
जपहिं सदा रघुनायक नामा ❀ जहँ तहँ सुनहिं रामगुणग्रामा

दो॰ चिदानन्द सुखधाम शिव, विगत मोह मदकाम।
विचरहिंमहिधरिहृदयहरि, सकललोकअभिराम॥

कतहुँ मुनिन उपदेशहिं ज्ञाना ❀ कतहुँ रामगुण करहिं बखाना
यदपि अकाम तदपि भगवाना ❀ भक्त विरह दुख दुखित सुजाना
यहि विधि गयउ काल[7] बहुबीती ❀ नित नव होइ रामपद प्रीती
नेम प्रेम शंकर कर देखा ❀ अविचल हृदय भक्ति की रेखा
प्रकटे राम कृतज्ञ कृपाला ❀ रूप शील बल तेज विशाला
बहु प्रकार शंकरहिं शराहा ❀ तुम बिनु असप्रण को निर्वाहा

१ वायु २ पत्ते ३ दुर्बल ४ छोड़ो ५ पवित्र ६ ब्रह्मवाणी ७ समय ॥

बहुविधि राम शिवहि समुझावा ❀ पारवती कर जन्म सुनावा
अति पुनीत[१] गिरिजा की करणी ❀ विस्तर सहित कृपानिधि वरणी

दो० अब विनती ममसुनहुशिव, जो मोपर निज नेहु।
जाय विवाहहु शैलजहि[२], यह मोहिं मांगे देहु॥

कह शिव यदपि उचित अस नाहीं ❀ नाथ वचन पुनि मेटि न जाहीं
शिरधरि आयसु[३] करिय तुम्हारा ❀ परमधर्म यह नाथ[४] हमारा
मातु पिता प्रभु गुरुकी बानी ❀ बिनहि विचार करिय शुभ जानी
तुम सब भाँति परम हितकारी ❀ आज्ञा शिरपर नाथ तुम्हारी
प्रभु तोषेउ सुनि शंकर वचना ❀ भक्ति विवेक[५] धर्म्म युत रचना
कह प्रभु हर तुम्हार प्रण रहेऊ ❀ अब उर राखेउ जो हम कहेऊ
अन्तर्द्धान भये अस भाखी ❀ शंकर सोइ मूरति उर राखी
तबहिं सप्तऋषि शिव पहँ आये ❀ बोले प्रभु अति वचन सुहाये

दो० पारवती पहँ जाइ तुम, प्रेम परीक्षा लेहु।
गिरिहि प्रेरि पठयहु भवन[६], दूरि करेहु सन्देहु॥

सुनि शिववचन परम सुख मानी ❀ चले हरषि जहँ रहीं भवानी
ऋषिन गौरि देखी तहँ कैसी ❀ मूरतिवन्त तपस्या जैसी
बोले मुनि सुनु शैलकुमारी ❀ करहु कवन कारण तप भारी
केहि आराधहु का तुम चहहू ❀ हम सन सत्य मर्म्म[७] सब कहहू
सुनत ऋषिन के वचन भवानी ❀ बोलीं गूढ़ मनोहर बानी
कहत मर्म्म मन अति सकुचाई ❀ हँसिहहु सुनि हमारि जड़ताई[८]
मन हठ परेउ न सुनै सिखावा ❀ चहत वारिपर भीति उठावा
नारद कहा सत्य सोइ जाना ❀ बिनु पंखन हम चहहिं उड़ाना
देखहु मुनि अविवेक हमारा ❀ चाहत शिवहि सदा भर्तारा

दो० सुनत वचन बिहँसे ऋषय, गिरिसंभव[९] तव देह।
नारद कर उपदेश सुनि, कहहु बसेउ केहि गेह॥

---

१ पवित्र २ पार्वती को ३ आज्ञा ४ स्वामी ५ ज्ञान ६ घर ७ भेद ८ मूर्खता ९ उत्पन्न॥

दक्षसुतन उपदेशिनि जाई ❁ तिन फिरि भवन न देखा आई
चित्रकेतु कर घर उन घाला ❁ कनककशिपु कर पुनि असहाला
नारद शिष जु सुनहिं नर नारी ❁ अवशि भवन तजि होहिं भिखारी
मन कपटी तनु सज्जन चीन्हा ❁ आपु सरिसं सबहीं चह कीन्हा
तिनके वचन मानि विश्वासा ❁ तुम चाहहु पति सहज उदासा
निर्गुण निलज कुवेष कपाली ❁ अकुल अगेह दिगम्बरं व्याली
कहहु कवन सुख अस वर पाये ❁ भल भूलिहु ठग के बौराये
पञ्च कहें शिव सती विवाही ❁ पुनि अवढेरि मराइन ताही

दो० अबसुखसोवतशोच नहिं, भीखमांगि भव खाहिं।
सहज इकांकिन के भवन, कबहुँ कि नारिखटाहिं॥

अजहूं मानहु कहा हमारा ❁ हम तुमकहँ वर नीक विचारा
अतिसुन्दर शुचि सुखद सुशीला ❁ गावहिं वेद जासु यश लीला
दूषण रहित सकल गुणरासी ❁ श्रीपति पुर वैकुंठ निवासी
अस वर तुमहिं मिलाउब आनी ❁ सुनत वचन कह बिहँसि भवानी
सत्य कहेहु गिरिभव तनु एहा ❁ हठ न छूट छूटै बरु देहा
कँनकहु पुनि पषाण ते होई ❁ जारेउ सहज न परिहरु सोई
नारद वचन न मैं परिहरऊं ❁ बसौ भवन उँजरौ नहिं डरऊं
गुरुके वचन प्रतीति न जेही ❁ सपनेहु सुगम न सुख सिधि तेही

दो० महादेव अवगुण भवन, विष्णु सकल गुणधाम।
जेहिकरमनरमजाहिसन, ताहि ताहि सन काम॥

जो तुम मिलतेउ प्रथम मुनीशा ❁ सुनतिउँ शिषँ तुम्हारि धरिशीशा
अब मैं जन्म शम्भु हितहारा ❁ को गुण दूषण करै विचारा
जो तुम्हरे हठ हृदय विशेषी ❁ रहि न जाइ विनु किये बरेषी
तौ कौतुकिअन्ह आलस नाहीं ❁ वर कन्या अनेक जगमाहीं
जन्म कोटिलगि रगर हमारी ❁ वरौं शम्भु नतु रहौं कुमारी

१ समान २ नंगा ३ सर्पधारी ४ इकल्ले ५ सोना ६ नाश ७ शिक्षा ८ छेड़ छांड़॥

तजौं न नारद कर उपदेशू ❀ आपु कहहिं शतवार महेशू
मैं पां परौं कहैं जगदम्बा ❀ तुम गृह गमनहु भयहु विलम्बा
देखि प्रेम बोले मुनि ज्ञानी ❀ जयजयजय जगदम्ब भवानी

दो० तुम माया भगवान शिव, सकल[2] जगत पितुमात।
नाइचरण शिर मुनि चले, पुनि पुनि हरषितगात॥

जाइ मुनिन हिमवन्त पठाये ❀ करि विनती गिरिजहिं गृहलाये
बहुरि सप्तऋषि शिवपहँ जाई ❀ कथा उमाकी सकल सुनाई
भये मगन शिव सुनत सनेहा ❀ हरषि सप्तऋषि गमने गेहा
मन थिरकरि तब शम्भुसुजाना ❀ लगे करन रघुनायक ध्याना
तारक असुर भयेउ तेहिकाला ❀ भुज प्रताप बल तेज विशाला
तेहिं सब लोक लोकपति जीते ❀ भये देव सुख सम्पति रीते
अजर अमर सो जीति न जाई ❀ हारे सुर करि विविध[3] लराई
तब विरंचि सन जाइ पुकारे ❀ देखे विधि सब देव दुखारे

दो० सबसन कहा बुझाइ विधि, दनुज निधन[4] तब होइ।
शम्भु शुक्र[5] सम्भूत सुत, यहि जीतै रण सोइ॥

मोर कहा सुनि करहु उपाई ❀ होइहि ईश्वर करिहि सहाई
सती जो तजी दक्षमख[6] देहा ❀ जनमी जाइ हिमाचल गेहा
तेइँ तप कीन्ह शम्भु हितलागी ❀ शिव समाधि बैठे सब त्यागी
यदपि अहै असमंजस[7] भारी ❀ तदपि बात इक सुनहु हमारी
पठवहु काम जाय शिवपाहीं ❀ करै क्षोभ शंकर मनमाहीं
तब हम जाइ शिवहिं शिरनाई ❀ करवाउब विवाह बरिआई
यहि विधि भले देवहित होई ❀ मति अतिनीकि कहै सब कोई
अस्तुति सुरन कीन्ह अति हेतू ❀ प्रकट्यो विषमबाण झषकेतू[8]

दो० सुरनकही निजविपति सब, सुनिमनकीन्हविचार।
शम्भुविरोधनकुशलमोहिं, बिहँसिकह्योअसमार[9]॥

१ जगत्माता २ संपूर्ण ३ अनेक ४ नाश ५ बीज ६ यज्ञ ७ दुविधा ८, ९ कामदेव॥

तदपि करब मैं काज तुम्हारा ❀ श्रुति कह परमधर्म उपकारा
परहित लागि तजै जो देही ❀ सन्तत सन्त प्रशंसहिं तेही
अस कहि चलेउ सबहिं शिरनाई ❀ सुमनं धनुष कर सहित सहाई
चलत मार अस हृदय विचारा ❀ शिव विरोध ध्रुवमरण हमारा
तब आपन प्रभाव विस्तारा ❀ निज वश कीन्ह सकल संसारा
कोपेउ जबहिं वारिचरकेतू ❀ क्षण महँ मिटे सकल श्रुतिसेतू
ब्रह्मचर्य्य व्रत संयम नाना ❀ धीरज धर्म ज्ञान विज्ञाना
सदाचार जप योग विरागा ❀ सभय विवेक कटक सब भागा

छं० भागेउ विवेक सहाय संयुत सुभट संयुग महिमुरे।
सदग्रन्थ पर्वत कन्दरन महँ जाय तेहि अवसरदुरे॥
होनिहारका करतारको रखवार जग खरभर परा।
दुइमाथकेहिरतिनाथजेहिकहँकोपिकरधनुशरधरा॥

दो० जे सजीवजग अचरचर, नारि पुरुष अस नाम।
ते निजनिजमर्यादतजि, भये सकल वशकाम॥

सबके हृदय मदनं अभिलाखा ❀ लता निहारि नवहिं तरु शाखा
नदी उमँगि अंबुधि कहँ धाई ❀ संगम करैं तलाव तलाई
जहँ अस दशा जड़नकी वरणी ❀ को कहि सकै सचेतन करणी
पशु पच्छी नभ जल थल चारी ❀ भये कामवश समय बिसारी
मदनअन्ध व्याकुल सब लोका ❀ निशिदिननहिं अवलोकहिंकोका
देव दनुज नर किन्नर ब्याला ❀ प्रेत पिशाच भूत बैताला
इनकी दशा न कहेउँ बखानी ❀ सदा काम के चेरे जानी
सिद्ध विरक्त महामुनि योगी ❀ तेपि कामवश भये वियोगी

छं० भये कामवश योगीशं तापस पामरनकी को कहै।
देखहिं चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देखत रहैं॥

१ फूल २ कामदेव ३ संग्राम ४ छिपे ५ कामदेव ६ समुद्र ७ चकई चकवा ८ शिव॥

अबलाविलोकहिंपुरुषमयजगपुरुषसबअबलामयम्।
दुइंदण्डभरिब्रह्माण्डभीतरकामकृतकौतुकअयम्॥

सो० धरा न काहू धीर, सबके मन मनसिज हरे।
जेहि राखे रघुवीर, ते उबरे तेहि कालमहँ॥

उभय घरी[1] अस कौतुक भयऊ ❀ जबलगि काम शम्भु पहँ गयऊ
शिवहिं विलोकि सशंकेउ मारू ❀ भयउ यथाथिर सब संसारू
भये तुरत जगजीव सुखारे ❀ जिमि मद[2] उतरि गये मतवारे
रुद्रहि देखि मदन भयमाना ❀ दुराधर्ष दुर्गम भगवाना
फिरत लाज कछु कहि नहिं जाई ❀ मरण ठानि मन रचेसि उपाई
प्रकटेसि तुरत रुचिर ऋतुराजा ❀ कुसुमित नवतरु राज विराजा
वन उपवन वापिका तड़ागा ❀ परम सुभग सब दिशा विभागा
जहँ तहँ जनु उमगत अनुरागा ❀ देखि मुयहुँ[3]मन मनसिज जागा

छं० जागेउ मनोभव मुयेमन वनसुभगता न परै कही।
शीतलसुगन्धसुमन्दमारुतमदनअनलसखासही॥
विकसेसरनबहुकंज[4] गुंजत पुंज मंजुल मधुकरा।
कलहंसपिकशुकसरसरवकरिगाननाचहिंअप्सरा॥

दो०सकलकलाकरि कोटिविधि, हारेउ सेन समेत।
चली न अचल समाधिशिव, कोपेउहृदयनिकेत[5]॥

देखि रसाल[6] विटप वरशाखा ❀ तेहिपर चढ़ेउ मदन मनमाखा
सुमन चाप निज कर संधाने ❀ अतिरिस ताकि श्रवणलगि ताने
छांड़ेसि विषम विशिख[7] उर लागे ❀ छूटि समाधि शम्भु तब जागे
भयो ईश मन चोभ विशेखी ❀ नयन उघारि सकल दिशि देखी
सौरभ पल्लव मदन विलोका ❀ भयउ क्रोध कम्पेउ त्रैलोका
तब शिव तीसर नयन उघारा ❀ चितवत काम भयउ जरि छारा

---

१ एक मूहूर्त २ नशा ३ मरामन ४ कमल ५ कामदेव ६ आम्र ७ बाण॥

हाहाकार भयउ जग भारी ❀ डरपे सुर भये असुर सुखारी
समुझि काम सुख सोचहिं भोगी ❀ भये अकंटक साधक योगी

छं० योगीअकंटकभये पतिगतिसुनतरतिमूर्च्छितभई।
रोदतिवदति बहुभाँति करुणाकरत शंकरपहँगई॥
अतिप्रेमकरिविनतीविविधविधिजोरिकरसम्मुखरही।
प्रभुआशुतोषकृपालुशिवअबलानिरखिबोलेसही॥

दो० अबते रात तव नाथ कर, होइहि नाम अनंग।
बिनुवपुव्यापिहिसबहिंपुनि,सुनुनिजमिलनप्रसंग॥

जब यदुवंश कृष्ण अवतारा ❀ होइहि हरण महा महिभारा
कृष्णतनय होइहि पति तोरा ❀ वचन अन्यथा होइ न मोरा
रति गमनी सुनि शंकर बानी ❀ कथा अपर अब कहौं बखानी
देवन समाचार जब पाये ❀ ब्रह्मादिक वैकुण्ठ सिधाये
सब सुर विष्णु विरंचि समेता ❀ गये जहां शिव कृपानिकेता
पृथक् पृथक् तिन कीन्ह प्रशंसा ❀ भये प्रसन्न चन्द्रअवतंसा
बोले कृपासिन्धु वृषकेतू ❀ कहहु अमर आयहु केहि हेतू
कह विधि तुम प्रभु अन्तरयामी ❀ तदपि भक्ति वश विनऊं स्वामी

दो० सकल सुरन के हृदय अस, शंकर परम उछाह।
निज नयनन देखाचहहिं, नाथ तुम्हार विवाह॥

यह उत्सव देखिय भरिलोचन ❀ सो कछु करिय मदनमदमोचन
काम जारि रति कहँ वर दीन्हा ❀ कृपासिन्धु यह अति भल कीन्हा
सांसति करि पुनि करहिं पसाऊ ❀ नाथ बड़ेनकर यहै स्वभाऊ
पारवती तप कीन्ह अपारा ❀ करहु तासु अब अंगीकारा
सुनिविधिवचन समुझि प्रभुबानी ❀ ऐसइ होउ कहा सुखमानी
तब देवन दुन्दुभी बजाई ❀ बरषि सुमन जयजय सुरसाई

१ कामपत्नी २ शीघ्र ३ प्रद्युम्न ४ व ५ महादेव ६ अच्छा ७ पीड़ा ८ प्रसाद ९ नगाड़े॥

अवसर जानि सप्तऋषि आये ❀ तुरतहिं विधि गिरिभवन पठाये
प्रथम गये जहँ रहीं भवानी ❀ बोले वचन मधुर छलसानी

दो० कहा हमार न सुनेहु तब, नारद के उपदेश।
अब भा झूंठ तुम्हार प्रण, जारेउ काम महेश॥

सुनि बोलीं मुसकाय भवानी ❀ उचित कहेउ मुनिवर विज्ञानी
तुम्हरे जान काम हर जारा ❀ अब लगि शम्भु रहे सविकारा
हमरे जान सदाशिव योगी ❀ अज अनवद्य अकाम अभोगी
जो मैं शिव सेयउँ अस जानी ❀ प्रीति समेत कर्म्म मन बानी
तौ हमार प्रण सुनहु मुनीशा ❀ करिहहिं सत्य कृपानिधि ईशा
तुम जो कहा हर जारेउ मारा ❀ सो अति बड़ अविवेक तुम्हारा
तात अनलकर सहज स्वभाऊ ❀ हिम तेहिनिकट जाइ नहिं काऊ
गये समीप सो अवशि नशाई ❀ अस मनमथ महेश की नाई

दो० हिय हरषे मुनि वचन सुनि, देखि प्रीति विश्वास।
चले भवानिहिं नाइ शिर, गये हिमाचल पास॥

सब प्रसंग गिरिपतिहिं सुनावा ❀ मदन दहनसुनि अतिदुख पावा
बहुरि कहेउ रतिकर वरदाना ❀ सुनि हिमवंत बहुत सुखमाना
हृदय विचारि शम्भु प्रभुताई ❀ सादर मुनिवर लिये बुलाई
सुदिन सुनखत सुघरी सुहाई ❀ वेगि वेद विधि लगन धराई
पत्री सप्तऋषिन कहँ दीन्हीं ❀ गहिपदविनय हिमाचल कीन्हीं
जायविधिहितिन दीन्ह सोपाती ❀ बांचत प्रीति न हृदय समाती
लगन बांचि अज सबहिं सुनाई ❀ हरषे मुनि सब सुर समुदाई
सुमन वृष्टि नभ बाजन बाजे ❀ मंगल सकल दशहुँदिशि साजे

दो० लगे सँवारन सकल सुर, वाहन विविध विमान।
होहिं शकुन मंगलसुभग, करहिं अप्सरा गान॥

शिवहिं शम्भुगण करहिं शृँगारा ❀ जटा मुकुट अहि मौर सँवारा

१ अदोष २ अग्नि ३ कामदेव ४ विनती ५ ब्रह्मा ६ फूल॥

कुण्डल कंकण पहिरे व्याला ❀ तनु विभूति कटि केहरिछाला
शशि ललाट सुन्दर शिरगंगा ❀ नयन तीनि उपवीत भुजंगा
गरल कण्ठ उर नरशिर माला ❀ अशिव वेष शिवधाम कृपाला
कर त्रिशूल अरु डमरु विराजा ❀ चले बसह चढ़ि बाजहिं बाजा
देखि शिवहि सुरत्रिय मुसुकाहीं ❀ वरलायक दुलहिनि जग नाहीं
विष्णु विरञ्चि आदि सुरव्रौता ❀ चढ़ि चढ़ि वाहन चले बराता
सुर समाज सब भाँति अनूपा ❀ नहिं बरात दूलह अनुरूपा

दो० विष्णुकहाअसविहँसितब, बोलिसकलदिशिराज ।
बिलगबिलगह्वैचलहुसब,निजनिजसहितसमाज॥

वर अनुहारि बरात न भाई ❀ हँसी करैहहु परपुर जाई
विष्णु वचन सुनि सुर मुसुकाने ❀ निज निज सेनसहित बिलगाने
मनहीं मन महेश मुसुकाहीं ❀ हरि के व्यंग वचन नहिं जाहीं
अतिप्रिय वचन सुनत हरि केरे ❀ भृंगी प्रेरि सकल गण टेरे
शिव अनुशासन सुनि सब आये ❀ प्रभुपद जलँज शीश तिन नाये
नाना वाहन नाना वेखा ❀ बिहँसे शिव समाज निजदेखा
कोउ मुखहीन विपुल मुखकाहू ❀ बिनुपद कर कोउ बहुपद बाहू
विपुलनयन कोउ नयन विहीना ❀ हृष्ट पुष्ट कोउ अति तनु छीना

छं० तनुछीनकोउअतिपीनपावनकोउअपावनतनुधरे ।
भूषणकराल कपालकर सब सद्यशोणिततनुभरे ॥
खरश्वानअसुर शृगालमूषकवेष अगणितकोगनै ।
बहुजिनिसप्रेतपिशाचयोगिनिभाँतिवरणतनहिंबनै

सो० नाचहिं गावहिं गीत, परम तरङ्गी भूत सब।
देखत अति विपरीत,बोलहिं वचन विचित्र विधि॥

जस दूलह तस बनी बराता ❀ कौतुक विविधि होहिं मगजाता

१ सर्प २ बाघम्बर ३ यूथ ४ कमल ५ अनेक ६ मोटा ७ रक्त ८ तमाशा ॥

इहां हिमाचल रचेउ विताना ❀ अति विचित्र नहिं जाय बखाना
शैल सकल जहँ लगि जगमाहीं ❀ लघुविशाल नहिं वरणि सिराहीं
वन सागर सब नदी तलावा ❀ हिमगिरि सबकहँ नेवत पठावा
कामरूप सुन्दर तनुधारी ❀ सहित समाज सहित वरनारी
गे सब तुरत हिमाचल गेहा ❀ गावहिं मंगल सहित सनेहा
प्रथमहि गिरि बहु गृह सँवराये ❀ यथा योग्य जहँ तहँ सब छाये
पुर शोभा अवलोकि सुहाई ❀ लागै लघु विरञ्चि निपुणाई

छं०लघुलागिविधिकीनिपुणताअवलोकिपुरशोभासही
वनबाग कूपतड़ागसरिता सुभगता सक को कही ॥
मंगल विपुलतोरण पताका केतु गृह गृह सोहहीं ।
वनितापुरुषसुन्दरचतुरछवि देखिमुनिमनमोहहीं ॥

दो०जगदम्बा जहँ अवतरी, सोपुरवरणि न जाइ ।
ऋधिसिधिसम्पतिसकलसुख, नितनूतनअधिकाइ॥

नगर निकट बरात जब आई ❀ पुर खरभर शोभा अधिकाई
करि बनाव सजि वाहन नाना ❀ चले लेन सादर अगवाना
हिय हरषे सुर सेन निहारी ❀ हरिहि देखि अति भये सुखारी
शिव समाज जब देखन लागे ❀ बिडरि चले वाहन सब भागे
धरि धीरज तहँ रहे सयाने ❀ बालक सब लै जीव पराने
गये भवन पूछहिं पितु माता ❀ कहहिं वचन भयकंपित गाता
कहिय कहा कहि जाइ न बाता ❀ यमकै धार किधौं बरिआता
वर बौराह बरद असवारा ❀ व्याल कपाल विभूषण छारा[६]

छं०तनछारव्यालकपाल भूषणनगनजटिल भयंकरा ।
सँगभूतप्रेत पिशाचयोगिनिविकटमुखरजनीचरा ॥
जोजियतरहहिबरातदेखत पुण्यबड़तिनकरसही ।

१ मंडप २ छोटे बड़े ३ जल्द ४ भागे ५ मुंड ६ भस्म ७ राक्षस ॥

देखिहिसोउमाविवाहघरघरबातअसलरिकनकही॥
दो० समुझि महेशं समाज सब, जननिजनकमुसुकाहिं।
बाल बुझाये विविधविधि, निडर होउ डर नाहिं॥

लै अगवानि बरातहि आये ❀ दिये सबहि जनवास सुहाये
मैना शुभ आरती सँवारी ❀ संग सुमंगल गावहिं नारी
कंचनथार सोह वर पानी ❀ परिछन चलीं हरहि हरषानी
विकट वेष जब रुद्रहि देखा ❀ अबलनं उर भय भयउ विशेखा
भागि भवन बैठीं अति त्रासा ❀ गये महेश जहां जनवासा
मैना हृदय भयउ दुखभारी ❀ लीन्हीं बोलि गिरीशकुमारी
अधिक सनेह गोद बैठारी ❀ श्याम सरोज नयन भरि वारी
जेहि विधि तुमहिं रूप अस दीन्हा ❀ तेहि जड़ वरबावर कस कीन्हा

छं० कसकीन्हवरबौराहविधि जेहितुमहिं सुन्दरतादई।
जो फलचहियसुरतरुहि सो बरबसबबूरहिलागई॥
तुमसहितगिरितेंगिरौंपावकजरौंजलनिधिमहँपरौं।
घरजाउअपयशहोउ जगजीवतविवाहन हौंकरौं॥

दो० भई विकल अबलासकल, दुखितदेखिगिरिनारि।
करिविलाप रोदति वदति, सुता सनेह सँभारि॥

नारद कर मैं कहा बिगारा ❀ भवन मोर जिन बसत उजारा
अस उपदेश उमहिं जिन दीन्हा ❀ बौरे वरहि लागि तप कीन्हा
सांचेहु उनके मोह न माया ❀ उदासीन धनधाम न जाया
पर घर घालक लाज न भीरा ❀ बांझ कि जान प्रसव की पीरा
जननिहिं बिकल बिलोकि भवानी ❀ बोलीं युत विवेक मृदुबानी
असविचारि शोचहु जनि माता ❀ सो न टरै जो रचेउ विधाता
कर्म्म लिखा जो बावर नाहू ❀ तौ कत दोष लगाइय काहू

१ शिव २ स्त्रियों के ३ डर ४ कल्पवृक्ष ५ समुद्र ६ स्वामी॥

तुमसन मिटहिं कि विधिके अंका ❀ मातु व्यर्थ जनि लेहु कलंका

छं० जनिलेहुमातुकलंककरुणा परिहरहुंअवसर नहीं।
दुखसुखजोलिखालिलारहमरेजाबजहँपाउबतहीं॥
सुनिउमावचनविनीतकोमलसकलअबलाशोचहीं।
बहुभाँतिविधिहिलगाइदूषण नयनवारिविमोचहीं॥

दो० तेहि अवसर नारदऋषय, औ ऋषि सप्त समेत।
समाचार सुनि तुहिनगिरि, गमने तुरत निकेत॥

तब नारद सबहीं समुझावा ❀ पूरब कथा प्रसंग सुनावा
मैना सत्य सुनहु मम बानी ❀ जगदम्बा तव सुता भवानी
अजा अनादि शक्ति अविनासिनि ❀ सदा शंभु अर्द्धंग निवासिनि
जग संभव पालन लयकारिणि ❀ निज इच्छा लीलावपुधारिणि
जनमी प्रथम दक्षगृह जाई ❀ नाम सती सुन्दर तनु पाई
तहउँ सती शंकरहिं विवाहीं ❀ कथा प्रसिद्ध सकल जगमाहीं
एक बार आवत शिव संगा ❀ देखेउ रघुकुल कमल पतंगा[४]
भयउ मोह शिव कहा न कीन्हा ❀ भ्रमवश वेष सीय कर लीन्हा

छं० सियवेष सती जो कीन्हतेहि अपराध शंकरपरिहरी।
हरविरहजाइ बहोरि पितुके यज्ञ योगानलें जरी॥
अबजन्मितुम्हरेभवननिजपतिलागिदारुण[६]तपकिया।
असजानिसंशय तजहु गिरिजासर्वदा शंकरप्रिया॥

दो० सुनि नारद के वचन तब, सब कर मिटा विषाद।
क्षणमहँ व्यापेउ सकलपुर, घर घर यह संवाद॥

तब मैना हिमवन्त अनन्दे ❀ पुनि पुनि पारवती पद बन्दे
नारि पुरुष शिशु युवा सयाने ❀ नगर लोग सब अति हरषाने
लगे होन पुर मंगल गाना ❀ सजे सबहिं हाटकघँट नाना

१ त्यागो २ हिमाचल ३ माया ४ सूर्य ५ योगाग्नि ६ कठिन ७ सोने का घड़ा॥

भाँति अनेक भई जेवनारा ❀ सूपशास्त्र जस कछु व्यवहारा
सो जेवनार कि जाइ बखानी ❀ बसहिं भवन ज्यहि मातु भवानी
सादर बोले सकल बराती ❀ विष्णु विरंचि देव सब जाती
विविध पाँति बैठी जेवनारा ❀ लगे परोसन निपुण सुआरा[1]
नारिवृंन्द सुर जेंवत जानी ❀ लगीं देन गारी मृदु बानी

छं० गारी मधुरस्वर देहिं सुन्दरि व्यंग वचन सुनावहीं।
भोजनकरहिंसुरअतिविलंबविनोदसुनिसुखपावहीं॥
जेंवत जो बढ़्यो अनंद सो मुख कोटिहू न परै कह्यो।
अँचवाइ दीन्हें पान गमने वास[3] जहँ जाको रह्यो॥

दो० बहुरि मुनिन हिमवंत कहँ, लगन सुनाई आइ।
समय विलोकि विवाहकर, पठये देव बुलाइ॥

बोलि सकल सुर सादर लीन्हें ❀ सबहिं यथोचित आसन दीन्हें
वेदी वेद विधान सँवारी ❀ सुभग सुमंगल गावहिं नारी
सिंहासन अति दिव्य सुहावा ❀ जाइ न वरणि विरंञ्चि बनावा
बैठे शिव विप्रन शिरनाई ❀ हृदय सुमिरि निज प्रभु रघुराई
बहुरि मुनीशन उमा बुलाई ❀ करि शृंगार सखी लै आई
देखत रूप सकल सुर मोहैं ❀ वरणैं छवि अस जग कवि कोहैं
जगदम्बिका जानि भवँ वामा ❀ सुरन मनहिंमन कीन्ह प्रणामा
सुन्दरता मर्य्याद भवानी ❀ जाइ न कोटिहु वदन बखानी

छं० कोटिहुवदननहिंबनैवरणत जगजननिशोभामहा।
सकुचहिंकहतश्रुतिशेषशारदमंदमतितुलसीकहा॥
छविखानिमातुभवानिगमनींमध्यमंडप शिवजहां।
अवलोकिसकहिनसकुचिपतिपदकमलमनमधुकरतहां

दो० मुनि अनुशासनगणपतिहिं, पूजे शम्भु भवानि।

१ रसोईदार २ स्त्रीसमूह ३ घर ४ ब्रह्मा ५ शिव ६ वेद ७ भ्रमर ८ आज्ञा॥

कोउमुनिसंशयकरहिजनि,सुरअनादि[1]जियजानि॥

जस विवाह की विधि श्रुति गाई ❀ महा मुनिन सो सब करवाई
गहि गिरीश[2] कुश कन्या पानी ❀ शिवहिं समर्पी जानि भवानी
पाणिग्रहण[3] जब कीन्ह महेशा ❀ हिय हर्षे तब सकल सुरेशा
वेद मन्त्र मुनिवर उच्चरहीं ❀ जयजयजय शंकर सुर करहीं
बाजहिं बाजन विविध विधाना ❀ सुमन वृष्टि नभ[4] भै विधि नाना
हर गिरिजा कर भयउ विवाहू ❀ सकल भुवन भरि रहा उछाहू
दासी दास तुरग[5] रथ नागा[6] ❀ धेनु वसन मणि वस्तु विभागा
अन्न कनक भाजन भरि याना ❀ दाइज दीन्ह न जाहि बखाना

छं० दाइजदियो बहुभाँति पुनिकरजोरिहिमभूधरकह्यो।
का देउँ पूरण काम शंकर चरण पंकज गहि रह्यो॥
शिवकृपासागरश्वशुरकरपरितोषसबभांतिनकियो।
पुनि गहेउ पद पाथोज[7] मैना प्रेमपरिपूरण हियो॥

दो० नाथ उमा मम प्राण प्रिय, गृह किंकरी करेहु।
क्षमेहु सकल अपराध अब, ह्वै प्रसन्न वर देहु॥

बहुविधि शम्भु सासु समुझाई ❀ गमनी भवन चरण शिरनाई
जननी उमा बोलि तब लीन्हीं ❀ लै उछंग सुन्दर शिष दीन्हीं
करेहु सदा शंकर पद पूजा ❀ नारिधर्म्म पति देव न दूजा
वचन कहत भरि लोचन वारी ❀ बहुरि लाइ उर लीन्ह कुमारी
कत विधि सृजी[8] नारि जगमाहीं ❀ पराधीन सपनेहु सुख नाहीं
भइ अति प्रेम विकल महतारी ❀ धीरज कीन्ह कुसमय विचारी
पुनिपुनि मिलत परत गहि चरणा ❀ परम प्रेम कछु जाइ न वरणा
सब नारिन मिलि भेंटि भवानी ❀ जाइ जननि उर पुनि लपटानी

छं० जननिहिंबहुरिमिलिचलीउचितअशीशसबकाहूदई

१ आदिरहित २ हिमाचल ३ विवाह ४ आकाश ५ घोड़े ६ हाथी ७ कमल ८ पैदा किया॥

फिरिफिरिविलोकतिमातुतनतबसखीलैशिवपहँगई॥
याचक सकल संतोषि शंकर उमा सह भवनहिं चले।
सब अमर हरषे सुमनबरषि निशाननभबाजहिं भले॥

दो० चले संग हिमवन्त तब, पहुँचावन अति हेतु।
विविधभाँतिपरितोष करि, बिदा कीन्ह वृषकेतु॥

तुरत भवन आये गिरिराई ❀ सकल शैल सर लिये बुलाई
आदर दान विनय बहु माना ❀ सबकहँ बिदा कीन्ह हिमवाना
जबहिं शम्भु कैलासहिं आये ❀ सुर सब निज निज धाम सिधाये
जगतमातु पितु शम्भु भवानी ❀ तेहि शृंगार न कहेउँ बखानी
करहिं विविधविधि भोग विलासा ❀ गणन समेत बसहिं कैलासा
हरगिरिजाविहार नित नयऊ ❀ यहि विधि विपुल काल चलि गयऊ
तब जनमे षटवदन कुमारा ❀ तारक असुर समर जिन मारा
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना ❀ षटमुख जन्म कर्म जग जाना

छं० जग जान षटमुख जन्म कर्म प्रताप पुरुषारथ महा।
तेहि हेतु मैं वृषकेतुसुत कर चरित संक्षेपहि कहा॥
यह उमाशम्भुविवाह जे नर नारि सुनहिं जे गावहीं।
कल्याण काज विवाह मंगल सर्वदा सुख पावहीं॥

दो० चरितसिंधु गिरिजारमण, वेद न पावहिं पार॥
वरणै तुलसीदास किमि, अति मतिमन्द गँवार॥

शम्भुचरित सुनि सहज सुहावा ❀ भरद्वाज मुनि अतिसुख पावा
बहु लालसा कथा पर बाढ़ी ❀ नयन नीर रोमावलि ठाढ़ी
प्रेम विवश मुख आव न बानी ❀ दशा देखि हरषे मुनि ज्ञानी
अहो धन्य तव जन्म मुनीशा ❀ तुमहिं प्राणसम प्रिय गौरीशा
शिवपदकमल जिनहिं रति नाहीं ❀ रामहिं ते सपनेहुँ न सुहाहीं

१ समेत २ शिव ३ घर ४ अनेक ५ बहुत ६ षडानन ७ महादेवजी ८ जल ९ प्रेम॥

बिनु छल विश्वनाथ पद नेहू ❁ राम भक्तकर लच्छण येहू
शिवसम को रघुपति व्रतधारी ❁ बिनु अघ तजी सती असनारी
प्रण करि रघुपति भक्ति दृढ़ाई ❁ को शिवसम रामहिं प्रिय भाई

दो० प्रथम कहेउँ मैं शिवचरित, बूझा मर्म्म तुम्हार।
शुचि सेवक तुम रामके, रहित समस्त विकार॥

मैं जाना तुम्हार गुण शीला ❁ कहौं सुनहु अब रघुपति लीला
सुनु मुनि आजु समागम तोरे ❁ कहि न जाइ जस सुख मन मोरे
रामचरित अति अमित मुनीशा ❁ कहि न सकहिं शतकोटि अहीशा
तदपि यथाश्रुत कहौं बखानी ❁ सुमिरि गिरापति प्रभु धनुपानी
शारद दारुनारि सम स्वामी ❁ राम सूत्रधर अन्तरयामी
जेहिपर कृपा करहिं जन जानी ❁ कवि उर अजिर नचावहिं बानी
प्रणवउँ सोइ कृपालु रघुनाथा ❁ वरणौं विशद जासु गुणगाथा
परम रम्य गिरिवर कैलासू ❁ सदा जहां शिव उमा निवासू

दो० सिद्ध तपोधन योगिजन, सुर किन्नर मुनिवृन्द।
बसहिं तहां सुकृती सकल, सेवहिं शिव सुखकन्द॥

हरि हर विमुख धर्मरत नाहीं ❁ ते नर तहां न सपनेहुँ जाहीं
तेहि गिरि पर वट विटप विशाला ❁ नित नूतन सुन्दर सब काला
त्रिविध समीर सुशीतल छाया ❁ शिव विश्राम विटप श्रुति गाया
एक बार तेहितर प्रभु गयऊ ❁ तरु विलोकि उर अतिसुख भयऊ
निजकर डासि नागरिपुछाला ❁ बैठे सहजहिं शम्भु कृपाला
कुन्द इन्दु दर गौर शरीरा ❁ भुजप्रलम्ब परिधन मुनिचीरा
तरुण अरुण अम्बुज समचरणा ❁ नखद्युति भक्त हृदय तमहरणा
भुजग भूति भूषण त्रिपुरारी ❁ आनन शरदचन्द्र छविहारी

दो० जटामुकुटसुरसरिताशिर, लोचननलिन विशाल।
नीलकण्ठ लावण्यनिधि, सोह बालविधु भाल॥

१ पाप २ शेष ३ कठपुतरी ४ पुतरी नचानेवाला ५ पुण्यात्मा लोग ६ चन्द्रमा॥

बैठे सोह कामरिपु कैसे ❁ धरे शरीर शान्त रस जैसे
पारवती भल अवसर जानी ❁ आई शम्भु पहँ मातु भवानी
जानि प्रिया आदर अति कीन्हा ❁ वाम भाग आसन हर दीन्हा
बैठीं शिव समीप हरषाई ❁ पूरब जन्म कथा चित आई
पतिहिय हेतु अधिक अनुमानी ❁ बिहँसि उमा बोलीं मृदुबानी
कथा जो सकल लोक हितकारी ❁ सो पूंछन चह शैलकुमारी
विश्वनाथ ममनाथ पुरारी ❁ त्रिभुवन महिमा विदित तुम्हारी
चर अरु अचर नाग नर देवा ❁ सकल करहिं पद पंकज सेवा

दो० प्रभु समर्थ सर्वज्ञ तुम, सकल कला गुणधाम।
योगज्ञान वैराग्यनिधि, प्रणत कल्पतरु नाम॥

जो मोपर प्रसन्न सुखरासी ❁ जानिय सत्य मोहिं निजदासी
तौ प्रभु हरहु मोर अज्ञाना ❁ कहि रघुनाथ कथा विधि नाना
जासु भवन सुरतरु तर होई ❁ सह कि दरिद्रजनित दुख सोई
शशिभूषण अस हृदय विचारी ❁ हरहु नाथ मम मतिभ्रम भारी
प्रभु जे मुनि परमारथ वादी ❁ कहहिं राम कहँ ब्रह्म अनादी
शेष शारदा वेद पुराना ❁ सकल करहिं रघुपति गुणगाना
तुम पुनि रामनाम दिन राती ❁ सादर जपहु अनंगअराती
राम सो अवधनृपतिसुत सोई ❁ की अज अगुण अलखगति कोई

दो० जो नृपतनय तो ब्रह्म किमि, नारिविरह मति भोरि।
देखि चरित महिमा सुनत, भ्रमति बुद्धि अतिमोरि॥

जो अनीह व्यापक विभु कोऊ ❁ कहहु बुझाइ नाथ मोहिं सोऊ
अज्ञ जानि रिस जनि उर धरहू ❁ जेहि विधि मोह मिटै सोइ करहू
मैं वन दीख राम प्रभुताई ❁ अति भयविकल न तुमहिं सुनाई
तदपि मलिन मन बोध न आवा ❁ सो फल भलीभाँति हम पावा
अजहूं कछु संशय मन मोरे ❁ करहु कृपा विनवउँ कर जोरे

१ शिव २ उत्पन्न ३ आदिहीन ४ महादेव ५ बिछोह ६ मूर्ख ७ ज्ञान॥

प्रभु तब मोहिं बहु भाँति प्रबोधा[1] ❀ नाथ सो समुझि करहु जनि क्रोधा
तबकर अस विमोह अब नाहीं ❀ रामकथा पर रुचि मनमाहीं
कहहु पुनीत राम गुणगाथा ❀ भुजंगराज भूषण सुरनाथा।

दो० वन्दौं पदधरि धरणि शिर, विनय करौं करजोरि।
वरणहु रघुवर विशद यश, श्रुतिसिद्धांतनिचोरि॥

यदपि योषितौं[4] अनअधिकारी ❀ दासी मन क्रम वचन तुम्हारी
गूढ़ौ तत्त्व न साधु दुरावहिं ❀ आरत अधिकारी जहँ पावहिं
अति आरत पूंछौं सुरराया ❀ रघुपति कथा कहहु करि दाया
प्रथम सो कारण कहहु विचारी ❀ निर्गुणब्रह्म सगुण वपु[5] धारी
पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा ❀ बाल चरित पुनि कहहु उदारा
कहहु यथा जानकी विवाहा ❀ राज तजा सो दूषण काहा[6]
वन बसि कीन्हेउ चरित अपारा ❀ कहहु नाथ जिमि रावण मारा
राज बैठि कीन्हीं बहु लीला ❀ सकल कहहु शङ्कर सुखशीला

दो० बहुरि कहहु करुणाँयतन[7], कीन्ह जो अचरज राम।
प्रजा सहित रघुवंशमणि, किमि गमने निजधाम॥

पुनि प्रभु कहहु सो तत्त्व बखानी ❀ जेहि विज्ञान मगन मुनि ज्ञानी।
भक्ति ज्ञान विज्ञान विरागा ❀ पुनि सब वरणहु सहित विभाग।
औरौ राम रहस्य अनेका ❀ कहहु नाथ अति विमल विवेका।
जो प्रभु मैं पूंछा नहिं होई ❀ सोउ दयालु राखहु जनि गोई[8]
तुम त्रिभुवन गुरु वेद बखाना ❀ आन जीव पामर[9] का जाना
प्रश्न उमा के सहज सुहाये ❀ छलविहीन सुनि शिवमन भाये
हर हिय रामचरित सब आये ❀ प्रेम पुलकि लोचन[10] जल छाये
श्री रघुनाथ रूप उर आवा ❀ परमानन्द अमित सुख पावा

दो० मग्न ध्यानरस दण्ड युग, पुनि मन बाहर कीन्ह।
रघुपतिचरित महेश तब, हरषित वरणौ लीन्ह॥

१ समझाया २ मत ३ शेष ४ स्त्री ५ देह ६ क्या ७ दयाधाम ८ छिपाय ९ अधम १० नेत्र॥

झूंठौ सत्य जाहि बिनु जाने ❀ जिमि भुजंग बिनु रंजु[1] पहिंचाने
जेहि जाने जग जाइ हेराई ❀ जागे यथा स्वप्न भ्रम जाई
वंदौं बाल रूप सोइ रामू ❀ सब विधि सुलभ जपत जेहि नामू
मंगल भवन अमंगल हारी ❀ द्रवौ सो दशरथ अजिर[2]विहारी
करि प्रणाम रामहिं त्रिपुरारी ❀ हरषि सुधासम गिरा उचारी
धन्य धन्य गिरिराज कुमारी ❀ तुम समान नहिं कोउ उपकारी
पूंछेहु रघुपति कथा प्रसंगा ❀ सकल लोक यश पावनि गंगा
तुम रघुवीर चरण अनुरागी ❀ कीन्हेउ प्रश्न जगतहित लागी

दो० राम कृपा ते गिरिसुता, सपनेहु तव मन माहिं।
शोक मोह संदेह भ्रम, मम विचार कछु नाहिं॥

तदपि अशंका कीन्हेउ सोई ❀ कहत सुनत सबकर हित होई
जिन हरिकथा सुनी नहिं काना ❀ श्रवणरन्ध्र[3] अहिभवन समाना
नयनन सन्त दरश नहिं देखा ❀ लोचन मोरपंख कर लेखा
ते शिर कटुतुमरि सम तूला ❀ जे न नमत हरि गुरु पदमूला
जिन हरिभक्ति हृदय नहिं आनी ❀ जीवत शव[4] समान ते प्रानी
जे नहिं करहिं राम गुण गाना ❀ जीह सुदादुर जीह समाना
कुलिश[5] कठोर निठुर सोइ छाती ❀ सुनि हरिचरित न जो हरषाती
गिरिजा सुनहु रामकर लीला ❀ सुरहित दनुजविमोहन शीला

दो० रामकथा सुरधेनु सम, सेवत सब सुखदानि।
सन्त सभा सुरलोक सम, को न सुनै अस जानि॥

राम कथा सुन्दर करतारी ❀ संशय विहंग[6] उड़ावन हारी
राम कथा कलि विटप[7] कुठारी ❀ सादर सुनु गिरिराज कुमारी
राम नाम गुण चरित सुहाये ❀ जन्म कर्म अगणित[8] श्रुति गाये
यथा अनन्त राम भगवाना ❀ तथा कथा कीरति गुण नाना
तदपि यथाश्रुत जस मति मोरी ❀ कहिहौं देखि प्रीति अति तोरी

१ रस्सी २ आंगन ३ छेद ४ मुर्दा ५ वज्र ६ पक्षी ७ वृक्ष ८ बहुत ॥

उमा प्रश्न तव सहज सुहाई ❀ सुखद सन्त सम्मत म्वहिं भाई
एक बात नहिं मोहिं सुहानी ❀ यदपि मोहवश कहेउ भवानी
तुम जो कहा राम कोउ आना ❀ जेहि श्रुतिगाव धरहिं मुनि ध्याना।

दो० कहहिं सुनहिं अस अधम नर, ग्रसे जो मोह पिशाच।
पाखण्डी हरिपद विमुख, जानहिं झूंठ न साँच॥

अज्ञ[1] अकोविद[2] अन्ध अभागी ❀ काई विषय मुकुर[3] मन लागी
लम्पट कपटी कुटिल विशेखी ❀ सपनेहु सन्तसभा नहिं देखी
कहहिं ते वेद असम्मत बानी ❀ जिनहिं न सूझ लाभ नहिं हानी
मुकुर मलिन[4] अरु नयन विहीना ❀ रामरूप देखहिं किमि दीना
जिनके अगुण न सगुण विवेका ❀ जल्पहिं कल्पित वचन अनेका
हरिमायावश जगत भ्रमाहीं ❀ तिनहिं कहत कछु अघटित नाहीं
बातुल भूत विवश मतवारे ❀ ते नहिं बोलहिं वचन विचारे
जिन कृत[5] महामोह मदपाना ❀ तिनकर कहा करिय नहिं काना।

सो० अस निज हृदय विचारि, तजि संशय भजु रामपद।
सुनु गिरिराजकुमारि, भ्रमतमरविकर[6] वचन मम॥

सगुणहिं अगुणहिं नहिं कछु भेदा ❀ गावहिं मुनि पुराण बुध वेदा
अगुण अरूप अलख अज जोई ❀ भक्त प्रेमवश सगुण सो होई
जो गुणरहित सगुण सो कैसे ❀ जल हिमउपल[7] बिलग नहिं जैसे
जासु नाम भ्रमतिमिर पतङ्गा ❀ तिहि किमि कहिय विमोहप्रसंगा
राम सच्चिदानन्द दिनेशा[8] ❀ नहिं तहँ मोह निशा लवलेशा
सहज प्रकाश रूप भगवाना ❀ नहिं तहँ पुनि विज्ञान बिहाना
हर्ष विषाद ज्ञान अज्ञाना ❀ जीवधर्म अहमिति अभिमाना
राम ब्रह्म व्यापक जग जाना ❀ परमानन्द परेश पुराना

दो० पुरुष प्रसिद्ध प्रकाशनिधि, प्रकट परावर नाथ।
रघुकुलमणि मम स्वामि सोइ, कहि शिव नायउ माथ॥

१ नीच २ मूर्ख ३ शीशा ४ मैला ५ किया ६ सूर्य की किरण ७ पत्थर ८ सूर्य॥

निजभ्रम नहिं समुझहिं अज्ञानी ❀ प्रभुपर मोह धरहिं जड़ प्रानी
यथा गगन घनपटल निहारी ❀ झम्पेउ भानु कहहिं कुविचारी
चितवहिं लोचन अंगुलि लाये ❀ प्रकट युगल शशि तिनके भाये
उमा राम विषयिक अस मोहा ❀ नभ तम धूम धूरि जिमि सोहा
विषय करन सुर जीव समेता ❀ सकल एक ते एक सचेता
सब कर परम प्रकाशक जोई ❀ राम अनादि अवधपति सोई
जगत प्रकाश्य प्रकाशक रामू ❀ मायाधीश ज्ञान गुण धामू
जासु सत्यता ते जड़ माया ❀ भास सत्य इव मोह सहाया

दो०रजत[2] सीपमहँ भास जिमि, यथा भानुकर वारि।
यदपि मृषा[3] तिहुँकाल सोइ, भ्रम न सकै कोउ टारि॥

यहिविधि जग हरिआश्रित रहई ❀ यदपि असत्य देत दुख अहई
ज्यों सपने शिर काटै कोई ❀ बिनु जागे दुख दूरि न होई
जासु कृपा अस भ्रम मिटि जाई ❀ गिरिजा सोइ कृपालु रघुराई
आदि अन्त कोउ जासु न पावा ❀ मति अनुमान निगम अस गावा
बिनु पद चलै सुनै बिनु काना ❀ कर बिनु कर्म करै विधि नाना
आननरहित सकल रसभोगी ❀ बिनु वाणी वक्ता बड़ योगी
तनु बिनु परश[4] नयन बिनु देखा ❀ ग्रहै घ्राण[5] बिनु बास अशेखा
अस सब भाँति अलौकिक करणी ❀ महिमा तासु जाइ किमि वरणी

दो०जेहि इमि गावहिं वेद बुध, जाहि धरहिं मुनि ध्यान।
सोइ दशरथसुत भक्तहित, कोशलपति भगवान॥

काशी मरत जन्तु अवलोकी ❀ जासु नाम बल करौं विशोकी
सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी ❀ रघुवर सब उर अन्तरयामी
विवशहु जासु नाम नर कहहीं ❀ जन्म अनेक सँचित[6] अघ[7] दहहीं
सादर सुमिरण जो नर करहीं ❀ भववारिधि[8] गोपद इव तरहीं
राम सो परमातमा भवानी ❀ तहँ भ्रम अतिअविहित[9] तव बानी

१ घर २ चांदी ३ झूठ ४ छूना ५ नासिका ६ इकट्ठे ७ पाप ८ संसारसागर ९ अशास्त्र

अस संशय आनत उरमाहीं ❀ ज्ञान विराग सकल गुणजाहीं
सुनि शिवके भ्रमभंजन बचना ❀ मिटिगइ सब कुतर्क की रचना
भइ रघुपति पद प्रीति प्रतीती ❀ दारुण असम्भावना बीती

दो॰ पुनि पुनि प्रभुपद कमल गहि, जोरि पंकरुहंपानि[1]।
बोलीं गिरिजा बचन बर, मनहुँ प्रेमरस सानि॥

शशिकर[2]सम सुनि गिरा तुम्हारी ❀ मिटा मोह शरदातप भारी
तुम कृपालु सब संशय हरेऊ ❀ राम स्वरूप जानि मोहिं परेऊ
नाथकृपा अब गयउ विषादा[3] ❀ सुखी भइउँ प्रभुचरण प्रसादा
अब मोहिं आपनि किंकरि[4] जानी ❀ यदपि सहज जड़ नारि अयोनी
प्रथम जो मैं पूंछा सोइ कहहू ❀ जो मोपर प्रसन्न प्रभु अहहू
राम ब्रह्म चिन्मय अविनासी ❀ सर्व रहित सब उरपुर वासी
नाथ धरेउ नर तनु केहि हेतू ❀ मोहिं समुझाइ कहहु वृषकेतू
उमावचन सुनि परम विनीता ❀ राम कथा पर प्रेम पुनीता

दो॰ हिय हरषे कामारि[6] तब, शङ्कर सहज सुजान।
बहुविधि उमहिं प्रशंसि पुनि, बोले कृपानिधान॥

सो॰ सुनु शुभ कथा भवानि, राम चरितमानस विमल।
कहा भुशुण्डि बखानि, सुना विहँगनायक गरुड़॥
सोइ संवाद उदार, जेहि विधि भा आगे कहब।
सुनहु राम अवतार, चरित परम सुन्दर अनघ[7]॥
हरिगुण नाम अपार, कथारूप अगणित अमित।
मैं निजमति अनुसार, कहौं उमा सादर सुनहु॥

सुनु गिरिजा हरिचरित सुहाये ❀ विपुल विशद निगमागम गाये
हरि अवतार हेतु जेहि होई ❀ इदमित्थं कहि जाइ न सोई
राम अतर्क बुद्धि मन बानी ❀ मत हमार अस सुनहु भवानी

१ कमल २ चन्द्रकिरण ३ दुःख ४ दासी ५ अज्ञान ६ शिव ७ निष्पाप॥

तदपि सन्त मुनि वेद पुराना ❀ जस कछु कहहिं स्वमति अनुमाना
तस मैं सुमुखि सुनावों तोहीं ❀ समुझि परै जस कारण मोहीं
जब जब होइ धर्म्म की हानी ❀ बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी
करहिं अनीति जाइ नहिं वरणी ❀ सीदहिं विप्र धेनु सुर धरणी
तब तब प्रभुधरि विविध शरीरा ❀ हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा

दो० असुर मारि थापहिं सुरन, राखहिं निजश्रुतिसेतु।
जग विस्तारहिं विशद यश, राम जन्मकर हेतु ॥

सोइ यश गाय भक्त भव तरहीं ❀ कृपासिन्धु जनहित तनु धरहीं
राम जन्म के हेतु अनेका ❀ परम विचित्र एकते एका
जन्म एक दुइ कहौं बखानी ❀ सावधान सुनु सुमुखि सयानी
द्वारपाल[4] हरि के प्रिय दोऊ ❀ जय अरु विजय जान सब कोऊ
विप्र शाप ते दोनों भाई ❀ तामस असुर देह तिन पाई
कनककशिपु अरु हाटकलोचन[5] ❀ जगत विदित सुरपतिमदमोचन
विजयी समर वीर विख्याता ❀ धरि बराह वपु एक निपाता[6]
है नरहरि पुनि दूसर मारा ❀ जन प्रहलाद सुयश विस्तारा

दो० भये निशाचर जाय ते, महा वीर बलवान।
कुम्भकरण रावण सुभट, सुरविजयी जग जान ॥

मुक्त न भये हते भगवाना ❀ तीनि जन्म द्विज वचन प्रमाना
एक बार तिनके हितलागी ❀ धरेउ शरीर भक्त अनुरागी
कश्यप अदिति तहां पितुमाता ❀ दशरथ कौशल्या विख्याता
एक कल्प यहि विधि अवतारा ❀ चरित पवित्र किये संसारा
एक कल्प सुर देखि दुखारे ❀ समर जलन्धर ते सब हारे
शम्भु कीन्ह संग्रामैं अपारा ❀ दनुज[8] महाबल मरै न मारा
परम सती असुराधिप नारी ❀ तेहि बल ताहि न जीत पुरारी

दो० छल करि टारेउ तासुव्रत, प्रभु सुरकारज कीन्ह।

१ नीच २ पीड़ित ३ पुल ४ दरबानी ५ हिरण्याक्ष ६ मारा ७ युद्ध ८ दैत्य ॥

जबतेइँ जानेउ मर्म सब, शाप कोप करि दीन्ह ॥

तासु शाप हरि कीन्ह प्रमाना ❀ कौतुक निधि कृपालु भगवाना
तहां जलन्धर रावण भयऊ ❀ रणहति राम परमपद[2] दयऊ
एक जन्म कर कारण येहा ❀ जेहिलागि राम धरी नरदेहा
प्रति अवतार कथा प्रभु केरी ❀ सुनि मुनि वरणी कविन घनेरी
नारद शाप दीन्ह इकबारा ❀ कल्प एक तेहिलागि अवतारा
गिरिजा चकित भई सुनि बानी ❀ नारद विष्णुभक्त पुनि ज्ञानी
कारण कवन शाप मुनि दीन्हा ❀ का अपराध रमापति कीन्हा
यह प्रसंग मोहिं कहहु पुरारी[3] ❀ मुनि मन मोह सो अचरज भारी

दो॰ बोले बिहँसि महेश तब, ज्ञानी मूढ़ न कोइ ।
जेहि जस रघुपति करहिं जब, सो तस तेहि छण होइ ॥

सो॰ कहौं रामगुण गाथ, भरद्वाज सादर सुनहु ।
भवभञ्जन रघुनाथ, भजु तुलसी तजि मोह मद ॥

हिमगिरि गुहा एक अतिपावनि[4] ❀ वह समीप सुरसरी सुहावनि
आश्रम परम पुनीत सुहावा ❀ देखि देवऋषि[5] मन अति भावा
निरखि शैल सरि विपिन विभागा ❀ भयउ रमापति[6] पद अनुरागा
सुमिरत हरिहि श्वासगति बाधी ❀ सहज विमल मन लागि समाधी
मुनिगति देखि सुरेश डराना ❀ कामहिं बोलि कीन्ह सन्माना
सहित सहाय जाहु मम हेतू[7] ❀ चलेउ हरषि हिय जलचरकेतू[8]
सुनासीर[9] मनमहँ अतित्रासा ❀ चहत देवऋषि मम पुर बासा
जे कामी लोलुप जग माहीं ❀ कुटिल काक इव सबहिं डराहीं

दो॰ सूख हाड़ लै भाग शठ, श्वान निरखि मृगराज ।
छीनिलेइ मन जानि जिमि, तिमि सुरपतिहि न लाज ॥

तेहि आश्रमहिं मदन जब गयऊ ❀ निज माया वसन्त निर्मयऊ
कुसुमित विविध विटप बहुरंगा ❀ कूजहिं कोकिल गुंजहिं भृंगा

१ मारके २ वैकुंठ ३ शिव ४ अतिपवित्र ५ नारद ६ विष्णु ७ कारण ८ कामदेव ९ इन्द्र ॥

चली सुहावनि त्रिविध बयारी ❀ काम कृशानु[1] बढ़ावनहारी
रम्भादिक सुरनारि नवीना ❀ सकल असमशरकला प्रवीना
करहिं गान बहु तान तरंगा ❀ बहुविधि क्रीड़हिं पाणिपतंगा
देखि सहाय मदन हरषाना ❀ कीन्हेसि पुनि प्रपंच विधि नाना
कामकला कछु मुनिहिं न व्यापी ❀ निज भय डरेउ मनोभव पापी
सीमँ कि चापिसकै कोउ तासू ❀ बड़ रखवार रमापति जासू

दो०सहित सहाय सभीत अति, मानि हारि मन मैन।
गहेसि जाइ मुनिवर चरण, कहि सुठि आरत[3] बैन॥

भयउ न नारद मन कछु रोषा ❀ कहि प्रिय वचन कामपरितोषा
नाइ चरण शिर आयसु पाई ❀ गयउ मदन तब सहित सहाई
मुनि सुशीलता आपनि करणी ❀ सुरपति सभा जाइ सब वरणी
सुनि सबके मन अचरज आवा ❀ मुनिहिं प्रशंसि हरिहिं शिरनावा
तब नारद गमने शिव पाहीं ❀ जीतिकाम अहमित मनमाहीं
मार[4] चरित शंकरहिं सुनावा ❀ अतिप्रिय जानि महेश सिखावा
बारबार विनवउँ मुनि तोहीं ❀ जिमि यह कथा सुनायउ मोहीं
तिमि जनि हरिहिं सुनायहु कबहूं ❀ चलेहु प्रसंग दुरायहु तबहूं

दो०शम्भु दीन्ह उपदेश हित, नहिं नारदहि सुहान।
भरद्वाज कौतुक सुनहु, हरि इच्छा बलवान॥

राम कीन्ह चाहैं सोइ होई ❀ करै अन्यथा[5] अस नहिं कोई
शम्भु वचन मुनि मनहिं न भाये ❀ तब विरञ्चि[6] के लोक सिधाये
तहँ पुनि कछुक दिवस रघुराया ❀ रहे हृदय अहमित अधिकाया
एक बार करतल वरवीणा ❀ गावत हरिगुण गान प्रवीणा[7]
क्षीरसिन्धु[8] गमने मुनिनाथा ❀ जहँ बस श्रीनिवास श्रुतिमाथा
हरषि मिले उठि रमानिकेता ❀ बैठे आसन ऋषिहि समेता
बोले बिहँसि चराचरराया[9] ❀ बहुत दिनन कीन्हीं मुनि दाया

१ अग्नि २ हृद ३ दुःखी ४ कामदेव ५ दूसरी तरह ६ ब्रह्मा ७ निपुण ८ सागर ९ विष्णु॥

कामचरित नारद सब भाखे ❀ यद्यपि प्रथम बरजि शिव राखे
अति प्रचण्ड रघुपति की माया ❀ जेहि न मोह अस को जगजाया

दो० रूख वदन करि वचन मृदु, बोले श्री भगवान ।
तुम्हरे सुमिरण ते मिटहिं, मोह मार मद मान ॥

सुनु मुनि मोह होइ मन ताके ❀ ज्ञान विराग हृदय नहिं जाके
ब्रह्मचर्य्य व्रत रति मति धीरा ❀ तुमहिं कि करै मनोभव पीरा
नारद कहेउ सहित अभिमाना ❀ कृपा तुम्हारि सकल भगवाना
करुणानिधि मन दीख विचारी ❀ उर अंकुरेउ गर्व्व तरु[1] भारी
वेगि सो मैं डारिहौं उपारी ❀ प्रण हमार सेवक हितकारी
मुनिकर हित मम कौतुक होई ❀ अवशि उपाय करब मैं सोई
तब नारद हरि पद शिरनाई ❀ चले हृदय अहंमित[2] अधिकाई
श्रीपति निज माया तब प्रेरी ❀ सुनहु कठिन करणी तेहिकेरी

दो० विरचेहु मगमहँ नगर तेहि, शत योजन[3] विस्तार ।
श्रीनिवासपुर ते अधिक, रचना विविध प्रकार ॥

बसहिं नगर सुन्दर नर नारी ❀ जनु बहु मनसिज[4] रति तनुधारी
तेहि पुर बसै शीलनिधि राजा ❀ अगणित[5] हय गय सेन समाजा
शत सुरेश सम विभव विलासा ❀ रूप तेज बल नीति निवासा
विश्वमोहनी तासु कुमारी ❀ श्री विमोह जेहि रूप निहारी
सो हरिमाया सब गुण खानी ❀ शोभा तासु कि जाइ बखानी
करै स्वयंवर सो नृप बाला ❀ आये तहँ अगणित महिपाला[6]
मुनि कौतुकी[7] नगर तेहि गयऊ ❀ पुरवासिन सन पूंछत भयऊ
सुनि सब चरित भूप गृह आये ❀ करि पूजा नृप मुनि बैठाये

दो० आनि दिखाई नारदहिं, भूपति राजकुमारि ।
कहहु नाथ गुण दोष सब, यहि कर हृदय विचारि ॥

देखि रूप मुनि विरति बिसारी ❀ बड़ी बार लागि रहे निहारी

१ वृक्ष २ अहंकार ३ चार सौ कोश ४ कामदेव ५ असंख्य ६ राजालोग ७ खिलाड़ी ॥

लच्चण तासु विलोकि भुलाने ❀ हृदय हर्ष नहिं प्रकट बखाने
जो यहि वरै अमर सो होई ❀ समर भूमि तेहि जीत न कोई
सेवहिं सकल चराचर ताही ❀ वरै शीलनिधि कन्या जाही
लच्चण सब विचारि उर राखे ❀ कछुक बनाइ भूप सन भाखे
सुता सुलच्चणि कहि नृपपाहीं ❀ नारद चले शोच मनमाहीं
करौं जाइ सोइ यतन विचारी ❀ जेहि प्रकार मोहिं वरै कुमारी
जप तप कछु न होइ यहिकाला[1] ❀ हे विधि मिलै कवनविधि बाला

दो० यहि अवसर चाहिय परम, शोभा रूप विशाल।
जो विलोकि[2] रीझै कुँवरि, तब मेलै जयमाल॥

हरि सन मांगौं सुन्दरताई ❀ होइहि जात गहरु अति भाई
मोरे हित हरि सम नहिं कोऊ ❀ यहि अवसर सहाय सो होऊ
बहुविधि विनय कीन्ह तेहिकाला ❀ प्रकटेउ प्रभु कौतुकी कृपाला
हरि विलोकि मुनिनयन जुड़ाने ❀ होइहि काज हिये हर्षाने
अति आरत कहि कथा सुनाई ❀ करहु कृपा हरि होहु सहाई
आपन रूप देहु प्रभु मोहीं ❀ आन भाँति नहिं पावहुँ ओहीं
जेहि विधि नाथ होहि हित मोरा ❀ करौ सो वेगि दास मैं तोरा
निज माया बल देखि विशाला ❀ हियँ[3] हँसि बोले दीनदयाला

दो० जेहि विधि होइहि परमहित, नारद सुनहु तुम्हार।
सोइ हम करब न आनकछु, वचन न मृषा[4] हमार॥

कुपथ मांग रुज व्याकुल रोगी ❀ वैद्य न देइ सुनहु मुनि योगी
यहि विधि हित तुम्हार मैं ठयऊ ❀ कहि अस अन्तर्हित[5] प्रभु भयऊ
माया विवश भये मुनि मूढ़ा ❀ समुझि नहीं हरिगिरा[6] निगूढ़ा
गमने तुरत तहां ऋषिराई[7] ❀ जहां स्वयंवर भूमि बनाई
निज निज आसन बैठे राजा ❀ बहु बनाव करि सहित समाजा
मुनि मन हर्ष रूप अति मोरे ❀ मोहिंतजि आन वरिहि नहिं भोरे

१ इस समय २ देखिकर ३ हृदय ४ झूँठ ५ अन्तर्ध्यान ६ वाणी ७ नारद॥

मुनि हितकारण कृपानिधाना ❀ दीन्ह कुरूप न जाइ बखाना
सो चरित्र लखि काहु न पावा ❀ नारद जानि सबन शिरनावा

दो० रहे तहां दुइ रुद्रगण, जे जानहिं सब भेउ।
विप्र वेष देखत फिरहिं, परम कौतुकी तेउ॥

जेहि समाज बैठे मुनि जाई ❀ हृदय रूप अहमित अधिकाई
तहँ बैठे महेश गण दोऊ ❀ विप्र वेष गति लखै न कोउ
करहिं कूट नारदहि सुनाई ❀ नीक दीन्ह हरि सुन्दरताई
रीझिहि राजकुँवरि छवि देखी ❀ इनहिं वरिहि हरिजानि विशेखी
मुनिहिं मोह मन हाथ पराये ❀ हँसहिं शम्भुगण अति सचुपाये
यदपि सुनहिं मुनि अटपट बानी ❀ समुझि न परै बुद्धि भ्रमसानी
काहु न लखा सो चरित विशेखी ❀ सो स्वरूप नृपकन्या देखी
मर्कट वदन भयंकर देही ❀ देखत हृदय क्रोध भा तेही

दो० सखी संग लै कुवँरि तब, चलि जनु राजमराल।
देखत फिरै महीप सब, कर सरोज जयमाल॥

जेहि दिशि बैठे नारद फूली ❀ सो दिशि सो न विलोकेउ भूली
पुनिपुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं ❀ देखि दशा हरगण मुसुकाहीं
धरि नृपतनु तहँ गयउ कृपाला ❀ कुवँरि हरषि मेली जयमाला
दुलहिनि लै गये लक्ष्मिनिवासा ❀ नृपसमाज सब भयउ निरासा
मुनि अतिविकल मोह मतिनाठी ❀ मणि गिरिगई छूटि जनु गाँठी
तब हरगण बोले मुसुकाई ❀ निज मुख मुकुर विलोकहु जाई
अस कहि दोउ भागे भयभारी ❀ वदन दीख मुनि वारि निहारी
वेष विलोकि क्रोध अति बाढ़ा ❀ तिनहिं शाप दीन्हेउ अतिगाढ़ा

दो० होहु निशाचर जाय तुम, कपटी पापी दोउ।
हँसेहु हमहिं सो लेहु फल, बहुरि हँसेउ मुनि कोउ॥

पुनि जल दीख रूप निज पावा ❀ तदपि हृदय संतोष न आवा

१ देखि २ विष्णु जानि ३ वानर ४ राजहंस ५ कमल ६ नाश ७ शीशा॥

फरकत अधर कोप मनमाहीं ❀ सपदि चले कमलापति पाहीं
देहौं शाप कि मरिहौं जाई ❀ जगत मोर उपहास कराई
बीचहि पन्थ मिले दनुजारी ❀ संग रमा सोइ राजकुमारी
बोले मधुर वचन सुरसाईं ❀ मुनि कहँ चलेउ विकल की नाईं
सुनत वचन उपजा अति क्रोधा ❀ माया वश न रहा मन बोधा
परसम्पदा सकहु नहिं देखी ❀ तुम्हरे ईर्षा कपट विशेखी
मथत सिन्धु रुद्रहिं बौरायहु ❀ सुरन प्रेरि विष पान करायहु

दो० असुर सुरा[2] विष शङ्करहिं, आपु रमा मणिचारु।
स्वारथसाधककुटिलतुम, सदा कपट व्यवहारु॥

परम स्वतन्त्र[3] न शिर पर कोई ❀ भावै मनहिं करहु तुम सोई
भलेहि मन्द मन्दहि भल करहू ❀ विस्मय हर्ष न हिय कछु धरहू
डहकि डहकि परचेउ सब काहू ❀ अति अशंक मन सदा उछाहू
कर्म्म शुभाशुभ तुमहिं न बाधा ❀ अबलगि तुमहिं न काहू साधा
भले भवन अब बायन दीन्हा ❀ पावहुगे फल आपन कीन्हा
बंच्यहु मोहिं जवन धरि देहा ❀ सोइ तनु धरहु शाप मम येहा
कपि आकृति तुम कीन्ह हमारी ❀ करिहहिं कीशं सहाय तुम्हारी
मम अपकार कीन्ह तुम भारी ❀ नारि विरह ते होहु दुखारी

दो० शाप शीश धरि हरषि हिय, प्रभु बहु विनती कीन्ह।
निज माया की प्रबलता, करषि कृपानिधि लीन्ह॥

जब हरि माया दूरि निवारी ❀ नहिं तहँ रमा न राजकुमारी
तब मुनि अति सभीत हरिचरणा ❀ गहे[6] पाहि प्रणतारति हरणा
वृथा होइ मम शाप कृपाला ❀ मम इच्छा कह दीनदयाला
मैं दुर्वचन कहेउँ बहुतेरे ❀ कह मुनि पाप मिटहिं किमि मेरे
जपहु जाइ शंकर शत नामा ❀ होइहि हृदय तुरत विश्रामा
कोउ नहिं शिवसमान प्रिय मोरे ❀ अस परतीति[7] त्यागहु जनि भोरे

१ विष्णु २ मदिरा ३ स्वाधीन ४ रूप ५ बन्दर ६ पकड़े ७ विश्वास॥

जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी ❀ सो न पाव मुनि भक्ति हमारी
अस उरधरि महि विचरहु जाई ❀ अब न तुमहिं माया नियराई

दो० बहुविधि मुनिहिं प्रबोधि हरि, तब भये अन्तर्द्धान।
सत्यलोक नारद चले, करत रामगुण गान॥

हरगण मुनिहिं जात पथ देखी ❀ विगत मोह मन हर्ष विशेखी
अति सभीत नारद पहँ आये ❀ गहि पद आरत वचन सुनाये
हरगण हम न विप्र मुनिराया ❀ बड़ अपराध कीन्ह फल पाया
शाप अनुग्रह करहु कृपाला ❀ बोले नारद दीनदयाला
निशिचर जाइ होहु तुम दोऊ ❀ वैभव विपुल तेज बल होऊ
भुजबल विश्व जितव तुम जहिया ❀ धरिहैं विष्णु मनुजतनु तहिया
समर मरण हरिहाथ तुम्हारा ❀ ह्वैहहु मुक्त न पुनि संसारा
चले युगल मुनिपद शिरनाई ❀ भये निशाचर कालहि पाई

दो० एक कल्प यहि हेतु प्रभु, लीन्ह मनुज अवतार।
सुर रंजन सज्जन सुखद, भंजन धरणी भार॥

यहि विधि जन्म कर्म हरि केरे ❀ सुन्दर सुखद विचित्र घनेरे
कल्प कल्प प्रति प्रभु अवतरहीं ❀ चारु चरित नानाविधि करहीं
तब तब कथा मुनीशन गाई ❀ परम विचित्र प्रबंध बनाई
विविध प्रसंग अनूप बखाने ❀ करहिं न सुनि आश्चर्य्य सयाने
हरि अनंत हरिकथा अनन्ता ❀ कहहिं सुनहिं बहुविधि सब सन्ता
रामचन्द्र के चरित सुहाये ❀ कल्प कोटि निगमागम गाये
यह प्रसंग मैं कहा बखानी ❀ हरिमाया मोहहिं मुनि ज्ञानी
प्रभु कौतुकी प्रणत हितकारी ❀ सेवत सुलभ सकल दुखहारी

सो० सुर नर मुनि कोउ नाहिं, जेहि न मोह माया प्रबल।
अस विचारि मन माहिं, भजिय महामायापतिहि॥

अपर हेतु सुनु शैलकुमारी ❀ कहौं विचित्र कथा विस्तारी

१ शिव २ मार्ग ३ संग्राम ४ मनुष्य ५ बहुत ६ रचना ७ किरोड़ ८ हाल॥

जेहि कारण अजं अगुंण अनूपा ❀ ब्रह्म भये कोशलपुर भूपा
जो प्रभु विपिन फिरत तुम देखा ❀ बन्धु समेत किये मुनि वेखा
जासु चरित अवलोकि भवानी ❀ सती शरीर रहिउ बौरानी
अजहुँ न छाया मिटी तुम्हारी ❀ तासु चरित सुनु भ्रम रुजं हारी
लीला कीन्ह जो तेहि अवतारा ❀ सो सब कहिहौं मति अनुसारा
भरद्वाज सुनि शंकर बानी ❀ सकुचि सप्रेम उमा हरषानी
लगे बहुरि वरणै वृषकेतू ❀ सो अवतार भयउ जेहि हेतू

दो० सो मैं तुम सन कहौं सब, सुनु मुनीश मनलाय।
रामकथा कलिमल हरणि, मङ्गल करणि सुभाय॥

स्वायम्भुव मनु अरु शतरूपा ❀ जिनते भै नरसृष्टि अनूपा
दम्पति धर्म आचरण नीका ❀ अजहुँ गाव श्रुति जिनकी लीका
नृप उत्तानपाद सुत तासू ❀ ध्रुव हरिभक्त भये सुत जासू
लघुंसुत नाम प्रियव्रत ताही ❀ वेद पुराण प्रशंसत जाही
देवहुती पुनि तासु कुमारी ❀ जो मुनि कर्दम की प्रियनारी
आदिदेव प्रभु दीनदयाला ❀ जठंर धरेउ जेहि कपिल कृपाला
सांख्यशास्त्र जिन प्रकट बखाना ❀ तत्त्व विचार निपुंण भगवाना
तेहि मनु राज कीन्ह बहुकाला ❀ प्रभुआयसु बहुविधि प्रतिपाला

सो० होइ न विषय विराग, भवन बसत भा चौथंपन।
हृदय बहुत दुख लाग, जन्मगयउ हरिभक्ति बिन॥

बरबस राज्य सुतहिं नृप दीन्हा ❀ नारिसमेत गमन वन कीन्हा
तीरथ वर नैमिष विख्याता ❀ अति पुनीत साधक सिधिदाता
बसहिं तहां मुनि सिद्धसमाजा ❀ तहँ हिय हरषि चले मनुराजा
पन्थ जात सोहहिं मतिधीरा ❀ ज्ञान भक्ति जनु धरे शरीरा
पहुँचे जाय धेनुमति तीरा ❀ हरषि नहाने निर्मल नीरा
आये मिलन सिद्ध मुनि ज्ञानी ❀ धर्म धुरन्धर नृप ऋषि जानी

---

१ अजन्मा २ निर्गुण ३ रोग ४ पार्वती ५ छोटेपुत्र ६ पेट ७ प्रवीण ८ वृद्धावस्था ९ ज़बरदस्ती ॥

जहँ जहँ तीरथ रहे सुहाये ❀ मुनिन सकल सादर करवाये
कृश शरीर मुनिपट परिधाना ❀ सन्त सभा नित सुनहिं पुराना

दो० द्वादश अक्षर मंत्र वर, जपहिं सहित अनुराग।
वासुदेव पद पंकरुह, दम्पति मन अति लाग॥

करहिं अहार शाक फल कन्दा ❀ सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानन्दा
पुनि हरि हेतु करन तप लागे ❀ वारि अहार मूल फल त्यागे
उर अभिलाष निरन्तर होई ❀ देखिय नयन परम प्रभु सोई
अगुण अखण्ड अनन्त अनादी ❀ जेहि चिन्तहिं परमारथवादी
नेति नेति जेहि वेद निरूपा ❀ चिदानन्द निरुपाधि अनूपा
शम्भु विरंचि विष्णु भगवाना ❀ उपजहिं जासु अंशतें नाना
ऐसे प्रभु सेवक वश अहहीं ❀ भक्त हेतु लीला तनु गहहीं
जो यह वचन सत्य श्रुति भाषा ❀ तौ हमारि पूजहिं अभिलाषा

दो० यहि विधि बीते वर्षषट, सहस सुवारि अहार।
संवत सप्त सहस्र पुनि, रहे समीर अधार॥

वर्ष सहस दश त्यागेउ सोऊ ❀ ठाढ़े रहे एक पद दोऊ
विधि हरि हर तप देखि अपारा ❀ मनु समीप आये बहुबारा
मांगहु वर बहु भाँति लुभाये ❀ परम धीर नहिं चलहिं चलाये
अस्थि मात्र है रहेउ शरीरा ❀ तदपि मनाक मनहिं नहिं पीरा
प्रभु सर्वज्ञ दास निज जानी ❀ गति अनन्य तापस नृपरानी
मांगु मांगु वर भै नभबानी ❀ परम गँभीर कृपामृत सानी
मृतक जियावनि गिरा सुहाई ❀ श्रवणरन्ध्र ह्वै उर जब आई
हृष्ट पुष्ट तनु भयउ सुहाये ❀ मानहुँ अबहिं भवन ते आये

दो० श्रवणसुधा सम वचनसुनि, प्रेम प्रफुल्लित गात।
बोले मनु करि दण्डवत, प्रेम न हृदय समात॥

सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनू ❀ विधि हरि हर वन्दित पदरेनू

सेवत सुलभ सकल सुखदायक ❀ प्रणतपाल सचराचर नायक
जो अनाथ हित हम पर नेहू ❀ तौ प्रसन्न है यह वर देहू
जो स्वरूप बस शिव मनमाहीं ❀ जेहि कारण मुनि यतन कराहीं
जो भुशुण्डि मनमानस हंसा ❀ सगुण अगुण जेहि निगम प्रशंसा
देखहिं सो स्वरूप भरि लोचन ❀ कृपा करहु प्रणतारति मोचन
दम्पति वचन परम प्रिय लागे ❀ मृदुल विनीत प्रेमरस पागे
भक्त बछल प्रभु कृपा निधाना ❀ विश्ववास प्रकटे भगवाना

दो॰ नीलसरोरुह नीलमणि, नील नीलधर श्याम।
लाजहिं तनुशोभा निरखि, कोटि कोटि शत काम॥

शरद मयंक वदन छवि सींवा ❀ चारु कपोल चिबुक दर[८] ग्रीवा
अधर अरुण रद सुन्दर नासा ❀ विधुकर निकर विनिंदकहासा
नव अम्बुज अम्बक छवि नीकी ❀ चितवनि ललित भावती जीकी
भृकुटि मनोज[५] चाप छविहारी ❀ तिलक ललाट पटल द्युतिकारी
कुण्डल मकर मुकुट शिर भ्राजा ❀ कुलिशकेश जनु मधुप समाजा
उर श्रीवत्स रुचिर वनमाला ❀ पदिक हार भूषण मणिजाला
केहरि कन्धर चारु जनेऊ ❀ बाहु विभूषण सुन्दर तेऊ
करिकर सरिस सुभग भुजदण्डा ❀ कटि निषंग कर शर कोदण्डा

दो॰ तड़ित विनिन्दक पीतपट, उदर रेख वर तीनि।
नाभि मनोहर लेति जनु, यमुन भँवर छवि छीनि॥

पद राजीव वरणि नहिं जाहीं ❀ मुनिमनमधुप बसहिं जिनमाहीं
बाम भाग शोभित अनुकूला ❀ आदिशक्ति छविनिधि जगमूला
उपजहिं जासु अंश गुणखानी ❀ अगणित उमा[७] रमा ब्रह्मानी[८]
भृकुटि विलास जासु जग होई ❀ राम वाम दिशि सीता सोई
छवि समुद्र हरि रूप विलोकी ❀ इकटक रहे नयनपट रोकी
चितवहिं सादर रूप अनूपा ❀ तृप्ति न मानहिं मनु शतरूपा

१ बेद २ मेघ ३ चन्द्र ४ शंख ५ कामदेव ६ सृष्टि ७ पार्वती ८ सरस्वती ॥

हर्ष विवश तनु दशा[1] भुलानी ❀ परे दण्डइव गहि पद पानी
शिर परसे प्रभु निजकर कंजा[2] ❀ तुरत उठाये करुणापुंजा

दो० बोले कृपानिधान पुनि, अतिप्रसन्न मोहिं जानि।
मांगहु वर जोइ भाव मन, महा दानि अनुमानि॥

सुनि प्रभुवचन जोरि युगपाणी[3] ❀ धरि धीरज बोले मृदुवाणी
नाथ देखि पदकमल तुम्हारे ❀ अब पूजे सब काम हमारे
एक लालसा बड़ि मनमाहीं ❀ सुगम अगम कहिजात सो नाहीं
तुमहिं देत अति सुगम गोसांई ❀ अगम लागि मोहिं निजकृपणाई
यथा दरिद्र कल्पतरु पाई ❀ बहुसम्पति मांगत सकुचाई
तासु प्रभाव न जानत सोई ❀ तथा हृदय मम[4] संशय होई
सो तुम जानहु अन्तरयामी ❀ पुरवहु मोर मनोरथ[5] स्वामी
सकुचविहाय मांगु नृप मोहीं ❀ मोरे नहिं अदेय कछु तोहीं

दो० दानिशिरोमणि कृपानिधि, नाथ कहौं सतिभाव।
चाहौं तुमहिं समान सुत, प्रभुसन कौन दुराव॥

देखि प्रीति सुनि वचन अमोले ❀ एवमस्तु[6] करुणानिधि बोले
आपु सरिस कहँ खोजौं जाई ❀ नृप तव तनय होब मैं आई
शतरूपहिं विलोकि कर जोरे ❀ देवि मांगु वर जो रुचि तोरे
जो वर नाथ चतुर नृप मांगा ❀ सोइ कृपालु मोहिं अतिप्रिय लागा
प्रभु परन्तु सुठि होत ढिठाई ❀ यदपि भक्तहित तुमहिं सुहाई
तुम ब्रह्मादि जनक जग स्वामी ❀ ब्रह्म सकल उर अन्तरयामी
अस समुझत मन संशय होई ❀ कहा जो प्रभु प्रमाण पुनि सोई
जे निज भक्त नाथ तव अहईं ❀ जो सुख पावहिं जो गति लहईं

दो० सोइसुखसोइगतिसोइभगति, सोइनिजचरणसनेहु।
सोइ विवेक[8] सोइ रहनि प्रभु, मोहिं कृपाकरि देहु॥

सुनि मृदु गूढ़ भक्तियुत रचना ❀ कृपासिन्धु बोले मृदु[9] वचना

१ अवस्था २ कमल ३ हाथ ४ मेरे ५ वाञ्छित ६ ऐसा ही हो ७ बहुत ८ ज्ञान ९ कोमल॥

जो कछु रुचि तुम्हरे मन-माहीं ❀ मैं सो दीन्ह सब संशय नाहीं
मातु विवेक अलौकिक तोरे ❀ कबहुँ न मिटिहि अनुग्रह मोरे
वन्दि चरण मनु कहेउ बहोरी ❀ अवर एक विनती प्रभु मोरी
सुत विषयक तवपद रति होऊ ❀ मोहिं बरु मूढ़ कहै किन कोऊ
मणिबिनुफणि जिमिजलबिनुमीना ❀ मम जीवन तिमि तुमहिं अधीना
अस वर मांगि चरणगहि रह्यऊ ❀ एवमस्तु करुणानिधि कह्यऊ
अब तुम मम अनुशासन मानी ❀ बसहु जाइ सुरपति रजधानी

सो०तहँ करि भोग विशाल, तात गये कछु काल पुनि।
ह्वैहहु अवध भुवाल, तब मैं होब तुम्हार सुत॥

इच्छामय नर वेष सँवारे ❀ ह्वैहहुँ प्रकट निकेतं तुम्हारे
अंशन सहित देह धरि ताता ❀ करिहौं चरित भक्त सुखदाता
जेहि सुनि सादर नर बड़भागी ❀ भवं तरिहहिं ममता मदं त्यागी
आदिशक्ति जेहि जग उपजाया ❀ सो अवतरिहि मोरि यह माया
पुरउब मैं अभिलाष तुम्हारा ❀ सत्य सत्य प्रण सत्य हमारा
पुनिपुनि अस कहि कृपानिधाना ❀ अन्तर्द्धान भये भगवाना
दम्पति उर धरि भक्ति कृपाला ❀ तेहि आश्रमहिं बसे कछुकाला
समय पाय तनु तजि अनयासा ❀ जाइ कीन्ह अमरावति वासा

दो०यह इतिहास पुनीत अति, उमहिं कहेउ वृषकेतु।
भरद्वाज सुनु अपर पुनि, रामजन्म कर हेतु॥

सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी ❀ जो गिरिजाप्रति शम्भु बखानी
विश्व विदित इक केकय देशू ❀ सत्यकेतु तहँ बसै नरेशू
धर्म्म धुरन्धर नीति निधाना ❀ तेज प्रताप शील बलवाना
तेहिके भये युगल सुत वीरा ❀ सब गुणधाम महा रणधीरा
रजधानी जेठे सुत आही ❀ नाम प्रतापभानु अस ताही
अपर सुतहि अरिमर्द्दन नामा ❀ भुजबल अतुल अचल संग्रामा

१ आज्ञा २ घर ३ संसार ४ घमंड ५ स्त्री पुरुष ६ स्थान ७ इन्द्रपुरी॥

भाइहि भाइहि परम सुरीती ❀ सकल दोष छल वर्जित प्रीती
जेठे सुतहि राज्य नृप दीन्हा ❀ हरिहित आपु गमन वन कीन्हा

दो० जब प्रतापरवि भयउ नृप, फिरी दोहाई देश ।
प्रजापाल अति वेद विधि, कतहुँ नहीं अघ[1] लेश ॥

नृप हितकारक सचिव[2] सुजाना ❀ नाम धर्मरुचि शुक्र समाना
सचिव सयान बन्धु बलवीरा ❀ आपु प्रतापभानु[3] रणधीरा
सेन संग चतुरङ्ग अपारा ❀ अमित सुभट सब समर जुझारा
सेन विलोकि राव हर्षाना ❀ अरु बाजे गहगहे निशाना[4]
विजय हेतु सब कटक बनाई ❀ सुदिन साधि नृप चल्यो बजाई
जहँ तहँ परीं अनेक लराई ❀ जीते सकल भूप बरिआई
सप्तद्वीप भुज बल वश कीन्हें ❀ लै लै दण्ड छांड़ि नृप दीन्हें
सकल अवनि[5] मंडल तेहिकाला ❀ एक प्रतापभानु महिपाला

दो० स्ववशविश्वकरि बाहुबल, निजपुर कीन्ह प्रवेश ।
अर्थ धर्म्म कामादि सुख, सेवहिं सबै नरेश ॥

भूप प्रतापभानु बल पाई ❀ कामधेनु भै भूमि सुहाई
सब दुख वर्जित प्रजा सुखारी ❀ धर्म्मशील सुन्दर नरनारी
सचिव धर्मरुचि हरिपद प्रीती ❀ नृपहित हेतु सिखावत नीती
गुरु सुर सन्त पितर महिदेवा[6] ❀ करहि सदा नृप सबकी सेवा
भूप धर्म्म जे वेद बखाने ❀ सकल करहि सादर सुखमाने
दिनप्रति देइ विविध विधि दाना ❀ सुनै शास्त्र वर वेद पुराना
नाना वापी कूप तड़ागा ❀ सुमन वाटिका[7] सुन्दर बागा
विप्र भवन सुरभवन सुहाये ❀ सब तीरथन विचित्र बनाये

दो० जहँलगि कहे पुराण श्रुति, एक एक सब याग ।
बार सहस्र सहस्र नृप, किये सहित अनुराग ॥

हृदय न कछु फल अनुसंधाना ❀ भूप विवेकी परम सुजाना

---

१ पाप २ मंत्री ३ बड़े योद्धा ४ नगाड़ा ५ पृथ्वी ६ ब्राह्मण ७ फुलवाड़ी ॥

करै जो धर्म्म कर्म्म मनबानी ❀ वासुदेव अर्पित नृपज्ञानी
चढ़ि बरवाजि बार इक राजा ❀ मृगयाकर सब साजि समाजा
विन्ध्याचल गँभीर बन गयऊ ❀ मृग पुनीत बहु मारत भयऊ
फिरत विपिन नृप दीख वराहू ❀ जनु बन दुरेउ शशिहि ग्रसि राहू
बड़विधु नहिं समात मुख माहीं ❀ मनहुँ क्रोधवश उगिलत नाहीं
कोल कराल दशन छवि गाई ❀ तनु विशाल पीवर अधिकाई
घुरघुरात हय आरव पाये ❀ चकित विलोकत कान उठाये

दो॰ नील महीधर शिखरसम, देखि विशाल वराह।
चपरि चलेउ हय सुटुकि नृप, हांकि न होय निबाह॥

आवत देखि अधिक रव वाजी ❀ चल्यो वराह मरुतगति भाजी
तुरत कीन्ह नृप शरसन्धाना ❀ महि मिलि गयउ विलोकत बाना
तकि तकि तीर महीश चलावा ❀ छल करि सुवर शरीर बचावा
प्रकटत दुरत जाइ मृग भागा ❀ रिसवश भूप चलेउ सँग लागा
गयउ दूरि बन गहन वराहू ❀ जहां नाहिं गज वाजि निबाहू
अति अकेल बन विपुल कलेशू ❀ तदपि न मृगमग तजै नरेशू
कोल विलोकि भूप बड़ धीरा ❀ भागि पैठु गिरिगुहा गँभीरा
अगम देखि नृप अति पछिताई ❀ फिरेउ महाबन परेउ भुलाई

दो॰ खेदखिन्न तिरषित क्षुधित, राजा वाजि समेत।
खोजत व्याकुल सरित सर, जल बिनु भयउ अचेत॥

फिरत विपिन आश्रम इक देखा ❀ तहँ बस नृपति कपटमुनि वेखा
जासु देश नृप लीन्ह छुड़ाई ❀ समर सेन तजि गयउ पराई
समय प्रतापभानुकर जानी ❀ आपन अति असमय अनुमानी
गयउ न गृह मन परम गलानी ❀ मिला न राजहिं नृप अभिमानी
रिस उरमारि रंक जिमि राजा ❀ विपिन बसै तापस के साजा
तासु समीप गमन नृप कीन्हा ❀ यह प्रतापरवि तेइँ तब चीन्हा

१ शिकार २ बन ३ घेरा ४ सुवर ५ मोटा ६ आहट ७ पहाड़ ८ जल्दी॥

राव तृषित नहिं तेहिं पहिंचाना ❀ देखि सुवेश महामुनि जाना
उतरि तुरँगते कीन्ह प्रणामा ❀ परम चतुर न कह्यो निजनामा

दो० भूपति तृषित विलोकि तेइँ, सरवर दीन्ह दिखाइ।
मज्जनपान समेत हय, कीन्ह नृपति हर्षाइ॥

गा श्रम सकल सुखी नृप भयऊ ❀ निज आश्रम तापस लै गयऊ
आसन दीन्ह अस्त रवि जानी ❀ पुनि तापस बोला मृदु बानी
को तुम कस वन फिरहु अकेले ❀ सुन्दर युवा जीव पर हेले
चक्रवर्ति के लच्छण तोरे ❀ देखत दया लागि अति मोरे
नाम प्रतापभानु अवंनीशा ❀ तासु सचिव मैं सुनहु मुनीशा
फिरत अहेरहि परेउँ भुलाई ❀ बड़े भाग्य देखेउँ पद आई
हम कहँ दुर्लभ दरश तुम्हारा ❀ जानत हौं कछु भल होनहारा
कह मुनि तात भयउ अँधियारा ❀ योजन सत्तरि नगर तुम्हारा

दो० निशा घोर गम्भीर वन, पन्थ[२] न सूझ सुजान।
बसहु आजु अस जानि तुम, जायहु होत बिहान॥
तुलसी जस भवितव्यता, तैसै मिलै सहाइ।
आपु न आवै ताहि पै, ताहि तहां लैजाइ॥

भलेहि नाथ आयसुं[३] धरि शीशा ❀ बांधि तुरँग तरु बैठ महीशा
नृप बहु भाँति प्रशंसेउ ताही ❀ चरण वन्दि निज भाग्य सराही
पुनि बोलेउ मृदु गिरा सुहाई ❀ जानि पिता प्रभु करौं ढिठाई
म्वहिं मुनीश सुत सेवक[४] जानी ❀ नाथ नाम निज कहहु बखानी
तेहि न जान नृप नृपहि सो जाना ❀ भूप सुहृदय सो कपट सयाना
वैरी पुनि च्छत्रिय पुनि राजा ❀ छलबल कीन्ह चहै निजकाजा
समुझि राजसुख दुखित अरौती[५] ❀ अवां अनल इव सुलगै छाती
सरल वचन नृपके सुनि काना ❀ बयर सँभारि हृदय हरषाना

दो० कपट बोरि वाणी मृदुल, बोलेउ युक्ति समेत।

१ राजा २ रास्ता ३ आज्ञा ४ दास ५ शत्रु॥

नाम हमार भिखारि अब, निरधंन रहित निकेत ॥

कह नृप जे विज्ञान निधाना ❀ तुम सारिखे गलित अभिमाना
सदा अपनपौ रहहिं दुराये ❀ सब विधि कुशल कुवेष बनाये
तेहिते कहहिं सन्त श्रुति टेरे ❀ परम अकिंचन प्रिय हरिकेरे
तुमसम अधन भिखारि अगेहा ❀ होत विरंचि शिवहि सन्देहा
योसि सोसि तव चरण नमामी ❀ मोपर कृपा करिय अब स्वामी
सहज प्रीति भूपति की देखी ❀ आपु विषे विश्वास विशेखी
सब प्रकार राजहिं अपनाई ❀ बोलेउ अधिक सनेह जनाई
सुनु सतिभाव कहौं महिपाला ❀ इहां बसत बीते बहु काला

दो० अबलगि मोहिं न मिलेउ कोउ, मैं न जनायउँ काहु।
लोक मान्यता अनल सम, कर तप काननदाहु ॥

सो० तुलसी देखि सुवेख, भूलें मूढ़ न चतुर नर।
सुन्दर केकी पेख, वचनसुधासम अशनअहि ॥

ताते गुप्त रहौं वन माहीं ❀ हरि तजि किमपि प्रयोजन नाहीं
प्रभु जानत सब बिनहिं जनाये ❀ कहहु कवन सिधि लोक रिझाये
तुम शुचि सुमति परमप्रिय मोरे ❀ प्रीति प्रतीति मोहिं पर तोरे
अब जो तात दुरावों तोहीं ❀ दारुण दोष बढ़ै अति मोहीं
जिमि जिमि तापस कथै उदासा ❀ तिमि तिमि नृपहिं उपजविश्वासा
देखा स्ववश कर्म्म मन बानी ❀ तब बोला तापस बकध्यानी
नाम हमार एकतनु भाई ❀ सुनि नृप बोलेउ पुनि शिरनाई
कहहु नाम कर अर्थ बखानी ❀ मोहिं सेवक अति आपन जानी

दो० आदि सृष्टि उपजी जबै, तब उतपति भइ मोरि।
नाम एकतनु हेतु तेहि, देह न धरी बहोरि ॥

जानि आश्चर्य करहु मनमाहीं ❀ सुत तपते दुर्लभ कछु नाहीं
तप बलते जग सृजै विधाता ❀ तप बल विष्णु भये परित्राता

---

१ दरिद्री २ नाश ३ दरिद्री ४ जिसके घर न हो ५ समय ६ वन ७ मोर ८ भोजन ॥

तप बल शम्भु करहिं संहारा ❀ तप बल शेश धरहिं महिभारा
तप अधार सब सृष्टि भुवारा ❀ तप ते अगम न कछु संसारा
भयहु नृपहि सुनि अतिअनुरागा ❀ कथा पुरातन कहै सो लागा
कर्म्म धर्म्म इतिहास अनेका ❀ करै निरूपण विरति विवेका
उद्भवं पालन प्रलय कहानी ❀ कहेसि अमित आश्चर्य बखानी
मुनि महीश तापस वश भयऊ ❀ आपन नाम कहन तब लयऊ
कह तापस नृप जानौं तोहीं ❀ कीन्हेउ कपट लागु भल मोहीं

सो० सुनु महीश अस नीति, जहँतहँ नाम न कहहिंनृप।
मोहिंतोहिपरअतिप्रीति, सोइ चतुरतानिरखितव ॥

नाम तुम्हार प्रताप दिनेशा ❀ सत्यकेतु तव पिता नरेशा
गुरु प्रसाद सब जानहुँ राजा ❀ कहौं न आपन जानि अकाजा
देखि तात तव सहज सुधाई ❀ प्रीति प्रतीति नीति निपुणाई
उपजिपरी ममता मन मोरे ❀ कहेउँ कथा निज बूझे तोरे
अब प्रसन्न मैं संशय नाहीं ❀ मांगु जो भूप भाव मनमाहीं
सुनि सुवचन भूपति हरषाना ❀ गहि पद विनय कीन्ह विधि नाना
कृपासिन्धु मुनि दरशन तोरे ❀ चारि पदारथ करतल मोरे
प्रभुहि तथापि प्रसन्न विलोकी ❀ मांगि अगम वर होउँ विशोकी

दो० जरा मरणदुख रहित तनु, समरं न जीतै कोउ।
एक छत्र रिपुहीन महि, राज कल्पशत होउ ॥

कह तापस नृप ऐसहि होऊ ❀ कारण एक कठिन सुनु सोऊ
कालहु तव पद नाइहि शीशा ❀ एक विप्रकुल छांड़ि महीशा
तप बल विप्र सदा बरियारा ❀ तिनके कोप न कोउ रखवारा
जो विप्रन वश करहु नरेशा ❀ तब तव वश विधि विष्णु महेशा
चलै न द्विजकुल ते बरिआई ❀ सत्य कहौं दोउ भुजा उठाई
विप्र शाप बिनु सुनु महिपाला ❀ तोर नाश नहिं कवनहुँ काला

१ प्रेम २ कहना ३ उत्पत्ति ४ चतुरता ५ बुढ़ापा ६ युद्ध ७ ब्राह्मणवंश ८ महादेव ॥

हरषेउ राव वचन सुनि तासू ❀ नाथ न होइ मोर अब नासू
तव प्रसाद प्रभु कृपानिधाना ❀ मोकहँ सर्वकाल कल्याना

दो० एवमस्तु कहि कपटमुनि, बोला कुटिल बहोरि।
मिलब हमार भुलाव निज, कहहु तो मोरि न खोरि॥

ताते मैं तोहिं बरजौं राजा ❀ कहे कथा तव परम अकाजा
छठे श्रवण यह परत कहानी ❀ नाश तुम्हार सत्य मम बानी
यह प्रकटे अथवा द्विज शापा ❀ नाश तोर सुनु भानुप्रतापा
आन उपाय निधनं तव नाहीं ❀ जो हरि हर कोपहिं मनमाहीं
सत्य नाथ पदगहि नृप भाखा ❀ द्विज गुरु कोपं कहहु को राखा
राखै गुरु जो कोप विधाता ❀ गुरु विरोध नहिं कोउ जगत्राता
जो न चलब हम कहे तुम्हारे ❀ होइ नाश नहिं शोच हमारे
एकहि डर डरपत मन मोरा ❀ प्रभु महिदेव शाप अतिघोरा

दो० होहिं विप्रवश कवन विधि, कहहु कृपाकरि सोउ।
तुम तजि दीनदयालु निज, हितू न दखौं कोउ॥

सुनु नृप विविध यतन जगमाहीं ❀ कष्टसाध्य पुनि होहिं कि नाहीं
अहै एक अति सुगम उपाई ❀ तहां परन्तु एक कठिनाई
मम आधीन युक्ति नृप सोई ❀ मोर जाब तव नगर न होई
आजु लगे अरु जबते भयऊं ❀ काहू के गृह ग्राम न गयऊं
जो न जाब तव होइ अकाजू ❀ बना आइ असमंजस आजू
सुनि महीप बोलेउ मृदु बानी ❀ नाथ निगम अस नीति बखानी
बड़े सनेह लघुन पर करहीं ❀ गिरि निजशिरन सदा तृण धरहीं
जलधि अगाध मौलि बह फेनू ❀ सन्तत धरणि धरत शिर रेनू

दो० अस कहि गहे नरेश पद, स्वामी होहु कृपालु।
मोहिं लागि दुख सहिय प्रभु, सज्जन दीनदयालु॥

जानि नृपहिं आपन आधीना ❀ बोला तापस कपट प्रवीना

---

१ कान २ नाश ३ रिस ४ साधारण ५ गाँव ६ पशोपेश ७ घासफूस ८ समुद्र ॥

सत्य कहौं भूपति सुनु तोहीं ❀ जगमहँ नाहिं दुर्लभ कछु मोहीं
अवशि काज मैं करिहौं तोरा ❀ मन क्रम वचन भक्त तैं मोरा
योग युक्ति तप मंत्र प्रभाऊ ❀ फलै तबहिं जब करिय दुराऊ
जो नरेश मैं करउँ रसोई ❀ तुम परसहु मोहिं जान न कोई
अन्न सो जोइ जोइ भोजन करई ❀ सोइ सोइ तव आयसु अनुसरई
पुनि तिनके गृह जेवैं जोई ❀ तव वश होइ भूप सुनु सोई
जाय उपाय रचहु नृप येहू ❀ संवत भरि संकल्प करेहू

दो० नित नूंतन[1] द्विज सहज शत, बरेहु सहित परिवार।
मैं तुम्हरे संकल्प लगि, दिनहिं करब जेवनार॥

यहि विधि भूप कष्ट अतिथोरे ❀ ह्वैहहिं सकल विप्रवश तोरे
करिहहिं विप्र होम मख[2] सेवा ❀ तेहि प्रसंग सहजहि वश देवा
और एक मैं कहौं लखाऊ ❀ मैं यहि वेष न आउब काऊ
तुम्हरे उपरोहित कहँ राया[3] ❀ हरि आनब मैं करि निजमाया
तपबल तेहि करि आपु समाना ❀ रखिहौं इहां वर्ष परमाना
मैं धरि तासु वेष सुनु राजा ❀ सब विधि तोर सँवारब काजा
गै निशि बहुत शयन अब कीजे ❀ मोहिं तोहिं भूप भेंट दिन तीजे
मैं तपबल तोहिं तुरंग समेता ❀ पहुँचैहौं सोवतहिं निकेता

दो० मैं आउब सोइ वेष धरि, पहिंचानेहु तब मोहिं।
जब एकान्त बुलाइ नृप, कथा सुनाउब तोहिं॥

शयन[4] कीन्ह नृप आयसु मानी ❀ आसन जाइ बैठ छलज्ञानी
श्रमित[6] भूप निद्रा अतिआई ❀ सो किमि सोव शोच अधिकाई
कालकेतु निशिचर तहँ आवा ❀ जेहिं शूकर ह्वै नृपहिं भुलावा
परम मित्र तापस नृप केरा ❀ जानै सो अति कपट घनेरा
तेहि के शत[7] सुत अरु दश भाई ❀ खल अतिअजय विश्वदुखदाई
प्रथमहिं भूप समर सब मारे ❀ विप्र सन्त सुर देखि दुखारे

१ नया २ यज्ञ ३ राजा ४ थोड़ा ५ सोना ६ थका हुआ ७ सौ॥

तेहिं खल पाछिल वैर सँभारा ❀ तापस नृप मिलि मन्त्र विचारा
जेहि रिपु क्षयं सोइ रचेसि उपाऊ ❀ भावीवश न जान कछु राऊ

दो० रिपु तेजसी अकेल अपि, लघुकरि गनिय न ताहु।
अजहुँदेतदुखरविशशिहि, शिर अवशेषित राहु॥

तापस नृप निज सखहिं निहारी ❀ हरषि मिलेउ उठि भयउ सुखारी
मित्रहि कहि सब कथा सुनाई ❀ यातुधान बोला सुख पाई
अब साधेउँ रिपु सुनहु नरेशा ❀ जो तुम कीन्ह मोर उपदेशा
परिहरि शोच रहहु अब सोई ❀ बिनु औषधहिं व्याधि विधि खोई
कुल समेत रिपु मूल बहाई ❀ चौथे दिवस मिलब मैं आई
तापस नृपहि बहुत परितोषी ❀ चला महाकपटी अतिरोषी
भानुप्रतापहिं बाजि समेता ❀ पहुँचायसि क्षणमाहिं निकेता
नृपहिं नारिपहँ शयन कराई ❀ हयगृह बांधेसि बाजिहिं जाई

दो० राजा के उपरोहितहिं, हरि लै गयउ बहोरि।
लै राखेसि गिरिखोह महँ, माया करि मति भोरि॥

आप विरचि उपरोहित रूपा ❀ परा जाय तेहि सेज अनूपा
जागेउ नृप अनुभये बिहाना ❀ देखि भवन अतिअचरज माना
मुनि महिमा मनमहँ अनुमानी ❀ उठेउ गवँहिं जेहि जान न रानी
कानन गयउ बाजि चढ़ि तेही ❀ पुर नर नारि न जानेउ केही
गये याम युग भूपति आवा ❀ घरघर उत्सव बाजु बधावा
उपरोहितहि दीख जब राजा ❀ चकितविलोकिसुमिरि सोइकाजा
युगसम नृपहि गये दिन तीनी ❀ कपटी मुनि पद रहि मति लीनी
समय जानि उपरोहित आवा ❀ नृपहि मंतो सब कहि समुझावा

दो० नृप हर्षे पहिंचानि गुरु, भ्रमवश रहा न चेत।
वरे तुरत शत सहस वर, विप्र कुटुम्ब समेत॥

उपरोहित जेवनार बनाई ❀ छरस चारि विधि जस श्रुति गाई

---

१ नाश २ तेजवान् ३ बचा हुआ ४ राक्षस ५ तड़के ६ धीरे से ७ प्रहर ८ सलाह ९ होश॥

मायामय तेइँ कीन्ह रसोई ❀ व्यंजन बहु गनि सकै न कोई
विविध मृगनकर आमिष रांधा ❀ तेहि महँ विप्रमांस खल सांधा
भोजन कहँ सब विप्र बुलाये ❀ पद पखारि सादर बैठाये
परसन लाग जबहिं महिपाला ❀ भइ अकाशवाणी तेहि काला
विप्रवृन्द उठि उठि गृह जाहू ❀ है बड़ि हानि अन्न जनि खाहू
भयउ रसोईं भूसुर मांसू ❀ सब द्विज उठे मानि विश्वासू
भूप विकल मति मोह भुलानी ❀ भावीवश न आव मुख बानी

दो० बोले विप्र सकोप तब, नहिं कछु कीन्ह विचार।
जायनिशाचर होहु नृप, मूढ़ सहित परिवार॥

क्षत्रबन्धु तैं विप्र बुलाई ❀ घाले लिये सहित समुदाई
ईश्वर राखा धर्म्म हमारा ❀ जैहसि तैं समेत परिवारा
संवत मध्य नाश तव होऊ ❀ जलदाता न रहहि कुल कोऊ
नृप सुनि शाप विकल अतित्रासा ❀ भइ बहोरि वर गिरा अकासा
विप्रहु शाप विचारि न दीन्हा ❀ नहिं अपराध भूप कछु कीन्हा
चकित विप्र सब सुनि नभबानी ❀ भूप गये जहँ भोजन खानी
तहँ न अशँन नहिं विप्र सुआँरा ❀ फिरेउ राव मन शोच अपारा
सब प्रसंग महिसुरन सुनाई ❀ त्रसित परेउ अवनी अकुलाई

दो० भूपति भावी मिटै नाहिं, यदपि न दूषण तोर।
किये अन्यथा होइ नहिं, विप्र शाप अति घोर॥

अस कहि सब महिदेव सिधाये ❀ समाचार पुर लोगन पाये
शोचहिं दूषण दैवहिं देहीं ❀ विरचत हंस काक किये जेहीं
उपरोहितहि भवन पहुँचाई ❀ असुर तापसिहि खबरि जनाई
तेहि खल जहँ तहँ पत्र पठाये ❀ साजि साजि सेन भूप सब आये
वैरिन्हि नगर निशाँन बजाई ❀ विविध भाँति तहँ परी लराई
जूझे सकल सुभट करि करणी ❀ बन्धु समेत परेउ नृप धरणी

१ ब्राह्मण २ झुंड ३ भोजन ४ रसोइया ५ दोष ६ बनाते ७ नगाड़ा॥

सत्यकेतु कुल कोइ न बांचा ❀ विप्र शाप किमि होइ असांचा
रिपुहिं जीति नृप नगर बसाई ❀ निज पुर गमने जय यश पाई

दो० भरद्वाज सुनु जाहि जब, होत विधाता वाम[1]।
धूरि मेरुसम जनक[3] यम, ताहि व्यालसम दाम[4]॥

काल पाइ मुनि सुनु सोइ राजा ❀ भयो निशाचर सहित समाजा
दश शिर ताहि बीस भुजदण्डा ❀ रावण नाम वीर बरबण्डा
भूप अनुज अरिमर्द्दन नामा ❀ भयउ सो कुम्भकरण बलधामा
सचिव जो रहा धर्म्मरुचि जासू ❀ भयउ विमात्र बन्धु लघु तासू
नाम विभीषण जेहि जग जाना ❀ विष्णु भक्त विज्ञान निधाना
रहे जे सुत सेवक नृप केरे ❀ भये निशाचर घोर घनेरे
कामरूप खल जिनिस अनेका ❀ कुटिल भयंकर विगत विवेका
कृपा रहित हिंसक सब पापी ❀ बरणि न जायँ विश्वपरितापी[6]

दो० उपजे यदपि पुलस्त्यकुल, पावन अमल अनूप।
तदपि महीसुर शापवश, भये सकल अघरूप॥

कीन्ह विविध तप तीनों भाई ❀ परम उग्र सो बरणि न जाई
गये निकट तप देखि विधाता ❀ मांगहु वर प्रसन्न मैं ताता
करि विनती पद गहि दशशीशा ❀ बोलेहु वचन सुनहु जगदीशा
हम काहू के मरहिं न मारे ❀ वानर मनुज जाति दुइ वारे
एवमस्तु तुम बड़ तप कीन्हा ❀ मैं ब्रह्मा मिलि तेहिं वर दीन्हा
पुनि प्रभु कुम्भकरण पहँ गयऊ ❀ तेहि विलोकि मन विस्मय भयऊ
जो यह खल नित करहि अहारा ❀ होइहि सब उजारि संसारा
शारद प्रेरि तासु मति फेरी ❀ मांगेसि नींद मास षँट केरी

दो० गये विभीषण पास पुनि, कह्यो पुत्र वर मांगु।
तेहिं मांगेउ भगवन्त पद, कमल अमल अनुराग॥

तिनहिं देइ वर ब्रह्म सिधाये ❀ हरषित ते अपने गृह आये

---

१ झूंठ २ उलटा ३ बाप ४ रस्सी ५ सौतेला ६ दुखदाई ७ छः ॥

मय तनुंजा मन्दोदरि नामा ❀ परम सुन्दरी नारि ललामा
सोइ मय दीन्हि रावणहिं आनी ❀ भई सो यातुधानपति रानी
हरषित भयउ नारि भलि पाई ❀ पुनि दोउ बंधु बिवाहेसि जाई
गिरि त्रिकूट इक सिन्धु मँझारी ❀ विधि निर्म्मित दुर्गम अतिभारी
सोइ मयदानव बहुरि सँवारा ❀ कनकरचित मणि भवन अपारा
भोगवती जस अहिकुल वासा ❀ अमरावति जस शक्रनिवासा
तिनते अधिक रम्य अतिबंका ❀ जग विख्यात नाम तेहि लंका

दो० खाई सिन्धु गँभीर अति, चारिउदिशिफिरिआव।
कनककोटमणिखचितदृढ़, वरणि न जाइ बनाव॥
हरिप्रेरित तेहि कल्प जोइ, यातुधान पति होइ।
शूर प्रतापी अतुल बल, दल समेत बस सोइ॥

रहे तहां निशिचर भट भारे ❀ ते सब सुरन समर संहारे
अब तहँ रहहिं शक्र के प्रेरे ❀ रक्षक कोटि यक्षपति केरे
दशमुख कबहुँ खबरि अस पाई ❀ सेन साजि गढ़ घेरेसि जाई
देखि विकट भट बड़ि कटकाई ❀ यक्ष जीव लै चले पराई
फिरि सब नगर दशानन देखा ❀ गयउ शोच सुख भयउ विशेखा
सुन्दर सहज अगम अनुमानी ❀ कीन्ह तहां रावण रजधानी
जेहि जस योग्य बांटि गृह दीन्हे ❀ सुखी सकल रजनीचर कीन्हे
एक बार कुबेर पहँ धावा ❀ पुष्पक यान जीति लै आवा

दो० कौतुकही कैलास पुनि, लीन्हेसि जाइ उठाइ।
मनहुँ तौलि भट बाहुबल, चला अधिक सुखपाइ॥
देव यक्ष गन्धर्व नर, किन्नर नागकुमारि।
जीति वरीं निज बाहुबल, बहु सुन्दरि वर नारि॥

सुख सम्पति सुत सेन महाई ❀ जय प्रताप बल बुद्धि बड़ाई

१ लड़की २ सुन्दर ३ रचा ४ इंद्र ५ सुंदर ६ कुबेर ७ फ़ौज ८ भागे ९ राक्षस॥

नित नूतन सब बाढ़त जाई ❀ जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई
अति बल कुम्भकर्ण अस भ्राता ❀ जेहि कहँ नहिं प्रतिभट जगजाता
करि मद पान सोव षट मासा ❀ जागत होइ तिहूँ पुर त्रासा
जो दिनप्रति अहार कर सोई ❀ विश्व वेगि सब चौपट होई
समर धीर नहिं जाइ बखाना ❀ तेहिसम अमित वीर बलवाना
वारिदनाद जेठ सुत तासू ❀ भटमहँ प्रथमलीक जग जासू
जेहि न होइ रण सम्मुख कोई ❀ सुरपुर नितहिं परावन होई

दो० कुमुख अकम्पन कुलिशरद, धूम्रकेतु अतिकाय।
एक एक जग जीति सक, ऐसे सुभट निकाय॥

कामरूप जानहिं सब माया ❀ सपनेहुँ जिनके धर्म न दाया
दशमुख बैठ सभा इक बांरा ❀ देखि अमित आपन परिवारा
सुत समूह जन परिजन नाती ❀ गनै को पार निशाँचर जाती
सेन विलोकि सहज अभिमानी ❀ बोला वचन क्रोध मदसानी
सुनहु सकल रजनीचर यूथा ❀ हमरे वैरी विबुध वरूथा
ते सम्मुख नहिं करहिं लराई ❀ देखि सकल रिपु जाहिं पराई
तिनकर मरण एक विधि होई ❀ कहौं बुझाइ सुनहु सब सोई
द्विज भोजन मख होम शराधा ❀ यहिकर जाइ करहु तुम बाधा

दो० क्षुधाँक्षीन बलहीन सुर, सहजहिं मिलिहहिं आइ।
तब मारिहौं कि छांड़िहौं, भली भाँति अपनाइ॥

मेघनाद कहँ पुनि हँकरावा ❀ दीन्ह सीख बल वैर बढ़ावा
जे सुर समर धीर बलवाना ❀ जिनके लरिबे को अभिमाना
तिनहिं जीति रण आनिसि बांधी ❀ उठि सुत पितु अनुशासन कांधी
यहि विधि सबहीं आज्ञा दीन्हा ❀ आपहु चलेउ गदा कर लीन्हा
चलत दशानन डोलत अवनी ❀ गर्जत गर्भ स्रवत सुररवनी
रावण आवत सुनेउ सकोहा ❀ देवन तकेउ मेरु गिरि खोहा

१ नया २ नाश ३ दिन ४ राक्षस ५ देवता ६ झुण्ड ७ भूख ८ आज्ञा ९ पृथ्वी १० टपकत ११ देवाङ्गना॥

दिकपालन के लोक सिधावा ❀ सूने सकल दशानन पावा
पुनि पुनि सिंहनाद करि भारी ❀ देइ देवतन गारि प्रचारी
रण मदमत्त फिरै जग धावा ❀ प्रतिभट खोजत कतहुँ न पावा

अथ चेपक ॥

नारद मिले कहेसि मुसुकाई ❀ देव कहां मुनि देहु दिखाई
सुनत अनंख नारदहिं न भावा ❀ श्वेतद्वीप तेहिं तुरत पठावा
सागर उतरि पार सो गयऊ ❀ नारि वृन्द तहँ देखत भयऊ
तिन सन कहा पतिन पहँ जाहू ❀ कहेउ कि आव निशाचरनाहू
तब मैं तिनहिं जीति संग्रामा ❀ लै जैहौं तुमकहँ निजधामा
सुनत वचन यक जरंठ रिसानी ❀ धाइ चरण गहि गगन उड़ानी
गई दूरि धरि धरि झकझोरा ❀ डारेसि सिन्धुमध्य अतिजोरा

दो० गयो पताल अचेत ह्वै, मरै न विप्र प्रसाद ।
सावधान उठि चलेउ पुनि, हिये न हर्ष विषाद ॥

जीतेसि नाग नगर सब भारी ❀ गयो बहुरि बलिलोक सुरारी
वामन रावन आवत जाना ❀ किये देवऋषिसन अपमाना
खेलत रहे नगर शिशु नाना ❀ निजबल तिनहिं दीन्ह भगवाना
धाइ धरा तिन पुर लै आये ❀ नगर नारि नर देखन धाये
बीस बाहु दशकन्धर भाई ❀ विधि यह गढ़नि कहांकी आई
राखेनि बांधि खिझावहिं भारी ❀ नाम न कहै सहै बरु मारी
वामन दीख बहुत सकुचाना ❀ तब छुड़ाइ दिय कृपानिधाना
चला तुरन्त निशाचर नाहा ❀ लाज शङ्क कछु नहिं मनमाहा

दो० अति निर्लज्ज दयारहित, हिंसापर अति प्रीति ।
रामविमुख दशकन्ध शठ, तापर चाहत जीति ॥
भरद्वाज सुनु जाहि जब, होइ विधाता वाम ।
मणिहुँ कांच ह्वैजाइ तब, लहै न कौड़ी दाम ॥

१ क्रोध २ वृद्धा ३ आकाश ४ मारद ५ पकड़ा ॥

जहँ कहुँ फिरत देव द्विज पावै ❀ दण्ड लेइ बहु त्रास[1] दिखावै
यहि आचरण फिरहि दिनराती ❀ महामलिन मन खल उतपाती
बहुरि तुरत पम्पापुर आवा ❀ बालिनाम कपिपति[2] जेहि ठाँवा
अवलोकेसि इक सरवँर[3] शोभा ❀ जिहि मन महामुनिनकर लोभा
तहां कपीश करै निज ध्याना ❀ दशकन्धरहि देखि मुसुकाना
तब रावण बोला करि क्रोधा ❀ बकध्यानी कपि शँठ[4] बिनु बोधा
नाम तोर सुनि आयउँ धाई ❀ दे कपि युद्ध छांड़ि कदराई

दो० मोहिंजीते बिनु समर सुनु, वृथा ध्यान तव कीश।
कटकटाइ कह रजनिचर, रदन[6] तीनि सै बीश॥

बालि कहा हठि करिय न रारी ❀ दशकन्धर घर जाहु विचारी
बल तुम्हार ऐसोइ है भाई ❀ अजयँ चारि दिशि में सुनि पाई
यहि विधि बालि बहुत समुझावा ❀ कवनिहुँ भाँति बोध नहिं आवा
तब सकोपि उठि झपटि कपीशा ❀ दृढ़ गहि कांख चापि दशशीशा
बालिहि बिसरि गई सुधि तासू ❀ यहि विधि विगत भये षट मासू
एक दिवस रवि अंजलि साजा ❀ कांखते निसरि दशानन भाजा
निलज अशंक आव पुनि तहँवां ❀ कर भुजकेलि सहसभुज जहँवां

दो०छोभेउ जल भुजबीस बल, बूड़न लगी समाज।
सहसबाहु अतिक्रोध मन, मोहिंसम आनको आज॥

जाइ दीख तहँ रावण ठाढ़ा ❀ जासु विपुल भुजबल जल बाढ़ा
माया प्रबल महाबल भारी ❀ लङ्केश्वर कहँ धरिसि प्रचारी
निरखि तियन आश्चर्य विशाला ❀ बांधि राखि कछु दिन हयशाला[8]
लज्जित दुष्ट मष्टकरि रहई ❀ रिस उरमारि कष्ट बहु सहई
सकल आइ देखहिं नर नारी ❀ मारहिं लात हँसैं दै गारी
नाम न कहै रहै सकुचाना ❀ बहु विधि पूंछै नृपति सुजाना
नृत्य करैं रम्भादिक नारी ❀ दशहुँ माथ दश दीपक बारी

१ दुःख २ वानरों का राजा ३ तालाब ४ मूर्ख ५ क्रूरता ६ दांत ७ हारि ८ घुड़शाला ९ चुप॥

मुनि पुलस्त्य तब जाइ छुड़ावा ❀ पुनि नलशाप आय तिहि पावा

दो० मारग जात दीख अति, अनुपम सुन्दरि नारि।
चन्दन पुष्प पत्रकर, पूजन चलि त्रिपुरारि॥

देखि उर्वशी मन सकुचानी ❀ तब रावण बोला मृदु बानी
को तुम नारि गमन कहँ कीन्हा ❀ लज्जावश तिहिं उतर न दीन्हा
मन मद मत्त विचार न करेऊ ❀ धनपति पुत्रवधू कर धरेऊ
चीन्हि ताहि पुनि शंका आई ❀ घाटि कर्म्म कीन्हीं पछिताई
मन पछिताय शोच उर भयऊ ❀ लंकेश्वर लंका कहँ गयऊ
विकल उर्वशी अलकहिं आई ❀ नल कूबर सन बात जनाई
दीन्ह शाप तिन क्रोध अपारा ❀ रावण वंश होहु क्षयकारा
चली शाप लंका कहँ आई ❀ दशकन्धर बैठा जिहि ठाँई
आगे आइ ठाढ़ि भइ शापा ❀ निरखि दशानन अतिभय काँपा।

दो० शापहिं अङ्गीकार करि, मनमहँ कीन्ह विचार।
दण्ड ऋषिनसे लीन्ह नहिं, रोषेउ लङ्कभुवार॥

दूत चारि पठये ऋषि आश्रम ❀ निरखि बिसरिगे मुनि अधिश्रातमँ
तिनसन तब पूछहिं मुनि हाला ❀ कहहु कुशल लङ्केश भुवाला
कुशल तासु यह सुनहु मुनीशा ❀ कर तुमसन चाहत दशशीशा
सुनि सो वचन महाभय पाई ❀ करहिं विचार विरति बिसराई
जेहि दरबार नीति नहिं भाई ❀ खलमण्डली जुरी तहँ आई
कछु बिनु दिये नहीं गति आछी ❀ घट भरि रुधिर दिये तनु पाछी
दूतन सौंपि कहा मुनि ज्ञानी ❀ भूपहिं कहेउ जाय यह बानी

दो० घट उघरत क्षय होइहहु, सहित सकल परिवार।
दूत तुरत घट लै गये, लङ्कापति दरबार॥

रावण घट लखि परम हुलासा ❀ तब दूतन मुनि वचन प्रकासा
सुनि मुनि शाप उपज उर दाहू ❀ बोला घट लै उत्तर जाहू

१ शिव २ कुबेर ३ पतोहू ४ कुबेरपुरी ५ नाश ६ रावण ७ ध्यान ८ रक्त ९ देह चीर के॥

यन्त्र समेत धरणि धरि एहू ❁ जानि न पाव बात यह केहू
लै घट जनक नगर ते गये ❁ गाड़त क्षेत्र मध्य तहँ भये
जनक यज्ञ रचना तहँ ठयऊ ❁ चामीकर हल कर्षत भयऊ
प्रकटि अवनि ते ऋषय कुमारी ❁ कन्या कहि लीन्हीं उरधारी
नाम जानकी परम पुनीता ❁ नारद[1] आइ कहा पुनि सीता
कहि सुकथा ऋषिरांव सिधाये ❁ बहुरि दूत लंकापुर आये
चारि ठांव हारा लंकेशा ❁ देवन को बहु देत कलेशा

इति क्षेपक ॥

रवि शशि पवन वरुण धनुधारी ❁ अग्नि काल यम सब अधिकारी
किन्नर सिद्ध मनुज सुर नागा ❁ हठि सबही के पन्थहि लागा
ब्रह्म सृष्टि जहँ लगि तनुधारी ❁ दशमुख वशवर्त्ती[2] नर नारी
आयसु करहिं सकल भयभीता ❁ नवहिं आइ नित चरण विनीता

दो० भुजबल विश्ववश्य करि, राखेसि कोउ न स्वतंत्र[3]।
मण्डलीक मणि रावण, राज करै निज मंत्र ॥

इन्द्रजीत सन जो कछु कहेऊ ❁ सो सब जनु पहिले करि रहेऊ
प्रथमहिं जिनकहँ आयसु दीन्हा ❁ तिनके चरित सुनहु जो कीन्हा
देखत भीम रूप सब पापी ❁ निशिचर निकर[4] देव परितापी
करहिं उपद्रव असुर निकाया ❁ नाना रूप धरहिं करि माया
जेहि विधि होय धर्म्म निर्मूला ❁ सो सब करहिं वेद प्रतिकूला
जेहि जेहि देश धेनु द्विज पावहिं ❁ नगर ग्रामपुर आगि लगावहिं
शुभ आचरण[5] कतहुँ नहिं होई ❁ वेद विप्र गुरु मान न कोई
नहिं हरिभक्ति यज्ञ जप ज्ञाना ❁ सपनेहु सुनिय न वेद पुराना

छं० जपयोगविरागा तपमखभागा श्रवण[6] सुनै दशशीशा।
आपहु उठिधावै रहै न पावै धरि सब घालै खीशा[7] ॥
अतिभ्रष्टअचारा भा संसारा धर्म्म सुनियनहिं काना।

१ नारद २ आधीन ३ स्वाधीन ४ समूह ५ अच्छा चलन ६ कान ७ नाश ॥

तेहि बहुविधि त्रासै देश निकासै जो कह वेद पुराना ॥
सो० वरणि न जाय अनीति, घोर निशाचर जो करहिं ।
हिंसा पर अति प्रीति, तिनके पापन कवन मिति ॥

बाढ़े बहु खल चोर जुआरी ❀ जे लम्पट परधन परनारी
मानहिं मातु पिता नहिं देवा ❀ साधुन सों करवावहिं सेवा
जिनके अस आचरण भवानी ❀ ते जानहु निशिचर सम प्रानी
अतिशय देखि धर्म्मकी हानी ❀ परम सभीत धरा अकुलानी
गिरिसर सिन्धु भार नहिं मोही ❀ जस मोहिं गरुअ एक परद्रोही
सकल धर्म्म देखै विपरीता ❀ कहि न सकै रावण भयभीता
धेनु[1] रूप धरि हृदय विचारी ❀ गई तहाँ जहँ सुर मुनिझारी
निज[3] सन्ताप सुनायसि रोई ❀ काहू ते कछु काज न होई

छं० सुरमुनिगन्धर्वा मिलिकरिसर्वा गये विरंचिके लोका ।
सँगगोतनुधारी भूमिबिचारीपरमविकलभयशोका[4] ॥
ब्रह्मा सब जाना मन अनुमाना मेरो कछु न बसाई ।
जाकरि तैं दासी सो अविनासी हमरो तोर सहाई ॥

सो० धरणि धरहु मन धीर, कह विरंचि हरिपद सुमिरि ।
जानत जनकी पीर, प्रभु भंजहिं दारुण[5] विपति ॥

बैठे सुर सब करहिं विचारा ❀ कहँ पाइय प्रभु करिय पुकारा
पुर वैकुण्ठ जान कह कोई ❀ कोइ कह पयँनिधि[6] बस प्रभु सोई
जाके हृदय भक्ति जस प्रीती ❀ प्रभु तहँ प्रकट सदा यह रीती
तेहि समाज गिरिजा मैं रह्यऊं ❀ अवसर पाय वचन इक कह्यऊं
हरि व्यापक सर्वत्र[7] समाना ❀ प्रेम ते प्रकट होहिं मैं जाना
देश काल दिशि विदिशिहु माहीं ❀ कहहु सो कहां जहां प्रभु नाहीं
अग जगमय सब रहित विरागी ❀ प्रेम ते प्रभु प्रकटैं जिमि आगी

१ पृथ्वी २ गौ ३ अपना ४ दुःख ५ असह्य ६ क्षीरसिंधु ७ सब कहीं ॥

मोर वचन सबके मन माना ❀ साधु साधु कहि ब्रह्म बखाना

दो०-सुनि बिरञ्चि मन हर्ष तन, पुलक नयन बहनीर।
अस्तुति करत सुजोरिकर, सावधान मतिधीर॥

छं०-जयजयसुरनायकजनसुखदायकप्रणतपालभगवंता।
गोद्विजहितकारी जयअसुरारीसिन्धुसुता प्रियकन्ता॥
पालन सुरधरणी अद्भुत करणी मर्म न जानै कोई।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करहु अनुग्रह सोई॥
जयजयअविनासीसबघटवासीव्यापक परमानन्दा।
अविगतगोतीता चरितपुनीतामायारहित मुकुन्दा॥
जेहिलागिविरागीअतिअनुरागीविगतमोहमुनिवृन्दा।
निशिवासरध्यावहिंहरिगुणगावहिंजयतिसच्चिदानन्दा
जेहि सृष्टि उपाई त्रिविध बनाई सङ्ग सहाय न दूजा।
सो करहु अघारीचिन्तहमारी जानियभक्ति न पूजा॥
जो भवभय भञ्जन मुनिमनरञ्जनगञ्जनविपतिवरूथा।
मनवचक्रम बानी छांड़ि सयानीशरणसकलसुरयूथा॥
शारदश्रुति शेषा ऋषयअशेषाजाकहँकोउ नाहिं जाना।
जेहि दीन पियारे वेद पुकारे द्रवहु सो श्रीभगवाना॥
भववारिधिमन्दरसबविधिसुन्दर गुणमन्दिर सुखपुञ्जा।
मुनि सिद्ध सकलसुर परम भयातुर नमतनाथपदकञ्जा॥

दो०-जानि सभय सुर भूमि मुनि, वचन समेत सनेह।
गगनगिरा गम्भीर भइ, हरणि शोक सन्देह॥

जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेशा ❀ तुमहिं लागि धरिहौं नरवेशा
अंशन सहित मनुज अवतारा ❀ लेहौं दिनकरवंश उदारा

१ लक्ष्मी २ कृपा ३ पाप नाशनेवाले ४ डरे हुए ५ सूर्यवंश॥

कश्यप अदिति महातप कीन्हा ❀ तिन कहँ मैं पूरब वर दीन्हा
ते दशरथ कौशल्या रूपा ❀ कोशलपुरी प्रकट नर भूपा
तिनके गृह अवतरिहौं जाई ❀ रघुकुल तिलक सुचारिहु भाई
नारद वचन सत्य सब करिहौं ❀ परमशक्ति समेत अवतरिहौं
हरिहौं सकल भूमि गरुआई ❀ निर्भय होहु देव समुदाई
गगन ब्रह्म वाणी सुनि काना ❀ तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना
तब ब्रह्मा धरणिहिं समुझावा ❀ अभय[3] भई भरोस जिय आवा

दो० निज लोकहि विरञ्चि गये, देवन इहै सिखाय।
वानर तनुधरि धरणि महँ, हरिपद सेवहु जाय॥

गये देव सब निज निज धामा ❀ भूमि सहित पाये विश्रामा
जो कछु आयसु ब्रह्मा दीन्हा ❀ हर्षे देव विलम्ब न कीन्हा
वनचर देह धरी छिति[4] माहीं ❀ अतुलित बल प्रताप तिनपाहीं
गिरि तरु नख आयुध सब वीरा ❀ हरिमारग जोवहिं रणधीरा
गिरि कानन जहँ तहँ महिपूरी ❀ रह निज निज अनीक[5] रचि रूरी
यह सब रुचिर चरित मैं भाखा ❀ अब सो सुनहु जो बीचहिं राखा
अवधपुरी रघुकुल मणिराऊ ❀ वेद विदित तेहि दशरथ नाऊ
धर्म्म धुरन्धर गुणनिधि ज्ञानी ❀ हृदय भक्ति मति शारँग[6]पानी

दो० कौशल्यादि नारि प्रिय, सब आचरण पुनीत।
पति अनुकूल प्रेम दृढ़, हरिपद कमल विनीत॥

एक बार भूपति मन माहीं ❀ भै गलानि मोरे सुत नाहीं
गुरुगृह गये तुरत महिपाला ❀ चरणलागि करि विनय विशाला
निज दुख सुख नृप गुरुहि सुनायो ❀ कहि वशिष्ठ बहुविधि समुझायो
धरहु धीर ह्वैहैं सुत चारी ❀ त्रिभुवन विदित भक्तभयहारी
शृङ्गी ऋषिहिं वशिष्ठ बुलावा ❀ पुत्र लागि शुभ यज्ञ करावा
भक्तिसहित मुनि आहुति दीन्हें ❀ प्रकटे अगिनि चारु कँर[7] लीन्हें

१ अयोध्या २ बोझ ३ निडर ४ पृथ्वी ५ फ़ौज ६ विष्णु ७ हाथ॥

जो वशिष्ठ कछु हृदय विचारा ❀ सकल काज भा सिद्ध तुम्हारा
यह हवि[1] बांटि[2] देहु नृप जाई ❀ यथायोग्य जेहि भाग बनाई

दो० तब अदृश्य पावक[3] भये, सकल सभहि समुझाय।
परमानन्द मगन नृप, हर्ष न हृदय समाय॥

गुरु पद वन्दि भूप गृह आये ❀ मञ्जुल मङ्गल मोद बधाये
तबहिं राव प्रिय नारि बुलाई ❀ कौशल्यादि तहां चलि आई
अर्द्धभाग कौशल्यहि दीन्हा ❀ उभय[4] भाग आधेकर कीन्हा
कैकेयी कहँ नृप सो दयऊ ❀ रहेउ सो उभय भाग पुनि भयऊ
कौशल्या केकयी हाथ धरि ❀ दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि
यहि विधि गर्भसहित सब नारी ❀ भयउ हृदय हरषित सुख भारी
जा दिनते हरि गर्भहि आये ❀ सकल लोक सुख संपति छाये
मन्दिर महँ सब राजहिं रानी ❀ शोभा शील तेज की खानी
सुखयुत कछुक काल चलि गयऊ ❀ जेहि प्रभु प्रकट सो अवसर भयऊ

दो० योग लग्न ग्रह वार तिथि, सकल भये अनुकूल।
चर अरु अचर हर्षयुत, राम जन्म सुखमूल॥

नवमी तिथि मधु[5]मास पुनीता ❀ शुक्लपच्छ अभिजित हरि[6] प्रीता
मध्यदिवस अति शीत न घामा ❀ पावन काल लोक विश्रामा
शीतल मन्द सुरभि बह बाऊ[7] ❀ हरषित सुर सन्तन मन चाऊ[8]
वनकुसुमित[9] गिरिगण मणियारा ❀ स्रवहिं सकल सरितामृत धारा
सो अवसर विरंचि जब जाना ❀ चले सकल सुर साजि विमाना
गगन विमल संकुल सुरयूथा ❀ गावहिं गुण गन्धर्व वरूथा
वर्षहिं सुमन सुअंजलि साजी ❀ गहगह गगन दुन्दुभी बाजी
अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा ❀ बहुविधि लावहिं निजनिज सेवा

दो० सुरसमूह विनती करी, पहुँचे निज निज धाम।
जगनिवास प्रभु प्रकट भे, अखिल[10] लोक विश्राम॥

१ खीर २ हिस्सा ३ अग्नि ४ दो ५ चैत्रमास ६ विष्णु ७ हवा ८ खुशी ९ फूले हुये १० सब जगत॥

छं० भयेप्रकटकृपालादीनदयालाकौशल्याहितकारी ।
हरषित महतारी मुनिमनहारी अद्भुतरूप निहारी ॥
लोचनअभिरामातनुघनश्यामा निजआयुधभुजचारी ।
भूषण वनमाला नयन विशाला शोभासिन्धु खरारी ॥
कह दुहुँकरजोरी अस्तुतितोरी केहिविधि करौं अनन्ता ।
माया गुणज्ञानातीत अमाना वेद पुराण भनन्ता ॥
करुणासुखसागर सबगुणआगर जेहि गावहिंश्रुतिसन्ता ।
सो मम हितलागी जन अनुरागी प्रकटभये श्रीकन्ता ॥
ब्रह्माण्डनिकाया निर्मितमाया रोम रोम प्रति वेद कहै ।
ममउर सो वासीयहउपहासी सुनत धीरमति थिर न रहै ॥
उपजाजबज्ञाना प्रभुमुसुकाना चरितबहुतविधिकीनचहै ।
कहिकथा सुनाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुतप्रेमलहै ॥
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यहरूपा ।
कीजैशिशुलीलाअतिप्रियशीलायहसुखपरमअनूपा ॥
सुनि वचन सुजाना रोदन ठाना ह्वै बालक सुरभूपा ।
यहचरित जे गावहिंहरिपदपावहिं ते न परहिं भवकूपा ॥

दो० विप्र धेनु सुर संत हित, लीन्ह मनुज अवतार ।
निज इच्छा निर्म्मित तनु, माया गुण गोपार ॥

मुनिं शिशु रुदन परम प्रियबानी ❀ सम्भ्रम चलि आईं सब रानी
हरषित जहँ तहँ धाईं दासी ❀ आनँद मगन सकल पुरवासी
दशरथ पुत्र जन्म सुनि काना ❀ मानहुँ ब्रह्मानन्द समाना
परम प्रेम मन पुलक शरीरा ❀ चाहत उठन करत मतिधीरा
जाकर नाम सुनत शुभ होई ❀ मोरे गृह आवा प्रभु सोई
परमानन्द पूरि मन राजा ❀ कहा बुलाइ बजावहु बाजा

१ देह २ शोभासागर ३ कहते हैं ४ देवताओं के स्वामी ५ संसाररूपी कुवां ॥

गुरु वशिष्ठ कहँ गयउ हँकारा ❀ आये द्विजन सहित नृपद्वारा
अनुपम बालक देखिनि जाई ❀ रूपराशि गुण कहि न सिराई

दो॰ तब नांदीमुख श्राद्ध करि, जातकर्म्म सब कीन्ह।
हाटक[1] धेनु वसन मणि, नृप विप्रन कहँ दीन्ह॥

ध्वज पताक तोरण पुर छावा ❀ कहि न जाय जेहि भाँति बनावा
सुमन वृष्टि आकाश ते होई ❀ ब्रह्मानन्द मगन सब कोई
वृन्द वृन्द मिलि चलीं लुगाईं[2] ❀ सह शृंगार किये उठि धाईं
कनक कलश मंगल भरि थारा ❀ गावत पैठहिं भूप दुवारा
करि आरती निछावरि करहीं ❀ बार बार शिशु चरणन परहीं
मागध सूत वन्दिगण गायक ❀ पावन गुण गावहिं रघुनायक
सर्वश दान दीन्ह सब काहू ❀ जेहि पावा राखा नहिं ताहू
मृगमद[3] चन्दन कुंकुम[4] कीचा ❀ मची सकल वीथिन[5] बिच बीचा

दो॰ गृह गृह बाजु बधाव शुभ, प्रकट भये सुखकन्द।
हर्षवन्त सब जहँ तहँ, नगर नारि नर वृन्द॥

केकय सुता सुमित्रा दोऊ ❀ सुन्दर सुत जन्मत भइँ सोऊ
वह सुख सम्पति समय समाजा ❀ कहि न सकैं शारद अहिराजा
अवधपुरी सोह यहि भाँती ❀ प्रभुहि मिलन आई जनु राती
देखि भानु जनु मन सकुचानी ❀ तदपि बनी सन्ध्या अनुमानी
अगर धूप जनु बहु अँधियारी ❀ उड़ै अबीर मनहुँ अरुणारी[6]
मन्दिर मणि समूह जनु तारा ❀ नृप गृह कलश सो इन्दु[7] उदारा
भवन वेदध्वनि अति मृदु बानी ❀ जनु खगमुखर[8] समय अनुमानी
कौतुक देखि पतंग[9] भुलाना ❀ एक मास तेहिं जात न जाना

दो॰ मास दिवस कर दिवस भा, मर्म न जानै कोइ।
रथ समेत रवि थाकेऊ, निशा कवनविधि होइ॥

यह रहस्य काहू नहिं जाना ❀ दिनमणि चले करत गुणगाना

१ सोना २ स्त्रियाँ ३ कस्तूरी ४ केशर ५ रास्ता ६ सुर्ख ७ चन्द्रमा ८ पक्षियों की वाणी ९ सूर्य॥

देखि महोत्सव सुर मुनि नागा ❋ चले भवन वर्णत निज भागा
औरौ एक कहौं निज चोरी ❋ सुनु गिरिजा अति दृढ़मति तोरी
काकभुशुण्डि संग हम दोऊ ❋ मनुजरूप जानै नहिं कोऊ
परमानन्द प्रेम सुख फूले ❋ वीथिन फिरहिं मगन मन भूले
यह शुभ चरित जान पै सोई ❋ कृपा राम की जापर होई
तेहि अवसर जो जेहि विधि आवा ❋ दीन्ह भूप जो जेहि मन भावा
गज[1] रथ तुरँग हेम[2] गो हीरा ❋ दीन्हे नृप नानाविधि चीरा[3]

दो० मन सन्तोष सबनके, जहँ तहँ देहिं अशीश।
सकल तनय[4] चिरजीवहु, तुलसिदास के ईश॥

कछुक दिवस बीते यहि भाँती ❋ जात न जानहिं दिन अरु राती
नामकरण कर अवसर जानी ❋ भूप बोलि पठये मुनि ज्ञानी
करि पूजा भूपति अस भाखा ❋ धरिय नाम जो मुनि गुनि राखा
इनके नाम अनेक अनूपा ❋ मैं नृप कहब स्वमति अनुरूपा
जो आनन्द सिन्धु सुखरासी ❋ शीकर ते त्रैलोक्य सुपासी
सो सुखधाम राम अस नामा ❋ अखिल लोकदायक विश्रामा
विश्वभरण पोषण[5] करु जोई ❋ ताकर नाम भरत अस होई
जाके सुमिरण ते रिपु[6] नाशा ❋ नाम शत्रुहन वेद प्रकाशा

दो० लक्षण धाम रामप्रिय, सकल जगत आधार।
गुरु वशिष्ठ तेहि राखेऊ, लक्ष्मण नाम उदार॥

धरेउ नाम गुरु हृदय विचारी ❋ वेदतत्त्व नृप तव[7] सुत[8] चारी
मुनिजन धन सर्वस शिवप्राना ❋ बालकेलिरस तेहि सुख माना
बारेहिते निजहित पति जानी ❋ लक्ष्मण रामचरण रति मानी
भरत शत्रुहन दोनों भाई ❋ प्रभु सेवक जस प्रीति बढ़ाई
श्यामगौर सुन्दर दोउ जोरी ❋ निरखहिं छवि जननी तृण तोरी
चारिउ शीलरूप गुण धामा ❋ तदपि अधिक सुखसागर रामा

१ हाथी २ सोना ३ कपड़ा ४ पुत्र ५ पालन ६ वैरी ७ तुम्हारे ८ पुत्र ९ समुद्र ॥

हृदय अनुग्रह इन्दु प्रकासा ❀ सूचित किरणि मनोहर हासा
कबहुँ उछंग कबहुँ वरपालन ❀ मातु दुलारहिं कहि प्रियलालन

दो० व्यापक ब्रह्म निरंजन, निर्गुण विगत विनोद।
सोइ अज प्रेम भक्तिवश, कौशल्या की गोद॥

काम कोटि छविश्याम शरीरा ❀ नीलकंज वारिद[1] गम्भीरा
अरुण चरण पंकज नख जोती ❀ कमल दलन बैठे जनु मोती
रेख कुलिश[2] ध्वज अंकुश सोहैं ❀ नूपुरधुनि सुनि मुनि मन मोहैं
कटि किङ्किणी उदर त्रय रेखा ❀ नाभि गँभीर जानु जेहिं देखा
भुज विशाल भूषणयुत भूरी ❀ हिय हरिनख[3] शोभा अतिरूरी
उर मणिहार पदिक की शोभा ❀ विप्र चरण देखत मन लोभा
कम्बुकंठ अति चिबुक सुहाई ❀ आनन अमित मदन छविछाई
दुइ दुइ दशन अधर अरुणारे ❀ नासा तिलक को वरणै पारे
सुन्दर श्रवण सुचारु कपोला[4] ❀ अति प्रिय मधुर तोतरे बोला
नीलकमल दोउ नयन विशाला ❀ विकट भृकुटि लटकन वरभाला
चिक्कण कच[5] कुञ्चित गभुवारे ❀ बहुप्रकार रचि मातु सँवारे
पीत भँगुलिया तनु पहिराई ❀ जानु[6]पाणि विचरनि मोहिं भाई
रूप सकहिं नहिं कहि श्रुति शेखा ❀ सो जानै सपनेहुँ जेहिं देखा

दो० सुख सन्दोह मोहपर, ज्ञान गिरा[7] गोतीत।
दम्पति परम प्रेमवश, कर शिशु चरित पुनीत॥

यहि विधि राम जगत पितु माता ❀ कोशलपुरवासिन सुखदाता
जिन रघुनाथ चरण रतिमानी ❀ तिनकी यह गति प्रकट भवानी
रघुपति विमुख यतन कर कोरी ❀ कवन सकै भवबन्धन छोरी
जीव चराचर वश करि राखे ❀ सो माया प्रभु सों भय भाखे
भृकुटि[8] विलास नचावै ताही ❀ अस प्रभु छांड़ि भजिय कहु काही
मन क्रम वचन छांड़ि चतुराई ❀ भजतहि कृपा करैं रघुराई

१ बादल २ वज्र ३ बघनखा ४ गाल ५ बाल ६ जांघ ७ वाणी ८ भौंह

यहि विधिशिशुविनोद प्रभुकीन्हा ❀ सकल नगरवासिन सुख दीन्हा
लै उछंग कबहूँ हलरावैं ❀ कबहुँ पालने घालि झुलावैं

दो० प्रेम मगन कौशल्या, निशि दिन जात न जान।
सुत सनेह वश माता, बालचरित कर गान॥

एक बार जननी नहवाये ❀ करि शृँगार पलना पौढ़ाये
निज कुल इष्टदेव भगवाना ❀ पूजा हेतु कीन्ह पकवाना
करि पूजा नैवेद्य चढ़ावा ❀ आपु गई जहँ पाक[1] बनावा
बहुरि मातु तहँवां चलि आई ❀ भोजन करत दीख सुत जाई
गइ जननी[2] शिशुपहँ भयभीता ❀ देखा बाल तहां पुनि सूता[3]
बहुरि आइ देखा सुत सोई ❀ हृदयकम्प मन धीर न होई
इहां उहां दुइ बालक देखा ❀ मतिभ्रम मोरि कि आन विशेखा
देखि राम जननी अकुलानी ❀ प्रभु हँसिदीन्ह मधुर मुसुकानी

दो० दिखरावा निज मातुहीं, अद्[4]भुत रूप अखण्ड[5]।
रोम रोम प्रति राजहीं, कोटि कोटि ब्रह्मण्ड॥

अगणित रविशशिशिव चतुरानन ❀ बहुगिरि सरित[6] सिंधु महि कानन
काल कर्म गुण ज्ञान स्वभाऊ ❀ सो देखा जो सुना न काऊ[7]
देखी माया सब विधि गाढ़ी ❀ अति सभीत जोरे कर ठाढ़ी
देखा जीव नचावै जाही ❀ देखी भक्ति जो छोरै ताही
तनु पुलकित मुख वचन न आवा ❀ नयन मूंदि चरणन शिर नावा
विस्मयवन्त देखि महतारी ❀ भये बहुरि शिशुरूप खरारी
अस्तुति करि न जाय भय माना ❀ जगत पिता मैं सुत करि जाना
हरि जननिहिं बहुविधि समुझाई ❀ यह जनि कतहुँ कहसि सुनु माई

दो० बार बार कौशल्या, विनय करै कर जोरि।
अब जनि कबहूं व्यापै, प्रभु मोहिं माया तोरि॥

बालचरित हरि बहुविधि कीन्हा ❀ सकल नगरवासिन सुख दीन्हा

१ भोजन २ माता ३ सोया हुआ ४ अनोखा ५ पूरा ६ नदी ७ कभी॥

छुक काल बीते सब भाई ❀ बड़े भये परिजन सुखदाई
चूड़ाकरण कीन्ह गुरु जाई ❀ पनि दच्छिणा द्विजन बहु पाई
परम मनोहर चरित अपारा ❀ करत फिरत चारिउ सुकुमारा
मन क्रम वचन अगोचर जोई ❀ दशरथ अजिर विचर प्रभु सोई
भोजन करत बुलावत राजा ❀ नहिं आवत तजि बालसमाजा
कौशल्या जब बोलन जाई ❀ ठुमुकि ठुमुकि प्रभु चलहिं पराई
निगम नेति शिव अन्त न पाई ❀ ताहि धरै जननी हठि धाई
धूसर धूरि भरे तनु आये ❀ भूपति बिहँसि गोद बैठाये

दो० भोजन करत चपल चित, इत उत अवसर पाइ।
भाजि चले किलकात मुख, दधि ओदन लपटाइ॥

बाल चरित अति सरल सुहाये ❀ शारद शेष शम्भु श्रुति गाये
जिनकर मन यहि रँग नहिं राता ❀ ते जग वंचक किये विधाता
भये कुमार जबहिं सब भ्राता ❀ दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता
गुरु गृह गये पढ़न रघुराई ❀ अल्प काल विद्या सब पाई
जाकी सहज श्वास श्रुति चारी ❀ सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी
विद्या विनय निपुण गुणशीला ❀ खेलहिं खेल सकल नृपलीला
करतल बाण धनुष अति सोहा ❀ देखत रूप चराचर मोहा
जिन वीथिन बिहरहिं सब भाई ❀ थकित होहिं सब लोग लुगाई

दो० कोशलपुर वासी नर, नारि वृन्द अरु बाल।
प्राणहुँते प्रिय लागहीं, सब कहँ राम कृपाल॥

बन्धु सखा सब लेहिं बुलाई ❀ वन मृगया नित खेलहिं जाई
पावन मृग मारहिं जियजानी ❀ दिन प्रति नृपहि देखावहिं आनी
जे मृग राम बाण के मारे ❀ ते तनु तजि सुरलोक सिधारे
अनुज सखा सँग भोजन करहीं ❀ मातु पिता आज्ञा अनुसरहीं
जेहि विधि सुखी होहिं सब लोगा ❀ करहिं कृपानिधि सोइ संयोगा

१ समय २ भात ३ खेल ४ थोड़ा ५ हथेली ६ शिकार ७ बैकुंठ॥

वेद पुराण सुनहिं मन लाई ❀ आपु कहहिं अनुजन समुझाई
प्रातकाल उठिकै रघुनाथा ❀ मातु पिता गुरु नावहिं माथा
आयसु मांगि करहिं पुरकाजा ❀ देखि चरित हर्षहिं मन राजा

दो०व्यापकअकलंअनीहअज, निर्गुण नाम न रूप।
भक्तहेतु नाना विधिहि, करशिशुचरितअनूप॥

यह सब चरित कहा मैं गाई ❀ आगिलि कथा सुनहु मन लाई
विश्वामित्र महा मुनि ज्ञानी ❀ बसहिं विपिन शुभ आश्रम जानी
जहँ जप यज्ञ योग मुनि करहीं ❀ अति मारीच सुबाहुहि डरहीं
देखत यज्ञ निशाचर धावहिं ❀ करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं
गाधितनय मन चिन्ता व्यापी ❀ हरि बिनु मरहिं न निशिचर पापी
तब मुनिवर मन कीन्ह विचारा ❀ प्रभु अवतरेउ हरण महिभारा
यहि मिसु देखौं प्रभुपद जाई ❀ करि विनती आनहुँ दोउ भाई
ज्ञान विराग सकल गुण अयना ❀ सो प्रभु मैं देखब भरि नयना

दो० बहु विधि करत मनोरथ, जात न लागी बार।
करि मज्जन सरयू जल, गये भूप दरबार॥

मुनि आगमन सुना जब राजा ❀ मिलन गयउ लै विप्रसमाजा
करि दण्डवत मुनिहिं सनमानी ❀ निज आसन बैठारेउ आनी
चरण पखारि कीन्ह अति पूजा ❀ मो सम धन्य आजु नहिं दूजा
विविध भाँति भोजन करवावा ❀ मुनिवर हृदय हर्ष अति पावा
पुनि चरणन मेले सुत चारी ❀ राम देखि मुनि विरति बिसारी
भये मगन देखत मुख शोभा ❀ जनु चकोर पूरण शशि लोभा
तब मन हरषि वचन कह राऊ ❀ मुनि अस कृपा कीन्ह नहिं काऊ
केहि कारण आगमन तुम्हारा ❀ कहहु सो करत न लाउब बारा
असुर समूह सतावहिं मोहीं ❀ मैं याचन आयउँ नृप तोहीं
अनुज समेत देहु रघुनाथा ❀ निशिचरबध मैं होब सनाथा

१ कलाहित २ वन ३ विश्वामित्र ४ घर ५ धोकर ६ खुशी ॥

दो० देहु भूप मन हरषित, तजहु मोह अज्ञान।
धर्म्म सुयश नृप तुमकहँ, इनकहँ अतिकल्यान॥

मुनि राजा अति अप्रिय बानी ❀ हृदय कम्प मुखद्युति कुम्हिलानी
चौथे पन पायउँ सुत चारी ❀ विप्र वचन नहिं कहेउ विचारी
मांगहु भूमि धेनु धन कोषा ❀ सर्बस देउँ आजु सह रोषा
देह प्राण ते प्रिय कछु नाहीं ❀ सोउ मुनि देउँ निमिष इक माहीं
सब सुत प्रिय मोहिं प्राणकि नाइ ❀ राम देत नहिं बनै गोसाईं
कहँ निशिचर अति घोर कठोरा ❀ कहँ सुन्दर सुत परम किशोरा
सुनि नृप गिरा प्रेमरस सानी ❀ हृदय हर्ष माना मुनि ज्ञानी
तब वशिष्ठ बहु विधि समुझावा ❀ नृप सन्देह नाश कहँ पावा
अति आदर दोउ तनय बुलाये ❀ हृदय लाय बहुभाँति सिखाये
मेरे प्राणनाथ सुत दोऊ ❀ तुम मुनि पिता आन नहिं कोऊ

दो० सौंपे भूपति ऋषिहिसुत, बहुविधि देइ अशीश।
जननी भवन गये प्रभु, चले नाइ पद शीश॥

सो० पुरुषसिंह दोउ वीर, हरषि चले मुनिभय हरण।
कृपासिन्धु मतिधीर, अखिलविश्वकारणकरण॥

अरुण नयन उर बाहु विशाला ❀ नील जलज तनु श्याम तमाला
कटि पट पीत कसे वर भाथा ❀ रुचिर चाप शायक दुहुँ हाथा
श्याम गौर सुन्दर दोउ भाई ❀ विश्वामित्र महानिधि पाई
प्रभु ब्रह्मण्य देव मैं जाना ❀ मोहिं हित पिता तजे भगवाना
चले जात मुनि दीन्ह दिखाई ❀ सुनि ताड़का क्रोध करि धाई
एकहि बाण प्राण हरि लीन्हा ❀ दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा
तबऋषि निज नाथहिं जिय चीन्हा ❀ विद्यानिधि कहँ विद्या दीन्हा
जाते लाग न क्षुधा पिपासा ❀ अतुलित बल तनु तेज प्रकासा

१ शोभा २ खज़ाना ३ पल ४ कठिन ५ बालक ६ वाणी ७ बड़ाखज़ाना॥

दो० आयुध[1] सकल समर्पिकरि, प्रभुनिज आश्रम आनि।
कन्दमूल फल भोजन, दिये भक्त हित जानि॥

प्रात कहा मुनि सन रघुराई ❀ निर्भय यज्ञ करहु तुम जाई
होम करन लागे मुनि भारी ❀ आपु रहे मख[2] की रखवारी
सुनि मारीच निशाचर कोही ❀ लै सहाय आवा मुनिद्रोही
बिनु फर बाण राम तेहि मारा ❀ शत योजन गा सागर पारा
पावक शर सुबाहु पुनि मारा ❀ अनुज निशाचर कटक सँहारा
मारि असुर सुर निर्भयकारी ❀ अस्तुति करहिं देव मुनिभारी
तहँ पुनि कछुक दिवस रघुराया ❀ रहे कीन्ह विप्रन पर दाया
भक्ति हेतु बहु कथा पुराना ❀ कहैं विप्र यद्यपि प्रभु जाना
तब मुनि सादर कथा बुझाई ❀ चरित एक देखिय प्रभु जाई
धनुषयज्ञ सुनि रघुकुलनाथा ❀ हरषि चले मुनिवर के साथा
आश्रम एक दीख मग माहीं ❀ खगमृग जीवजन्तु तहँ नाहीं
पूंछा मुनिहिं शिला प्रभु देखी ❀ सकल कथा ऋषि कही विशेखी

दो० गौतम नारी शापवश, उपल[3] देह धरि धीर।
चरण कमल रज चाहती, कृपा करहु रघुवीर॥

छं० परसतपदपावनशोकनशावनप्रकटभईतपपुंजसही।
देखतरघुनायकजनसुखदायक सम्मुखह्वैकरजोरिरही॥
अतिप्रेमअधीरापुलकशरीरामुखनहिंआवतवचनकही
अतिशयबड़भागीचरणनलागीयुगलनयनजलधारबही
धीरजमनकीन्हा प्रभुकहँचीन्हा रघुपतिकृपा भक्तिपाई।
अतिनिर्मलबानी अस्तुतिठानी ज्ञानगम्यजय रघुराई॥
मैंनारिअपावन[4] प्रभुजगपावन[5] रावनरिपुजनसुखदाई[6]।
राँजीवविलोचनभवभयमोचन पाहिपाहिशरणहिआई

१ हथियार २ यज्ञ ३ पत्थर ४ अपवित्र ५ पवित्र ६ दास ७ कमल॥

मुनिशापजोदीन्हाअतिभलकीन्हापरमअनुग्रहमैंमाना
देखेउँभरिलोचनप्रभुभयमोचन यहैलाभ शंकरजाना ॥
विनती प्रभुमोरी मैं मतिभोरी नाथ न वरमांगौं आना ।
पदपद्मपरागा रसअनुरागा मममनमधुप[2] करै पाना ॥
जेहिपदसुरसरितापरमपुनीताप्रकटभईशिवशीशधरी ।
सोईपदपंकजजेहिपूजतअजममशिरधरेउकृपालुहरी॥
यहिभाँति सिधारी गौतमनारी बारबार हरिचरणपरी ।
जोअतिमनभावासोवरपावागइ पतिलोकअनन्दभरी॥

दो० अस प्रभु दीनदयालु हरि, कारण रहित कृपाल ।
तुलसिदास शठ ताहिभजु, छांड़ि कपट जंजाल॥

चले राम लक्ष्मण मुनि संगा ❀ गये जहां जगपावनि गंगा
अनुज सहित प्रभु कीन्ह प्रणामा ❀ बहु प्रकार सुख पायउ रामा

अथ क्षेपक ॥

पुनि सुरसरि उतपति रघुराई ❀ कौशिक[5] सन पूंछी शिर नाई
कह मुनि प्रभु तव कुल इक राजा ❀ नाम सगर तिहुँ लोक विराजा
तेहिके युग भामिनि सुकुमारी ❀ प्रथम केशिनी सुमति पियारी
सब प्रकार सम्पति सुर भ्राजा ❀ सुतविहीन मन विस्मय राजा
एक समय भामिनि दोउ साथा ❀ गये वन तनय हेतु रघुनाथा
सघन सफल तरु सुन्दर नाना ❀ तहँ भृगुमुनि तपतेज निधाना

दो० सहित नारिनृपमुदि[6]तमन, रहे वर्ष शत एक ।
कीन्हे तपबल देखि भृगु, अस्तुति कीन्ह अनेक॥

कहि निज दुख प्रणाम नृप कीन्हा ❀ दै अशीश तब मुनिवर दीन्हा
नृपरानी सन मुनि अस भाषा ❀ लेहु स्व वर जो जेहि अभिलाषा
सुनि मुनिवचन शीश तिन नावा ❀ देहु नाथ जो अति मन भावा

१ कृपा २ भौंरा ३ गंगाजी ४ अहल्या ५ विश्वामित्र ६ प्रसन्न ॥

एकहि कह्यो एक सुत होना ❀ दूसरि साठि सहस गुण लोना
हरषित भयो सुभग वर पाई ❀ पाणि जोरि चरणन शिर नाई
सहित भामिनी अवधहि आये ❀ हर्ष सहित कछु दिवस गँवाये
जानि सुघरि सुन्दरि सुखदाई ❀ नाम केशि असमंजस जाई
सुमति प्रसवँ इक तुम्बुरि सोई ❀ भये सुत प्रकट कहे मुनि जोई
निरखे सुत हरषित सब होई ❀ मंगलचार किये सब कोई
हर्ष सहित दिय दान नरेशू ❀ पूजि विप्र गुरु गौरि गणेशू
घृतघट सुन्दर विविध मँगाये ❀ ते सब सुत नृप तिनमहँ नाये

दो० यहि विधि भये सकल सुत, पूजे सब मन काम।
जाइ दिवसनिशि हर्षवश, सुनहु राम घनश्याम॥

पुरजन सब घर घरनि नरेशू ❀ अति आनँद तनु मिटा अँदेशू
बालकेलि कर भये कुमारा ❀ लीला करैं अगम संसारा
होयँ सो काज सकल मनचीते ❀ यहि सुख बसत बहुत दिन बीते
सरयू नदी अवध जो अहई ❀ विमल सलिलं उत्तर तट बहई
प्रजा लोक के बालक नाना ❀ नित उठि तहां करैं अस्नाना
असमंजस तहँ तरंणी आनी ❀ तिनहिं चढ़ाइ बोरि निज पानी
भये प्रजा सब परम दुखारी ❀ बालकबध सुनि सुनहु खरारी
सकल गये जहँ बैठ नृपाला ❀ बोले वचन नाइ पद भाला
तुम नृप अहहु प्रजा प्रतिपाला ❀ सुत तुम्हार भा सब कर काला
तजब देश सब सुनहु नरेशू ❀ बिना तजे नहिं मिटै कलेशू

दो० तव सुत कीन्हे पाप बहु, मारे बालक वृन्द।
तुमकहँ प्राणसमान यह, सकल प्रजनकहँ मन्द॥

प्रजा गिरा सुनि धीरज दीन्हा ❀ सुतहि देश ते बाहर कीन्हा
तासु तनय जग विदित प्रभाऊ ❀ गुणनिधि अंशुमान तेहि नाऊ
बसत हृदय नृप के सो कैसे ❀ मुनिमन मीनं सलिल रह जैसे

१ सुन्दर २ दिन ३ गर्भ से पैदा होना ४ तोंबी ५ जल ६ नाव ७ विष्णु ८ माथा ९ मछली॥

गये प्रजा सब निज निज धामा ❀ भे विलोकि मन गुण विश्रामा
बहुरि नृपति मन कीन्ह विचारा ❀ आइ भयो पनं चौथ हमारा
हित मंत्री गुरु सुतहु बुलाये ❀ हिमगिरि विन्ध्य मध्य तब आये
रुचिर वेदिका एक बनाई ❀ देखत बनै वरणि नहिं जाई
मख अरम्भ छांड़े तब तुरगा ❀ वेगवन्त जिमि देखिय उरगा

दो०सुरपति सुनि भय दारुणहिं, मनमहँ करि अनुमान।
आनि तुरंग तब लीन्हेउ, मर्म्म न काहू जान॥

राखेउ आनि कपिलमुनि पाहीं ❀ कोउ न जान काहुहि गम नाहीं
जुगवत रहे जे सुभट सयाने ❀ लै तुरंग गे किनहु न जाने
तिन सब आय कही नृप पाहीं ❀ महाराज हम कहत डराहीं
लीन्ह तुरंग कोइ जान न कोई ❀ कहा करिय जो आयसु होई
सुनत वचन नृप विस्मय पाये ❀ सकल सुतन कहँ तुरत बुलाये
जाहु तुरँग तुम हेरहु जाई ❀ सकल चले चरणन शिर नाई
सुरपति सम देखिय सब वीरा ❀ सकल धनुर्द्धर अति रणधीरा
तिनहिं चलत धरणी अकुलाई ❀ बलिपशु जीव भये सब आई
सुमन वाटिका उपवन बागा ❀ सरित कूप वापिका तड़ागा
नगर गांव मुनीश थल नाना ❀ गिरि कन्दर कानन अस्थाना

दो०यहिविधि खोजेहु तुरँग तिन, आये भूपति पाहिं।
चरणन माथहि नाइकहि, खोज अश्व की नाहिं॥

खोदहु महि सुत करहि पठाये ❀ चले सकल पूरब दिशि आये
तिनके कर जिमि कुलिश समाना ❀ योजन भरि खोदहिं बलवाना
देखि अतुल बल देव डराने ❀ नरनाहन विरंचि सनमाने
शोधत महि पताल सब आये ❀ दिग्गज देखि एक शिर नाये
तिन पूंछा सब कथा सुनाये ❀ बहुरि सकल दच्छिण दिशि आये
यहि विधि पुनि दूसर गज देखा ❀ अति उतंग गज विमल विशेखा

१ बुढ़ापा २ शुरू ३ सर्प ४ संदेह ५ घोड़ा ६ तालाव ७ हाथ ८ वज्र ९ दिशाओं का हाथी॥

ताहू बहु प्रणाम तिन कीन्हे ❀ चले सुनत पश्चिम चित दीन्हे
तीसर देखि प्रदक्षिण कीन्ही ❀ पुनि उत्तर दिशि शोधहि लीन्ही
दिग्गज श्वेत निरखि सुखपाये ❀ सकल कपिलमुनि पहँ पुनि आये
खोजत मही पार नहिं पावा ❀ शोभा चहुँ दिशि जलधि[1] सुहावा

दो० देखिनि आइ तुरंग तब, बांधा मुनिवर पास।
बोले वचन सकोप करि, भा यह सबकर नास॥

खोदा महि हम चारिउ कोधा[2] ❀ रे रे दुष्ट बहुत तोहिं शोधा
कोउ कह चोर दीख बहु होई ❀ यहि सम छली अपर नहिं कोई
पर धन लै पताल पुनि आयो ❀ तस्कर[3] मुनिवर वेष बनायो
कोउ कहै यह मुनिवर नाहीं ❀ समुझि देखि लक्षण मन माहीं
कोउ कह बकतप कीन्ह अपारा ❀ अहो दुष्ट लै तुरंग हमारा
सुनत वचन मुनि चितवा जबहीं ❀ भये भस्म सब क्षण में तबहीं
उमा वचन जेहि समुझि न बोला ❀ सुधा[4] होइ विष तिक्रम ओला
पावक जानि धरहिं कर प्रानी ❀ जरहिं काहि नहिं अति अभिमानी
जानि गरल[5] जे संग्रह करहीं ❀ सुनहु राम ते काहे न मरहीं
क्रोध करै बिनु किये विचारा ❀ भये सकल तेहिते जरि छारा
इहां नृपति अँशुमान बुलाये ❀ नहिं आये सब तिनहिं पठाये

दो० दीन्ही नृपति अशीश तब, अतिहित बारहिंबार।
वेगि फिरहु लै तुरँग सुत, मेरे प्राण अधार॥

चले नाइ पद शीश कुमारा ❀ विष्णुभक्त हित कुल उजियारा
जहँ तहँ देखि मुनिन के धामा ❀ पूंछि खबरि करि दण्ड प्रणामा
पन्नग[6] अहि सन पाइ अशीशा ❀ चहुँ दिग्गज कहँ नायउ शीशा
यहि विधिशोधँत[7] मग महँ जाता ❀ मिले गरुड़ सुमनी कर भ्राता[8]
चरण परत तब आशिष दयऊ ❀ जरे सकल जेहि विधि सो कह्यऊ
सुनतहि वचन शोच भयो भारी ❀ दिये खगेश दिखाय सुवारी[9]

१ समुद्र २ तरफ़ ३ चोर ४ अमृत ५ विष ६ नाम सर्प ७ ढूँढ़त ८ भाई ९ जलाशय॥

अंशुमान तहँ मज्जन कीन्हा ❀ क्रमक्रम सबहिं जलांजलि दीन्हा
बहुरि गरुड़ बोले सुनु त्राता ❀ मैं तोहिं कहौं करिय इक बाता
सो॰ करु सुत सोइ उपाय, गङ्गा आवहिं अवनिमहँ[1]।
दर्शन ते अघ जाय, मज्जन कीन्हे परम सुख ॥
षष्टि सहस तरिहैं येहीविधि ❀ गङ्गा पाय परम पावननिधि
सुनि अस वचन हृदय मन भाये ❀ सहित गरुड़ मुनिवर पहँ आये
तब खगेश मुनि चरणन नायउ ❀ पूरब कथा सकल मुनि गायउ
आयसु देइ तुरँग मुनि दीन्हा ❀ हरषि हृदय निज अश्वहि चीन्हा
नगर समीप गरुड़ पहुँचाई ❀ गये भवन निज तब रघुराई
इहां तुरँग लै नृप शिर नाई ❀ षष्टि सहस मुनि कथा सुनाई
विस्मय हर्ष विवश नृप भयऊ ❀ कीन्हा यज्ञ दान बहु दयऊ
बहुविधि नृपति राज्य पुनि कीन्हा ❀ प्रजालोगकहँ अति सुख दीन्हा
दो॰ अंशुमान हित राज्य दै, निज मन हरिपद लाग।
गयउ सगर तपकाज वन, हृदय अधिक अनुराग[2] ॥
तासु तनय[3] दिलीप नृप भयऊ ❀ वन तपहेतु उतर दिशि गयऊ
उहां अगम तप कीन्ह नृपाला ❀ भये कालवश गये कछु काला
कहहु कवन दिलीप प्रभुताई[4] ❀ सेवैं सकल नृपति जेहि आई
जुगवत जेहि नित सुरपति रहहीं ❀ महिमा[5] सो कवि केहिविधि कहहीं
भागीरथ अस सुत भयो जासू ❀ पितु सम प्रीति अधिक उर तासू
तिनहिं बोलि नृप दीन्हेउ राजू ❀ आपु चले उठि तपके काजू
मनमहँ करत पन्थ अनुमाना ❀ सुरसरि आव तजउँ नतु[6] प्राना
निजमनु तनु दीन्हेउ निमिदेऊ ❀ फिरि निज नगरक नाम न लेऊ
सो॰ यहिविधि करत विचार, नृप कीन्हे तप प्रबलतब।
बीते कछु इक काल, देहतजी कोउ प्रकटनाहिं ॥
जेहि सुरसँरि[7] लगि तजि तनु भूपा ❀ सो तजि मूढ़[8] पियहिं जल कूपा

---

१ पृथ्वी २ खुशी ३ पुत्र ४ प्रतिष्ठा ५ बड़ाई ६ नहीं तौ ७ गङ्गाजी ८ मूर्ख ॥

इहां भगीरथ अस मन भयऊ ❀ पितु न आव बहुदिन चलि गयऊ
काकुत्स्थ नाम तनय यक रहेऊ ❀ दीन्ही राज्य नीति बहु कहेऊ
कहि तब पूर्व कथा सुतपाहू ❀ दीन्ह अशीश चले नरनाहू
निकसत नगर शकुन भल पाये ❀ अतिहिनिविड़ वन जहँ नृप आये
देखि भगीरथ वन सुख पावा ❀ सुरसरि हित तपकहँ मनलावा
एक चरण दोउ भुजा उठाये ❀ रवि सम्मुख[१] चितवहिं मन लाये
वर्ष सहस बीते यहि भाँती ❀ जात न जानेउ दिन अरु राती
देखि उग्र तप अजं चलि आये ❀ बोले वचन नृपहिं मनभाये
चहहि नृपति जो ले वरदाना ❀ बोले नृप करि अजहिं प्रमाना
जो माँगौं सो जानत अहहू ❀ मोसन मांगन प्रभु किमि कहहू

दो० तदपि कहौं प्रभु देहु वर, सब सन्तन कहँ वृद्धि।
दूसर मांगहुँ जोरि कर, गङ्गा आवहिं निद्धि॥

एवमस्तु कहि पुनि विधि भवंही ❀ सुरसरि देहुँ राखि को सकही
छूटि जाहिं पुनि तुरत रसातल ❀ फिरहिं न नृपति बहुरि सुनु भूतल
तेहिते कहौं एक तोहिं पाहीं ❀ अति दयालु शंकर मन माहीं
सोइ शंकर राखि सुरसरि आजू ❀ उनहिं जपे तव ह्वैहै काजू
अस कहि विधि अन्तरहित भये ❀ बहुरि भगीरथ शिवपहँ गये
विबुध वर्ष अंगुष्ठ अधारा ❀ बारबार शिव नाम उचारा
शिव दयालु प्रकटे तब आई ❀ हाथ जोरि नृप विनय सुनाई
मैं राखब सुरसरि कह ईशा ❀ बहुरि रमापति[५] ध्यान करीशा

दो० उहां देवसरि शिववचन, सुनि मन कीन्ह विचार।
जाउँ रसातल शिवसहित, जात न लावों बार॥

अन्तरयामी शिवहिं उपाई ❀ निज शिरजटा सो अगम बनाई
इहां भगीरथ अस्तुति कीन्हीं ❀ सुनि मृदुगिरा छांड़ि विधि दीन्हीं
छूटे शोर भयउ जग भारी ❀ चकित देव अहि दिग्गज चारी

१ सवन २ सामने ३ ब्रह्मा ४ शम्भु ५ विष्णु ६ सर्प॥

सुरसरि पुनि हरजटा समानी ❀ वर्ष एक तहँ रहीं भवानी
कौतुक देखि सकल सुर हर्षे ❀ कहि जय जयति सुमन बहु वर्षे
बहुरि भगीरथ सुमिरण कीन्हा ❀ डारि जटा शिव बुन्दक दीन्हा
तेहिते भई तीनि पुनि धारा ❀ एक गई नभ एक पतारा
गइ नभ सोइकि भई अघनाशिनि ❀ देवन धरा नाम मन्दाकिनि

दो० दूसरि गई पताल में, नाम प्रभावति हरण दुख।
तीसरि भइ गङ्गा सोई, सब सन्तनको करणसुख॥
जलप्रवाह निकसत नृपति, उर अति भयो अनन्द।
जैसे उमड़त सिन्धु तब, पूर्ण कला लखि चन्द॥

आय भगीरथ पुनि शिरनाये ❀ बोली सुरसरि वचन सुहाये
वेगवन्त नृप रथ ले आनू ❀ तुरत तुरँग शुभगति जिमि भानू
तेहि रथ चढ़ि नृप चलु मम आगे ❀ चलिहौं मैं तब पाछे लागे
सुनि नृप दिव्य तुरँग रथ आना ❀ चले हृदय सुमिरत भगवाना
चली अग्र करि नृपहिं सुरसरी ❀ देवन मुदित सुमनै झरि करी
चलत तेज कछु वरणि न जाई ❀ टूटहिं गिरि तरु शैल सुहाई
करैं कुलाहल विधि बहु भाँती ❀ कमठ नक्र झष व्याल सो माती
मज्जन करहिं देव तहँ आई ❀ सुनि गति सिद्ध रहे सब छाई

सो० तर्पन कर मनलाय, हर्ष हृदय नाहिं जात कहि।
दर्शन ते अघ जाय, तरैं सकल मुनिजन कहैं॥
मज्जन कर हरषाय, सुरअजादि सनकादि ऋषि।
पानकरत अघ जाय, अस मन सब कोऊ कहैं॥

करैं जे मज्जन जप मनलाई ❀ तिनकी महिमा कहि न सिराई
रथ पर जात सोह नृप कैसे ❀ तेजवन्त रवि देखिय जैसे
लांघत शैल सुहावन देशा ❀ पाछे सुरसरि अग्र नरेशा।

१ फिर २ पार्वती ३ आकाश ४ फूल ५ गंभीर शब्द ६ कछुआ ७ मगर ८ मछली ९ सर्प॥

हरद्वार समीप जब आये ❀ तीर्थ देखि सुरसरि मनलाये
तीर्थ निरखि मन भयो सुखारी ❀ आदि प्रयाग पहुँचि अघहारी
तहँ मज्जन कीन्हे अघ जाई ❀ बहुरि देवसरि[1] काशी आई
सो शिवपुरी[2] सहज सुखदाई ❀ वरणि न जाइ मनोहरताई
अबसे तीर्थ विविध विधि जानी ❀ गई तहां किमि कहौं बखानी
मग लोगन[3] कहँ करत सनाथा ❀ जाइ चली यहि विधि रघुनाथा

दो० मिली जाइ पुनि उदधि[4] महँ, उदधि हृदय सुखमान।
लगे कहन भागीरथहि, तुम सम धन्य न आन॥

कीन्हों अस जो करहि न कोई ❀ तप महिमाबल कस नहिं होई
सगर सुतनय तरे ततकाला ❀ हर्षवन्त तब भयो नृपाला
अबलौं रहोहै कुलमहँ कोऊ ❀ तिनके संग तरे अब सोऊ
तुम समान नृप अवर न भयऊ ❀ जग विख्यात अचल[5] यश लयऊ
सकल सुरन तहँ संग विधाता ❀ नृपसन आय कही सब बाता
धन्य भगीरथ जग यश लयऊ ❀ तुम समान नृप अवर न भयऊ
आपनि सत्य प्रतिज्ञा[6] कियऊ ❀ सम्भत वेद जनन सुख दयऊ
गंगासागर सब कोइ कहही ❀ अघ उलूक[7] देखत रवि डरही
भागीरथी नाम अरु कहहीं ❀ मुनि सुर सिद्ध नाग यश लहहीं
अस विधि कहि निजलोकहि आये ❀ जहां भगीरथ अति सुख पाये

छं० पायो अमित[8] सुख बहुरि पूजा सुरसरिहि मनलाइकै।
तबदीन्ह आशिष मुदितगंगा नृपभवन सुखपाइके॥
यहिभाँति सुनि गंगाकथा तबरामरुचि चरणन नये।
कह दास तुलसीरामलषणहिं महामुनिआशिष दये॥

दो० कौशिक आशिष अमिय सम, पाय हर्ष रघुराज।
प्रभुसंशय सब इमि गई, लवा निरखि जिमि बाज॥

---

१ गंगाजी २ काशीजी ३ बटोही ४ समुद्र ५ स्थिर ६ प्रण ७ घुग्घू पक्षी ८ बेप्रमाण॥

आशिष सुधा समान मुनि, हरषे श्रीरघुनाथ।
प्रभु सुख पाइ कहेउ पुनि, वेगि चलिय मुनिनाथ॥
राम नाम ते संशय जाई ❀ देह धरे कर यह फल भाई
इति क्षेपक॥

गाधिसुवन सब कथा सुनाई ❀ जेहि प्रकार सुरसरि महि[१] आई
तब प्रभु ऋषिन समेत नहाये ❀ विविध दान महिदेवन[३] पाये
हरषि चले मुनि वृन्द सहाया ❀ वेगि विदेहनगर[४] नियराया
पुर रम्यता[५] राम जब देखी ❀ हर्षे अनुज समेत विशेखी
वापी कूप सरित सर नाना ❀ सलिल सुधा सम मणि सोपाना[६]
गुंजत मंजु मत्त रस भृंगा ❀ कूजत कल बहु वरण विहंगा
वरण वरण विकसे वनजाता ❀ त्रिविध समीर सदा सुखदाता

दो० सुमन वाटिका बाग वन, विपुल विहंग निवास।
फूलत फलत सुपल्लवित, सोहत पुर चहुँ पास॥

बनै न वरणत नगर निकाई ❀ जहाँ जाय मन तहाँ लुभाई
चारु बजार विचित्र अवारी ❀ मणिमय विधिजनुस्वकरसँवारी
धनिक बनिक वर धनद समाना ❀ बैठे सकल वस्तु लै नाना
चौहट सुन्दर गली सुहाई ❀ सन्तत रहहिं सुगन्ध सिंचाई
मंगलमय मन्दिर सब केरे ❀ चित्रित जनु रतिनाथ चितेरे
पुरनरनारि सुभग शुचि सन्ता ❀ धर्म्म शील ज्ञानी गुणवन्ता
अति अनूप जहँ जनकनिवासू ❀ विथकहिं विबुध विलोकि विलासू
होत चकित चित कोट विलोकी ❀ सकल भुवन शोभा जनु रोकी

दो० धवलधाममणि पुरटपट, सुघटित नाना भाँति।
सियनिवास सुन्दर सदन, शोभा किमि कहि जाति॥

सुभगद्वार सब कुलिश[८] कपाटा ❀ भूप भीर नट मागध भाटा
बनी विशाल वाजि गज शाला ❀ हय गय रथ संकुल[९] सबकाला

१ अमृत २ धरती ३ विप्र ४ जनकपुरी ५ सुन्दरता ६ सीढ़ी ७ सुवर्ण ८ वज्र ९ कुण्ड॥

शूर सचिव सेनप बहुतेरे ❀ नृप गृह सरिस सदन सबकेरे
पुर बाहर सर सरित समीपा ❀ उतरे जहँ तहँ विपुल महीपा
देखि अनूप एक अमराई ❀ सब सुपास सब भाँति सुहाई
कौशिक कह्यो मोर मन माना ❀ इहां रहिय रघुवीर सुजाना
भलेहि नाथ कहि कृपानिकेता ❀ उतरे तहँ मुनिवृन्द समेता
विश्वामित्र महामुनि आये ❀ समाचार मिथिलापति पाये

दो० संग सचिव शुचिभूरिभट, भूसुर वर गुरु ज्ञाति।
चले मिलन मुनिनायकहि, मुदितराउर्यहिभाँति॥

कीन्ह प्रणाम धरणि धरि माथा ❀ दीन्ह अशीश मुदितमुनिनाथा
विप्र वृन्द सब सादर वन्दे ❀ जानि भाग्यबड़ि राउ अनन्दे
कुशल प्रश्न कहि बारहिंबारा ❀ विश्वामित्र नृपहिं बैठारा
तेहि अवसर आये दोउ भाई ❀ गये रहे देखन फुलवाई
श्याम गौर मृदु वयस[३] किशोरा ❀ लोचनसुखद विश्व चितचोरा
उठे सकल जब रघुपति आये ❀ विश्वामित्र निकट बैठाये
भे सब सुखी देखि दोउ भ्राता ❀ वारि विलोचन पुलकित गाता
मूरति मधुर मनोहर देखी ❀ भये विदेह[४] विदेह विशेखी

दो० प्रेम मगन मन जानि नृप, करि विवेक मतिधीर।
बोले मुनिपद नाइ शिर, गद्गद गिरा[५]गँभीर॥

कहहु नाथ सुन्दर दोउ बालक ❀ मुनिकुलतिलककिनृपकुलपालक
ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा ❀ उभय[६] वेष धरि सोइ कि आवा
सहज विराग रूप मन मोरा ❀ थकित होत जिमि चंद चकोरा
ताते प्रभु पूंछौं सतिभाऊ ❀ कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ
इनहिं विलोकत अतिअनुरागा ❀ बरबस ब्रह्मसुखहि मन त्यागा
कहमुनि विहँसि कहेउ नृप नीका ❀ वचन तुम्हार न होइ अलीका[७]
ये प्रिय सबहि जहांलगि प्राणी ❀ मन मुसुकाहिं राम सुनि वाणी

१ ब्रह्म २ राजा ३ उमर ४ जनक ५ वाणी ६ दो ७ झूंठ॥

रघुकुल मणि दशरथ के जाये ❀ ममहित लागि नरेश पठाये

दो॰ रामलषण दोउ बन्धु वर, रूप शील बलधाम।
मखराखेउ सब साखिजग, जीति असुर संग्राम॥

मुनि तव चरण देखि कहराऊ ❀ कहि न सकौं निज पुण्य प्रभाऊ
सुन्दर श्याम गौर दोउ भ्राता ❀ आनँदहू के आनँद दाता
इनकी प्रीति परस्पर पावनि ❀ कहि न जाय मनभाव सुहावनि
सुनहु नाथ कह मुदित विदेहू ❀ ब्रह्म जीव इव सहज सनेहू
पुनि पुनि प्रभुहि चितव नरनाहू ❀ पुलकगात उर अधिक उछाहू
मुनिहिं प्रशंसि नाइ पद शीशा ❀ चले लिवाय नगर अवनीशा
सुन्दर सदन सुखद सब काला ❀ तहां वास लै दीन्ह भुवाला
करि पूजा सब विधि सेवकाई ❀ गये राव गृह बिदा कराई

दो॰ ऋषय सङ्ग रघुवंश मणि, करि भोजन विश्राम।
बैठे प्रभु भ्राता सहित, दिवस रहा भरि याम॥

लषण हृदय लालसा विशेखी ❀ जाय जनकपुर आइय देखी
प्रभुभय बहुरि मुनिहिं सकुचाहीं ❀ प्रकट न कहहिं मनहिं मुसुकाहीं
राम अनुज मन की गति जानी ❀ भक्तवछलता हिय हुलसानी
परम विनीत सकुचि मुसुकाई ❀ बोले गुरु अनुशासन पाई
नाथ लषण पुर देखन चहहीं ❀ प्रभु सकोच डर प्रकट न कहहीं
जो राउर अनुशासन पाऊं ❀ नगर दिखाय तुरत लै आऊं
सुनि मुनीश कह वचन सप्रीती ❀ कस न राम राखहु तुम नीती
धर्म्मसेतु पालक तुम ताता ❀ प्रेमविवश सेवक सुखदाता

दो॰ जाइ देखि आवहु नगर, सुखनिधान दोउ भाइ।
करहु सफल सबके नयन, सुन्दर वदन दिखाइ॥

मुनि पदकमल वन्दि दोउ भ्राता ❀ चले लोक लोचन सुखदाता
बालक वृन्द देखि अति शोभा ❀ लगे संग लोचन मन लोभा

१ भाई २ पृथ्वीनाथ ३ घर ४ साथ ५ आराम ६ प्रहर ७ छोटा भाई ८ आज्ञा॥

पीत वसन परिकर कटिभाथा ❁ चारु चाप शर सोहत हाथा
तनु अनुहरत सुचन्दन खोरी ❁ श्यामल गौर मनोहर जोरी
केहरि कन्धर बाहु विशाला ❁ उर अति रुचिर नागमणिमाला
सुभग शोण सरसीरुह लोचन ❁ वदन मयंक तापत्रय मोचन
श्रवणनकनक फूल छवि देहीं ❁ चितवत चित्त चोरि जनु लेहीं
चितवनि चारु भृकुटि वर बांकी ❁ तिलकरेख शोभा जनु चांकी

दो० रुचिर चौतनी सुभगशिर, मेचक कुंचित केश।
नख शिखसुन्दरबन्धुदोउ, शोभा सकल सुदेश॥

देखन नगर भूप सुत आये ❁ समाचार पुरवासिन पाये
धाये धाम काम सब त्यागे ❁ मनहुँ रंक निधि लूटन लागे
निरखि सहज सुन्दर दोउ भाई ❁ होहिं सुखी लोचन फल पाई
युवती भवन झरोखन लागीं ❁ निरखहिं रामरूप अनुरागीं
कहहिं परस्पर वचन सप्रीती ❁ सखि इन कोटिकाम छवि जीती
सुर नर असुर नाग मुनि माहीं ❁ शोभा अस कहुँ सुनियत नाहीं
विष्णु चारि भुज विधि मुख चारी ❁ विकट वेष मुख पंच पुरारी
अपर देव अस को जग आही ❁ यहि छवि सखि पटतरिये जाही

दो० वयकिशोर सुषमासदन, श्याम गौर सुखधाम।
अङ्ग अङ्ग पर वारिये, कोटि कोटि शत काम॥

कहहु सखी अस को तनुधारी ❁ जो न मोह यह रूप निहारी
कोउ सप्रेम बोली मृदु बानी ❁ जो मैं सुना सो सुनहु सयानी
ये दोउ नृप दशरथ के ढोटा ❁ बाल मरालन के कल जोटा
मुनि कौशिक मख के रखवारे ❁ जिन रण अजय निशाचर मारे
श्याम गात कल कंज विलोचन ❁ जो मारीच सुभुज मदमोचन
कौशल्या सुत सो सुख खानी ❁ नाम राम धनु शायक पानी
गौर किशोर वेष वर काछे ❁ कर शर चाप राम के पाछे

---

१ गजमुक्ता २ कमल ३ कर्णफूल ४ बाल ५ ढाल ६ स्त्री ७ शिव ८ लड़का ९ यज्ञ॥

लक्ष्मण नाम राम लघु भ्राता ❀ सुनु सखि तासु सुमित्रा माता

दो० विप्रकाज करि बन्धु दोउ, मग मुनिवधू उधारि।
आये देखन चापमख, सुनि हरषीं सब नारि॥

देखि राम छवि कोउ इक कहई ❀ योग्य जानकी यह वर अहई
जो सखि इनहिं देखि नरनाहू ❀ प्रण परिहरि हठि करहिं विवाहू
कोउ कह इनहिं भूप पहिचाने ❀ मुनि समेत सादर सनमाने
सखि परन्तु प्रण राव न तजई ❀ विधिवश हठि अविवेकहि भजई
कोउ कह जो भल अहै विधाता ❀ सबकहँ सुनिय उचित फलदाता
तौ जानकिहि मिलिहि वर येहू ❀ नाहिं न आली कछु सन्देहू
जो विधि वश अस बनै सँयोगू ❀ तौ कृतकृत्य होहिं सब लोगू
सखि हमरे अति आरत ताते ❀ कबहुँक ये आवहिं यहि नाते

दो० नाहिंत हमकहँ सुनहु सखि, इनकर दर्शन दूरि।
यह संघट तब होइ जब, पुण्य पुराकृत भूरि॥

बोली अपर कहेउ सखि नीका ❀ यह विवाह अतिहित सबहीका
कोउ कह शंकर चाप कठोरा ❀ ये श्यामल मृदुगात किशोरा
सब असमंजस अहै सयानी ❀ यह सुनि अपर कहै मृदु बानी
सखि इनकहँ कोउ कोउ अस कहहीं ❀ बड़ प्रभाव देखत लघु अहहीं
परसि जासु पद पंकज धूरी ❀ तरी अहल्या कृत अघ भूरी
सोकि रहैं बिनु शिव धनु तोरे ❀ यह प्रतीति परिहरिय न भोरे
जेहि विरंचि रचि सीय सँवारी ❀ तेहिं श्यामल वर रचेउ विचारी
तासु वचन सुनि सब हरषानी ❀ ऐसइ होउ कहहिं मृदु बानी

दो० हिय हरषहिं वरषहिं सुमन, सुमुखिसुलोचनिवृन्द।
जाहिं जहां जहँ बन्धु दोउ, तहँ तहँ परमानन्द॥

पुर पूरब दिशिगे दोउ भाई ❀ जहां धनुषमख भूमि बनाई
अति विस्तार चारु गचढारी ❀ विमल वेदिका रुचिर सँवारी

---

१ छोड़के २ अज्ञान ३ सफल ४ समागम ५ पूर्वजन्म की ६ सुन्दर ७ स्वच्छ॥

चहुँदिशि कंचन मंच विशाला ❀ रचे जहां बैठहिं महिपाला
तेहि पाछे समीप चहुँ पासा ❀ अपर मंच मण्डली विलासा
कछुक ऊंच सब भाँति सुहाई ❀ बैठहिं नगर लोग सब आई
तिनके निकट विशाल सुहाये ❀ धवल धाम बहु वरण बनाये
जहँ बैठी देखहिं सब नारी ❀ यथायोग्य निजकुल अनुहारी
पुरबालक कहि कहि मृदुबचना ❀ सादर प्रभुहि देखावहिं रचना

दो० सबशिशुयहि मिसुप्रेमवश, परसि मनोहर गात।
तनु पुलकहिं अतिहर्षहिय, देखिदेखि दोउ भ्रात॥

शिशु सब राम प्रेम वश जाने ❀ प्रीति समेत निकेत बखाने
निज निज रुचि सब लेहिं बुलाई ❀ सहित सनेह जाहिं दोउ भाई
राम देखावहिं अनुजहि रचना ❀ कहि प्रिय मधुर मनोहर वचना
लव[1] निमेष[2] महँ भुवन निकाया ❀ रचै जासु अनुशासन माया
भक्त हेतु सोइ दीनदयाला ❀ चितवत चकित धनुषमखशाला
कौतुक देखि चले गुरु पाहीं ❀ जानि विलम्ब त्रास मनमाहीं
जासु त्रास डर कहँ डर होई ❀ भजन प्रभाव देखावत सोई
कहि बातें मृदु मधुर सुहाई ❀ किये बिदा बालक बरिआई

दो० सभय सप्रेम विनीत अति, सकुच सहित दोउभाइ।
गुरुपद पंकज नाइ शिर, बैठे आयसु पाइ॥

निशिप्रवेश मुनि आयसु दीन्हा ❀ सबहीं सन्ध्यावन्दन कीन्हा
कहत कथा इतिहास पुरानी ❀ रुचिर रजनी युगयाम सिरानी
मुनिवर शयन कीन्ह तब जाई ❀ लगे चरण चापन दोउ भाई
जिनके चरण सरोरुह लागी ❀ करत विविध जपयोग विरागी
ते दोउ बन्धु प्रेम जनु जीते ❀ गुरुपद कमल पलोटत प्रीते
बार बार मुनि आज्ञा दीन्हा ❀ रघुवर जाइ शयन तब कीन्हा
चापत चरण लषण उरलाये ❀ सभय सप्रेम परम सचुपाये

१ बालक २ चतुर्थांश ३ पल ४ जबरदस्ती ५ सन्ध्या ६ रात्रि ७ त्यागी॥

पुनि पुनि प्रभु कह सोवहु ताता ❀ पौढ़े उर धरि पद जलजाता

दो० उठे लषण निशि विगत सुनि, अरुणशिखा धुनि कान।
गुरु ते पहिले जगतपति, जागे राम सुजान॥

सकल शौच करि जाय नहाये ❀ नित्य निबाहि गुरुहिं शिरनाये
समय जानि गुरु आयसु पाई ❀ लेन प्रसून चले दोउ भाई
भूप बाग वर देखेउ जाई ❀ जहँ वसन्त ऋतु रहे लुभाई
लागे विटप मनोहर नाना ❀ वरण वरण वर बेलि विताना
नव पल्लव फल सुमन सुहाये ❀ निज सम्पति सुरतरुहिं लजाये
चातक कोकिल कीर चकोरा ❀ कूजत विहँग नचत कलमोरा
मध्य बाग सर सोह सुहावा ❀ मणि सोपान विचित्र बनावा
विमल सलिल सरसिज बहुरंगा ❀ जल खग कूजत गुंजत भृंगा

दो० बाग तड़ाग विलोकि प्रभु, हर्षे बन्धु समेत।
परम रम्य आराम यह, जो रामहिं सुख देत॥

चहुँदिशि चितै पूंछि मालीगन ❀ लगे लेन दल फूल मुदित मन
तेहि अवसर सीता तहँ आई ❀ गिरिजा पूजन जननि पठाई
संग सखी सब सुभग सयानी ❀ गावहिं गीत मनोहर बानी
सर समीप गिरिजा गृह सोहा ❀ वरणि न जाय देखि मन मोहा
मज्जन करि सर सखिन समेता ❀ गई मुदित मन गौरि निकेता
पूजा कीन्ह अधिक अनुरागा ❀ निज अनुरूप सुभग वर मांगा
एक सखी सिय संग विहाई ❀ गई रही देखन फुलवाई
तेइँ दोउ बन्धु विलोकेउ जाई ❀ प्रेम विवश सीता पहँ आई

दो० तासु दशा देखी सखिन, पुलक गात जल नैन।
कहु कारण निज हर्ष कर, पूछहिं सब मृदु बैन॥

देखन बाग कुँवर दुइ आये ❀ वय किशोर सब भाँति सुहाये
श्याम गौर किमि कहौं बखानी ❀ गिरा अनयन नयन बिनु बानी

१ कमल २ मुर्ग ३ फूल ४ कल्पवृक्ष ५ सुआ ६ बाग ७ छोड़कर ८ वाणी॥

सुनि हरषीं सब सखी सयानी ❀ सिय हिय अति उत्कण्ठा जानी
एक कहहि नृपसुत ते आली ❀ सुना जे मुनि सँग आये काली
जिन निज रूप मोहनी डारी ❀ कीन्हे स्ववश सकल नर नारी
वरणत छवि जहँ तहँ सब लोगू ❀ अवशि देखिये देखन योगू
तासु वचन अति सियहि सुहाने ❀ दरश लागि लोचन अकुलाने
चलीं अग्रकरि प्रिय सखि सोई ❀ प्रीति पुरातन लखै न कोई

दो॰ सुमिरि सीय नारद वचन, उपजी प्रीति पुनीत।
चकितविलोकतिसकलदिशि, जनुशिशुमृगीसभीत॥

कंकण किंकिणि नूपुर धुनि सुनि ❀ कहत लषणसन राम हृदय गुनि
मानहुँ मदन दुन्दुभी दीन्ही ❀ मनसा विश्वविजय कहँ कीन्ही
अस कहि फिरि चितये त्यहि ओरा ❀ सियमुख शशि भये नयन चकोरा
भये विलोचन चारु अचंचल ❀ मनहुँ सकुचि निमि तजेउ दृगंचल
देखि सीय शोभा सुख पावा ❀ हृदय सराहत वचन न आवा
जनु विरंचि सब निज निपुणाई ❀ विरचि विश्वकहँ प्रकट दिखाई
सुन्दरता कहँ सुन्दर करई ❀ छविगृह दीपशिखा जनु बरई
सब उपमा कवि रहे जुठारी ❀ केहि पटतरिय विदेहकुमारी

दो॰ सियशोभा हिय वरणि प्रभु, आपनि दशा विचारि।
बोले शुचि मन अनुजसन, वचन समय अनुहारि॥

तात जनकतनया यह सोई ❀ धनुषयज्ञ जेहि कारण होई
पूजन गौरि सखी लै आई ❀ करति प्रकाश फिरति फुलवाई
जासु विलोकि अलौकिक शोभा ❀ सहज पुनीत मोर मन छोभा
सो सब कारण जानु विधाता ❀ फरकहिं सुभग अङ्ग सुनु भ्राता
रघुवंशिन कर सहज स्वभाऊ ❀ मन कुपन्थ पग धरैं न काऊ
मोहिं अतिशय प्रतीति जियकेरी ❀ जेहि सपनेहु परनारि न हेरी
जिनके लहहिं न रण रिपु पीठी ❀ नहिं लावहिं परतिय मन दीठी

१ प्रेम २ पूर्वजन्म की ३ बच्चा ४ बिछिया ५ स्थिर ६ चतुरता ७ बैरी॥

मंगन¹ लहहिं न जिनके नाहीं ❀ ते नर वर थोरे जग माहीं

दो० करत बतकही अनुजसन, मन सियरूप लुभान।
मुख सरोज मकरन्द² छवि, करत मधुप³ इव पान॥

चितवति चकित चहूँदिशि सीता ❀ कहँ गये नृपकिशोर मनचीता
जहँ विलोकु मृगशावक नयनी ❀ जनु तहँ बरष कमलसित श्रेनी
लता ओट तब सखिन लखाये ❀ श्यामल गौर किशोर सुहाये
देखि रूप लोचन ललचाने ❀ हर्षे जनु निजनिधि⁴ पहिंचाने
थके नयन रघुपति छवि देखी ❀ पलकनहूं परिहरी निमेखी
अधिक सनेह देह भइ भोरी ❀ शरदशशिहि जनु चितव चकोरी
लोचन मगु रामहिं उर आनी ❀ दीन्हे पलक कपाट⁵ सयानी
जब सिय सखिन प्रेमवश जानी ❀ कहि न सकहिं कछुमन सकुचानी

दो० लताभवन ते प्रकट भे, तेहि अवसर दोउ भाइ।
निकसेजनुयुगविमलविधु, जलदपटल⁶ विलगाइ॥

शोभा सींव सुभग दोउ वीरा ❀ नील पीत जलजात शरीरा
काकपच्छ शिर सोहत नीके ❀ गुच्छा बिच बिच कुसुमकलीके
भाल तिलक श्रमबिन्दु⁷ सुहाये ❀ श्रवण सुभग भूषण छवि छाये
विकट भृकुटि कच घूंघरवारे ❀ नव सरोज लोचन रतनारे
चारु चिबुक नासिका कपोला ❀ हास विलास लेत मन मोला
मुखछवि कहि न जाहि मोहिं पाहीं ❀ जो विलोकि बहु काम लजाहीं
उर मणिमाल कम्बु कलग्रीवा ❀ कामकलभकर भुज बलसींवा
सुमन समेत वामकर दोना ❀ सांवर कुँवर सखी सुठि लोना

दो० केहरि⁸ कटि पट पीतधर, सुषमा शीलनिधान।
देखि भानुकुलभूषणहिं, बिसरा सखिन अपान⁹॥

धरि धीरज इक सखी सयानी ❀ सीतासन बोली गहि पानी
बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू ❀ भूप किशोर देखि किन लेहू

---

१ भिखारी २ पुष्परस ३ भौंरा ४ खज़ाना ५ किवाड़ ६ आड़ ७ पसीना ८ सिंह ९ अपनपौ॥

सकुचि सीय तब नयन उघारे ❀ सम्मुख दोउ रघुसिंह निहारे
नखशिख देखि राम की शोभा ❀ सुमिरि पिताप्रण मन अतिछोभा
परवश सखिन लखी जब सीता ❀ भयो गहरु सब कहहिं सभीता
पुनि आउब यहि बिरिया काली ❀ अस कहि मनबिहँसी इक आली
गूढ़ गिरा सुनि सिय सकुचानी ❀ भयउ विलम्ब मातु भयमानी
धरि बड़ धीर राम उर आनी ❀ फिरीं अपनपौ पितुवश जानी

दो० देखन मिसु मृग विहँग तरु, फिरत बहोरि बहोरि।
निरखि निरखि रघुवीरछवि, बाढ़ी प्रीति न थोरि॥

जानि कठिन शिवचाप बिसूरति ❀ चलीं राखि उर श्यामल मूरति
प्रभु जब जात जानकी जानी ❀ सुख सनेह शोभा गुणखानी
परम प्रेममय मृदुमसि कीन्ही ❀ चारुचित्र भीतर लिखि लीन्ही
गईं भवानी भवन बहोरी ❀ वन्दि चरण बोलीं कर जोरी
जय जय जय गिरिराज किशोरी ❀ जय महेश मुखचन्द्र चकोरी
जय गजवदन षडानन माता ❀ जगतजननि दामिनिद्युति गाता
नहिं तव आदि मध्य अवसाना ❀ अमितप्रभाव वेद नहिं जाना
भव भव विभव पराभव कारिणि ❀ विश्वविमोहनि स्ववशविहारिणि

दो० पति देवता सुतीय महँ, मातु प्रथम तव रेख।
महिमा अमित न कहिसकहिं, सहस शारदा शेख॥

सेवत तोहिं सुलभ फलचारी ❀ वरदायिनि त्रिपुरारि पियारी
देवि पूजि पदकमल तुम्हारे ❀ सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे
मोर मनोरथ जानहु नीके ❀ बसहु सदा उर पुर सबहीके
कीन्ह्यउँ प्रकट न कारण तेही ❀ अस कहि चरण गहे वैदेही
विनय प्रेम वश भई भवानी ❀ खसी माल मूरति मुसुकानी
सादर सिय प्रसाद उर धरेऊ ❀ बोलीं गौरि हर्ष हिय भरेऊ
सुनु सिय सत्य अशीश हमारी ❀ पूजिहि मन कामना तुम्हारी

१ देरी २ देर ३ स्याही ४ बिजली ५ चमक ६ अन्त ७ हज़ार ८ इच्छा॥

नारद वचन सदा शुचि सांचा ❀ सो वर मिलिहि जाहि मन रांचा

छं० मन जाहि रांच्यो मिलिहि सो वर सहज सुन्दर सांवरो।
करुणानिधान सुजान शील सनेह जानत रावरो॥
यहि भांति गौरि अशीश सुनि सिय सहित हिय हरषीं अलीं
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चलीं॥

सो० जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हर्ष न जाय कहि।
मंजुल मंगल मूल, वाम अंग फरकन लगे॥

हृदय सराहत सीय लुनाई[1] ❀ गुरु समीप गमने दोउ भाई
राम कहा सब कौशिक पाहीं ❀ सरल स्वभाव छुवा छल नाहीं
सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्हीं ❀ पुनि अशीष दोउ भाइन दीन्हीं
सफल मनोरथ होइँ तुम्हारे ❀ राम लषण सुनि भये सुखारे
करि भोजन मुनिवर विज्ञानी ❀ लगे कहन कछु कथा पुरानी
विगत दिवस गुरु आयसु पाई ❀ सन्ध्या करन चले दोउ भाई
प्राचीदिशि शशि उयउ सुहावा ❀ सियमुख सरिस देखि सुख पावा
बहुरि विचार कीन्ह मनमाहीं ❀ सीयवदन सम हिमकर नाहीं

दो० जन्म सिन्धु पुनि बन्धु विष, दिनमलीन सकलंक।
सियमुखसमता पाव किमि, चन्द्र बापुरो रंक॥

घटै बढ़ै विरहिनि दुखदाई ❀ ग्रसै राहु निज संधिहि पाई
कोक शोकप्रद पंकज द्रोही ❀ अवगुण बहुत चन्द्रमा तोही
वैदेही मुख पटतर दीन्हे ❀ होइ दोष बड़ अनुचित कीन्हे
सियमुखछवि विधुव्याज बखानी ❀ गुरु पहँ चले निशा बड़ि जानी
करि मुनि चरणसरोज प्रणामा ❀ आयसु पाइ कीन्ह विश्रामा
विगत निशा रघुनायक जागे ❀ बंधु विलोकि कहन अस लागे
उयउ अरुण अवलोकहु ताता ❀ पंकज कोक लोक सुखदाता
बोले लषण जोरि युगपाणी ❀ प्रभु प्रभाव सूचक मृदुवाणी

१ तुम्हारा २ सखी ३ सुन्दरता ४ चन्द्रमा ५ विचारा ६ कमल ७ समता॥

दो॰ अरुणोदय सकुचे कुमुद, उडुगण ज्योति मलीन।
जिमि तुम्हार आगमन सुनि, भये नृपति बलहीन॥

नृप सब नखत करहिं उजियारी ❀ टारि न सकहिं चाप तम भारी
कमल कोक मधुकर[2] खग नाना ❀ हरषे सकल निशा अवसाना[3]
ऐसहि प्रभु सब भक्त तुम्हारे ❀ ह्वैहहिं टूटे धनुष सुखारे
उदय भानु बिनुश्रम तम नाशा ❀ दुरे नखत जग तेज प्रकाशा
रवि निज उदय व्याज रघुराया ❀ प्रभु प्रताप सब नृपन दिखाया
तव भुज बल महिमा उदघाटी ❀ प्रकटी धनु विघटन परिपाटी
बंधु वचन सुनि प्रभु मुसुकाने ❀ ह्वै शुचि सहज पुनीत नहाने
नित्य क्रिया करि गुरु पहँ आये ❀ चरण सरोज सुभग शिरनाये
शतानन्द तब जनक बुलाये ❀ कौशिक मुनिपहँ तुरत पठाये
जनक विनय तिन आय सुनाई ❀ हर्षे बोलि लिये दोउ भाई

दो॰ शतानंद पद वंदि प्रभु, बैठे गुरु पहँ जाइ।
चलहु तात मुनि कहेउ तब, पठवा जनक बुलाइ॥

सीय स्वयम्बर देखिय जाई ❀ ईश काहि धौं देहिं बड़ाई
लषण कहा यशभाजन सोई ❀ नाथ कृपा तव जापर होई
हरषे सुनि सब मुनिवर बानी ❀ दीन्ह अशीश सबहिं सुख मानी
पुनि मुनि वृन्द समेत कृपाला ❀ देखन चले धनुष मखशाला
रंगभूमि आये दोउ भाई ❀ अस सुधि सब पुरवासिन पाई
चले सकल गृहकाज बिसारी ❀ बालक युवा जरठ नर नारी
देखा जनक भीर भइ भारी ❀ शुचि सेवक सब लिये हँकारी
तुरत सकल लोगन पहँ जाहू ❀ आसन उचित देहु सब काहू

दो॰ कहि मृदु वचन विनीत तिन, बैठारे नर नारि।
उत्तम मध्यम नीच लघु, निज निज थल अनुहारि॥

राजकुँवर तेहि अवसर आये ❀ मनहुँ मनोहरता छवि छाये

१ अंधेरा २ भौंरा ३ नाश ४ उत्पन्न ५ टूटनेपर ६ मर्याद ७ वृद्ध॥

गुण सागर नागर वर वीरा ❀ सुन्दर श्यामल गौर शरीरा
राज समाज विराजत रूरे ❀ उडुगण महँ जनु युग विधु पूरे
जिनके रही भावना जैसी ❀ प्रभु मूरति देखी तिन तैसी
देखहिं भूप महा रणधीरा ❀ मनहुँ वीररस धरे शरीरा
डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी ❀ मनहुँ भयानक मूरति भारी
रहे असुर छल जो नृप वेखा ❀ तिन प्रभु प्रकट कालसम देखा
पुरवासिन देखे दोउ भाई ❀ नर भूषण लोचन सुखदाई

दो० नारिविलोकहिंहरषिहिय, निजनिजरुचिअनुरूप।
जनु सोहत शृङ्गार धरि, मूरति परम अनूप॥

विदुषँन प्रभु विराटमय दीशा ❀ बहु मुख कर पग लोचन शीशा
जनकजाति अवलोकहिं कैसे ❀ सजन सगे प्रिय लागहिं जैसे
सहित विदेह विलोकहिं रानी ❀ शिशु सम प्रीति न जाय बखानी
योगिन परम तत्त्व मय भासा ❀ शान्त शुद्ध सम सहज प्रकासा
हरिभक्तन देखे दोउ भ्राता ❀ इष्टदेव इव सब सुखदाता
रामहिं चितव भाव जेहि सीया ❀ सो सनेह सुख नहिं कथनीया
उर अनुभवित न कहि सक सोऊ ❀ कवन प्रकार कहै कवि कोऊ
जेहि विधि रहा जाहि जस भाऊ ❀ तेइँ तस देखेउ कोशलराऊ

दो० राजत राजसमाज महँ, कोशलराज किशोर।
सुन्दर श्यामल गौर तनु, विश्व विलोचन चोर॥

सहज मनोहर मूरति दोऊ ❀ कोटि काम उपमा लघु सोऊ
शरदचन्द निन्दक मुख नीके ❀ नीरज नयन भावते जीके
चितवनि चारु मारमद हरणी ❀ भावत हृदय जाइ नहिं वरणी
कल कपोल श्रुति कुण्डल लोला ❀ चिबुक अधर सुन्दर मृदुबोला
कुमुदबन्धुकर निन्दक हासा ❀ भृकुटी विकट मनोहर नासा
भाल विशाल तिलक झलकाहीं ❀ कचविलोकि अलिअवलिलजाहीं

१ चतुर २ नक्षत्र ३ इच्छा ४ पंडित ५ बालक ६ संसार ७ छोटा ८ गाल ९ कान॥

पीत चौतनी शिरन सुहाई ❀ कुसुमकली बिच बीच बनाई
रेखा रुचिर कम्बु[1] कल ग्रींवा ❀ जनु त्रिभुवन सुषमाकी सींवा

दो० कुञ्जरमाणिकण्ठाकलित, उर तुलसी की माल।
वृषभ[2]कन्ध केहरि ठवनि, बलनिधिबाहु विशाल॥

कटि तूणीर[3] पीत पट बाँधे ❀ कर शर धनुष वामवर काँधे
पीत यज्ञउपवीत[4] सुहाये ❀ नखशिख मंजु महा छवि छाये
देखि लोग सब भये सुखारे ❀ इक टक लोचन टरहिं न टारे
हर्षे जनक देखि दोउ भाई ❀ मुनिपद कमल गहे तब जाई
करि विनती निज कथा सुनाई ❀ रंगअवनि सब मुनिहिं दिखाई
जहँ जहँ जाहिं कुंवरवर दोऊ ❀ तहँ तहँ चकित चितव सब कोऊ
निज निज रुचि रामहिं सब देखा ❀ कोउ न जान कछु मर्म विशेखा
भलि रचना नृप सन मुनि कहेऊ ❀ राजा मुदित परम सुख लहेऊ

दो० सब मञ्चनते मञ्च इक, सुन्दरविशदविशाल।
मुनि समेत दोउ बन्धु तहँ, बैठारे महिपाल॥

प्रभुहि देखि सब नृप हिय हारे ❀ जनु राकेश[5] उदय भये तारे
अस प्रतीति तिनके मन माहीं ❀ राम चाप तोरब शक नाहीं
बिनु भंजे भव[6] धनुष विशाला ❀ मेलिहि सीय रामउर माला
अस विचारि गमनहु घर भाई ❀ यश प्रताप बल तेज गँवाई
बिहँसे अपर भूप सुनि बानी ❀ जे अविवेक अधम अभिमानी
तोरेहु धनुष ब्याह अवगाहा ❀ बिनु तोरे को कुँवरि विवाहा
एक बार कालहु किन होऊ ❀ सिय हित समर जितब हम सोऊ
यह सुनि अपर भूप मुसुकाने ❀ धर्मशील हरिभक्त सयाने

सो० सीय विवाहब राम, गर्व दूरिकरि नृपन कर।
जीति को सक संग्राम, दशरथ के रणबांकुरे॥

वृथा मरहु जनि गाल बजाई ❀ मनमोदक[7] नहिं भूख बुताई

१ शंख २ बैल ३ तरकस ४ जनेऊ ५ चन्द्रमा ६ महादेवजी ७ लड्डू॥

शिष हमारि सुनि परम पुनीता ❀ जगदम्बा जानहु जिय सीता
जगतपिता रघुपतिहि विचारी ❀ भरि लोचन छवि लेहु निहारी
सुन्दर सुखद सकल गुणरासी ❀ ये दोउ बन्धु शम्भु उरवासी
सुधा समुद्र समीप विहाई ❀ मृगजल निरखि मरहु कत धाई
करहु जाय जा कहँ जो भावा ❀ हम तो आजु जन्म फल पावा
अस कहि भले भूप अनुरागे ❀ रूप अनूप विलोकन लागे
देखहिं सुर नभ चढ़े विमाना ❀ वर्षहिं सुमन करहिं कलगाना

दो० जानिसुअवसरजनकतब, पठई सीय बुलाय।
चतुर सखी सुन्दरि सकल, सादर चलीं लिवाय॥

सियशोभा नहिं जाइ बखानी ❀ जगदम्बिका रूप गुणखानी
उपमा सकल मोहिं लघु लागी ❀ प्राकृत नारि अंग अनुरागी
सीय वरणि केहि उपमा देई ❀ कुकवि कहाय अयश को लेई
जो पटतरिय तियन सम सीया ❀ जग अस युवति कहां कमनीया
गिग मुखर तनु अर्द्ध भवानी ❀ रति अति दुखित अतनु पतिजानी
विष वारुणी बन्धु प्रिय जेही ❀ कहिय रमा सम किमि वैदेही
जो छवि सुधा पयोनिधि होई ❀ परम रूप मय कच्छप सोई
शोभा रजु मन्दर शृङ्गारू ❀ मथै पाणिपङ्कज निज मारू

दो० यहिविधिउपजै लच्छि जब, सुन्दरता सुखमूल।
तदपि सकोच समेत कवि, कहहिं सीय समतूल॥

चली संग लै सखी सयानी ❀ गावत गीत मनोहर बानी
सोह नवल तनु सुन्दरि सारी ❀ जगतजननि अतुलित छवि भारी
भूषण सकल सुदेश सुहाये ❀ अंग अंग रचि सखिन बनाये
रंगभूमि जब सिय पगु धारी ❀ देखि रूप मोहे नर नारी
हरषि सुरन दुन्दुभी बजाई ❀ वरषि प्रसून अप्सरा गाई
पाणि सरोज सोह जयमाला ❀ औचक चितै सकल महिपाला

१ अमृत २ पुष्प ३ माया ४ कलंक ५ समता ६ सुन्दर ७ बरबर ८ नगाड़ा ९ फूल॥

सीय चकित चित रामहिं चाहा ❀ भये मोहवश सब नरनांहा
मुनि समीप बैठे दोउ भाई ❀ लगे ललकि लोचन निधि पाई

दो० गुरुजनलाजसमाज बड़ि, देखि सीय सकुचानि।
लगीविलोकनसखिन तन, रघुवीरहि उरआनि॥

रामरूप अरु सिय छवि देखी ❀ नर नारिन परिहरेउ निमेखी
शोचहिं सकल कहत सकुचाहीं ❀ विधि सन विनय करहिं मन माहीं
हरु विधि वेगि जनक जड़ताई ❀ मति हमारि असि देहु सुहाई
बिनु विचार प्रण तजि नरनाहू ❀ सीय राम कर करैं विवाहू
जग भल कहहि भाव सब काहू ❀ हठ कीन्हे अन्तहु उर दाहू
यहि लालसा मगन सब लोगू ❀ वर सांवरो जानकी योगू
तब वन्दीजनें जनक बुलाये ❀ विरदावली कहत चलि आये
कह नृप जाइ कहहु प्रण मोरा ❀ चले भाट हिय हर्ष न थोरा

दो० बोले वन्दी वचन वर, सुनहु सकल महिपाल।
प्रण विदेहकर कहहिं हम, भुजा उठाय विशाल॥

नृप भुजबल विधुं शिवधनु राहू ❀ गरुअ कठोर विदित सब काहू
रावण बाण महाभट भारे ❀ देखि शरासन गवहिं सिधारे
सोइ पुरारि कोदण्ड कठोरा ❀ राजसमाज आजु जेहिं तोरा
त्रिभुवन जय समेत वैदेही ❀ बिनहिं विचार वरै हठि तेही
सुनि प्रण सकल भूप अभिलाषे ❀ भटमानी अतिशय मन माँषे
परिकर बांधि उठे अकुलाई ❀ चले इष्टदेवन शिर नाई
तमकि तमकि तकि शिवधनु धरहीं ❀ उठै न कोटि भाँति बल करहीं
जिनके कछु विचार मन माहीं ❀ चाप समीप महीप न जाहीं

दो० तमकिधरहिंधनुमूढ़नृप, उठै न चलहिं लजाइ।
मनहुँ पाइ भटबाहु बल, अधिकअधिकगरुआइ॥

भूप सहस दश एकहि बारा ❀ लगे उठावन टरै न टारा

१ राजा २ पास ३ जलन ४ भाट ५ चन्द्रमा ६ धनुष ७ रिस हुये ८ फेंट ९ रिसकर॥

डिगै न शम्भु शरासन कैसे ❀ कामी वचन सतीमन जैसे
सब नृप भये योग उपहासी ❀ जैसे बिनु विराग संन्यासी
कीरति विजय वीरता भारी ❀ चले चापकर सर्वस हारी
श्रीहत[2] भये हारि हिय राजा ❀ बैठे निज निज जाइ समाजा
नृपन विलोकि जनक अकुलाने ❀ बोले वचन रोष जनु साने
द्वीप द्वीप के भूपति नाना ❀ आये सुनि हम जो प्रण ठाना
देव दनुज[3] धरि मनुज शरीरा ❀ विपुल वीर आये रणधीरा

दो० कुँवरि मनोहरि विजय बड़ि, कीरति अति कमनीय।
पावनहार विरंचि जनु, रचेउ न धनुदमनीय[4]॥

कहहु काहि यह लाभ न भावा ❀ काहु न शंकर चाप चढ़ावा
रहा चढ़ाउब तोरब भाई ❀ तिलभरि भूमि न सकेउ छुड़ाई
अब जनि कोउ माखै भटमानी ❀ वीर विहीन मही मैं जानी
तजहु आश निज निज गृह जाहू ❀ लिखा न विधि वैदेहि विवाहू
सुकृत[5] जाय जो प्रण परिहरऊं ❀ कुँवरि कुँवारि रहै का करऊं
जो जनतेउँ बिनु भट महि भाई ❀ तौ प्रण करि करतेउँ न हँसाई
जनक वचन सुनि सब नरनारी ❀ देखि जानकिहि भये दुखारी
माखे लषण कुटिल[6] भईं भौंहैं ❀ रदपुट[7] फरकत नयन रिसौंहैं

दो० कहि न सकत रघुवीर डर, लगे वचन जनु बाण।
नाइ रामपद कमल शिर, बोले गिरा प्रमाण॥

रघुवंशिन महँ जहँ कोउ होई ❀ तेहि समाज अस कहै न कोई
कही जनक जस अनुचित बानी ❀ विद्यमान[8] रघुकुल मणि जानी
सुनहु भानुकुल पंकजभानू ❀ कहौं स्वभाव न कछु अभिमानू
जो राउर[9] अनुशासन पाऊं ❀ कन्दुक इव ब्रह्माण्ड उठाऊं
काचे घट जिमि डारौं फोरी ❀ सकौं मेरु मूलक इव तोरी
तव प्रताप महिमा भगवाना ❀ का बापुरो पिनाक पुराना

१ धनुष २ तेजहीन ३ दैत्य ४ तोड़नेवाला ५ पुण्य ६ टेढ़ा ७ ओठ ८ मौजूद ९ आपका ॥

नाथ जानि अस आयसु होऊ ❀ कौतुकं करौं विलोकिय सोउ
कमल नाल जिमि चाप चढ़ावों ❀ शत योजन प्रमाण लै धावों

दो० तोरौं छत्रकंदण्ड जिमि, तव प्रताप बल नाथ।
जो न करौं प्रभुपद शपथं, कर न धरौं धनुभाथ॥

लषण सकोप वचन जब बोले ❀ डगमगानि महि दिग्गज डोले
सकल लोक सब भूप डराने ❀ सिय हिय हर्ष जनक सकुचाने
गुरु रघुपति सब मुनि मन माहीं ❀ मुदित भये पुनि पुनि पुलकाहीं
सैनहिं रघुपति लषण निवारे ❀ प्रेम समेत निकट बैठारे
विश्वामित्र समय शुभ जानी ❀ बोले अति सनेह मृदुबानी
उठहु राम भंजहु भव चापू ❀ मेटहु तात जनक परितापू
सुनि गुरुवचन चरण शिर नावा ❀ हर्ष विषाद न कछु उर आवा
ठाढ़ भये उठि सहज सुभाये ❀ ठवनि युवा मृगराज लजाये

दो० उदित उदयगिरि मंच पर, रघुवर बाल पतंग।
विकसे सन्त सरोज सब, हरषे लोचन भृंग॥

नृपन केरि आशा निशि नाशी ❀ वचन नखत अवली न प्रकाशी
मूढ़ महीप कुमुद सकुचाने ❀ कपटी भूप उलूक लुकाने
भये विशोक कोक मुनि देवा ❀ वर्षहिं सुमन जनावहिं सेवा
गुरुपद वन्दि सहित अनुरागा ❀ राम मुनिन सन आयसु मांगा
सहजहि चले सकल जगस्वामी ❀ मत्त मंजु वर कुंजर गामी
चलत राम सब पुर नर नारी ❀ पुलकि पूरि तनु भये सुखारी
वन्दि पितर सुर सुकृत सँभारे ❀ जो कछु पुण्य प्रभाव हमारे
तौ शिव धनुष मृणाल कि नाईं ❀ तोरहिं राम गणेश गुसाईं

दो० रामहिं प्रेम समेत लखि, सखिन समीप बुलाइ।
सीता मातु सनेह वश, वचन कहै बिलखाइ॥

सखि सब कौतुक देखनहारे ❀ जोउ कहावत हितू हमारे

१ केल २ धनुष ३ मुँहफोड़ ४ कसम ५ शोक ६ सिंह ७ भौंरा ८ पांति ९ कमलकीडांड़ी॥

कोउ न बुझाइ कहै नृप पाहीं ❀ ये बालक अस हठ भल नाहीं
रावण बाण छुआ नहिं चापा ❀ हारे सकल भूप करि दापा
सो धनु राजकुँवर कर देहीं ❀ बाल मराल कि मन्दर लेहीं
भूप सयानप सकल सिरानी ❀ सखि विधिगति कछु जायन जानी
बोली चतुर सखी मृदु बानी ❀ तेजवन्त लघु गनिय न रानी
कहँ कुंभज कहँ सिन्धु अपारा ❀ शोषेउ सुयश सकल संसारा
रविमंडल देखत लघु लागा ❀ उदय तासु त्रिभुवनतम भागा

दो० मंत्र परमलघु जासुवश, विधि हरि हर सुर सर्व।
महा मत्त गजराज कहँ, वशकर अंकुश खर्व॥

काम कुसुम धनुशायक लीन्हे ❀ सकल भुवन अपने वश कीन्हे
देवि तजिय संशय अस जानी ❀ भंजब धनुष राम सुनु रानी
सखी वचन सुनि भइ परतीती ❀ मिटा विषाद बढ़ी अति प्रीती
तब रामहिं विलोकि वैदेही ❀ सभय हृदय बिनवति जेहि तेही
मनहीं मन मनाय अकुलानी ❀ होहु प्रसन्न महेश भवानी
करहु सफल आपनि सेवकाई ❀ करि हित हरहु चाप गरुआई
गणनायक वरदायक देवा ❀ आजुहि लागि कीन्हि तव सेवा
बार बार विनती सुनि मोरी ❀ करहु चाप गरुता अति थोरी

दो० देखि देखि रघुवीर तन, सुर मनाव धरि धीर।
भरे विलोचन प्रेमजल, पुलकावली शरीर॥

नीके निरखि नयन भरि शोभा ❀ पितुप्रण सुमिरि बहुरि मन छोभा
अहह तात दारुण प्रण ठानी ❀ समुझत नहिं कछु लाभ न हानी
सचिव सभय शिष देइ न कोई ❀ बुधसमाज बड़ अनुचित होई
कहँ धनु कुलिशहु चाहि कठोरा ❀ कहँ श्यामल मृदुगात किशोरा
विधि केहि भाँति धरौं उर धीरा ❀ सिरस सुमन किमि बेधिय हीरा
सकल सभा की मति भइ भोरी ❀ अब मोहिं शम्भुचाप गति तोरी

१ धनुष २ घमंड ३ अगस्त्य ४ छोटा ५ फूल ६ विश्वास ७ रोमांच ८ मंत्री ॥

निज जड़ता लोगन पर डारी ❁ होहु हरुअ[1] रघुपतिहि निहारी
अति परिताप सीय मनमाहीं ❁ लवनिमेष जनु युगसम जाहीं

दो० प्रभुहिचितैपुनि चितैमहि, राजत लोचन लोल[2]।
खेलत मनसिज[3] मीन[4]युग, जनु विधुमंडल डोल॥

गिरा अलिनि[5] मुख पंकज रोकी ❁ प्रकट न लाज निशा अवलोकी
लोचनजल रह लोचन कोना ❁ जैसे परम कृपण[6] कर सोना
सकुची व्याकुलता बड़ि जानी ❁ धरि धीरज प्रतीति उर आनी
तन मन वचन मोर प्रण सांचा ❁ रघुपति पदसरोज मन रांचा
तौ भगवान सकल उरवासी ❁ करिहहिं मोहिं रघुपति की दासी
जाकर जेहि पर सत्य सनेहू ❁ सो तेहि मिलत न कछु संदेहू
प्रभु तन चितै प्रेम प्रण ठाना ❁ कृपानिधान राम सब जाना
सियहि विलोकि तकेउ धनु कैसे ❁ चितव गरुड़ लघु व्यालहि जैसे

दो० लषण लखेउ रघुवंशमणि, ताकेउ हर कोदण्ड।
पुलकिगात बोले वचन, चरण चापि ब्रह्मण्ड॥

दिशि कुञ्जरहु कमठ[7] अहि कोला[8] ❁ धरहु धरणि धरि धीर न डोला
राम चहहिं शंकरधनु तोरा ❁ होहु सजग सुनि आयसु मोरा
चाप समीप राम जब आये ❁ नर नारिन सुर सुकृत मनाये
सब कर संशय अरु अज्ञानू ❁ मन्द महीपन कर अभिमानू
भृगुपति केरि गर्व गरुआई ❁ सुर मुनिवरन केरि कदराई
सिय कर शोच जनक पछितावा ❁ रानिन कर दारुण दुखदावा
शम्भुचाप बड़ बोहित पाई ❁ चढ़े जाइ सब संग बनाई
राम बाहुबल सिन्धु अपारा ❁ चहत पार नहिं कोउ कनहारा

दो० राम विलोके लोग सब, चित्र लिखे से देखि।
चितई सीय कृपायतन, जानी विकल विशेखि॥

देखी विपुल विकल वैदेही ❁ निमिष विहात कल्प सम तेही

१ हलका २ चंचल ३ कामदेव ४ मछली ५ भ्रमरी ६ सूम ७ कच्छप ८ वाराह॥

तृषित वारि बिनु जो तनु त्यागा ❀ मुये करै का सुधा तड़ांगा
का वर्षा जब कृषी सुखाने ❀ समय चूकि पुनि का पछिताने
अस जिय जानि जानकी देखी ❀ प्रभु पुलके लखि प्रीति विशेखी
गुरुहि प्रणाम मनहिंमन कीन्हा ❀ अति लाघव उठाय धनु लीन्हा
दमकेउ दामिन जिमि घन लयऊ ❀ पुनि धनु नभमंडल सम भयऊ
लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़े ❀ काहु न लखा रहे सब ठाढ़े
तेहि क्षण मध्य राम धनु तोरा ❀ भरेउ भुवन ध्वनि घोर कठोरा

छं० भरि भुवनघोरकठोररवरविवाजितजि मारगचले।
चिक्करहिंदिग्गजडोलमहि अहिकोलकूरमकलमले॥
सुरअसुरमुनिकरकानदीन्हे सकल विकल विचारहीं।
कोदण्डभञ्जेउ राम तुलसी जयति वचन उचारहीं॥

सो० शङ्कर चाप जहाज, सागर रघुवर बाहुबल।
बूड़ी सकल समाज, चढ़े जे प्रथमहिं मोहवश॥

प्रभु दोउ खण्ड चाप महि डारे ❀ देखि लोग सब भये सुखारे
कौशिकरूप पयोनिधि पावन ❀ प्रेम वारि अवगाह सुहावन
राम रूप राकेश निहारी ❀ बढ़ी वीचि पुलकावलि भारी
बाजे नभ गहगहे निशाना ❀ देवबधू नाचहिं करिगाना
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीशा ❀ प्रभुहिं प्रशंसहिं देहिं अशीशा
वर्षहिं सुमन रंग बहु माला ❀ गावहिं किन्नर गीत रसाला
रही भुवन भरि जयजय बानी ❀ धनुषभङ्गध्वनि जात न जानी
मुदित कहहिं जहँ तहँ नरनारी ❀ भञ्जेउ राम शम्भुधनु भारी

दो० वन्दी मागध सूतगण, विरद वदहिं मतिधीर।
करहिं निछावरिलोगसब, हयगय धन मणिचीर॥

झांझ मृदङ्ग शङ्ख सहनाई ❀ भेरि ढोल दुन्दुभी सुहाई

१ तालाब २ जल्दी ३ शब्द ४ अथाह ५ चन्द्रमा ६ तरंग ७ घोड़ा ८ हाथी॥

बाजहिं बहु बाजने सुहाये ❁ जहँ तहँ युवतिन मङ्गल गाये
सखिन सहित हरषित अतिरानी ❁ सूखत धान परा जनु पानी
जनक लहेउ सुख शोच विहाई ❁ पैरत थके थाह जनु पाई
श्रीहत भये भूप धनु टूटे ❁ जैसे दिवस दीप छवि छूटे
सियहियसुख वरणिय केहि भाँती ❁ जनु चातक पाये जल स्वाती
रामहिं लषण विलोकत कैसे ❁ शशिहि चकोर किशोरक जैसे
शतानन्द तब आयसु दीन्हा ❁ सीता गमन रामपहँ कीन्हा

दो० संगसखी सुन्दरि चतुर, गावहिं मंगलचार।
गमनी बाल मरालगति, सुषमा अंग अपार॥

सखिन मध्य सिय सोहति कैसी ❁ छविगण मध्य महा छवि जैसी
कर सरोज जयमाल सुहाई ❁ विश्व विजय शोभा जनु छाई
तन सकोच मन परम उछाहू ❁ गूढ़ प्रेम लखि परै न काहू
जाइ समीप राम छवि देखी ❁ रहिजनु कुँवरि चित्र अवरेखी
चतुर सखी लखि कहा बुझाई ❁ पहिरावहु जयमाल सुहाई
सुनत युगल कर माल उठाई ❁ प्रेम विवश पहिराइ न जाई
सोहत जनु युग जलजसनाला ❁ शशिहि सभीत देत जयमाला
गावहिं छवि अवलोकि सहेली ❁ सिय जयमाल राम उर मेली

सो० रघुवर उर जयमाल, देखि देव वर्षहिं सुमन।
सकुचे सकल भुवाल, जनुविलोकिरविकुमुदगण॥

पुर अरु व्योम बाजने बाजे ❁ खल भये मलिन साधुसबगाजे
सुर किन्नर नर नाग मुनीशा ❁ जय जय कहि सब देहिं अशीशा
नाचहिं गावहिं विबुध बधूटी ❁ बारबार कुसुमावलि छूटी
जहँ तहँ विप्र वेदध्वनि करहीं ❁ वन्दी विरदावलि उच्चरहीं
महि पाताल नाक यश व्यापा ❁ राम वरी सिय भंजेउ चापा
करहिं आरती पुर नर नारी ❁ देहिं निछावरि वित्त बिसारी

१ तेजहीन २ दिन ३ बच्चा ४ हंस ५ छिपा हुआ ६ लिखी ७ दोनों ८ हाथ ९ तोड़ा॥

सोहत सीय राम की जोरी ❁ छवि शृंगार मनहुँ इकठोरी
सखी कहहिं प्रभुपद गहु सीता ❁ [1]रति न चरण परस अति भीता

दो० गौतमतियगतिसुरतिकरि, नहिं परसति पद पानि।
मन विहँसे रघुवंशमणि, प्रीतिअलौकिकजानि॥

तब सिय देखि भूप अभिलाषे ❁ क्रूर कपूत मूढ़ मन माषे
उठि उठि पहिरि सनाँह अभागे ❁ जहँ तहँ गाल बजावन लागे
लेहु छुड़ाय सीय कहँ कोऊ ❁ धरि बांधहु नृप बालक दोऊ
तोरे धनुष काज नहिं सरई ❁ जीवत हमहिं कुँवरि को वरई
जो विदेह कछु करै सहाई ❁ जीतहु समर सहित दोउ भाई
साधु भूप बोले सुनि बानी ❁ राज समाजहि लाज लजानी
बल प्रताप वीरता बड़ाई ❁ नाक पिनाकहि संग सिधाई
सोइ शूरता कि अब कहुँ पाई ❁ अस बुधि तौ विधि मुहँ मसिलाई

दो० देखहु रामहिं नयनभरि, तजि ईर्षा मद मोहु।
लषण रोष पावक प्रबल, जानि शलभ जनिहोहु॥

वैनतेय बलि जिमि चह कागू ❁ जिमि शश चहहि नागअरि भागू
जिमि चहकुशल अकारण कोही ❁ सुख संपदा चहहि शिवद्रोही
लोभी लोलुप कीरति चहई ❁ निकलङ्कता कि कामी लहई
हरिपदविमुख परम गति चाहा ❁ तस तुम्हार लालच नरनाहा
कोलाहल सुनि सीय सकानी ❁ सखी लिवाय गई जहँ रानी
राम सुभाय चले गुरु पाहीं ❁ सिय सनेह वरणत मन माहीं
रानिन सहित शोचवश सीया ❁ अबधौं विधिहि कहा करनीया
नृपन वचन सुनि इतउत तकहीं ❁ लषण रामडर बोलि न सकहीं

दो० अरुणनयनभृकुटीकुटिल, चितवत नृपनसकोप।
मनहुँमत्तगजगण निरखि, सिंह किशोरहिचोप॥

खरभर देखि विकल नर नारी ❁ सब मिलि देहिं महीपन गारी

१ छूना २ डरी हुई ३ हाथ ४ बकतर ५ धनुष ६ स्याही ७ टीड़ी ८ सिंह॥

तेहि अवसर मुनि शिवधनुभङ्गा ❀ आये भृगुकुल कमल पतंङ्गा
देखि महीप सकल सकुचाने ❀ बाज झपट जनु लवा लुकाने
गौर शरीर भूंति भलि भ्राजा ❀ भाल विशाल त्रिपुंड्र विराजा
शीशजटा शशि वदन सुहावा ❀ रिसवश कछुक अरुण है आवा
भृकुटी कुटिल नयन रिसराते ❀ सहजहिं चितवत मनहुँ रिसाते
वृषभकन्ध उर बाहु विशाला ❀ चारु जनेउ माल मृगछाला
कटि मुनि वसन तूण दुइबांधे ❀ धनुशर कर कुठार कलकांधे

दो॰ शान्त वेष करणी कठिन, वरणि न जाय स्वरूप।
धरिमुनितनुजनु वीररस, आये जहँ सब भूप॥

देखत भृगुपति वेष कराला ❀ उठे सकल भय विकल भुवाला
पितु समेत कहिकहि निज नामा ❀ लगे करन सब दण्डप्रणामा
जोहि स्वभाव चितवहिं हितजानी ❀ सो जाने जनु आयु खुटानी
जनक बहोरि आय शिर नावा ❀ सीय बुलाय प्रणाम करावा
आशिष दीन्ह सखी हर्षानी ❀ निज समाज लैगई सयानी
विश्वामित्र मिले पुनि आई ❀ पद सरोज मेले दोउ भाई
राम लषण दशरथ के ढोटा ❀ दीन्ह अशीश जानि भल जोटा
रामहिं चितय रहे थकिलोचन ❀ रूप अपार मार मदमोचन

दो॰ बहुरि विलोकि विदेहसन, कहहु कहा अति भीर।
पूछत जान अजान जिमि, व्यापउ कोप शरीर॥

समाचार कहि जनक सुनाये ❀ जेहि कारण महीप सब आये
सुनत वचन फिरि अनत निहारे ❀ देखे चाप खण्ड महि डारे
अति रिस बोले वचन कठोरा ❀ कहु जड़ जनक धनुष केइँ तोरा
वेगि दिखाव मूढ़ नतु आजू ❀ उलटौं महि जहँलगि तव राजू
अति डर उतर देत नृप नाहीं ❀ कुटिल भूप हरषे मन माहीं
सुर मुनि नाग नगर नरनारी ❀ शोचहिं सकल त्रास उर भारी

१ सूर्य २ भस्म ३ लाल ४ बैल ५ तरकस ६ परशुरामजी ७ लड़का ८ नायक॥

मन पछिताति सीय महतारी ❀ विधि सँवारि सब बात बिगारी
भृगुपति कर स्वभाव सुनि सीता ❀ अर्द्ध निमेष कल्प सम बीता

दो० सभय विलोके लोग सब, जानि जानकिहि भीर।
हृदय न हर्ष विषाद कछु, बोले श्री रघुवीर॥

नाथ शम्भु धनु भञ्जनहारा ❀ होइहि कोउ यक दास तुम्हारा
आयसु कहा कहिय किन मोही ❀ सुनि रिसाय बोले मुनि कोही
सेवक सो जो करै सेवकाई ❀ अरिकरणी करि करिय लराई
सुनहु राम जेइँ शिव धनु तोरा ❀ सहसबाहु सम सो रिपु मोरा
सो बिलगाइ बिहाइ समाजा ❀ नतु मारे जैहैं सब राजा
सुनि मुनि वचन लषण मुसुकाने ❀ बोले परशुधरहि अपमाने
बहु धनुहीं तोरीं लरिकाई ❀ कबहुँ न अस रिस कीन्ह गुसाई
यहि धनु पर ममता केहि हेतू ❀ सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू

दो० रे नृपबालक काल वश, बोलत तोहिं न सँभार।
धनुहीं सम त्रिपुरारिधनु, विदित सकल संसार॥

लषण कहा हँसि हमरे जाना ❀ सुनहु देव सब धनुष समाना
का क्षति लाभ जीर्ण धनु तोरे ❀ देखा राम नये के भोरे
छुवत टूट रघुपतिहि न दोषू ❀ मुनि बिनु काज करिय कत रोषू
बोले चितय परशु की ओरा ❀ रे शठ सुनेसि स्वभाव न मोरा
बालक जानि वधौं नहिं तोहीं ❀ केवल मुनि करि जानसि मोहीं
बाल ब्रह्मचारी अति कोही ❀ विश्वविदित क्षत्रिय कुलद्रोही
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्हीं ❀ विपुल बार महिदेवन दीन्हीं
सहसबाहु भुज छेदनहारा ❀ परशु विलोकु महीप कुमारा

दो० मातुपितहिजनि शोचवश, करसिमहीपकिशोर।
गर्भन के अर्भक दलन, परशुमोर अति घोर॥

बिहँसि लषण बोले मृदु बानी ❀ अहो मुनीश महा भटमानी

---

१ तोड़नेवाले २ क्रोधी ३ शत्रु ४ शिव ५ हानि ६ मूर्ख ७ बैरी ८ बच्चा ९ नाशने में॥

पुनि पुनि मोहिं देखाव कुठारा ❀ चहत उड़ावन फूंकि पहारा
इहां कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं ❀ जो तर्जनी देखि मरिजाहीं
देखि कुठार शरासन बाना ❀ मैं कछु कहा सहित अभिमाना
भृगुकुल समुझि जनेउ विलोकी ❀ जो कछु कहौ सहौं रिस रोकी
सुर[२] महिसुर[३] हरिजन[४] अरु गाई ❀ हमरे कुल इन पर न शुराई
बधे पाप अपकीरति[५] हारे ❀ मारतहूँ पाँपरिय तुम्हारे
कोटि कुलिश सम वचन तुम्हारा ❀ वृथा धरहु धनु बाण कुठारा

दो० जो विलोकिअनुचितकहेउँ, छमहुँ महामुनिधीर।
सुनि सरोष भृगुवंशमणि, बोले गिरा गँभीर॥

कौशिक[६] सुनहु मन्द यह बालक ❀ कुटिल कालवश निजकुलघालक
भानुवंश राँकेश[७] कलंकू ❀ निपट निरंकुश अबुध अशंकू
कालकवर होइहि छण माहीं ❀ कहौं पुकारि खोरि मोहिं नाहीं
तुम हटकहु जो चहहु उबारा ❀ कहि प्रताप बल रोष हमारा
लषण कहेउ मुनि सुयश तुम्हारा ❀ तुमहिं अछत को वरणै पारा
अपने मुख तुम आपनि करणी ❀ बार अनेक भाँति बहु वरणी
नहिं संतोष तो पुनि कछु कहहू ❀ जनि रिस रोंकि दुसह दुख सहहू
वीर व्रती तुम धीर अछोभा ❀ गारी देत न पावहु शोभा

दो० शूर समर करणी करहिं, कहि न जनावहिं आप।
विद्यमान रणपाइ रिपु, कायर कथहिं प्रलाप॥

तुम तो काल हांकि जनु लावा ❀ बारबार मोहिं लागि बुलावा
सुनत लषण के वचन कठोरा ❀ परशु सुधारि धरेउ कर घोरा
अब जनि देहु दोष मोहिं लोगू ❀ कटुवादी बालक बध योगू
बाल विलोकि बहुत मैं बांचा ❀ अब यह मरणहार भा सांचा
कौशिक कहा छमिय अपराधू ❀ बाल दोष गुण गनहिं न साधू
कर कुठार मैं अकरण कोही ❀ आगे अपराधी गुरु द्रोही

१ फरसा २ देवता ३ विप्र ४ वैष्णव ५ अयश ६ विश्वामित्र ७ चन्द्रमा॥

उतर देत छांड़ों विनु मारे ❀ केवल कौशिक शील तुम्हारे
नतु यहि काटि कुठार कठोरे ❀ गुरुहिं उऋण होतेउँ श्रम थोरे

दो॰ गाधिसुवन कह हृदय हँसि, मुनिहिं हरिअरे सूझ।
अजगंवखण्डेउ ऊखजिमि, अजहुँन बूझ अबूझ॥

कह्यो लषण मुनि शील तुम्हारा ❀ को नहिं जान विदित संसारा
मातहिं पितहिं उऋण भय नीके ❀ गुरुऋण रहा शोच बड़ जीके
सो जनु हमरे माथे काढ़ा ❀ दिन चलिगयउ ब्याज बहुबाढ़ा
अब आनिय व्यवहरिया बोली ❀ तुरत देउँ मैं थैली खोली
सुनि कटुवचन कुठार सुधारा ❀ हाहा कहि सब लोग पुकारा
भगुवर परशु देखावहु मोही ❀ विप्र विचारि बचौं नृपद्रोही
मिले न कबहुँ सुभट रणगाढ़े ❀ द्विज देवता घरहि के बाढ़े
अनुचित कहि सब लोग पुकारे ❀ रघुपति सैनहिं लषण निवारे

दो॰ लषणउतर आहुति सरिस, भृगुवर कोप कृशानु।
बढ़त देखि जलसम वचन, बोले रघुकुल भानु॥

नाथ करहु बालक पर छोहू ❀ सूध दूधमुख करिय न कोहू
जोपै प्रभु प्रभाव कछु जाना ❀ तौकि बराबरि करत अयाना
जो लरिका कछु अनुचित करहीं ❀ गुरु पितु मातु मोद मन भरहीं
करिय कृपा शिशु सेवक जानी ❀ तुमसम शील धीर मुनि ज्ञानी
रामवचन सुनि कछुक जुड़ाने ❀ कहि कछु लषण बहुरि मुसकाने
हँसत देखि नखशिख रिसव्यापी ❀ राम तोर भ्राता बड़ पापी
गौर शरीर श्याम मनमाहीं ❀ कालकूट मुख पय मुख नाहीं
सहज टेढ़ अनुहरै न तोहीं ❀ नीच मीच सम लखै न मोहीं

दो॰ लषणकहेउ हँसि सुनहुमुनि, क्रोध पापकर मूल।
जेहिवशजनअनुचितकरहिं, चलहिंविश्वप्रतिकूल॥

मैं तुम्हार अनुचरं मुनिराया ❀ परिहरि कोप करिय अब दाया

---

१ धनुष २ अग्नि ३ दया ४ रिस ५ खुशी ६ भाई ७ विष ८ दूध ९ उलटा १० दास॥

टूट चाप नहिं जुरहि रिसाने ❀ बैठिय होइहिं पांय पिराने
जो अति प्रियं तौ करिय उपाई ❀ जोरिय कोउ बड़ गुणी बुलाई
बोलत लषणहिं जनक डराहीं ❀ मष्ट[१] करहु अनुचित भल नाहीं
थर थर कांपहिं पुर नर नारी ❀ छोट कुमार खोट अतिभारी
भृगुपति सुनि सुनि निर्भयबानी ❀ रिस तनु जरै होय बलहानी
बोले रामहिं देइ निहोरा ❀ बचै विचारि बन्धु लघु तोरा
मन मलीन तन सुन्दर कैसे ❀ विषरस भरा कनकंघट जैसे

दो० सुनि लक्ष्मण बिहँसे बहुरि, नयन तरेरे राम।
गुरु समीप गमने सकुचि, परिहरि वाणी वाम॥

अति विनीत मृदुशीतल वाणी ❀ बोले राम जोरि युग पाँणी
सुनहु नाथ तुम सहज सुजाना ❀ बालक वचन करिय नहिं काना
बर्रै बालक एक स्वभाऊ ❀ इनहिं न सन्त विदूषहिं काऊ
तिन नाहीं कछु काज बिगारा ❀ अपराधी मैं नाथ तुम्हारा
कृपा कोप बध बन्धै गुसाईं ❀ मोपर करिय दास की नाईं
कहिय वेगि जोहि विधि रिसजाई ❀ मुनिनायक सोइ करिय उपाई
कह मुनि राम जाइ रिस कैसे ❀ अजहुँ बन्धुं तव चितव अनैसे
यहिके कण्ठ कुठार न दीन्हा ❀ तौ मैं कहा कोपकरि कीन्हा

दो० गर्भस्रवहिं अवनिपरमंणि, सुनि कुठारगति घोर।
परशु अछत देखौं जियत, वैरी भूप किशोर॥

बहै न हाथ दहै रिस छाती ❀ भा कुठार कुण्ठित नृपघाती
भयउ वाम विधि फिरेउ स्वभाऊ ❀ मोरे हृदय कृपा कस काऊ
आजु दैव दुख दुसह सहावा ❀ सुनि सौमित्रि बहुरि शिरनावा
बाउ कृपा मूरति अनुकूला ❀ बोलत वचन झरत जनु फूला
जो पै कृपा जरै मुनि गाता ❀ क्रोध भये तनु राखु विधाता
देखु जनक हठि बालक येहू ❀ कीन्ह चहत जड़ यमपुर गेहू

१ प्यारा २ चुप ३ सोने का घड़ा ४ हाथ ५ बर्रै ६ बांधना ७ भाई ८ रानी ९ लक्ष्मण॥

वेगि करहु किन आंखिन ओटा ❀ देखत छोट खोट नृप ढोटा
विहँसे लषण कहा मुनि पाहीं ❀ मंदिय आंखि कतहुँ कोउ नाहीं

दो० परशुराम तब रामप्रति, बोले वचन सक्रोध।
शम्भुशरासन तोरि शठ, करसि हमार प्रबोध॥

बन्धु कहै कटु सम्मत तोरे ❀ तू छलविनय करसि कर जोरे
करु परितोष मोर संग्रामा ❀ नाहिंत छांडु कहाउब रामा
छल तजि करहु समर शिवद्रोही ❀ बन्धु सहित नतु मारौं तोही
भृगुपति कहत कुठार उठाये ❀ मन मुसुकाहिं राम शिरनाये
गुनेंहु लषणकर हमपर रोषू ❀ कतहुँ सुधाइहु ते बड़ दोषू
टेढ़ जानि शङ्का सब काहू ❀ वक्र चन्द्रमहिं ग्रसै न राहू
राम कहेउ रिस तजिय मुनीशा ❀ कर कुठार आगे यह शीशा
जेहि रिस जाइ करिय सोइ स्वामी ❀ मोहिं जानि आपन अनुगामी

दो० प्रभुहिं सेवकहिं समर कस, तजहु विप्र वर रोष।
वेष विलोकि कहेसि कछु, बालकहू नहिं दोष॥

देखि कुठार बाण धनु धारी ❀ भै लरिकहि रिस वीर विचारी
नाम जानपै तुमहिं न चीन्हा ❀ वंश स्वभाव उतर तेहिं दीन्हा
जो तुम अवतेउ मुनि की नाईं ❀ पदरज शिर शिशु धरत गुसाईं
क्षमहु चूक अनजानत केरी ❀ चहिय विप्र उर कृपा घनेरी
हमहिं तुमहिं सरिवरि कस नाथा ❀ कहहु तो कहां चरण कहँ माथा
राम मात्र लघु नाम हमारा ❀ परशु सहित बड़ नाम तुम्हारा
देव एक गुण धनुष हमारे ❀ नव गुण परम पुनीत तुम्हारे
सब प्रकार हम तुमसन हारे ❀ क्षमहु विप्र अपराध हमारे

दो० बार बार मुनि विप्रवर, कहा राम सन राम।
बोले भृगुपति सरुष ह्वै, तुहूं बन्धुसम वाम॥

निपटहि द्विजकरि जानेहु मोहीं ❀ मैं जस विप्र सुनाऊं तोहीं

१ बेटा २ समझाना ३ कड़ई ४ क़सूर ५ रिस ६ टेढ़ा ७ सेवक ८ धूलि ९ क्रोधित॥

चाप[1] श्रुवा शर[2] आहुति जानू ❀ कोप मोर अति घोर कृशानू
समिध सेन चतुरंग सुहाई ❀ महा महीप भये पशु आई
मैं यहि परशुकाटि बलि दीन्हे ❀ समरयज्ञ जग कोटिन कीन्हे
मोर प्रभाव विदित नहिं तोरे ❀ बोलसि निदरि विप्र के भोरे
भंजेउ चाप दार्प[3] बड़ बाढ़ा ❀ अहमित मनहुँ जीति जग काढ़ा
राम कहा मुनि कहहु विचारी ❀ रिस अति बड़ि लघुचूक हमारी
छुवतहि टूट पिनाक पुराना ❀ मैं केहि हेतु करौं अभिमाना

दो० जो हम निदरहिं विप्रबदि, सत्य सुनहु भृगुनाथ।
तौ असको जगसुभटजेहि, भयवश नावहिंमाथ॥

देव दनुज भूपति भट नाना ❀ समबल अधिक होउ बलवाना
जो रण हमहिं प्रचारहि कोऊ ❀ लरहिं सुखेन[4] काल किन होऊ
क्षत्रिय तनु धरि समर सकाना ❀ कुल कलंक तेहि पामर[5] जाना
कहौं स्वभाव न कुलहि प्रशंसी ❀ कालहु डरहिं न रण रघुवंसी
विप्र वंश की अस प्रभुताई ❀ अभय[6] होइ जो तुमहिं डराई
सुनि मृदु गूढ़ वचन रघुपतिके ❀ उघरे पटल[7] परशुधर मतिके
राम रमापति कर धनु लेहू ❀ खैंचहु मोर मिटै संदेहू
देत चाप आपहि चढ़ि गयऊ ❀ परशुराम मन विस्मय भयऊ

दो० जाना राम प्रभाव तब, पुलक प्रफुल्लित गात।
जोरि पाणि बोले वचन, प्रेम न हृदय समात॥

जय रघुवंश वनज वन भानू ❀ गहन दनुजकुल दहन कृशानू
जय सुर विप्र धेनु हितकारी ❀ जय मद मोह कोह भ्रमहारी
विनय शील करुणा[8] गुणसागर ❀ जयति वचन रचना अतिनागर
सेवक सुखद सुभग सब अंगा ❀ जय शरीर छवि कोटि अनंगा[9]
करौं कहा मुख एक प्रशंसा ❀ जय महेश मन मानस हंसा
अनुचित बहुत कहेउँ अज्ञाता ❀ क्षमहु क्षमा मंदिर दोउ भ्राता

१ धनुष २ बाण ३ घमण्ड ४ खुशी से ५ नीच ६ निडर ७ किवाड़ ८ दया ९ कामदेव॥

कहि जय जय जय रघुकुल केतू ❁ भृगुपति गये वनहिं तप हेतू
अपभय कुटिल महीप डराने ❁ जहँ तहँ कायर गवहिं पराने

दो० देवन दीन्ही दुन्दुभी[2], प्रभु पर वरषहिं फूल।
हरषे पुर नर नारि सब, मिटा मोह भय शूल[3]॥

अति गहगहे बाजने बाजे ❁ सबहिं मनोहर मंगल साजे
यूथ यूथ मिलि सुमुखि सुनयनी ❁ करहिं गान कल कोकिलबयनी
सुख विदेह कर वरणि न जाई ❁ जन्म दरिद्र मनहुँ निधि पाई
विगत त्रास भइ सीय सुखारी ❁ जिमि विधुउदय चकोर कुमारी
जनक कीन्ह कौशिकहि प्रणामा ❁ प्रभु प्रताप धनु भंजेउ रामा
मोहिं कृतकृत्य कीन्ह दुहुँ भाई ❁ अब जो उचित सो कहिय गोसांई
कह मुनि सुनु नरनाह प्रवीना ❁ रहा विवाह चाप आधीना
टूटत ही धनु भयउ विवाहू ❁ सुरनर नाग विदित सब काहू

दो० तदपि जाइ तुम करहु अब, यथा वंश व्यवहार।
बूझि विप्र कुल वृद्ध गुरु, वेद विहित आचार॥

दूत अवधपुर पठवहु जाई ❁ आनहु नृप दशरथहिं बुलाई
मुदित राव कहि भलेहि कृपाला ❁ पठये दूत अवध तेहि काला
बहुरि महाजन सकल बुलाये ❁ आइ सबन सादर शिर नाये
हाट बाट मन्दिर सुरवासा ❁ नगर सँवारहु चारिहु पासा
हरषि चले निज निज गृह आये ❁ पुनि परिचारक[5] बोलि पठाये
रचहु विचित्र वितान बनाई ❁ शिर धरि वचन चले सचुपाई
पठये बोलि गुणी तिननाना ❁ जे वितानविधि कुशलसुजाना
विधिहि वन्दि तिन कीन्ह अरम्भा ❁ विरचे कनक कदली[6] थम्भा

दो० हरित मणिन के पत्र फल, पद्मराग के फूल।
रचना देखि विचित्र अति, मन विरंचिकर भूल॥

वेणुं[7] हरित मणिमय सब कीन्हे ❁ सरल सपर्ण[8] परहिं नहिं चीन्हे

---

१ पताका २ नगाड़ा ३ दुःख ४ समाथ ५ दास ६ केला ७ बांस ८ पत्तोंसहित॥

कनक कलित अहिबेलि[1] बनाई ❋ लखि नहिं परै सपर्ण सुहाई
तेहि के रचि पचि बन्ध बनाये ❋ बिचबिच मुक्तादाम[3] सुहाये
माणिक मरकत कुलिश पिरोजा ❋ चीरि कोरि पचि रचे सरोजा
किये भृङ्ग बहु रङ्ग विहङ्गा ❋ गुञ्जहिं कूजहिं पवन प्रसङ्गा
सुरप्रतिमा खम्भन गढ़ि काढ़ीं ❋ मङ्गल द्रव्य लिये सब ठाढ़ीं
चौकैं भाँति अनेक पुराई ❋ सिन्धुरमणि मय सहज सुहाई

दो० सौरभ[4]पल्लवसुभगसुठि, किये नीलमणि कोरि।
हेम[5] बौर मरकत घंवरि[6], लसत पाटमय डोरि॥

रचे रुचिर वर बन्दनवारे ❋ मनहुँ मनोभव[7] फन्द सँवारे
मङ्गल कलश अनेक बनाये ❋ ध्वज पताक पट चमर सुहाये
दीप मनोहर मणिमय नाना ❋ जाइ न वरणि विचित्र विताना
जेहि मण्डप दुलहिनि वैदेही ❋ सो वरणै अस मति कवि केही
दूलह राम रूप गुण सागर ❋ सो वितान तिहुँलोक उजागर
जनक भवन की शोभा जैसी ❋ गृह गृह प्रतिपुर देखिय तैसी
जेहितिरहुति तेहि समय निहारी ❋ तेहि लघु लगे भुवनदशचारी
जो सम्पदा नीच गृह सोहा ❋ सो विलोकि सुरनायक मोहा

दो० बसै नगर जेहि लच्छिकरि, कपट नारि वरवेष।
तेहि पुर की शोभा कहत, सकुचैं शारद शेष॥

पहुँचे दूत रामपुर पावन ❋ हरषे नगर विलोकि सुहावन
भूप द्वार तिन खबरि जनाई ❋ दशरथ नृप सुनि लिये बुलाई
करि प्रणाम तिन पाती दीन्ही ❋ मुदित महीप आप उठि लीन्ही
वारि विलोचन बांचत पाती ❋ पुलकगात आई भरि छाती
राम लषण उर कर वर चीठी ❋ रहिगये कहत न खाटी मीठी
पुनि धरि धीर पत्रिका बाँची ❋ हरषी सभा बात सुनि साँची
खेलत रहे तहां सुधि[8] पाई ❋ आये भरत सहित दोउ भाई

१ नागबेलि २ लड़ी ३ गजमुक्ता ४ आम ५ सोना ६ गुच्छा ७ कामदेव ८ खबर॥

पूंछत अति सनेह सकुचाई ❀ तात कहां ते पाती आई

दो० कुशल प्राणप्रिय बन्धुदोउ, अहहिं कहहु केहिदेश।
सुनि सनेह साने वचन, बांची बहुरि नरेश॥

सुनि पांती पुलके दोउ भ्राता ❀ अधिक सनेह समात न गाता
प्रीति पुनीत भरत की देखी ❀ सकल सभा सुख लहेउ विशेखी
तब नृप दूत निकट बैठारे ❀ मधुर मनोहर वचन उचारे
भैया कहहु कुशल दोउ बारे ❀ तुम नीके निज नयन निहारे
श्यामल गौर धरे धनु भाथा ❀ वयकिशोर कौशिक मुनिसाथा
पहिंचानेहु तौ कहहु स्वभाऊ ❀ प्रेम विवश पुनि पुनि कह राऊ
जादिन ते मुनि गये लिवाई ❀ तबते आजु सांचि सुधि पाई
कहहु विदेह कवन विधि जाने ❀ सुनि प्रिय वचन दूत मुसुकाने

दो० सुनहु महीपतिमुकुटमणि, तुमसम धन्य न कोउ।
राम लषण जिनके तनय[३], विश्व[४] विभूषण[५] दोउ॥

पूंछन योग न तनय तुम्हारे ❀ पुरुषसिंह तिहुँपुर उजियारे
जिनके यश प्रताप के आगे ❀ शशि मलीन रवि शीतललागे
तिनकहँ कहिय नाथ किमिचीन्हे ❀ देखिय रवि कि दीप कर लीन्हे
सीय स्वयम्बर भूप अनेका ❀ सिमिटे सुभट एक ते एका
शम्भु शरासन[६] काहु न टारा ❀ हारे सकल भूप बरिआरा
तीनि लोकमहँ जे भटमानी ❀ सबकी शक्ति शम्भुधनु भांनी
सकहि उठाइ सुरासुर[८] मेरू ❀ सोइ हियहारि गयउ करि फेरू
जेहि कौतुक शिवशैल[९] उठावा ❀ सोउ तेहि सभा पराभव पावा

दो० तहां राम रघुवंश मणि, सुनिय महा महिपाल।
भंजेउ चापप्रयास बिनु, जिमि गजपंकजनाल॥

सुनि सरोष भृगुनायक आये ❀ बहुत भाँति तिन आंखि दिखाये
देखि रामबल निज धनु दीन्हा ❀ करि बहु विनय गमन वन कीन्हा

---

१ चिट्ठी २ अपने ३ पुत्र ४ संसार ५ गहना ६ धनुष ७ नाश ८ बाणासुर ९ कैलास॥

राजन राम अतुल बल जैसे ❀ तेज निधान लषण पुनि तैसे
कम्पहिं भूप विलोकत जाके ❀ जिमि गज[1] हरिकिशोरके[2] ताके
देव देखि तब बालक दोऊ ❀ अब न आँखितर आवत कोऊ
दूत वचन रचना प्रिय लागी ❀ प्रेम प्रताप वीर रसपागी
सभा समेत राव अनुरागे ❀ दूतन देन निछावरि लागे
कहि अनीति ते मूंदहिं काना ❀ धर्म विचारि सबहिं सुख माना

दो० तब उठि भूप वशिष्ठ कहँ, दीन्ह पत्रिका जाइ।
कथा सुनाई गुरुहिं सब, सादर दूत बुलाइ॥

सुनि बोले गुरु अति सुखपाई ❀ पुण्य पुरुष कहँ महि सुखछाई
जिमि सरिता[3] सागर पहँ जाहीं ❀ यद्यपि ताहि कामना[4] नाहीं
तिमि सुखसम्पति बिनहिं बुलाये ❀ धर्मशील पहँ जाहिं सुभाये
तुम गुरु विप्र धेनु सुरसेवी ❀ तस पुनीत कौशल्या देवी
सुकृती[5] तुम समान जगमाहीं ❀ भयउ न है कोउ होनेउ नाहीं
तुमते अधिक पुण्य बड़ काके ❀ राजन राम सरिस सुत जाके
वीर विनीत धर्म व्रतधारी ❀ गुण सागर बालक वर चारी
तुम कहँ सर्व्वकाल कल्याना ❀ सजहु बरात बजाइ निशाना[6]

दो० चलहु वेगिसुनिगुरुवचन, भलेहि नाथ शिरनाइ।
भूपति गमने भवन तब, दूतन वास दिवाइ॥

राजा सब रनिवास बुलाई ❀ जनक पत्रिका बांचि सुनाई
सुनि सन्देश सकल हरषानी ❀ अपरकथा सब भूप बखानी
प्रेम प्रफुल्लित राजहिं रानी ❀ मनहुँ शिखिनँ[7] सुनि वारिदबानी
मुदित अशीश देहिं गुरुनारी ❀ अतिआनन्द मगन महतारी
लेहिं परस्पर अति प्रिय पाती ❀ हृदय लगाइ जुड़ावहिं छाती
राम लषण की कीरति करणी ❀ बारहिंबार भूप वर वरणी
मुनि प्रताप कहि द्वार सिधाये ❀ रानिन तब महिदेव[8] बुलाये

---

१ हाथी २ सिंह ३ नदी ४ इच्छा ५ पुण्यात्मा ६ नगाड़ा ७ मोर ८ ब्राह्मण॥

दिये दान आनन्द समेता ❀ चले विप्रवर आशिष देता

सो० याचकं लिये हँकारि, दीन्हिनिछावरि कोटि विधि।
चिरजीवहु सुतचारि, चक्रवर्त्ति दशरत्थ के॥

कहत चले पहिरे पट[१] नाना ❀ हरषि हने गहगहे निशाना
समाचार पुर लोगन पाये ❀ लागे घर घर होन बधाये
भुवन चारि दश भरेउ उछाहू ❀ जनकसुता रघुवीर विवाहू
सुनि शुभ कथा लोग अनुरागे ❀ मग गृह गली सँवारन लागे
यद्यपि अवध सदैव सुहावनि ❀ रामपुरी मङ्गलमय पावनि
तदपि प्रीति की रीति सुहाई ❀ मङ्गल रचना रची बनाई
ध्वज पताक पट चामर चारू ❀ छाये परम विचित्र बजारू
कनक कलश तोरण[३] मणिजाला ❀ हरद दूब दधि अच्छत माला

दो० मंगलमयनिजनिजभवन, लोगन रचे बनाइ।
वीथी सींची चतुर सब, चौकें चारु पुराइ॥

जहँ तहँ यूथयूथ मिलि भामिनि ❀ साजिनवसप्तसकल द्युतिदामिनि
विधुवदनी मृगशावक लोचनि ❀ निजस्वरूप रतिमानविमोचनि
गावहिं मङ्गल मञ्जुल बानी ❀ सुनि कलरव कलकण्ठलजानी
भूप भवन किमि जाइ बखाना ❀ विश्वविमोहन रचेउ विताना
मङ्गल द्रव्य मनोहर नाना ❀ राजत बाजत विपुल निशाना
कतहुँ विरद वन्दी उच्चरहीं ❀ कतहुँ वेदध्वनि भूसुर[६] करहीं
गावहिं सुन्दरि मङ्गल गीता ❀ लै लै नाम राम अरु सीता
बहुत उछाह भवन अति थोरा ❀ मानहुँ उमँगि चला चहुँओरा

दो० शोभा दशरथ भवन की, को कवि वरणै पार।
जहां सकल सुरशीशमणि, राम लीन्ह अवतार॥

भूप भरत तब लिये बुलाई ❀ हयगय स्यन्दनं साजहु जाई
चलहु वेगि रघुवीर बराता ❀ सुनत पुलक पूरे दोउ भ्राता

१ भिक्षुक २ वस्त्र ३ बन्दनवार ४ गली ५ बिजली ६ विप्र ७ रथ॥

भरत सकल साहनी बुलाये ❀ आयसु दीन्ह मुदित उठि धाये
रचि रुचि जीन तुरँग तिन साजे ❀ वर्ण वर्ण वर वाजि विराजे
सुभग सकल सुठि चंचल करणी ❀ अयँ इव जरत धरत पगु धरणी
नाना भाँति न जाहिं बखाने ❀ निदरि पवन जनु चहत उड़ाने
तिन पर छैल भये असवारा ❀ भरत सरिस सब राजकुमारा
सब सुन्दर बहु भूषण धारी ❀ कर शर चाप तूण कटिभारी

दो० छरे छबीले छैल सब, शूर सुजान नवीनं।
युग पदचर असवार प्रति, ज असि कला प्रवीन॥

बाँधे विरुद वीर रण गाढ़े ❀ निकसि भये पुर बाहर ठाढ़े
फेरहिं चतुर तुरँग गति नाना ❀ हरषहिं धुनिसुनिपणवनिशाना
रथ सारथिन विचित्र बनाये ❀ ध्वज पताक मणिभूषण छाये
चमरचारु किंकिणि ध्वनि करहीं ❀ भानुयान शोभा अपहरहीं
श्यामकर्ण अगणित हय होते ❀ ते तिन रथन सारथिन जोते
सुन्दर सकल अलंकृत सोहैं ❀ जिनहिं विलोकत मुनिमन मोहैं
जे जल चलहिं थलहिं की नाईं ❀ टाप न बूड़ वेग अधिकाईं
अस्त्र शस्त्र सब साज सजाई ❀ रथी सारथिन लिये बुलाई

दो० चढ़ि चढ़ि रथ बाहर नगर, लागी जुरन बरात।
होत शकुन सुन्दर सुखद, जो जेहि कारज जात॥

कलित करिवरन परीं अँबारी ❀ कहि न जाय जेहि भाँति सँवारी
चले मत्त गजँ घण्ट विराजे ❀ मनहुँ सुभग सावन घन गाजे
वाहन अपर अनेक विधाना ❀ शिबिकाँ सुभग सुखासन याना
तिन चढ़ि चले विप्रवर वृन्दा ❀ जनु तनु धरे सकल श्रुति छन्दा
मागध सूत वन्दि गुणगायक ❀ चले यान चढ़ि जो जेहि लायक
बेसर ऊंट वृषभ बहु जाती ❀ चले वस्तु भरि अगणित भाँती
कोटिन कांवरि चले कहारा ❀ विविध वस्तु को वरणै पारा

१ दरोगा २ घोड़ा ३ पृथ्वी ४ नये ५ तलवार ६ ढोल ७ हाथी ८ पालकी ९ खच्चर॥

चले सकल सेवक समुदाई ❀ निज निज साज समाज बनाई

दो० सबके उर निर्भर हरष, पूरित पुलक शरीर।
कबहिं देखिहैं नयन भरि, राम लषण दोउ वीर॥

गरजहिं गजघण्टा ध्वनि घोरा ❀ रथरव बाजि हींस चहुँ ओरा
निदरि घनहिं घुमराहिं निशाना ❀ निज पराव कछु सुनिय न काना
महा भीर भूपति के द्वारे ❀ रजे है जायँ पषाणे पँवारे
चढ़ी अटारिन देखहिं नारी ❀ लिये आरती मंगल थारी
गावहिं गीत मनोहर नाना ❀ अति अनन्द नहिं जाइ बखाना
तब सुमन्त दुइ स्यन्दन साजी ❀ जोते हय रवि निन्दक बाजी
दोउ रथ रुचिर भूप पहँ आने ❀ नहिं शारद प्रति जाहिं बखाने
राज समाज एक रथ साजा ❀ दूसर तेज पुंज अति भ्राजा

दो० तेहि रथ रुचिर वशिष्ठकहँ, हरषि चढ़ाय नरेश।
आपु चढ़ेउस्यन्दनसुमिरि, हर गुरु गौरि गणेश॥

सहित वशिष्ठ सोह नृप कैसे ❀ सुरगुरु संग पुरन्दर जैसे
करि कुलरीति वेद विधि राऊ ❀ दीख सबहिं सब भाँति बनाऊ
सुमिरि राम गुरु आयसु पाई ❀ चले महीपति शंख बजाई
हरषे विबुध विलोकि बराता ❀ बरषहिं सुमन सुमंगल दाता
भयउ कोलाहल हय गय गाजे ❀ व्योम बरात बाजने बाजे
सुर नर नारि सुमंगल गाई ❀ सरस राग बाजहिं सहनाई
घण्टघण्टि ध्वनि वरणि न जाई ❀ सरो करें पायक फहराई
करहिं विदूषक कौतुक नाना ❀ हास कुशल कलगान सुजाना

दो० तुरँग नचावहिं कुँवरवर, अकनि मृदंग निशान।
नागरनटचितवहिचकित, डिगहिं न तालविधान॥

बनै न वरणत बनी बराता ❀ होइँ शकुन सुन्दर शुभदाता
चाष चार्ष वाम दिशि लेई ❀ मनहुँ सकल मंगल कहि देई

---

१ पूर्व २ धूलि ३ पत्थर ४ घोड़ा ५ बृहस्पतिजी ६ इन्द्र ७ भांड़ ८ नीलकण्ठ ॥

दाहिन काग सुखेत सुहावा ❀ नकुलं दरश सब काहू पावा
सानुकूल बह त्रिविध बयारी ❀ सघट सबाल आव वरनारी
लोवा फिरि फिरि दरश दिखावा ❀ सुरभी सम्मुख शिशुहि पियावा
मृगमाला दाहिनि दिशि आई ❀ मंगल गण जनु दीन्ह दिखाई
क्षेमकरी कह क्षेम विशेखी ❀ श्यामा वाम सुतरुपर देखी
सम्मुख आयउ दधि अरु मीनाँ ❀ कर पुस्तक दुइ विप्र प्रवीना

दो॰ मंगलमय कल्याणमय, अभिमत फल दातार।
जनु सब सांचे होनहित, भये शकुन इकबार॥

मंगल शकुन सुगम सब ताके ❀ सगुण ब्रह्म सुन्दर सुत जाके
राम सरिसबर दुलहिनि सीता ❀ समधी दशरथ जनक पुनीता
सुनि अस ब्याह शकुन सब नाचे ❀ अब कीन्हे विरंचि हम सांचे
यहि विधि कीन्ह बरात पयानाँ ❀ हय गय गाजे हने निशाना
आवत जानि भानुकुलकेतू ❀ सरितन जनक बँधाये सेतू
बीच बीच वर वास बनाये ❀ सुरपुर सरिस सम्पदा छाये
अशँन शयन बरबसन सुहाये ❀ पावहिं सब निज निज मनभाये
नित नूतन सुख लखि अनुकूला ❀ सकल बरातिन मन्दिर भूला

दो॰ आवत जानि बरात वर, सुनि गहगहे निशान।
सजि गजरथपदचरतुरँग, लेन चले अगवान॥

कनक कलश कल कोपर थारा ❀ भाजन ललित अनेक प्रकारा
भरे सुधासम सब पकवाने ❀ भाँति भाँति नहिं जाहिं बखाने
फल अनेक वर वस्तु सुहाई ❀ हरषि भेंट हित भूप पठाई
भूषण बसन महामणि नाना ❀ खग मृग हय गय बहु विधि याना
मंगल शकुन सुगन्ध सुहाये ❀ बहुत भाँति महिपाल पठाये
दधि चिउरा उपहार अपारा ❀ भरि भरि कांवरि चले कहारा
अगवानिन जब दीख बराता ❀ उर आनन्द पुलकि भरि गाता

१ नेवला २ लोमड़ी ३ सफ़ेद चील ४ मछली ५ कूच ६ पुल ७ भोजन ८ अमृततुल्य॥

देखि बनाव सहित अगवाना ❀ मुदित बरातिन हने निशाना

दो॰ हरषि परस्पर मिलन हित, कछुक चले बगमेल।
जनु आनन्द समुद्र दुइ, मिलतबिहाय सुवेल॥

बरषि सुमन सुरसुन्दरि गावहिं ❀ मुदित देव दुन्दुभी बजावहिं
वस्तु सकल राखी नृप आगे ❀ विनय कीन तिन अति अनुरागे
प्रेम समेत राव सब लीन्हा ❀ भै बखशीश याचकन दीन्हा
करि पूजा मान्यता बड़ाई ❀ जनवासे कहँ चले लिवाई
वसन विचित्र पांवड़े परहीं ❀ नृप दशरथ तापर पग धरहीं
अति सुन्दर दीन्हेउ जनवासा ❀ जहँ सब कहँ सब भाँति सुपासा
जानी सिय बरात पुर आई ❀ कछु निज महिमा प्रकट जनाई
हृदय सुमिरि सब सिद्धि बुलाई ❀ भूप पहुनई करन पठाई

दो॰ सिधिसबसियआयसुअकनि, गईं जहां जनवास।
लिये सम्पदा सकल सुख, सुरपुरभोगविलास॥

निज निज वास विलोकि बराती ❀ सुर सुख सकल सुलभ सब भाँती
विभव भेद कछु काहु न जाना ❀ सकल जनककर करहिं बखाना
सिय महिमा रघुनायक जानी ❀ हरषे हृदय हेतु पहिंचानी
पितु आगमन सुनत दोउ भाई ❀ हृदय न अति आनन्द समाई
सकुचत कहि न सकत गुरुपाहीं ❀ पितु दर्शन लालच मनमाहीं
विश्वामित्र विनय बड़ि देखी ❀ उर उपजा संतोष विशेखी
हरषि बन्धु दोउ हृदय लगाये ❀ पुलक अंग लोचन जल छाये
चले जहां दशरथ जनवासे ❀ मनहुँ सरोवर तकेउ पियासे

दो॰ भूप विलोके जबहिं मुनि, आवत सुतन समेत।
उठे हरषि सुखसिन्धु महँ, चले थाहसी लेत॥

मुनिहिं दण्डवत कीन्ह महीशा ❀ बार बार पदरज धरि शीशा

१ हद २ देवाङ्गना ३ चरण ४ गांव ५ महिमानी ६ वैकुण्ठ ७ आना ८ तालाब ९ राजा॥

कौशिक राव लिये उर लाई ❀ दे अशीश पूंछी कुशलाई
पुनि दण्डवत करत दोउ भाई ❀ देखि नृपति उर सुख न समाई
सुत हिय लाइ दुसह दुख मेटे ❀ मृतक शरीर प्राण जनु भेंटे
पुनि वशिष्ठ पद शिर तिन नाये ❀ प्रेम मुदित मुनिवर उर लाये
विप्र वृन्द वन्दे दुहुँ भाई ❀ मन भावत अशीश तिन पाई
भरत सहानुज कीन्ह प्रणामा ❀ लिये उठाइ लाइ उर रामा
हरषे लषण देखि दोउ भ्राता ❀ मिले प्रेम परिपूरण गाता

दो० पुरजन परिजन जातिजन, याचक मन्त्री मीत।
मिले यथाविधि सबहिंप्रभु, परम कृपालु विनीत॥

रामहिं देखि बरात जुड़ानी ❀ प्रीति कि रीति न जाय बखानी
नृप समीप सोहहिं सुत चारी ❀ जनु धन धर्म्मादिक तनुधारी
सुतन सहित दशरथ कहँ देखी ❀ मुदित नगर नर नारि विशेखी
सुमन बरषि सुर हनहिं निशाना ❀ नाकनटी नाचहिं करि गाना
शतानन्द अरु विप्र सचिवगन ❀ मागध सूत विदुष वन्दीजन
सहित बरात राव सनमाना ❀ आयसु मांगि फिरे अगवाना
प्रथम बरात लगनते आई ❀ ताते पुर प्रमोद अधिकाई
ब्रह्मानन्द लोग सब लहहीं ❀ बढ़हु दिवसनिशिविधिसनकहहीं

दो० राम सीय शोभा अवधि, सुकृतअवधिदोउराज।
जहँतहँ पुरजनकहहिंअस, मिलिनरनारिसमाज॥

जनक सुकृत मूरति वैदेही ❀ दशरथ सुकृत राम धरि देही
इनसम काहु न शिव आराधे ❀ काहु न इन समान फल साधे
इनसम कोउ न भयउ जगमाहीं ❀ अहै न जग कोउ होनेउ नाहीं
हम सब सकल सुकृतकी रासी ❀ भये जग जन्मि जनकपुरवासी
जिन जानकी राम छवि देखी ❀ को सुकृती हम सरिस विशेखी
पुनि देखब रघुवीर विवाहू ❀ लेब भली विधि लोचनलाहू

१ हृदय २ प्रसन्न ३ प्रसन्न ४ पुत्र ५ अप्सरा ६ सुखी ७ लाभ॥

कहहिं परस्पर कोकिलबयनी ❁ यहि विवाह बड़ लाभ सुनयनी
बड़े भाग्य विधि बात बनाई ❁ नयन अतिथि ह्वैहैं दोउ भाई

दो० बारहिंबार सनेह वश, जनक बोलाउब सीय।
लेन आइहैं बन्धु दोउ, कोटि काम कमनीय॥

विविध भाँति होइहि पहुनाई ❁ प्रिय न काहि अस सासुर माई
तब तब राम लक्ष्मणहिं निहारी ❁ ह्वैहैं सब पुरलोग सुखारी
सखि जस राम लषणकर जोटा ❁ तैसइ भूप संग दुइ ढोटा
श्याम गौर सब अंग सुहाये ❁ ते सब कहहिं देखि जे आये
कहा एक मैं आजु निहारे ❁ जनु विरंचि निज हाथ सँवारे
भरत राम ही की अनुहारी ❁ सहसा लखि न सकहिं नरनारी
लषण शत्रुसूदन इक रूपा ❁ नख शिख ते सब अंग अनूपा
मन भावहिं मुख वरणि न जाहीं ❁ उपमाकहँ त्रिभुवन कोउ नाहीं

छं० उपमानकोउकहदासतुलसीकतहुँकविकोविदकहैं।
बल विनय विद्या शील शोभा सिन्धु इनसम यइ लहैं॥
पुरनारिसकलपसारि अंचल विधिहि वचन सुनावहीं।
ब्याहिय सुचारिउ भाइ यहिपुर हम सुमंगल गावहीं॥

सो० कहहिं परस्पर नारि, वारि विलोचनपुलकतन।
सखि सब करब पुरारि, पुण्य पयोनिधिभूपदोउ॥

यहि विधि सकल मनोरथ करहीं ❁ आनँद उमँगि उमँगि उर भरहीं
सीय स्वयम्बर जे नृप आये ❁ देखि बन्धु सब तिन सुख पाये
कहत राम यश विशद विशाला ❁ निज निज भवन गये महिपाला
गये बीति कछु दिन यहि भाँती ❁ प्रमुदित पुरजन सकल बराती
मंगल मूल लगन दिन आवा ❁ हिमऋतु अगहन मास सुहावा
ग्रह तिथि नखत योग वरवारू ❁ लगन शोधि विधि कीन्ह बिचारू

---

१ आपस में २ पाहुन ३ ब्रह्मा ४ सुंदर ५ पंडित ६ शम्भु ७ समुद्र॥

पठै दीन्ह नारद सन सोई ❁ गनी जनक के गणकंन जोई
सुनी सकल लोगन यह बाता ❁ कहहिं ज्योतिषी अपर विधाता

दो० धेनु धूलि बेला विमल, सकल सुमंगल मूल।
विप्रन कहेउ विदेहसन, जानि समय अनुकूल॥

उपरोहितहि कहेउ नरनाहा ❁ अब विलम्बकर कारण काहा
शतानन्द तब सचिव बुलाये ❁ मंगल सकल साजि सब लाये
शंख निशान पणव बहु बाजे ❁ मंगल शकुन सकल शुभ साजे
सुभग सुवासिनि गावहिं गीता ❁ करहिं वेद ध्वनि विप्र पुनीता
लेन चले सादर यहि भाँती ❁ गये जहां जनवास बराती
कोशलपति कर देखि समाजू ❁ अति लघु लगे तिनहिं सुरराजू
भयउ समय अब धारिय पाऊ ❁ यह सुनि परा निशानन घाऊ
गुरुहिं पूंछि करि कुल विधि राजा ❁ चले संग मुनि साधु समाजा

दो० भाग्यविभवअवधेशकर, देखि देव ब्रह्मादि।
लगे सराहन सहस मुख, जानि जन्म निजबादि॥

सुरन सुमंगल अवसर जाना ❁ वरषहिं सुमन बजाइ निशाना
शिव ब्रह्मादिक विबुध वरूथा ❁ चढ़े विमानन नाना यूथा
प्रेम पुलक तनु हृदय उछाहू ❁ चले विलोकन राम विवाहू
देखि जनकपुर सुर अनुरागे ❁ निज निज लोक सबहिं लघु लागे
चितवहिं चकित विचित्र विताना ❁ रचना सकल अलौकिक नाना
नगर नारि नर रूप निधाना ❁ सुघर सुधर्म सुशील सुजाना
तिनहिं देखि सब सुरपुर नारी ❁ भई नखत जनु विधु उजियारी
विधिहि भयउ आश्चर्य विशेखी ❁ निज करणी कछु कतहुँ न देखी

दो० शिव समुझाये देव सब, जनि आश्चर्य भुलाहु।
हृदय विचारहु धीर धरि, सिय रघुवीर विवाहु॥

जिनकर नाम लेत जगमाहीं ❁ सकल अमंगल मूल नशाहीं

---

१ ज्योतिषी २ स्वच्छ ३ सुहागिन ४ इन्द्र ५ पुष्प ६ देवता ७ चंद्रमा ८ अशकुन॥

करतल होहिं पदारथ चारी ❀ ते सिय राम कहेउ कामारी
यहि विधि शंभु सुरन समुझावा ❀ पुनि आगे वर वसंह चलावा
देवन देखे दशरथ जाता ❀ महामोद मन पुलकित गाता
साधु समाज संग महिदेवा ❀ जनु तनु धरे करहिं सुर सेवा
सोहत साथ सुभग सुत चारी ❀ जनु अपवर्ग सकल तनुधारी
मरकत कनक वरणवर जोरी ❀ देखि सुरन भइ प्रीति न थोरी
पुनि रामहिं विलोकि हिय हरषे ❀ नृपहिं सराहि सुमन तिन वरषे

दो० रामरूप नख शिखनिरखि, बारहिंबार निहारि।
पुलकगात लोचन सजल, उमा समेत पुरारि॥

केकिकंठ द्युति श्यामल अंगा ❀ तड़ितविनिन्दक वसन सुरंगा
ब्याह बिभूषण विविध बनाये ❀ मंगलमय सब भाँति सुहाये
शरद विमल विधुवदन सुहावन ❀ नयन नवल राजीव लजावन
सकल अलौकिक सुन्दरताई ❀ कहि न जाय मनहीं मनभाई
बन्धु मनोहर सोहहिं संगा ❀ जात नचावत चपल तुरंगा
राज कुँवर वरवाजि नचावहिं ❀ वंशप्रशंसक विरद सुनावहिं
जेहि तुरंग पर राम विराजे ❀ गति विलोकि खगनायक लाजे
कहि न जाइ सब भाँति सुहावा ❀ वाजि वेष जनु काम बनावा

छं० जनु वाजिवेषबनाइ मनसिज रामहितअतिसोहई।
अवलोकि वयवपु रूपगुण गति सकल भुवन बिमोहई॥
जगमगतिजीनजड़ावज्योतिसुमोतिमणिमाणिकलगे
किंकिणिललामलगामललितविलोकिसुरनरमुनिठगे।

दो० प्रभुमनसहि लयलीनमन, चलतवाजि छविपाव।
भूषितउडुगण तड़ित घन, जनुवर बरहि नचाव॥

जेहि वर वाजि राम असवारा ❀ तेहि शारदहु न वरणै पारा
शङ्कर राम रूप अनुरागे ❀ नयन पंचदश अतिप्रिय लागे

१ हथेली २ शिव ३ बैल ४ विप्र ५ मोक्ष ६ बिजली ७ कमल ८ मार ९ गरुड़ १० मोर

हरि हित सहित राम जब जोहे ❀ रमा समेत रमापति मोहे
निरखि राम छवि विधि हरषाने ❀ आठहि नयन जानि पछिताने
सुरसेनप उर बहुत उछाहू ❀ विधि ते ड्योढ़े लोचन लाहू
रामहिं चितव सुरेश सुजाना ❀ गौतम शाप परमहित माना
देव सकल सुरपतिहि सिहाहीं ❀ आजु पुरन्दरसम कोउ नाहीं
मुदित देवगण रामहिं देखी ❀ नृप समाज दुहुँ हरष विशेखी

छं० अतिहर्षराजसमाजदुहुँदिशि दुन्दुभीबाजहिंघनी ।
वरषहिंसुमनसुरहरषिकहिजयजयतिजयरघुकुलमनी ॥
यहिभाँति जानि बरात आवत बाजने बहुबाजहीं ।
रानी सुवासिनि बोलि परिछन हेतु मंगल साजहीं ॥

दो० सजि आरती अनेक विधि, मंगल सकल सँवारि ।
चलीं मुदित परिछनकरन, गजगामिनिवरनारि ॥

विधुवदनी मृगशावक लोचनि ❀ सबनिज छविरतिमानविमोचनि
पहिरे वरण वरण वर चीरा ❀ सकल विभूषण सजे शरीरा
सकल सुमंगल अंग बनाये ❀ करहिं गान कलकंठ लजाये
कंकण किंकिणि नूपुर बाजहिं ❀ चाल विलोकिकामगज लाजहिं
बाजहिं बाजन विविध प्रकारा ❀ नभ अरु नगर सुमंगलचारा
शची शारदा रमा भवानी ❀ जे सुरतिय शुचि सहज सयानी
कपट नारि वर वेष बनाई ❀ मिलीं सकल रनिवासहि आई
करहिं गान कल मंगल बानी ❀ हरष विवश सब काहु न जानी

छं० कोजानक्यहिआनन्दवशसबब्रह्मवरपरिछनचलीं ।
कलगान मधुरनिशान वरषहिं सुमन सुरशोभाभलीं ॥
आनन्दकन्द विलोकि दूलह सकल हियहरषित भई ।
अम्भोजअम्बक अम्बुउमँगि सुअंगपुलकावलि छई ॥

१ विष्णु २ स्वामिकार्त्तिकेय ३ कोकिला ४ इन्द्राणी ५ लक्ष्मी ६ कमल ७ नेत्र ८ जल ॥

दो० जो सुख भा सियमातु मन, देखि राम वरवेष।
सो न सकहिं कहि कल्पशत, सहस शारदा शेष॥

नयन नीर हंठि मंगल जानी ❀ परिछन करहिं मुदित मन रानी
वेद विहित अरु कुल आचारू ❀ कीन्ह भली विधि सब व्यवहारू
पंच शब्द ध्वनि मंगल गाना ❀ पट पांवड़े परहिं विधि नाना
करि आरती अर्घ्य तिन दीन्हा ❀ राम गमन मण्डप तब कीन्हा
दशरथ सहित समाज विराजे ❀ विभवं विलोकि लोकपति लाजे
समय समय सुर वरषहिं फूला ❀ शांति पढ़हिं महिसुर अनुकूला
नभ अरु नगर कोलाहल होई ❀ आपन पर कछु सुनै न कोई
यहि विधि राम मण्डपहि आये ❀ अर्घ्य देइ आसन बैठाये

छं० बैठारि आसन आरती करि निरखिवरसुखपावहीं।
मणिवसन भूषण भूरि वारंहिं नारि मंगल गावहीं॥
ब्रह्मादि सुर वर विप्रवेष बनाइ कौतुक देखहीं।
अवलोकिरविकुलकमलरविछविसफलजीवनलेखहीं॥

दो० नाऊ बारी भाट नट, राम निछावरि पाइ।
मुदित अशीशहिं नाइ शिर, हर्ष न हृदय समाइ॥

मिले जनक दशरथ अति प्रीती ❀ करि वैदिक लौकिक सब रीती
मिलत महा दोउ राज विराजे ❀ उपमा खोजि खोजि कवि लाजे
लही न कतहुँ हारि हियँ मानी ❀ इन सम यह उपमा उर आनी
समधी देखि देव अनुरागे ❀ सुमन वरषि यश गावन लागे
जग विरंचि उपजावा जब ते ❀ देखे सुने ब्याह बहु तब ते
सकल भाँति सब साज समाजू ❀ सम समधी देखे हम आजू
देवगिरा सुनि सुन्दरि सांची ❀ प्रीति अलौकिक दुहुँ दिशि मांची
देत पांवड़े अर्घ्य सुहाये ❀ सादर जनक मण्डपहिं ल्याये

१ शोक २ ऐश्वर्य ३ निछावरि करें ४ खुशी ५ हृदय ६ आदरसे ७ मण्डप॥

छं० मण्डपविलोकिविचित्ररचनारुचिरतामुनिमनहरे।
निज पाणि जनक सुजान सबकहँ आनि सिंहासनधरे॥
कुलइष्टसरिसं वशिष्ठ पूजे विनयकरि आशिष लही।
कौशिकहि पूजत परमप्रीति कि रीति तौ न परै कही॥

दो० वामदेव आदिक ऋषय, पूजे मुदित महीशं।
दिये दिव्य आसन सबहि, सबसन लही अशीश॥

बहुरि कीन्ह कोशलपति पूजा ❀ जानि ईश सम भाव न दूजा
जोरि पाणि करि विनय बड़ाई ❀ कहि निज भाग्य विभव बहुताई
पूजे भूपति सकल बराती ❀ समधी सम सादर सब भाँती
आसन उचित दिये सब काहू ❀ कहौं कहा मुख एक उछाहू
सकल बरात जनक सनमानी ❀ दान मान विनती वर बानी
विधि हरि हर दिशिपति दिनराऊ ❀ जे जानहिं रघुवीर प्रभाऊ
कपटे विप्र वर वेष बनाये ❀ कौतुक देखहिं अति सचुपाये
पूजे जनक देव सम जाने ❀ दिये सुआसन बिनु पहिंचाने

छं० पहिंचानकोकेहिजानसबहिं अपानसुधिभोरीभई।
आनन्दकन्द विलोकि दूलह उभयं दिशि आनँदमई॥
सुर लखे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दये।
अवलोकिशीलस्वभावप्रभुको विबुधमनप्रमुदितभये॥

दो० रामचन्द्र मुखचन्द्र छवि, लोचन चारु चकोर।
करत पान सादर सकल, प्रेम प्रमोद न थोर॥

समय विलोकि वशिष्ठ बुलाये ❀ सादर शतानन्द मुनि आये
वेगि कुँवरि अब आनहु जाई ❀ चले मुदित मन आयसु पाई
रानी मुनि उपरोहित बानी ❀ प्रमुदित सखिन समेत सयानी
विप्रबधू कुल वृद्ध बुलाई ❀ करि कुल रीति सुमंगल गाई

१ हाथ २ चतुर ३ समान ४ राजा ५ कुल ६ दोनों ७ देखि ८ आनंद ९ आदर॥

नारिवेष जे सुर वर वामा ❀ सकल सुभाय सुन्दरी श्यामा
तिनहिं देखि सुख पावहिं नारी ❀ बिनु पहिंचान प्राण ते प्यारी
बार बार सनमानहिं रानी ❀ उमा[२] रमा शारद सम जानी
सिय सँवारि सब साज बनाई ❀ मुदित[३] मण्डपहि चलीं लिवाई

छं० चलिल्याइसीतहिंसखीसादरसजिसुमंगलभामिनी।
नव सप्त साजे सुन्दरी सब मत्त कुंजर[४] गामिनी॥
कलगानसुनिमुनिध्यानत्यागहिंकामकोकिललाजहीं।
मंजीर नूपुर कलित कंकण तालगति वरबाजहीं॥

सो० सोहति वनिता वृन्द महँ, सहज सुहावनि सीय।
छविललनागण मध्यजनु, सुषमा[६] अतिकमनीय॥

सिय सुन्दरता वरणि न जाई ❀ लघु मति बहुत मनोहरताई
आवत दीख बरातिन सीता ❀ रूप राशि सब भाँति पुनीता
सबहिं मनहिं मन कीन्ह प्रणामा ❀ देखि राम भये पूरण कामा
हरषे दशरथ सुतन समेता ❀ कहि न जाइ उर आनँद जेता
सुर प्रणाम करि वर्षहिं फूला ❀ मुनि अशीश ध्वनि मंगलमूला
गान निशान कुलाहल भारी ❀ प्रेम प्रमोद नगर नरनारी
यहि विधि सीय मण्डपहि आई ❀ प्रमुदित शांति पढ़हिं मुनिराई
तेहि अवसर करि विधि व्यवहारू ❀ दुहुँ कुलगुरु सब कीन्ह अचारू

छं० आचारकरिगुरुगौरिगणपति मुदितविप्रपुजावहीं।
सुर प्रकट पूजा लेहिं देहिं अशीश अतिसुख पावहीं॥
मधुपर्क मंगलद्रव्य जो जेहि समय मुनि मनमें चहैं।
भरे कनक कोपर कलशसबकरलिये परिचारक[७] रहैं॥
कुल रीति प्रीति समेत रविकहिदेत सब सादरकिये।
यहि भाँति देव पुजाइ सीतहि सुभग सिंहासनदिये॥

१ स्त्री २ पार्वतीजी ३ हर्षित ४ हाथी ५ बिछिया ६ शोभा ७ दास॥

सियराम अवलोकनि परस्पर प्रेम काहु न लखिपरै।
मन बुद्धि वर वाणी अगोचर प्रकट कवि कैसे करै॥

दो० होमसमयतनुधरिअनल, अतिहितआहुतिलीन्ह।
विप्र वेष धरि वेद सब, कहिविवाहविधिदीन्ह॥

जनक पाटमहिषी जग जानी ❀ सीय मातु किमि जाइ बखानी
सुयश सुकृत सुख सुन्दरताई ❀ सब समेटि विधि रची बनाई
समय जानि मुनिवरन बुलाई ❀ सुनत सुवासिनि सादर ल्याई
जनक वाम दिशि सोह सुनयना ❀ हिमगिरि संग बनी जनु मयना
कनक कलश मणि कोपर रूरे ❀ शुचि सुगन्ध मंगल जल पूरे
निज कर मुदित राव अरु रानी ❀ धरे राम के आगे आनी
पढ़हिं वेद मुनि मंगल बानी ❀ गगन सुमन झरि अवसर जानी
वर विलोकि दम्पति अनुरागे ❀ पायँ पुनीत पखारन लागे

छं० लागे पखारन पायँ पंकज प्रेम तनु पुलकावली।
नभनगरगाननिशानजयध्वनिउमँगिजनुचहुँदिशिचली॥
जे पदसरोज मनोजअरि उरसर सदैव विराजहीं।
जेसकृतसुमिरतविमलतामनसकलकलिमलभाजहीं॥
जे परसि मुनिवनिता लही गति रही जो पातकमई।
मकरन्द जिनको शम्भुशिर शुचिता अवधिसुर वरनई॥
करि मधुपमन योगीशजन जहि मेइ अभिमतगतिलहैं।
ते पद पखारत भाग्यभाजन जनक जयजय सब कहैं॥
वरकुँवरि करतल जोरि शाखोच्चार दोउ कुलगुरु करैं।
भयापाणिग्रहणविलोकिविधिसुरमनुज मुनिआनँदभरैं
सुखमूल दूलह देखि दम्पति पुलकि तनु हुलसैं हिये।
करि लोक वेद विधान कन्यादान नृप भूषण दिये॥

१ छिपा हुआ २ अग्नि ३ गानी ४ जनक की स्त्री ५ पार्वती की माता ६ पुष्परस ७ पाव॥

हिमवन्त जिमि गिरिजा महेशहि हरिहि श्री[1] सागर दई।
तिमि जनक सिय रामहिं समर्पी विश्वकलकीरति नई॥
किमि करैं विनय विदेह कीन्ह विदेह मूरति सांवरी।
करि होम विधिवत गांठि जोरी होनलागीं भांवरी॥

दो० जयध्वनि वन्दी वेदध्वनि, मंगल गान निशान।
सुनि हरषहिं वरषहिं विबुध, सुरतरु सुमन सुजान॥

कुँवरि कुँवर कल भांवरि देहीं ❀ नयन लाभ सब सादर लेहीं
जाइ न वरणि मनोहर जोरी ❀ जो उपमा कछु कहिय सो थोरी
राम सीय सुन्दरि परिछाहीं ❀ जगमगाति मणिखम्भन माहीं
मनहुँ मदन रति[2] धरि बहु रूपा ❀ देखहिं राम विवाह अनूपा
दरश लालसा[3] सकुच न थोरी ❀ प्रकटत दुरत बहोरि बहोरी
भये मगन सब देखनहारे ❀ जनक समान अपान बिसारे
प्रमुदित मुनिन भांवरी फेरी ❀ नेग सहित सब रीति निवेरी
राम सीय शिर सेंदुर देहीं ❀ उपमा कहि न जाय कवि केहीं
अरुण[4] पराग जलज[5] भरि नीके ❀ शशिहि भूषि अहि लोभ अमी[6] के
बहुरि वशिष्ठ दीन्ह अनुशासन[7] ❀ वर दुलहिनि बैठहिं इक आसन

छं० बैठे वरासन राम जानकि मुदित मन दशरथ भये।
तनु पुलकि पुनि पुनि देखि अपने सुकृत सुरतरु[8] फल नये॥
भरि भुवन रहा उछाह राम विवाह भा सबही कहा।
केहि भाँति वरणि सिरात रसना एक यह मंगल महा॥
तब जनक पाइ वशिष्ठ आयसु ब्याह साज सँवारिकै।
माण्डवी श्रुतिकीर्त्ति उर्मिला कुँवरि लई हँकारिकै॥
कुशकेतु कन्या प्रथम जो गुणशील सुख शोभामई।
सब रीति प्रीति समेत करि सो ब्याहि नृप भरतहि दई॥

१ लक्ष्मी २ कामदेव की स्त्री ३ इच्छा ४ लाल ५ कमल ६ अमृत ७ आज्ञा ८ कल्पवृक्ष॥

जानकीलघुभगिनी[1] सकल सुन्दरिशिरोमणि[2]जानिकै।
सोजनकदीन्हीब्याहिलषणहिंसकलविधिसनमानिकै॥
जेहिनाम श्रुतिकीरतिसुलोचनिसुमुखिसबगुणआगरी।
सो दई रिपुसूदनहिं भूपति रूपशील उजागरी॥
अनुरूपवरदुलहिनि परस्पर लखि सकुचि हिय हर्षहीं।
सब मुदित[3] सुन्दरता सराहहिं सुमन सुरगण वर्षहीं॥
सुन्दरी सुन्दर वरनसह सब एक मण्डप राजहीं।
जनु जीव उर चारिउ अवस्था विभुन[4] सहित विराजहीं॥

दो० मुदितअवधपतिसकलसुत, बधुनसमेत निहारि।
जनु पाये महिपाल मणि, क्रियनसहितफलचारि॥

जस रघुवीर ब्याह विधि वरणी ❀ सकल कुँवर ब्याहे तेहि करणी
कहि न जाइ कछु दाइज भूरी ❀ रहा कनक[5] माणि मण्डप पूरी
कम्बल वसन विचित्र पटोरे[6] ❀ भाँति भाँति बहुमोल न थोरे
गज रथ तुरग दास अरु दासी ❀ धेनु अलंकृत कामदुहा[7] सी
वस्तु अनेक करिय किमि लेखा ❀ कहि न जाय जानहिं जिन देखा
लोकपाल अवलोकि सिहाने ❀ लीन्ह अवधपति अति सुख माने
दीन्ह यार्चकन[8] जो जेहि भावा ❀ उबरा सो जनवासहि आवा
तब कर जोरि जनक मृदु बानी ❀ बोले सब बरात सनमानी

छं० सनमानि सकलबरातसादरदान विनय बड़ायकै।
प्रमुदित महामुनि वृन्द वन्दे पूजि प्रेम लड़ायकै॥
शिरनाइ देव मनाइ सबसन कहत करसंपुट[9] किये।
सुरसाधु चाहत भाव सिन्धु कि तोष जलअंजलिदिये॥
करजोरि जनक बहोरि बन्धु समेत कोशलरायसों।
बोले मनोहर वचन सानि सनेह शील सुभायसों॥

१ बहिन २ श्रेष्ठ ३ प्रसन्न ४ ऐश्वर्य ५ सोना ६ रेशमीवस्त्र ७ कामधेनु ८ भिक्षुक ९ हाथजोड़े॥

सम्बन्ध राजन रांवरे हम बड़े अब सबविधि भये।
यह राज साज समेत सेवक जानबी बिनुगथ लये॥
ये दारिका परिचारिका करि पालबी करुणामयी।
अपराधक्षमिबो बोलिपठये बहुत हौं ढीठी दयी॥
पुनि भानुकुल भूषण सकलसनमानविधिसमधीकिये।
कहिजात नहिं विनती परस्पर प्रेम परिपूरण हिये॥
वृन्दारकागण सुमन वरषहिं राउ जनवासहिं चले।
दुन्दुभी ध्वनि वेदध्वनि नभ नगर कौतूहल भले॥
तब सखी मंगल गान करत मुनीश आयसु पाइकै।
दूलहदुलहिनिन सहित सुन्दरि चलीं कुहवर ल्याइकै॥

दो० पुनिपुनिरामहिंचितवसिय, सकुचतिमनसकुचैन।
हरति मनोहर मीन छवि, प्रेम पियासे नैन॥

श्याम शरीर सुभाय सुहावन ❁ शोभा कोटि मनोज लजावन
जावक युत पद कमल सुहाये ❁ मुनिमन मधुप रहत जहँ छाये
पीत पुनीत मनोहर धोती ❁ हरत बालरवि दामिनि ज्योती
कल किंकिणि कटिसूत्र मनोहर ❁ बाहु विशाल विभूषण सोहर
पीत जनेउ महा छवि देई ❁ कर मुद्रिका चोरि चित लेई
सोहत ब्याह साज सब साजे ❁ उर आँयत उर भूषण राजे
पीत उपरना कांखा सोती ❁ दुहुँ आंचरन लगे मणि मोती
नयन कमल कल कुंडल काना ❁ वदन सकल सौंदर्य्य निधाना
सुन्दर भृकुटि मनोहर नासा ❁ भाल तिलक रुचिरता निवासा
सोहत मौर मनोहर माथे ❁ मंगलमय मुकतामणि गाथे

छं० गाथे महा मणि मौर मंजुल अंग सब चितचोरहीं।
पुरनारि सुरसुन्दरी वरण विलोकि सब तृण तोरहीं॥

१ आपके २ कन्या ३ दासी ४ देवगण ५ आकाश ६ करधनी ७ चौड़ा ८ नाक॥

मणिवसनभूषण वारि आरति करहिं मंगल गावहीं।
सुरसुमन वरषहिं सूतमागध वन्दि सुयश सुनावहीं॥
कुहवरहिं आने कुँवर कुँवरि सुवाँसिनिन सुखपाइकै।
अति प्रीति लौकिक रीतलागीं करन मंगल गाइकै॥
लहकौरि गौरि सिखाव रामहिं सीयसन शारद कहैं।
रनिवास हासविलास रसवश जन्म को फल सब लहैं॥
निजपाणिमणिमहँ देखि प्रतिमूरति स्वरूपनिधानकी।
चालति न भुजबल्ली विलोकति विरहवश भइँ जानकी॥
कौतुक विनोद प्रमोद प्रेम न जाइकहि जानहिं अली।
वर कुँवरिसुन्दरि सकलसखी लिवाइ जनवासहिं चलीं॥
तेहिसमयसुनियअशीश जहँतहँनगरनभ आनँदमहा।
चिरजीव जोरी चारु चारिउ मुदितमन सबही कहा॥
योगीन्द्र सिद्ध मुनीश देव विलोकि प्रभु दुन्दुभिहनी।
चलेहरषिवरषिप्रसूननिजनिजलोकजय जयजयभनी॥

दो॰ सहित बधूटिन कुँवर सब, तब आये पितु पास।
शोभा मंगल मोद भरि, जनु उमँगेउ जनवास॥

पुनि जेवनार भयउ बहु भाँती ❀ पठये जनक बुलाइ बराती
परत पाँवड़े बसन अनूपा ❀ सुतन समेत गमन किय भूपा
सादर सब के पांव पखारे ❀ यथा योग्य पीढ़न बैठारे
धोये जनक अवधपति चरणा ❀ शील सनेह जाइ नहिं वरणा
बहुरि राम पद पंकज धोये ❀ जे हरहृदय कमल महँ गोये
तीनों भाइ राम सम जानी ❀ धोये चरण जनक निज पानी
आसन उचित सबहिं नृप दीन्हे ❀ बोलि सूपकारी सब लीन्हे
सादर लगे परन पनवारे ❀ कनक कील मणिपर्ण सँवारे

१ कुंवर २ फूल ३ प्रतिष्ठा ४ सुहागिल ५ हाथ ६ परिछाहीं ७ सखियां ८ रसोईदार ॥

दो० सूपोदन[1] सुरभी[2] सरपि[3], सुन्दर स्वादु पुनीत।
क्षणमहँ सबके परसिगे, चतुर सुआर[4] विनीत॥

पञ्चकौर करि जेवन लागे ❀ गारिगान सुनि अति अनुरागे
भाँति अनेक परे पकवाने ❀ सुधा सरिस नहिं जाहिं बखाने
परसन लगे सुआर सुजाना ❀ व्यंजन विविध नाम को जाना
चारि भाँति भोजन विधि गाई ❀ एक एक विधि वरणि न जाई
छरस रुचिर व्यंजन बहु जाती ❀ एक एक रस अगणित भाँती
जेंवत देहिं मधुर ध्वनि गारी ❀ लै लै नाम पुरुष अरु नारी
समय सुहावनि गारि विराजा ❀ हँसत राव सुनि सहित समाजा
यहि विधि सबही भोजन कीन्हा ❀ आदर सहित आचमन लीन्हा

दो० देइ पान पूजे जनक, दशरथ सहित समाज।
जनवासे गमने मुदित, सकल भूप शिरताज॥

नित नूतन[5] मंगल पुर माहीं ❀ निमिष सरिस दिन यामिनि[6] जाहीं
बड़े भोर भूपतिमणि जागे ❀ याचक गुणगण गावन लागे
देखि कुँवर सब बधुन समेता ❀ किमि कहिजात मोद मन जेता
प्रातक्रिया करि गे गुरु पाहीं ❀ महा प्रमोद प्रेम मन माहीं
करि प्रणाम पूजा कर जोरी ❀ बोले गिरा[7] अमिय जनु बोरी
तुम्हरी कृपा सुनिय मुनिराजा ❀ भयउ आजु मम पूरण काजा
अब सब विप्र बुलाइ गुसांई ❀ देहु धेनु सब भाँति बनाई
सुनि गुरु करि महिपाल बड़ाई ❀ पुनि पठये मुनि वृन्द बुलाई

दो० वामदेव अरु देवऋषि[8], बालमीकि जाबालि।
आये मुनिवरनिकर[9] तब, कौशिकादि तपशालि॥

दण्ड प्रणाम सबहिं नृप कीन्हा ❀ पूजि सप्रेम वरासन दीन्हा
चारि लक्ष वर धेनु मँगाई ❀ कामसुरभि सम शील सुहाई
सब विधि सकल अलंकृत कीन्ही ❀ मुदित महीप ऋषिन कहँ दीन्ही

१ दालभात २ गौ ३ घी ४ रसोईदार ५ नया ६ रात्रि ७ वाणी ८ नारद ९ समूह॥

करत विनय बहु विधि नरनाहू ❀ लहेउँ आजु जगजीवन लाहू
पाइ अशीश महीश अनन्दा ❀ लिये बोलि पुनि याचक वृन्दा
कनक वसन मणि हय गय स्यंदन ❀ दिये बूझि रुचि रविकुलनंदन
चले पढ़त गावत गुणगाथा ❀ जय जय जय दिनकरकुलनाथा
यहि विधि राम विवाह उछाहू ❀ सकै न वरणि सहस मुख जाहू

दो० बारबार कौशिक चरण, शीश नाइ कह राव।
यह सब सुख मुनिराज तव, कृपा कटाक्ष प्रभाव॥

जनक सनेह शील करतूती ❀ नृप सब राति सराह विभूती
दिन उठि बिदा अवधपति मांगा ❀ राखहिं जनक सहित अनुरागा
नित नूतन आदर अधिकाई ❀ दिन प्रति सहस भाँति पहुनाई
नित नव नगर अनन्द उछाहू ❀ दशरथ गमन सुहाइ न काहू
बहुत दिवस बीते यहि भाँती ❀ जनु सनेहरजुं बँधे बराती
कौशिक शतानन्द तब जाई ❀ कह्यो विदेह नृपहि समुझाई
अब दशरथ कहँ आयसु देहू ❀ यद्यपि छांड़ि न सकहु सनेहू
भलेहि नाथ कहि सचिव बुलाये ❀ कहि जय जीव शीश तिन नाये

दो० अवधनाथ चाहत चलन, भीतर करहु जनाव।
भये प्रेमवश सचिव सुनि, विप्र सभासद राव॥

पुरवासी सुनि चली बराता ❀ पूंछत विकल परस्पर बाता
सत्य गमन सुनि सब बिलखाने ❀ मनहुँ सांझ सरसिज सकुचाने
जहँ जहँ आवत बसे बराती ❀ तहँ तहँ सीध चला बहु भाँती
विविध भाँति मेवा पकवाना ❀ भोजन साज न जाइ बखाना
भरि भरि वसहँ अपार कहारा ❀ पठये जनक अनेक सुआरा
तुरँग लाख रथ सहस पचीसा ❀ सकल सँवारे नख अरु शीशा
मत्त सहस दश सिन्धुर साजे ❀ जिनहिं देखि दिशिकुंजर लाजे
कनक वसन मणि भरि भरि याना ❀ महिषी धेनु वस्तु विधि नाना

१ राजा २ लाभ ३ सोना ४ रथ ५ नवीन ६ हजार ७ प्रेमडोरि ८ कमल ९ बैल १० हाथी॥

दो॰ दायजअमित न जायकहि, दीन्ह विदेहं बहोरि।
जो अवलोकत लोकपति, लोक सम्पदा थोरि॥

सब समाज यहि भाँति बनाई ❀ जनक अवधपुर दीन्ह पठाई
चली बरात सुनत सब रानी ❀ विकल मीनगण जिमि लघुपानी
पुनि पुनि सीय गोद करि लेहीं ❀ देइ अशीश सिखावन देहीं
ह्वैहहु सन्तत पियहि पियारी ❀ चिर अहिवात अशीश हमारी
सासु श्वशुर गुरु सेवा करेहू ❀ पतिरुख लखि आयसु अनुसरेहू
अति सनेह वश सखी सयानी ❀ नारिधर्म सिखवहिं मृदु बानी
सादर सकल कुँवरि समुझाई ❀ रानिन बार बार उर लाई
बहुरि बहुरि भेंटहिं महतारी ❀ कहहिं विरंचि रची कत नारी

दो॰ तेहि अवसर भाइन सहित, राम भानुकुल केतु।
चले जनकमन्दिर मुदित, बिदा करावन हेतु॥

चारिउ भाइ सुभाय सुहाये ❀ नगर नारि नर देखन धाये
कोउ कह चलन चहत हैं आजू ❀ कीन्ह विदेह बिदा कर साजू
लेहु नयन भरि रूप निहारी ❀ प्रिय पाहुने भूपसुत चारी
को जानै केहि सुकृत सयानी ❀ नयनअतिथि कीन्हे विधि आनी
मरणशील जिमि पाव पियूखा ❀ सुरतरु लहै जन्म कर भूखा
पाव नारकी हरिपद जैसे ❀ इनकर दर्शन हम कहँ तैसे
निरखि राम शोभा उर धरहू ❀ निज मन फणि मूरति मणिकरहू
यहि विधि सबहिं नयन फल देता ❀ गये कुँवर सब राजनिकेता

दो॰ रूपसिन्धु सब बन्धु लखि, हरषि उठीं रनिवासु।
करहिं निछावरि आरती, महामुदित मन सासु॥

देखि रामछवि अति अनुरागीं ❀ प्रेमविवश पुनि पुनि पद लागीं
रही न लाज प्रीति उर छाई ❀ सहज सनेह वरणि नहिं जाई
चारिउ भाइ उबटि नहवाये ❀ छरस अशन अति हेतु जिंवाये

१ जनक २ मछली ३ सुहाग ४ आज्ञा ५ पताका ६ पुण्य ७ अमृत ८ राजगृह ९ भोजन॥

बोले राम सुअवसर जानी ❀ शील सनेह सकुचमय बानी
राव अवधपुर चहत सिधाये ❀ बिदाहोन हित हमहिं पठाये
मातु मुदित मन आयसु[२] देहू ❀ बालक जानि करब नितनेहू
सुनत वचन बिलखेउ रनिवासू ❀ बोलि न सकहिं प्रेमवश सासू
हृदय लगाइ कुँवरि सब लीन्हीं ❀ पतिन सौंपि विनती अति कीन्हीं

छं० करिविनयसियरामहिंसमर्पी[३]जोरिकरपुनिपुनिकहै।
बलिजाउँ तातसुजान[४] तुमकहँ विदितगति सबकी अहै॥
परिवार पुरजन मोहिं राजहिं प्राणप्रिय सिय जानवी।
तुलसी सुशील सनेह लखि निज किंकरी[५]करि मानवी॥

सो० तुम परिपूरण काम, ज्ञान शिरोमणि भावप्रिय।
जन गुण ग्राहक राम, दोषदलन[६] करुणायतन॥

अस कहि रही चरण गहि रानी ❀ प्रेम पङ्क[७] जनु गिरा समानी
सुनि सनेह सानी वर बानी ❀ बहु विधि राम सासु सनमानी
राम बिदा मांगेउ कर जोरी ❀ कीन्ह प्रणाम बहोरि बहोरी
पाइ अशीश बहुरि शिर नाई ❀ भाइन सहित चले रघुराई
मंजु मधुर मूरति उर आनी ❀ भई सनेह शिथिल सब रानी
पुनि धीरज धरि कुँवरि हँकारी ❀ बार बार भेंटहिं महतारी
पहुँचावहिं फिरि मिलहिं बहोरी ❀ बढ़ी परस्पर प्रीति न थोरी
पुनि पुनि मिलति सखिन बिलगाई ❀ बालवत्स जनु धेनु लवाई

दो० प्रेमविवश नर नारि सब, सखिन सहित रनिवास।
मानहुँ कीन्ह विदेहपुर, करुणा विरह निवास॥

शुक सारिका[८] जानकी ज्याये ❀ कनक पींजरन राखि पढ़ाये
व्याकुल कहहिं कहां वैदेही ❀ सुनि धीरज परिहरै न केही
भये विकल खगमृग यहि भाँती ❀ मनुज दशा कैसे कहि जाती
बन्धु समेत जनक तब आये ❀ प्रेम उमँगि लोचन जल छाये

१ राजा २ आज्ञा ३ सौंपी ४ चतुर ५ दासी ६ नाशक ७ कीच ८ मैना॥

सीय विलोकि धीरता भागी ❀ रहे कहावत परम विरागी[1]
लीन्ह लाय उर[2] जनक जानकी ❀ मिटी महा मर्य्याद[3] ज्ञान की
समुझावत सब सचिव[4] सयाने ❀ कीन्ह विचार अनवसर जाने
बारहिं बार सुता उर लाई ❀ साजि सुन्दरि पालकी मँगाई

दो० प्रेमविवश परिवार सब, जानि सुलगन नरेश।
कुँवरि चढ़ाई पालकिन, सुमिरे सिद्ध गणेश॥

बहु विधि भूप सुता समुझाई ❀ नारि धर्म कुलरीति सिखाई
दासी दास दिये बहुतेरे ❀ शुचि सेवक जे प्रिय सिय केरे
सीय चलत व्याकुल पुरवासी ❀ होहिं शकुन शुभ मंगलरासी
भूसुर सचिव समेत समाजा ❀ संग चले पहुँचावन राजा
समय विलोकि बाजने बाजे ❀ रथ गज वाजि बरातिन साजे
दशरथ विप्र बोलि सब लीन्हे ❀ दान मान परिपूरण कीन्हे
चरण सरोज धूरि धरि शीशा ❀ मुदित महीपति पाइ अशीशा
सुमिरि गजानन[5] कीन्ह पयाना[6] ❀ मंगलमूल शकुन भे नाना

दो० सुर प्रसून वर्षहिं हरषि, करहिं अप्सरा गान।
चले अवधपति अवधकहँ, मुदित बजाय निशान[7]॥

नृप करि विनय महाजन फेरे ❀ सादर सकल मांगने टेरे
भूषण वसन वाजि[8] गज दीन्हे ❀ प्रेम पोषि ठाढ़े सब कीन्हे
बार बार विरदावलि भाखी ❀ फिरे सकल रामहिं उर राखी
बहुरि बहुरि कोशलपति कहहीं ❀ जनक प्रेमवश फिरा न चहहीं
पुनि कह भूपति वचन सुहाये ❀ फिरिय महीप[9] दूरि बड़ि आये
राव बहोरि उतरि भये ठाढ़े ❀ प्रेम प्रवाह विलोचन बाढ़े
तब विदेह बोले कर जोरी ❀ वचन सनेह सुधा[10] जनु बोरी
करौं कवन विधि विनय बनाई ❀ महाराज मोहिं दीन्ह बड़ाई

दो० कोशलपति समधी जनक, सनमाने सब भाँति।

---
१ त्यागी २ हृदय ३ हद ४ मंत्री ५ गणेश ६ कूच ७ नगाड़ा ८ घोड़ा ९ राजा १० अमृत॥

मिलनपरस्परविनयअति, प्रीति न हृदयसमाति॥
मुनिमण्डलिहि जनक शिर नावा ❀ आशिरवाद सबहिं सन पावा
सादर पुनि भेंटेउ जामाता ❀ रूप शील गुणनिधि सब भ्राता
जोरि पंकरुह पाणि सुहाये ❀ बोले वचन प्रेम जनु छाये
राम करौं केहि भाँति प्रशंसा ❀ मुनि महेश मन मानस हंसा
करहिं योग योगी जेहि लागी ❀ कोहँ मोह ममता मंद त्यागी
व्यापक ब्रह्म अलख अविनाशी ❀ चिदानन्द निर्गुण गुणराशी
मन समेत जेहि जान न बाँनी ❀ तरकि न सकहिं सकल अनुमानी
महिमा निगम नेति करि कहहीं ❀ जो तिहुँ काल एकरस रहहीं

दो॰ नयनविषय मोकहँ भयउ, सो समस्त सुखमूल।
सबहिं लाभ जग जीव कहँ, भये ईश अनुकूल॥

सबहि भाँति मोहिं दीन्ह बड़ाई ❀ निज जन जानि लीन्ह अपनाई
होहिं सहस शत शारद शेखा ❀ करहिं कल्प कोटिक भरि लेखा
मोरि भाग्य राउर गुणगाथा ❀ कहि न सिराहिं मुनिय रघुनाथा
मैं कछु कहौं एक बल मोरे ❀ तुम रीझहु सनेह सुठि थोरे
बार बार मांगौं कर जोरे ❀ मन परिहरै चरण जनि भोरे
सुनि वर वचन प्रेम जनु पोषे ❀ पूरण काम राम परितोषे
करि वर विनय श्वशुर सनमाने ❀ पितु कौशिक वशिष्ठ सम जाने
विनती बहुरि भरत सन कीन्हीं ❀ मिलि सप्रेम पुनि आशिष दीन्हीं

दो॰ मिलेलषणरिपुसूदनहिं, दीन्ह अशीश महीश।
भये परस्पर प्रेमवश, फिरिफिरिनावहिंशीश॥

बारबार करि विनय बड़ाई ❀ रघुपति चले संग सब भाई
जनक गहे कौशिक पदजाई ❀ चरणरेणु शिर नयनन लाई
सुनु मुनीश सब दर्शन तोरे ❀ अगम न कछु प्रतीति मन मोरे
जो सुख सुयश लोकपति चहहीं ❀ करत मनोरथ सकुचत अहहीं

१ नम्रता २ दामाद ३ कमल ४ रिस ५ घमंड ६ गिरा ७ सम्पूर्ण ८ विश्वामित्र ९ निश्चय॥

सो सुख सुयश सुलभ म्वहिं स्वामी ❀ सब विधि तव दर्शन अनुगामी
कीन्ह विनय पुनि पुनि शिर नाई ❀ फिरे मंहीपति आशिष पाई
चली बरात निशान बजाई ❀ मुदित छोट बड़ सब समुदाई
रामहिं निरखि ग्राम नर नारी ❀ पाइ नयनफल होहिं सुखारी

दो० बीच बीच वर वास करि, मगलोगन सुख देत।
अवध समीप पुनीत दिन, पहुँची आय जनेत॥

हने निशान पणव बहु बाजे ❀ भेरि शंखध्वनि हय गय गाजे
झांझ मृदंग दुन्दुभी सुहाई ❀ सरस राग बाजैं सहनाई
पुरजन आवत अकनि बराता ❀ मुदित सकल पुलकावलि गाता
निज निज सुन्दर सदनं सँवारे ❀ हाट बाट चौहट पुर द्वारे
गली सकल अरगजा सिंचाई ❀ जहँ तहँ चौकैं चारु पुराई
बना बजार न जात बखाना ❀ तोरणं केतु पताक विताना
सफल पुंगफल कदलि रसाला ❀ रोपे बकुल कदम्ब तमाला
लगे सुभग तरु परसत धरणी ❀ मणिमय आलँबाल कलकरणी

दो० विविधभाँति मंगल सकल, गृह गृह रचे सँवारि।
सुर ब्रह्मादि सिहाहिं सब, रघुवरपुरी निहारि॥

भूप भवन तेहि अवसर सोहा ❀ रचना देखि मदन मन मोहा
मङ्गल शकुन मनोहरताई ❀ ऋधि सिधि सुख सम्पदा सुहाई
जनु उछाह सब सहज सुहाये ❀ तनु धरि धरि दशरथगृह आये
देखन हेतु राम वैदेही ❀ कहहु लालसा होइ न केही
यूथ यूथ मिलि चलीं सुवासिनि ❀ निजछविनिदरहिंमदनविलासिनि
सकल सुमंगल सजे आरती ❀ गावहिं जनु बहु वेष भारती
भूपति भवन कुलाहल होई ❀ जाइ न वरणि समय सुख सोई
कौशल्यादि राम महतारी ❀ प्रेम विवश तनु दशा बिसारी

दो० दिये दान विप्रन विपुल, पूजि गणेश पुरारि।

१ राजा २ राही ३ बरात ४ घर ५ बंदनवार ६ आम ७ थालहा ८ कामदेव ९ सरस्वती॥

प्रमुदित परम दरिद्र जनु, पाइ पदारथ चारि ॥

प्रेम प्रमोद विवश सब माता ❀ चलहिं न चरण शिथिल[2]सबगाता
राम दरश हित अति अनुरागीं ❀ परिछन साज सजन सब लागीं
विविध विधान बाजने बाजे ❀ मंगल मुदित सुमित्रा साजे
हरद दूब दधि पल्लव फूला ❀ पान पुंगफल मंगल मूला
अच्छत अंकुर रोचन लाजा ❀ मंजुल मंजरि तुलसि विराजा
छुहे पुरट घट सहज सुहाये ❀ मदन[3] शकुनि जनु नीड़[5] बनाये
शकुन सुगन्ध न जाहिं बखानी ❀ मंगल सकल सजहिं सब रानी
रचीं आरती विविध विधाना ❀ मुदित करहिं कल मंगलगाना

दो॰ कनकथारभरि मंगलनि, कमलकरन लिये मात ।
चलींमुदितपरिछनकरन, पुलकप्रफुल्लित गात ॥

धूप धूम नभ मेचक[6] भयऊ ❀ सावन घन घमंड जनु छयऊ
सुरतरु सुमनमाल सुर वर्षहिं ❀ मनहुँ बलाकअवलि मन कर्षहिं
मंजुल मणिमय बन्दनवारा ❀ मनहुँ पार्क[8]रिपु चाप सँवारा
प्रकटहिं दुरहिं अटन पर भामिनि ❀ चारु चपल जनु दमकहिं दामिनि
दुन्दुभि ध्वनि घन गरजहिं घोरा ❀ याचक चातक दादुर मोरा
सुर सुगन्धि शुचि वरषहिं वारी ❀ सुखी सकल ससि पुर नर नारी
समय जानि गुरु आयसु दीन्हा ❀ पुर प्रवेश रघुकुलमणि कीन्हा
सुमिरि शम्भु गिरिजा[9] गणराजा ❀ मुदित महीपति सहित समाजा

दो॰ होहिं शकुन वरषहिं सुमन, सुर दुन्दुभी बजाइ ।
विबुधवधू नाचहिं मुदित, मंजुल मंगल गाइ ॥

मागध सूत वन्दि नट नागर ❀ गावहिं यश तिहुँ लोक उजागर
जयध्वनि विमल वेद वर बानी ❀ दश दिशि सुनिय सुमंगलखानी
विपुल बाजने बाजन लागे ❀ नभ सुर नगर लोग अनुरागे
बने बराती वरणि न जाहीं ❀ महा मुदित मन सुख न समाहीं

१ प्रसन्न २ ढीला ३ कामदेव ४ पक्षी ५ घोंसला ६ श्यामता ७ बकपांति ८ इन्द्र ९ पार्वती ॥

पुरवासिन तब राव जुहारे ❀ देखत रामहिं भये सुखारे
करहिं निछावरि मणिगण चीरा ❀ वारि विलोचन पुलक शरीरा
आरति करहिं मुदित पुरनारी ❀ हरषहिं निरखि कुँवर वर चारी
शिबिका सुभग ओहार उघारी ❀ देखि दुलहिनिन होहिं सुखारी

दो॰ यहिविधि सबही देत सुख, आये राजदुवार।
मुदितमातु परिछनकरहिं, बधुन समेत कुमार॥

करहिं आरती बारहिंबारा ❀ प्रेम प्रमोद कहै को पारा
भूषण मणि पट नाना जाती ❀ करहिं निछावरि अगणित भाँती
बधुन समेत देखि सुत चारी ❀ परमानन्द मगन महतारी
पुनि पुनि सीय रामछवि देखी ❀ मुदित सफल जगजीवन लेखी
सखी सीय मुख पुनि पुनि चाही ❀ गान करहिं निज सुकृत सराही
वरषहिं सुमन क्षणहिंक्षण देवा ❀ नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा
देखि मनोहर चारिउ जोरी ❀ शारद उपमा सकल ढँढोरी
देत न बनै निपट लघु लागी ❀ इकटक रही रूप अनुरागी

दो॰ निगमनीति कुलरीतिकरि, अर्घ्य पांवड़े देत।
बधुनसहित सुतपरछि सब, चलीं लिवाय निकेत॥

चारि सिंहासन सहज सुहाये ❀ जनु मनोज निज हाथ बनाये
तिनपर कुँवरि कुँवर बैठारे ❀ सादर पायँ पुनीत पखारे
धूप दीप नैवेद्य वेद विधि ❀ पूजे वर दुलहिनि मंगलनिधि
बारहिंबार आरती करहीं ❀ व्यजन चारु चामर शिर ढुरहीं
वस्तु अनेक निछावरि होहीं ❀ भरीं प्रमोद मातु सब सोहीं
पावा परमतत्त्व जनु योगी ❀ अमृत लह जनु सन्तत रोगी
जन्म रंक जनु पारस पावा ❀ अन्धहि लोचन लाभ सुहावा
मूक वदन जस शारद छाई ❀ मानहुँ समर शूर जय पाई

दो॰ यहि सुखते शतकोटि गुण, पावहिं मातु अनन्द।

१ राजा २ जल ३ पालकी ४ पर्दा ५ वस्त्र ६ देखके ७ कामदेव ८ पंखा ९ गरीब ॥

भाइनसहित विवाहि घर, आये रघुकुलचंन्द[1]।
लोकरीति जननी[2] करहिं, वरदुलहिनि सकुचाहिं।
मोद[3]विनोद विलोकिबड़, राममनहिं मुसुकाहिं॥

देव पितर पूजे विधि नीकी ❁ पूजी सकल वासनों[4] जीकी
सबहिं वन्दि मांगहिं वरदाना ❁ भाइन सहित राम कल्याना
अन्तरहित सुर आशिष देहीं ❁ मुदित मातु अंचल भरि लेहीं
भूपति बोलि बरातिन लीन्हें ❁ यान[5] वसन मणि भूषण दीन्हें
आयसु पाइ राखि उर रामहिं ❁ मुदित[6] गये सब निज निज धामहिं
पुर नर नारि सकल पहिराये ❁ घर घर बाजहिं अनँद बधाये
याचक जन याचहिं जोइ जोई ❁ प्रमुदित राव देइँ सोइ सोई
सेवक सकल बजनियां नाना ❁ पूरण किये दान सनमाना

दो० देहिं अशीश जुहारि सब, गावहिं गुण गण गाथ।
तब गुरु भूसुर सहित गृह, गमन कीन्ह नरनाथ॥

जो वशिष्ठ अनुशासन दीन्हा ❁ लोक वेद विधि सादर कीन्हा
भूसुर भीर देखि सब रानी ❁ सादर उठीं भाग्य बड़ जानी
पायँ पखारि सकल नहवाये ❁ पूजि भली विधि भूप जेंवाये
आदर दान प्रेम परिपोषे ❁ देत अशीश चले मन तोषे
बहुविधि कीन्ह गाधिसुत[7] पूजा ❁ नाथ मोहिं सम धन्य न दूजा
कीन्ह प्रशंसा भूपति भूरी ❁ रानिन सहित लीन्ह पग धूरी
भीतर भवन दीन्ह वर वासू ❁ मन जुगवत सब नृप रनिवासू
पूजे गुरुपद कमल बहोरी ❁ कीन्ह विनय उरप्रीति न थोरी

दो० बधुन समेत कुमार सब, रानिन सहित महीश।
पुनि पुनि वन्दत गुरुचरण, देत अशीश मुनीश॥

विनय कीन्ह उर अति अनुरागे ❁ सुत सम्पदा राखि सब आगे
नेग मांगि मुनिनायक लीन्हा ❁ आशिरवाद बहुत विधि दीन्हा

१ रामचन्द्र २ माता ३ खुशी ४ इच्छा ५ सवारी ६ प्रसन्न ७ विश्वामित्र॥

उर धरि रामहिं सीय समेता ❀ हरषि कीन्ह गुरु गमन निकेता
विप्र बधू कुल वृद्ध बुलाई ❀ चीरं[2] चारु भूषणं[3] पहिराई
बहुरि बुलाइ सुवासिनि लीन्हीं ❀ रुचि विचारि पहिरावनि दीन्हीं
नेगी नेग योग सब लेहीं ❀ रुचि अनुरूप भूपमणि देहीं
प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने ❀ भूपति भलीभाँति सनमाने
देव देखि रघुवीर विवाहू ❀ वरषि प्रसूनं[4] प्रशंसि उछाहू

दो० चले निशान बजाइ सुर, निज निज पुर सुखपाइ।
कहत परस्पर रामयश, हर्ष न हृदय समाइ॥

सब विधि सबहिं समदि नरनाहू ❀ रहा हृदय भरिपूरि उछाहू[5]
जहँ रनिवास तहां पगु धारे ❀ सहित बधूटिन कुँवर निहारे
लिये गोद करि मोद समेता ❀ को कहि सकै भयउ सुख जेता
बधू सप्रेम गोद बैठारी ❀ बार बार हियँ[6] हरषि दुलारी
देखि समाज मुदित रनिवासू ❀ सब के उर आनँद किय वासू
कह्यो भूप जिमि भयउ विवाहू ❀ सुनि सुनि हर्ष होत सब काहू
जनकराज गुण शील बड़ाई ❀ प्रीतिरीति सम्पदा सुहाई
बहुविधि भूप भाट जिमि वरणी ❀ रानी सब प्रमुदित सुनि करणी

दो० सुतन समेत नहाइ नृप, बोलि विप्र गुरु ज्ञाति।
भोजनकिये अनेक विधि, घरी पांच गइ राति॥

मंगल गान करहिं वर भामिनि ❀ भइ सुखमूल मनोहर यामिनि[8]
अँचै पान सब काहू पाये ❀ स्रग[9] सुगन्ध भूषित छवि छाये
रामहिं देखि रजायसु पाई ❀ निज निज भवन चले शिर नाई
प्रेम प्रमोद विनोद बड़ाई ❀ समय समाज मनोहरताई
कहि न सकहिं शत शारदशेशू ❀ वेद विरंचि महेश गणेशू
सो मैं कहौं कवन विधि वरणी ❀ भूमि नाग शिर धरै कि धरणी
नृप सब भाँति सबहि सनमानी ❀ कहि मृदुवचन बुलाई रानी

१ बर २ वस्त्र ३ जेवर ४ पुष्प ५ उमंग ६ हृदय ७ खुशी ८ रात्रि ९ फूलों की माला॥

बधू लरिकिनी पर घर आईं ❀ राखेहु नयन पलक की नाईं

दो० लरिका श्रमित उनींदवश, शयन करावहु जाइ।
असकहि गे विश्रामगृह, रामचरण चितलाइ॥

भूप वचन सुनि सहज सुहाये ❀ जड़ित कनकमणि पलँग डसाये
सुभग सुरभि[२] पयफेनु[३] समाना ❀ कोमल कलित सफेदी नाना
उपबर्हण[४] वर बरणि न जाहीं ❀ स्रग सुगन्ध मणिमन्दिर माहीं
रत्न दीप सुठि चारु चँदोवा ❀ कहत न बनै जानु जेहिं जोवा
सेज रुचिर रचि राम उठाये ❀ प्रेम समेत पलँग पौढ़ाये
आज्ञा पुनि पुनि भाइन दीन्हीं ❀ निजनिजसेजशयन तिनकीन्हीं
देखि श्याम मृदु मंजुल गाता ❀ कहहिं सप्रेम वचन सब माता
मारग जात भयानक भारी ❀ केहि विधि तात ताड़का मारी

दो० घोर निशाचर विकट भट, समर गनै नहिं काहु।
मारे सहित सहाय किमि, खल मारीच सुबाहु॥

मुनि प्रसाद बलि तात तुम्हारी ❀ ईश अनेक करिवैं टारी
मख रखवारी करि दुहुँ भाई ❀ गुरु प्रसाद सब विद्या पाई
मुनितिय[५] तरी लगत पग धूरी ❀ कीरति रही भुवन भरि पूरी
कमठ[६] पीठि पँवि[७] कूट कठोरा ❀ नृपसमाज महँ शिवधनु तोरा
विश्व विजय यश जानकि पाई ❀ आये भवन ब्याहि सब भाई
सकल अमानुष कर्म तुम्हारे ❀ केवल कौशिक कृपा सुधारे
आजु सफल जग जन्म हमारा ❀ देखि तात विधुवदन तुम्हारा
जे दिन गये तुमहिं बिनु देखे ❀ ते विरंचि जनि पारहिं लेखे

दो० राम प्रतोषी मातु सब, कहि विनीत वर बयन।
सुमिरि शम्भु गुरु विप्रपद, किये नींद वश नयन॥

उनिदहु वदन सोह सुठि लोना ❀ मनहुँ सांझ सरसीरुह[८] सोना
घर घर करहिं जागरण नारी ❀ देहिं परस्पर मंगल गारी

१ थके २ गौ ३ दूध का फेना ४ तकिया ५ अहल्या ६ कच्छप ७ वज्र ८ कमल॥

पुरी बिराजति राजति रजनी ❀ रानी कहहिं विलोकहु सजनी
सुन्दरि बधुन सासु लै सोई ❀ फणिपति जनु शिरमणि उर गोई
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे ❀ अरुणचूड़ वर बोलन लागे
वन्दी मागध गुण गण गाये ❀ पुरजन द्वार जुहारन आये
वन्दि विप्र सुर गुरु पितु माता ❀ पाइ अशीश मुदित सब भ्राता
जननिन सादर वदन निहारे ❀ भूपति संग द्वार पगु धारे

दो० कीन्हशौच सबसहजशुचि, सरितैं पुनीत नहाइ।
प्रातक्रिया करि तात पहँ, आये चारिउ भाइ॥

भूप विलोकि लिये उर लाई ❀ बैठे हरषि रजायसु पाई
देखि राम सब सभा जुड़ानी ❀ लोचनलाभ अवधि अनुमानी
पुनि वशिष्ठ मुनि कौशिक आये ❀ आसन सुभग मुनिन बैठाये
सुतन समेत पूजि पद लागे ❀ निरखि राम दोउ गुरु अनुरागे
कहहिं वशिष्ठ धर्म इतिहासा ❀ सुनहिं महीप सहित रनिवासा
मुनि मन अगम गाधिसुत करणी ❀ मुदित वशिष्ठ विपुल विधि वरणी
बोले वामदेव सब सांची ❀ कीरति कलित लोक तिहुँ माची
सुनि आनन्द भयउ सब काहू ❀ रामलषण उर अधिक उछाहू

दो० मंगल मोद उछाह नित, जाहिं दिवस यहिभाँति।
उमँगिअवधआनंदभरि, अधिकअधिकअधिकाति

सुदिन शोधि कर कंकण छोरे ❀ मंगल मोद विनोद न थोरे
नित नव सुख सुर देखि सिहाहीं ❀ अवध जन्म याचहिं विधि पाहीं
विश्वामित्र चलन नित चहहीं ❀ राम सप्रेम विनय वश रहहीं
दिन दिन सौगुण भूपति भाऊ ❀ देखि सराह महा मुनिराऊ
मांगत बिदा राव अनुरागे ❀ सुतन समेत ठाढ़ भे आगे
नाथ सकल सम्पदा तुम्हारी ❀ मैं सेवक समेत सुत नारी
करब सदा लरिकन पर छोहू ❀ दर्शन देत रहब मुनि मोहू

१ शोभित २ रात्रि ३ मुर्गा ४ नदी ५ आज्ञा ६ हद्द ७ बहुत ८ आनंद ९ देवता॥

अस कहि राव सहित सुत रानी ❁ परेउ चरण मुख आव न बानी
दीन्ह अशीश ऋषय बहु भाँती ❁ चले न प्रीति रीति कहि जाती
राम सप्रेम संग सब भाई ❁ आयसु[१] पाइ फिरे पहुँचाई

दो० रामरूप भूपति भगति, ब्याह उछाह अनन्द ।
जातसराहत मनहिंमन, मुदित गाँधिकुलचन्द[२] ॥

वामदेव अरु कुलगुरु ज्ञानी ❁ बहुरि गाधिसुत कथा बखानी
सुनि मुनि सुयश मनहिं मन राऊ ❁ वरणत आपन पुण्य प्रभाऊ
बहुरे लोग रजायसु भयऊ ❁ सुतन समेत नृपति गृह[३] गयऊ
जहँ तहँ राम ब्याह सब गावा ❁ सुयश पुनीत[४] लोक तिहुँ छावा
आये ब्याहि राम घर जब ते ❁ बसे अनन्द अवध सब तब ते
प्रभु विवाह जस भयउ उछाहा ❁ सकहिं न वरणि गिरा अहिनाहा[५]
कविकुल जीवन पावन[६] जानी ❁ राम सीय यश मंगल खानी
तेहि ते मैं कछु कहा बखानी ❁ करन पुनीत हेतु निज बानी

छं० निज गिरा पावनकरन कारनरामयशतुलसीकह्यो ।
रघुवीर चरित अपार वाँरिधि[७] पार कवि कवने लह्यो ॥
उपवीत ब्याह उछाह मंगल सुनहिं सादर गावहीं ।
वैदेहि रामप्रसाद ते जन सर्वदा सुख पावहीं ॥
सुनि गाय कहौं गिरीशकन्या धन्य अधिकारी सही ।
नित प्रीति अनुपम सुनत हरिगुण भक्ति अनुपम ते लही ॥
रघुवीर पद अनुराग जल लोभाग्नि वेगि बुझावई ।
यह जानि तुलसीदास मन क्रम वचन हरिगुण गावई ॥

दो० कठिन काल मल ग्रासित तनु, साधन कछु कन होइ ।
यह विचारि विश्वास करि, हरि सुमिरै बुध सोइ ॥

१ आज्ञा २ विश्वामित्र ३ घर ४ पवित्र ५ शेष ६ पवित्र ७ समुद्र ॥

सो० मन हरिपद अनुराग, करहु त्यागि नाना कपट।
महामोह निशिजाग, सोवत बीते काल बहु॥
सिय रघुवीर विवाह, जे सप्रेम गावहिं सुनहिं।
तिन कहँ सदा उछाह, मंगलायतन रामयश॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने बालकाण्डे विमल-वैराग्यसंपादनो नाम प्रथमस्सोपानः॥ १॥

श्रीगोस्वामि

तुलसीदासकृत रामायण

अयोध्याकाण्ड

मङ्गलाचरणम् ॥

श्लोक ॥ वामाङ्के च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्याल राट् । सोयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशंकरः पातु माम् ॥ १ ॥ प्रसन्नतां या न गताभिषेकतस्तथा न मम्लौ वनवास दुःखतः । मुखाम्बुजश्रीरघुनन्दनस्यसा सदास्तुतन्मञ्जु लमङ्गलप्रदा ॥ २ ॥ नीलाम्बुजश्यामलकामलाङ्गं सीतासमारोपितवामभागम् । पाणौ महाशायकचारु चापंनमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥ ३ ॥

दो० श्रीगुरुचरण सरोजरज, निजमन मुकुरंसुधारि।
वरणौं रघुवर विमलयश, जो दायक फल चारि॥

जबते राम ब्याहि घर आये ❀ नित नव मंगल मोद बधाये
भुवन चारिदश भूधर[२] भारी ❀ सुकृत मेघ वरषहिं सुखवारी
ऋधि सिधि सम्पति नदी सुहाई ❀ उमँगि अवध अम्बुधि[३] कहँ आई
मणिगण पुर नर नारि सुजाती ❀ शुचि अमोल सुन्दर सब भाँती
कहि न जाइ कछु नगर विभूती ❀ जनु इतनी विरंचि करतूती
सब विधि सब पुरलोग सुखारी ❀ रामचन्द्र मुखचन्द्र निहारी
मुदित मातु सब सखी सहेली ❀ फलित विलोकि मनोरथ बेली
रामरूप गुण शील स्वभाऊ ❀ प्रमुदित होहिं देखि मुनिराऊ

दो० सबके उर अभिलाष अस, कहहिं मनाइ महेश[४]।
आपु अछत युवराजपद, रामहिं देहिं नरेश॥

एक समय सब सहित समाजा ❀ राजसभा रघुराज विराजा
सकल सुकृत[५] मूरति नरनाहू ❀ राम सुयश सुनि अतिहि उछाहू
नृप सब रहहिं कृपा अभिलाखे ❀ लोकप रहहिं प्रीति रुख राखे
त्रिभुवन तीनि काल जग माहीं ❀ भूरि भाग्य दशरथ सम नाहीं
मंगलमूल राम सुत जासू ❀ जो कछु कहिय थोर सब तासू
राव स्वभाव मुकुर कर लीन्हा ❀ वदन विलोकि मुकुट सम कीन्हा
श्रवण समीप भये सित केशा ❀ मनहुँ जरठपन अस उपदेशा
नृप युवराज राम कहँ देहू ❀ जीवन जन्म लाभ किन लेहू

दो० असविचारि उर आनिनृप, सुदिनसुअवसर पाइ।
प्रेमपुलकितनु मुदित मन, गुरुहिं सुनायउ जाइ॥

कह्यो भुवाल सुनिय मुनिनायक ❀ भये राम सब विधि सब लायक
सेवक सचिव[७] सकल पुरवासी ❀ जे हमार अरि[८] मित्र उदासी
सबहिं राम प्रिय जेहि विधि मोहीं ❀ प्रभु अशीश जनु तनु धरि सोहीं

१ शीशा २ पर्वत ३ समुद्र ४ महादेव ५ धर्म ६ सफ़ेद ७ मंत्री ८ बैरी॥

विप्र सहित परिवार गुसाईं ❀ करहिं छोह सब रौरेहि नाईं
जे गुरुचरण रेणु शिर धरहीं ❀ ते जनु सकल विभव वश करहीं
मोहिं सम यहि जग भयउ न दूजा ❀ सब पायउँ प्रभुपद रज[2] पूजा
अब अभिलाष एक मन मोरे ❀ पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरे
मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेहू ❀ कह्यो नरेश रजायसु[3] देहू

दो॰ राजन राउर नामयश, सब अभिमतदातार।
फलअनुगामीमहिपमणि, मनअभिलाषतुम्हार॥

सब विधि गुरु प्रसन्न जिय जानी ❀ बोल्यो राव हरषि मृदु बानी
नाथ राम करिये युवराजू ❀ कहिय कृपा करि करिय समाजू
मोहिं अछत यह होइ उछाहू ❀ लहहिं लोग सब लोचनलाहू
प्रभु प्रसाद शिव सबै निबाहीं ❀ यह लालसा एक मन माहीं
पुनि न शोच तनु रहै कि जाऊ ❀ जेहि न होइ पाछे पछिताऊ
सुनि मुनि दशरथ वचन सुहाये ❀ मंगलमूल मोद मन भाये
सुनु नृप जासु विमुख पछिताहीं ❀ जासु भजन बिनु जरनि न जाहीं
भयउ तुम्हार तनय सोइ स्वामी ❀ राम पुनीत प्रेम अनुगामी

दो॰ वेगि विलम्ब न करिय नृप, साजिय सकल समाज।
सुदिन सुमंगल तबहिं जब, राम होहिं युवराज॥

मुदित महीपति मन्दिर आये ❀ सेवक सचिव[8] सुमन्त बुलाये
कहि जय जीव शीश तिन नाये ❀ भूप सुमंगल वचन सुनाये
प्रमुदित मोहिं कह्यो गुरु आजू ❀ रामहिं राव देहु युवराजू
जो पांचहि मत लागै नीका ❀ करहु हरषि हिय रामहिं टीका
मन्त्री मुदित सुनत प्रियबानी ❀ अभिमत बिरव परेउ जनु पानी
विनती सचिव करहिं कर जोरी ❀ जियहु जगतपति वर्ष करोरी
जग मंगल भल काज विचारा ❀ वेगि नाथ नहिं लाइय बारा
नृपहिं मोद मन सचिव सुभाखा ❀ बढ़त बौंड़ि जनु लही सुशाखा

१ [illegible] २ धूलि ३ आज्ञा ४ मनमाना ५ सन्मुख ६ लाभ ७ आनन्द ८ मन्त्री ९ बेलि॥

दो० कहेउ भूप मुनिराजकर, जोइ जोइ आयसु होइ।
रामराज्य अभिषेकहित, वेगि करिय सोइ सोइ॥

हरषि मुनीश कह्यो मृदु बानी ❁ आनहु सकल सुतीरथ पानी
औषध मूल फूल फल पाना ❁ कहे नाम गनि मंगल नाना
चामर चर्म वसन बहु भाँती ❁ रोमपाट[1] पट अगणित जाती
मणिगण मंगल वस्तु अनेका ❁ जो जग योग्य भूप अभिषेका
वेदविहित कहि सकल विधाना ❁ कह्यो रचहु पुर विविध वितौना[2]
सफल रसालें[3] पुंगफलें[4] केरा ❁ रोपहु वीथिन पुर चहुँ फेरा
रचहु मंजुमणि चौकें चारू ❁ कहेउ बनावन वेगि बजारू
पूजहु गणपति कुलगुरु देवा ❁ सब विधि करहु भूमिसुर सेवा

दो० ध्वजपताक तोरण कलश, सजहु तुरँग रथ नाग[5]।
शिरधरि मुनिवर वचन सब, निज निज काजहिं लाग॥

जेहि मुनीश जो आयसु दीन्हा ❁ सो जनु काज प्रथम तेइँ कीन्हा
विप्र साधु सुर पूजत राजा ❁ करत राम हित मङ्गल साजा
सुनत राम अभिषेक[6] सुहावा ❁ बाजु गहगहे अवध बधावा
रामसीय तनु शकुन जनाये ❁ फरकहिं मंगल अंग सुहाये
पुलकि सप्रेम परस्पर कहहीं ❁ भरत आगमन सूचक अहहीं
भये बहुत दिन अति अवसेरी[7] ❁ शकुन प्रतीति भेंट प्रियकेरी
भरत सरिस प्रिय को जग माहीं ❁ यहै शकुन फल दूसर नाहीं
रामहिं बन्धु शोच दिनराती ❁ अण्डन कमठ[8] हृदय जेहि भाँती

दो० तेहि अवसर मंगल परम, सुनि हर्षीं रनिवास।
शोभित लखि विधु बढ़त जनु, वारिधि वीचि विलास॥

प्रथम जाइ जिन वचन सुनावा ❁ भूषण वसन भूरि तिन पावा
प्रेम पुलकि तन मन अनुरागीं ❁ मंगल कलश सजन सब लागीं
चौकें चारु सुमित्रा पूरी ❁ मणिमय विविध भाँति अतिरूरी

१ पशमीना २ चँदोवा ३ आम ४ सुपारी ५ हाथी ६ तिलक ७ अंदेशा ८ कछुवा॥

आनँद मगन राम महतारी ❁ दिये दान बहु विप्र हँकारी
पूजेउ ग्रामदेव सुर नागा ❁ कहेउ बहोरि देन बलि भागा
जेहि विधि होइ राम कल्याना ❁ देहु दया करि सो वरदाना
गावहिं मंगल कोकिल बयनी ❁ विधुवदनी मृगशावकनयनी

दो॰ रामराज्य अभिषेक सुनि, हिय हर्षे नरनारि।
लगे सुमंगल सजन सब, विधि अनुकूल विचारि॥

तब नरनाह वशिष्ठ बुलाये ❁ रामधाम शिष देन पठाये
गुरु आगमन सुनत रघुनाथा ❁ द्वार आइ नायउ पद माथा
सादर अर्घ्य देइ घर आने ❁ षोड़श भाँति पूजि सनमाने
गहे चरण सियसहित बहोरी ❁ बोले राम कमल कर जोरी
सेवक सदन[2] स्वामि आगमनू ❁ मंगलमूल अमंगल दमनू
यदपि उचित अस बोलि सप्रीती ❁ पठइय काज नाथ अस नीती
प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू ❁ भयउ पुनीत आजु मम गेहू
आयसु होय सो करिय गुसाँई ❁ सेवक लहै स्वामि सेवकाई

दो॰ सुनि सनेह साने वचन, मुनि रघुवरहिं प्रशंस।
राम कस न तुम कहहु अस, हंसवंस[3] अवतंस[4]॥

वरणि राम गुण शील स्वभाऊ ❁ बोले प्रेम पुलकि मुनिराऊ
भूप सजेउ अभिषेक समाजू ❁ चाहत देन तुमहिं युवराजू
राम करहु सब संयम आजू ❁ जो विधि कुशल निबाहै काजू
गुरु शिष देइ राव पहँ गयऊ ❁ रामहृदय अस विस्मय भयऊ
जनमे एक संग सब भाई ❁ भोजन शयन केलि लरिकाई
कर्णवेध उपवीत[5] विवाहा ❁ संग संग सब भयउ उछाहा
विमल वंश यह अनुचित एका ❁ अनुज विहाय बड़े अभिषेका
प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई ❁ हरत भक्त मन की कुटिलाई

दो॰ तेहि अवसर[8] आये लषण, मगन प्रेम आनन्द।

१ हिरण का बच्चा २ घर ३ सूर्यवंश ४ उत्पत्ति ५ जनेऊ ६ छोड़ ७ राजतिलक ८ समय ॥

सनमाने प्रिय वचन कहि, रघुकुल कैरवचन्द ॥
बाजहिं बाजन विविध विधाना ❀ पुर प्रमोद नहिं जाइ बखाना
भरत आगमन सकल मनावहिं ❀ आवहिं वेगि नयनफल पावहिं
हाट बाट घर गली अथाई ❀ कहहिं परस्पर लोग लुगाई
काल्हि लगन भल केतिक बारा ❀ पूजिहि विधि अभिलाष हमारा
कनक सिंहासन सीय समेता ❀ बैठहिं राम होइ चित चेता
सकल कहहिं कब होइहि काली ❀ विघ्न मनावहिं देव कुचाली
तिनहिं सुहाय न अवध बधावा ❀ चोरहि चांदनि राति न भावा
शारद बोलि विनय सुर करहीं ❀ बारहिंबार पायँ लै परहीं
दो० विपति हमारि विलोकि बड़ि, मातुकरिय सोइकाज।
राम जाहिं वन राज्य तजि, होइ सकल सुरकाज॥
सुनि सुरविनय ठाढ़ि पछिताती ❀ भइउँ सरोज विपिन[2] हिमराती
देखि देव पुनि कहहिं बहोरी ❀ मातु तोहिं नहिं थोरिउ खोरी
विस्मय हर्ष[3] रहित रघुराऊ ❀ तुम जानहु रघुवीर स्वभाऊ
जीव कर्म्मवश दुख सुखभागी ❀ जाइय अवध देवहित लागी
बारबार गहि चरण सकोची ❀ चली विचारि विबुध[5] मति पोची
ऊंच निवास नीच करतूती ❀ देखि न सकहिं पराइ विभूती[6]
आगिल काज विचारि बहोरी ❀ करिहैं चाह कुशल कवि मोरी
हरषि हृदय दशरथपुर आई ❀ जनु ग्रहदशा दुसह दुखदाई
दो० नाम मन्थरा मन्द मति, चेरि केकयी केरि।
अयश पिटारी ताहि करि, गई गिराँ मति फेरि॥
दीख मन्थरा नगर बनावा ❀ मंगल मंजुल बाजु बधावा
पूंछेसि लोगन काह उछाहू ❀ राम तिलक सुनिभा उरदाहू
करै विचार कुबुद्धि कुजाती ❀ होइ अकाज कवन विधि राती
देखि लाग मधु कुटिल किराती[8] ❀ जिमि गवँ तकै लेउँ केहिभाँती

१ कुमोदिनी २ बन ३ दोष ४ खुशी ५ देवता ६ ऐश्वर्य ७ सरस्वती ८ बहेलिया ॥

भरत मातु पहँ गइ बिलखानी ❀ का अनमनि हसि हँसि कह रानी
उतर न देइ सो लेइ उसांसू ❀ नारिचरित करि ढारति आंसू
हँसि कह रानि गाल बड़ तोरे ❀ दीन्ह लषण शिष अस मनमोरे
तबहुँ न बोलि चेरि बड़ि पापिनि ❀ छांड़ै श्वास कारि जनु सांपिनि

दो० सभयंरानिकहकहसिकिन, कुशल राममहिपाल।
भरतलषण रिपुदमनसुनि, भा कुबरी उर शाल॥

कत शिष देहि हमहिं कोउ माई ❀ गाल करब केहि कर बल पाई
रामहिं छांड़ि कुशल केहि आजू ❀ जिनहिं नरेश देत युवराजू
भा कौशल्यहि विधि अति दाहिन ❀ देखत गर्व रहत उर नाहिन
देखहु कस न जाइ पुर शोभा ❀ जो अवलोकि मोर मन छोभा
पूत विदेश न शोच तुम्हारे ❀ जानति हौ वश नाह हमारे
नींद बहुत प्रिय सेज तुराई ❀ लखहु न भूप कपट चतुराई
सुनि प्रिय वचन मलिनमन जानी ❀ झुकी रानि अब रहु अरगानी
पुनि अस कबहुँ कहसि घरफोरी ❀ तौ धरि जीभ कढ़ावों तोरी

दो० काने खोरे कूबरे, कुटिल कुचाली जानि।
तियविशेषपुनिचेरिकहि, भरतमातु मुसुकानि॥

प्रियवादिनि शिष दीन्हेउँ तोहीं ❀ सपनेहु तोपर कोप न मोहीं
सुदिन सुमङ्गलदायक सोई ❀ तोर कहा फुर जादिन होई
जेठ स्वामि सेवक लघु भाई ❀ यह दिनकर कुल रीति सदाई
रामतिलक जो सांचहु काली ❀ मांगु देऊं मनभावत आली
कौशल्या सम सब महतारी ❀ रामहिं सहज स्वभाव पियारी
मोपर करहिं सनेह विशेखी ❀ मैं करि प्रीति परीक्षा देखी
जो विधि जन्म देइ करि छोहूँ ❀ होहिं राम सिय पूत पतोहू
प्राणते अधिक राम प्रिय मोरे ❀ तिनके तिलक छोभ कस तोरे

दो० भरतशपथ तोहिं सत्य कहु, परिहरि कपट दुराव।

१ डर से २ शत्रुघ्न ३ दुःख ४ बड़ीबात ५ तोशक ६ क्रोधित ७ कृपा ८ दुःख ९ क़सम॥

हर्ष समय विस्मय करसि, कारण मोहिं सुनाव ॥
एकहि बार आश सब पूजी ❀ अब कछु कहब जीभ करि दूजी
फोरै योग्य कपार अभागा ❀ भलो कहत दुख रौरेहुं लागा
कहैं झूंठ फुर बात बनाई ❀ सो प्रिय तुमहिं करू मैं माई
हमहुँ कहब अब ठकुरसुहाती ❀ नाहिं तौ मौनं रहब दिनराती
करि कुरूप विधि परवश कीन्हा ❀ वाचा शाल हमहिं तिन दीन्हा
कोउ नृप होइ हमैं का हानी ❀ चेरि छांड़ि न कहाउब रानी
जारै योग्य स्वभाव हमारा ❀ अनभल देखि न जाइ तुम्हारा
ताते कछुक बात अनुसारी ❀ क्षमब देवि बड़ि चूक हमारी
दो॰ गूढ़कपट प्रियवचन सुनि, तीय अधरबुधि रानि ।
सुरमाया वश वैरिणिहि, सुहृद जानि पतियानि ॥
सादर पुनि पुनि पूंछति वोही ❀ शबँरी नाद मृगी जनु मोही
तसिमति फिरी रही जसि भावी ❀ रहँसी चेरि घात बड़ि फावी
तुम पूंछहु मैं कहत डराऊँ ❀ धरेउ मोर घरफोरी नाऊँ
सजिप्रतीति गढ़ि बहुविधि छोली ❀ अवध साढ़साती जनु बोली
प्रिय सियराम कहा तुम रानी ❀ रामहिं तुम प्रिय सो फुरे बानी
रहे प्रथम दिन अब सो बीते ❀ समय फिरे रिपु होहिं पिरीते
भानु कमलकुल पोषणहारा ❀ बिनु जल जारि करै तेहि छारा
जर तुम्हारि चह सवति उखारी ❀ रूंधहु करि उपाय वरबारी
दो॰ तुमहिं न शोच सुहागबल, निजवश जानहु राव ।
मन मलीन मुहँ मीठ नृप, राउर सरल स्वभाव ॥
चतुर गँभीर राम महतारी ❀ बीच पाइ निज काज सँवारी
पठये भरत भूप ननिऔरे ❀ राम मातु मत जानब रौरे
राजहिं तुमपर प्रीति विशेखी ❀ सवति स्वभाव सकै नहिं देखी
रचि प्रपंच भूपहि अपनाई ❀ रामतिलकहित लगन धराई

१ आपको २ चुप ३ भिल्लिनि ४ प्रसन्न ५ सत्य ६ बेनई ७ तुम्हारा ॥

सेवहिं सकल सवति मोहिं नीके ❁ गर्वित भरत मातु बल पीके
शाल तुम्हार कौशलहि माई ❁ चतुर कपट नहिं परत लखाई
यहि कुल उचित राम कहँ टीका ❁ सबहि सुहाइ मोहिं सुठि नीका
आगिलि बात समुझि डर मोहीं ❁ दैव देव फल सो फिरि वोहीं

दो० रचिपचिकोटिककुटिलपन, कीन्हेसिकपंटप्रबोध।
कहेसि कथा शत सवतिकर, जाते बढ़ै विरोध॥

भावी वश प्रतीति उर आई ❁ पूंछि रानि निज शपथ दिवाई
का पूंछहु तुम अजहुँ न जाना ❁ निजहित अनहित पशुपहिंचाना
भयो पाख दिन सजत समाजू ❁ तुम सुधि पाई मोसन आजू
खाइय पहिरिय राज तुम्हारे ❁ सत्य कहे नहिं दोष हमारे
जो असत्य कछु कहब बनाई ❁ तौ विधि देइहि मोहिं सजाई
रामहिं तिलक कालिह जो भयऊ ❁ तुमकहँ विपतिबीज विधि बयऊ
रेखा खैंचि कहौं बल भाखी ❁ भामिनि भइउ दूध की माखी
जो सुत सहित करहु सेवकाई ❁ तौ घर रहहु न आन उपाई

दो० कद्रू विनतहिं दीन्ह दुख, तुमहिं कौशला देव।
भरत बंन्दिगृह सइहैं, राम लषण कर नेव॥

केकयसुता सुनत कटुबानी ❁ कहि न सकै कछु सहमि सुखानी
तनु पसेव कदलि जनु कांपी ❁ कुबरी दशन जीभ तब चापी
कहि कहि कोटिन कपट कहानी ❁ धीरज धरहु प्रबोधिसि रानी
कीन्हेसि कठिन पढ़ाय कुपाठू ❁ जिमि न नवै फिरि उकठा काठू
फिराकर्म्म प्रियलागि कुचाली ❁ बकिहि सराहत मनहुँ मराली
सुनु मंथरा बात फुर तोरी ❁ दहिनि आँखि नित फरकत मोरी
दिनप्रति देखौं राति कुसपने ❁ कहौं न तोहिं मोहवश अपने
काह कहौं सखि सूध स्वभाऊ ❁ दाहिन वाम न जानौं काऊ

दो० अपनेचलत न आजुलागि, अनभल काहुक कीन्ह।

१ कुल २ विश्वास ३ झूंठ ४ जेलखाना ५ केला ६ दांत ७ हंसिनी ८ बुरा॥

केहिअघं एकहिबार मोहिं, दैव दुसह दुख दीन्ह ॥

नैहर जन्म भरब बरु जाई ❀ जियत न करब सवति सेवकाई
अरिवश दैव जिआवै जाही ❀ मरणनीक तेहि जियब न चाही
दीन वचन कह बहुविधि रानी ❀ सुनि कुबरी तियमाया ठानी
अस कस कहहु मानि मनऊना ❀ सुखसुहाग तुम कहँ दिनदूना
ज्यहिं राउर अस अनभल ताका ❀ सोइ पाइहि यह फल परिपाका
जबते कुमति सुना मैं स्वामिनि ❀ भूख न वासर नींद न यामिनि
पूंछेउँ गुणिन रेख तिन खांची ❀ भरत भुवाल होहिं यह सांची
भामिनि करहु तो कहौं उपाऊ ❀ हैं तुम्हरे सेवावश राऊ

दो० परौं कूप तव वचन लगि, सकौं पूत पति त्यागि।
कहसि मोर दुखदेखि बड़, कस न करब हितलागि॥

कुबरी करि करबलि कैकेई ❀ कपट छुरी उर पाहनं टेई
लखै न रानि निकट दुख कैसे ❀ चरै हरिततृण बलि पशु जैसे
सुनत वचन मृदु अन्त कठोरी ❀ देति मनहुँ मधु माखन घोरी
कहै चेरि सुधि अहै कि नाहीं ❀ स्वामिनि कहेहु कथा मोहिंपाहीं
दुइ वरदान भूप सन थाती ❀ मांगहु आजु जुड़ावहु छाती
सुतहि राज रामहिं वनवासू ❀ देहु लेहु सब सवति हुलासू
भूपति राम शपथ जब करहीं ❀ तब मांगेउ जेहि वचन न टरहीं
होइ अकाजु आजु निशि बीते ❀ वचन मोर प्रिय मान्यहु जीते

दो० बड़ कुघातकरि पातकिनि, कहेसि कोपगृह जाहु।
काज सँवारेहु सजग सब, सहसा जनि पतियाहु॥

कुबरिहि रानि प्राणप्रिय जानी ❀ बारबार बड़ि बुद्धि बखानी
तोहि सम हित न मोर संसारा ❀ बहेजात कहँ भइसि अधारा
जो विधि पुरव मनोरथ काली ❀ करौं तोहिं चषपूतरि आली
बहु विधि चेरिहि आदर देई ❀ कोपभवन गमनी कैकेई

१ पाप २ दिन ३ रात्रि ४ पत्थर ५ होशियार ६ आंख की पुतली ७ सखी ८ बली ॥

विपति बीज वर्षा ऋतु चेरी ❀ भुइँ भइ कुमति केकयी केरी
पाइ कपट जल अंकुर जामा ❀ वरदोउ दल फलदुख परिणामा
कोप समाज साज सजि सोई ❀ राजकरत निज कुमति बिगोई
राउर नगर कुलाहल होई ❀ यह कुचाल कछु जान न कोई

दो० प्रमुदित पुर नर नारि सब, साजि सुमंगलचार।
इकप्रविशहिं इकनिर्गमहिं, भीर भूप दरबार॥

बाल सखा सुनि हिय हरषाहीं ❀ मिलि दश पाँच रामपहँ जाहीं
प्रभु आदरहिं प्रेम पहिंचानी ❀ पूँछहिं कुशल क्षेम मृदुबानी
फिरहिं भवन प्रिय आयसु पाई ❀ करत परस्पर राम बड़ाई
को रघुवीर सरिस संसारा ❀ शील सनेह निबाहनहारा
जेहि जेहि योनि कर्मवश भ्रमहीं ❀ तहँ तहँ ईश देब यह हमहीं
सेवक हम स्वामी सियनाहू ❀ देव ईश यह ओर निबाहू
अस अभिलाष नगर सब काहू ❀ केकयसुता हृदय अतिदाहू
को न कुसंगति पाइ नशाई ❀ रहै न नीचमते गरुआई

दो० सांझ समय सानन्द नृप, गये केकयी गेह।
गमन निठुरता निपटकिय, जनु धरि देह सनेह॥

कोपभवन सुनि सकुचे राऊ ❀ भयवश अगमपरै नहिं पांऊ
सुरपति बसै बाहु बल जाके ❀ नरपति रहहिं सकल रुख ताके
सो सुनि तियरिस गये सुखाई ❀ देखहु काम प्रताप बड़ाई
शूलकुलिश असि अँगवनहारे ❀ ते रतिनाथ सुमन शर मारे
सभय नरेश प्रिया पहँ गयऊ ❀ देखि दशा दुखदारुण भयऊ
भूमि शयन पट मोट पुराना ❀ दिये डारि तनु भूषण नाना
कुमतिहि कस कुरूपता फाबी ❀ अनअहिवात सूच जनु भावी
जाइ निकट नृप कह मृदुबानी ❀ प्राणप्रिया केहि हेतु रिसानी

छं० केहिहेतुरानिरिसानि परसतपानि पतिहिनिवारई।

१ पत्ता २ प्रसन्न ३ आज्ञा ४ खुशी से ५ घर ६ बज्र ७ तलवार ८ कामदेव ९ सोही॥

मानहुँ सरोष भुअंगभामिनि विषम भाँति निहारई ॥
द्वउ वासना रसना दशन वर मर्म ठाहर देखई ।
तुलसी नृपति भवितव्यता वश काम कौतुक लेखई ।
सो० बारबार कह राउ, सुमुखिसुलोचनि पिकवचनि[१] ।
कारणमोहिंसुनाउ, गजगामिनि निज कोप[२] कर ॥
अनहित तोर प्रिया केहि कीन्हा ❀ केहिदुइ शिरकेहियमचह लीन्हा
कहु केहि रंकहि[३] करौं नरेशू ❀ कहु केहि नृपहि निकारौं देशू
सकौं तोर अरि अमरहु मारी ❀ कहा कीट[४] बपुरे नर नारी
जानसि मोर स्वभाव बरोरू ❀ तवमुख मम दृग[५] चन्द्रचकोरू
प्रिया प्राण सुत सर्वस मोरे ❀ परिजन प्रजा सकल वश तोरे
जो कछु कहौं कपटकरि तोहीं ❀ भामिनि रामशपथ शत मोहीं
बिहँसि मांगु मनभावति बाता ❀ भूषण साजु मनोहर गाता
घरी कुघरी समुझि जिय देखू ❀ वेगि प्रिया परिहरहु[६] कुवेखू
दो० यहसुनिमनगुनिशपथबड़ि, बिहँसिउठीमतिमन्द।
भूषण सजति विलोकिमृग, मनहुँकिरातिनिफन्द॥
पुनि कह राव सुहृद जिय जानी ❀ प्रेम पुलकि मृदुमंजुल बानी
भामिनि भयउ तोर मनभावा ❀ बाजत गृह गृह अनँद बधावा
रामहिं देउँ काल्हि युवराजू ❀ सजहु सुलोचनि मङ्गलसाजू
दलँकि उठ्यो सुनि हृदय कठोरा ❀ जनु छुइ गयउ पाक बरतोरा
ऐसी पीर बिहँसि उर गोई ❀ चोर नारि जिमि प्रकट न रोई
लख्यो न भूप कपट चतुराई ❀ कोटि कुटिल मति गुरू पढ़ाई
यद्यपि नीति निपुण नरनाहू ❀ नारिचरित जलनिधि अवगाहू
कपट सनेह बढ़ाइ बहोरी ❀ बोली बिहँसि नयन मुखमोरी
दो० मांगु मांगु पै कहहु पिय, कबहुँ न देहु न लेहु ।
देन कहेउ वरदान दुइ, तेउ पावत सन्देहु ॥

१ कोकिल २ रिस ३ गरीब ४ कीड़ा ५ आंख ६ त्यागी ७ झझकि ८ अथाह ॥

जानेउँ मर्म्म राव हँसि कहई ❁ तुमहिं कोहाब परमप्रिय अहई
थाती राखि न मांगेउ काऊ ❁ बिसरिगयो मम भोर स्वभाऊ
झूठहिं दोष हमहिं जनि देहू ❁ दुइकं चारि मांगि किन लेहू
रघुकुल रीति सदा चलि आई ❁ प्राणजाइँ बरु वचन न जाई
नहिं असत्य सम पातकपुंजा ❁ गिरिसमहोहिं कि कोटिक गुंजा
सत्यमूल सब सुकृत सुहाई ❁ वेदपुराण विदित मुनि गाई
तेहिपर राम शपथ करि आई ❁ सुकृत सनेह अवधि रघुराई
बात दृढ़ाइ कुमति हँसि बोली ❁ कपट विहंग कुलंह जनु खोली

दो० भूप मनोरथ सुभग वन, सुख सुविहंग समाज।
भिल्लिनि जनु छांड़न चहत, वचन भयंकर बाज॥

सुनहु प्राणपति भावत जीका ❁ देहु एक वर भरतहिं टीका
दूसर वर मांगौं कर जोरी ❁ नाथ मनोरथ पुरवहु मोरी
तापस वेष विशेष उदासी ❁ चौदह वर्ष राम वनवासी
सुनि तियवचन भूप उर शोकू ❁ शशिकर[१]छुवत विकल जिमिकोकू
गये सहमि कछु कहि नहिं आवा ❁ जनु शचान वन झपटेउ लावा
विवरण भयउ निपट महिपालू ❁ दामिनि हनेउ मनहुँ तरुतालू
माथे हाथ मूंदि दोउ लोचन ❁ तनुधरि शोच लागुजनु शोचन
मोर मनोरथ सुरतरु फूला ❁ फरत करिणि जनु हतेउ समूला
अवध उजारि कीन्ह कैकेई ❁ दीन्हेसि अचल विपतिकैनेयी

दो०कौने अवसर का भयो, गयउँ नारि विश्वास।
योगसिद्धिफलसमयजिमि, यतिहि अविद्यानास॥

यहिविधि राव मनहिंमन दहई ❁ देखि कुभाँति कुमति अस कहई
भरत कि राउर पूत न होहीं ❁ आनेहु मोल बेसाहि कि मोहीं
जो सुनि शर सम लाग तुम्हारे ❁ काहे न बोलेहु वचन सँभारे
देहु उतर अब कहहु कि नाहीं ❁ सत्यसन्ध तुम रघुकुल माहीं

१ टोपी २ चन्द्रकिरण ३ बाज ४ बटेर ५ ताड़वृक्ष ६ कल्पवृक्ष ७ हथिनी॥

देन कहेउ वर अब जनि देहू ❀ तजहु सत्य जग अपयश लेहू
सत्य सराहि कहेउ वर देना ❀ जानेहु लेइहि मांगि चबेना
शिबिदधीचि बलि जो कछुभाखा ❀ तन धन तजेउ वचन प्रणराखा
अति कटुवचन कहति कैकेई ❀ मानहुँ लोन जरे पर देई

दो॰ धर्म्म धुरन्धर धीर धरि, नयन उघारे राउ।
शिरधुनिलीन्हउसासअति, मारेसिमोहिंकुठाउ॥

आगे देखि जरति रिस भारी ❀ मनहुँ रोष तरवारि उघारी
मूठि कुबुद्धि धार निठुराई ❀ धरि कुबरी जनु शान बनाई
लखी महीप कराल कठोरा ❀ सत्य कि जीवन लेइहि मोरा
बोलेउ राव कठिन करि छाती ❀ वाणी विनय न ताहि सोहाती
प्रिया वचन कस कहसि कुभाँती ❀ भीरु प्रतीति प्रीति करि हाती
मोरे भरत राम दोउ आंखी ❀ सत्य कहौं करि शंकर साखी
अवशि दूत मैं पठउब प्राता ❀ ऐहैं वेगि सुनत दोउ भ्राता
सुदिन शोधि सब साज सजाई ❀ देहौं भरतहिं राज्य बड़ाई

दो॰ लोभ न रामहिं राज्यकर, बहुत भरतपर प्रीति।
मैं बड़ छोट विचारि जिय, करत रहेउँ नृपनीति॥

राम शपथ शत कहौं सुभाऊ ❀ राममातु कछु कहा न काऊ
मैं सब कीन्ह तोहिं बिनु पूंछे ❀ ताते परेउ मनोरथ छूंछे
रिसि परिहरु अब मङ्गल साजू ❀ कछु दिन गये भरत युवराजू
एकहि बात मोहिं दुख लागा ❀ वर दूसर असमंजस मांगा[1]
अजहूं हृदय दहत तेहि आंचा ❀ रिस परिहास[2] कि सांचहुसांचा
कहु तजि रोष राम अपराधू ❀ सबकोउ कहत राम सुठि साधू
तुहूं सराहसि करसि सनेहू ❀ अब सुनि मोहिं परम सन्देहू
जासु स्वभाव अरिहु[3] अनुकूला[4] ❀ सो किमि करहिं मातु प्रतिकूला[5]

दो॰ प्रिया हास्य रिस परिहरहु[6], मांगु विचारि विवेक[7]।

१ देखा २ हँसी ३ शत्रु ४ मुवाफ़िक़ ५ खिलाफ़ ६ छोड़हु ७ ज्ञान॥

जेहि देखौं अब नयनभरि, भरत राज्य अभिषेक ॥

जियै मीन बरु वारि[1] विहीना ❀ मणि बिनुफणिक[2] जियैदुख दीना
कहौं स्वभाव न छल मनमाहीं ❀ जीवन मोर राम बिनु नाहीं
समुझि देखु जिय प्रिया प्रवीना ❀ जीवन राम दरश आधीना
सुनि मृदुवचन कुमति जियजरई ❀ मनहुँ अनल[3] घृत आहुति परई
कहहि करहु किन कोटि उपाया ❀ इहां न लागिहि राउरि माया
देहु कि लेहु अयश करि नाहीं ❀ मोहिं न बहुत प्रपंच सोहाहीं
राम साधु तुम साधु सुजाना ❀ राममातु भलि सब पहिंचाना
जस कौशला मोर भल ताका ❀ तस फल देउँ उन्हें करि शाका

दो० होत प्रात मुनिवेष धरि, जो न राम वन जाहिं।
मोर मरण राउर अयश, नृप समुझहु मनमाहिं ॥

अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी ❀ मानहुँ रोष तरंगिनि[4] बाढ़ी
पाप पहार प्रकट भइ सोई ❀ भरी क्रोध जल जाइ न जोई
दोउ वर कूल[5] कठिन हठ धारा ❀ भँवर[6] कूबरी वचन प्रचारा
ढाहति भूप रूप तरुमूला ❀ चली विपति वारिधि अनुकूला
लखी नरेश बात सब सांची ❀ तिय मिसु मीचु शीशपर नाची
गहि कर भूप निकट बैठारी ❀ जनि दिनकरकुल होसि कुठाँरी[7]
मांगु माथ अबहीं देउँ तोहीं ❀ राम विरह जनि मारसि मोहीं
राखु राम कहँ जेहि तेहि भाँती ❀ नाहिंत जरिहि जन्मभरि छाती

दो० देखी व्याधि असाधि नृप, परेउ धरणि धुनि माथ।
कहत परम आरत वचन, राम राम रघुनाथ ॥

व्याकुल राव शिथिल सब गाता ❀ करिणि[8]कल्पतरु मनहुँ निपाता
कण्ठ सूख मुख आव न बानी ❀ जिमि पाठीन दीन बिनु पानी
पुनि कह कटु कठोर कैकेई ❀ मर्म पाछि जनु माहुर देई
जो अन्तहु अस करतब रहेऊ ❀ मांगु मांगु केहिके बल कहेऊ

---

१ पानी २ सांप ३ अग्नि ४ नदी ५ किनारा ६ चक्कर ७ कुल्हाड़ी ८ हथिनी ॥

दुइकि होइँ यक संग भुवालू ❀ हँसब ठठाइ फुलाउब गालू
दानि कहाउब अरु कृपणाई ❀ होहि कि क्षेम कुशल रौताई
छांड़हु वचन कि धीरज धरहू ❀ जनि अबला इव कारण करहू
तनु तिय तनय धाम धन धरणी ❀ सत्यसन्ध कहँ तृणसम बरणी
दीन दान फिरि मांगहु राजा ❀ परिहरि वेद लोक की लाजा

दो० मर्म वचन सुनि राव कह, कछुक दोष नहिं तोर।
लागेउ मोह पिशाच जनु, काल कहावत मोर॥

चहत न भरत भूपपद भोरे ❀ विधिवश कुमति बसी उर तोरे
सो सब मोर पाप परिणामू ❀ कछु न बसाइ भयो विधि वामू
सुबस बसिहि पुनि अवध सुहाई ❀ सब विधि सुखद राम प्रभुताई
करिहैं सकल भाइ सेवकाई ❀ ह्वैहै तिहुँ पुर राम बड़ाई
तोर कलंक मोर पछिताऊ ❀ मुयउ मेटि नहिं जाइहि काऊ
अब तोहिं नीक लागु करु सोई ❀ लोचन ओट बैठु मुख गोई
जौलौं जियौं कहौं करजोरी ❀ तौलौं जनि कछु कहसि बहोरी
फिरि पछितैहसि अन्त अभागी ❀ मारसि गाय नाहरू लागी

दो० परेउ राव कहि कोटि विधि, काहे करसि निदान।
कपट चतुर नहिं कहति कछु, जागति मनहुँ मशान॥

राम राम रटि विकल भुवालू ❀ जनु बिनु पंख विहंग बिहालू
हृदय मनाव भोर जनि होई ❀ रामहिं जाइ कहै जनि कोई
उदय करहु जनि रवि रविकुलगुर ❀ अवध विलोकि शूल होइहि उर
भूप प्रीति कैकयि निठुराई ❀ उभय अवधि विधि रची बनाई
बिलपत नृपहि भयउ भिनुसारा ❀ वीणा वेणु शंख ध्वनि द्वारा
पढ़हिं भाट गुण गावहिं गायक ❀ सुनत नृपहि लागत जनुशायक
मंगल सकल सुहाइँ न कैसे ❀ सहगामिनिहिं विभूषण जैसे
तेहि निशि नींद परी नहिं काहू ❀ राम दरश लालसा उछाहू
कबहिं उदय रवि होहि बिहाना ❀ देखब नयनन कृपानिधाना।

१ छिपाकर २ फिरि ३ सूर्य ४ दुःख ५ बाण ६ सती ७ गहना॥

दो० द्वार भीर सेवक सचिवं, कहहिं उदय रवि देखि।
जागे अजहुँ न अवधपति, कारण कवन विशेखि॥

पछिले पहर भूप नित जागा ❀ आजु हमहिं बड़ अचरज लागा
जाहु सुमन्त जगावहु जाई ❀ कीजिय काज रजायसु पाई
गे सुमन्त नृप मन्दिर पाहीं ❀ देखि भयानक जात डराहीं
धाइ खाइ जनु जात न हेरा ❀ मानहुँ विपति विषाद बसेरा
पूंछत कोउ न उत्तर देई ❀ गे जेहि भवन भूप कैकेई
कहि जय जीव बैठ शिरनाई ❀ देखि भूपगति गयउ सुखाई
शोक विकल विवरण महिपरेऊ ❀ मानहुँ कमल मूलँ परिहरेऊ
सचिव सभीत सकहिं नहिं पूंछी ❀ बोली अशुभ भरी शुभ छूंछी

दो० परी न राजहिं नींद निशि, मर्म्म जानु जगदीश।
राम राम रटि भोर किय, हेतु न कहेउ महीश॥

आनहु रामहिं वेगि बुलाई ❀ समाचार तब पूंछहु आई
चलेउ सुमन्त राव रुखजानी ❀ लखी कुचाल कीन्ह कछु रानी
शोक विकल मग परै न पाऊ ❀ रामहिं बोलि कहहिं का राऊ
उर धरि धीरज गयउ दुवारे ❀ पूंछहिं सकल देखि मनमारे
समाधान सो कर सबहीका ❀ गये जहां दिनकरकुलटीका
राम सुमन्तहि आवत देखा ❀ आदर कीन्ह पिता समलेखा
निरखि वदन कहि भूप रजाई ❀ रघुकुल दीपहि चले लिवाई
राम कुभाँति सचिव सँग जाहीं ❀ देखि लोग जहँ तहँ बिलखाहीं

दो० आइ दीख रघुवंशमणि, नरपतिनिपटकुसाज।
सहमिपरेउलखिसिंहिनिहिं, मनहुँ वृद्धगजराज॥

सूखे अधर जरे सब अंगा ❀ मनहुँ दीन मणिहीन भुजंगा
सरुष समीप देखि कैकेई ❀ मानहुँ मृत्यु घरी गनि लेई
करुणामय मृदु राम स्वभाऊ ❀ प्रथम दीख दुख सुना न काऊ

१ मन्त्री २ आज्ञा ३ छविहीन ४ जड़ ५ रामचन्द्र ६ ओंठ ७ सर्प ८ क्रोधित॥

तदपि धीर धरि समय विचारी ❀ पूंछा मधुर वचन महतारी
मोहिं कहु मातु तात दुखकारण ❀ करिय यत्न जेहि होइ निवारण
सुनहु राम सब कारण एहू ❀ राजहिं तुम पर बहुत सनेहू
देन कहेउ मोहिं दुइ वरदाना ❀ मांगेउँ जो कछु मोहिं सुहाना
सो सुनि भयउ भूप उर शोचू ❀ छांड़ि न सकहिं तुम्हार सँकोचू

दो० सुत सनेह इत वचन उत, संकट परेउ नरेश।
सकहु तो आयसु शीशधरि, मेटहु कठिन कलेश॥

निधरक बैठि कहत कटु बानी ❀ सुनत कठिनता अति अकुलानी
जीभ कमान वचन शर जाना ❀ मनहुँ भूप मृदुलक्ष्य[१] समाना
जनु कठोरपन धरे शरीरा ❀ सिखै धनुषविद्या वर वीरा
सब प्रसंग रघुपतिहिं सुनाई ❀ बैठी जनु तनु धरि निठुराई
मन मुसुकाहिं भानुकुलभानू ❀ राम सहज आनन्दनिधानू
बोले वचन विगत सब दूषण[२] ❀ मृदु मंजुल जनु वाक विभूषण
सुनु जननी[३] सोइ सुत बड़भागी ❀ जो पितु मातु वचन अनुरागी
तनय[४] मातु पितु पोषणहारा ❀ दुर्लभ जननि सकल संसारा

दो० मुनिगणमिलनविशेषवन, सबहि भाँति हितमोर।
तेहिमहँ पितुआयसु[५] बहुरि, सम्मत[६] जननी तोर॥

भरत प्राणप्रिय पावहिं राजू ❀ विधि सब विधि मोहिं सम्मुखआजू
जो न जाहुँ वन ऐसेहु काजा ❀ प्रथम गनिय मोहिं मूढ़समाजा
सेवहिं अरण्ड[७] कल्पतरु त्यागी ❀ परिहरि अमिय लेहिं विष मांगी
तेउ न पाइ अस समय चुकाहीं ❀ देखु विचारि मातु मन माहीं
अब मोकहँ दुख एक विशेखी ❀ निपट विकल नरनायक देखी
थोरिहि बात पितहिं दुखभारी ❀ होति प्रतीति न मोहिं महतारी
राव धीरगुण उदधि[८] अगाधू ❀ भा मोसन कछु बड़ अपराधू
ताते मोहिं न कहत कछु राऊ ❀ मोरि शपथ तोहिं कहु सतिभाऊ

दो० सहज सरल रघुवरवचन, कुमति कुटिल करिजान।

१ निशाना २ दोष ३ माता ४ पुत्र ५ आज्ञा ६ सलाह ७ रेंड़ ८ समुद्र॥

चलै जोंक जिमि वक्रगति, यद्यपि सलिल[1] समान।
रही रानि रामरुख पाई ❀ बोली कपट सनेह जनाई
शपथ तुम्हारि भरतकै आना ❀ हेतु न दूसर मैं कछु जाना
तुम अपराध योग्य नहिं ताता ❀ जननी जनक बन्धु सुखदाता
राम सत्य सब जो कछु कहहू ❀ तुम पितु मातु वचनरत अहहू
पितहिं बुझाइ कहौ बलि सोई ❀ चौथेपन जेहि अयश[2] न होई
तुमसम सुवन[3] सुकृत जेहि दीन्हे ❀ उचित न तासु निरादर कीन्हे
लागहिं कुमुखि वचन शुभ कैसे ❀ मगह गयादिक तीरथ जैसे
रामहिं मातु वचन सब भाये ❀ जिमि सुरसरि गत सलिल सुहाये
दो० गै मूर्च्छा रामहिं सुमिरि, नृपफिरि करवट लीन्ह।
सचिव राम आगमनकहि, विनयसमयसमकीन्ह ॥
जब नृप अकनि राम पगुधारे ❀ धरि धीरज तब नयन उघारे
सचिव सँभारि राव बैठारे ❀ चरण परत नृप राम निहारे
लिये सनेह विकल उर लाई ❀ गै मणि फणिक बहुरि जिमि पाई
रामहिं चितै रहे नरनाहू ❀ चला विलोचन वारि प्रवाहू
शोक विकल कछु कहै न पारा ❀ हृदय लगावत बारहिंबारा
विधिहि मनाव राव मनमाहीं ❀ जेहि रघुनाथ न कानन[5] जाहीं
सुमिरि महेशहिं[6] कहहिं निहोरी ❀ विनती सुनहु सदाशिव मोरी
आशुतोष[7] तुम अवढरदानी ❀ विनती सुनहु दीनजन जानी
दो० तुम प्रेरक सबके हृदय, सो मति रामहिं देहु।
वचनमोर तजि रहहिं गृह, परिहरि शील सनेहु ॥
अयश होहु बरु सुयश नशाऊं ❀ नरक परौं बरु सुरपुर जाऊं
सब दुख दुसह सहावहु मोहीं ❀ लोचन ओट राम जनि होहीं
अस मन गुनत राव नहिं बोला ❀ पीपर पात सरिस मन डोला
रघुपति पितहिं प्रेमवश जानी ❀ पुनि कछु कहेउ मातु अनुमानी

१ जल २ अपकीर्ति ३ पुत्र ४ सम्मुख ५ वन ६ शिव ७ शीघ्रही प्रसन्न होनेवाले ॥

देशकाल अवसर अनुसारी ❀ बोले वचन विनीत विचारी
तात कहौं कछु करौं दिठाई ❀ अनुचित क्षमब जानि लरिकाई
अतिलघुबात लागि दुख पावा ❀ काहेन मोहिं कहि प्रथम जनावा
देखि गुसाइँहिं पूंछेउँ माता ❀ सुनि प्रसंग भो शीतल गाता

दो० मंगल समय सनेह वश, शोच परिहरिय तात।
आयसु देइय हरषि हिय, कहि पुलके प्रभुगात॥

धन्य जन्म जगतीतल[2] तासू ❀ पितहिं प्रमोद[3]चरित सुनि जासू
चारि पदारथ करतल ताके ❀ प्रिय पितु मातु प्राणसम जाके
आयसु पालि जन्म फल पाई ❀ ऐहौं वेगिहि देहु रजाई
बिदा मातुसन आवहुँ मांगी ❀ चलिहौं वनहिं बहुरि पग लागी
अस कहि राम गमन तब कीन्हा ❀ भूप प्रेमवश उतर न दीन्हा
नगर व्यापिगइ बात सुतीछी ❀ छुवत चढ़ी जनु सब तनु बीछी
सुनि भये विकल सकल नरनारी ❀ बेलि विटप जनु लागु दवारी
जो जहँ सुनै धुनै शिर सोई ❀ बड़ विषाद नहिं धीरज होई

दो० मुखसूखहिं लोचनस्रवहिं, शोक न हृदय समाय।
मानहुँ करुणारस कटक, उतरा अवध बजाय॥

भलि बनाइ विधि बात बिगारी ❀ जहँ तहँ देहिं केकयिहि गारी
यहि पापिनिहिं बूझि का परेऊ ❀ छाय भवन पर पावक[4] धरेऊ
निजकर नयन काढ़ि चह दीखा ❀ डारि सुधा विष चाहत चीखा
कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी ❀ भइ रघुवंश वेणु[5] वन आगी
पल्लव बैठि पेड़ यहि काटा ❀ सुख महँ शोक ठाट यहि ठाटा
सदा राम यहि प्राण समाना ❀ कारण कवन कुटिलपन ठाना
सत्य कहहिं कवि नारि स्वभाऊ ❀ सब विधि अगम अगाध दुराऊ
निज प्रतिबिंब[6] मुकुर[7] गहि जाई ❀ जानि न जाइ नारिगति भाई

दो० काह न पावक जरि सकै, काह न समुद समाइ।

१ समय २ पृथ्वी में ३ खुशी ४ अग्नि ५ बांस ६ परिछाहीं ७ शीशा॥

का न करै अबला प्रबल, केहि जग काल न खाइ ॥

का सुनाइ विधि काह सुनावा ❀ का दिखाइ चह काह दिखावा
एक कहैं भल भूप न कीन्हा ❀ वर विचारि नहिं कुमतिहि दीन्हा
जो हठि भयउ सकलदुखभाजन ❀ अबला विवश ज्ञान गुणगाजन
एक धर्म परमिति पहिंचाने ❀ नृपहिं दोष नहिं देहिं सयाने
शिबि दधीचि हरिचन्द कहानी ❀ एक एक सन कहहिं बखानी
एक भरत कर सम्मत कहहीं ❀ एक उदास मौन ह्वै रहहीं
कान मूंदि कर रद गहि जीहा ❀ एक कहहिं यह बात अलीहा
सुकृत जाइ अस कहत तुम्हारे ❀ भरत राम कहँ प्राण पियारे

दो० चन्द्र स्रवै बरु अनलकण, सुधा होइ विष तूल ।
सपनेहु कबहुँ न करहिं कछु, भरत राम प्रतिकूल ॥

एक विधातहि दूषण देहीं ❀ सुधा दिखाइ दीन्ह विष जेहीं
खरभर नगर शोक सब काहू ❀ दुसह दाह उर मिटा उछाहू
विप्रबधू कुल मान्य जिठेरी ❀ जे प्रिय परम केकयी केरी
लगीं देन शिष शील सराही ❀ वचन बाणसम लागहिं ताही
भरत न प्रिय मोहिं रामसमाना ❀ सदा कहहु यह सब जगजाना
करहु राम पर सहज सनेहू ❀ केहि अपराध आजु वन देहू
कबहुँ न कीन्ह सवति अवरेशू ❀ प्रीति प्रतीति जान सब देशू
कौशल्या अब कहा बिगारा ❀ तुम जेहि लागि वज्र पुर पारा

दो० सीय कि पिय सँग परिहरहि, लषण कि रहिहहिं धाम ।
भरत कि भूजब राजपुर, नृप कि जियहिं बिनु राम ॥

अस विचारि जिय छांड़हु कोहू ❀ शोक कलंक कोट जनि होहू
भरतहि अवशि देहु युवराजू ❀ कानन कौन राम कर काजू
नाहिंन राम राज्य के भूखे ❀ धर्म धुरीण विषय रस रूखे
गुरु गृह बसहिं राम तजि गेहू ❀ नृपसन अस वर दूसर लेहू

१ स्त्री २ दद ३ दांत ४ अयोग्य ५ खिलाफ़ ६ करेंगे ७ क्रोध ८ घर ॥

राम सरिस[1] सुत[2] कानन[3] योगू ❀ कहा कहहिं सुनि तुमकहँ लोगू
जो न मानिहो कहे हमारे ❀ नहिं लागिहि कछु हाथ तुम्हारे
जो परिहास[4] कीन्ह कछु होई ❀ तौ कहि प्रकट जनावहु सोई
उठहु वेगि सोइ करहु उपाई ❀ जेहि विधि शोक कलंक नशाई

छं० जेहिभाँति शोककलंकजाइउपाइकरिकुलपालहू।
हठि फेरु रामहिं जात वन जनि बात दूसरि चालहू ॥
जिमिभानुबिनुदिनुप्राणबिनुतनुचंदबिनुजिमियामिनी
तिमिअवधतुलसीदासप्रभुबिनुसमुझुधौं मनभामिनी ॥

सो० सखिन सिखावन दीन्ह, सुनतमधुरपरिणाम[5]हित।
तेइँ कछु कान न कीन्ह, कुटिल प्रबोधी कूबरी[6] ॥

उतर न देइ दुसह रिस रूखी ❀ मृगिहि चितवजनु बाघिनि भूखी
व्याधि असाधि जानितिनत्यागी ❀ चलीं कहत मतिमंद अभागी
राज्य करत यहि दैव बिगोई ❀ कीन्हेसि अस जस करै न कोई
यहि विधि विलपहिं पुरनरनारी ❀ देहिं कुचालिहि कोटिक गारी
जरहिं विषम ज्वर लेहिं उसासा ❀ कवन राम बिनु जीवन आसा
विकल वियोग प्रजा अकुलानी ❀ जिमि जलचरगण सूखत पानी
अति विषाद वश लोग लुगाई ❀ गये मातु पहँ राम गुसांई
मुख प्रसन्न चित चौगुण चाऊ ❀ यहै शोच जनि राखहिं राऊ

दो० नव गयंद[7] रघुवंशमणि, राज्य अलान[8] समान।
छूटिजान वन गमनसुनि, उर आनँद अधिकान ॥

रघुकुल तिलक जोरि दोउ हाथा ❀ मुदित मातुपद नायउ माथा
दीन्ह अशीश लाइ उर लीन्हें ❀ भूषण वसन निछावरि कीन्हें
बारबार मुख चूंबति माता ❀ नयन नेह जल पुलकित गाता
गोद राखि पुनि हृदय लगाये ❀ स्रवत प्रेमरस पयद सुहाये
परम प्रमोद न कछु कहि जाई ❀ रंक धनद पदवी जनु पाई

१ समान २ पुत्र ३ वन ४ हँसी ५ अंत ६ मंथरा ७ हाथी ८ गजबेड़ी ॥

पुनि पुनि सादर वदन निहारी ❀ बोली मधुर वचन महतारी
कहहु तात जननी बलिहारी ❀ कबहिं लगन मुद मंगलकारी
सुकृत शील सुखसींव सुहाई ❀ जन्मलाभ हित अवध अघाई

दो० जेहि चाहत नर नारि सब, अतिआरतयहिभाँति।
जिमिचातकचातकितृषित, वृष्टिशरदऋतुस्वाति॥

तात जाउँ बलि वेगि नहाहू ❀ जो मन भाव मधुर स्वइ खाहू
पितु समीप तब जायहु भैया ❀ भइ बड़ि बार जाय बलि मैया
मातुवचन सुनि अति अनुकूला ❀ जनु सनेह सुरतरु[2] के फूला
सुख मकरन्द[3] भरे श्रीमूला[4] ❀ निरखि राम मन भँवर न भूला
धर्म्म धुरीण धर्म गति जानी ❀ कहेउ मातु सन अति मृदुबानी
पिता दीन्ह मोहिं कानन[5] राजू ❀ जहँ सब भाँति मोर बड़ काजू
आयसु देहु मुदित मन माता ❀ जेहि मुदमंगल कानन जाता
जनि सनेह वश डरपसि भोरे ❀ आनँद मातु अनुग्रह तोरे

दो० वर्षचारिदशविपिन बसि, करि पितुवचन प्रमान।
आय पायँ पुनि देखिहौं, मनजनिकरसिमलान[6]॥

वचन विनीत मधुर रघुवरके ❀ शर सम लाग मातु उर करके
सहमि सूखि सुनि शीतलबानी ❀ जिमि जवास पर पावस पानी
कहि न जाय कछु हृदय विषादू ❀ मनहुँ मृगी[7] सुनि केहरि[8] नादू
नयन सजल तनु थरथर कांपी ❀ मांजा खाय मीन जनु मापी
धरि धीरज सुत वदन निहारी ❀ गद्गद वचन कहति महतारी
तात पितहि तुम प्राण पियारे ❀ देखि मुदित नित चरित तुम्हारे
राज्य देन कहँ शुभ दिन साधा ❀ कहेउ जान वन केहि अपराधा
तात सुनावहु मोहिं निदानू ❀ को दिनकरकुल भयउ कृशानू

दो० निरखिरामरुखसचिवसुत, कारण कहेउ बुझाय।
सुनि प्रसंग रहि मूकजिमि, दशा वरणिनहिंजाय॥

---

१ देर २ कल्पवृक्ष ३ पुष्परस ४ रामचन्द्र ५ वन ६ मैला ७ हिरनी ८ सिंह॥

राखि न सकहिं न कहिसक जाहू ❀ दुहूं भाँति उर दारुणंदाहू
लिखत सुधाकर[2] लिखिगा राहू ❀ विधिगति वाम सदा सब काहू
धर्म्म सनेह उभय मति घेरी ❀ भइ गति सांप छछूंदरि केरी
राखौं सुतहि होइ अनरोधू ❀ धर्म्म जाइ अरु बन्धु विरोधू
कहौं जान वन तौ बड़ि हानी ❀ संकट शोच विकल भइ रानी
बहुरि समुझि तियधर्म्म सयानी ❀ राम भरत दोउ सुत सम जानी
सरल स्वभाव राम महतारी ❀ बोलीं वचन धीर धरि भारी
तात जाउँ बलि कीन्हेउ नीका ❀ पितु आयसु सब धर्मक टीका

दो॰ राज्य देन कहि दीन्हवन, मोंहिं न शोचलवलेश।
तुम बिनु भरतहिं भूपतिहिं, प्रजहिं प्रचण्ड कलेश॥

जो केवल पितु आयसु ताता ❀ तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता
जो पितु मातु कहेउ वन जाना ❀ तौ कानन शत[3] अवध समाना
पितु वनदेव मातु वनदेवी ❀ खग मृग चरण सरोरुह सेवी
अन्तहु उचित नृपहि वनवासू ❀ वर्य[4] विलोकि हिय होत हरासू[5]
बड़भागी वन अवध अभागी ❀ जो रघुवंशतिलक तुम त्यागी
जो सुत कहौं संग मोहिं लेहू ❀ तुम्हरे हृदय होहि संदेहू
पुत्र परमप्रिय तुम सबहीके ❀ प्राण प्राण के जीवन जीके
ते तुम कहहु मातु वन जाऊं ❀ मैं सुनि वचन बैठि पछिताऊं

दो॰ यह विचारिनाहिंकरउँ हठ, झूठ सनेह बढ़ाइ।
मानि मातु के नात बलि, सुरतिबिसरिनाहिंजाइ॥

देव पितर सब तुमहिं गोसाईं ❀ राखहिं पलक नयन की नाईं
अवधि[6] अंबु[7] प्रियपरिजन मीना[8] ❀ तुम करुणाकर धर्म्म धुरीना
अस विचारि सोइ करेहु उपाई ❀ सबहि जियत जेहि भेंटहु आई
जाउ सुखेन वनहिं बलिजाऊं ❀ करि अनाथ जन परिजन गाऊं
सबकर आजु सुकृत फल बीता ❀ भयो कराल काल विपरीता

१ कठिन जलन २ चन्द्रमा ३ सौ ४ उम्र ५ दुःख ६ हृद ७ जल ८ मछली॥

यहि विधि विलपि चरण लपटानी ❀ परम अभागिनि आपुहि जानी
दारुण दुसह दाह अति व्यापा ❀ वरणि न जाइ विलाप कलापा
राम उठाय मातु उरलाई ❀ कहि मृदुवचन बहुत समुझाई

दो॰ समाचार तेहि समय सुनि, सीय उठी अकुलाय।
जाय सासु पग कमलयुग, वन्दि बैठि शिरनाय॥

दीन्ह अशीश सासु मृदुबानी ❀ अति सुकुमारि देखि अकुलानी
बैठि नमित मुख शोचति सीता ❀ रूपराशि पतिप्रेम पुनीता
चलन चहत वन जीवननाथा ❀ कवन सुकृतसन होइहि साथा
की तनु प्राण कि केवल प्राना ❀ विधिकरतब कछु जात न जाना
चारुचरण नख लेखति[2] धरणी ❀ नूपुर मुखर[3] मधुर कवि वरणी
मनहुँ प्रेमवश विनती करहीं ❀ हमहिं सीयपद जनि परिहरहीं
मंजु विलोचन मोचति[4] वारी ❀ बोलीं देखि राम महतारी
तात सुनहु सिय अतिसुकुमारी ❀ सासु ससुर परिजनहिं पियारी

दो॰ पिता जनक भूपालमणि, श्वशुर भानुकुलभान।
पति रविकुलकैरव[5]विपिन, विधु गुण रूपनिधान॥

मैं पुनि पुत्रबधू प्रियपाई ❀ रूपराशि गुण शील सुहाई
नयनपुतरि इव प्रीति बढ़ाई ❀ राखहुँ प्राण जानकिहिं लाई
कल्पबेलि जिमि बहुविधि लाली ❀ सींचि सनेह सलिल प्रतिपाली
फूलत फलत भयेउ विधि वामा ❀ जानि न जाइ काह परिणामा
पलँगपीठि तजि गोद हिंडोरा ❀ सिय न दीन्ह पगु अवनि[6] कठोरा
जिवनिमूरि जिमि जुगवति रहेऊं ❀ दीपबाति नहिं टारन कहेऊं
सो सिय चहति चलन वन साथा ❀ आयसु[7] कहा होइ रघुनाथा
चन्द्रकिरणि रसरसिक चकोरी ❀ रविरुख नयन सकै किमि जोरी

दो॰ करि[8] केहरि[9] निशिचर चरहिं, दुष्ट जन्तु वन भूरि।
विषवाटिका कि सोह सुत, सुभग सजीवनमूरि॥

---

१ पुण्य २ खोदती ३ शब्द ४ छोड़ती ५ कुमोदिनी ६ पृथ्वी ७ आज्ञा ८ हाथी ९ सिंह॥

वनहित कोल किरातकिशोरी ❀ रची विरंचि विषयरस भोरी
पाहंनकृमि जिमि कठिन स्वभाऊ ❀ तिनहिं कलेश न कानन काऊ
कै तापस तिय कानन योगू ❀ जिन तपहेतु तजा सब भोगू
सिय वन बसिहि तात केहि भाँती ❀ चित्रलिखित कपि देखि डेराती
सुरसर सुभग वनजवनचारी ❀ डाबरैं योग कि हंसकुमारी
अस विचारि जस आयसु होई ❀ मैं शिष देउँ जानकिहि सोई
जो सिय भवन रहै कह अम्बा ❀ मोकहँ होइ प्राण अवलम्बा
सुनि रघुवीर मातु प्रिय बानी ❀ शील सनेह सुधा रससानी

दो॰ कहि प्रियवचन विवेकमय, कीन्ह मातु परितोष।
लगे प्रबोधन जानकिहि, प्रकट विपिन गुण दोष॥

मातु समीप कहत सकुचाहीं ❀ बोले समय समुझि मनमाहीं
राजकुमारि सिखावन सुनहू ❀ आनभाँति जिय जनि कछु गुनहू
आपन मोर नीक जो चहहू ❀ वचन हमार मानि घर रहहू
आयसु मोर सासु सेवकाई ❀ सब विधि भामिनि भवन भलाई
यहिते अधिक धर्म्म नहिं दूजा ❀ सादर सासु ससुर पद पूजा
जब जब मातु करिहि सुधि मोरी ❀ होइहि प्रेम विकल मति भोरी
तब तब तुम कहि कथा पुरानी ❀ सुन्दरि समुझायहु मृदुबानी
कहौं स्वभाव शपथ शत मोहीं ❀ सुमुखि मातु हित राखौं तोहीं

दो॰ गुरुश्रुतिसम्मत धर्म्मफल, पाइय बिनहिं कलेश।
हठवश सब संकट सहे, गालव नहुष नरेश॥

मैं पुनि करि प्रमाण पितुबानी ❀ वेगि फिरब सुनु सुमुखि सयानी
दिवस जात नहिं लागहि बारा ❀ सुन्दरि सिखवन सुनहु हमारा
जो हठ करहु प्रेमवश वामा ❀ तौ तुम दुख पाउब परिणामा
कानन कठिन भयंकर भारी ❀ घोर घाम हिम वारि बयारी
कुश कंटक मग कंकर नाना ❀ चलब पयादे बिनु पदत्राना

१ पत्थर २ कीड़ा ३ कमलों का वन ४ गड्ढा ५ अमृत ६ कसम ७ वेद ८ वन ९ जूता॥

चरण कमल मृदु मंजु तुम्हारे ❀ मारग अगम भूमिधरं भारे
कन्दर खोह नदी नद नारे ❀ अगम अगाध न जाहिं निहारे
भालु बाघ वृक केहरि नागा ❀ करहि नाद सुनि धीरज भागा

दो० भूमिशयन वल्कल वसन, अशन कन्द फलमूल।
तेकि सदा सब दिन मिलहिं, समयसमय अनुकूल॥

नर अहार रजनीचर करहीं ❀ कपट वेष वन कोटिन फिरहीं
लागै अति पहार कर पानी ❀ विपिनैं विपति नहिं जात बखानी
व्याल कराल विहँगं वन घोरा ❀ निशिचरनिकर नारि नर चोरा
डरपहिं धीर गहन सुधि आये ❀ मृगलोचनि तुम भीरु सुभाये
हंसगमनि तुम नहिं वन योगू ❀ सुनि अपयश देहहिं मोहिं लोगू
मानस सलिल सुधा प्रतिपाली ❀ जियइ कि लवणंपयोधि मराली
नव रसाल वन विहरण शीला ❀ सोह कि कोकिल विपिनकरीला
रहहु भवन अस हृदय विचारी ❀ चन्द्रवदनि दुख कानन भारी

दो० सहज सुहृद गुरु स्वामिशिष, जो न करैहितमानि।
सो पछिताय अघाय उर, अवशि होइ हितहानि॥

सुनि मृदु वचन मनोहर पियके ❀ लोचन नलिन भरे जल सियके
शीतल शिष दाहक भइ कैसे ❀ चकइहि शरद चाँदनी जैसे
उतर न आव विकल वैदेही ❀ तजन चहत मोहिं परम सनेही
बरबस रोंकि विलोचन वारी ❀ धरि धीरज उर अवनिकुमारी
लागि सासु पद कह कर जोरी ❀ छमहु मातु बड़ि अविनय मोरी
दीन्ह प्राणपति मोहिं शिष सोई ❀ जेहि विधि मोर परमहित होई
मैं पुनि समुझि दीख मनमाहीं ❀ प्रिय वियोगसम दुख जग नाहीं
अस कहि सिय रघुपतिपद लागी ❀ बोली वचन प्रेम रस पागी

दो० प्राणनाथ करुणायतन, सुन्दर सुखद सुजानं।
तुम बिनु रघुकुलकुमुदविधुं, सुरपुर नरक समान॥

१ पहाड़ २ भोजन ३ वन ४ पक्षी ५ जल ६ खारीसमुद्र ७ चतुर ८ चन्द्रमा॥

मातु पिता भगिनी प्रिय भाई ❋ प्रिय परिवार सुहृद समुदाई
सास ससुर गुरु सुजन सगाई ❋ सुत सुन्दर सुशील सुखदाई
जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते ❋ पिय बिनु तियहि तरणि ते ताते
तनु धनधाम धरणि पुर राजू ❋ पतिविहीन सब शोक समाजू
भोग रोग सम भूषण भारू ❋ यम यातना सरिस संसारू
प्राणनाथ तुम बिनु जगमाहीं ❋ मोकहँ सुखद कतहुँ कोउ नाहीं
जिय बिनु देह नदी बिनु वारी ❋ तैसहि नाथ पुरुष बिनु नारी
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे ❋ शरद विमल विधु वदन निहारे

दो० खगमृग परिजन नगर वन, वलकल विमल दुकूल।
नाथ साथ सुरसदन सम, पर्णशाल[1] सुखमूल ॥

वन देवी वन देव उदारा ❋ करिहैं सासु ससुर सम सारा
कुश किसलय[2] साथरी[3] सुहाई ❋ प्रभु सँग मंजु मनोज तुराई[4]
कन्द मूल फल अमिय अहारू ❋ अवधि अवधशत सरिस पहारू
क्षणक्षण प्रभु पद कमल विलोकी ❋ रहिहौं मुदित दिवस जिमि कोकी
वन दुख नाथ कहेउ बहुतेरे ❋ भय विषाद परिताप घनेरे
प्रभु वियोग लवलेश समाना ❋ सब मिलि होहिं न कृपानिधाना
अस जिय जानि सुजानशिरोमनि ❋ लेइय संग मोहिं छांड़िय जानि
विनती बहुत करौं का स्वामी ❋ करुणामय अरु अन्तरयामी

दो० राखिय अवध जो अवधिलगि, रहत जानिये प्रान।
दीनबन्धु सुन्दर सुखद, शील सनेहनिधान ॥

मोहिं मग चलत न होइहि हारी ❋ क्षणक्षण चरणसरोज निहारी
सबहि भाँति प्रिय सेवा करिहौं ❋ मारगजनित सकल श्रम हरिहौं
पांव पखारि बैठि तरु छाहीं ❋ करिहौं वायु मुदित मनमाहीं
श्रमकण[6] सहित श्याम तनु देखी ❋ का दुख समय प्राणपति पेखी
सम महि तृण[5] तरु पल्लव[7] डासी ❋ पांय पलोटिहि सब निशि दासी

१ पत्तों का घर २ कोमल पत्ते ३ आसनी ४ तोशक ५ तृण ६ पसीना ७ पत्ते ॥

माता से विदा।

राखि न सकहिं न कहि सक जाहू। दुहूँ भाँति उर दारुण दाहू॥
जाहु सुखेन बनहि बलि जाऊँ। करि अनाथ जन परिजन गाऊँ॥
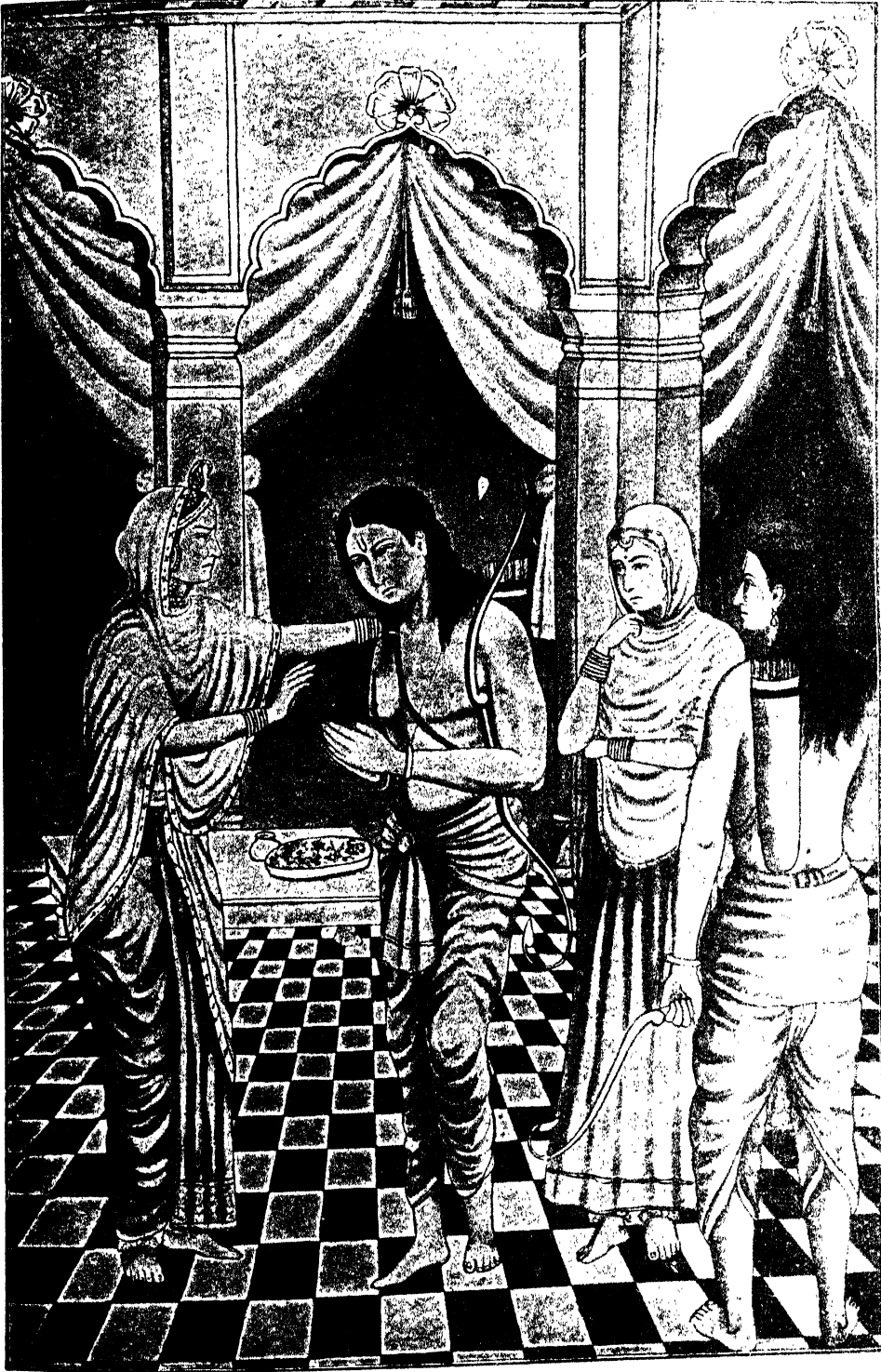
बार बार मृदु मूरति जोही ❀ लागिहि ताति बयारि न मोही
को प्रभुसँग मोहिं चितवनहारा ❀ सिंहबधुहिं जिमि शशक सियारा
मैं सुकुमारि नाथ वन योगू ❀ तुमहिं उचित तप मोकहँ भोगू

दो० ऐसेहु वचन कठोर सुनि, जो न हृदय बिलगान[1]।
तौ प्रभु विषम वियोगदुख, सहिहैं पामर[2] प्रान॥

अस कहि सीय विकल भइ भारी ❀ वचन वियोग न सकी सँभारी
देखि दशा रघुपति जिय जाना ❀ हठि राखे राखिहि नहिं प्राना
कह्यउ कृपालु भानुकुलनाथा ❀ परिहरि शोच चलहु वन साथा
नहिं विषाद[3] कर अवसर आजू ❀ वेगि करहु वनगमन समाजू
कहि प्रियवचन प्रियहि समुझाई ❀ लगे मातु पद आशिष पाई
वेगि प्रजादुख मेटब आई ❀ जननी[4] निठुर बिसरि जनिजाई
फिरिहि दशा विधि बहुरि कि मोरी ❀ देखिहौं नयन मनोहर जोरी
सुदिन सुघरी तात कब होई ❀ जननी जियत वदनविधु[5] जोई

दो० बहुरि वच्छ कहि लाल कहि, रघुपति रघुवर तात।
कबहिं बुलाइ लगाइ उर, हरषि निरखिहौं गात॥

लखि सनेह कातरि[6] महतारी ❀ वचन न आव विकल भइ भारी
राम प्रबोध कीन्ह विधिनाना ❀ समय सनेह न जाइ बखाना
तब जानकी सासु पग लागी ❀ सुनिय मातु मैं परम अभागी
सेवा समय दैव वन दीन्हा ❀ मोर मनोरथ सफल न कीन्हा
तजब छोभ जनि छांड़ब छोहू ❀ कर्म्म कठिन कछु दोष न मोहू
सुनि सियवचन सासु अकुलानी ❀ दशा कवन विधि कहौं बखानी
बारहिं बार लाइ उर लीन्हीं ❀ धरि धीरज उर आशिष दीन्हीं
अचल होउ अहिवात[7] तुम्हारा ❀ जबलग गंग यमुन जलधारा

दो० सीतहि सासु अशीश शिष, दीन्ह अनेक प्रकार।
चली नाइ पद पद्म[8] शिर, अतिहित बारहिंबार॥

१ फटा २ नीच ३ दुःख ४ माता ५ चन्द्रमा ६ कायर ७ सुहाग ८ कमल॥

समाचार जब लक्ष्मण पाये ❁ व्याकुल विलखि वदन उठि धाये
कम्प पुलक तनु नयन सनीरा ❁ गहे चरण अति प्रेम अधीरा
कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े ❁ मीन[1] दीन जनु जल ते काढ़े
शोच हृदय विधि का होनहारा ❁ सब सुख सुकृत[2] सिरान हमारा
मो कहँ कहा कहब रघुनाथा ❁ रखिहैं भवन कि लेहैं साथा
राम विलोकि बन्धु करजोरे ❁ देह गेह सबसन तृण तोरे
बोले वचन राम नयनागर ❁ शील सनेह सरल सुखसागर
तात प्रेमवश जनि कदराहू ❁ समुझि हृदय परिणाम उछाहू

दो० मातुपितागुरुस्वामिशिष, शिरधरि करहिं सुभाइ।
लह्यउ लाभ तिन जन्मके, नतरु जन्म जग जाइ॥

अस जिय जानि सुनहु शिष भाई ❁ करो मातु पितु पद सेवकाई
भवन भरत रिपुसूदन नाहीं ❁ राव वृद्ध मम दुख मनमाहीं
मैं वन जाउँ तुमहिं लै साथा ❁ होइहि सब विधि अवध[4] अनाथा
गुरु पितु मातु प्रजा परिवारू ❁ सब कहँ परै दुसह[5] दुख भारू
रहहु करहु सब कर परितोषू ❁ नतरु तात होइहि बड़ दोषू
जासु राज्य प्रिय प्रजा दुखारी ❁ सो नृप अवशि नरक अधिकारी
रहहु तात अस नीति विचारी ❁ सुनत लषण भये व्याकुल भारी
सियरे वदन सूखि गये कैसे ❁ परसत तुहिन[6] तामरस[7] जैसे

दो० उतर न आवत प्रेमवश, गहे चरण अकुलाइ।
नाथ दास मैं स्वामि तुम, तजहु तो कहा बसाइ॥

दीन्ह मोहिं शिष नीक गुसाँई ❁ अगम लागि आपनि कदराई
नर वर धीर धर्म्मधुर धारी ❁ निगम नीति के ते अधिकारी
मैं शिशु प्रभु सनेह प्रतिपाला ❁ मन्दर[8] मेरु कि लेइ मराला
गुरु पितु मातु न जानों काहू ❁ कहौं स्वभाव नाथ पतियाहू
जहँ लगि जगत सनेह सगाई ❁ प्रीति प्रतीति निगम निजगाई

१ मछली २ पुण्य ३ अन्त ४ अयोध्या ५ असह्य ६ पाला ७ कमल ८ मन्दराचल॥

मोरे सबै एक तुम स्वामी ❀ दीनबन्धु अरु अन्तरयामी
धर्म्मनीति उपदेशिय ताही ❀ कीरति भूति सुगति प्रिय जाही
मन क्रम वचन चरणरत होई ❀ कृपासिन्धु परिहरिय कि सोई

दो० करुणासिन्धु सुबन्धु के, सुनि मृदुवचन विनीत।
समुझाये उरलाय प्रभु, जानि सनेह सभीत॥

मांगहु बिदा मातु सन जाई ❀ आवहु वेगि चलहु वन भाई
मुदित भये सुनि रघुवर बानी ❀ भयउ लाभ बड़ मिटी गलानी
हरषित हृदय मातु पहँ आये ❀ मनहुँ अन्ध फिरि लोचन पाये
जाइ जननि पद नायउ माथा ❀ मन रघुनन्दन जानकि साथा
पूंछेउ मातु मलिन मन देखी ❀ लषण कहउ सब कथा विशेखी
गई सहमि सुनि वचन कठोरा ❀ मृगी[२] देखि जनु दव[३] चहुँओरा
लषण लखेउ भा अनरथ आजू ❀ यह सनेह वश करब अकाजू
मांगत बिदा समय सकुचाहीं ❀ जान संग विधि कहहिं कि नाहीं

दो० समुझि सुमित्रा राम सिय, रूप सुशील स्वभाव।
नृपसनेह लखि धुनेउ शिर, पापिनि कीन्ह कुदाव॥

धीरज धरेउ कुअवसर जानी ❀ सहज सुहृद बोली मृदु बानी
तात तुम्हारि मातु वैदेही ❀ पिता राम सब भाँति सनेही
अवध तहाँ जहँ राम निवासू ❀ तहाँ दिवस जहँ भानुप्रकासू
जोपै राम सीय वन जाहीं ❀ अवध तुम्हार काज कछु नाहीं
गुरु पितु मातु बन्धु सुर साईं ❀ सेइय सकल प्राण की नाईं
राम प्राण प्रिय जीवन जीके ❀ स्वारथ रहित सखा सबहीके
पूजनीय प्रिय परम जहाँते ❀ मानिय सकल राम के नाते
अस जिय जानि संग वन जाहू ❀ लेहु तात जगजीवन लाहू

दो० भूरि भाग्य भाजन भयउ, मोहिं समेत बलिजाउँ।
जो तुम्हरे मन छांड़ि छल, कीन्ह रामपद ठाउँ॥

---

१ नीतियुक्त २ हारणी ३ वन का अग्नि ४ सुन्दर हृदय ५ कोमल ६ प्यार ७ वर्नन।

पुत्रवती युवती जग सोई ❀ रघुवर भक्त जासु सुत होई
नतरु बांझ भलि बादि बियानी ❀ राम विमुख सुतते हितहानी
तुम्हरे भाग्य राम वन जाहीं ❀ दूसर हेतु तात कछु नाहीं
सकल सुकृत कर फल सुत येहू ❀ राम सीय पद सहज सनेहू
राग रोष ईर्षा मद मोहू ❀ जनि सपनेहु इनके वश होहू
सकल प्रकार विकार विहाई[१] ❀ मन क्रम वचन करेहु सेवकाई
तुम कहँ वन सब भाँति सुपासू ❀ सँग पितु मातु राम सिय जासू
जेहि न राम वन लहहिं कलेशू ❀ सुत सोइ करेहु यहै उपदेशू

छं० उपदेश[२] यहि जेहि तात कानन रामसिय सुखपावहीं।
पितु मातु प्रिय परिवार पुर सुख सुरति वन बिसरावहीं॥
तुलसी सुतहिं शिष देइ आयसु देइ पुनि आशिष दई।
रतिहोउ अविरल अमल सिय रघुवीरपद नित नित नई॥

सो० मातु चरण शिरनाइ, चले तुरत शंकित हृदय।
बागुर[३] विषम तुराइ, मनहुँ भाग मृग[४] भाग्यवश॥

गये लषण जहँ जानकिनाथा ❀ भे मन मुदित[५] पाइ प्रिय साथा
वन्दि राम सिय चरण सुहाये ❀ चले संग नृप मन्दिर आये
कहहिं परस्पर पुर नर नारी ❀ भलि बनाइ विधि बात बिगारी
तन कृश[६] मन दुख वदन मलीने ❀ विकल मनहुँ माखी मधु[७] छीने
कर मींजहिं शिर धुनि पछिताहीं ❀ जनु बिनु पंख विहँग अकुलाहीं
भइ बड़ि भीर भूप दरबारा ❀ वरणि न जाइ विषाद अपारा
सचिव[८] उठाइ राव बैठारे ❀ कहि प्रिय वचन राम पगुधारे
सिय समेत दोउ तनय निहारी ❀ व्याकुल भये भूमिपति भारी

दो० सीयसहित सुत सुभग दोउ, देखि देखि अकुलाइ।
बारहिंबार सनेह वश, राव लिये उरलाइ॥

सके न बोलि विकल नरनाहू ❀ शोक विकल उर दारुणदाहू

१ छोड़के २ शिक्षा ३ फन्दा ४ हरिण ५ प्रसन्न ६ दुर्बल ७ शहद ८ मन्त्री॥

नाइ शीश पद अतिअनुरागा ❀ उठि रघुनाथ बिदा तब मांगा
पितु अशीश आयसु मोहिं दीजै ❀ हर्षसमय विस्मय कत कीजै
तात किये प्रिय प्रेम प्रमादू ❀ यश जग जाइ होइ अपवादू[1]
सुनि सनेहवश उठि नरनाहू[2] ❀ बैठारे रघुपति गहि बाहू
सुनहु तात तुम कहँ मुनि कहहीं ❀ राम चराचर नायक[3] अहहीं
शुभ अरु अशुभकर्म अनुहारी ❀ ईश देइ फल हृदय विचारी
करै जो कर्म्म पाव फल सोई ❀ निगम[4] नीति अस कह सब कोई

दो० और करै अपराध कोइ, और पाव फल भोग।
अति विचित्र भगवंतगति, को जग जानै योग॥

राव राम राखन हित लागी ❀ बहुत उपाय कीन्ह छल त्यागी
लखेउ रामरुख रहत न जाने ❀ धर्म्म धुरन्धर धीर सयाने
तब नृप सीय लाइ उँर[5] लीनी ❀ अतिहित बहुत भाँति शिष दीनी
कहि वन के दुख दुसह[6] सुनाये ❀ सासु ससुर पितु सुख समुझाये
सियमन रामचरण अनुरागा ❀ घर न सुगम वन अगम न लागा
औरो सबहि सीय समुझाई ❀ कहि कहि विपिनविपति अधिकाई
सचिवनारि गुरुनारि सयानी ❀ सहित सनेह कहहिं मृदुबानी
तुम कहँ तौ न दीन्ह वनवासू ❀ करहु जो कहहिं श्वशुर गुरु सासू

दो० शिष शीतल हित मधुर मृदु, सुनि सीतहि न सुहानि।
शरद चन्द्र चांदनि लगत, जनु चकई अकुलानि॥

सीय सकुच वश उतर न देई ❀ सो सुनि तमकि उठी कैकेई
मुनिपट भूषण भाजनँ[7] आनी ❀ आगे धरि बोली मृदुबानी
नृपहिं प्राण प्रिय तुम रघुवीरा ❀ शील सनेह न छांड़हिं भीरा
सुकृत[8] सुयश परलोक नशाऊ ❀ तुमहिं जान वन कहहिं न राऊ
अस विचारि सोइ करौ जो भावा ❀ राम जननिशिष सुनि सुख पावा
भूपहिं वचन बाण सम लागे ❀ करहिं न प्राण पयानँ[9] अभागे

१ निंदा २ राजा ३ स्वामी ४ वेद ५ हृदय ६ असह्य ७ बर्तन ८ पुण्य ९ कूच॥

शोक विकल मूर्च्छित नरनाहू ❁ कहा करिय कछु सूझ न काहू
राम तुरत मुनिवेष बनाई ❁ चले जनक जननिहिं शिरनाई

दो० सजि वनसाजसमाज प्रभु, वनिता बन्धु समेत।
वन्दि विप्र गुरुचरण प्रभु, चले करि सबहिं अचेत॥

निकसि वशिष्ठ द्वार भे ठाढ़े ❁ देखे लोग विरहदव डाढ़े
कहि प्रियवचन सबहिं समुझाये ❁ विप्र वृन्द रघुवीर बुलाये
गुरुसन कहि वर्षाशन दीन्हे ❁ आदर दान विनय वश कीन्हे
याचक दान मान सन्तोषे ❁ मीत पुनीत प्रेम परितोषे
दासी दास बुलाइ बहोरी ❁ गुरुहिं सौंपि बोले कर जोरी
सबकर सार सँभार गुसाईं ❁ करब जनक जननी की नाईं
बारहिं बार जोरि युग पानी ❁ कहत राम सबसन मृदु बानी
सोइ सब भाँति मोर हितकारी ❁ जेहिते रहैं भुवाल सुखारी

दो० मातु सकल मोरे विरह, जेहि न होहिं दुखदीन।
सो उपाय तुम करब सब, पुरजन परम प्रवीन॥

यहि विधि राम सबहिं समुझावा ❁ गुरुपदपद्म हरषि शिर नावा
गणपति गौरि गिरीश[६] मनाई ❁ चले अशीश पाइ रघुराई
राम चलत अति भयो विषादू ❁ सुनि न जाइ पुर आरत नादू
कुशकुन लंक अवध अतिशोकू ❁ हर्ष विषाद विवश सुरलोकू
गै मूर्च्छा तब भूपति जागे ❁ बोलि सुमन्त्र कहन अस लागे
राम चले वन प्राण न जाहीं ❁ केहि सुख लागि रहत तनुमाहीं
यहिते कवन व्यथा बलवाना ❁ जो दुख पाइ तजहिं तनु प्राना
पुनि धरि धीर कहहिं नरनाहू ❁ लै रथ संग सखा तुम जाहू

दो० सुठि सुकुमार कुमार दोउ, जनकसुता सुकुमारि।
रथ चढ़ाइ दिखराइ वन, फिरहु गये दिन चारि॥

जो नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई ❁ सत्यसन्ध दृढ़व्रत रघुराई

१ पिता २ स्त्री ३ बेहोश ४ जले ५ माता ६ शंभु ७ शोर ८ पीड़ा ९ पवित्र॥

तौ तुम विनय करेहु करजोरी ❀ फेरिय प्रभु मिथिलेशकिशोरी
जब सिय कानन देखि डराई ❀ कहेउ मोरि शिष अवसर पाई
सासु ससुर अस कहेउ सँदेशू ❀ पुत्रि फिरिय वन बहुत कलेशू
पितु गृह कबहुँ कबहुँ ससुरारी ❀ रहेउ जहाँ रुचि होइ तुम्हारी
यहि विधि करेहु उपाइ कदम्बा ❀ फिरइ तो होइ प्राण अवलम्बा
नाहिंत मोर मरण परिणामा ❀ कछु न बसाइ भयो विधि वामा
अस कहि मूर्च्छि परेउ महि राऊ ❀ राम लषण सिय आनि दिखाऊ

दो॰ पाय रजाइसु नाइ शिर, रथ अति रुचिर बनाइ।
गयउ जहां बाहर नगर, सीय सहित दोउ भाइ॥

तब सुमन्त्र नृप वचन सुनाये ❀ करि विनती रथ राम चढ़ाये
चढ़ि रथ सीय सहित दोउ भाई ❀ चले हरषि अवधहिं शिर नाई
चले राम लखि अवध अनाथा ❀ विकल लोग लागे सब साथा
कृपासिन्धु बहुविधि समुझावहिं ❀ फिरहिं प्रेमवश पुनि फिरिआवहिं
लागत अवध भयानक भारी ❀ मानहुँ कालराति अँधियारी
घोर जन्तु सम पुर नर नारी ❀ डरपहिं एकहि एक निहारी
घर मसान पुर परिजन भूता ❀ सुत हित मीत मनहुँ यमदूता
बागन विटप बेलि कुम्हिलाहीं ❀ सरित सरोवर देखि न जाहीं

दो॰ हय गय कोटिक केलिमृग, पुर पशु चातक मोर।
पिक रथांग शुक सारिका, सारस हंस चकोर॥

राम वियोग विकल सब ठाढ़े ❀ जहँ तहँ मनहुँ चित्रलिखि काढ़े
नगर सकल वन गह्वर भारी ❀ खग मृग विपुल सकल नर नारी
विधि केकयि किरातिनी कीन्ही ❀ जेहि दव दुसह दशहु दिशि दीन्ही
सहि न सके रघुवर विरहागी ❀ चले लोग सब व्याकुल भागी
सबहिं विचार कीन्ह मनमाहीं ❀ रामलषण सिय बिनु सुख नाहीं
जहां राम तहँ सब सुख साजू ❀ बिनु रघुवीर अवध केहि काजू

---

१ विनती। २ वन ३ सहारा। ४ सुन्दर ५ वृक्ष ६ नदी ७ तालाब ८ मैना ९ भिल्लिनि॥

चले साथ अस मन्त्र दृढ़ाई ❀ सुर दुर्लभ सुख सदन बिहाई
रामचरण पंकज[1] प्रिय जिनहीं ❀ विषय भोग वश करै कि तिनहीं

दो॰ बालक वृद्ध विहाइ गृह, लगे लोग सब साथ।
तमसा तीर निवास किय, प्रथम दिवस रघुनाथ॥

रघुपति प्रजा प्रेम वश देखी ❀ सदय हृदय दुख भयउ विशेखी
करुणामय रघुनाथ गुसाईं ❀ वेगि पाइ यह पीर पराई
कहि सप्रेम मृदु वचन सुहाये ❀ बहु विधि राम लोग समुझाये
किये धर्म उपदेश[3] घनेरे ❀ लोग प्रेम वश फिरहिं न फेरे
शील सनेह छांड़ि नहिं जाई ❀ असमंजस वश भे रघुराई
लोग शोग श्रम वश गये सोई ❀ कछुक देवमाया मति भोई
जबहिं याम[4] युग[5] यामिनि[6] बीती ❀ राम सचिव[7] सन कहेउ सप्रीती
खोज मारि रथ हांकहु ताता ❀ आन उपाय बनिहि नहिं बाता

दो॰ राम लषण सिय यानचढ़ि, शम्भु चरण शिरनाइ।
सचिव चलायउ तुरत रथ, इत उत खोज दुराइ॥

जागे सकल लोग भये भोरू ❀ गये रघुवीर भयो अति शोरू
रथ कर खोज कतहुँ नहिं पावहिं ❀ रामराम कहि चहुँदिशि धावहिं
मनहुँ वारि[8]निधि बूड़ जहाजू ❀ भयउ विकल जनु वणिकसमाजू
एकहिं एक देहिं उपदेशू ❀ तजेउ राम हम जानि कलेशू
निन्दहिं आपु सराहहिं मीना[9] ❀ धिक जीवन रघुवीर विहीना
जोपै प्रिय वियोग विधि कीन्हा ❀ तौ कस मरण न मांगे दीन्हा
यहि विधि करत प्रलाप कलापा ❀ आये अवध भरे परितापा
विषम वियोग न जाइ बखाना ❀ अवधि आश राखहिं सब प्राना

दो॰ राम दरश हित नेम व्रत, लगे करन नर नारि।
मनहुँ कोक[2] कोकी कमल, दीन विहीन तमारि॥

सीता सचिव सहित दोउ भाई ❀ शृङ्गवेर पुर पहुँचे जाई

१ कमल २ कोकके ३ शिक्षा ४ प्रहर ५ दो ६ रात्रि ७ मन्त्री ८ समुद्र ९ मछली ॥

उतरे राम देवसरि[1] देखी ❁ कीन्ह दण्डवत हर्ष विशेखी
लषण सचिव सिय कीन्ह प्रणामा ❁ सबहि सहित सुख पायउ रामा
गङ्ग सकल मुद मंगलमूला ❁ सब सुखकरनि हरनि सब शूला
कहि कहि कोटिक कथा प्रसंगा ❁ राम विलोकत गंग तरंगा
सचिवहि अनुजहि प्रियहि सुनाई ❁ विबुधनदी महिमा अधिकाई
मज्जन कीन्ह पन्थ[2]श्रम गयऊ ❁ शुचि[3] जल पियत मुदित मन भयऊ
सुमिरत जाहि मिटहिं भवभारू ❁ तेहि श्रम यह लौकिक व्यवहारू

दो॰ शुद्ध सच्चिदानन्द मय, राम भानुकुलकेतु।
चरित करत नर अनुहरत, संसृत[4] सागर सेतु॥

यह सुधि गुह निषाद जब पाई ❁ मुदित लिये प्रियबन्धु बुलाई
लै फल मूल भेंट भरि भारा ❁ मिलन चल्यो हिय हर्ष अपारा
करि दण्डवत भेंट धरि आगे ❁ प्रभुहि विलोकत अति अनुरागे
सहज सनेह विवश रघुराई ❁ पूंछेउ कुशल निकट बैठाई
नाथ कुशल पदपंकज देखे ❁ भयउँ भाग्यभाजन जन लेखे
देव धरणि धन धाम तुम्हारा ❁ मैं जन नीच सहित परिवारा
कृपा करिय पुर धारिय पाऊ ❁ थापिय जन सब लोग सिहाऊ
कहेउ सत्य सब सखा सुजाना[5] ❁ मोहिं दीन्ह पितु आयसु[6] आना

दो॰ वर्ष चारिदश वास वन, मुनिव्रत वेष अहार।
ग्रामवास नहिं उचित सुनि, गुहहि भयो दुखभार॥

राम लषण सियरूप निहारी ❁ कहहिं सप्रेम नगर नरनारी
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे ❁ जिन पठये वन बालक ऐसे
एक कहहिं भूपति भल कीन्हा ❁ लोचनलाहु[7] हमहिं जिन दीन्हा
तब निषादपति उर अनुमाना ❁ तरु शिंशपा[8] मनोहर जाना
लै रघुनाथहिं ठौर बतावा ❁ कहेउ राम सब भाँति सुहावा
पुरजन करि जुहार गृह आये ❁ रघुवर सन्ध्या करन सिधाये

१ गंगा २ रास्ता ३ पवित्र ४ स्वतंत ५ चतुर ६ आज्ञा ७ लाभ ८ सिरसा ॥

गुह सँवारि साथरी बनाई ❀ कुशकिसलय मृदु परम सुहाई
शुचि फल मूल मृदुल मधु जानी ❀ दोना भरिभरि राखेसि आनी

दो० सिय सुमन्त्र भ्रातासहित, कंदमूल फल खाइ।
शयन कीन्ह रघुवंशमणि, पाँय पलोटत भाइ॥

उठे लषण प्रभु सोवत जानी ❀ कहि सचिवहिं सोवन मृदु बानी
कछुक दूरि सजि बाणशरासन ❀ जागन लगे बैठि वीरासन
गुह बुलाइ पाहरू[2] प्रतीती ❀ ठांव ठांव राखे अति प्रीती
आप लषण पहँ बैठेउ जाई ❀ कटि[3] भार्था[4] शर[5] चाप चढ़ाई
सोवत प्रभुहि निहारि निषादा ❀ भयउ प्रेमवश हृदय विषादा
तनु पुलकित लोचन जल बहई ❀ वचन सप्रेम लषणसन कहई
भूपति भवन सुभाय सुहावा ❀ सुरपति सदन[6] न पटतर आवा
मणिमय रचित चारु चौवारे ❀ जनु रतिपति[7] निजहाथ सँवारे

दो० शुचि सुविचित्र सुभोगमय, सुमन सुगन्ध सुवास।
पलँग मंजु मणिदीप जहँ, सबविधि सकल सुपास॥

विविध वसन उपधान[8] तुराई ❀ क्षीरफेनु मृदु विशद सुहाई
तहँ सिय राम शयन निशि करहीं ❀ निजछबि रति मनोज मद हरहीं
ते सिय राम साथरी सोये ❀ श्रमित वसन बिनु जाहिं न जोये
मातु पिता परिजन पुरवासी ❀ सखा सुशील दास अरु दासी
जुगवहिं जिनहिं प्राण की नाईं ❀ महि सोवत सोइ राम गुसाईं
पिता जनक जग विदित प्रभाऊ ❀ श्वशुर सुरेश सखा रघुराऊ
रामचन्द्र पति सो वैदेही ❀ महि सोवत विधि वाम न केही
सिय रघुवीर कि कानन योगू ❀ कर्म प्रधान सत्य कह लोगू

दो० केकयनन्दिनि मन्दमति, कठिन कुटिलपन कीन्ह।
जेहिं रघुनन्दन जानकिहिं, सुख अवसर दुखदीन्ह॥

भइ दिनकरकुल विटप कुठारी ❀ कुमति कीन्ह सब विश्व दुखारी

१ सोये २ रखवारे ३ कमर ४ तरकस ५ बाण ६ गृह ७ कामदेव ८ तकिया॥

भयउ विषाद निषादहि भारी ❀ राम सीय महि शयन निहारी
बोले लषण मधुर मृदुबानी ❀ ज्ञान विराग भक्ति रससानी
कोउ न काहु दुख सुखकर दाता ❀ निज कृत कर्म भोग सब भ्राता
योग वियोग भोग भल मन्दा ❀ हित अनहित मध्यम भ्रमफन्दा
जन्म मरण जहँलगि जगजालू ❀ सम्पति विपति कर्म अरु कालू
धरणि धाम धन पुर परिवारू ❀ स्वर्ग नरक जहँलगि व्यवहारू
देखिय सुनिय गुनिय मनमाहीं ❀ मोहमूल परमारथ नाहीं

दो० सपने होहि भिखारि नृप, रंक नाकपति[१] होइ।
जागे लाभ न हानि कछु, तिमि प्रपंच जिय जोइ॥

अस विचारि नहिं कीजिय रोषू[२] ❀ वादि काहु नहिं दीजिय दोषू
मोह निशा सब सोवनहारा ❀ देखहिं स्वप्न अनेक प्रकारा
यहि जग यामिनि[३] जागहिं योगी ❀ परमारथी प्रपंच वियोगी
जानिय तबहिं जीव जग जागा ❀ जब सब विषय विलास विरागा
होइ विवेक मोह भ्रम भागा ❀ तब रघुवीर चरण अनुरागा
सखा परम परमारथ एहू ❀ मन क्रम वचन रामपद नेहू
राम ब्रह्म परमारथ रूपा ❀ अविगत अलख[४] अनादि अनूपा
सकल विकार रहित मत भेदा ❀ कहि नित नेति निरूपहिं वेदा

दो० भक्त भूमि भूसुर[५] सुरभि, सुरहित लागि कृपाल।
करत चरित धरि मनुजतनु, सुनत मिटैं जगजाल॥

सखा समुझि अस परिहरि मोहू ❀ सिय रघुवीर चरण रत होहू
कहत राम गुण भा भिनुसारा ❀ जागे जग मंगल दातारा
सकल शौच करि राम नहाये ❀ शुचि सुजान वटक्षीर[६] मँगाये
अनुज[७] सहित शिर जटा बनाये ❀ देखि सुमन्त्र नयन जल छाये
हृदय दाह अति वदन मलीना ❀ कह कर जोरि वचन अतिदीना
नाथ कहेउ अस कोशल नाथा ❀ लै रथ जाहु राम के साथा
वन दिखाइ सुरसरि[८] नहवाई ❀ आनेहु वेगि फेरि दोउ भाई

१ इन्द्र २ क्रोध ३ रात्रि ४ अदेश्य ५ विप्र ६ दूध ७ छोटा भाई ८ गंगाजी॥

राम लषण सिय आनेहु फेरी ❀ संशय सकल सँकोच निवेरी

दो॰ नृप अस कहेउ गुसाइँ जस, कहिय करौं बलि सोइ।
करि बिनती पायँन परेउ, दीन बाल जिमि रोइ॥

तात कृपा करि कीजिय सोई ❀ जाते अवध अनाथ न होई
मन्त्रिहि राम उठाय प्रबोधा ❀ तात धर्म मगु तुम सब शोधा
शिबि दधीचि हरिचन्द नरेशा ❀ सहे धर्म हित कोटि कलेशा
रन्तिदेव बलि भूप सुजाना ❀ धर्म धरेउ सहि संकट नाना
धर्म न दूसर सत्य समाना ❀ आगम निगम पुराण बखाना
मैं सोइ धर्म सुलभ करि पावा ❀ तजे सो तिहुँपुर अपयश[2] छावा
सम्भावित[3] कहँ अपयश लाहू ❀ मरण कोटि सम दारुण[4] दाहू
तुम सन तात बहुत का कहऊं ❀ दिये उतर पुनि पातक लहऊं

दो॰ पितुपदगहिकहिकोटिविधि, विनयकरबकरजोरि।
चिन्ता कवनिहुँ बात की, तातकरियजनिमोरि॥

तुम पुनि पितु समान हित मोरे ❀ विनती करौं तात कर जोरे
सब विधि सोइ करतब्य तुम्हारे ❀ दुख न पाव नृप शोच हमारे
सुनि रघुनाथ सचिव सम्बादू ❀ भयउ सपरिजन विकल निषादू
पुनि कछु लषण कहेउ कटु बानी ❀ प्रभु बरजेउ बड़ अनुचित जानी
सकुचि राम निज शपथ[5] दिवाई ❀ लषण सँदेश कहब जनि जाई
कह सुमन्त्र पुनि भूप सँदेशू ❀ सहि न सकिहि सिय विपिन[6] कलेशू
जेहि विधि अवध आव फिरि सीया ❀ सोइ रघुनाथ तुमहिं करनीया
नतरु[7] निपट अवलम्ब विहीना ❀ मैं न जियब जिमि जल बिनु मीना[8]

दो॰ मैके ससुरे सकल सुख, जबहिं जहां मन मान।
तब तहँ रहब सुखेन सिय, जबलगिविपतिविहान॥

विनती कीन्ह भूप जेहि भाँती ❀ आरति प्रीति न सो कहि जाती
पितु सँदेश सुनि कृपानिधाना ❀ सियहिं दीन्ह शिष कोटि विधाना

१ राजा २ कलंक ३ प्रतिष्ठित ४ कठिन ५ सौगन्द ६ बन ७ नहीं तो ८ मछली॥

सासु ससुर गुरु प्रिय परिवारू ❀ फिरहु तो सबकर मिटै खंभारू[1]
सुनि पतिवचन कहति वैदेही ❀ सुनहु प्राणपति परमसनेही
प्रभु करुणामय परम विवेकी ❀ तनु तजि छांह रहत किमि छेकी
प्रभा जाइ कहँ भानु विहाई ❀ कहँ चन्द्रिका[2] चन्द्र तजि जाई
पतिहि प्रेममय विनय सुनाई ❀ कहत सचिवसन गिरा सुहाई
तुम पितु श्वशुर सरिस हितकारी ❀ उतरु देउँ फिरि अनुचित भारी

दो॰ आरतवश सम्मुख भइउँ, बिलग न मानब तात।
आर्य[3]सुत पदकमल बिनु, बादि जहांलगि नात॥

पितु वैभव[4]विलास मैं दीठा ❀ नृपमणिमुकुट मिलत पद पीठा
सुखनिधान अस पितुगृह मोरे ❀ पतिविहीन मन भाव न भोरे
श्वशुर चक्रवै कोशलराऊ ❀ भुवन चारिदश प्रकट प्रभाऊ
आगे है जेहि सुरपति[5] लेई ❀ अर्द्ध सिंहासन आसन देई
श्वशुर एतादृश अवध निवासू ❀ प्रिय परिवार मातुसम सासू
बिनु रघुपति पद पद्म[6] परागा ❀ मोहिं कोउ सपनेहु सुखद न लागा
अगम पन्थ[7] वन भूमि पहारा ❀ करि केहरि सर सरित अपारा
कोल किरात कुरंग विहंगा ❀ मोहिं सब सुखद प्राणपतिसंगा

दो॰ सासुससुरसन मोरिहुति, विनय करब परिपाय।
मोरशोच जनिकरियकछु, मैं वन सुखी सुभाय॥

प्राणनाथ प्रिय देवर साथा ❀ वीर धुरीण धरे धनु भाथा[8]
नहिं मगश्रम भ्रम दुख मन मोरे ❀ मोहिं लागि शोच करिय जनि भोरे
सुनि सुमन्त्र सिय शीतल बानी ❀ भये विकल जनु फणि[9] मणिहानी
नयन न सूझ सुनै नहिं काना ❀ कहि न सकै कछु अति अकुलाना
राम प्रबोध कीन्ह बहु भाँती ❀ तदपि होइ नहिं शीतल छाती
यतन अनेक साथ हित कीन्हा ❀ उचित उतर रघुनन्दन दीन्हा
मेटि जाय नहिं राम रजाई ❀ कठिन कर्म्मगति कछु न बसाई

१ दुःख २ किरण ३ पति ४ ऐश्वर्य ५ इन्द्र ६ कमल ७ मार्ग ८ तरकस ९ सर्प॥

राम लषण सिय पद शिर नाई ❀ फिरेउ वणिक जिमि मूर गँवाई

दो० रथ हांके हय[1] राम तन, हेरि हेरि हिहिनाहिं।
देखिनिषाद विषादवश, शिरधुनिधुनि पछिताहिं॥

जासु वियोग विकल पशु ऐसे ❀ प्रजा मातु पितु जीवहिं कैसे
बरबस राम सुमन्त्र पठाये ❀ सुरसरि[2] तीर आपु चलि आये
मांगी नाव न केवट आना ❀ कहै तुम्हार[3] मर्म मैं जाना
चरणकमल रजकहँ सब कहई ❀ मानुषकरणि मूरि कछु अहई
छुवत शिला भइ नारि सुहाई ❀ पाहन ते न काठ कठिनाई
तरणिउँ मुनिघरणी ह्वै जाई ❀ बाट परै मोरि नाव उड़ाई
यहि प्रतिपालौं सब परिवारू ❀ नहिं जानौं कछु और कबारू
जो प्रभु अवशि पार गा चहहू ❀ तौ पदपद्म पखारन कहहू

छं० पदपद्म धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं।
मोहिं शपथ राउरि आन दशरथ बात सब सांची कहौं॥
बरु तीर मारहु लषण पै जबलगि न पांव पखारिहौं।
तबलगि न तुलसीदास नाथ कृपालु पार उतारिहौं॥

सो० सुनि केवट के बयन, प्रेम लपेटे अटपटे।
विहँसे करुणा अयन, चितै जानकी लषणतन॥

कृपासिन्धु बोले मुसुकाई ❀ सोइ करहु जेहि नाव न जाई
वेगि आनि जल पांव पखारू[4] ❀ होत विलम्ब[5] उतारहु पारू
जासु नाम सुमिरत यक बारा ❀ उतरहिं नर भवसिन्धु[6] अपारा
सो कृपालु केवटहि निहोरा ❀ जेहिं किय जग तिहुँपगते थोरा
पदनख निरखि देवसरि हरषी ❀ सुनि प्रभुवचन मोहमतिकरषी
केवट राम रजायसु[7] पावा ❀ पानि कठौता भरि लै आवा
अतिआनन्द उमँगि अनुरागा ❀ चरणसरोज[8] पखारन लागा
वरषि सुमन सुर सकल सिहाहीं ❀ यहि सम पुण्यपुञ्ज कोउ नाहीं

१ घोड़ा २ गंगाजी ३ आपकी ४ धोलो ५ देर ६ संसारसागर ७ आज्ञा ८ कमल॥

दो॰ पदपखारि जलपानकरि, आपु सहित परिवार।
पितरपारकरि प्रभुहिंपुनि, मुदित गयउ लैपार॥
उतरि ठाढ़ भये सुरसरि रेता ❀ सीय राम गुह[१] लषण समेता
केवट उतरि दण्डवत कीन्हा ❀ प्रभु सकुचे कछु याहि न दीन्हा
पिय हियकी सिय जाननहारी ❀ मणिमुँदरी मन मुदित उतारी
कहेउ कृपालु लेहु उतराई ❀ केवट चरण गहेउ अकुलाई[२]
नाथ आजु हम काह न पावा ❀ मिटे दोष दुख दारिद दावा[३]
अमित काल मैं कीन्ह मँजूरी ❀ आजु दीन्ह विधि सब भरिपूरी
अब कछु नाथ न चाहिय मोरे ❀ दीनदयालु अनुग्रह[४] तोरे
फिरति बार जो कछु मोहिं देबा ❀ सो प्रसाद मैं शिर धरि लेबा
दो॰ बहुत कीन्ह प्रभु लषणसिय, नहिं कछु केवट लेइ।
बिदा कीन्ह करुणायतन, भक्तिविमलवर देइ॥
तब मज्जन करि रघुकुलनाथा ❀ पूजि पारथी नायउ माथा
सिय सुरसरिहि कहेउ करजोरी ❀ मातु मनोरथ पुरवहु मोरी
पति देवर सँग कुशल बहोरी ❀ आइ करौं जेहि पूजा तोरी
सुनि सिय विनय प्रेमरससानी ❀ भइ तब विमल वारि वरबानी
सुनु रघुवीर प्रिया वैदेही ❀ तव प्रभाव जगविदित न केही
लोकप होहिं विलोकत तोरे ❀ तोहिं सेवहिं सब सिधि कर जोरे
तुम जो हमहिं बड़ि विनय सुनाई ❀ कृपा कीन्ह मोहिं दीन्ह बड़ाई
तदपि देवि मैं देउँ अशीशा ❀ सफल होनहित निज वागीशा
दो॰ प्राणनाथ देवर सहित, कुशल कोशला[५] आइ।
पूजिहि सब मनकामना[६], सुयश रहिहि जग छाइ॥
गङ्ग वचन सुनि मङ्गल मूला ❀ मुदित सीय सुरसरि अनुकूला
तब प्रभु गुहहिं कहा घर जाहू ❀ सुनत सूख मुख भा उर दाहू[७]
दीन वचन गुह कह कर जोरी ❀ विनय[८] सुनिय रघुकुलमणि मोरी

१ प्रसन्न २ केवट ३ अग्नि ४ कृपा ५ अयोध्या ६ इच्छा ७ जलन ८ विनती॥

नाथ साथ रहि पन्थ[1] दिखाई ❀ करि दिन चारि चरण सेवकाई
जेहि वन जाइ रहब रघुराई ❀ पर्णकुटी मैं करब सुहाई
तब मोकहँ जस देब रजाई[2] ❀ सो करिहौं रघुवीर दुहाई
सहज सनेह राम लखि तासू ❀ सङ्ग लीन्ह गुह हृदय हुलासू
पुनि गुह ज्ञाति बोलि सब लीन्हें ❀ करि परितोष बिदा सब कीन्हें

दो० तबगणपतिशिवसुमिरिप्रभु, नाइसुरसरिहि माथ।
सखाअनुज सियसहितवन, गमनकीन्हरघुनाथ॥

तेहि दिन भयउ विटप[3]तर वासू ❀ लषणसखा सब कीन्ह सुपासू
प्रात प्रातकृत करि रघुराई ❀ तीरथराज[4] दीख प्रभु जाई
सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी ❀ माधव सरिस मीत हितकारी
चारि पदारथ भरा भँडारू ❀ पुण्य प्रदेश देश अतिचारू
क्षेत्र अगम गढ़ गाढ़ सुहावा ❀ सपनेहु नहिं प्रतिपच्छिन पावा
सेन सकल तीरथवर वीरा ❀ कलुष[5]अनीक[6] दलन रणधीरा
संगम सिंहासन सुठि सोहा ❀ छत्र अक्षयवट मुनिमन मोहा
चमर यमुन अरु गंग तरंगा ❀ देखि होहिं दुखदारिद भंगा

दो० सेवहिं सुकृती साधुशुचि[7], पावहिं सब मनकाम।
वन्दी वेद पुराणगण, कहहिं विमलगुणग्राम॥

को कहि सकै प्रयाग प्रभाऊ ❀ कलुष पुंज[8] कुंजर[9] मृगराऊ
अस तीरथपति देखि सुहावा ❀ सुखसागर रघुवर सुख पावा
कहि सिय अनुजहिं सखहिं सुनाई ❀ श्रीमुख तीरथराज बड़ाई
करि प्रणाम देखत वनबागा ❀ कहत महातम अति अनुरागा
यहि विधि आइ विलोकेउ बेनी ❀ सुमिरत सकल सुमङ्गल देनी
मुदित नहाइ कीन्ह शिवसेवा ❀ पूजि यथाविधि तीरथदेवा
तब प्रभु भरद्वाज पहँ आये ❀ करत दण्डवत मुनि उर लाये
मुनि मन मोद न कछु कहि जाई ❀ ब्रह्मानन्द राशि जनु पाई

---

१ रास्ता २ आज्ञा ३ वृक्ष ४ प्रयाग ५ पाप ६ फ़ौज ७ पवित्र ८ समूह ९ हाथी ॥

दो० दीन्ह अशीश मुनीश उर, अति आनँद अस जानि।
लोचनगोचर सुकृत फल, मनहुँ किये विधि आनि॥

कुशल प्रश्न करि आसन दीन्हा ❀ पूजि प्रेम परिपूरण कीन्हा
कन्द मूल फल अंकुर नीके ❀ दिये आनि मुनि मनहुँ अमीके
सीय लषण जन सहित सुहाये ❀ अतिरुचि राम मूल फल खाये
भये विगतश्रम राम सुखारे ❀ भरद्वाज मृदु वचन उचारे
आजु सफल तप तीरथ त्यागू ❀ आजु सफल जप योग विरागू
सफल सकल शुभ साधन साजू ❀ राम तुमहिं अवलोकत आजू
लाभ अवधि सुख अवधि न दूजी ❀ तुम्हरे दरश आश सब पूजी
अब करि कृपा देव वर येहू ❀ निज पद सरसिज सहज सनेहू

दो० कर्म्म वचनमनछांड़िछल, जबलगि जन न तुम्हार।
तबलगि सुख सपनेहुँ नहीं, किये कोटि उपचार॥

सुनि मुनि वचन राम सकुचाने ❀ भाव भक्ति आनन्द अघाने
तब रघुवर मुनि सुयश सुहावा ❀ कोटि भाँति कहि सबहिं सुनावा
सो बड़ सो सब गुणगण गेहू ❀ जेहि मुनीश तुम आदर देहू
मुनि रघुवीर परस्पर नवहीं ❀ वचन अगोचर सुख अनुभवहीं
यह सुधि पाइ प्रयाग निवासी ❀ वटु तापस मुनि सिद्ध उदासी
भरद्वाज आश्रमें सब आये ❀ देखन दशरथ सुवन सुहाये
राम प्रणाम कीन्ह सब काहू ❀ मुदित भये लहि लोचन लाहू
देहिं अशीश परम सुख पाई ❀ फिरे सराहत सुन्दरताई

दो० राम कीन्ह विश्राम निशिं, प्रात प्रयाग नहाइ।
चले सहितसियलषणजन, मुदितमुनिहिंशिरनाइ॥

राम सप्रेम कह्यो मुनि पाहीं ❀ नाथ कहहु हम किहि मगु जाहीं
सुनि मुनि बिहँसि रामसन कहहीं ❀ सुगम सकल मगु तुमकहँ अहहीं
साथ लागि मुनि शिष्य बुलाये ❀ सुनि मन मुदित पचासक आये

१ अमृत २ कमल ३ गृह ४ स्थान ५ पुत्र ६ लाभ ७ रात्रि ८ प्रसन्न ॥

सबहि राम पद प्रेम अपारा ❀ सकल कहहिं मंगु दीख हमारा
मुनि वटु[2] चारि संग तब दीन्हे ❀ जिन बहुजन्म सुकृत बड़ कीन्हे
करि प्रणाम मुनि आयसु पाई ❀ प्रमुदित हृदय चले रघुराई
ग्राम निकट जब निसरहिं जाई ❀ देखहिं दरश नारि नर धाई
होहिं सनाथ जन्म फल पाई ❀ फिरहिं दुखित मन संग पठाई

दो० बिदा कीन्ह वटु विनय करि, फिरे पाइ मनकाम।
उतरि नहाये यमुन जल, जो शरीरसम श्याम॥

सुनत तीरवासी नर[3] नारी ❀ धाये निजानिज काज बिसारी
राम लषण सिय सुन्दरताई ❀ देखि करहिं निज भाग्य बड़ाई
अति लालसा सबहिं मन माहीं ❀ नाम ग्राम पूंछत सकुचाहीं
जे तिन महँ वय वृद्ध सयाने ❀ तिन करि युक्ति राम पहिंचाने
सकल कथा कहि तिनहिं सुनाई ❀ वनहिं चले पितु आयसु पाई
सुनि सविषाद सकल पछिताहीं ❀ रानी राय कीन्ह भल नाहीं
तेहि अवसर[4] तापस इक आवा ❀ तेजपुंज लघु वयस सुहावा
कवि अलखित गति वेष विरागी ❀ मन क्रम वचन राम अनुरागी

दो० सजलनयन तनु पुलकनिज, इष्टदेव पहिंचानि।
पस्यो धरणितलदण्ड जिमि, दशा[5] न जाय बखानि॥

राम सप्रेम पुलकि उरलावा ❀ परम रंक जनु पारस पावा
मनहुँ प्रेम परमारथ दोऊ ❀ मिलत धरे तनु कह सब कोऊ
बहुरि लषण पायन सो लागा ❀ लीन्ह उठाय उमँगि अनुरागा
पुनि सिय चरण धूरि धरि शीशा ❀ जननि जानि सुत दीन्ह अशीशा
कीन्ह निषाद दण्डवत तेही ❀ मिले मुदित लखि राम सनेही
पियत नयन पुट रूप पियूखा[6] ❀ मुदित सुअशन पाय जिमि भूखा
पुनि प्रभुपद सरोज[7] शिर नावा ❀ देखि प्रीति रघुवर मन भावा
उर धरि धीर रजायसु पाई ❀ चले मुदित मन अति हर्षाई

१ रास्ता २ द्विजपुत्र ३ मनुष्य ४ समय ५ अवस्था ६ अमृत ७ कमल॥

राम लषण सियरूप निहारी ❀ शोच सनेह विकल नरनारी
ते पितु मातु कहौ सखि कैसे ❀ जिन पठये वन बालक ऐसे

दो॰ तब रघुवीर अनेक विधि, सखहि सिखावन दीन्ह।
रामरजायसु[1] शीश धरि, गवन भवन तिहिं कीन्ह॥

पुनि सिय राम लषण करजोरी ❀ यमुनहिं कीन्ह प्रणाम बहोरी
गमने सीय सहित दोउ भाई ❀ रवितनया[2] कर करत बड़ाई
पथिक[3] अनेक मिलहिं मगु जाता ❀ कहहिं सप्रेम देखि दोउ भ्राता
राज सुलक्षण अङ्ग तुम्हारे ❀ देखि शोच हिय होत हमारे
मारग चलहु पयादेहि पाये ❀ ज्योतिष झूठ हमारे भाये
अगम पन्थ गिरि कानन[4] भारी ❀ तेहि महँ साथ नारि सुकुमारी
करि[5] केहरि[6] वन जाहिं न जोई ❀ हम सँग चलहिं जो आयसु होई
जाब जहां लगि तहँ पहुँचाई ❀ फिरब बहोरि तुमहिं शिर नाई

दो॰ यहिविधि बूझहिं प्रेमवश, पुलकगात जल नैन।
कृपासिन्धु फेरहिं तिनहिं, करि विनती मृदुबैन॥

जे पुर ग्राम बसहिं मगु माहीं ❀ तिनहिं नाग सुर नगर सिहाहीं
केहि सुकृती केहि घरी बसाये ❀ धन्य पुण्यमय परम सुहाये
जहँ जहँ रामचरण चलि जाहीं ❀ तेहि समान अमरावति[7] नाहीं
पुण्यपुञ्ज मगु निकट निवासी ❀ तिनहिं सराहहिं सुरपुरवासी
जो भरि नयन विलोकहिं रामहिं ❀ सीता लषण सहित घनश्यामहिं
जे सर सरित राम अवगाहहिं ❀ तिनहिं देवसर सरित सराहहिं
जेहि तरुतर प्रभु बैठहिं जाई ❀ करहिं कल्पतरु तासु बड़ाई
परसि राम[8] पद पद्म परागा[9] ❀ मानति भूरिभूमि निज भागा

दो॰ छांहकरहिंघन विबुधगण, वरषहिं सुमन सिहाहिं।
देखत गिरिवन विहंगमृग, राम चले मगु जाहिं॥

सीता लषण सहित रघुराई ❀ गांव निकट जब निसरहिं जाई

१ आज्ञा २ यमुना ३ बटोही ४ वन ५ हाथी ६ सिंह ७ इन्द्रपुरी ८ रामचन्द्र ९ पुष्परज॥

सुनि सब बाल वृद्ध नर नारी ❀ चलहिं तुरत गृहकाज बिसारी
राम लषण सिय रूप निहारी ❀ पाइ नयनफल होहिं सुखारी
सजल नयन अति पुलक शरीरा ❀ सब भये मगन देखि दोउ वीरा
वरणि न जाइ दशा तिन केरी ❀ लही रंक[1] जनु सुरमणि ढेरी
एकहिं एक बोलि शिष देहीं ❀ लोचनलाहु लेहु चण येहीं
रामहिं देखि एक अनुरागे ❀ चितवत चले जाहिं सँगलागे
एक नयन मगछवि उर[2] आनी ❀ होहिं शिथिल तन मानस बानी

दो॰ एक देखि वटछांह भलि, डासि मृदुल[3] तृणपात।
कहहिं गँवाइय चणकश्रम, गमनबअबहिं कि प्रात॥

एक कलश भरि आनहिं पानी ❀ अँचइय नाथ कहहिं मृदुबानी
सुनि प्रियवचन प्रीति अतिदेखी ❀ राम कृपालु सुशील विशेखी
जानी सीय श्रमित[4] मन माहीं ❀ घरिक विलम्ब कीन्ह वट[5]छाहीं
मुदित नारि नर देखहिं शोभा ❀ रूप अनूप देखि मन लोभा
इकटक सब जोवहिं चहुँओरा ❀ रामचन्द्र मुखचन्द्र चकोरा
तरुण तमाल वरण तनु सोहा ❀ देखत काम कोटि मन मोहा
दामिनि वरण लषण सुठि नीके ❀ नख शिख सुभग भावते जीके
मुनिपट कटिन कसे तूणीरा ❀ सोहत करकमलन धनु तीरा

दो॰ जटामुकुट शीशन सुभग, उर भुज नयन विशाल।
शरद पर्व विधु वदनवर, लसत स्वेद[6] कण जाल॥

वरणि न जाइ मनोहर जोरी ❀ शोभा अमित[7] मोरिमति थोरी
राम लषण सिय सुन्दरताई ❀ सब चितवहिं मन बुधि चितलाई
थके नारि नर प्रेम पियासे ❀ मनहुँ मृगी मृग देखि दियासे[8]
सीय समीप ग्रामतिय जाहीं ❀ पूंछत अतिसनेह सकुचाहीं
बारबार सब लागहिं पाये ❀ कहहिं वचन मृदु सरल सुहाये
राजकुमारि विनय हम करहीं ❀ तियस्वभाव कछु पूंछत डरहीं

---

१ गरीब २ हृदय ३ कोमल ४ थकी हुई ५ बरगद ६ पसीना ७ बेहद ८ दीपक ॥

स्वामिनि अविनय क्षमब हमारी ❀ बिलग न मानब जानि गँवारी
राजकुँवर दोउ सहज सलोने ❀ इनते लहि द्युति मरकत सोने

दो० श्यामल गौर किशोर वर, सुन्दर सुषमाऐन।
शरद शर्वरीनाथ मुख, शरद सरोरुह नैन॥

कोटि मनोज लजावनहारे ❀ सुमुखि कहहु को अहहिं तुम्हारे
सुनि सनेहमय मञ्जुल बानी ❀ सकुचि सीय मनमहँ मुसुकानी
तिनहिं विलोकि विलोकेउ धरणी ❀ दुहुँ सकोच सकुचति वरवरणी
सकुचि सप्रेम बाल मृगनयनी ❀ बोली मधुर वचन पिकबयनी
सहज स्वभाव सुभग तनु गोरे ❀ नाम लषण लघु देवर मोरे
बहुरि वदनविधु अंचल ढांकी ❀ पियतन चितै भौंहकरि बांकी
खंजन मंजु तिरीछे नयनन ❀ निजपति कह्यो तिनहिं पियसयनन
भईं मुदित सब ग्राम बधूटी ❀ रंकन रतन राशि जनु लूटी

दो० अति सप्रेम सिय पांय परि, बहुविधि देहिं अशीश।
सदा सुहागिनि रहहु तुम, जबलगि महि अहिशीश॥

पारवती सम पति प्रिय होहू ❀ देवि न हमपर छांड़ब छोहू
पुनि पुनि विनय करहिं करजोरी ❀ जो यहि मारग फिरिय बहोरी
दरशन देब जानि निज दासी ❀ लखी सीय सब प्रेम पियासी
मधुर वचन कहिकहि परितोषी ❀ जनु कुमुदिनी कौमुदी पोषी
तबहिं लषण रघुवर रुख जानी ❀ पूंछेउ मगु लोगन मृदु बानी
सुनत नारि नर भये दुखारी ❀ पुलकित अंग विलोचन बारी
मिटा मोद मन भये मलीने ❀ विधि निधि दीन्ह लीन्ह जनु छीने
समुझि कर्म गति धीरज कीन्हा ❀ शोधि सुगम मगु तिन कहि दीन्हा

दो० लषण जानकी सहित वन, गमन कीन्ह रघुनाथ।
फेरे सब प्रिय वचन कहि, लिये लाइ मन साथ॥

फिरत नारिनर अति पछिताहीं ❀ दैवहि दोष देहिं मनमाहीं

१ छोटे २ खँड़ैचा पक्षी ३ शेषनाग ४ कृपा ५ चांदनी ६ खज़ाना॥

सहित विषाद परस्पर कहहीं ❀ विधि करतब सब उलटे अहहीं
निपट निरंकुश निठुर निशंकू ❀ जेहिं शशि कीन्ह सरुज सकलंकू
रूख कल्पतरु सागर खारा ❀ तेहिं पठये वन राजकुमारा
जोपै इनहिं दीन्ह वनवासू ❀ कीन्ह बादि विधि भोग विलासू
ये बिचरहिं मगु बिनु पदत्रांना[1] ❀ रचे बादि विधि वाहनं[2] नाना
ये महि परहिं डासि कुश पाता ❀ सुभग सेज कत कीन्ह विधाता
तरुँतर[3] वास इनहिं विधि दीन्हा ❀ धवलधाम रचि कत श्रम कीन्हा

दो० जो ये मुनिपटधर जटिल, सुन्दर सुठि सुकुमार।
विविध भाँति भूषण वसन, बादि किये करतार॥

जो ये कन्द मूल फल खाहीं ❀ बादि सुधादि अशन[4] जगमाहीं
एक कहहिं यह सहज सुहाये ❀ आपु प्रकटभे विधि न बनाये
जहँलगि वेद कहहिं विधि करणी ❀ श्रवण नयन मनगोचर वरणी
देखहु खोजि भुवन दशचारी ❀ कहँ अस पुरुष कहां अस नारी
इनहिं देखि विधि मन अनुरागा ❀ पटतर[5] योग बनावन लागा
कीन्ह बहुतश्रम एक न आये ❀ तेहि इरषा[6] वन आनि दुराये
एक कहहिं हम बहुत न जानहिं ❀ आपुहि परमधन्य करि मानहिं
ते पुनि पुण्य पुंज[7] हम लेखे ❀ जे देखहिं देखिहैं जिन देखे

दो० यहिविधि कहिकहिवचनप्रिय, लेहिंनयनभरिनीर।
किमि चलिहैं मारग अगम, सुठिसुकुमारशरीर॥

नारि सनेह विकल सब होहीं ❀ चकई सांझसमय जिमि सोहीं
मृदु पदकमल कठिन मग जानी ❀ गह्वरि हृदय कहहिं मृदु बानी
परसत मृदुल चरण अरुणारे[8] ❀ सकुचति महि जिमि हृदय हमारे
जो जगदीश इनहिं वन दीन्हा ❀ कस न सुमनमय मारग कीन्हा
जो मांगे पाइय विधि पाहीं ❀ राखिय सखि इन आंखिन माहीं
जे नर नारि न अवसर आये ❀ ते सिय राम न देखन पाये

१ जूता २ सवारी ३ वृक्ष ४ भोजन ५ समता ६ डाह ७ समूह ८ लाल॥

सुनि स्वरूप पूंछहिं अकुलाई ❀ अब लगि गये कहां लगि भाई
समरथ धाइ विलोकहिं जाई ❀ प्रमुदित फिरहिं जन्म फल पाई

दो० अबला बालक वृद्धजन, कर मींजहिं पछिताहिं।
होहि प्रेमवश लोग इमि, राम जहां जहँ जाहिं॥

गांव गांव अस होहि अनन्दा ❀ देखि भानुकुल कैरवचन्दा
जे कछु समाचार सुनि पावहिं ❀ ते नृप रानिहिं दोष लगावहिं
कहहिं एक अतिभल नरनाहू ❀ दीन्ह हमहिं जिन लोचनलाहू
कहहिं परस्पर लोग लुगाई ❀ बातैं सरल सनेह सुहाई
ते पितु मातु धन्य जिन पाये ❀ धन्य सो नगर जहां ते आये
धन्य सो शैल देश बन गाऊं ❀ जहँ जहँ जाहिं धन्य सो ठाऊं
सुख पायो विरंचि रचि तेही ❀ ये जेहिके सब भाँति सनेही
राम लषण सिय कथा सुहाई ❀ रही सकल मग कानन छाई

दो० यहिविधि रघुकुलकमलरवि, मगलोगन सुख देत।
जाहि चले देखत विपिन, सिय सौमित्रि समेत॥

आगे राम लषण पुनि पाछे ❀ तापस वेष विराजत आछे
उभय मध्य सिय शोभित कैसी ❀ ब्रह्म जीव बिच माया जैसी
बहुरि कहौं छवि जस मन बसई ❀ जनु मधु मदन मध्य रति लसई
उपमा बहुरि कहौं जिय जोही ❀ जनु बुधविधु बिच रोहिणि सोही
प्रभु पदरेख बीच बिच सीता ❀ धरहिं चरण मग चलत सभीता
सीय राम पद अंक बराये ❀ लषण चलहिं मग दाहिन बाँये
राम लषण सिय प्रीति सुहाई ❀ वचन अगोचर किमि कहिजाई
खग मृग मगन देखि छवि होहीं ❀ लिये चोरि चित राम बटोहीं

दो० जिनजिन देखे पथिकप्रिय, सीय सहित दोउ भाइ।
भव मग अगम अनन्दते, बिनु श्रम रहे सिराइ॥

अजहुँ जासु उर सपनेहुँ काऊ ❀ बसहिं राम सिय लषण बटाऊ

१ स्त्रियां २ कुमुद ३ पर्वत ४ ब्रह्मा ५ बन ६ दोनों ७ वसन्त ८ कामदेव ९ कामदेव की स्त्री १० चिह्न॥

राम धाम पथ जाइहि सोई ❀ जो पथ पाव कबहुँ मुनि कोई
तब रघुवीर श्रमित सिय जानी ❀ देखि निकट वट शीतल पानी
तहँ बसि कन्द मूल फल खाई ❀ प्रात नहाय चले रघुराई
देखत वन सर शैल सुहाये ❀ बालमीकि आश्रम प्रभु आये
राम दीख मुनि वास सुहावन ❀ सुन्दर गिरि कानन जल पावन
सरन सरोज विटप[1] वन फूले ❀ गुंजत मंजु मधुप रस भूले
खग मृग विपुल कुलाहल करहीं ❀ रहित वैर प्रमुदित मन चरहीं

दो० शुचि सुन्दर आश्रम निरखि, हरषे राजिव नैन।
सुनि रघुवर आगमन मुनि, आगे आये लैन॥

मुनि कहँ राम दण्डवत कीन्हा ❀ आशिरवाद विप्रवर दीन्हा
देखि राम छवि नयन जुड़ाने ❀ करि सनमान आश्रमहिं आने
तब मुनि आसन दिये सुहाये ❀ मुनिवर अतिथि प्राणप्रिय पाये
कन्द मूल फल मधुर मँगाये ❀ सिय सौमित्रि राम फल खाये
बालमीकि मन आनँद भारी ❀ मंगल मूरति नयन निहारी
तब करकमल जोरि रघुराई ❀ बोले वचन श्रवण[2] सुखदाई
तुम त्रिकालदरशी मुनिनाथा ❀ विश्व बदर[3] जिमि तुम्हरे हाथा
अस कहि सब प्रभु कथा बखानी ❀ जेहि जेहि भाँति दीन्ह वन रानी

दो० तात वचन पुनि मातुमत, भाइ भरत अस राउ।
मोकहँ दरश तुम्हार प्रभु, सब मम पुण्यप्रभाउ॥

देखि पांय मुनिराय तुम्हारे ❀ भये सुकृत सब सफल हमारे
अब जहँ राउर आयसु होई ❀ मुनि उद्वेग[4] न पावहिं कोई
मुनि तापस जिनते दुख लहहीं ❀ ते नरेश बिनु पावक[5] दहहीं
मंगलमूल विप्र परितोषू ❀ दहै कोटि कुल भूसुर[6] रोषू
अस जिय जानि कहिय सो ठाऊं ❀ सिय सौमित्रि सहित तहँ जाऊं
तहँ रचि रुचिर पँर्ण[7] तृण शाला ❀ वास करौं कछु काल कृपाला

१ वृक्ष २ कान ३ बेरफल ४ ऊबना ५ अग्नि ६ विप्र ७ पत्ते॥

सहज सरल सुनि रघुवर बानी ❀ साधु साधु बोले मुनि ज्ञानी
कस न कहहु अस रघुकुलकेतू ❀ तुम पालक सन्तत श्रुतिसेतू

छं० श्रुतिसेतु पालक राम तुम जगदीश माया जानकी।
जो सृजंति जग पालति हरति रुख पाइ कृपानिधानकी॥
जो सहस शीश अहीश महि धरु लषण सचराचरधनी।
सुरकाजहित नरराजतनु धरि दलन खलनिशिचरअनी॥

सो० राम स्वरूप तुम्हार, वचन अगोचर बुद्धिवर।
अविगत अकथ अपार, नेतिनेतिनितनिगम कह॥

जग पेखन तुम देखनहारे ❀ विधि हरि शम्भु नचावनहारे
तेउ न जानहिं मर्म्म तुम्हारा ❀ अपर तुमहिं को जाननहारा
सो जानै जेहि देहु जनाई ❀ जानत तुमहिं तुमहिं ह्वै जाई
तुम्हरी कृपा तुमहिं रघुनन्दन ❀ जानहिं भक्त भक्ति उरचन्दन
चिदानन्दमय देह तुम्हारी ❀ विगत विकार जान अधिकारी
नरतनु धरेहु सन्त सुरकाजा ❀ कहहु करहु जस प्राकृत राजा
राम देखि सुनि चरित तुम्हारे ❀ जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे
तुम जो कहहु करहु सब सांचा ❀ जस काछिय तस चाहिय नाचा

दो० पूछेउ मोहिं कि रहौं कहँ, मैं कहतेउ सकुचाउँ।
जहँ न होहु तहँ देहु कहि, तुमहिं दिखावौं ठाउँ॥

सुनि मुनि वचन प्रेम रससाने ❀ सकुचि राम मनमहँ मुसुकाने
बाल्मीकि हँसि कहहिं बहोरी ❀ वाणी मधुर अमियँ रसबोरी
सुनहु राम अब कहौं निकेता ❀ बसहु जहां सिय लषण समेता
जिनके श्रवण समुद्र समाना ❀ कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना
भरहिं निरन्तर होहिं न पूरे ❀ तिनके हिये सदन तव रूरे
लोचन चातक जिन करि राखे ❀ रहहिं दरश जलधर अभिलाखे
निदरहिं सिन्धु सरित सर वारी ❀ रूप बुन्द जल होहिं सुखारी

उत्पन्न करती २ नाश करना ३ अमृत ४ गृह ५ तुम्हारे ६ बादल ॥

तिनके हृदय सदन सुखदायक ❀ बसहु लषण सिय सह रघुनायक

दो॰ यश तुम्हार मानस विमल, हंसिनि जीहा[1] जासु।
मुक्ताहल[2] गुणगण चुगहिं, बसहु राम हिय तासु॥

प्रभु प्रसाद शुचि सुभग सुवासा ❀ सादर जासु लहै नित नासा
तुमहिं निवेदित भोजन करहीं ❀ प्रभुप्रसाद पट भूषण[3] धरहीं
शीश नवहिं सुर गुरु द्विज देखी ❀ प्रीति सहित करि विनय विशेखी
कर[4] नित करहिं रामपद पूजा ❀ राम भरोस हृदय नहिं दूजा
चरण राम तीरथ चलि जाहीं ❀ राम बसहु तिनके मन माहीं
मंत्रराज नित जपहिं तुम्हारा ❀ पूजहिं तुमहिं सहित परिवारा[5]
तर्प्पण होम करहिं विधि नाना ❀ विप्र जेंवाइ देहिं बहु दाना
तुमते अधिक गुरुहि जिय जानी ❀ सकल भाव सेवहिं सनमानी

दो॰ सब कर मांगहिं एक फल, रामचरण रति होउ।
तिनके मनमन्दिर बसहु, सिय रघुनन्दन दोउ॥

काम क्रोध मद मान न मोहा ❀ लोभ न क्षोभ न राग न द्रोहा
जिनके कपट[6] दम्भ[7] नहिं माया ❀ तिनके हृदय बसहु रघुराया
सबके प्रिय सबके हितकारी ❀ दुख सुख सरिस प्रशंसा गारी
कहहिं सत्य प्रिय वचन विचारी ❀ जागत सोवत शरण तुम्हारी
तुमहिं छांड़ि गति दूसरि नाहीं ❀ राम बसहु तिनके मन माहीं
जननी[8] सम जानहिं परनारी ❀ धन पराय विषते विष भारी
जे हरषहिं पर सम्पति देखी ❀ दुखित होहिं पर विपति विशेखी
जिनहिं राम तुम प्राणपियारे ❀ तिनके मन शुभ सदन तुम्हारे

दो॰ स्वामि सखा पितु मातु गुरु, जिनके सब तुम तात।
तिनके मनमन्दिर बसहु, सीयसहित दोउ भ्रात[9]॥

अवगुण तजि सबके गुण गहहीं ❀ विप्र धेनु हित संकट सहहीं
नीतिनिपुण जिनकी जगलीका ❀ घर तुम्हार तिनके मन नीका

१ जीभ २ मोती ३ गहना ४ हाथ ५ कुटुम्ब ६ छल ७ पाखण्ड ८ माता ९ भाई॥

गुण तुम्हार समुझहिं निज दोसू ❀ जेहि सब भाँति तुम्हार भरोसू
रामभक्त प्रिय लागहिं जेही ❀ तेहि उर बसहु सहित वैदेही
जाति पांति धन धर्म्म बड़ाई ❀ प्रिय परिवार सदन समुदाई
सब तजि तुमहिं रहै लवलाई ❀ तिनके हृदय बसहु रघुराई
स्वर्ग्ग नरक अपवर्ग्ग[1] समाना ❀ जहँ तहँ दीख धरे धनु बाना
मन क्रम वचन जो राउरे[2] चेरा ❀ राम करहु तिनके मन डेरा

दो० जाहि न चाहिय कबहुँ कछु, तुमसन सहज सनेह[3]।
बसहु निरन्तर तासु उर, सो राउर निज गेह[4]॥

यहि विधि मुनिवर ठाउँ दिखाये ❀ वचन सप्रेम राम मन भाये
कह मुनि सुनहु भानुकुलनायक ❀ आश्रम कहौं समय सुखदायक
चित्रकूट गिरि करहु निवासू ❀ तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू
शैल[5] सुहावन कानन[6] चारू ❀ करि केहरि मृग विहँग विहारू
नदी पुनीत पुराण बखानी ❀ अत्रितीय निज तपबल आनी
सुरसरिधार नाम मन्दाकिनि ❀ जो सब पातकपोतँक डाकिनि
अत्रि आदि मुनिवर तहँ बसहीं ❀ करहिं योग जप तप तनु कसहीं
चलहु सफल श्रम सबकर करहू ❀ राम देहु गौरव[7] गिरिवरहू

दो० चित्रकूट महिमा अमित, कही महामुनि गाय।
आइ नहाने सरितवर, सीयसहित दोउ भाय॥

रघुवर कहेउ लषण भल घाटू ❀ करहु कतहुँ अब ठाहर ठाटू
लषण दीख पै उतर करारा ❀ चहुँदिशि फिस्यो धनुष जिमिनारा
नदी पनच[8] शर शम दम दाना ❀ सकल कलुष कलि साउंज नाना
चित्रकूट जनु अचल अहेरी ❀ चूक न घातमारु मुठभेरी
असकहि लषण ठाउँ दिखरावा ❀ थल विलोकि रघुपति सुख पावा
रमेउ राम मन देवन जाना ❀ चले सहित सुरपति परधाना
कोल किरात वेष धरि आये ❀ रच्यो पर्णतृण सदन सुहाये

१ मोक्ष २ आपके ३ प्रेम ४ गृह ५ पर्वत ६ वन ७ बच्चा ८ बड़ाई ९ रोदा १० शिकार॥

वरणि न जाहिं मंजु द्वै शाला ❀ एक ललित लघु एक विशाला

दो० लषण जानकी सहित प्रभु, राजत पर्णनिकेत[1]।
सोह मदन मुनिवेष जनु, रति ऋतुराज[2] समेत॥

अमर नाग किन्नर दिकपाला ❀ चित्रकूट आये तेहि काला
राम प्रणाम कीन्ह सब काहू ❀ मुदित देव लहि लोचन लाहू
वरषि सुमन कह देव समाजू ❀ नाथ सनाथ भये हम आजू
करि विनती दुखदुसह सुनाये ❀ हरषित निज निज गेह सिधाये
चित्रकूट रघुनन्दन छाये ❀ समाचार सुनि सुनि मुनि आये
आवत देखि मुदित मुनिवृन्दा ❀ कीन्ह दण्डवत रघुकुलचन्दा
मुनि रघुवरहिं लाइ उर लेहीं ❀ सफल होन हित आशिष देहीं
सिय सौमित्रि राम छवि देखहिं ❀ साधन सकल सफल करि लेखहिं

दो० यथायोग्य सनमानि प्रभु, बिदा किये मुनिवृन्द।
करहिं योग जप यज्ञ तप, निज आश्रमनस्वछन्द॥

यह सुधि कोल किरातन पाई ❀ हरषे जनु नवनिधि घर आई
कन्द मूल फल भरि भरि दोना ❀ चले रंक[3] जनु लूटन सोना
तिन महँ जिन देखे दोउ भ्राता ❀ अपर तिनहिं पूछहिं मगु जाता
कहत सुनत रघुवीर निकाई ❀ आय सबन देखे द्वौ भाई
करहिं जोहारि[4] भेंट धरि आगे ❀ प्रभुहिं विलोकत अति अनुरागे
चित्रलिखे[5] जनु जहँ तहँ ठाढ़े ❀ पुलक शरीर नयन जल बाढ़े
राम सनेह मगन सब जाने ❀ कहि प्रिय वचन सकल सनमाने
प्रभुहिं जोहारि बहोरि बहोरी ❀ वचन विनीत कहहिं कर जोरी

दो० अब हम नाथ सनाथ सब, भये देखि प्रभु पाय।
भाग्य हमारे आगमन, राउर कोशलराय॥

धन्य भूमि वन पन्थ पहारा ❀ जहँ जहँ नाथ पांव तुम धारा
धन्य विहँग[6] मृग काननचारी ❀ सफल जन्म भये तुमहिं निहारी

१ पत्तों का गृह २ वसन्त ३ गरीब ४ प्रणाम ५ तसवीर ६ पक्षी॥

हम सब धन्य सहित परिवारा ❀ देखि नयन भरि दरश तुम्हारा
कीन्ह वास भल ठाउँ विचारी ❀ इहां सकल ऋतु रहब सुखारी
हम सब भाँति करब सेवकाई ❀ करि[1] केहरि[2] अहि[3] बाघ बराई
वन बेहड़ गिरि कन्दर खोहा ❀ सब हमार प्रभु पग पग जोहा[4]
तहँ तहँ तुमहिं अहेर खेलाउब ❀ सर निर्झर[5] सब ठाउँ दिखाउब
हम सेवक परिवार समेता ❀ नाथ न सकुचब आयसु[6] देता

दो० वेदवचन मुनिमन अगम, ते प्रभु करुणाऐन।
वचन किरातनके सुनत, जिमि पितु बालकबैन॥

रामहिं केवल प्रेम पियारा ❀ जानि लेहु जो जाननहारा
राम सकल वनचर परितोषे[7] ❀ कहि मृदु वचन प्रेम परिपोषे
बिदा किये शिर नाय सिधाये ❀ प्रभुगुण कहत सुनत घर आये
यहि विधि सीयसहित दोउ भाई ❀ बसहिं विपिन सुरमुनिसुखदाई
जबते आइ रहे रघुनायक ❀ तबते भो वन मंगलदायक
फूलहिं फलहिं विटप[8] विधि नाना ❀ ललित मंजु वर बेलि विताना[9]
सुरतरुसरिस स्वभाव सुहाये ❀ मनहुँ विबुध वन परिहरि आये
गुंजत मंजुल मधुकर श्रेनी ❀ त्रिविध बयारि बहै सुखदेनी

दो० नीलकण्ठ कलकण्ठ शुक, चातक चक्र चकोर।
भाँति भाँति बोलहिं विहँग, श्रवणसुखद चितचोर॥

करि केहरि कपि कोल कुरंगा ❀ विगत वैर विहरहिं यक संगा
फिरत अहेर राम छवि देखी ❀ होहिं मुदित मृगवृन्द विशेखी
विबुध विपिन जहँलग जगमाहीं ❀ देखि राम वन सकल सिहाहीं
सुरसरि सरस्वति दिनकरकन्या ❀ मेकलसुता गोदावरि धन्या
सब सर सिन्धु नदी नद नाना ❀ मन्दाकिनि कर करहिं बखाना
उदय अस्त गिरि अरु कैलासू ❀ मन्दर मेरु सकल सुर वासू
शैल हिमाचल आदिक जेते ❀ चित्रकूट यश गावहिं तेते

१ हाथी २ सिंह ३ सांप ४ ढूंढ़ा ५ झरना ६ आज्ञा ७ प्रसन्न किये ८ वृक्ष ९ मंडप॥

विन्ध्य मुदित मन सुख न समाई ❀ बिनु श्रम विपुल बड़ाई पाई

दो० चित्रकूट के विहँग मृग, बेलि विटप तृण जाति।
पुण्यपुंज सब धन्य अस, कहहिं देव दिन राति॥

नयनवन्त रघुपतिहि विलोकी ❀ पाइ जन्मफल होहिं विशोकी
परसि चरणरज अचर सुखारी ❀ भये परमपद के अधिकारी
सो वन शैल सुभाय सुहावन ❀ मंगलमय अतिपावन पावनं[1]
महिमा कहौं कवन विधि तासू ❀ सुखसागर जहँ कीन्ह निवासू
पयपयोधि[2] तजि अवध विहाई ❀ जहँ सिय राम लषण रहे आई
कहि न सकहिं सुखमा जस कानन ❀ जो शत सहस होहिं महमानन
सो मैं वरणि कहौं विधि केहीं ❀ डाबर कमठ कि मन्दर लेहीं
सेवहिं लषण कर्म मन बानी ❀ जाइ न शील सनेह बखानी

दो० क्षण क्षण सिय लखि रामपद, जानि आपुपर नेह।
करत लषण सपने न चित, बन्धु मातु पितु गेह॥

राम संग सिय रहहिं सुखारी ❀ पुर परिजन गृह सुरति बिसारी
क्षण क्षण पिय विधु वदन निहारी ❀ प्रमुदित मनहुँ चकोरकुमारी
नाह नेह नित बढ़त विलोकी ❀ हरषित रहति दिवस[3] जिमि कोकी
सिय मन रामचरण अनुरागा ❀ अवध सहस सम वन प्रिय लागा
पर्णकुटी प्रिय पीतम संगा ❀ प्रिय परिवार कुरंग[4] विहंगा
सासु ससुरसम मुनितिय मुनिवर ❀ अशन अमियसम कन्दमूलफर
नाथ साथ साथरी सुहाई ❀ मयन[5] सेज शत सम सुखदाई
लोकप[6] होहिं विलोकत जासू ❀ तेहि किमि मोहै विषय विलासू

दो० सुमिरत रामहिं तजहिं जन, तृणसम[7] विषय विलास।
रामप्रिया जगजननि सिय, कछु न आचरज तास॥

सीय लषण जेहि विधि सुख लहहीं ❀ सोइ रघुनाथ करैं जोइ कहहीं
कहहिं पुरातन कथा कहानी ❀ सुनहिं लषण सिय अति सुख मानी

१ पवित्र २ क्षीरसमुद्र ३ दिन ४ हरिण ५ कामदेव ६ लोकस्वामी ७ तिनुका॥

जब जब राम अवध सुधि करहीं ❀ तब तब वारि विलोचन भरहीं
सुमिरि मातु पितु परिजन भाई ❀ भरत सनेह शील सेवकाई
कृपासिन्धु प्रभु होहिं दुखारी ❀ धीरज धरहिं कुसमय विचारी
लखि सिय लषण विकल ह्वै जाहीं ❀ जिमि पुरुषहि अनुहर परिछाहीं
प्रियाबन्धु गति लखि रघुनन्दन ❀ धीर कृपालु भक्त उर चन्दन
लगे कहन कछु कथा पुनीता ❀ मुनि मुख लहहिं लषण अरु सीता

दो० राम लषण सीता सहित, सोहत पर्णनिकेत[1]।
जिमि वासव[2] बस अमरपुर, शची[3] जयन्त समेत ॥

जुगवहिं प्रभु सिय अनुजहि[4] कैसे ❀ पलक विलोचन गोलक जैसे
सेवहिं लषण सीय रघुवीरहिं ❀ जिमि अविवेकी पुरुष शरीरहिं
यहि विधि प्रभु वन बसहिं सुखारी ❀ खग मृग सुर तापस हितकारी
कहेउँ राम वन गमन सुहावा ❀ सुनहु सुमंत अवध जिमि आवा
फिरेउ निषाद प्रभुहि पहुँचाई ❀ सचिव सहित रथ देखेउ आई
मन्त्री विकल विलोकि निषादू ❀ कहि न सकहिं जस भयउ विषादू
राम राम सिय लषण पुकारी ❀ परेउ धरणितल व्याकुल भारी
देखि दक्षिण दिशि हय[5] हिहिनाहीं ❀ जिमि बिनु पंख विहँग अकुलाहीं

दो० नहिं तृण चरहिं न पियहिं जल, मोचत[6] लोचनवारि।
व्याकुल भयउ निषादपति, रघुवरवाजि निहारि॥

धरि धीरज तब कहहि निषादू ❀ अब सुमन्त परिहरहु[7] विषादू
तुम पण्डित परमारथ ज्ञाता ❀ धरहु धीर लखि वाम विधाता
विविध कथा कहि कहि मृदु बानी ❀ रथ बैठारेउ बरबस आनी
शोकशिथिल रथ सकहिं न हांकी ❀ रघुवर विरह पीर उर बांकी
तरफराहिं मगु चलहिं न घोरे ❀ वन मृग मनहुँ आनि रथ जोरे
अटकि परहिं फिरि चितवहिं पीछे ❀ रामवियोग विकल दुख तीछे
जो कह राम लषण वैदेही ❀ हिकरि हिकरि हय हेरहिं तेही

१ पर्त्तों का गृह २ इन्द्र ३ इन्द्राणी ४ छोटा भाई ५ घोड़े ६ छोड़त ७ त्यागहु ॥

वाजिविरहगति किमि कहि जाती ❁ बिनुमणिफणी विकल जेहिभाँती

दो० भये निषाद विषादवश, देखत सचिव[२] तुरंग।
बोलि सुसेवक चारि तब, दिये सारथी संग॥

गुह सारथिहि फिरेहु पहुँचाई ❁ विरह विषाद वरणि नहिं जाई
चले अवध लै रथहि निषादा ❁ होत क्षणहिं क्षण मगन विषादा
शोच सुमन्त विकल दुख दीना ❁ धिक जीवन रघुवीर विहीना
रहिहि न अन्तहु अधम शरीरू ❁ यश न लहेउ बिछुरत रघुवीरू
भयो अयश अघ भाजन प्राना ❁ कौन हेतु नहिं करत पयाना
अहह मन्दमति अवसर चूका ❁ अजहुँ न हृदय होत दुइ टूका
मींजि हाथ शिर धुनि पछिताई ❁ मनहुँ कृपण[६] धन राशि गँवाई
विरद बांधि वर वीर कहाई ❁ चलेउ सुभट जनु समर पराई

दो० विप्र विवेकी वेद विद, सम्मत साधु सुजाति।
जिमि धोखे मद पानकर, सचिवशोच तहि भाँति॥

जिमि कुलीन तिय साधु सयानी ❁ पति देवता कर्म्म मन बानी
रहै कर्म्म वश परिहरि नाहू ❁ सचिव हृदय तिमि दारुण दाहू
लोचन सजल दृष्टि भइ थोरी ❁ सुनै न श्रवण विकल मति भोरी
सूखे अधर[८] लागि मुँह लाटी ❁ जिय न जाइ उर अवध कपाटी
विवरण भयउ न जाइ निहारी ❁ मारेसि मनहुँ पिता महतारी
हानि गलानि विपुल मन व्यापी ❁ यमपुर पन्थ[९] शोच जिमि पापी
वचन न आव हृदय पछिताई ❁ अवध काह कहिहौं मैं जाई
राम रहित रथ देखिहि जोई ❁ सकुचिहि मोहिं विलोकत सोई

दो० धाइ पूंछिहहिं मोहिं जब, विकल नगर नरनारि।
उतर देब मैं सबहिं तब, हृदय वज्र बैठारि॥

पुँछिहहिं दीन दुखित सब माता ❁ कहब काह मैं तिनहिं विधाता
पुँछिहहिं जबहिं लषण महतारी ❁ कहिहौं कौन सँदेश सुखारी

१ सर्प २ मन्त्री ३ रथवान् ४ पाप ५ कूच ६ सूम ७ कान ८ ओठ ९ मार्ग॥

रामजननि जब आइहि धाई ❀ सुमिरि बच्छ जिमि धेनु लवाई
पूंछत उतर देब मैं तेही ❀ गे वन राम लषण वैदेही
जेइ पूंछिहि तेहि उत्तर देबा ❀ जाइ अवध अब यह सुख लेबा
पूंछहिं जबहिं राव दुख दीना ❀ जीवन जासु राम आधीना
देहौं उतर कवन मुहँ लाई ❀ आयउँ कुशल कुँवर पहुँचाई
सुनत लषण सिय राम सँदेशू ❀ तृण[1] इव तनु परिहरहिं नरेशू

दो० हृदय न विदरत[2] पङ्क[3] जिमि, बिछुरत प्रीतम नीर।
जानत हौं मोहिं दीन्ह विधि, यम यातना शरीर॥

यहि विधि करत पन्थ पछितावा ❀ तमसा तीर तुरत रथ आवा
बिदा किये करि विनय निषादू ❀ फिरे पांय परि विकल विषादू
पैठत नगर सँचिव सकुचाई ❀ जनु मारेसि गुरु ब्राह्मण गाई
बैठि विटप तर दिवस गँवावा ❀ सांझ समय तेइँ अवसर पावा
अवध प्रवेश कीन्ह अँधियारे ❀ पैठ भवन रथ राखि दुवारे
जिन जिन समाचार सुनि पाये ❀ भूप द्वार रथ देखन आये
रथ पहिंचानि विकल लखि घोरे ❀ गरहिं गात जिमि आतप ओरे
नगर नारि नर व्याकुल कैसे ❀ निघटत नीर मीनगण जैसे

दो० सचिव आगमन सुनत सब, विकल भयो रनिवास।
भवन भयङ्कर लाग तेहि, मानहुँ प्रेत निवास॥

अति आरत सब पूंछहिं रानी ❀ उतर न आव विकल भइ बानी
सुनै न श्रवण नयन नहिं सूझा ❀ कहहु कहां नृप जेहि तेहि बूझा
दासिन दीख सचिव विकलाई ❀ कौशल्या गृह गईं लिवाई
जाइ सुमन्त दीख कस राजा ❀ अमिय रहित जस चन्द्र विराजा
अशन न शयन विभूषणहीना ❀ परेउ भूमितल निपट मलीना
भूपति विकल परेउ यहि भाँती ❀ सुरपुरते जनु खस्यो ययाती
लेत शोच भरि क्षण क्षण छाती ❀ जनु जरि पङ्ख परेउ सम्पाती

१ तिनुका २ फाटत ३ कीच ४ पीड़ा ५ मंत्री ६ घाम ७ पत्थर ८ अमृत ९ भोजन १० उदास॥

को कहि सकै भूप विकलाई ❀ रघुवर विरह अधिक अधिकाई
राम राम कह राम सनेही ❀ पुनि कह राम लषण वैदेही

दो० देखि सचिव जय जीव कहि, कीन्हेसि दण्डप्रणाम।
सुनत उठे व्याकुल नृपति, कहु सुमन्त कहँ राम॥

भूप सुमन्त लीन्ह उरलाई ❀ बूड़त कछु अधार जनु पाई
सहित सनेह निकट बैठारी ❀ पूंछत राव नयन भरि वारि[1]
राम कुशल कहु सखा सनेही ❀ कहँ रघुनाथ लषण वैदेही
आनेहु फेरि कि वनहिं सिधाये ❀ सुनत साचव लोचन जल छाये
शोक विकल पुनि पूंछ नरेशू ❀ कहु सिय राम लषण संदेशू
राम रूप गुण शील स्वभाऊ ❀ सुमिरि सुमिरि उर शोचत राऊ
राज्य सुनाइ दीन्ह वनवासू ❀ सुनि मन भयउ न हरषहरासू
सो सुत बिछुरत गयो न प्राना ❀ को पापी जग मोहिं समाना

दो० सखा राम सिय लषण जहँ, तहां मोहिं पहुँचाउ।
नाहिंत चाहत चलन अब, प्राण कहौं सतिभाउ॥

पुनि पुनि पूंछत मंत्रिहि राऊ[2] ❀ प्रीतम सुवन[3] सँदेश सुनाऊ
सुनहु सखा सोइ करिय उपाऊ ❀ राम लषण सिय आनि दिखाऊ
सचिव धीर धरि कहि मृदुबानी ❀ महाराज तुम पण्डित ज्ञानी
वीर सुधीर धुरन्धर देवा ❀ साधुसमाज सदा तुम सेवा
जन्ममरण सब दुख सुख भोगा ❀ हानिलाभ प्रियमिलनवियोगा[4]
काल कर्म्म वश होहिं गुसाईं ❀ बरबस[5] राति दिवस की नाईं
सुख हर्षहिं जड़[6] दुख बिलखाहीं ❀ दोउ सम धीर धरहिं मनमाहीं
धीरज धरहु विवेक विचारी ❀ छांड़िय शोच सकल हितकारी

दो० प्रथम वास तमसा भयउ, दूसर सुरसरि तीर।
न्हाय रहे जलपान करि, सिय समेत दोउ वीर॥

केवट कीन्ह बहुत सेवकाई ❀ सो याँमिनि[7] शृंगबेर गँवाई

---

१ जल २ राजा ३ पुत्र ४ जुदाई ५ जबर्दस्ती ६ मूर्ख ७ रात्रि॥

होत प्रात वट क्षीर मँगावा ❀ जटामुकुट निज शीश बनावा
राम सखा तब नाव मँगाई ❀ प्रिया चढ़ाइ चढ़े रघुराई
लषण धरे धनु बाण बनाई ❀ आपु चढ़े प्रभु आयसु[1] पाई
विकल विलोकि मोहिं रघुवीरा ❀ बोले मधुर वचन धरि धीरा
तात प्रणाम तात सन कहेऊ ❀ बार बार पद पंकज[2] गहेऊ
करब पायँ परि विनय बहोरी ❀ तात करिय जनि चिन्ता मोरी
वन मग मंगल कुशल हमारे ❀ कृपा अनुग्रह पुण्य तुम्हारे

छं॰ तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सब सुख पाइहौं।
प्रतिपालि आयसु कुशल देखन पाँय पुनि फिरि आइहौं।
जननी[3] सकल परितोष करि परि पाँय करि विनती घनी।
तुलसी करेहु सोइयत्न जेहिविधि कुशलरह कोशलधनी।

सो॰ गुरुसन कहब सँदेश, बार बार पद पद्म गहि।
करब सोइ उपदेश, जेहि न शोच मोहिं अवधपति॥

पुरजन परिजन सकल निहोरी ❀ तात सुनायहु विनती मोरी
सोइ सब भाँति मोर हितकारी ❀ जाते रह नरनाह[4] सुखारी
कहब सँदेश भरत के आये ❀ नीति न तजब राजपद पाये
पालहु प्रजहि कर्म मन बानी ❀ सेवहु मातु सकल सम[5] जानी
और निबाहब भायप भाई ❀ करि पितु मातु सुजन सेवकाई
तात भाँति तेहि राखब राऊ ❀ शोच मोर जेहि करहिं न काऊ
लषण कहेउ कछु वचन कठोरा ❀ बरजि राम पुनि मोहिं निहोरा
बार बार निज शपथ[6] दिवाई ❀ कहब न तात लषण लरिकाई

दो॰ करिप्रणाम कछु कहन लिय, सियभइ शिथिलसनेह।
थकित वचन लोचन सजल, पुलकि पल्लवित देह॥

तेहि अवसर[7] रघुवर रुख पाई ❀ केवट पारहिं नाव चलाई

१ आज्ञा २ कमल ३ माता ४ राजा ५ बराबर ६ सौगन्ध ७ समय॥

रघुकुलतिलक चले यहि भाँती ❀ देखेउँ ठाढ़ कुलिश¹ धरि छाती
मैं आपन किमि कहब कलेशू ❀ जियत फिरेउँ लै रामसँदेशू
अस कहि सचिव² वचन रहि गयऊ ❀ हानिगलानि शोचवश भयऊ
सुनत सुमन्त्र वचन नरनाहू ❀ परेउ धरणि उर दारुण दाहू
तलफत विषम मोह मन मापा ❀ मांजौ³ मनहुँ मीन कहँ व्यापा
करि विलाप सब रोवहिं रानी ❀ महाविपति किमि जाइ बखानी
सुनि विलाप दुखहू दुख लागा ❀ धीरजहू कर धीरज भागा

दो० भयो कोलाहल अवध अति, सुनि नृप राउर शोर।
विपुल विहँग⁴ वन परेउ निशि, मानहुँ कुलिश कठोर॥

प्राण कण्ठगत भयउ भुवालू ❀ मणिविहीन जिमि व्याकुल व्यालू
इन्द्रिय सकल विकल भइँ भारी ❀ जनु सर सरसिज वन बिनु वारी
कौशल्या नृप दीख मलाना ❀ रविकुल रवि अथवत जिय जाना
उर धरि धीर राम महतारी ❀ बोलीं वचन समय अनुहारी
नाथ समुझि मन करिय विचारू ❀ राम वियोग पयोधि⁵ अपारू
कर्णधार तुम अवधि जहाजू ❀ चढ़ेउ सकल प्रियपथिक समाजू
धीरज धरिय तो पाइय पारू ❀ नाहिंत बूड़हिं सब परिवारू
जो जिय धरिय विनय पिय मोरी ❀ राम लषण सिय मिलहिं बहोरी

दो० प्रिया वचन मृदु सुनत नृप, चितयउ आंखि उघारि।
तलफत मीन मलीन जनु, सींचत शीतल वारि⁶॥

धरि धीरज उठि बैठ भुवालू ❀ कहु सुमन्त्र कहँ राम कृपालू
कहां लषण कहँ राम सनेही ❀ कहँ प्रिय पुत्रवधू वैदेही
विलपत राव विकल बहु भाँती ❀ भइ युग सरिस सिराँति⁷ न राती
तापस⁸ अन्ध शाप सुधि आई ❀ कौशल्यहि सब कथा सुनाई
भयउ विकल वरणत इतिहासा ❀ राम रहित धिक जीवन श्वासा
सो तनु राखि करब मैं काहा ❀ जेइ न प्रेमप्रण मोर निबाहा

---

१ वज्र २ मन्त्री ३ नये जल का फेन ४ पक्षी ५ समुद्र ६ जल ७ कटती ८ श्रवण का पिता॥

हा रघुनन्दन प्राण पिरीते ❀ तुम बिनु जियत बहुत दिन बीते
हा जानकी लषण हा रघुवर ❀ हा पितुहितचितचातक जलधर

दो॰ राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम।
तनु परिहरि रघुवर बिरह, राव गयो सुरधाम॥

जियन मरण फल दशरथ पावा ❀ अण्ड अनेक अमल यश छावा
जियत राम विधुवदन निहारी ❀ राम विरह मरि मरण सँवारी
शोक विकल सब रोवहिं रानी ❀ रूप शील बल तेज बखानी
करहिं विलाप अनेक प्रकारा ❀ परहिं भूमितल बारहिंबारा
विलपहिं विकल दास अरु दासी ❀ घर घर रुदन करहिं पुरवासी
अथयउ आजु भानुकुल भानू ❀ धर्म्मअवधि गुणरूप निधानू
गारी सकल केकयिहि देहीं ❀ नयन विहीन कीन्ह जग जेहीं
यहि विधि विलपत रैनि बितानी ❀ आये सकल महामुनि ज्ञानी

दो॰ तब वशिष्ठ मुनि समयसम, कहि अनेक इतिहास।
शोक निवारेउ सबन कर, निज विज्ञान प्रकास॥

तेल नावभरि नृप तनु राखा ❀ दूत बुलाइ बहुरि अस भाखा
धावहु वेगि भरत पहँ जाहू ❀ नृप सुधि कतहुँ कहहु जनि काहू
इतनै कहेउ भरत सन जाई ❀ गुरु बुलाइ पठये दोउ भाई
सुनि मुनि आयसु धावन धाये ❀ चले वेगि वरवाजि लजाये
अनरथ अवध अरंभेउ जबते ❀ कुशकुन होहिं भरतकहँ तबते
देखहिं राति भयानक सपने ❀ जागि करहिं बहु कोटि कलपने
विप्र जेंवाइ देहिं बहु दाना ❀ शिव अभिषेक करहिं विधि नाना
मांगहिं हृदय महेश मनाई ❀ कुशल मातु पितु परिजन भाई

दो॰ यहि विधि शोचत भरत मन, धावन पहुँचे जाइ।
गुरु अनुशासन श्रवण सुनि, चले गणेश मनाइ॥

चले संमीर वेग हय हांके ❀ लांघत सरित शैलवन बांके

---

१ पपीहा २ बादल ३ वैकुण्ठ ४ सूर्य ५ दुःख ६ आज्ञा ७ दूत ८ घोड़ा ९ काम १० पवन ११ नदी॥

हृदय शोच बड़ कछु न सुहाई ❀ अस जानहिं जिय जाउँ उड़ाई
एक निमेषं वर्ष सम जाई ❀ यहि विधि भरत नगर नियराई
अशकुन होहिं नगर पैठारा ❀ रटहिं कुभाँति कुखेत करारा
खर शृगाल बोलहिं प्रतिकूला ❀ सुनि सुनि होहि भरत उर शूला
श्रीहत सर सरिता वन वागा ❀ नगर विशेष भयावन लागा
खग मृग हय गय जाहिं न जोये ❀ राम वियोग कुरोग विगोये
नगर नारि नर निपट दुखारी ❀ मनहुँ सबन सब सम्पति हारी

दो० पुरजन मिलहिं न कहहिं कछु, गवहिं जोहारहिं जाहिं।
भरत कुशल पूंछि न सकहिं, भय विषाद मन माहिं॥

हाट बाट नहिं जाइ निहारी ❀ जनु पुर दश दिशि लागि दवारी
आवत सुत सुनि केकयनन्दनि ❀ हरषी रविकुल जलरुह चन्दनि
सजि आरती मुदित उठि धाई ❀ द्वारहि भेंटि भवन लै आई
भरत दुखित परिवार निहारी ❀ मानहुँ तुहिन वनज वन मारी
कैकेयी हरषित यहि भाँती ❀ मनहुँ मुदित दव लाइ किराती
सुतहि सशोच देखि मन मारे ❀ पूंछति नैहर कुशल हमारे
सकल कुशल कहि भरत सुनाई ❀ पूंछी निज कुल कुशल भलाई
कहु कहँ तात कहां सब माता ❀ कहँ सिय राम लषण प्रिय भ्राता

दो० सुनि सुत वचन सनेहमय, कपट नीर भरि नैन।
भरत श्रवण मन शूलसम, पापिनि बोली बैन॥

तात बात मैं सकल सँवारी ❀ भइ मंथरा सहाय बिचारी
कछुक काज विधि बीच बिगारा ❀ भूपति सुरपतिपुर पगु धारा
सुनत भरत भये विवश विषादा ❀ जनु सहमेउ करि केहरिनादा
तात तात हा तात पुकारी ❀ परेउ भूमितल व्याकुल भारी
चलत न देखन पायउँ तोहीं ❀ तात न रामहिं सौंपउ मोहीं
बहुरि धीर धरि उठे सँभारी ❀ कहु पितुमरण हेतु महतारी

१ पल २ उलटे ३ शोभाहीन ४ दावानल ५ कमल ६ छल ७ ब्रह्मा ८ कारण॥

सुनि सुत[1] वचन कहत कैकेई ❀ मर्म्म पाँछि जनु माहुरदेई
आदिहि ते सब आपनि करणी ❀ कुटिल कठोर मुदित मन वरणी

दो० भरतहिबिसरेउ पितुमरण, सुनत राम वनगौन।
हेतु आपनो जानि जिय, थकित रहे धरि मौन॥

विकल विलोकि सुतहिं समुझावति ❀ मनहुँ जरे पर लोन लगावति
तात राव[3] नहिं शोचन योगू ❀ बिढ़इ सुकृत[4] यश कीन्हेउ भोगू
जीवत सकल जन्म फल पाये ❀ अन्त अमरपति सदन[5] सिधाये
अस अनुमानि शोच परिहरहूँ[6] ❀ सहित समाज राज्य पुर करहू
सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारा ❀ पाके छत[7] जनु लाग अँगारा
धीरज धरि भरि लेहिं उसासा ❀ पापिनि सबहि भाँति कुल नासा
जो पै कुरुचि रही अस तोहीं ❀ जन्मत काहे न मारेसि मोहीं
पेड़ काटि तैं पल्लव सींचा ❀ मीन जियनहित वारि उलीचा

दो० हंस वंस दशरथ जनक, राम लषण से भाइ।
जननी तू जननी[8] भई, विधि ते कछु न बसाइ॥

जबते कुमति कुमत मन ठयऊ ❀ खंड खंड ह्वै हृदय न गयऊ
वर मांगत मन भइ नहिं पीरा ❀ जरि न जीभ मुहँ परेउ न कीरा
भूप प्रतीति तोरि किमि कीन्ही ❀ मरणकाल विधि मति हरि लीन्ही
विधिहु न नारि हृदय गति जानी ❀ सकल कपट अघ अवगुण खानी
सरल[9] सुशील धर्म्मरत राऊ ❀ सो किमि जानहिं तीय स्वभाऊ
अस को जीव जन्तु जग माहीं ❀ जेहि रघुनाथ प्राण प्रिय नाहीं
भे अति अहित राम तेउ तोहीं ❀ को तू अहासि सत्य कहु मोहीं
जो हसि सो हसि मुहँ मँसि लाई ❀ आंखि ओट उठि बैठहि जाई

दो० राम विरोधी हृदयते, प्रकट कीन्ह विधि मोहिं।
मो समान को पातकी, बादि कहौं कछु तोहिं॥

सुनि शत्रुघ्न मातु कुटिलाई ❀ जरहिं गात रिस कछु न बसाई

---

१ पुत्र २ चीर ३ राजा ४ पुराय ५ गृह ६ छोड़ो ७ घाव ८ माता ९ सीधे १० स्याही॥

तेहि अवसर कुबरी तहँ आई ❀ वसन विभूषण विविध बनाई
लखि रिस भरेउ लषण लघु भाई ❀ बरत अनल[1] घृतआहुति पाई
हुमकि लात तकि कूबर मारा ❀ परि मुहँभरि महि करत पुकारा
कूबर टूटेउ फूट कपारू ❀ दलित[2] दर्शन[3] मुख रुधिर प्रचारू
अहह दैव मैं काह नशावा ❀ करत नीक फल अनइस पावा
पुनिरिपुहन लखि नखशिख खोटी ❀ लगे घसीटन धरि धरि झोंटी
भरत दयानिधि दीन्ह छुड़ाई ❀ कौशल्या पहँ गे दोउ भाई

दो॰ मलिन वसन विवरणविकल, कृश[4] शरीर दुखभार।
कनक[5] कमल वरबेलि वन, मानहुँ हनी तुषार[6]॥

भरतहिं देखि मातु उठि धाई ❀ मूर्च्छित अवनिपरी भहराई
देखत भरत विकल भये भारी ❀ परे चरण तनुदशा बिसारी
मातु तात कहँ देहि दिखाई ❀ कहँ सिय राम लषण दोउ भाई
केकयि कत जनमी जग मांझा ❀ जो जनमी तौ भइ किन बांझा
कुल कलंक जेहिं जनमेउ मोही ❀ अपयश भाजन प्रियजन द्रोही
कोत्रिभुवन मोहिं सरिस अभागी ❀ गति असि तोरि मातु जेहि लागी
पितु सुरपुर वन रघुकुलकेतू ❀ मैं केवल सब अनरथ हेतू
धिक मोहिं भयउँ वेणुवन आगी ❀ दुसह दाह दुख दूषणभागी

दो॰ मातु भरतके वचन मृदु[7], सुनि पुनि उठी सँभारि।
लिये उठाय लगाय उर, लोचन मोचति वारि[8]॥

सरल सुभाय मातु उर लाये ❀ अतिहित मनहुँ राम फिरि आये
भेंटेउ बहुरि लषण लघु भाई ❀ शोक सनेह न हृदय समाई
देखि स्वभाव कहत सब कोई ❀ राममातु अस काहे न होई
माता भरत गोद बैठारे ❀ आंशु पोंछि मृदु वचन उचारे
अजहुँ बच्छ बलि धीरज धरहू ❀ कुसमय समुझि शोक[9] परिहरहू
जनि मानहु जिय हानि गलानी ❀ काल कर्मगति अघटित जानी

१ अग्नि २ टूटे ३ दांत ४ दुर्बल ५ सोना ६ पाला ७ कोमल ८ जल ९ दुःख॥

काहुहि दोष देहु जनि ताता ❀ भा मोहिं सब विधि वाम विधाता
जो ऐसेहु दुख मोहिं जियावा ❀ अजहुँ को जानै का तेहि भावा

दो० पितु आयसु भूषण वसनं, तात तजे रघुवीर।
विस्मय हर्ष न हृदय कछु, पहिरेउ वल्कल चीर॥

मुख प्रसन्न मन राग न रोषू ❀ सबकर सब विधि करि परितोषू
चले विपिन[2] सुनि सिय सँग लागी ❀ रही न रामचरण अनुरागी
सुनतहि लषण चले लगि साथा ❀ रहे न यतन किये रघुनाथा
तब रघुपति सबहीं शिर नाई ❀ चले संग सिय अरु लघु भाई
राम लषण सिय वनहिं सिधाये ❀ गई न संग न प्राण पठाये
यह सब भा इन आंखिन आगे ❀ तउ न तजा तनु जीव अभागे
म्वहिं न लाज निज नेह निहारी ❀ राम सरिस[3] सुत मैं महतारी
जियै मरै भल भूप[4]ति जाना ❀ मोर हृदय शत कुलिश[5] समाना

दो० कौशल्या के वचन सुनि, भरत सहित रनिवास।
व्याकुल विलपत राजगृह, मानहुँ शोकनिवास॥

विलपहिं विकल भरत दोउ भाई ❀ कौशल्या लिय हृदय लगाई
भाँति अनेक भरत समुझाये ❀ कहि विवेकमय वचन सुनाये
भरतहु मातु सकल समुझाई ❀ कहि पुराण श्रुति कथा सुनाई
छलविहीन शुचि सरल सुवाणी ❀ बोले भरत जोरि युग पाणी
जो अघ[6] मातु पिता गुरु मारे ❀ गाइँगोठ[7] महिसुर[8]पुर जारे
जो अघ तिय बालक बध कीन्हे ❀ मीत महीपति माहुर दीन्हे
जो पातक उपपातक अहहीं ❀ कर्म वचन मन भव कवि कहहीं
ते पातक मोहिं होउ विधाता ❀ जो यह होइ मोर मत माता

दो० जे परिहरि हरि हर चरण, भजहिं भूत गण घोर।
तिनकी गति मोहिं देउ विधि, जो जननी मत मोर॥

बेचहिं वेद धर्म्म दुहि लेहीं ❀ पिशुन[9] पराव पाप कहि देहीं

१ वस्त्र २ वन ३ समान ४ राजा ५ वज्र ६ पाप ७ गोशाला ८ ब्राह्मण ९ चुगुल॥

कपटी कुटिल कलह प्रिय क्रोधी ❀ वेद विदूषक विश्व विरोधी
लोभी लम्पट लोलुप चारा ❀ जे ताकहिं परधन परदारा
पावउँ मैं तिनकी गति घोरा ❀ जो जननी यह सम्मत मोरा
जे नहिं साधु संग अनुरागे ❀ परमारथ पथ विमुख अभागे
जे न भजहिं हरि नरतनु पाई ❀ जिनहिं न हरिहर सुयश सुहाई
तजि श्रुति पन्थ वाम पथ चलहीं ❀ वंचक विरचि वेष जग छलहीं
तिनकी गति शंकर मोहिं देऊ ❀ जननी जो यह जानौं भेऊ

छं० मन वचन कर्म्म कृपायतनकर दास मैं सुनु मातु री।
उर बसत राम सुजान जानत प्रीति अरु छल चातुरी॥
अस कहत लोचन बहत जल तनु पुलकनखलेखत मही।
हिय लाय लिये बहोरि जननी जानि प्रभुपदरत सही॥

दो० मातु भरत के वचन सुनि, सांचे सरल स्वभाय।
कहत राम प्रिय तात तुम, सदा वचन मन काय॥

राम प्राण ते प्राण तुम्हारे ❀ तुम रघुपतिहि प्राण ते प्यारे
विधु विष चुवै स्रवै हिम आगी ❀ होइँ वारिचर वाँरि विरागी
भये ज्ञान बरु मिटै न मोहू ❀ तुम रामहिं प्रतिकूल न होहू
मत तुम्हार यह जो जग कहहीं ❀ सो सपनेहुँ सुख सुगति न लहहीं
अस कहि मातु भरत हिय लाई ❀ थन पय स्रवहिं नयन जल छाई
करत विलाप विपुल यहि भाँती ❀ बैठे बीति गई सब राती
वामदेव वशिष्ठ मुनि आये ❀ सचिव महाजन सकल बुलाये
मुनि बहु भाँति भरत उपदेशे ❀ कहि परमारथ वचन सुदेशे

दो० तात हृदय धीरज धरहु, करहु जो अवसर आजु।
उठे भरत गुरुवचन सुनि, करन कहेउ सब काजु॥

नृप तनु वेद विहित नहवावा ❀ परम विचित्र विमान बनावा
गहि पद भरत मातु सब राखी ❀ रहीं रामदर्शन अभिलाखी

१ लड़ाई २ स्त्री ३ मार्ग ४ छली ५ बानि ६ चुवै ७ जल ८ खिलाफ़ ९ दूध १० पकड़कर॥

चन्दन अगर भार बहु आये ❁ अमित[1] अनेक सुगन्ध सुहाये
सरयु तीर रचि चिता बनाई ❁ जनु सुरपुर सोपान[2] सुहाई
यहि विधि दाह क्रिया सब कीन्हीं ❁ विधिवत न्हाय तिलांजलि दीन्हीं
शोधि सुमृति सब वेद पुराना ❁ कीन्ह भरत दशगात्र विधाना
जहँ जस मुनिवर आयसु दीन्हा ❁ तहँ तस सहस भाँति सब कीन्हा
भये विशुद्ध दिये सब दाना ❁ धेनु वाजि गज वाहन नाना

दो० सिंहासन भूषण वसन, अन्न धरणि धन धाम।
दिये भरत लहि भूमिसुर[3], भे परिपूरण काम॥

पितु हित भरत कीन्ह जस करणी ❁ सो मुख लाख जाइ नहिं वरणी
सुदिन शोधि मुनिवर तहँ आये ❁ सकल महाजन सचिव[4] बुलाये
बैठे राजसभा सब जाई ❁ पठये बोलि भरत दोउ भाई
भरत वशिष्ठ निकट बैठारे ❁ नीति धर्म्म मय वचन उचारे
प्रथम कथा सब मुनिवर वरणी ❁ केकयि कुटिल कीन्ह जस करणी
भूप धर्म्म व्रत सत्य सराहा ❁ जेहि तनु परिहरि प्रेम निबाहा
कहत रामगुण शील स्वभाऊ ❁ सजल नयन पुलके मुनिराऊ
बहुरि लषण सिय प्रीति बखानी ❁ शोक सनेह मगन मुनि ज्ञानी

दो० सुनहु भरत भावी प्रबल, बिलखि कहेउ मुनिनाथ।
हानि लाभ जीवन मरण, यश अपयश विधि हाथ॥

अस विचारि केहि दीजिय दोषू ❁ व्यर्थ काहि पर कीजिय रोषू[5]
तात विचार करहु मन माहीं ❁ शोचयोग्य दशरथ नृप नाहीं
शोचिय विप्र जो वेदविहीना ❁ तजि निज धर्म्म विषय लवलीना
शोचिय नृपति नीति नहिं जाना ❁ जेहि न प्रजा प्रिय प्राण समाना
शोचिय वैश्य कृपण[6] धनवानू ❁ जो न अतिथि शिवभक्त सुजानू
शोचिय शूद्र विप्र अपमानी[7] ❁ मुखर[8] मान प्रिय ज्ञान गुमानी
शोचिय पुनि पतिवंचक[9] नारी ❁ कुटिल कलहप्रिय इच्छाचारी

१ बेहद २ सीढ़ी ३ विप्र ४ मंत्री ५ क्रोध ६ सूम ७ निन्दक ८ धृष्ट ९ छलिनी ॥

शोचिय वटु निज व्रत परिहरई ❀ जो नहिं गुरु आयसु अनुसरई

दो॰ शोचिय गृही जो मोहवश, करै धर्म्म पथ त्याग ।
शोचिय यती प्रपञ्च रत, विगत विवेक विराग ॥

वैखानस[1] सोइ शोचन[2] योगू ❀ तप विहाय जेहि भावै भोगू
शोचिय पिशुन अकारण क्रोधी ❀ जननि जनक गुरु बन्धु विरोधी
सब विधि शोचिय पर अपकारी ❀ निज तनु पोषक निर्दय भारी
शोचनीय सबही विधि सोई ❀ जो न छांड़ि छल हरिजन होई
शोचनीय नहिं कोशलराऊ ❀ भुवन चारिदश प्रकट प्रभाऊ
भयउ न अहै न होनेउहारा ❀ भूप भरत जस पिता तुम्हारा
विधि हरिहर सुरपति दिशिनाथा ❀ वरणहिं सब दशरथ गुणगाथा[3]
तीनि काल त्रिभुवन जग माहीं ❀ भूरिभाग[4] दशरथ सम नाहीं

दो॰ कहहु तात केहि भाँति कोउ, करहि बड़ाई तासु ।
राम लषण तुम शत्रुहन, सरिस सुवन[5] शुचि जासु ॥

सब प्रकार भूपति बड़भागी ❀ बादि विषाद करिय तेहि लागी
यह सुनि समुझि शोच परिहरहू ❀ शिर धरि रायरजायसु करहू
राव राजपद तुम कहँ दीन्हा ❀ पितावचन फुर[6] चाहिय कीन्हा
तजेउ राम जेहि वचनहिं लागी ❀ तनु परिहरेउ राम विरहागी
नृपहि वचन प्रिय नहिं प्रिय प्राणा ❀ करहु तात पितु वचन प्रमाणा
करहु शीश धरि भूप रजाई ❀ है तुम कहँ सब भाँति भलाई
परशुराम पितु आज्ञा राखी ❀ मारी मातु लोक सब साखी
तनय ययातिहि यौवन दयऊ ❀ पितु आज्ञा अघ[7] अयश न भयऊ

दो॰ अनुचित उचित विचार तजि, जे पालहिं पितु बैन ।
ते भाजन सुख सुयश के, बसहिं अमरपति ऐन[8] ॥

अवशि नरेश वचन फुर करहू ❀ पालहु प्रजा शोक परिहरहू
सुरपुर नृप पाइहि परितोषू ❀ तुम कहँ सुकृत सुयश नहिं दोषू

१ तपस्वी २ छोड़के ३ कथा ४ भाग्यशाली ५ पुत्र ६ सच ७ पाप ८ गृह ॥

वेद विहित सम्मत सबहीका ❀ जेहि पितु देइ सो पावै टीका
करहु राज्य परिहरहु गलानी ❀ मानहु मोर वचन हितजानी
सुनि सुख लहब राम वैदेही ❀ अनुचित कहब न पंडित तेही
कौशल्यादि सकल महतारी ❀ तेउ प्रजासुख होहिं सुखारी
मरम तुम्हार राम सब जानहिं ❀ सो सब विधि तुमसन भल मानहिं
सौंपेहु राज्य राम के आये ❀ सेवा करेहु सनेह सुहाये

दो० कीजियगुरुआयसु अवशि,कहहिंसचिवकरजोरि।
रघुपति आये उचित जस,तब तस करब बहोरि॥

कौशल्या धरि धीरज कहई ❀ पुत्र पथ्य गुरु आयसु अहई
सो आदरिय करिय हितमानी ❀ तजिय विषाद कालगति जानी
वन रघुपति सुरपुर नरनाहू ❀ तुम यहि भांति तात कदराहू
परिजन प्रजा सचिव कह अम्बा ❀ तुमहीं सुत सबकर अवलम्बा
लखि विधि वाँम काल कठिनाई ❀ धीरज धरहु मातु बलिजाई
शिरधरि गुरु आयसु अनुसरहू ❀ प्रजापालि पुरजन दुख हरहू
गुरु के वचन सचिव अभिनन्दन ❀ सुनत भरतहियहित जनु चन्दन
सुनी बहोरि मातु मृदुबानी ❀ शील सनेह सरल रससानी

छं० सानीसरलरसमातुबानी सुनि भरत व्याकुल भये।
लोचन सरोरुह स्रवत सींचत विरह उर अंकुर नये॥
सो दशा देखत समय तेहि बिसरी सबहि सुधि देह की।
तुलसी सराहत सकल सादर सींव सहज सनेह की॥

सो० भरत कमल कर जोरि, धर्म्म धुरन्धर धीरधरि।
वचन अमिय जनु बोरि, देत उचित उत्तर सबहिं॥

मोहिं उपदेश दीन्ह गुरु नीका ❀ प्रजा सचिव सम्मत सबहीका
मातु उचित पुनि आयसु दीन्हा ❀ अवशि शीशधरि चाहिय कीन्हा

१ भेद २ आज्ञा ३ दुःख ४ कुटुम्बी ५ माता ६ सहारा ७ टेढ़ा ८ सीधी ९ कमल॥

गुरु पितु मातु स्वामि हित बानी ❀ सुनि मन मुदित करियभलिजानी
उचित कि अनुचित किये विचारू ❀ धर्म्म जाइ शिर पातक भारू
तुम तो देहु सरल शिष सोई ❀ जो आचरंत मोर हित होई
यद्यपि यह समुझत हौं नीके ❀ तदपि होत परितोष[2] न जीके
अब तुम विनय मोरि सुनिलेहू ❀ मोहिं अनुहरत सिखावन देहू
उत्तर देउँ क्षमब अपराधू ❀ दुखित दोष गुन गनहिं न साधू

दो० पितु सुरपुर सिय राम वन, करन कहहु मोहिं राज।
यहिते जानहु मोर हित, कै आपन बड़ काज॥

हित हमार सियपति सेवकाई ❀ सो हरि लीन्ह मातु कुटिलाई
मैं अनुमानि दीख मन माहीं ❀ आन उपाय मोर हित नाहीं
शोक समाज[3] राज केहि लेखे ❀ लषण राम सियपद बिनु देखे
बादि वसन[4] बिनु भूषण भारू ❀ बादि विरति बिनु ब्रह्म विचारू
सरुज[5] शरीर बादि सब भोगा ❀ बिनु हरिभक्ति बादि जप योगा
जाय देह बिनु जीव सुखाई ❀ बादि मोर सब बिनु रघुराई
जाउँ राम पहँ आयसु देहू ❀ एकहि आंक मोर हित येहू
मोहिं नृप करि आपन भल चहहू ❀ सो सनेह जड़ता वश कहहू

दो० कैकेयी सुत कुटिल मति, राम विमुख गत लाज।
तुम चाहत सुख मोह वश, मोहिं से अधम[6] के राज॥

कहौं सांच सब सुनि पतियाहू ❀ चाहिय धर्म्म शील नरनाहू
मोहिं राज्य हठि देहहु जबहीं ❀ रसा[7] रसातल[8] जाइहि तबहीं
मोहिं समान को पापनिवासी ❀ जेहिलगि सीय राम वनवासी
राव राम कहँ कानन[9] दीन्हा ❀ बिछुरत गमन अमरपुर कीन्हा
मैं शठ सब अनरथ कर हेतू ❀ बैठि बात सब सुनउँ सचेतू
बिनु रघुवीर विलोकिय वासू ❀ रहे प्राण सहि जग उपहासू
राम पुनीत विषय रस रूखे ❀ लोलुप भूप भोग के भूखे

१ करते हुये २ धीरज ३ सभा ४ वस्त्र ५ रोगी ६ नीच ७ पृथ्वी ८ पाताल ९ वन॥

कहँ लगि कहउँ हृदय कठिनाई ❀ निदरि कुंलिश जेहि लही बड़ाई

दो० कारण ते कारज कठिन, होय दोष नहिं मोर।
कुलिश अस्थिते उपलते, लोह कराल कठोर॥

कैकेयी भव तनु अनुरागे ❀ पामर प्राण अघाइ अभागे
जो प्रिय विरह प्राण प्रिय लागे ❀ देखब सुनब बहुत अब आगे
लषण राम सिय कहँ वन दीन्हा ❀ पठइ अमरपुर पतिहित कीन्हा
लीन्ह विधवपन अपयश आपू ❀ दीन्हेउ प्रजहिं शोक सन्तापू
मोहिं दीन्ह सुख सुयश सुराजू ❀ कीन्ह केकयी सबकर काजू
यहिते मोर कहा अब नीका ❀ तेहिपर देन कहहु तुम टीका
केकयि जठर[3] जन्मि जगमाहीं ❀ यह मोकहँ कछु अनुचित नाहीं
मोरि बात सब विधिहि बनाई ❀ प्रजा पांच कत करहु सहाई

दो० ग्रहग्रहीत[4] पुनि वातवश, तेहि पुनि बीछी मार।
ताहि पियाइय वारुणी[5], कहहु कवन उपचार॥

केकयि सुवन योग जग जोई ❀ चतुर विरंञ्चि[6] रचा मोहिं सोई
दशरथ तनय राम लघुभाई ❀ दीन्ह मोहिं विधि बादि बड़ाई
तुम सब कहहु कढ़ावन टीका ❀ राव रजायँसु[7] सब कहँ नीका
उतर देउँ केहि विधि केहि केही ❀ कहहु सुखेन यथा रुचि जेही
मोहिं कुमातु समेत विहाई ❀ कहहु कहिहि को कीन्ह भलाई
मोहिं बिनु को सचराचर माहीं ❀ जेहि सिय राम प्राण प्रिय नाहीं
परम हानि सब कहँ बड़ लाहू ❀ अदिन मोर नहिं दूषण काहू
संशय शील प्रेमवश अहहू ❀ सबै उचित सब जो कछु कहहू

दो० राम मातु सुठिसरलचित, मोपर प्रेम विशेखि।
कहहिं स्वभाव सनेह वश, मोरि दीनता देखि॥

गुरु विवेक सागर[8] जग जाना ❀ जिनहिं विश्व कर बदर समाना
मोकहँ तिलक साजि सजि सोऊ ❀ भा विधि विमुख विमुख सब कोऊ

१ वज्र २ पत्थर ३ पेट ४ ग्रहपीड़ित ५ मदिरा ६ ब्रह्मा ७ आज्ञा ८ समुद्र॥

परिहरि राम सीय जग माहीं ❀ को नहिं कहिहि मोर मत नाहीं
सो मैं सुनब सहब सुखमानी ❀ अन्तहु कीच तहां जहँ पानी
डर न मोहिं जगकहिहि कि पोचू ❀ परलोकहु कर नाहिं न शोचू
एकै बड़ि उर दुसह[1] दवारी[2] ❀ मोहिं लगि भे सियराम दुखारी
जीवन लाहु लषण भल पावा ❀ सब तजि रामचरण मन लावा
मोर जन्म रघुवर वन लागी ❀ झूठ काह पछिताउँ अभागी

दो० आपनि दारुण दीनता, सबहिं कह्यों समुझाय।
देखे बिनु रघुवीर पद, जियकी जरनि न जाय॥

आन उपाय मोहिं नहिं सूझा ❀ को जियकी रघुवर बिनु बूझा
एकहि आंक इहै मनमाहीं ❀ प्रातकाल चलिहौं प्रभु पाहीं
यद्यपि मैं अनभल अपराधी ❀ भइ मोहिं कारण सकल उपाधी
तदपि शरण सम्मुख मोहिं देखी ❀ क्षमि सब करिहहिं कृपाविशेखी
शील सकुच सुठि सरल[3] स्वभाऊ ❀ कृपा सनेह सदन[4] रघुराऊ
अरिहुक[5] अनभल कीन्ह न रामा ❀ मैं शिशु[6] सेवक यद्यपि वामा
तुम पै पांच मोर भल मानी ❀ आयसु आशिष देहु सुबानी
जेहि सुनि विनय मोहिं जनजानी ❀ आवहिं बहुरि राम रजधानी

दो० यद्यपि जन्म कुमातु ते, मैं शठ सदा सदोस।
आपन जानि न त्यागिहैं, मोहिं रघुवीर भरोस॥

भरत वचन सब कहँ प्रिय लागे ❀ राम सनेह सुधाँ[7] जनु पागे
लोग वियोग विषम विष दागे ❀ मन्त्र सबीज सुनत जनु जागे
मातु सचिव गुरु पुर नर नारी ❀ सकल सनेह विकल भइँ भारी
भरतहि कहहिं सराहि सराही ❀ राम प्रेम मूरति जनु आही
तात भरत अस काहे न कहहू ❀ प्राण समान रामप्रिय अहहू
जो पामर[8] आपनि जड़ताई ❀ तुमहिं सुगाइ मातु कुटिलाई
सो शठ कोटिक पुरुष समेता ❀ बसहि कल्पशत नरकनिकेता[9]

१ असह्य २ अग्नि ३ सीधा ४ गृह ५ शत्रु ६ बालक ७ अमृत ८ नीच ९ स्थान॥

अंहिअघ अवगुण मणि नहिं गहई ❀ हरे गरल[2] दुख दारिद दहई

दो० अवशि चलिय वन रामपहँ, भरत मन्त्र[3] भल कीन्ह।
शोकसिन्धु बूड़त सबहिं, तुम अवलम्बन दीन्ह॥

भरत वचन सुनि मोद न थोरा ❀ जनु घन धुनि सुनि चातक मोरा
चलब प्रात लगि निर्णय नीके ❀ भरत प्राण प्रिय भे सबहीके
मुनिहिं वन्दि भरतहिं शिरनाई ❀ चले सकल घर बिदा कराई
धन्य भरत जीवन जग माहीं ❀ शील सनेह सराहत जाहीं
कहहिं परस्पर भा बड़ काजू ❀ सकल चलै कर साजहिं साजू
जेहि राखहिं घर रहु रखवारी ❀ सो जानै जनु गरदन मारी
कोउ कह रहन कहिय नहिं काहू ❀ को न चहै जग जीवन लाहू

दो० जरै सुसम्पति सदन सुख, सुहृद मातु पितु भाइ।
सम्मुख होत जो राम पद, करै न सहज सहाइ॥

घर घर वाहन[4] साजहिं नाना[5] ❀ हर्षहिं हृदय प्रभात[6] पयाना
भरत जाइ घर कीन्ह विचारू ❀ नगर वाजि गज भवन भँडारू
सम्पति सब रघुपति कै आही ❀ जो बिनु यतन चलौं तजि ताही
तौ परिणाँम न मोर भलाई ❀ पाप शिरोमणि साइँ दुहाई
करहि स्वामि हित सेवक सोई ❀ दूषण[8] कोटि देइ किन कोई
अस विचारि शुचि सेवक बोले ❀ जे सपनेहुँ निजधर्म न डोले
कहि सब मर्म धर्म सब भाखा ❀ जो जेहिलायक सो तहँ राखा
करि सब यतन राखि रखवारे ❀ राममातु पहँ भरत सिधारे

दो० आरत जननी जानि सब, भरत सनेह सुजान।
कहेउ सजावन पालकी, सुखद सुखासन यान॥

चक चकई इव पुर नर नारी ❀ चलब प्रात उर आनँद भारी
जागत सब निशि भयउ बिहाना[9] ❀ भरत बुलाये सचिव सुजाना
कहेउ लेहु सब तिलक समाजू ❀ वनहिं देव मुनि रामहिं राजू

१ सर्प २ विष ३ सलाह ४ सवारी ५ तरह-तरह के ६ सुबह ७ अन्त ८ कलंक ९ सबेरा॥

वेगि चलहु मुनि सचिवं[1] जुहारे ❀ तुरत तुरँग रथ नाग[2] सँवारे
अरुन्धती अरु अग्नि समाजू ❀ रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराजू
विप्र वृन्द चढ़ि वाहन नाना ❀ चले सकल तप तेज निधाना
नगर लोग सब सजि सजि यानां[3] ❀ चित्रकूट कहँ कीन्ह पयाना
शिबिकां[4] सुभग न जाइँ बखानी ❀ चढ़ि चढ़ि चलत भई सब रानी

दो० सौंपि नगर शुचि सेवकन, सादर सबहिं चलाइ।
सुमिरि रामसियचरण तब, चले भरत दोउ भाइ॥

रामदरश हित सब नर नारी ❀ जनु करि[5] करिणि[6] चले तकि वारी
वन सिय राम समुझि मनमाहीं ❀ सानुज भरत पयादेहि जाहीं
देखि सनेह लोग अनुरागे ❀ उतरि चले हय गय रथ त्यागे
जाइ समीप राखि निज डोली ❀ राम मातु मृदु वाणी बोली
तात चढ़हु रथ बलि महतारी ❀ होइहि प्रिय परिवार दुखारी
तुम्हरे चलत चलहिं सब लोगू ❀ सकल शोककृश नहिं मग योगू
शिर धरि वचन चरण शिरनाई ❀ रथ चढ़ि चलत भये दोउ भाई
तमसा प्रथम दिवस करि वासू ❀ दूसर गोमाति तीर निवासू

दो० पयँ[7] अहार फल अशँन[8] इक, निशिभोजन सब लोग।
करत राम हित नेम व्रत, परिहरि भूषण भोग॥

सई तीर बसि चले बिहाने ❀ शृङ्गबेर पुर सब नियराने
समाचार सब सुने निषादा ❀ हृदय विचार करै सविषादा
कारण कवन भरत वन जाहीं ❀ है कछु कपटभाव मनमाहीं
जो पै जिय न होत कुटिलाई ❀ तौ कस लीन्ह सङ्ग कटकाई
जानहिं सानुज रामहिं मारी ❀ करौं अकंटक[9] राज सुखारी
भरत न राजनीति उरआनी ❀ तब कलङ्क अब जीवनहानी
सकल सुरासुर जुरहिं जुझारा ❀ रामहिं समर न जीतनहारा
का आश्चर्य भरत अस करहीं ❀ नहिं विषबेलि अमिय फल फरहीं

---

१ मंत्री २ हाथी ३ सवारी ४ पालकी ५ हाथी ६ हथिनी ७ जल ८ भोजन ९ बेखटक॥

दो० असविचारि गुहज्ञातिमन, कहेउ सजग सबहोहु।
हथवासहु बोरहु तरणि[2], कीजिय घाटा रोहु॥

होइ सजग सब रोकहु घाटा ❀ ठाटहु सकल मरण के ठाटा
सम्मुख लोह भरत सन लेहू ❀ जियत न सुरसरि उतरन देहू
समर मरण पुनि सुरसरि तीरा ❀ रामकाज क्षणभंगु शरीरा
भरत भाइ नृप मैं जन नीचू ❀ बड़े भाग्य अस पाइय मीचू
स्वामिकाज करिहौं रण रारी ❀ लेहौं सुयश भुवन दशचारी
तजहुँ प्राण रघुनाथ निहोरे ❀ दुहूं हाथ मुद मोदक[3] मोरे
साधु समाज न जाकर लेखा ❀ रामभक्ति उर जासु न रेखा
जाय जियत जग सो महिभारू ❀ जननी[4] यौवन विटप कुठारू

दो० विगत विषाद निषादपति, सबहिं बढ़ाय उछाह।
सुमिरिराम मांगेउ तुरत, तरकस धनुष सनाह॥

वेगिहि भाइ सजहु संजोऊ ❀ सुनि रजाय कदराय न कोऊ
भले नाथ सब कहहिं सहर्षा ❀ एकहि एक बढ़ावहिं कर्षा[5]
चले निषाद जुहारि जुहारी ❀ शूर सकल रण रुचै न रारी
सुमिरि राम पद पंकज पनहीं ❀ भाथा बांधि चढ़ावहिं धनुहीं
अँगुरी[6] पहिरि कूंड़ि[7] शिरधरहीं ❀ फरसा बांस सेल[8] सम करहीं
एक कुशल अति ओड़न खांड़े ❀ कूदहिं गगन मनहुँ क्षिति छांड़े
निज निज साज समाज बनाई ❀ गुह रावतहिं जुहारहिं जाई
देखि सुभट सब लायक जाने ❀ लै लै नाम सकल सनमाने

दो० भाइहु लावहु धोख जनि, आजु काज बड़ मोहिं।
सुनि सरोष बोले सुभट, वीर अधीर न होहिं॥

राम प्रताप नाथ बल तोरे ❀ करहिं कटक बिनु भट बिनु घोरे
जियत पांव नहिं पीछे धरहीं ❀ रुण्ड मुण्डमय मेदिनि[9] करहीं
दीख निषाद नाथ भल टोलू ❀ कहेउ बजाउ जुझाऊ ढोलू

---

१ चैतन्य २ नौका ३ लड्डू ४ माता ५ उत्तेजित ६ दस्ताने ७ टोप ८ बरछी ९ पृथ्वी॥

इतना कहत छींक भइ बांये ❀ कहेउ शकुनियन खेत सुहाये
बूढ़ एक कह शकुन विचारी ❀ भरतहि मिलिय न होइहि रारी
रामहिं भरत मनावन जाहीं ❀ शकुन कहै अस विग्रह नाहीं
सुनि गुह कहै नीक कह बूढ़ा ❀ संहसा करि पछितांहिं विमूढ़ा
भरत स्वभाव शील बिनु बूझे ❀ बड़ि हित हानि जानि बिनु जूझे

दो० गहहु घाटभटसिमिटसब, लेउँ मर्म्म मिलिजाय।
बूझि मित्र अरि मध्य गति, तब तस करब उपाय॥

लखब सनेह स्वभाव सुहाये ❀ वैर प्रीति नहिं दुरत दुराये
अस कहि भेंट सजोवन[2] लागे ❀ कन्दमूल फल खग मृग मांगे
मीनै[3] पीन पाठीन पुराने ❀ भरि भरि भार कहारन आने
मिलनसाज सजि मिलन सिधाये ❀ मंगलमूल शकुन शुभ पाये
देखि दूरिते कहि निज नामू ❀ कीन्ह मुनीशहिं दण्डप्रणामू
जानि राम प्रिय दीन्ह अशीशा ❀ भरतहिं कहेउ बुझाइ मुनीशा
राम सखा सुनि स्यन्दनै[4] त्यागा ❀ चले उतरि उमँगत अनुरागा
गांव जाति गुह नाउँ सुनाई ❀ कीन्ह जुहार माथ महिलाई

दो० करत दण्डवत देखि तेहि, भरत लीन्ह उर लाइ।
मनहुँ लषण सन भेंट भइ, प्रेम न हृदय समाइ॥

भेंटे भरत ताहि अति प्रीती ❀ लोग सिहाहिं प्रेम की रीती
धन्य धन्य ध्वनि मंगलमूला ❀ सुर सराहि तेहि वर्षहिं फूला
लोक वेद सब भांतिहि नीचा ❀ जासु छांह छुइ लेइय सींचा
तेहि भरि अंक राम लघुभ्राता[5] ❀ मिलत पुलक परिपूरित गाता
राम राम कहि जे जमुहाहीं ❀ तिनहिं न पाप पुंजै[6] समुहाहीं
यहि तौ राम लाय उर लीन्हा ❀ कुल समेत जग पावनै[7] कीन्हा
कर्म्मनाश जल सुरसरि परई ❀ तेहि को कहहु शीश नहिं धरई
उलटा नाम जपत जग जाना ❀ बालमीकि भे ब्रह्म समाना

१ यकायक २ इकट्ठा करना ३ मछली ४ रथ ५ छोटा भाई ६ समूह ७ पवित्र ॥

दो० श्वपच शबर खस[1] यवन जड़, पामर कोल किरात।
राम कहत पावन परम, होत भुवन विख्यात॥

नहिं अचरज युग युग चलि आई ❀ केहि न दीन्ह रघुवीर बड़ाई
राम नाम महिमा सुर कहहीं ❀ सुनि सुनि अवधलोग सुख लहहीं
रामसखहिं मिलि भरत सप्रेमा ❀ पूछहिं कुशल सुमंगल क्षेमा
देखि भरत कर शील सनेहू ❀ भा निषाद तेहि समय विदेहू
सकुच सनेह मोद मन बाढ़ा ❀ भरतहिं चितवत इकटक ठाढ़ा
धरि धीरज पद वन्दि बहोरी ❀ विनय सप्रेम करत कर जोरी
कुशल मूल पद पंकज[2] पेखी ❀ मैं तिहुँकाल कुशल निज लेखी
अब प्रभु परम अनुग्रह तोरे ❀ सहित कोटि कुल मंगल मोरे

दो० समुझि मोरि करतूति कुल, प्रभु महिमा जिय जोइ।
जो न भजै रघुवीर पद, जग विधि वंचक[4] सोइ॥

कपटी कायर[5] कुमति[6] कुजाँती ❀ लोक वेद बाहिर सब भाँती
राम कीन्ह आपन जबहींते ❀ भयउँ भुवन भूषण तबहींते
देखि प्रीति सुनि विनय सुहाई ❀ मिले बहोरि[8] लषण लघुभाई
कहि निषाद निज नाम सुबानी ❀ सादर सकल जुहारी रानी
जानि लषण सम देहिं अशीशा ❀ जियहु सुखी सौ लाख बरीशा[9]
निरखि निषाद नगर नर नारी ❀ भये सुखी जनु लषण निहारी
कहहिं लहेउ यहिं जीवन लाहू ❀ भेंटेउ राम भाइ भरि बाहू
सुनि निषाद निज भाग्य बड़ाई ❀ प्रमुदित मन लै चलेउ लिवाई

दो० सनकारे सेवक सकल, चले स्वामि रुख पाइ।
घर तरु तर सर बाग वन, वास बनायउ जाइ॥

शृंगबेर पुर भरत दीख जब ❀ भे सनेहवश अंग शिथिल तब
सोहत लिये निषादहि लागू ❀ जनु तनु धरे विनय अनुरागू
यहिविधि भरत सेन सब सङ्गा ❀ दीख जाय जगपावनि गङ्गा

१ पहाड़ीलोग २ कमल ३ कृपा ४ छली ५ डरपोक ६ दुर्बुद्धी ७ नीच ८ फिर ९ वर्ष॥

रामघाट कहँ कीन्ह प्रणामा ❀ भा मन मगन मिले जनु रामा
करहिं प्रणाम मगन नर नारी ❀ मुदित ब्रह्ममय वारि[1] निहारी
करि मज्जन मांगहिं करजोरी ❀ रामचन्द्र पद प्रीति न थोरी
भरत कह्यो सुर[2]सरि तव रेनू ❀ सकल सुखद सेवक सुर[3]धेनू
जोरि पाणि वर मांगों एहू ❀ सीय रामपद सहज सनेहू

दो० यहिविधि मज्जन भरत करि, गुरु अनुशा[4]सन पाइ ।
मातु नहानी जानि सब, डेरा चले लिवाइ ॥

जहँ तहँ लोगन डेरा कीन्हा ❀ भरत शो[5]धि सबही कर लीन्हा
गुरु सेवा करि आयसु पाई ❀ राम मातुपहँ गे दोउ भाई
चरणचापि कहिकहि मृदुबानी ❀ जननी सकल भरत सनमानी
भाइहि सौंपि मातु सेवकाई ❀ आपु निषादहिं लीन्ह बुलाई
चले सखा करसों करजोरे ❀ शिथिल शरीर सनेह न थोरे
पूंछत सखहिं सो ठांव दिखाऊ ❀ नेकु नयन मन जरनि जुड़ाऊ
जहँ सियराम लषण निशि सोये ❀ कहत भरे जल लोचन कोये
भरत वचन सुनि भयउ विषादू ❀ तुरत तहाँ लै गयउ निषादू

दो० जहँ शिंशपा पुनीत तरु, रघुवर किय विश्राम ।
अति सनेह सादर भरत, कीन्ह्यउ दण्डप्रणाम ॥

कुश साथरी निहारि सुहाई ❀ कीन्ह प्रणाम प्रदच्छिण लाई
चरणरेख रज आंखिन लाई ❀ बनै न कहत प्रीति अधिकाई
कनक[6]बिन्दु दुइ चारिक देखे ❀ राखे शीश सीय सम लेखे
सजल विलोचन हृदय गलानी ❀ कहत सखा सन वचन सुबानी
श्रीहत सीय विरह द्युति हीना ❀ यथा अवध नर नारि मलीना
पिता जनक देउँ पटतर केही ❀ करतल[7] भोग योग जग जेही
श्वशुर भानुकुल भानु भुवालू ❀ जेहि सिहात अमरा[8]वतिपालू
प्राणनाथ रघुनाथ गुसांई ❀ जो बड़ होत सो राम बड़ाई

१ जल २ गंगाजी ३ कामधेनु ४ आज्ञा ५ पता ६ सितारा ७ हथेली ८ इन्द्र ॥

दो॰ पति देवता सुतीयमणि, सीय साथरी देखि।
बिहरत हृदय न हहरि मम, पविते[1] कठिन विशेखि ॥

लालनयोग्य लषण लघु लोने ❋ भे न भाइ अस अहहिं न होने
पुरजन प्रिय पितु मातु दुलारे ❋ सिय रघुवीरहि प्राण पियारे
मृदुमूरति सुकुमार स्वभाऊ ❋ ताति वायु तनु लागि न काऊ
ते वन बसहिं विपति सब भाँती ❋ निंदरेउ[3] कोटि कुलिश यहि छाती
राम जननि जग कीन्ह उजागर ❋ रूपशील गुण सब सुखसागर
पुरजन परिजन गुरु पितु माता ❋ रामस्वभाव सबहिं सुखदाता
बैरिउ राम बड़ाई करहीं ❋ बोलनि मिलनि विनय मनहरहीं
शारद कोटि कोटि शत शेखा ❋ करि न सकहिं प्रभुगुणगण लेखा

दो॰ सुखस्वरूप रघुवंशमणि, मंगल मोद निधान।
ते सोवत कुशडासि महि, विधिगति अति बलवान॥

राम सुना दुख कानन काऊ ❋ जीवन तरु जिमि जुगवत राऊ
पलक नयन फणि[4]मणि जेहि भाँती ❋ जुगवहिं जननि[5] सकल दिन राती
ते अब फिरत विपिन[6] पदचारी ❋ कन्दमूल फल फूल अहारी
धिक कैकेयि अमंगलमूला ❋ भइसि प्राणप्रीतम प्रतिकूला
मैं धिकधिक अघ[7] उदधि[8] अभागी ❋ सब उतपात भयउ जेहि लागी
कुलकलंक करि सृजेउ[2] विधाता ❋ साइँ द्रोह मोहिं कीन्ह कुमाता
सुनि सप्रेम समुझाव निषादू ❋ नाथ करिय कत बादि विषादू
राम तुमहिं प्रिय तुम प्रिय रामहिं ❋ यह निर्दोष दोष विधि वामहिं

छं॰ विधिवामकी करणी कठिन जेहि मातु कीन्हीबावरी।
तेहि राति पुनि पुनि करहिं प्रभु सादर सराहन रावरी॥
तुलसी न तुमसों राम प्रीतम कहतहौं सौंहैं किये।
परिणाम मंगल जानि अपने आनिये धीरज हिये॥

१ फाटत २ बज्र ३ निन्दा की ४ सर्प ५ माता ६ वन ७ पाप ८ समुद्र ६ रक्षा ॥

सो० अन्तरयामी राम, सकुच सप्रेम कृपायतन।
चलिय करिय विश्राम, यह विचार दृढ़ आनिमन॥

सखा वचन सुनि उर धरि धीरा ❀ वास चले सुमिरत रघुवीरा
यह सुधि[1] पाइ नगर नर नारी ❀ चले विलोकन आरत भारी
परदक्षिण करि करहिं प्रणामा ❀ देहिं केकयिहि खोरि निकामा
भरि भरि वारि[2] विलोचन लेहीं ❀ वाम विधातहिं दूषण[3] देहीं
एक सराहहिं भरत सनेहू ❀ कोउ कह नृपति निबाहेउ नेहू
निन्दहिं आपु सराह निषादहि ❀ को कहिसकै विमोह विषादहि
यहिविधि राति लोग सब जागा ❀ भा भिनुसारे[4] उतारा लागा
गुरुहि सुनाव चढ़ाय सुहाई ❀ नई नाव सब मातु चढ़ाई
दण्डचारि महँ भा सब पारा ❀ उतरि भरत तब सबहिं सँभारा

दो० प्रातक्रिया करि मातु पद, वन्दि गुरुहिं शिर नाइ।
आगे किये निषादगण, दीन्हेउ कटक[5] चलाइ॥

किये निषादनाथ अगुआई ❀ मातु पालकी सकल चलाई
साथ बुलाइ भाइ लघु लीन्हा ❀ विप्रन सहित गमन गुरु कीन्हा
आपु सुरसरिहिं कीन्ह प्रणामू ❀ सुमिरेउ लषण सहित सियरामू
गमने भरत पयादेहि पांये ❀ कोतल[6] संग जाहिं डोरिआये
कहहिं सुसेवक बारहिंबारा ❀ होइय नाथ अश्व असवारा
राम पयादेहि पांव सिधाये ❀ हमकहँ रथ गज वाजि बनाये
शिरभरिजाउँ उचित अस मोरा ❀ सबते सेवक धर्म्म कठोरा
देखि भरत गति सुनि मृदुबानी ❀ सब सेवकगण गरहिं गलानी

दो० भरत तीसरे पहर कहँ, कीन्ह प्रवेश प्रयाग।
कहत राम सिय राम सिय, उमँगिउमँगि अनुराग॥

झलका झलकत पांयन कैसे ❀ पंकजकोस[7] ओस कण जैसे
भरत पयादेहि आये आजू ❀ देखि दुखित मुनि सकल[8] समाजू

१ खबर २ जल ३ दोष ४ सबेरा ५ फ़ौज ६ खाली घोड़े ७ कमल का मध्य ८ समस्त॥

खबरि लीन्ह सब लोग नहाये ❀ कीन्ह प्रणाम त्रिवेणी आये
सविधि सितासित नीर नहाने ❀ दिये दान महिसुर[1] सनमाने
देखत श्यामल धवल[3] हिलोरे[4] ❀ पुलक शरीर भरत करजोरे
सकल कामप्रद तीरथराऊ ❀ वेद विदित जग प्रकट प्रभाऊ
मांगौं भीख त्यागि निज धर्मू ❀ आरत काह न करहि कुकर्मू
अस जिय जानि सुजान सुदानी ❀ सफल करहु जग याचक बानी

दो० अर्थ न धर्म न कामरुचि, गति न चहौं निर्वान।
जन्म जन्म रति रामपद, यह वरदान न आन॥

जानहिं राम कुटिल करि मोही ❀ लोग कहैं गुरु साहब द्रोही
सीताराम चरण रति मोरे ❀ अनुदिन[5] बढ़ै अनुग्रह तोरे
जलद जन्म भरि सुरति बिसारे ❀ याचत जल पवि पाहन डारे
चातक रटनि घटे घटि जाई ❀ बढ़े प्रेम सब भांति भलाई
कनकहि बान[6] चढ़ै जिमि दाहे ❀ तिमि प्रीतम पद प्रेम निबाहे
भरत वचन सुनि मांझ त्रिवेनी ❀ भै मृदुवाणि सुमंगल देनी
तात भरत तुम सब विधि साधू ❀ रामचरण अनुराग अगाधू
बादि गलानि करहु मन माहीं ❀ तुम सम रामहिं प्रिय कोउ नाहीं

दो० तनु पुलके हिय हरषिसुनि, वेणि वचन अनुकूल।
भरत धन्य कहि धन्य सुर, हरषित वर्षहिं फूल॥

प्रमुदित तीरथराज निवासी ❀ वैखानस[7] बटु गृही उदासी
कहहिं परस्पर मिलि दश पांचा ❀ भरत सनेह शील शुचिसांचा
सुनत राम गुण ग्राम सुहाये ❀ भरद्वाज मुनिवर पहँ आये
दण्डप्रणाम करत मुनि देखे ❀ मूरतिवन्त भाग्य निज लेखे
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हे ❀ दीन्ह अशीश कृतारथ कीन्हे
आसन दीन्ह नाइ शिर बैठे ❀ चहत सकुचि गृह जनु भरि पैठे
मुनि पूंछब कछु यह बड़ शोचू ❀ बोले ऋषि लखि[8] शील सँकोचू

---

१ श्वेतश्याम २ ब्राह्मण ३ श्वेत ४ लहरैं ५ नितप्रति ६ शोभा ७ वानप्रस्थ ८ देखकर॥

सुनहु भरत हम सब सुधि पाई ❀ विधि[1] करतब पर कछु न बसाई

दो० तुमगलानिजियजनिकरहु, समुझि मातु करतूति।
तात केकयिहि दोष नहिं, गई गिरा मति धूति॥

यहौ कहत भल कहै न कोऊ ❀ लोक वेद बुध सम्मत दोऊ
तात तुम्हार विमल यश गाई ❀ पाइहि लोकहु वेद बड़ाई
लोक वेद सम्मत[3] सब कहई ❀ जेहि पितु राज्य देइ सो लहई
राव सत्यव्रत तुमहिं बुलाई ❀ देत राज्य सुख धर्म बड़ाई
राम गमन वन अनरथ मूला ❀ जो सुनि सकल विश्व भइ शूला
सो भावीवश रानि अयानी ❀ करि कुचाल अन्तहु पछितानी
तहँउँ तुम्हार अल्प अपराधू ❀ कहै सो अधम अयान असाधू
करतेहु राज्य तुमहिं नहिं दोषू ❀ रामहिं होत सुनत सन्तोषू

दो० अबअति कीन्हेउ भरतभल, तुमहिं उचितमत एहु।
सकल सुमंगलमूल जग, रघुवर चरण सनेहु॥

सो तुम्हार धन जीवन प्राना ❀ भूरिभाग्य को तुमहिं समाना
यह तुम्हार आचरज न ताता ❀ दशरथ सुवन[6] राम लघुभ्राता
सुनहु भरत रघुपति मनमाहीं ❀ प्रेमपात्र तुम सम कोउ नाहीं
लषण राम सीतहिं अति प्रीती ❀ निशि सब तुमहिं सराहत बीती
जाना मर्म्म नहात प्रयागा ❀ मगन होहिं तुम्हरे अनुरागा
तुमपर अस सनेह रघुवरके ❀ सुख जीवन जग जस जड़ नरके
यह न अधिक रघुवीर बड़ाई ❀ प्रणत कुटुम्ब पाल रघुराई
तुम तौ भरत मोर मत एहू ❀ धरे देह जनु राम सनेहू

दो० तुम कहँ भरत कलंक यह, हम सब कहँ उपदेश।
रामभक्तिरस सिद्धि हित, भा यह समय गणेश॥

नव विधुँ[7] विमल तात यश तोरा ❀ रघुवर किंकर कुमुद[8] चकोरा
उदित सदा अथइय कबहूंना ❀ घटहि न जग नभ दिनादिन दूना

१ ब्रह्मा २ बुद्धि ३ सलाह ४ संसार ५ धीरज ६ पुत्र ७ चन्द्रमा ८ कुमोदिनी॥

कोक त्रिलोक प्रीति अति करहीं ❀ प्रभु प्रताप रवि छविहि न हरहीं
निशिदिन सुखद सदा सब काहू ❀ ग्रसिहि न केकयि करतब राहू
पूरण राम सुप्रेम पियूषा[1] ❀ गुरु अपमान[2] दोष नहिं दूषा
राम भक्ति अब अमिय अघाहू ❀ कीन्हेउ सुलभ सुधा वसुधा[3]हू
भूप भगीरथ सुरसरि[4] आनी ❀ सुमिरत सकल सुमङ्गलखानी
दशरथ गुण गण वरणि न जाहीं ❀ अधिक कहा जेहिसम जग नाहीं

दो० जासु सनेह सकोच वश, राम प्रकट भे आय।
जे हरहिय नयनन कबहुँ, निरखे नाहिं अघाय॥

कीरति विधु तुम कीन्ह अनूपा ❀ जहँ बस राम प्रेम मृग[5] रूपा
तात गलानि करहु जिय जाये ❀ डरहु दरिद्रहिं पारस पाये
सुनहु भरत हम झूंठ न कहहीं ❀ उदासीन तापस वन रहहीं
सब साधन कर सफल सुहावा ❀ लषण राम सिय दरशन पावा
तेहि फलकर फल दरश तुम्हारा ❀ सहित प्रयाग सुभाग हमारा
भरत धन्य तुम जग यश लयऊ ❀ कहि अस प्रेम मगन मुनि भयऊ
सुनि मुनि वचन सभासद हरषे ❀ साधु सराहि सुमन[6] सुर वरषे
धन्य धन्य ध्वनि गगन[7] प्रयागा ❀ सुनि सुनि भरत मगन अनुरागा

दो० पुलकिगात हिय राम सिय, सजल सरोरुह[8] नैन।
करि प्रणाम मुनिमंडलिहिं, बोले गदगद बैन॥

मुनि समाज अरु तीरथराजू ❀ सांचेहु शपथ[9] अघाइ अकाजू
यहि थल जो कछु कहिय बनाई ❀ त्यहि सम अधिक न अघ अधमाई
तुम सर्वज्ञ कहौं सतिभाऊ ❀ उर अन्तरयामी रघुराऊ
म्वहिं न मातु करतब कर शोचू ❀ नहिं दुख जिय जग जानहिं पोचू
नाहिं न डर बिगरहि परलोकू ❀ पितहु मरेकर नाहिं न शोकू
सुकृत सुयश भरि भुवन सुहाये ❀ लक्ष्मण रामसरिस सुत [illegible]
राम विरह तजि तनु क्षणभंगू ❀ भूप शोचकर कवन प्रसंगू

---

१ अमृत २ निन्दा ३ पृथ्वी ४ गङ्गाजी ५ हरिण ६ पुष्प ७ आकाश ८ कमल ९ [illegible]॥

राम लषण सिय बिनु पग पनहीं ❀ करि मुनिवेष फिरहिं वनवनहीं

दो० अजिंनवसनफलअंशनमहि,शयनडासिकुशपात।
बसि तरुतर नित सहत दुख, हिम तप वरषा वात॥

यहि दुखदाह दहै नित छाती ❀ भूंख न वासर नींद न राती
यहि कुरोग कर ओषधि नाहीं ❀ शोधेउँ सकल विश्व मनमाहीं
मातु कुमति बढ़ई अघमूला ❀ तेहि हमार हित कीन्ह बसूला
कलिकुकाठगढ़ि कठिन कुयन्त्रू ❀ गाड़ि अवध पढ़ि कठिन कुमन्त्रू
मोहिंलगि यह कुठाट जेहिं ठाटा ❀ घालिसि सब जग बारहबाटा
मिटै कुयोग राम फिरि आये ❀ बसै अवध नहिं आन उपाये
भरत वचन सुनि मुनि सुख पाई ❀ सबहिं कीन्ह बहुभाँति बड़ाई
तात करहु जनि शोच विशेखी ❀ सब दुख मिटिहि रामपद देखी

दो० करि प्रबोधं मुनिवर कहेउ, अतिथि प्राणप्रिय होहु।
कन्दमूल फल फूल हम, देहिं लेहु करि छोहु॥

सुनि मुनिवचन भरतहिय शोचू ❀ भयउ कुअवसर कठिन सँकोचू
जानि गरू गुरु गिरां बहोरी ❀ चरण वन्दि बोले करजोरी
शिरधरि आयसु करिय तुम्हारा ❀ परमधर्म यह नाथ हमारा
भरत वचन मुनिवर मन भाये ❀ शुचि सेवक तब निकट बुलाये
चाहिय कीन्ह भरत पहुनाई ❀ कन्दमूल फल आनहु जाई
भले नाथ कहि तिन शिर नाये ❀ प्रमुदित निज निज काज सिधाये
मुनिहिं शोच पाहुन बड़ नेवता ❀ तसपूजा चाहिय जस देवता
सुनिऋधिसिधि अणिमादिकआई ❀ आयसु होइ सो करैं गुसाईं

दो० राम विरंह व्याकुल भरत, सानुज सकल समाज।
पहुनाई करि हरहु श्रम, कहेउ मुदितं मुनिराज॥

ऋधि सिधि शिरधरि मुनिवर बानी ❀ बड़ भागिनि आपुहि अनुमानी
कहहिं परस्पर सिधि समुदाई ❀ अतुलितं अतिथि राम लघुभाई

१ मृगचर्म २ भोजन ३ दिन ४ समझाय ५ दया ६ वाणी ७ विछोह ८ प्रसन्न ९ बेप्रमाण॥

मुनिपदवन्दि करिय सोइ आजू ❀ होइ सुखी सब राज समाजू
अस कहि रुचिर रचे गृह[1] नाना ❀ जे विलोकि बिलखाहिं विमाना
भोग विभूति भूरि भरि राखे ❀ देखत जिनहिं अमर[2] अभिलाखे
दासी दास साजि सब लीन्हे ❀ जुगवत रहहिं मनहिं मन दीन्हे
सब समाज सजि सिधि पलमाहीं ❀ जो सुख सपनेहुँ सुरपुर नाहीं
प्रथमहिं वास दिये सब केही ❀ सुन्दर सुखद यथारुचि जेही

दो० बहुरि सपरिजन भरतकहँ, ऋषिआयसु[3] अस दीन्ह।
विधिविस्मयदायकविभव[4],मुनिवर तपबल कीन्ह॥

मुनि प्रभाव जब भरत विलोका ❀ सब लघु लगे लोकपति लोका
सुखसमाज नहिं जाइ बखानी ❀ देखत विरति बिसारहिं ज्ञानी
अशन शयन शुचि वसन विताना ❀ वन वाटिका विहँग मृग नाना
सुरभि फूल फल अमिय समाना ❀ विमल जलाशय विविध विधाना
अशन[5] पान शुचि अमल अमीसे ❀ देखि लोक सकुचात जमीसे
सुरसुरभी[6] सुरतरु सबहीके ❀ लखि अभिलाष सुरेश शचीके
ऋतु वसन्त बह त्रिविध बयारी ❀ सब कहँ सुलभ पदारथ चारी
स्रक[7] चन्दन वनितादिक भोगा ❀ देखि हर्ष विस्मय सब लोगा

दो० सम्पति चकई भरत चक, मुनि आयसु खेलवार।
तेहिनिशि आश्रमपींजरा, राखे भा भिनुसार॥

कीन्ह निमज्जन तीरथराजा ❀ नाइ मुनिहि शिर सहित समाजा
ऋषिआयसु अशीश शिर राखी ❀ करि दण्डवत विनय बहु भाखी
पथ गथ कुशल साथ सब लीन्हे ❀ चले चित्रकूटहिं चित दीन्हे
राम सखा कर दीन्हे लागू ❀ चलत देहधरि जनु अनुरागू
नहिं पदत्राण[8] शीश नहिं छाया ❀ प्रेम नेम व्रत धर्म्म अमाया
लषण राम सिय पंथ[9] कहानी ❀ पूछत सखहि कहत मृदुबानी
रामवास थल विटप विलोके ❀ उर अनुराग रहत नहिं रोके

१ घर २ देवता ३ आज्ञा ४ ऐश्वर्य ५ भोजन ६ कामधेनु ७ माला ८ जूता ९ रास्ता॥

देखि दशा सुर वर्षहिं फूला ❁ भइ मृदु[1] महि मगु मंगलमूला

दो० किये जाहिं छाया जलद[2], सुखद बहत वर वात[3]।
तस मगु भयउ न राम कहँ, जस भा भरतहि जात॥

जड़ चेतन मग जीव घनेरे ❁ जे चितये प्रभु जिन प्रभु हेरे
ते सब भये परमपद योगू ❁ भरत दरश मेटा भवरोगू
यह बड़ि बात भरत की नाहीं ❁ सुमिरत जिन्हैं राम मन माहीं
बारेकँ[4] राम कहत जग जेऊ ❁ होत तरण तारण नर तेऊ
भरत रामप्रिय पुनि लघु भ्राता ❁ कस न होइ मगु मंगलदाता
सिद्ध साधु मुनिवर अस कहहीं ❁ भरतहिं निरखि हर्ष हिय लहहीं
देखि प्रभाव सुरेशहि शोचू ❁ जग भल भलहि पोच कह पोचू
गुरुसन कहेउ करहु प्रभु सोई ❁ रामहिं भरतहिं भेंट न होई

दो० राम सकोची प्रेमवश, भरत सप्रेम पयोधि।
बनी बात बिगरन चहत, करिय यतन छलशोधि॥

वचन सुनत सुरगुरु मुसकाने ❁ सहस नयन बिनु लोचन जाने
कह गुरु बादि चोभ छलछांडू ❁ इहां कपट करि होइहि भांडू
मायापति सेवक सन माया ❁ करियत उलटि परे सुरराया
तब कछु कीन्ह राम रुख जानी ❁ अब कुचाल करि होइहि हानी
सुनु सुरेश[5] रघुनाथ स्वभाऊ ❁ निज अपराध रिसाहिं न काऊ
जो अपराध भक्त कर करई ❁ राम रोष पावक[6] सो जरई
लोकहु वेद विदितँ[7] इतिहासा ❁ यह महिमा जानहिं दुर्वासा
भरत सरिस को राम सनेही ❁ जग जपु राम राम जपु जेही

दो० मनहुँ न आनिय अमरपति[8], रघुपति भक्त अकाज।
अयश लोक परलोक दुख, दिनदिन शोकसमाज॥

सुनु सुरेश उपदेश[9] हमारा ❁ रामहिं सेवक परम पियारा
मानत सुख सेवक सेवकाई ❁ सेवक वैर वैर अधिकाई

---

१ कोमल २ बादल ३ हवा ४ एक बार ५ इन्द्र ६ अग्नि ७ जाना ८ देवेन्द्र ९ शिक्षा॥

यद्यपि सम नहिं राग न रोषू ❁ गहहि न पाप पुण्य गुण दोषू
कर्म प्रधान विश्व करि राखा ❁ जो जस करै सो तस फल चाखा
तदपि करहिं सम विषम विहारा ❁ भक्त अभक्त हृदय अनुसारा
अगुण अलेख अमान एकरस ❁ राम सगुण भये भक्त प्रेमबस
राम सदा सेवक रुचि राखी ❁ वेद पुराण साधु सब साखी
अस जिय जानि तजहु कुटिलाई ❁ करहु भरत पद प्रीति सुहाई

दो० रामभक्त परहित निरत, परदुख दुखी दयाल।
भक्तशिरोमणि भरत ते, जनि डरपहु सुरपाल॥

सत्यसन्ध प्रभु सुर[२] हितकारी ❁ भरत राम आयसु[३] अनुसारी
स्वारथ विवश विकल तुम होहू ❁ भरत दोष नहिं राउर मोहू
सुनि सुरवर सुरगुरु वरबानी ❁ भा प्रबोध मन मिटी गलानी
वर्षि प्रसून[४] हर्षि सुरराऊ ❁ लगे सराहन भरत स्वभाऊ
यहि विधि भरत चले मगुजाहीं ❁ दशा देखि मुनि सिद्ध सिहाहीं
जबहिं राम कहि लेहिं उसासा ❁ उमँगत प्रेम मनहुँ चहुँपासा
द्रवहिं वचन सुनि कुलिश पखाना ❁ पुरजन प्रेम न जाइ बखाना
बीच वास करि यमुनहिं आये ❁ निरखि नीर[५] लोचन जलछाये

दो० रघुवर वर्ण विलोकि वर, वारि समेत समाज।
होत विरहवारिधि मगन, चढ़े विवेक जहाज॥

यमुनतीर तेहि दिन कर वासू ❁ भयउ समय सम सबहि सुपासू
रातिहि घाट घाट की तरणी ❁ आई अगणित[६] जाइँ न वरणी
प्रात पार भे एकहि खेवा ❁ तोषे राम सखा करि सेवा
चले नहाइ यमुन शिरनाई ❁ साथ निषाद[७]नाथ लघु भाई
आगे मुनिवर वाहन आछे ❁ राज समाज जाय सब पाछे
तेहि पाछे दोउ बन्धु पयादे ❁ भूषण वसन वेष सुठि[८] सादे
सेवक सुहृद सचिव[९]सुत साथा ❁ सुमिरत लषण सीय रघुनाथा

१ कुटिलता २ देवता ३ आज्ञा ४ फूल ५ जल ६ बे प्रमाण ७ गुह ८ सुन्दर ९ अभिनन्दन॥

जहँ जहँ राम वास विश्रामा ❀ तहँ तहँ करहिं सप्रेम प्रणामा

दो० मगुवासी नरनारि मुनि, धाम काम तजि धाइ ।
देखि स्वरूप सनेहवश, मुदित जन्म फल पाइ ॥

कहहिं सप्रेम एक इक पाहीं ❀ राम लषण सखि होहिं कि नाहीं
वयं[1] वपु[2] वसन रूप सोइ आली ❀ शील सनेह सरिस समचाली
वेष न सो सखि सीय न संगा ❀ आगे अनी[3] चली चतुरंगा
नहिं प्रसन्नमुख मानस खेदा ❀ सखि सन्देह होत यहि भेदा
तासु तर्क तियगण मन मानी ❀ कहहिं सकल तोहिंसम न सयानी
तेहि सराहि वाणी फुर पूजी ❀ बोली मधुर वचन तिय दूजी
कहि सप्रेम सब कथा प्रसंगू ❀ जेहि विधि राम राज रसभंगू
भरतहि बहुरि सराहन लागी ❀ शील सनेह सुभाव सुभागी

दो० चलत पयादे खात फल, पिता दीन्ह तजि राज ।
जात मनावन रघुवरहिं, भरत सरिस[4] को आज ॥

भायप भक्ति भरत आचरणू ❀ कहत सुनत दुख दूषण हरणू
जो कछु कहिय थोर सखि सोई ❀ रामबन्धु अस काहे न होई
तब सब सानुज भरतहिं देखे ❀ भये धन्य युवती जन लेखे
सुनि गुण देखि दशा पछिताहीं ❀ केकयि जननि योग्य सुत नाहीं
कोउ कह दूषण रानिहु नाहिन ❀ विधि सब भांति हमहिं जो दाहिन
कहँ हमलोग वेदविधि हीनी ❀ लघुकुल तिय करतूति मलीनी
बसहिं कुदेश कुगांव कुठामा ❀ कहँ यह दरश पुण्य परिणामा
अस अनंद अचरज प्रति ग्रामा[5] ❀ जनु मरुभूमि[6] कल्पतरु जामा

दो० भरतदरश देखत खुलेहु, मगुलोगन कर भाग ।
जनु सिंहलवासिन भयउ, विधिवश[7] सुलभ प्रयाग ॥

निजगुण सहित रामगुणगाथा[8] ❀ सुनत जाहिं सुमिरत रघुनाथा
तीरथ मुनि आश्रम सुरधामा[9] ❀ निरखि निमज्जहिं करहिं प्रणामा

---

१ उम्र २ शरीर ३ फ़ौज ४ समान ५ नगर ६ रेतीलीपृथ्वी ७ भाग्यवश ८ कथा ९ देव-मंदिर ॥

मनहीं मन मांगहिं वर येहू ❀ सीय राम पद पद्म सनेहू
मिलहिं किरात कोल वनवासी ❀ वैखानस वटु यती उदासी
करि प्रणाम पूंछहिं जेहि तेही ❀ केहि वन राम लषण वैदेही
ते प्रभु समाचार सब कहहीं ❀ भरतहिं देखि जन्मफल लहहीं
जे जन कहहिं कुशल हम देखे ❀ ते प्रिय राम लषण सम पेखे
यहि विधि बूझत सबहि सुबानी ❀ सुनत राम वनवास कहानी

दो० तेहि वासर[2] बसि प्रातही, चले सुमिरि रघुनाथ।
राम दरश की लालसा[3], भरत सरिस सब साथ॥

मङ्गल शकुन होहिं सब काहू ❀ फरकहिं सुखद विलोचन बाहू
भरतहिं सहित समाज उछाहू ❀ मिलिहहिं राम मिटहिं दुखदाहू
करत मनोरथ जस जिय जाके ❀ जाहिं सनेह सुरां[4] सब छाके
शिथिल अंग मगु पगडग डोलहिं ❀ विह्वल वचन प्रेमवश बोलहिं
रामसखा तेहि समय दिखावा ❀ शैल शिरोमणि सहजसुहावा
जासु समीप सरितपय[5] तीरा ❀ सीय समेत बसहिं दोउ वीरा
देखि करहिं सब दण्डप्रणामा ❀ कहि जय जानकि जीवनरामा
प्रेम मगन अस राजसमाजू ❀ जनु फिरि अवध चले रघुराजू

दो० भरत प्रेम तेहि समय जस, तस कहि सकै न शेषु।
कविहि अगम जिमि ब्रह्मसुख, अहमममलिनजनेषु॥

सकल सनेह शिथिल रघुवरके ❀ गये कोस दुइ दिनकर ढरके
जल थल देखि चले निशि बीते ❀ कीन्ह गमन रघुनाथ पिरीते
उमा राम रजनी[6] अवशेखा[7] ❀ जागीं सीय सपन अस देखा
सहित समाज भरत जनु आये ❀ नाथ वियोग ताप तनु[8] ताये
सकल मलिनमन दीन दुखारी ❀ देखी सासु आन अनुहारी
सुनि सिय सपन भरे जल लोचन ❀ भये शोचवश शोक विमोचन
लषण सपन यह नीक न होई ❀ कठिन कुचाह सुनाइहि कोई

१ कमल २ दिन ३ इच्छा ४ मदिरा ५ पयस्विनी ६ रात्रि ७ बाक़ी ८ शरीर॥

अस कहि बन्धुसमेत नहाने ❀ पूजि पुरोरि[1] साधु सनमाने

छं० सनमानि सुरमुनि वन्दि बैठे उतर दिशि देखत भये।
नभ धूरि खग मृग भूरि भागे विकल प्रभु आश्रम गये॥
तुलसी उठे अवलोकि कारण काह चित चकित रहे।
सब समाचार किरात कोलन आइ तेहि अवसर कहे॥

सो० सुनत सुमंगल बैन, मन प्रमोद तनु पुलक भर।
शरद सरोरुह[2] नैन, तुलसी भरे सनेह जल॥

बहुरि शोचवश भे सियरमनू ❀ कारण कवन भरत आगमनू
एक आय अस कहा बहोरी[3] ❀ सेनं[4] संग चतुरंग न थोरी
सो सुनि रामहिं भा अति शोचू ❀ इत पितु वच उत बन्धु सँकोचू
भरत स्वभाव समुझि मनमाहीं ❀ प्रभु चित हित थिति पावत नाहीं
समाधान तब भा यह जाने ❀ भरत कहे महँ साधु सयाने
लषण लखेउ प्रभु हृदय खँभारू ❀ कहत समय सम नीति विचारू
बिनु पूछे कछु कहउँ गुसांई ❀ सेवक समयँ[5] न ढीठ ढिठाई
तुम सर्वज्ञ शिरोमणि स्वामी ❀ आपन समुझि कहौं अनुगामी

दो० नाथ सुहृद सुठि सरल चित, शील सनेह निधान।
सबपर प्रीति प्रतीति जिय, जानिय आपु समान॥

विषयी जीव पाइ प्रभुताई ❀ मूढ़ मोह वश होहिं जनाई
भरत नीतिरत साधु सुजाना[6] ❀ प्रभुपद प्रेम सकल जग जाना
तेऊ आजु राजपद पाई ❀ चले धर्म मर्य्याद मिटाई
कुटिल कुबन्धु कुअवसर ताकी ❀ जानि राम वनवास इकाकी
करि कुमंत्र मन साजि समाजू ❀ आये करन अकंटक राजू
कोटि प्रकार कलपि कुटिलाई ❀ आये दलं[7] बटोरि दोउ भाई
जो जिय होति न कपट कुचाली ❀ केहि सुहात रथ वाजिगंजाली[8]

१ शम्भु २ कमल ३ फिरि ४ फ़ौज ५ वक्त ६ चतुर ७ फ़ौज ८ घोड़े-हाथियों की पाँति॥

भरतहि दोष देइ को जाये ❀ जग बौराइ राजपद पाये

दो० शशि गुरुतियगामी नहुष, चढ़े भूमिसुर[1] यान।
लोक वेदते विमुख भा, अधम को वेणु समान॥

सहसबाहु सुरनाथ त्रिशंकू ❀ केहि न राजमद दीन्ह कलंकू
भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ ❀ रिपु[2] रण रंच न राखब काऊ
एक कीन्ह नहिं भरत भलाई ❀ निदरे राम जानि असहाई
समुझिपरिहि सो आजु विशेखी ❀ समर[3] सरोष रामरुख देखी
इतना कहत नीतिरस भूला ❀ रणरस विटप[4] पुलकि जनु फूला
प्रभु पद वन्दि शीश रजराखी ❀ बोले सत्य सहज बलभाखी
अनुचित नाथ न मानब मोरा ❀ भरत हमहिं उपचार[5] न थोरा
कहँलगि सहिय रहिय रिसमारे ❀ नाथ साथ धनु हाथ हमारे

दो० क्षत्रिजाति रघुकुलजनम, राम अनुज जगजान।
लातहु मारे चढ़त शिर, नीच को धूरि समान॥

उठि करजोरि रजायसु मांगा ❀ मनहुँ वीररस सोवत जागा
बांधि जटा शिर कसि कटि भाथा[6] ❀ साजि शरासन[7] शायक हाथा
आजु राम सेवक यश लेऊं ❀ भरतहिं समर सिखावन देऊं
राम निरादर कर फल पाई ❀ सोवहु समर सेज दोउ भाई
आइ बना भल सकल समाजू ❀ प्रकट करौं रिस पाछिल आजू
जिमि करिनिकर दलै मृगराजू[8] ❀ लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू
तैसाहि भरतहिं सेन समेता ❀ सानुज निदरि निपातौं खेता
जो सहाय कर शंकर आई ❀ तदपि हतौं रण राम दुहाई

दो० अति सरोष माषे[9] लषण, लखि सुनि शपथप्रमान।
सभय लोकसब लोकपति, चाहत भभरि भगान॥

जग भै मगन गगन भै बानी ❀ लषण बाहुबल विपुल बखानी
तात प्रताप प्रभाव तुम्हारा ❀ को कहिसकै को जाननहारा

---

१ ब्राह्मण २ शत्रु ३ युद्ध ४ वृक्ष ५ उपाय ६ तरकस ७ धनुष ८ सिंह ९ क्रोध किया ॥

अनुचित उचित काज कछु होई ❀ समुझि करिय भल कह सब कोई
सहसा करि पाछे पछिताहीं ❀ कहहिं वेद बुध[1] ते बुध नाहीं
सुनि सुर वचन लषण सकुचाने ❀ राम सीय सादर सनमाने
कही तात तुम नीति सुहाई ❀ सब ते कठिन राजमद भाई
जो अँचवत मातहिं[2] नृप तेई ❀ नाहिं न साधु सभा जिन सेई
सुनहु लषण भल भरत सरीखा ❀ विधिप्रपंच महँ सुना न दीखा

दो॰ भरतहि होइ न राजमद, विधि हरि हर पदपाइ।
कबहुँ कि कांजी[3]शीकरनि, क्षीर सिन्धु विनशाइ॥

तिमिर[4] तरुण[5] तरणिहि[6] सक गिलई ❀ गगन मगनमकु मेघहि मिलई
गोपद जल बूड़हिं घटयोनी ❀ सहज क्षमा बरु छांड़हिं क्षोनी
मशक फूंक बरु मेरु उड़ाई ❀ होय न नृपमद भरतहिं भाई
लषण तुम्हारि शपथ पितु आना ❀ शुचि सुबन्धु नहिं भरत समाना
सगुण क्षीर[7] अवगुण जल ताता ❀ मिले रचे परपंच विधाता
भरत हंस रविवंस तड़ागा ❀ जन्मि कीन्ह गुणदोष विभागा
गहिगुण पय तजि अवगुण वारी ❀ निजयश जगत कीन्ह उजियारी
कहत भरत गुण शील स्वभाऊ ❀ प्रेम पयोधि[8] मगन रघुराऊ

दो॰ सुनि रघुवर वाणी विबुध, देखि भरत पर हेतु।
लगे सराहन सहसमुख, प्रभुको कृपानिकेतु॥

जो न होत जग जन्म भरतको ❀ सकल धर्म धुरि धरणि धरतको
कविकुल अगम भरत गुणगाथा ❀ को जानै तुम बिनु रघुनाथा
लषण राम सिय सुनि सुरबानी ❀ अतिसुख लह्यो न जाइ बखानी
इहां भरत सब सहित सहाये ❀ मन्दाकिनी पुनीत नहाये
सरित समीप राखि सब लोगा ❀ मांगि मातु गुरु सचिव नियोगा
चले भरत जहँ सिय रघुराई ❀ साथ निषाद[9]नाथ लघुभाई
समुझि मातु करतब सकुचाहीं ❀ करत कुतर्क कोटि मनमाहीं

१ पण्डित २ मस्त हों ३ सिरका ४ अँधेरा ५ युवा ६ सूर्य ७ दूध ८ समुद्र ९ गुह ॥

राम लषण सिय सुनि मम नाऊं ❀ उठि जन अनत जाहिं तजि ठाऊं
दो० मातुमते महँ जानि मोहिं, जो कछु करहिं सो थोर।
अघ[१]अवगुण तजि आदरहिं, समुझि आपनी ओर॥
जो परिहरहिं मलिन मन जानी ❀ जो सनमानहिं सेवक मानी
मोरे शरण राम की पनहीं ❀ राम सुस्वामि दोष सब जन[२]हीं
जग यशभाजन चातक मीना[३] ❀ नेम प्रेम निज निपुण नवीना
अस मन गुनत चले मग[४]जाता ❀ सकुचि सनेह शिथिल सब गाता
फेरति मनहुँ मातु कृत खोरी ❀ चलत भक्तिबल धीरज धोरी
जब समुझहिं रघुनाथ स्वभाऊ ❀ तब पथ परत उतावल पाऊ
भरत दशा तेहि अवसर कैसी ❀ जल प्रवाह जल[५]अलिगति जैसी
देखि भरत कर शोच सनेहू ❀ भा निषाद तेहि समय विदेहू
दो० लगे होन मंगल शकुन, सुनि गुनि कहत निषाद।
मिटिहि शोच होइहि हरष, पुनि परिणाम विषाद॥
सेवक वचन सत्य सब जाने ❀ आश्रम निकट जाय नियराने
भरत दीख वन शैल समाजू ❀ मुदित क्षुधित जनु पाइ सुनाजू
ईति भीति जनु प्रजा दुखारी ❀ त्रिविध ताप पीड़ित ग्रहभारी
जाइ सुराज सुदेश सुखारी ❀ भई भरत गति तेहि अनुहारी
राम वास वन सम्पति भ्राजा ❀ सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा
सचिव विराग विवेक नरेशू ❀ विपिन[६] सुहावन पावन देशू
भट यम नियम शैल रजधानी ❀ शांति सुमति शुचि सुन्दर रानी
सकल अंग सम्पन्न सुराऊ ❀ रामचरण आश्रित चितचाऊ
दो० जीति मोह महि[८]पाल दल, सहित विवेक भुवाल।
करत अकण्टक राजपुर, सुख सम्पदा सुकाल॥
वन प्रदेश मुनि वास घनेरे ❀ जनु पुर नगर गांव गण खेरे
विपुल विचित्र विहँग[९] मृगनाना ❀ प्रजा समाज न जाइ बखाना

१ पाप २ दास को ३ मछली ४ रास्ता ५ भ्रमर ६ वन ७ युद्ध ८ भूपाल ९ पक्षी॥

खगंहा करि हरि[2] बाघ वराहा ❀ देखि महिष वृक साज सराहा
वैर विहाय चरहिं इकसंगा ❀ जहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरंगा
झरना झरहिं मत्त गज गाजहिं ❀ मनहुँ निशान विविधविधि बाजहिं
चक चकोर चातक शुक पिकगन ❀ कूजत मंजु मराल मुदित मन
अलिगण गावत नाचत मोरा ❀ जनु सुराज मंगल चहुँओरा
बेलि विटप[3] तृण सफल सफूला ❀ सब समाज मुद मङ्गल मूला

दो० राम शैलें शोभा निरखि, भरत हृदय अतिप्रेम।
तापस तपफल पाइ जिमि, सुखी सिराने नेम॥

तब केवट ऊंचे चढ़ि धाई ❀ कहा भरत सन भुजा उठाई
नाथ देखिये विटप विशाला ❀ पाकर जम्बु रसाल[5] तमाला
तिन तरुवरन मध्य वट सोहा ❀ मंजु विशाल देखि मन मोहा
नील सघन पल्लव फल लाला ❀ अविचल छांह सुखद सब काला
मानहुँ तिमिर[6] अरुण मयरासी ❀ विरची विधि सकेलिसुषमासी
तेहि तरु सरित समीप गोसांई ❀ रघुवर पर्णकुटी तहँ छाई
तुलसी तरुवर विविध सुहाये ❀ कहुँ कहुँ सिय कहुँ लषण लगाये
वट छाया वेदिका बनाई ❀ सिय निज पाणिसरोज सुहाई

दो० जहँ बैठें मुनिगण सहित, नित सिय राम सुजान।
सुनहिं कथा इतिहास सब, आगम निगम पुरान॥

सखा वचन सुनि विटप निहारी ❀ उमँगे भरत विलोचन वारी
करत प्रणाम चले दोउ भाई ❀ कहत प्रीति शारद सकुचाई
हर्षहिं निरखि राम पद अंकों[7] ❀ मानहुँ पारस पायहु रंका[8]
रज शिरधरि हिय नयन लगावहिं ❀ रघुवर मिलनसरिस सुख पावहिं
देखि भरतगति अकथ[9] अतीवा ❀ प्रेममगन खग मृग जड़जीवा
सखहि सनेह विवश मग भूला ❀ कहि सुपंथ सुर वर्षहिं फूला
निरखि सिद्ध साधक अनुरागे ❀ सहज सनेह सराहन लागे

---

१ गैंड़ा २ सिंह ३ वृक्ष ४ पर्वत ५ आम ६ अँधेरा ७ चिह्न ८ निर्धनी ९ न कहने योग्य॥

होत न भूतलं भाव भरतको ❀ अचर सचर चर अचर करत को
दो० प्रेम अमियं मन्दर विरह, भरत पयोधि गँभीर।
मथि प्रकटे सुर साधुहित, कृपासिन्धु रघुवीर॥
सखा समेत मनोहर जोटा ❀ लखेउ न लषण सघन वनओटा
भरत दीख प्रभु आश्रम पावन ❀ सकल सुमंगल सदन सुहावन
करत प्रवेश मिटा दुखदावा ❀ जनु योगी परमारथ पावा
देखे लषण भरत प्रभु आगे ❀ पूछत वचन कहत अनुरागे
शीश जटा कटि मुनिपट बांधे ❀ तूर्ण कसे कर शर धनु कांधे
वेदी पर मुनि साधु समाजू ❀ सीय सहित राजत रघुराजू
वलकलंवसन जटिल तनु श्यामा ❀ जनु मुनिवेष कीन्ह रतिकामा
कर कमलन धनु शायक फेरत ❀ जीकी जरनि हरत हँसि हेरत
दो० लसत मंजु मुनिमण्डली, मध्य सीय रघुचन्द।
ज्ञानसभा जनु तनु धरे, भक्ति सच्चिदानन्द॥
सानुज सखा समेत मगन मन ❀ बिसरे हर्षं शोकं सुख दुखगन
पाहि नाथ कहि पाहि गोसाईं ❀ भूतल परे लकुट की नाईं
वचन सप्रेम लषण पहिंचाने ❀ करत प्रणाम भरत जिय जाने
बन्धु सनेह सरस यहि ओरा ❀ उत साहिब सेवा बरजोरा
मिलि न जाइ नहिं गुदरत बनई ❀ सुकवि लषण मनकी गति भनई
रहे राखि सेवा पर भारू ❀ चढ़ी चङ्ग जनु खैंच खिलारू
कहत सप्रेम नाइ महिमाथा ❀ भरत प्रणाम करत रघुनाथा
उठे राम सुनि प्रेम अधीरा ❀ कहुँ पट कहुँ निषंगं धनु तीरा
दो० बरबस लिये उठाय उर, लाये कृपानिधान।
भरतरामकी मिलनि लखि, बिसरेउ सबहिं अपान॥
मिलनि प्रीति किमि जाइ बखानी ❀ कविकुल अगम कर्म मन बानी
परम प्रेम पूरण दोउ भाई ❀ मनबुधि चित अहमिति बिसराई

१ पृथ्वी २ अमृत ३ समुद्र ४ तरकस ५ छालके कपड़े ६ खुशी ७ दुःख ८ पतंग ९ तरकस॥

कहहु सो प्रेम। प्रकट को करई ❀ केहि छाया कविमति अनुसरई
कविहि अर्थ आखर बलसांचा ❀ अनुहर तालगतिहि नट नाचा
अगम सनेह भरत रघुवर को ❀ जहँ न जाइ मन विधि हरिहरको
सो मैं वरणि कहौं केहि भांती ❀ बाजु सुराग कि गांड़र तांती
मिलनि विलोकि भरत रघुवरकी ❀ सुरगण सभय धुकधुकी धरकी
समुझाये सुरगुरु जड़ जागे ❀ वरषि प्रसून प्रशंसन लागे

दो० मिलि सप्रेम रिपुसूदनहिं, केवट भेंटे राम।
भूरि भाग्य भेंटे भरत, लक्ष्मण करत प्रणाम॥

भेंटेउ लषण ललकि लघुभाई ❀ बहुरि निषाद लीन्ह उरलाई
पुनि मुनिगण दोउ भाइन वन्दे ❀ अभिमत[२] आशिष पाइ अनन्दे
सानुज भरत उमँगि अनुरागा ❀ धरि शिर सियपद पद्म[३] परागा
पुनि पुनि करत प्रणाम उठाये ❀ सिय करकमल परसि बैठाये
सीय अशीश दीन्ह मनमाहीं ❀ मगन सनेह देह सुधि नाहीं
सबविधि सानुकूल[४] लखि सीता ❀ भे अशोच उर अपडर बीता
कोउ कछु कहै न कोउ कछु पूछा ❀ प्रेम भरा मन निज गति छूछा
तेहि अवसर[५] केवट धीरज धरि ❀ जोरि पाणि विनवत प्रणाम करि

दो० नाथ साथ मुनिनाथ के, मातु सकल पुरलोग।
सेवक सेनप सचिव सब, आये विकल वियोग॥

शीलसिन्धु सुनि गुरु आगमनू ❀ सीय समीप राखि रिपुदमनू[६]
चले सवेग राम तेहि काला ❀ धीर धर्म्मधुर दीनदयाला
गुरुहि देखि सानुज अनुरागे ❀ दण्डप्रणाम करन प्रभु लागे
मुनिवर[७] धाइ लिये उर लाई ❀ प्रेम उमँगि भेंटे दोउ भाई
प्रेम पुलकि केवट कहि नामू ❀ कीन्ह दूरिते दण्डप्रणामू
रामसखा ऋषि बरबस भेंटे ❀ जनु महि लुटत सनेह समेटे
रघुपति भक्ति सुमंगलमूला ❀ नभ[८] सराहि सुर वरषहिं फूला

१ भेड़ २ वाञ्छित ३ कमल ४ प्रसन्न ५ समय ६ शत्रुघ्न ७ वशिष्ठजी ८ आकाश॥

यहिसम निपट नीच कोउ नाहीं ❀ बड़ वशिष्ठ सम को जगमाहीं
दो० जेहि लखि लषणहुतेअधिक, मिले मुदित मुनिराउ।
सो सीतापति भजन को, प्रकट प्रताप प्रभाउ॥
आरत लोग राम सब जाना ❀ करुणाकर सुजान[1] भगवाना
जो जेहि भांति रहा अभिलाखी ❀ तेहि तेहिकी तैसी रुचि राखी
सानुज मिलि पलमहँ सब काहू ❀ कीन्ह दूरि दुख दारुण दाहू
यह बड़िबात राम कै नाहीं ❀ जिमि घटकोटि एकरवि[2] छाहीं
मिलि केवटहि उमँगि अनुरागा ❀ पुरजन सकल सराहहिं भागा
देखी राम दुखित महतारी ❀ जनु सुबेलि अवली[3] हिमँमारी[4]
प्रथम राम भेंटे कैकेयी ❀ सरलस्वभाव भक्ति मति भेयी
पगपरि कीन्ह प्रबोध बहोरी ❀ कालकर्म्म विधिशिर धरि खोरी
दो० भेंटे रघुवर मातु सब, करि प्रबोध परितोष।
अम्ब ईश आधीन जग, काहु न देइय दोष॥
गुरुतिय पद वन्दे दोउ भाई ❀ सहित विप्रतिय जे सँग आई
गङ्ग गौरिसम सब मनमानी ❀ देहिं अशीश मुदित मृदुबानी
गहिपद लगे सुमित्रा अङ्का ❀ जनु भेंटी सम्पति अति रङ्का[5]
पुनि जननीचरणन दोउ भ्राता ❀ परे प्रेम व्याकुल सब गाता
अति अनुराग अम्ब[6] उरलाये ❀ नयन सनेह सलिल[7] नहवाये
तेहि अवसर कर हर्ष विषादू ❀ किमि कवि कहै मूक[8] जिमि स्वादू
मिलि जननिहिं सानुज रघुराऊ ❀ गुरुसन कहेउ कि धारिय पाऊ
पुरजन पाइ मुनीश नियोगू ❀ जल थल तकि तकि उतरे लोगू
दो० महिसुर[9] मंत्री मातु गुरु, गने लोग लिय साथ।
पावन आश्रम गमन किय, भरत लषण रघुनाथ॥
सीय आइ मुनिवर पग लागी ❀ उचित अशीश लही मनमांगी
गुरुपत्निहि मुनितियन समेता ❀ मिलि सप्रेम कहि जाइ न जेता

१ चतुर २ सूर्य ३ पंक्ति ४ पाला ५ गरीब ६ माता ७ जल ८ गूंगा ९ ब्राह्मण॥

वन्दि वन्दि पद सिय सबहीके ❀ आशिष वचन लहे प्रिय जीके
सासु सकल जब सीय[1] निहारी ❀ मूँदेउ नयन सहमि सुकुमारी
परी बधिकवश मनहुँ मराली ❀ काह कीन्ह करतार कुचाली
तिन सिय निरखि निपट दुख पावा ❀ सो सब सहिय जो दैव सहावा
जनकसुता तब उर धरि धीरा ❀ नीलनलिन लोचन भरि नीरा
मिली सकल सासुन शिरनाई ❀ तेहि अवसर करुणा महिछाई

दो॰ लागिलागि पग सबनि सिय, भेंटति अतिअनुराग।
हृदय अशीशहिं प्रेमवश, रहिहौ भरी सुहाग॥

विकल सनेह सीय सब रानी ❀ बैठन सबहि कहेउ गुरुज्ञानी
प्रथम कही जगगति मुनिनाथा ❀ कहे कछुक परमारथ गाथा
नृपकर सुरपुर गमन सुनावा ❀ सुनि रघुनाथ दुसह दुख पावा
मरण हेतु निज नेह विचारी ❀ भे अति विकल धीर धुरधारी
कुलिश[2] कठोर सुनत कटुबानी ❀ विलपत लषण सीय सबरानी
शोक विकल अति सकल समाजू ❀ मानहुँ राज अकाजेउ आजू
मुनिवर बहुरि राम समुझाये ❀ सहित समाज सुसरित नहाये
व्रत निरंबु[3] तेहि दिन प्रभु कीन्हा ❀ मुनिहुँ काहु जल पान न लीन्हा

दो॰ भोर भये रघुनन्दनहिं, जो मुनि आयसु[4] दीन्ह।
श्रद्धा भक्ति समेत प्रभु, सो सब सादर कीन्ह॥

करि पितु क्रिया वेद जस वरणी ❀ भे पुनीत पातक तम[5] तरणी[6]
जासु नाम पावक[7] अघ तूला ❀ सुमिरत सकल सुमंगल मूला
शुद्ध सो भये साधु सम्मत अस ❀ तीरथ आवाहन सुरसरि जस
शुद्ध भये दुइ वासर[8] बीते ❀ बोले गुरुसन राम पिरीते
नाथ लोग सब निपट दुखारी ❀ कन्दमूल फल अम्बु[9] अहारी
सानुज भरत सचिव सब माता ❀ देखि मोहिं पल जिमि युगजाता
सब समेत पुर धारिय पाऊ ❀ आपु इहां अमरावति राऊ

१ जानकी २ वज्र ३ निर्जल ४ आज्ञा ५ अँधेरा ६ नौका ७ अग्नि ८ दिन ९ जल॥

बहुत कहेउँ सब करेउँ ढिठाई ❀ उचित होइ तस करिय गुसांई

दो॰ धर्महेतु करुणायतन, कस न कहहु अस राम।
लोक दुखित दिनदुइ दरश, देखि लहहिं विश्राम॥

राम वचन सुनि सभय समाजू ❀ जनु जलनिधिमहँ विकल जहाजू
सुनि मुनि गिरा सुमंगलमूला ❀ भयउ मनहुँ मारुत अनुकूला
पावनपय तिहुँकाल नहाहीं ❀ जेहि विलोकि अघ[1]ओघ नशाहीं
मंगल मूरति लोचन भरि भरि ❀ निरखहिं हरषि दंडवत करि करि
राम शैल वन देखन जाहीं ❀ जहँ सुख सकल सकल दुख नाहीं
झरना झरहिं सुधासम वारी ❀ त्रिविध तापहर त्रिविध बयारी
विटप बेलि तृण अगणित जाती ❀ फल प्रसून पल्लव बहुभाँती
सुन्दर शिला सुखद तरुछाहीं ❀ जाइ वरणि छवि वन केहिपाहीं

दो॰ सरन सरोरुह जल विहँग, कूजत गुंजत भृंग।
वैर विगत विहरत विपिन, मृग विहंग बहुरंग॥

कोल किरात भिल्ल वनवासी ❀ मधु शुचि सुंदर स्वादु सुधांसी[2]
भरि भरि पर्णकुटी रचि रूरी ❀ कन्दमूल फल अंकुर जूरी
सबहि देहिं करि विनय प्रणामा ❀ कहि कहि स्वादुभेद गुणनामा
देहिं लोग बहु मोल न लेहीं ❀ फेरत राम दोहाई देहीं
कहहिं सनेह मगन मृदु[3] बानी ❀ मानत साधु प्रेम पहिंचानी
तुम सुकृती हम नीच निषादा ❀ पावा दर्शन राम प्रसादा
हमहिं अगम अति दरश तुम्हारा ❀ जस मरु[4]धरणि देवसरि[5] धारा
राम कृपालु निषाद नेवाजा ❀ परिजन प्रजा चलिय जस राजा

दो॰ यह जियजानि सकोच तजि, करिय छोह[6] लखि नेहु।
हमहिं कृतारथ करन लगि, फल तृण अंकुर[7] लेहु॥

तुम प्रिय पाहुन वन पगुधारे ❀ सेवा योग न भाग हमारे
देब कहा हम तुमहिं गुसांई ❀ ईंधन[8] पात किरात मिताई

---

१ पापसमूह २ अमृतसी ३ कोमल ४ रेतलीपृथ्वी ५ गंगाजी ६ कृपा ७ अँखुआ ८ लकड़ी॥

यह हमारि अतिबड़ि सेवकाई ❀ लेहिं न बासन बसन चुराई
हम जड़ जीव जीवगणघाती ❀ कुटिल कुचाली कुमति कुजाती
पाप करत निशि वासर जाहीं ❀ नहिं कटि पट नहिं पेट अघाहीं
सपनेहुँ धर्म्मबुद्धि कस काऊ ❀ यह रघुनन्दन दरश प्रभाऊ
जबते प्रभु पद पद्म[२] निहारे ❀ मिटे दुसह दुख दोष हमारे
वचन सुनत पुरजन अनुरागे ❀ तिनके भाग्य सराहन लागे

छं० लागे सराहन भाग सब अनुराग वचन सुनावहीं।
बोलनि मिलनि सियरामचरण सनेह लखि सुख पावहीं॥
नर नारि निदरहिं[३] नेहनिज सुनि कोलभिल्लनकी गिरा[४]।
तुलसी कृपा रघुवंशमणि की लोह लै नौका तरा॥

सो० विहरहिं वन चहुँओर, प्रतिदिन प्रमुदित लोग सब।
जल जिमि दादुर[५] मोर[६], भये पीन पावस प्रथम॥

पुर नर नारि मगन अति प्रीती ❀ बासर जाहिं पलक सम बीती
सीय सासु प्रतिवेष बनाई ❀ सादर करहिं सरिस सेवकाई
लखा न मर्म राम बिनु काहू ❀ माया सब सिय माया माहू
सीय सासु सेवा वश कीन्हीं ❀ तिनलहि सुख शिषआशिष दीन्हीं
लखि सिय सहित सरल दोउ भाई ❀ कुटिल रानि पछितानि अघाई
अब जिय महँ याचति कैकेई ❀ महि न बीचु विधि मीचु न देई
लोकहु वेद विदित कवि कहहीं ❀ रामविमुख थल नरक न लहहीं
यह संशय सबके मनमाहीं ❀ रामगमन विधि अवध कि नाहीं

दो० निशि[७] न नींद नहिं भूख दिन, भरत विकल सुठिशोच।
नीच कीचबिच मगन जस, मीनहिं सलिल सँकोच॥

कीन्ह मातु मिसु काल कुचाली ❀ ईति भीति जस पाकत शाली[८]
केहि विधि होइ राम अभिषेकू[९] ❀ मोहिं अनुभवत उपाय न एकू

१ कमर २ कमल ३ निन्दत हैं ४ वाणी ५ मेंढक ६ मोर ७ रात्रि ८ धान ९ राजतिलक॥

अवशि फिरहिं गुरुआँयसु[1] मानी ❀ मुनि पुनि कहब रामरुचि जानी
मातु कहे बहुरहिं रघुराऊ ❀ रामजननि हठ करब न काऊ
मोहिं अनुचर[2] कर केतिक बाता ❀ तेहि महँ कुसमय वाम विधाता[3]
जो हठ करौं तो निपट कुकरमू ❀ हरगिरि[4] ते गुरुसेवक धरमू
एकौ युक्ति न मन ठहरानी ❀ शोचत भरतहिं रैनि सिरानी
प्रात नहाइ प्रभुहिं शिरनाई ❀ बैठत पठये ऋषय बुलाई

दो० गुरुपदकमल प्रणाम करि, बैठे आयसु पाइ।
विप्र महाजन सचिव[5] सब, जुरे सभासद आइ॥

बोले मुनिवर समय समाना ❀ सुनहु सभासद भरत सुजाना
धर्म्मधुरीण भानुकुल भानू[6] ❀ राजा राम स्ववश भगवानू
सत्यसन्ध पालक श्रुतिसेतू[7] ❀ रामजन्म जगमंगलहेतू
गुरु पितु मातु वचन अनुसारी ❀ खल दल दलन देव हितकारी
नीति प्रीति परमारथ स्वारथ ❀ कोउ न रामसम जान यथारथ
विधि हरिहरशशिरवि दिशिपाला ❀ माया जीव कर्म कुलिकाला
अहिप महिप जहँलगि प्रभुताई ❀ योग सिद्धि निगमागम गाई
करि विचार जिय देखहु नीके ❀ राम रजाय शीश सबहीके

दो० राखे राम रजाय रुख, हम सबकर हित होइ।
समुझि सयाने करहु अब, सब मिलि सम्मत सोइ॥

सब कहँ सुखद राम अभिषेकू ❀ मंगलमूल मोद मगुएकू
केहि विधि अवध चलहिं रघुराई ❀ कहहु समुझि सोइ करैं उपाई
सब सादर मुनिवर सुनि बानी ❀ नय[8] परमारथ स्वारथ सानी
उतर न आव लोग भे भोरे ❀ तब शिरनाय भरत कर जोरे
भानुवंश भे भूप[9] घनेरे ❀ अधिक एक ते एक बड़ेरे
जन्महेतु सबकर पितु माता ❀ कर्म शुभाशुभ देइ विधाता
दलि दुख सृजे सकल कल्याना ❀ अब अशीश राउर जग जाना

१ आज्ञा २ दास ३ ब्रह्मा ४ कैलास ५ मन्त्री ६ सूर्य ७ पुल ८ नीति ९ राजा॥

सो गुसाइँ विधि गति जेइ छेकी ❀ सकै को टारि टेकं जो टेकी

दो॰ बूझिय मोहिं उपाय अब, सो सब मोर अभाग।
सुनि सनेहमय वचन गुरु, उर उपजा अनुराग॥

तात बात फुर राम कृपाहीं ❀ राम विमुख सुख सपनेहुँ नाहीं
सकुचौं तात कहत इक बाता ❀ अर्ध तजहिं बुध सर्वस जाता
तुम कानन गमनहु दोउ भाई ❀ फेरिय लषण सीय रघुराई
सुनि शुभवचन हर्ष दोउ भ्राता ❀ भे प्रमोद परिपूरण गाता
मन प्रसन्न तनु तेज विराजा ❀ जनु जिय राव राम भे राजा
बहुत लाभ लोगन लघु हानी ❀ सम दुख सुख सब रोवहिं रानी
कहहिं भरत मुनि कहा सो कीजै ❀ फल जगजीवन अभिमत दीजै
कानन करौं जन्म भरि वासू ❀ यहिते अधिक न मोर सुपासू

दो॰ अन्तरयामी राम सिय, तुम सर्वज्ञ सुजान।
जो फुर कहहुँ तो नाथ निज, कीजिय वचन प्रमान॥

भरत वचन सुनि देखि सनेहू ❀ सभा सहित मुनि भये विदेहू
भरत महामहिमा जल रासी ❀ मुनिमति ठाढ़ि तीर अबलासी
भा चह पार यतन बहु हेरा ❀ पावति नाव न बोहित बेरा
और करहि को भरत बड़ाई ❀ सरसरि सीपकि सिन्धु समाई
भरत मुनिहिं मन भीतर पाये ❀ सहित समाज राम पहँ आये
प्रभु प्रणाम करि दीन्ह सुआसन ❀ बैठे मुनि सब मुनि अनुशासन
बोले मुनिवर वचन विचारी ❀ देश काल अवसर अनुहारी
सुनहु राम सर्वज्ञ सुजाना ❀ धर्म्मनीति गुण ज्ञान निधाना

दो॰ सब के उर अन्तर बसहु, जानहु भाव कुभाव।
पुर जन जननी भरत हित, सोइ सो करिय उपाव॥

आरर्त कहहिं विचार न काऊ ❀ सूझ जुआरिहि आपन दाऊ
सुनि मुनि वचन कहत रघुराऊ ❀ नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ

---

१ पण २ सांच ३ पंडित ४ वन ५ वाञ्छित ६ स्त्री ७ जहाज़ ८ ताल, नदी ९ दुःखी॥

सब कर हित रुख राउर राखे ❀ आयसु दिये मुदित फुर भाखे
प्रथम जो आयसु मोकहँ होई ❀ माथे मानि करौं शिष सोई
पुनि जेहि कहँ जस होब रजाई ❀ सो सब भांति करिहि सेवकाई
कह मुनि राम सत्य तुम भाखा ❀ भरत सनेह विचार न राखा
तेहिते कहौं बहोरि बहोरी ❀ भरत भक्ति भइ मम मति भोरी
मोरे जान भरत रुचि राखी ❀ जो कीजिय सो शुभ शिव साखी

दो० भरत विनय[2] सादर सुनिय, करिय विचार बहोरि।
करब साधुमत लोकमत, नृपनय निगम निचोरि॥

गुरु अनुराग भरत पर देखी ❀ राम हृदय आनन्द विशेखी
भरतहिं धर्म धुरन्धर जानी ❀ निज सेवक तन मानस बानी
बोले गुरु आयसु अनुकूला ❀ वचन मंजु मृदु मङ्गलमूला
नाथ शपथ[3] पितु चरण दुहाई ❀ भयउ न भुवन भरत सम भाई
जे गुरु पद अम्बुज[4] अनुरागी ❀ ते लोकहु वेदहु बड़ भागी
राउर जापर अस अनुरागू ❀ को कहि सकै भरत कर भागू
लखि लघु बन्धु बुद्धि सकुचाई ❀ करत वदन पर भरत बड़ाई
भरत कहहिं सो किये भलाई ❀ अस कहि राम रहे अरगाई

दो० तब मुनि बोले भरत सन, सब सँकोच तजि तात।
कृपासिन्धु प्रिय बन्धु सन, कहहु हृदय की बात॥

सुनि मुनि वचन राम रुख पाई ❀ गुरु साहिब अनुकूल अघाई
लखि अपने शिर सब छरभारू ❀ कहि न सकैं कछु करैं विचारू
पुलक शरीर सभा भे ठाढ़े ❀ नीरज[6] नयन नेहँ जल बाढ़े
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा ❀ यहिते अधिक कहौं मैं काहा
मैं जानौं निज नाथ स्वभाऊ ❀ अपराधिहु पर कोह न काऊ
मोपर कृपा सनेह विशेखी ❀ खेलत खुंनस कबहुँ नहिं देखी
शिशुपनते परिहरेउ न संगू ❀ कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू

१ आज्ञा २ बिनती ३ सौगंद ४ कमल ५ चुप ६ कमल ७ प्रेम ८ क्रोध ९ रिस॥

मैं प्रभु कृपा रीति जिय जोहीं ❀ हारेउ खेल जितावहिं मोहीं

दो० महूं सनेह सँकोच वश, सम्मुख कहेउँ न बैन।
दर्शन तृप्ति न आजु लगि, प्रेम पियासे नैन॥

विधि न सकेउ सहि मोर दुलारा ❀ नीच बीच जननी मिसु पारा
इहौ कहत मोहिं आजु न शोभा ❀ आपन समुझि साधु शुचि को भा
मातु मन्द मैं साधु सुचाली ❀ उर अस आनत कोटि कुचाली
फरै कि कोदव बालि सुशाली[2] ❀ मुक्ता प्रसव कि शम्बुक[3] ताली
सपनेहुँ दोष कलेश न काहू ❀ मोर अभाग्य उदधि अवगाहू
बिनु समुझे निज अघ परिपाकू ❀ जारेउँ जाइ जननि कह काकू
हृदय हेरि हारेउँ सब ओरा ❀ एकहि भांति भलहि भल मोरा
गुरु गुसाइँ साहिब सियरामू ❀ लागत मोहिं नीक परिणामू

दो० साधुसभा प्रभु गुरु निकट, कहौं सुथल सतिभाव।
प्रेम प्रपंच कि झूँठ फुर, जानहिं मुनि रघुराव॥

भूपति मरण प्रेम प्रण राखी ❀ जननी कुमति जगत सब साखी
देखि न जाहिं विकल महतारी ❀ जरहिं दुसह ज्वर पुर नर नारी
महीं सकल अनरथ कर मूला ❀ सो सुनि समुझि सहौं सब शूला
सुनि वन गमन कीन्ह रघुनाथा ❀ करि मुनिवेष लषण सिय साथा
बिनु पनहीं अरु प्यादेहि पाये ❀ शंकर साखि रह्यों यहि घाये
बहुरि निहारि निषाद सनेहू[7] ❀ कुलिश कठिन उर भयउ न बेहू[4]
अब सब आंखिन देखेउँ आई ❀ जियत जीव जड़ सबै सहाई
जिनहिं निरखि मगु[5] सांपिनि बीछी ❀ तजहिं विषमविष तामस[6] तीछी

दो० तेइ रघुनन्दन लषण सिय, अनहित लागे जाहि।
तासु तनय तजि दुसह दुख, दैव सहावै काहि॥

सुनि अति विकल भरतवर बानी ❀ आरति प्रीति विनय नय सानी
शोक मगन सब सभा खँभारू ❀ मनहुँ कमल वन पर्यो तुषारू[8]

१ बहाना २ सुन्दर धान ३ घोंघी ४ छेद ५ रास्ता ६ क्रोध ७ पुत्र ८ पाला॥

कहि अनेक विधि कथा पुरानी ❀ भरत प्रबोध कीन्ह मुनि ज्ञानी
बोले उचित वचन रघुनन्दू ❀ दिनकर[1] कुल कैरववन[2] चन्दू
तात हृदय जनि करहु गलानी ❀ ईश अधीन जीव गति जानी
तीनि काल त्रिभुवन मत मोरे ❀ पुण्यश्लोक तात वश तोरे
उर आनत तुम पर कुटिलाई ❀ जाइ लोक परलोक नशाई
दोष देहिं जननिहिं जड़ तेई ❀ जिन गुरु साधु सभा नहिं सेई

दो॰ मिटहिं पाप परपंच सब, अखिल अमंगल भार।
लोकसुयश परलोकसुख, सुमिरत नाम तुम्हार॥

कहौं स्वभाव सत्य शिव साखी ❀ भरत भूमि रह राउर राखी
तात कुतर्क[3] करहु जनि जाये ❀ वैर प्रेम नहिं दुरै दुराये
मुनिगण निकट विहँग मृग जाहीं ❀ बाधक बधिक विलोकि पराहीं
हित अनहित पशु पच्छिहु जाना ❀ मानुषतनु गुण ज्ञान निधाना
तात तुमहिं मैं जानौं नीके ❀ करौं कहा असमंजस जीके
राखेउ राव सत्य मोहिं त्यागी ❀ तनु परिहरेउ प्रेम प्रण लागी
तासु वचन मेटत बड़ शोचू ❀ तेहिते अधिक तुम्हार सँकोचू
तापर गुरु मोहिं आयसु दीन्हा ❀ अवशि जो कहहु चहौं सो कीन्हा

दो॰ मन प्रसन्न करि सकुचतजि, कहहु करौं सो आज।
सत्यसन्ध रघुवरवचन, सुनिभा सुखी समाज॥

सुरगण सहित सभय सुरराजू[4] ❀ शोचहिं चाहत होन अकाजू
करत विचार बनत कछु नाहीं ❀ राम शरण सब गे मनमाहीं
बहुरि विचार परस्पर करहीं ❀ रघुवर भक्त भक्तिवश अहहीं
सुधि करि अम्बरीष दुर्वासा ❀ भे सुर सुरपति निपट निरासा
सहे सुरन बहुकाल विषादा ❀ नरहरि[5] किये प्रकट प्रहलादा
लगिलगि कान कहहिं धुनिमाथा ❀ अब सुरकाज[6] भरत के हाथा
आन उपायँ न देखिय देवा ❀ मानत राम सुसेवक सेवा

१ सूर्य २ कुमोदिनी ३ नीचविचार ४ इन्द्र ५ नृसिंह ६ देवकार्य ७ यत्न॥

हिय सप्रेम सेवहिं सब भरतहिं ❀ निजगुण शील रामवश करतहिं

दो० सुनि सुरमत सुरगुरु[1] कहेउ, भल तुम्हार बड़भाग।
सकल सुमंगलमूल जग, भरत चरण अनुराग॥

सीतापति सेवक सेवकाई ❀ कामधेनु शत सरिस सुहाई
भरत भक्ति तुम्हरे मन आई ❀ तजहु शोच विधि बात बनाई
देखु देवपति भरत प्रभाऊ ❀ सहज स्वभाव विवश रघुराऊ
मन थिर करहु देव डर नाहीं ❀ भरतहिं जानि राम परिछाहीं
सुनि सुरगुरु सुर सम्मत शोचू ❀ अन्तरयामी प्रभुहि सँकोचू
निजशिर भार भरत जिय जानी ❀ करत कोटिविधि उर अनुमानी
करि विचार मन दीन्ह्यो टीका ❀ राम रजायसु आपन नीका
निजप्रण तजि राखेउ प्रण मोरा ❀ छोह सनेह कीन्ह नहिं थोरा

दो० कीन्ह अनुग्रह[2] अमित अति, सब विधि सीतानाथ।
करि प्रणाम बोले भरत, जोरि जलजयुगहाथ॥

कहउँ कहावउँ का अब स्वामी ❀ कृपा अम्बुनिधि[3] अन्तरयामी
गुरु प्रसन्न साहिब अनुकूला ❀ मिटी मलिन मनकल्पित शूला
अपडर डरेउँ न शोच समूले ❀ रविहि न दोष देव दिशि भूले
मोर अभाग्य मातु कुटिलाई ❀ विधिगति विषम[4] कालकठिनाई
पांव रोपि सब मिलि मोहिं घाला ❀ प्रणतपाल[5] प्रण आपन पाला
यह नइ रीति न राउरि होई ❀ लोकहु वेद विदित नहिं गोई
जग अनभल भल एक गुसांई ❀ कहिय होइ भल कासु भलाई
देव देवतरु[6] सरिस स्वभाऊ ❀ सम्मुख विमुख न काहुहि काऊँ[7]

दो० जाइ निकट पहिंचानि तरु, छांह शमन सब शोच।
मांगत अभिमत[8] पाव फल, राव रंक भल पोच॥

लखि सब विधि गुरु स्वामि सनेहू ❀ मिटेउ छोभ नहिं मन संदेहू
अब करुणाकर कीजिय सोई ❀ जनहित प्रभुचित छोभ न होई

१ बृहस्पति २ कृपा ३ समुद्र ४ डरयुक्त ५ श्रीरामचन्द्र ६ कल्पवृक्ष ७ कभी ८ वाञ्छित॥

जो सेवक साहिब संकोची ❁ निजहित चहै तासु मति पोची
सेवक हित साहिब सेवकाई ❁ करै सकल सुख लोभ विहाई
स्वारथ नाथ फिरे सबहीका ❁ किये रजाइ कोटि विधि नीका
यह स्वारथ परमारथ सारू ❁ सकल सुकृतफल सुगति शृँगारू
देव एक विनती सुनि मोरी ❁ उचित होइ तस करब बहोरी
तिलक समाज साजि सब आना ❁ करिय सफल प्रभु जो मनमाना

दो० सानुज पठइय मोहिं वन, कीजिय सबहिं सनाथ।
नातरु फेरिय बन्धु दोउ, नाथ चलौं मैं साथ॥

नतरु जाहिं वन तीनिउँ भाई ❁ बहुरिय[2] सीय सहित रघुराई
जेहि विधि प्रभु प्रसन्न मन होई ❁ करुणासागर कीजिय सोई
देव दीन्ह सब मोपर भारू ❁ मोरे नीति न धर्म्म विचारू
कहौं वचन सब स्वारथ हेतू ❁ रहत न आरत के चित चेतू[3]
उतर देइ बिनु स्वामि रजाई ❁ सो सेवक लखि लाज लजाई
अस मैं अवगुण उदधि[4] अगाधू ❁ स्वामि सनेह सराहत साधू
अब कृपालु मोहिं सो मत भावा ❁ सकुच स्वामि मन जाइ न पावा
प्रभु पद शपथ कहौं सति भाऊ ❁ जग मंगल हित एक उपाऊ

दो० प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि, जो जेहि आयसु[5] देव।
सो शिर धरिधरि करहिं सब, मिटिहि अनट अवरेव॥

भरत वचन शुचि सुनि सुर हर्षे ❁ साधु सराहि सुमन[6] सुर वर्षे
असमंजस वश अवध निवासी ❁ प्रमुदित मन तापस वनवासी
चुप रहिगे रघुनाथ सँकोची ❁ प्रभु गति देखि सभा सब शोची
जनक दूत तेहि अवसर आवा ❁ मुनि वशिष्ठ सुनि वेगि बुलावा
करि प्रणाम तिन राम निहारे ❁ वेष देखि भे निपट दुखारे
दूतहिं मुनिवर पूंछी बाता ❁ कहहु विदेह[7] भूप कुशलाता
सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा ❁ बोले चरवर[8] जोरे हाथा

१ नहीं तो २ लौटिये ३ होश ४ समुद्र ५ आज्ञा ६ फूल ७ जनक ८ दूत॥

बूझत राउर सादर साईं ❀ कुशल हेतु सो भयउ गुसाईं

दो॰ नाहित कोशलनाथ के, साथ कुशल गइ नाथ।
मिथिला अवध विशेषते, जग सब भयउ अनाथ॥

कोशलपतिगति सुनि जनकौरा[1] ❀ भे सब लोग शोचवश बौरा
जेहि देखा तेहि समय विदेहू ❀ नाम सत्य अस लाग न केहू
रानि कुचालि सुनत महिपाले ❀ सूझ न कछु जस मणि बिनु ब्याले
भरत राज रघुवर वनवासू ❀ भा मिथिलेशहि हृदय हरासू[2]
नृप बूझे बुध[3] सचिव[4] समाजू ❀ कहहु विचारि उचित का आजू
समुझि अवध असमंजस दोऊ ❀ चलियकि रहिय न कह कछु कोऊ
नृपति धीर धरि हृदय विचारी ❀ पठये अवध चतुर चर चारी
बूझि भरत गति भाउ कुभाऊ ❀ आयहु वेगि न होइ लखाऊ

दो॰ गये अवध चर भरतगति, बूझि देखि करतूति।
चले चित्रकूटहि भरत, चार चले तिरहूति॥

दूतन आइ भरत की करणी ❀ जनक समाज यथामति वरणी
मुनि गुरु पुरजन सचिव महीपति ❀ भे सब शोच सनेह विकलमति
धरि धीरज करि भरत बड़ाई ❀ लिये सुभट साहनी[5] बुलाई
घर पुर देश राखि रखवारे ❀ हयँ[6] गयँ[7] रथ बहु यान सँवारे
दुघड़ी साधि चले ततकाला ❀ किय विश्राम न मगु महिपाला
भोरहि आजु नहाइ प्रयागा ❀ चले यमुन उतरन सब लागा
खबरि लेन हम पठये नाथा ❀ तिन कहि अस महि नायहु माथा
साथ किरात छ सातक दीन्हे ❀ मुनिवर तुरत बिदा चर कीन्हे

दो॰ सुनत जनक आगमन सब, हर्षेउ अवध समाज।
रघुनन्दनहिं सँकोच बड़, शोचविवश सुरराज[8]॥

गरै गलानि कुटिल कैकेई ❀ काहि कहै केहि दूषण देई
अस मन आनि मुदित[9] नरनारी ❀ भयउ बहोरि रहब दिन चारी

१ जनकपुरी २ दुःख ३ पंडित ४ मन्त्री ५ फौज ६ घोड़े ७ हाथी ८ इन्द्र ९ हर्षित॥

यहिप्रकार गत वासर[2] सोऊ ❀ प्रात नहान लगे सब कोऊ
करि मज्जन पूजहिं नर नारी ❀ गणपति गौरि पुरारि[3] तमारी[4]
रमारमण पद वन्दि बहोरी ❀ बिनवहिं अंचल अंजलि जोरी
राजा राम जानकी रानी ❀ आनँद अवधि अवध रजधानी
सुबस बसै फिरि सहित समाजा ❀ भरतहिं राम करहिं युवराजा
यहि सुखसुधा सींचि सबकाहू ❀ देव देहु जग जीवन लाहू

दो॰ गुरु समाज भाइन सहित, रामराज पुर होउ।
अछत राम राजा अवध, मरिय मांगु सब कोउ॥

सुनि सनेहमय पुरजन बानी ❀ निन्दहिं योग विरति मुनि ज्ञानी
यहि विधि नित्यकर्म करि पुरजन ❀ रामहिं करहिं प्रणाम पुलकि[5] तन
ऊँच नीच मध्यम नर नारी ❀ लहैं दरश निज निज अनुहारी
सावधान सबही सनमानहिं ❀ सकल सराहत कृपानिधानहिं
लरिकाई ते रघुवर बानी ❀ पालत प्रीति रीति पहिंचानी
शील सँकोच सिन्धु रघुराऊ ❀ सुमुख सुलोचन सरल सुभाऊ
कहत राम गुणगण अनुरागे ❀ सब निज भाग्य सराहन लागे
हम सम पुण्य पुंज[6] जग थोरे ❀ जिनहिं राम जानत करि मोरे

दो॰ प्रेममगन तेहि समय सब, सुनि आवत मिथिलेश[7]।
सहित सभा संभ्रम[8] उठे, रविकुलकमल दिनेश[9]॥

भाइ सचिव गुरु पुरजन साथा ❀ आगे गमन कीन्ह रघुनाथा
गिरिवर दीख जनक नृप जबहीं ❀ करि प्रणाम त्यागा रथ तबहीं
राम दरश लालसा उछाहू ❀ पथ श्रम लेश कलेश न काहू
मन तहँ जहँ रघुवर वैदेही ❀ बिनु मन तनदुख सुख सुधि केही
आवत जनक चले यहि भांती ❀ सहित सनेह प्रेम मदमाती
आये निकट देखि अनुरागे ❀ सादर मिलन परस्पर लागे
लगे जनक मुनिगणपद वन्दन ❀ ऋषिन प्रणाम कीन्ह रघुनन्दन

१ बीता २ दिन ३ शम्भु ४ सूर्य्य ५ रोमांचित ६ समूह ७ राजा जनक ८ चकित ९ सूर्य्य॥

भाइन सहित राम मिलि राजहिं ❀ चले लिवाइ समेत समाजहिं

दो० आश्रम सागर शान्तरस, पूरण पावन पाथ[1]।
सैन मनहुँ करुणा सरित[2], लिये जात रघुनाथ॥

बोरति ज्ञान विराग करारे ❀ वचन सशोक मिलत नदि नारे
शोच उसास समीर[3] तरंगा ❀ धीरज तट तरुवर कर भंगा
विषम विषाद तुरावति धारा ❀ भय भ्रम भवँरावर्त[4] अपारा
केवट बुध विद्या बड़ि नावा ❀ सकहि न खेइ एक नहिं आवा
वनचर कोल किरात विचारे ❀ थके विलोकि पथिक हिय हारे
आश्रम उदधि[5] मिली जब जाई ❀ मनहुँ उठेउ अम्बुधि अकुलाई
शोक विकल दोउ राज समाजा ❀ रहा न ज्ञान न धीरज लाजा
भूप रूप गुण शील सराही ❀ शोचहिं शोक सिन्धु अवगाही

छं० अवगाहि शोकसमुद्रशोचहिं नारिनरव्याकुलमहा।
दै दोष सकल सरोष बोलहिं वाम विधि कीन्हीं कहा॥
सुर सिद्ध तापस योगिजन मुनिदशा देखि विदेह की।
तुलसी न समरथ कोउ जो तरिसकै सरित सनेह की॥

सो० किये अमित[6] उपदेश, जहँ तहँ लोगन मुनिवरन।
धीरज धरिय नरेश, कहेउ वशिष्ठ विदेह मन॥

जासु ज्ञान रवि भवँ निशिनाशा ❀ वचनकिरणिमुनिकमल विकाशा
तेहि कि मोह ममता नियराई ❀ यह सिय राम सनेह बड़ाई
विषयी साधक सिद्ध सयाने ❀ त्रिविध जीव जग वेद बखाने
राम सनेह सरस मन जासू ❀ साधु सभा बड़ आदर तासू
मोह न राम प्रेम बिनु ज्ञाना ❀ कर्णधार बिनु जिमि जलयानां
मुनि बहु विधि विदेह समुझाये ❀ रामघाट सब लोग नहाये
सकल शोक संकुल नर नारी ❀ सो वासर बीतेउ बिनु वारां

१ जल २ नदी ३ पवन ४ जलचक्र ५ समुद्र ६ अपार ७ संसार ८ मल्लाह ९ नौका॥

पशु खग मृगन न कीन्ह अहारा ❀ प्रिय परिजनकर कवन विचारा

दो० दोउ समाज निमिराज रघु, राज नहाने प्रात।
बैठे सब वट विटप तर, मनमलीन कृशगात॥

जे महिसुर दशरथ पुरवासी ❀ जे मिथिलापति नगर निवासी
हंस वंश गुरु जनक पुरोधा ❀ जिन जग मग परमारथ शोधा
लगे कहन उपदेश अनेका ❀ सहित धर्म नय विरति विवेका
कौशिक कहि कहि कथा पुरानी ❀ समुझाई सब सभा सुबानी
तब रघुनाथ कौशिकहि कहेऊ ❀ नाथ कालि बिनु जल सब रहेऊ
मुनि कह उचित कहत रघुराई ❀ गयउ बीति दिन पहर अढ़ाई
ऋषिरुख लखि कह तिरहुतिराजू ❀ इहां उचित नहिं अशन अनाजू
कहा भूप भल सबहि सोहाना ❀ पाइ रजायसु चले नहाना

दो० तेहि अवसर फल फूल दल, मूल अनेक प्रकार।
लै आये वनचर विपुल, भरिभरि कांवरि भार॥

कामद भे गिरि राम प्रसादा ❀ अवलोकत अपहरत विषादा
सर सरिता वन भूमि विभागा ❀ जनु उमँगत आनँद अनुरागा
बेलि विटप सब सफल सफूला ❀ बोलत खगमृग अतिअनुकूला
तेहि अवसर वन अधिक उछाहू ❀ त्रिविध समीर सुखद सबकाहू
जाइ न वरणि मनोहरताई ❀ जनु महि करत जनक पहुनाई
तब सब लोग नहाइ नहाई ❀ राम जनक मुनिआयसु पाई
देखि देखि तरुवर अनुरागे ❀ जहँ तहँ पुरजन उतरन लागे
दल फल फूल कन्द विधि नाना ❀ पावन सुन्दर सुधा समाना

दो० सादर सबकहँ राम गुरु, पठये भरि भरि भार।
पूजि पितर सुर अतिथि गुरु, लगे करन फलहार॥

यहि विधि वासर बीते चारी ❀ राम निरखि नर नारि सुखारी
दुहुँसमाज अस रुचि मनमाहीं ❀ बिनु सियराम फिरब भल नाहीं

१ जनक २ दुर्बल ३ ब्राह्मण ४ पुरोहित ५ भोजन ६ वनवासी ७ कामदाता ८ अमृत॥

सीता राम संग वनवासू ❀ कोटि अमरपुर सरिस सुपासू
परिहरि लषण राम वैदेही ❀ जेहि घर भाव वाम विधि तेही
दाहिन दैव होइ जब सबहीं ❀ राम समीप बसिय वन तबहीं
मन्दाकिनिमज्जन तिहुँ काला ❀ रामदरश मुद मंगल माला
अटनं रामगिरि वन तापसथल ❀ अशनं अमियसम कन्द मूल फल
सुख समेत संवत दुइ साता ❀ पलसम होहिं न जानिय जाता

दो० यहि सुखयोग न लोग सब, कहहिं कहां असभाग ।
सहज सुभाव समाज दुहुँ, रामचरण अनुराग ॥

यहि विधि सकल मनोरथ करहीं ❀ वचन सप्रेम सुनत मन हरहीं
सीय मातु तेहि समय पठाई ❀ दासी देखि सुअवसर आई
सावकाश सुनि सब सियसासू ❀ आई जनकराज रनिवासू
कौशल्या सादर सनमानी ❀ आसन दीन्ह समय सम आनी
शील सनेह सरस दुहुँ ओरा ❀ द्रवहिं देखि सुनि कुलिश कठोरा
पुलकशिथिलतनु वारिविलोचन ❀ महिनखलिखनैंलगीं सब शोचन
सब सिय राम प्रेमकी मूरति ❀ जनु करुणा बहु वेष बिसूरति
सीयमातु कह विधि बुधि बांकी ❀ जिमि पयफेनु फोर पवि टांकी

दो० सुनिय सुधा देखिय गरलँ, सब करतूति कराल ।
जहँ तहँ काँक उलूक बक, मानस सकृत मरालँ ॥

सुनि सशोच कह देवि सुमित्रा ❀ विधिगति अतिविपरीत विचित्रा
जो सृजि पालै हरै बहोरी ❀ बालकेलिसम विधिमति भोरी
कौशल्या कह दोष न काहू ❀ कर्मविवश दुख सुख च्छति लाहू
कठिन कर्मगति जान विधाता ❀ जो शुभ अशुभ कर्म फलदाता
ईश रजाइ शीश सबहीके ❀ उत्पति थिति लयँ विषहु अमीके
देवि मोहवश शोचिय बादी ❀ विधिप्रपंच अस अचल अनादी
भूपति जियब मरब उर आनी ❀ शोचियसखिलखिनिजहितजानी

१ घूमना २ भोजन ३ खोदना ४ ज़हर ५ कौवा ६ हंस ७ हानि ८ नाश ९ आदिरहित ॥

सीयमातु कह सत्य सुबानी ❀ सुकृती अवधि[1] अवधपतिरानी

दो० लषण राम सिय जाहिंवन, भल परिणाम न पोच[2]।
गद्गरि हिय कह कौशला, मोहिं भरतकर शोच॥

ईश प्रसाद[3] अशीश तुम्हारी ❀ सुत सुतवधू देवसरि[4] वारी
राम शपथ मैं कीन्ह न काऊ ❀ सो करि सखी कहौं सतिभाऊ
भरतशील गुण विनय बड़ाई ❀ भायप भक्ति भरोस भलाई
कहत शारदहु के मति हीचै ❀ सागर सीप कि जाहि उलीचै
जानौ सदा भरत कुलदीपा ❀ बारबार मोहिं कहेउ महीपा
कसे कनक[5] मणि पारिख पाये ❀ पुरुष परखिये समय सुभाये
अनुचित आजु कहब अस मोरा ❀ शोक सनेह सयानप थोरा
सुनि सुरसरि सम पावनि बानी ❀ भईं सनेह विकल सब रानी

दो० कौशल्या कह धीर धरि, सुनहु देवि मिथिलेशि[6]।
को विवेकनिधि वल्लभहि, तुमहिं सकै उपदेशि॥

रानि राव सन अवसर पाई ❀ आपनि भांति कहब समुझाई
राखहिं लषण भरत गमनहिं वन ❀ जो यह मत मानै महीप मन
तौ भलि यतन सुकरहु विचारी ❀ मोरे शोच भरत कर भारी
गूढ़ सनेह भरत मन माहीं ❀ रहे नीक मोहिं लागत नाहीं
लखि स्वभाव सुनि सरल[7] सुबानी ❀ सब भईं मगन करुणरस सानी
नभ प्रसून[8] झरि धन्य धन्य धुनि ❀ शिथिल सनेह सिद्ध योगी मुनि
सब रनिवास थकित लखि रहेऊ ❀ तब धरि धीर सुमित्रा कहेऊ
देवि दण्ड युग यामिनि[9] बीती ❀ राममातु सुनि उठी सप्रीती

दो० वेगि पांय धारिय थलहि, कह सनेह सतिभाय।
हमरे तौ अब ईश गति, की मिथिलेश सहाय॥

लखि सनेह सुनि वचन विनीता ❀ जनकप्रिया गहि पांव पुनीता
देवि उचित अस विनय तुम्हारी ❀ दशरथघरनि राम महतारी

१ हद २ तुच्छ ३ कृपा ४ गंगाजी ५ सोना ६ सुनयना ७ सीधी ८ फूल ९ रात्रि॥

प्रभु अपने नीचहु आदरहीं ❀ अग्नि धूम[1] गिरि शिर तृणधरहीं
सेवक राव कर्म्म मन बानी ❀ सदा सहाय महेश भवानी[2]
रौरे अंगयोग्य जग कोहै ❀ दीपसहाय कि दिनकर सोहै
राम जाय वन करि सुरकाजू ❀ अचल अवधपुर करिहहिं राजू
अमर नाग नर राम बाहुबल ❀ सुखबासिहहिं अपने अपने थल
यह सब याज्ञवल्क्य कहि राखा ❀ देवि न होइ मृषा[3] मुनि भाखा

दो॰ असकहि पगुपरि प्रेम अति, सियहितविनयसुनाइ।
सियसमेत सियमातु तब, चली सुआयसु पाइ॥

प्रिय परिजनहिं मिली वैदेही ❀ जो जेहि योग्य भांति तस तेही
तापस वेष जानकिहि देखी ❀ भे सब विकल विषाद विशेखी
जनक राम गुरु आयसु पाई ❀ चले थलहि सिय देखी आई
लीन्ह लाइ उर जनक जानकी ❀ पाहुनि पावनि प्रेम प्रानकी
उर उमँगेउ अम्बुधि अनुरागू ❀ भयहु भूप मन मनहुँ प्रयागू
सिय सनेहवट बाढ़त जोहा ❀ तापर राम प्रेम शिशु सोहा
चिरंजीवि मुनि ज्ञान विकल जनु ❀ बूड़त लहेउ बाल अवलम्बनु[4]
मोहमगन मति नहिं विदेहकी[5] ❀ महिमा सिय रघुवर सनेहकी

दो॰ सिय पितुमातु सनेहवश, विकल न सकी सँभारि।
धरणिसुता[6] धीरज धरेउ, समय सुधर्म विचारि॥

तापस वेष जनक सिय देखी ❀ भयउ प्रेम परितोष विशेखी
पुत्रि पवित्र किये कुल दोऊ ❀ सुयश धवल[7] जग कह सब कोऊ
जिमि सुरसरि कीरति सरि तोरी ❀ गमन कीन्ह विधि अण्ड करोरी
गंग अवनि[8]थल तीनि बड़ेरे ❀ यहि किय साधु समाज घनेरे
पितु कह सत्य सनेह सुबानी ❀ सीय सकुचि मनमांह समानी
पुनि पितु मातु लीन्ह उरलाई ❀ शिष आशिषाहित दीन्ह सुहाई
कहति न सीय सकुच मनमाहीं ❀ इहां बसब रैंजनी[9] भल नाहीं

---

१ धुवाँ २ पार्वतीजी ३ झूंठ ४ सहारा ५ जनक ६ जानकी ७ उज्ज्वल ८ पृथ्वी ९ रात्रि॥

लखि रुख रानि जनायउ राऊ ❀ हृदय सराहत शील स्वभाऊ

दो० बारबार मिलि भेंटि सिय, बिदा कीन्ह सनमानि।
कही समयशिर भरतगति, रानि सुबानि सयानि॥

सुनि भूपाल भरत व्यवहारू ❀ सोन सुगन्ध सुधा शशिसारू
मूंदे सजल नयन पुलके तन ❀ सुयश सराहन लगे मुदित मन
सावधान सुनु सुमुखि सुलोचनि ❀ भरतकथा भवबन्ध विमोचनि
धर्मराज नय ब्रह्म विचारू ❀ यहां यथामति मोर प्रचारू
सो मति मोरि भरत महिमाहीं ❀ कहौं काह छलि छुअति न छाहीं
विधिगणपतिअहिपतिशिवशारद ❀ कवि कोविद बुध बुद्धिविशारद
भरतचरित कीरति करतूती ❀ धर्म्मशील गुण विमल विभूती
समुझत सुनत सुखद सबकाहू ❀ लोक लाभ परलोक निबाहू

दो० निरवधिगुण[3] निरुपम पुरुष, भरत भरतसम जानि।
कहिय सुमेरु कि सेरसम, कविकुलमति सकुचानि॥

अगम सबहिं वरणत वरवरणी ❀ जिमि जलहीन मीन[4] मगतरणी
भरत अमित महिमा सुनु रानी ❀ जानहिं राम न सकहिं बखानी
वरणि सप्रेम भरत अनुभाऊ ❀ तियजिय की रुचि लखि कह राऊ
बहुरहिं लषण भरत वन जाहीं ❀ सबकर भल सबके मन माहीं
देवि परन्तु भरत रघुवरकी ❀ प्रीति प्रतीति जाइ नहिं तरकी
भरत सनेह अवधि ममताके ❀ यद्यपि राम सींव समताके
परमारथ स्वारथ सुख सारे ❀ भरत न सपनेहुँ मनहुं निहारे
साधन सिद्धि राम पद नेहू ❀ मोहिं लखि परत भरत मत येहू

दो० भोरेहु भरत न पेलिहहिं[5], मन महँ राम रजाइ[6]।
करिय न शोच सनेहवश, कहेउ भूप[7] बिलखाइ॥

राम भरत गुण कहत सप्रीती ❀ निशि दम्पतिहि[8] पलकसम बीती
राज समाज प्रात युग जागे ❀ न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे

१ चंद्रमा २ संसार ३ अपार ४ मछली ५ त्याग ६ आज्ञा ७ राजा ८ स्त्रीपुरुष॥

गे नहाइ गुरु पहँ रघुराई ❀ वन्दि चरण बोले रुख पाई
नाथ भरत पुरजन महतारी ❀ शोच विकल वनवास दुखारी
सहित समाज राव मिथिलेशू ❀ बहुत दिवस भे सहत कलेशू
उचित होय सो कीजिय नाथा ❀ हित सबही कर रौरे हाथा
अस कहि अति सकुचे रघुराऊ ❀ मुनि पुलके लखि शील स्वभाऊ
तुम बिनु राम सकल सुख साजा ❀ नरक सरिस दुहुँ राज समाजा

दो० प्राण प्राण के जीव के, जिय सुखके सुख राम।
तुम तजि तात सोहात गृह[2], जिनहिं तिनहिं विधि वाम॥

सो सुख कर्म धर्म जरि जाऊ ❀ जहँ न राम पद पंकज भाऊ
योग कुयोग ज्ञान अज्ञानू ❀ जहां न राम प्रेम परधानू
तुम बिनु दुखी सुखी तुम तेही ❀ तुम जानहु जिय जो जेहि केही
राउर आयसु शिर सबहीके ❀ विदित कृपालुहिं गति सब नीके
आपु आश्रमहिं धारिय पाऊ ❀ भये सनेह शिथिल मुनिराऊ
करि प्रणाम तब राम सिधाये ❀ ऋषि धरि धीर जनक पहँ आये
राम वचन गुरु नृपहिं सुनाये ❀ शील सनेह सुभाय सुहाये
महाराज अब कीजिय सोई ❀ सब कर धर्म्म सहित हित होई

दो० ज्ञाननिधान सुजान[3] शुचि, धर्म्म धीर नरपाल[4]।
तुम बिनु असमंजस शमन[5], को समर्थ यहि काल॥

सुनि मुनि वचन जनक अनुरागे ❀ लखि गति ज्ञान विराग विरागे
शिथिल सनेह गुणंत[6] मनमाहीं ❀ आये इहां कीन्ह भल नाहीं
रामहिं राव कहेउ वन जाना ❀ कीन्ह आपु प्रिय प्रेम प्रमाना
हम अब वन ते वनहिं पठाई ❀ प्रमुदित फिरब विवेक बढ़ाई
तापस मुनि महीप[7] गति देखी ❀ भये प्रेमवश विकल विशेखी
समय समुझि धरि धीरज राजा ❀ चले भरत पहँ सहित समाजा
भरत आय आगे है लीन्हा ❀ अवसर[8] सरिस सुआसन दीन्हा

१ जनक २ घर ३ चतुर ४ राजा ५ नाशक ६ शोचत ७ राजा ८ समय॥

तात भरत कह तिरहुतिराऊ ❀ तुमहिं विदित रघुवीरस्वभाऊ

दो० राम सत्य व्रत धर्म्मरत, सब कर शील सनेहु।
संकट सहत सँकोचवश, कहिय जो आयसु[1] देहु॥

सुनि तनुपुलकि नयन भरि वारी ❀ बोले भरत धीर धरि भारी
प्रभु प्रिय पूज्य पिता सम आपू ❀ कुलगुरुसम हित माय न बापू
कौशिकादि[2] मुनि सचिव समाजू ❀ ज्ञान अम्बुनिधि आपन आजू
शिशु सेवक आयसु अनुगामी[3] ❀ जानि मोहिं शिष देइय स्वामी
यहि समाज थल बूझब राउर ❀ मन मलीन मैं बोलब बाउर
छोटे वदन कहौं बड़ि बाता ❀ क्षमब तात लखि वाम विधाता
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना ❀ सेवक धर्म्म कठिन जग जाना
स्वामिधर्म स्वारथहि विरोधू ❀ बधिर[4] अन्ध प्रेमहि न प्रबोधू

दो० राखि राम रुख धर्म्म व्रत, पराधीन मोहिं जानि।
सबके सम्मत सर्व हित, करिय प्रेम पहिंचानि॥

भरत वचन सुनि देखि स्वभाऊ ❀ सहित समाज सराहत राऊ
सुगम अगम मृदु मंजु कठोरा ❀ अर्थ अमित[5] अति आखर थोरा
जो मुख मुकुर मुकुर निज पाणी ❀ गहि न जाय अस अद्भुत वाणी
भूप भरत मुनि साधु समाजू ❀ गे जहँ विबुध कुमुद द्विजराजू
सुनि सुधि शोच विकल सब लोगा ❀ मनहुँ मीनगण नवजल योगा
देव प्रथम कुलगुरु गति देखी ❀ निरखि विदेह[6] सनेह विशेखी
राम भक्तिमय भरत निहारे ❀ सुर स्वारथी हहरि हिय हारे
सब कहँ राम प्रेममय पेखा ❀ भये अलेख शोचवश लेखा

दो० राम सनेह सँकोचवश, कह सशोच सुरराज[7]।
रचहु प्रपंचहि पंच मिलि, नाहिंत भयउ अकाज॥

सुरन सुमिरि शारदा सराही ❀ देवि देव शरणागत पाही
फेरु भरतमति करि निजमाया ❀ पालु विबुध[8]कुल करि छलछाया

१ आज्ञा २ विश्वामित्र ३ सेवक ४ बहिरा ५ अप्रमाण ६ जनक ७ इन्द्र ८ देवता॥

विबुध विनय सुनि देवि सयानी ❁ बोली सुरस्वारथि जड़ जानी
मोसन कहहु भरतमति फेरू ❁ लोचन सहस[१] न सूझ सुमेरू
विधि हरि हर माया बड़िभारी ❁ सो न भरतमति सकै निहारी
सो मति मोहिं कहत करु भोरी ❁ चन्द्रनि करै कि चन्द्र कि चोरी
भरतहृदय सियराम निवासू ❁ तहँ कि तिमिर[२] जहँ तरणि[३] प्रकासू
अस कहि शारद गइ विधिलोका ❁ विबुध विकल निशि मानहुँ कोका

दो० सुरस्वारथी मलीन मन, कीन्ह कुमंत्र कुठाट।
रचि प्रपंच मायाप्रबल, भयभ्रम अरत उचाट॥

करि कुचाल शोचत सुरराजू ❁ भरतहाथ सब काज अकाजू
गये जनक रघुनाथ समीपा[४] ❁ मनमाने सब रघुकुलदीपा
समय समाज धर्म्म अविरोधा ❁ बोले तब रघुवंश पुरोधा
जनक भरत संवाद सुनाई ❁ भरत कहावति कही सुहाई
तात राम जस आयसु देहू ❁ सो सब करैं मोर मत येहू
सुनि रघुनाथ जोरि युग पाणी ❁ बोले सत्य सरल मृदु वाणी
विद्यमान आपुन मिथिलेशू ❁ मोर कहा सब भाँति भदेशू
राउर राव रजायसु होई ❁ राउरि शपथ[५] सही शिर सोई

दो० रामशपथ सुनिमुनि जनक, सकुचे सभा समेत।
सकल विलोकहिं भरतमुख, बनै न उत्तर देत॥

सभा सकुचवश भरत निहारी ❁ रामबन्धु धरि धीरज भारी
कुसमय देखि सनेह सँभारा ❁ बढ़त विन्ध्य जिमि घटज[६]निवारा
शोक कनकलोचन[७] मति छोनी ❁ हरी विमलगुणगण जगयोनी
भरतविवेक वराह विशाला ❁ अनायास उघरे तेहि काला
करि प्रणाम सब कहँ करजोरी ❁ राम राव गुरु साधु निहोरी
क्षमब आजु अति अनुचित मोरा ❁ कहउँ बदन मृदुवचन कठोरा
हिय सुमिरी शारदा सुहाई ❁ मानस ते मुख पंकज[८] आई

१ हज़ार २ अँधेरा ३ सूर्य ४ पास ५ सौगन्द ६ अगस्त्य ७ हिरण्याक्ष ८ कमल॥

विमल विवेक धर्मनयशाली ❀ भरत भारती मंजु मराली

दो० निरखि विवेकविलोचनहिं, शिथिल सनेह समाज।
करि प्रणाम बोले भरत, सुमिरि सीय रघुराज॥

प्रभु पितु मातु सुहृद गुरु स्वामी ❀ पूज्य परमहित अन्तरयामी
सरल सुसाहिब शीलनिधानू ❀ प्रणतपाल सरवज्ञ सुजानू
समरथ शरणागत हितकारी ❀ गुणग्राहक अवगुण अघहारी
स्वामि गुसाइँहि सदृश गुसांई ❀ मोहिं समान मैं स्वामि दोहाई
प्रभु पितु वचन मोहवश पेली ❀ आयउँ इहाँ समाज सकेली
जग भल पोचं ऊँच अरु नीचू ❀ अमिय सजीवन माहुर मीचू
राम रजाइं मेटि मन माहीं ❀ देखा सुना कतहुँ कोउ नाहीं
सो मैं सब विधि कीन्ह ढिठाई ❀ प्रभु मानी सनेह सेवकाई

दो० कृपा भलाई आपनी, नाथ कीन्ह भल मोर।
दूषण भे भूषणसरिस, सुयश चारु चहुँ ओर॥

राउर रीति सुवाणि बड़ाई ❀ जगतविदित निगमागम गाई
क्रूर कुटिल खल कुमति कलंकी ❀ नीच निशील निरीशं निशंकी
तेउ सुनि शरण सामुहे आये ❀ सकृत प्रणाम किये अपनाये
देखि दोष कबहुँ न उरं आने ❀ सुनि गुण साधु समाज बखाने
को साहिब सेवकहि निवाजी ❀ आपु समान साज सब साजी
निज करतूति न समुझिय सपने ❀ सेवक सकुच शोच उर अपने
सो गुसाइँ नहिं दूसर कोपी ❀ भुजा उठाइ कहौं प्रण रोपी
पशु नाचत शुकं पाठप्रवीना ❀ गुणगति नटपाठक आधीना

दो० सो सुधारि सनमानि जन, किये साधु शिरमोर।
को कृपालु बिनु पालिहै, विरदावलि बरजोर॥

शोक सनेह कि बाल सुभाये ❀ आयउँ लाइ रजायसु बाँये
तबहुँ कृपालु हेरि निज ओरा ❀ सबहिं भांति भल मानेहु मोरा

१ वाणी २ पाप ३ बुरा ४ अमृत ५ आज्ञा ६ स्वतन्त्र ७ हृदय ८ तोता ९ आज्ञा॥

देखेउँ पाँय सुमंगलमूला ❀ जानेउँ स्वामि सहज अनुकूला
बड़े समाज विलोकेउँ भागू ❀ बड़ी चूक साहिब अनुरागू
कृपा अनुग्रह अंग अघाई ❀ कीन्ह कृपानिधि सब अधिकाई
राखा मोर दुलार गुसांई ❀ अपने शील स्वभाव भलाई
नाथ निपट मैं कीन्ह ढिठाई ❀ स्वामिसमाज सँकोच विहाई[2]
अविनय विनय यथारुचि बानी ❀ क्षमिय देव अतिआरत[3] जानी

दो॰ सुहृद सुजान सुसाहिबहि, बहुत कहब बड़ि खोरि।
आयसु देइय देव अब, सबै सुधारिय मोरि॥

प्रभुपद पद्म[4] पराग दुहाई ❀ सत्य सुकृत सुखसींव सुहाई
सो करि कहौं हिये अपने की ❀ रुचि जागत सोवत सपने की
सहज सनेह स्वामि सेवकाई ❀ स्वारथ छल फल चारि विहाई
आज्ञासम न सुसाहिब सेवा ❀ सो प्रसाद जन पावै देवा
अस कहि प्रेमविवश भे भारी ❀ पुलक शरीर विलोचन वारी[5]
प्रभु पदकमल गहे अकुलाई ❀ समय सनेह न सो कहि जाई
कृपासिन्धु सनमानि सुवाणी ❀ बैठाये समीप गहि पाणी[6]
भरतविनय सुनि देखि स्वभाऊ ❀ शिथिल सनेह सभा रघुराऊ

छं॰ रघुराउशिथिलसनेहसाधुसमाजमुनिमिथिलाधनी।
मन महँ सराहत भरत भायप भक्ति की महिमा घनी॥
भरतहिं प्रशंसत विबुध बरषत सुमन[7] मानसमलिनसे।
तुलसी विकल सब लोग सुनि सकुचे निशागम[8]नलिनसे॥

सो॰ देखि दुखारी दीन, दुहुँ समाज नर नारि सब।
मघवा[9] महामलीन, मुये मारि मंगल चहत॥

कपट कुचालि सींव सुरराजू ❀ पर अकाज प्रिय आपन काजू
काकसमान पाकरिपु[10] रीती ❀ छली मलीन न कतहुँ प्रतीती

१ प्रसन्न २ छोड़के ३ दुःखी ४ कमल ५ जल ६ हाथ ७ पुष्प ८ सन्ध्या ९-१० इन्द्र॥

प्रथम कुमति करि कपट सकेला ❀ सो उचाट सबके शिर मेला
सुरमाया सब लोग विमोहे ❀ रामप्रेम अतिशय न बिछोहे
भय उचाट वश मन थिर नाहीं ❀ क्षण बनरुचि क्षण सदनै सुहाहीं
द्विविध मनोगति प्रजा दुखारी ❀ सरित सिंधु संगम जिमि वारी
द्विचित कतहुँ परितोष न लहहीं ❀ एक एकसन मर्म न कहहीं
लखि हिय हँसि कह कृपानिधानू ❀ सरिस श्वान[२] मघवा निजबानू

दो० भरत जनक मुनिगण सचिव, साधु सचेत विहाइ।
लगी देवमाया सबहिं, यथायोग्य जन पाइ॥

कृपासिंधु लखि लोग दुखारे ❀ निजसनेह सुरपति छल भारे
सभा राव गुरु महिसुर[३] मंत्री ❀ भरतभक्ति सबकी मतियंत्री
रामहिं चितवत चित्र लिखेसे ❀ सकुचत बोलत वचन सिखेसे
भरत प्रीति नय विनय बड़ाई ❀ सुनत सुखद वरणत कठिनाई
जासु विलोकि भक्ति लवलेशू ❀ प्रेममगन मुनिगण मिथिलेशू[४]
महिमा[५] तासु कहै किमि तुलसी ❀ भक्तिप्रभाव सुमति हिय हुलसी
आपु छोट महिमा बड़ि जानी ❀ कविकुलकानि मानि सकुचानी
कहि न सकत गुण रुचि अधिकाई ❀ मतिगति बालवचन की नाई

दो० भरतविमलयशविमलविधु[६], सुमति चकोरकुमारि।
उदित विमलजनहृदय नभ, इकटक रही निहारि॥

भरतस्वभाव न सुगम निगमहू[७] ❀ लघुमति चापलता कवि क्षमहू
कहत सुनत सतिभाव भरत को ❀ सीय राम पद होइ न रत को
सुमिरत भरतहिं प्रेम राम को ❀ जेहि न सुगम तेहि सरिस वाम को
देखि दयालु दशा सब ही की ❀ राम सुजान जानि जन जी की
धर्मधुरीण धीर नयनागर[८] ❀ सत्य सनेह शील सुखसागर
देशकाल लखि समय समाजू ❀ नीति प्रीति पालक रघुराजू
बोले वचन वाणि सरबससे ❀ हितपरिणाम सुनत शशिरसे[९]

१ घर २ कुत्ता ३ ब्राह्मण ४ जनक ५ बड़ाई ६ चन्द्रमा ७ वेद ८ चतुर ९ अमृत॥

तात भरत तुम धर्मधुरीणा ❀ लोक वेद विधि परम प्रवीणा

दो० कर्मवचन मानस विमल, तुम समान तुम तात।
गुरुसमाज लघु बंधु गुण, कुसमयकिमिकहि जात॥

जानहु तात तरणिकुल रीती ❀ सत्यसन्ध पितु कीरति प्रीती
समय समाज लाज गुरुजन की ❀ उदासीन हित अनहित मन की
तुमहिं विदित सबही कर मर्मू ❀ आपन मोर परम हित धर्मू
मोहिं सब भाँति भरोस तुम्हारा ❀ तदपि कहौं अवसर अनुसारा
तात तात बिनु बात हमारी ❀ केवल कुलगुरु कृपा सम्हारी
नतरु प्रजा पुरजन परिवारू ❀ हमहिं सहित सब होत दुखारू
जो बिनु अवसर अथव दिनेशू ❀ जग केहि कहौ न होइ कलेशू
तस उत्पात तात विधि कीन्हा ❀ मुनि मिथिलेश राखि सब लीन्हा

दो० राजकाज सब लाज पति, धर्म धरणि धन धाम।
गुरुप्रभाव पालिहि सबहिं, भल होइहि परिणाम॥

सहित समाज तुम्हार हमारा ❀ घर वन गुरुप्रसाद रखवारा
मातु पिता गुरु स्वामि निदेशू ❀ सकल धर्म धरणीधर शेशू
सो तुम करहु करावहु मोहू ❀ तात तरणिकुलपालक होहू
साधन एक सकल सिधि देनी ❀ कीरति सुगति भूतिमय वेनी
सो विचारि सहि संकट भारी ❀ करहु प्रजा परिवार सुखारी
बाँटि विपति सबही मिलि भाई ❀ तुमहिं अवधि भरि अति कठिनाई
जानि तुमहिं मृदु कहौं कठोरा ❀ कुसमय तात न अनुचित मोरा
होहिं कुठाँव कुबन्धु सुहाये ❀ आड़िय हाथ अशनि के घाये

दो० सेवक कर पद नयन से, मुख से साहिब होइ।
तुलसी प्रीति कि रीति सुनि, सुकवि सराहहिं सोइ॥

सभा सकल सुनि रघुवरबानी ❀ प्रेमपयोधि अमिय जनु सानी
शिथिल समाज सनेह समाधी ❀ देखि दशा चुप शारद साधी

१ चतुर २ सूर्यवंश ३ सत्यसंकल्प ४ ब्रह्मा ५ आज्ञा ६ यश ७ हद ८ वज्र ९ समुद्र॥

भरतहिं भयउ परम संतोषू ❀ सम्मुख स्वामि विमुख दुख दोषू
मुख प्रसन्न मन मिटा विषादू ❀ भा जनु गूँगहि गिरा[1] प्रसादू
कीन्ह सप्रेम प्रणाम बहोरी ❀ बोले पाणिपंकरुह[2] जोरी
नाथ भयो सुख साथ गये को ❀ लहेउँ लाभ जग जन्म भये को
अब कृपालु जस आयसु होई ❀ करौं शीश धरि सादर सोई
सो अवलम्ब देव मोहिं देवा ❀ अवधि पार पावउँ जेहि सेवा

दो० देव देव अभिषेक हित, गुरु अनुशासन पाइ।
आनेउँ सब तीरथसलिल[3], तेहि कहँ काह रजाइ॥

एक मनोरथ बड़ मन माहीं ❀ सभय सकोच जात कहि नाहीं
कहहु तात प्रभु आयसु पाई ❀ बोले वाणि सनेह सुहाई
चित्रकूट मुनि थल तीरथ वन ❀ खग मृग सर सरि निर्भर गिरिगन
प्रभुपद अंकित अवनि[4] विशेखी ❀ आयसु होय तौ आवौं देखी
अवशि अत्रि आयसु शिर धरहू ❀ तात विगतभय कानन[5] चरहू
मुनिप्रसाद वन मंगल दाता ❀ पावन[6] परम सुहावन भ्राता
ऋषिनायक जहँ आयसु देहीं ❀ राखेहु तीरथजल थल तेहीं
सुनि प्रभुवचन भरत सुख पावा ❀ मुनिपदकमल मुदित शिरनावा

दो० भरतराम संवाद सुनि, सकल सुमंगल मूल।
सुर स्वारथी सराहि कुल, हरषित वर्षहिं फूल॥

धन्य भरत जय राम गुसाँई ❀ कहत देव हर्षत बरिआई
मुनि मिथिलेशसभा सब काहू ❀ भरतवचन सुनि भयउ उछाहू
भरत राम गुणग्राम सनेहू ❀ पुलकि प्रशंसत राव विदेहू
सेवक स्वामि सुभाव सुहावन ❀ नेम प्रेम अति पावन पावन
मति अनुसार सराहन लागे ❀ सचिव[7] सभासद अति अनुरागे
सुनि सुनि राम भरत संवादू ❀ दुहुँ समाज हिय हर्ष विषादू
राम मातु दुख सुख सम जाना ❀ काह गुण दोष प्रबोधी[8] रानी

१ वाणी २ कमल ३ जल ४ पृथ्वी ५ वन ६ पवित्र ७ मंत्री ८ समझाया॥

एक करहिं रघुवीर बड़ाई ❀ एक सराहत भरत भलाई

दो॰ अत्रि कहेउ तब भरतसन, शैल समीप सुकूप।
राखिय तीरथतोयं तहँ, पावन अमल अनूप॥

भरत अत्रि अनुशासन पाई ❀ जलभाजन[2] सब दिये चलाई
सानुज आपु अत्रिमुनि साधू ❀ सहित गये जहँ कूप अगाधू
पावन पाथ पुण्य थल राखा ❀ प्रमुदित प्रेम अत्रि अस भाखा
तात अनादि सिद्ध थल येहू ❀ लोपेउ काल विदित नहिं केहू
तब सेवकन सरस थल देखा ❀ कीन्ह सुजल हित कूप विशेखा
विधिवश भयउ बिश्व उपकारू ❀ सुगम अगम अति धर्मविचारू
भरतकूप अब कहिहहिं लोगा ❀ अति पावन तीरथजल योगा
प्रेम सनेह निमज्जहिं[3] प्राणी ❀ होइहि विमल[4] कर्म मन वाणी

दो॰ कहत कूपमहिमा[5] सकल, गये जहाँ रघुराव।
अत्रि सुनायहु रघुवरहिं, तीरथ पुण्य प्रभाव॥

कहत धर्म इतिहास सप्रीती ❀ भयउ भोर निशि सो सुख बीती
नित्य निबाहि भरत दोउ भाई ❀ राम अत्रि गुरुआयसु पाई
सहित समाज साज सब सादे ❀ चले राम वन अटन[6] पयादे
कोमल चरण चलत बिनु पनहीं ❀ भै मृदु भूमि सकुचि मन मनहीं
कुश कंटक काँकरी कुराई ❀ कटुक कठोर कुवस्तु दुराई
महि मंजुल मृदु मारग कीन्हे ❀ बहत समीर[7] त्रिविधि सुख लीन्हे
सुमन वरषि सुर घन करि छाहीं ❀ विटप फूल फलदल मृदुलाहीं
मृग[8] विलोकि खग बोलि सुबानी ❀ सेवहिं सकल राम प्रिय जानी

दो॰ सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु, राम कहत जमुहात।
राम प्राणप्रिय भरत कहँ, यह न होइ बड़िबात॥

यहि विधि भरत फिरत वन माहीं ❀ नेम प्रेम लखि मुनि सकुचाहीं
पुण्य जलाशय भूमि विभागा ❀ खग[9] मृग तरु तृण गिरि बनबागा

१ जल २ बर्तन ३ स्नान ४ निर्मल ५ बड़ाई ६ घूमना ७ पवन ८ हरिण ९ पक्षी॥

चारु विचित्र पवित्र विशेखी ❀ बूझत भरत दिव्य सब देखी
सुनि मन मुदित कहत ऋषिराऊ ❀ हेतु नामगुण पुण्य प्रभाऊ
कतहुँ निमज्जन कतहुँ प्रणामा ❀ कतहुँ विलोकत वन अभिरामा
कतहुँ बैठि मुनि आयसु पाई ❀ सुमिरत सीयसहित दोउ भाई
देखि स्वभाव सनेह सुसेवा ❀ देहिं अशीश मुदित मन देवा
फिरहिं गये दिन पहर अढ़ाई ❀ प्रभुपदकमल विलोकहिं आई

दो॰ देखे थल तीरथ सकल, भरत पाँच दिन माँझ।
कहत सुनत हरिहर सुयश, गयउ दिवस भइ साँझ॥

भोर न्हाइ सब जुरा समाजू ❀ भरत भूमिसुर तिरहुतिराजू
भल दिन आजु जानि मन माहीं ❀ रामकृपालु कहत सकुचाहीं
गुरु नृप भरतसभा अवलोकी ❀ सकुचि राम फिरि अवनि विलोकी
शील सराहि सभा सब शोची ❀ कहुँ न रामसम स्वामि सँकोची
भरत सुजान रामरुख देखी ❀ उठि सप्रेम धरि धीर विशेखी
करि दण्डवत कहत करजोरी ❀ राखी नाथ सकल रुचि मोरी
मोहिं लगि सबहिं सहेउ संतापू ❀ बहुत भाँति दुख पावा आपू
अब गुसाइँ मोहिं देहु रजाई ❀ सेवौं अवध अवधि लगि जाई

दो॰ जेहि उपाय पुनि पाँयजन, देखै दीनदयालु।
सो शिष देइय अवधिलगि, कोशलपाल कृपालु॥

पुरजन परिजन प्रजा गुसाँई ❀ सब शुचि सरस सनेह सगाई
राउर बदि भल भव दुखदाहू ❀ प्रभु बिनु बादि परमपद लाहू
स्वामि सुजान जानि सब ही की ❀ रुचि लालसा रहनि जन जी की
प्रणतपाल पालहिं सब काहू ❀ देव दुहूँ दिशि ओर निबाहू
अब मोहिं सबविधि भूरि भरोसो ❀ किये विचार न शोच खरोसो
आरति मोरि नाथ कर छोहू ❀ दुहुँ मिलि कीन्ह ढीठ हठि मोहू
यह बड़ दोष दूरि करि स्वामी ❀ तजि सँकोच सिखइय अनुगामी

१ आज्ञा २ देखहिं ३ जनक ४ पृथ्वी ५ दुःख ६ हद ७ चतुर ८ सेवक॥

भरतविनय मुनि सबहिं प्रशंसा ❀ क्षीर[१] नीर विवरणगति हंसा

दो॰ दीनबन्धु मुनि बन्धु के, वचन दीन छलहीन।
देश काल अवसर सरिस, बोले राम प्रवीन॥

तात तुम्हारि मोरि परिजन की ❀ चिन्ता गुरुहिं नृपहिं घर वन की
माथे पर गुरु मुनि मिथिलेशू[२] ❀ हमहिं तुमहिं सपनेहुँ न कलेशू
मोर तुम्हार परम पुरुषारथ ❀ स्वारथ सुयश धर्म परमारथ
पितु आयसु[३] पालिय दुहुँ भाई ❀ लोक वेद भल भूप भलाई
गुरु पितु मातु स्वामिशिष पालै ❀ चलत सुमगु पग परत न खालै
अस विचारि सब शोच विहाई ❀ पालहु अवध अवधिभरि जाई
देश कोश पुरजन परिवारू ❀ गुरुपदरजहि लाग छरभारू
तुम मुनि मातु सचिवशिष मानी ❀ पालहु पुहुमि[४] प्रजा रजधानी

दो॰ मुखिया मुख सों चाहिये, खान पान को एक।
पालै पोषै सकल अँग, तुलसी सहित विवेक॥

राजधर्म्म सरबस इतनोई ❀ जिमि मन माहिं मनोरथ गोई
बन्धु प्रबोध कीन्ह बहुभांती ❀ बिनु अधार मन तोष न शांती
भरतशील गुरु सचिव समाजू ❀ सकुच सनेह विवश रघुराजू
प्रभु करि कृपा पाँवरी[५] दीन्हीं ❀ सादर भरत शीश धरि लीन्हीं
चरणपीठि करुणानिधान के ❀ जनु युग यामिक[६] प्रजाप्रान के
सम्पुट भरत सनेह रतन के ❀ आखर युग जनु जीवजतन के
कुल कपाट कर कुशल कर्म के ❀ विमल नयन सेवा सुधर्म के
भरत मुदित अवलम्ब लहे ते ❀ अस सुख जस सिय राम रहे ते

दो॰ माँगेउ विदा प्रणामकरि, राम लिये उरलाय।
लोग उचाटे अमरपति[७], कुटिल कुअवसर पाय॥

सो कुचाल सब कहँ भइ नीकी ❀ अवधिआश सब जीवन जी की
नतरु लषणसियराम वियोगा ❀ हहरि[८] मरत सब लोग कुरोगा

१ दूध २ जनक ३ आज्ञा ४ पृथ्वी ५ खड़ाऊँ ६ पहरुआ ७ इन्द्र ८ हाय हाय कर॥

राम कृपा अवरेव सुधारी ❀ विबुधधार भइ गुणद गुहारी
भेंटत भुज भरि भाइ भरत सो ❀ राम प्रेमरस कहि न परत सो
तन मन वचन उमँगि अनुरागा ❀ धीर धुरन्धर धीरज त्यागा
वारिजलोचन[1] मोचत वारी ❀ देखि दशा सुरसभा दुखारी
मुनिगण गुरुजन धीर जनकसे ❀ ज्ञान अनल मन कसे कनकसे
जे विरंचि निर्लेप उपाये ❀ पद्मपत्र[2] जिमि जल जगजाये

दो० तेउ विलोकि रघुवर भरत, प्रीति अनूप अपार।
भये मगन तन मन वचन, सहित विराग विचार॥

जहाँ जनक गुरुगति मति भोरी ❀ प्राकृत प्रीति कहत बड़ि खोरी
वर्णत रघुवर भरत वियोगू[3] ❀ सुनि कठोर कवि जानहिं लोगू
सो सँकोचवश अकथ सुबानी ❀ समय सनेह समुझि सकुचानी
भेंटि भरत रघुवर समुझाये ❀ पुनि रिपुदमन[4] हरषि हियलाये
सेवक सचिव भरत रुख पाई ❀ निज निज काज लगे सब जाई
सुनि दारुण[5] दुख दुहूँ समाजा ❀ लगे चलन के साजन साजा
प्रभु पदपद्म वन्दि दोउ भाई ❀ चले शीश धरि राम रजाई[6]
मुनि तापस वनदेव निहोरी ❀ सब सनमानि बहोरि बहोरी

दो० लषणहिं भेंटि प्रणामकरि, शिर धरि सियपदधूरि।
चले सप्रेम अशीश सुनि, सकल सुमंगलमूरि॥

सानुज राम नृपहिं शिरनाई ❀ कीन्हीं बहुविधि विनय बड़ाई
देव दयावश बड़ दुख पायहु ❀ सहित समाज काननहिं[7] आयहु
पुर पगु धारिय देइ अशीशा ❀ कीन्ह धीर धरि गमन महीशा[8]
मुनि महिदेव साधु सनमाने ❀ बिदा किये हरिहर सम जाने
सासु समीप गये दोउ भाई ❀ फिरे वन्दि पद आशिष पाई
कौशिक वामदेव जाबाली ❀ परिजन पुरजन सचिव सुचाली
यथायोग्य करि विनय प्रणामा ❀ बिदा किये सब सानुज रामा

---

१ कमलनयन २ कमलपत्र ३ जुदाई ४ शत्रुघ्न ५ कठिन ६ आज्ञा ७ वन ८ राजा॥

नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे ❀ सब सनमानि कृपानिधि[1] फेरे

दो० भरतमातु सब वन्दि प्रभु, शुचिसनेह मिलि भेंटि।
बिदाकीन्ह सजि पालकी, सकुच शोच सब मेटि॥

परिजन[2] मातु पितहि मिलि सीता ❀ फिरी प्राणप्रिय प्रेम पुनीता
करि प्रणाम भेंटीं सब सासू ❀ प्रीति कहत कवि हिय न हुलासू
मुनि शिष अभिमत[3] आशिष पाई ❀ रही सीय दुहुँ प्रीति समाई
रघुपति पट पालकी मँगाई ❀ करि प्रबोध सब मातु चढ़ाई
बारहिं बार मिले दोउ भाई ❀ सम सनेह जननी पहुँचाई
साजि वाजि गज वाहन नाना ❀ भूप भरतदल कीन्ह पयाना[4]
हृदय राम सिय लषण समेता ❀ चले जाहिं सब लोग अचेता
बसहं[5] वाजि गज पशु हिय हारे ❀ चले जाहिं परवश मन मारे

दो० गुरु गुरुतिय पद वन्दि प्रभु, सीता लषण समेत।
फिरे हर्ष विस्मय सहित, आये पर्णनिकेत॥

बिदा कीन्ह सनमानि निषादू ❀ चलेउ हृदय बड़ विरह विषादू
कोल किरात भिल्ल वनचारी ❀ फेरे फिरे जोहारि जोहारी
प्रभु सिय लषण बैठि वट छाहीं ❀ प्रिय परिजन वियोग बिलखाहीं
भरत सनेह सुभाव सुबानी ❀ प्रिया अनुजसन कहत बखानी
प्रीति प्रतीति वचन मन करणी ❀ श्रीमुख राम प्रेमवश वरणी
तेहि अवसर खग मृग जलमीना[6] ❀ चित्रकूट चर अचर मलीना
विबुध विलोकि दशा रघुवर की ❀ वरषि सुमन[7] कहि गति घर घर की
प्रभु प्रणाम करि दीन्ह भरोसो ❀ चले मुदित मन डर न खरोसो

दो० सानुज सीय समेत प्रभु, राजत पर्णकुटीर।
भक्ति ज्ञान वैराग्य जनु, सोहत धरे शरीर॥

मुनि महिसुर गुरु भरत भुवालू ❀ रामविरह सब साज बिहालू
प्रभुगुणग्राम गुणत मन माहीं ❀ सब चुपचाप चले मगु[8] जाहीं

---

१ दयासागर २ प्रजा लोग ३ वांछित ४ कूच ५ बैल ६ मछली ७ पुष्प ८ रास्ता॥

यमुना उतरि पार सब भयऊ ❁ सो वासर बिनु भोजन गयऊ
उतरि देवसरि[1] दूसर वासू ❁ राम सखा सब कीन्ह सुपासू
सई उतरि गोमती नहाये ❁ चौथे दिवस अवधपुर आये
जनक रहे पुर वासर[2] चारी ❁ राजकाज सब साज सँभारी
सौंपि सचिव गुरु भरतहिं राजू ❁ तिरहुति चले साजि सब साजू
नगर नारि नर गुरुशिष मानी ❁ बसे सुखेन राम रजधानी

दो० रामदरश हित लोग सब, करत नेम उपवास।
तजितजि भूषणभोग सुख, जियतअवधिकीआस॥

सचिव[3] सुसेवक भरत प्रबोधे ❁ निज निज काज पाइ शिष शोधे
पुनि शिष दीन्ह बोलि लघु भाई ❁ सौंपी सकल मातु सेवकाई
भूसुर[4] बोलि भरत करजोरे ❁ करि प्रणाम वर विनय निहोरे
ऊँच नीच कारज भल पोचू ❁ आयसु देब न करब सँकोचू
परिजन पुरजन प्रजा बुलाये ❁ समाधान करि सुबस बसाये
सानुज गे गुरु गेह[5] बहोरी ❁ करि दण्डवत कहत करजोरी
आयसु होय तो रहौं सनेमा ❁ बोले मुनि तब पुलकि सप्रेमा
समुझब कहब करब तुम सोई ❁ धर्म्म सार जग कहँ हित होई

दो० मुनि शिषपाइ अशीशबड़ि, गणक[6]बोलिदिनसाधि।
सिंहासन प्रभु पादुका, बैठारी निरुपाधि॥

राम मातु गुरुपद शिर नाई ❁ प्रभु पद पीठि रजायसु पाई
नन्दिग्राम करि पर्णकुटीरा ❁ कीन्ह निवास धर्म्मधुरधीरा
जटाजूट शिर मुनिपट धारी ❁ महि खनि कुशसाथरी सँवारी
अशन[7] वसन बासन व्रत नेमा ❁ करत कठिन ऋषिधर्म्म सप्रेमा
भूषण वसन भोग सुखभूरी ❁ मन क्रम वचन तजे तृणतूरी
अवधराज सुरराज सिहाहीं ❁ दशरथधन लखि धनद[8] लजाहीं
तेहिपुर बसत भरत बिनु रागा ❁ चञ्चरीक[9] जिमि चम्पक बागा

१ गंगाजी २ दिन ३ मन्त्री ४ ब्राह्मण ५ घर ६ ज्योतिषी ७ भोजन ८ कुबेर ९ भ्रमर॥

रमा विलास राम अनुरागी ❀ तजत बमन जिमि नर बड़भागी

दो० रामप्रेम भाजन भरत, बड़ी न यह करतूति।
चातक हंस सराहियत, टेक विवेक विभूति॥

देह दिनहिं दिन दूबरि होई ❀ घट न तेज बल मुखछवि सोई
नित नव राम प्रेम प्रण पीना ❀ बढ़त धर्म्मदल मन न मलीना
जिमि जल निघटत शरदप्रकासे ❀ विलसत वियत सुवनंज विकासे
शम दम संयम नेम उपासा ❀ नखत भरतहिय विमल अकासा
ध्रुव विश्वास अवधि राकासी ❀ स्वामि सुरति सुरवीथि विकासी
रामप्रेम विधु अचल अदोखा ❀ सहित समाज सोह नित चोखा
भरत रहनि समुझनि करतूती ❀ भक्ति विरति गुण विमल विभूती
वरणत सकल सुकवि सकुचाहीं ❀ शेश गणेश गिरा गमनाहीं

दो० नित पूजत प्रभु पाँवरी, प्रीति न हृदय समाति।
माँगिमाँगि आयसु करत, राजकाज बहुभाँति॥

पुलकगात हिय सिय रघुवीरू ❀ जीभ नाम जपु लोचन नीरू
लषण राम सिय कानन बसहीं ❀ भरत भवन बसि तप तनु कसहीं
दुहुँदिशि समुझि कहत सब लोगू ❀ सब विधि भरत सराहन योगू
सुनि व्रत नेम साधु सकुचाहीं ❀ देखि दशा मुनिराज लजाहीं
परम पुनीत भरत आचरनू ❀ मधुर मंजु मृदु मंगलकरनू
हरण कठिन कलिकलुष कलेशू ❀ महामोह निशि दलन दिनेशू
पापपुंजकुंजर मृगराजू ❀ शमन सकल सन्ताप समाजू
जनरंजन भंजन भवभारू ❀ राम सनेह सुधा कर सारू

छं० सियराम प्रेमपियूष पूरण होत जन्म न भरतको।
मुनिमनअगमयमनियमशमदमविषमव्रत आचरतको
दुखदाह दारिद दम्भ दूषण सुयश मिसु अपहरतको।

१ कमल २ जल ३ पातक ४ सूर्य ५ ढेर ६ हाथी ७ सिंह ८ संसार ९ अमृत १० दस्तूर॥

कलिकाल तुलसीसे शठहि हंठि[1] रामसम्मुख करतको ॥
सो॰ भरतचरित करि नेम, तुलसी जे सादर[2] सुनहिं ।
सीय राम पद प्रेम, अवशि होइ भवरस[3] विरांति[4] ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने अयोध्याकाण्डे
विमलविज्ञानवैराग्यसम्पादनो नाम द्वितीयस्सोपानः ॥ २ ॥

१ ज़बरदस्ती २ आदरसमेत ३ संसार ४ विराग ॥

श्रीगोस्वामि

तुलसीदासकृत रामायण

आरण्यकाण्ड

मङ्गलाचरणम् ।

श्लोक । मूलं धर्मतरोर्विवेकजलधौ पूर्णेन्दुमानन्ददं वैराग्याम्बुजभास्करं त्वघहरं ध्वान्तापहं तापहम् । मोहाम्भोधरपुञ्जपाटनविधौ खे संभवं शङ्करं वन्दे ब्रह्मकुलं कलङ्कशमनं श्रीरामभूपप्रियम् ॥ १ ॥ सान्द्रानन्दपयोदसौभगतनुं पीताम्बरं सुन्दरं पाणौ बाणशरासनं कटिलसत्तूणीरभारं वरम् । राजीवायतलोचनं धृतजटाजूटेन संशोभितं सीतालक्ष्मणसंयुतं पथिगतं रामाभिरामं भजे ॥ २ ॥

सो० उमा रामगुण गूढ़, पण्डित मुनि पावहिं विरति ।
पावहिं मोह विमूढ़, जे हरिविमुख न धर्मरति ॥

पूरण भरत प्रीति मैं गाई ❀ मति अनुरूप अनूप सुहाई

अब प्रभुचरित सुनो अति पावन[1] ❋ करत जो वन सुरनरमुनि भावन
एक बार चुनि कुसुम सुहाये ❋ निज कर भूषण राम बनाये
सीतहिं पहिराये प्रभु सादर ❋ बैठे फटिक शिला परसादर
सुरपतिसुत धरि वायस[2]बेखा ❋ शठ चाहत रघुपतिबल देखा
जिमि पिपीलिका[3] सागर थाहा ❋ महामन्दमति पावन चाहा
सीताचरण चोंच हति भागा ❋ मूढ़ मन्दमति कारण कागा
चला रुधिर रघुनायक जाना ❋ सींक धनुष शायक सन्धाना

दो० अति कृपालु रघुनायक, सदा दीन पर नेह।
तासन आइ कीन्ह छल, मूरुख अवगुणगेह॥

बिनुऽपराध प्रभु हतैं न काहू ❋ अवसर परे ग्रसै शशि राहू
जब प्रभु लीन्ह धनुष सिक बाना ❋ क्रोध जानि भा अनल[4] समाना
प्रेरित मन्त्र ब्रह्मशर धावा ❋ चला भागि वायस भय पावा
धरि निज रूप गयउ पितु पाहीं ❋ राम विमुख राखा तिन नाहीं
भा निराश उपजी हिय त्रासा ❋ यथा चक्र भय ऋषि दुर्वासा
ब्रह्मधाम शिवपुर सब लोका ❋ फिरा श्रमित व्याकुल भयशोका
काहू बैठन कहा न ओही ❋ राखि को सकै रामकर द्रोही
मातु मृत्यु पितु शमन[5] समाना ❋ सुधा होइ विष सुनु हरियाना[6]
मित्र करै शत रिपुकै करणी ❋ ता कहँ विबुधनँदी[7] वैतरणी
सब जग ताहि अनल ते ताता ❋ जो रघुवीरविमुख सुनु भ्राता

दो० जिमिजिमिभाजतशक्रसुत[8], व्याकुलअतिदुखदीन
तिमितिमि धावत रामशर, पाछे परम प्रबीन॥

बचहि उरग[9] बरु ग्रसे खगेशा ❋ रघुपति शर छुटि बचब अँदेशा
नारद देखा विकल जयन्ता ❋ लागि दया कोमलचित सन्ता
दूरिहिते कहि प्रभु प्रभुताई ❋ भजे जात बहु विधि समुझाई
पठवा तुरत राम पहँ ताही ❋ कहसि पुकारि प्रणतहित पाही

१ पवित्र २ कौवा ३ चींटी ४ अग्नि ५ यम ६ गरुड़ ७ गंगाजी ८ जयंत ९ सर्प॥

आतुर सभय गहेसि पद जाई ❀ त्राहि त्राहि दयालु रघुराई
अतुलित बल अतुलित प्रभुताई ❀ मैं मतिमन्द जानि नहिं पाई
निजकृत कर्मजनित फल पायउँ ❀ अब प्रभु पाहि शरण तकि आयउँ
मुनि कृपालु अति आरत बानी ❀ एक नयन करि तजा भवानी

सो॰ कीन्ह मोहवश द्रोह, यद्यपि तेहिकर वध उचित।
प्रभु छाँड़ेउ करि छोह, को कृपालु रघुवीरसम॥

रघुपति चित्रकूट बसि नाना ❀ चरित करत श्रुति सुधासमाना
बहुरि राम अस मन अनुमाना ❀ होइहि भीर सबहिं मोहिं जाना
सकल मुनिन सन बिदा कराई ❀ सीता सहित चले दोउ भाई
अत्री के आश्रम प्रभु गयऊ ❀ सुनत महामुनि हरषित भयऊ
पुलकित गात अत्रि उठि धाये ❀ देखि राम आतुर चलि आये
करत दण्डवत मुनि उर लाये ❀ प्रेमवारि दोउ जन नहवाये
देखि रामछवि नयन जुड़ाने ❀ सादर निज आश्रम तब आने
करि पूजा कहि वचन सुनाये ❀ दिये मूल फल प्रभु मन भाये

सो॰ प्रभु आसन आसीन[3], भरि लोचन शोभानिरखि।
मुनिवर परम प्रबीन, जोरि पाणि[4] अस्तुति करत॥

छं॰ नमामि भक्तवत्सलं * कृपालु शीलकोमलं॥
भजामि ते पदाम्बुजं * अकामिनां[5] स्वधामदं[6]॥
निकाम श्यामसुन्दरं * भवाम्बुनाथ मन्दरं॥
प्रफुल्ल कञ्ज[7] लोचनं * मदादि दोष मोचनं॥
प्रलम्ब बाहु विक्रमं * प्रभो प्रमेय वैभवं॥
निषंग चाप शायकं * धरं त्रिलोक नायकं॥
दिनेश[8] वंश मण्डनं * महेश चाप खण्डनं॥
मुनीन्द्र सन्त रंजनं * सुरारि[9] वृन्द भंजनं॥

---

१ शीघ्र २ वैर ३ बैठे हुए ४ हाथ ५ निष्कामी ६ वैकुण्ठ ७ कमल ८ सूर्य ९ शिव॥

मनोज वैरि वन्दितं * अजादि देव सेवितं ॥
विशुद्ध बोध विग्रहं * समस्त दुःख तापहं ॥
नमामि इन्दिरापतिं * सुखाकरं सतां गतिं ॥
भजे सशक्ति सानुजं * शचीपति प्रियानुजं ॥
त्वदंघ्रिमूल ये नरा * भजन्ति हीन मत्सरा ॥
पतन्ति नो भवार्णवे * वितर्क वीचि संकुले ॥
विविक्तवासिनो यदा * भजन्ति मुक्तिदं मुदा ॥
निरस्य इन्द्रियादिकं * व्रजंन्ति ते गतिस्वकं ॥
त्वमेकमद्भुतं प्रभुं * निरीह[2]मीश्वरं विभुं ॥
जगद्गुरुं च शाश्वतं * तुरीयमेव केवलं ॥
भजामि भाववल्लभं * कुयोगिनां सुदुर्ल्लभं ॥
स्वभक्त कल्पपादपं * समस्त सेऽव्यमन्वहं ॥
अनूप रूप भूपतिं * नतोहमुर्विजा पतिं ॥
प्रसीद मे नमामि ते * पदाब्जभक्ति देहि मे ॥
पठन्ति ये स्तवं[3] इदं * नरादरेण ते पदं ॥
व्रजन्ति नात्र[4] संशयं * त्वदीय भक्ति संयुतं ॥

दो० बिनती करि मुनि नाइ शिर, कह कर जोरि बहोरि।
चरणसरोरुह[5] नाथ जनि, कबहुँ तजै मति मोरि॥

देखि राम मुनि विनय प्रणामा ❀ विविधि भाँति पायउ विश्रामा
जन्म जन्म तव पद सुखकन्दा ❀ बढ़ै प्रेम चकोर जिमि चन्दा
अनसूया के पद गहि सीता ❀ मिली बहोरि सुशील विनीता
जो सिय सकल लोक सुखदाता ❀ अखिललोक ब्रह्माण्ड कि माता
ते सिय पाई मुनिवर भामिनि[8] ❀ सुखी भई कुमुदिनिजिमियामिनि

१ जाते हैं २ चेष्टाहीन ३ स्तोत्र ४ नहीं ५ कमल ६ पकड़कर ७ सम्पूर्ण ८ स्त्री ॥

ऋषिपत्नी मन सुख अधिकाई ❀ आशिष देइ निकट बैठाई
दिव्य वसन भूषण पहिराये ❀ जे नित नूतन[1] अमल सुहाये
जाहि निरखि दुख दूरि पराहीं ❀ गरुड़ देखि जिमि पन्नग[2] जाहीं

दो० ऐसे वसन विचित्र सुठि, दिये सीय कहँ आनि।
सनमानी प्रिय वचन कहि, प्रीति न जाइ बखानि॥

कह ऋषिबधू सरल मृदुबानी ❀ नारिधर्म्म कछु व्याज बखानी
मातु पिता भ्राता हितकारी ❀ मितसुखप्रद सुनु राजकुमारी
अमित दान भर्त्ता वैदेही ❀ अधम सो नारि जो सेव न तेही
धीरज धर्म मित्र अरु नारी ❀ आपतकाल परखिये चारी
वृद्ध रोगवश जड़ धनहीना ❀ अन्ध बधिर क्रोधी अतिदीना
ऐसेहु पतिकर किय अपमाना ❀ नारि पाव यमपुर दुख नाना
एकै धर्म्म एक व्रत नेमा ❀ काय वचन मन पतिपद प्रेमा
जग पतिव्रता चारि विधि अहहीं ❀ वेद पुराण सन्त अस कहहीं

दो० उत्तम मध्यम नीच लघु, सकल कहौं समुझाय।
आगे सुनहिं ते भव[3]तरहिं, सुनहु सीय चितलाय॥

उत्तम के अस बस मन माहीं ❀ सपनेहुँ आनपुरुष जग नाहीं
मध्यम परपति देखहिं कैसे ❀ भ्राता पिता पुत्र निज जैसे
धर्म विचारि समुझि कुल रहहीं ❀ सो निकृष्टतिय श्रुति[4] अस कहहीं
बिनु अवसर भयते रह जोई ❀ जानेहु अधम नारि जग सोई
पतिवंचक[5] परपति रति करई ❀ रौरव नरक कल्पशत परई
क्षणसुख लागि जन्म शतकोटी ❀ दुख न समुझ तेहिसम को खोटी
बिनु श्रम नारि परमगति लहई ❀ पतिव्रत धर्म छाँड़ि छल गहई
पतिप्रतिकूल[6] जनमि जहँ जाई ❀ विधवा होइ पाइ तरुणाई[7]

सो० सहज अपावनि[8] नारि, पतिसेवत शुभगति लहहि।
यश गावत श्रुति चारि, अजहूँ तुलसी हरिहिप्रिय॥

१ नवीन २ सर्प ३ संसार ४ वेद ५ छली ६ विमुख ७ जवानी ८ अपवित्र॥

सुनु सीता तवं नाम, सुमिरि नारि पतिव्रत करहिं ।
तोहि प्राणप्रिय राम, कहेउँ कथा संसारहित ॥

मुनि जानकी परम सुख पावा ❀ सादर तासु चरण शिर नावा
तब मुनिसन कह कृपानिधाना ❀ आयसु होइ जाउँ वन आना
सन्तत[२] मोपर कृपा करहू ❀ सेवक जानि तजेहु जनि नेहू
धर्म्मधुरन्धर प्रभु की बानी ❀ मुनि सप्रेम बोले मुनि ज्ञानी
जासु कृपा अज[३] शिव सनकादी ❀ चहत सकल परमारथवादी
ते तुम राम अकाम पियारे ❀ दीनबन्धु मृदु वचन उचारे
अब जानी मैं श्री चतुराई ❀ भजिय तुमहिं सब देव विहाई
जेहि समान अतिशय नहिं कोई ❀ ताकर शील कस न अस होई
केहि विधि कहौं जाहु अब स्वामी ❀ कहहु नाथ तुम अन्तरयामी
अस कहि प्रभु विलोकि मुनि धीरा ❀ लोचन जल बह पुलकशरीरा

छं० तनु पुलक निर्भर[५] प्रेमपूरण नयन मुखपंकज दिये ।
मन ज्ञान गुण गोतीत प्रभु मैं दीख जप तप का किये ॥
जप योग धर्मसमूह ते नर भक्ति अनुपम पावहीं ।
रघुवीरचरित पुनीत निशि दिन दासतुलसी गावहीं ॥

दो० मुनिहुँकि अस्तुति कीन्ह प्रभु, दीन्ह सुभग वरदान ।
सुमनवृष्टि नभ संकुल, जय जय कृपानिधान ॥
कलिमलशमन दमनदुख, राम सुयश सुखमूल ।
सादर सुनहिं जे तिनपर, राम रहहि अनुकूल ॥

सो० कठिन काल मल कोस, धर्म न ज्ञान न योग बल ।
परिहरि सकल भरोस, रामहिं भजहिं ते चतुरनर ॥

मुनि पदकमल नाइकरि शीशा ❀ चले वनहिं सुर नर मुनिईशा
आगे राम लषण पुनि पाछे ❀ मुनिवर वेष बने अति आछे

१ तुम्हारा २ हमेशा ३ ब्रह्मा ४ ध्यान के ५ अत्यन्त ६ प्रसन्न ७ छोड़के ॥

उभय बीच सिय सोहति कैसी ❀ ब्रह्म जीव बिच माया जैसी
सरिता वन गिरि अवघटघाटा ❀ पति पहिंचानि देहिं वरबाटा
जहँ जहँ जाहिं देव रघुराया ❀ करहिं मेघ नभ तहँ तहँ छाया
आश्रम विपुल दीख वन माहीं ❀ देव सदन तेहि पटतर नाहीं
बहु तड़ाग सुन्दर अमराई ❀ भाँति भाँति सबमुनिन लगाई
दिव्य विटप वन चहुँदिशि सोहैं ❀ देखत सकल सुरन मन मोहैं
तेहिदिन तहँ प्रभु कीन्ह निवासा ❀ सकल मुनिन मिलि कीन्ह सुपासा

दो० निजनिज आश्रम वेदिका, तिहिपर तुलसिविराज।
अनुज जानकी सहित तहँ, राजत भे रघुराज॥
आनिसुआश्रम मुदितमन, पूजि पहुनई कीन्ह।
कन्द मूल फल अमियसम, आनि रामकहँ दीन्ह॥

अनुज सीय सह भोजन कीन्हा ❀ जो जिहि भाव सुभगवर दीन्हा
होत प्रभात मुनिन शिरनावा ❀ आशिर्वाद सबहिंसन पावा
सुमिरि उमा सुर सिद्ध गणेशा ❀ पुनि प्रभु चले सुनहु विहँगेशा
वन अनेक सुन्दर गिरि नाना ❀ लाँघत चले जाहिं भगवाना
मिला असुर विराध मगु जाता ❀ गरजत घोर कठोर रिसाता
रूप भयङ्कर मानहुँ काला ❀ वेगवन्त धायउ जिमि व्याला
गगन देव मुनि किन्नर नाना ❀ तेहिक्षण हृदय हारि भय माना
तुरतहि सो सीतहिं लै गयऊ ❀ रामहृदय कछु विस्मय भयऊ
समुझा हृदय केकयी करणी ❀ कहा अनुजसन बहुविधि वरणी
बहुरि लषण रघुवरहि प्रबोधा ❀ पाँच बाण छाँड़े करि क्रोधा

छं० भये क्रोधित लषण सँधानि धनुशर मारि तेहि व्याकुल किये।
पुनि उठि निशाचर राखि सीतहिं शूल लै धावत भये॥
जनु कालदण्ड कराल धावा विकल सब खग मृग भये।

---

१ आकाश २ तालाब ३ बगीचा ४ समान ५ [illegible] ६ अमृत ७ गरुड़ ८ आकाश ९ बाण॥

धनुतानि श्रीरघुवंशमणि पुनि काटि तेहि रजसम किये॥
दो० बहुँरि एक शर मारेउ, पराधरणि धुनि माथ।
उठा प्रबल पुनि गर्जेउ, चला जहाँ रघुनाथ॥
ऐसे कहत निशाचर धावा ❀ अब नहिं बचहु तुमहिं मैं खावा
तासु तेज शतमरुत[2] समाना ❀ टूटहिं तरु बहु उड़हिं पखाना
जीवजन्तु जहँ लगि रहे जेते ❀ व्याकुल भाजि चले सब तेते
आव प्रबल यहि विधि जनु भूधर[3] ❀ होइहि काह कहहिं व्याकुल सुर
उरग समान जोरि शर साता ❀ आवत ही रघुवीर निपाता
तुरतहिं रुचिर रूप तेहिं पावा ❀ देखि दुखी निजधाम पठावा
तासु अस्थि गाड़ेउ प्रभु धरणी ❀ देव मुदित मन लखि प्रभुकरणी
सीता आइ चरण लपटानी ❀ अनुज सहित तब चले भवानी
उहाँ शक्र जहँ मुनि शरभंगा ❀ आये सकल देव निजसंगा
गये कहन प्रभु देव सिखावन ❀ दिशि बल भेद बसत जहँ रावन
दो० सुरपति संशय तम सम, रघुपति तेज दिनेश[4]।
रावण जीतन निशि सम, बीते छुटहिं कलेश॥
सुनासीर[5] प्रभु तिहि क्षण देखा ❀ तेजनिधान शुभ्र अति वेखा
तुरँग चारि बल मरुतसमाना ❀ रथ रविसम नहिं जाय बखाना
क्षिति न परत अन्तरहित रहई ❀ श्वेत छत्र चामर शिर ढुरई
अनुजहिं प्रियहिं कहा समुझाई ❀ सुरपति महिमा गुण प्रभुताई
जिहि कारण वासव तहँ आये ❀ सो कछु वचन कहन नहिं पाये
बीचहि सुनि आउब प्रभुकेरा ❀ कहि सारथी[6] तुरत रथ फेरा
दूरिहिते कहि प्रभुहिं प्रणामा ❀ हरषि सुरेश गये निजधामा
पुनि आये जहँ मुनि शरभङ्गा ❀ सुन्दर अनुज जानकी सङ्गा
दो० देखि राम मुखपंकज, मुनिवर लोचन भृंग[7]।
सादर[8] पान करत अति, धन्य जन्म शरभंग॥

१ फिरि २ पवन ३ पर्वत ४ सूर्य ५ इन्द्र ६ रथवान ७ भ्रमर ८ आदरसमेत॥

कह मुनि सुनु रघुवीर कृपाला ❀ शङ्कर मानसराज[१] मराला
जात रहेउँ विरञ्चि के धामा ❀ सुनेउँ श्रवण वन आवत रामा
चितवत पन्थ[२] रहेउँ दिनराती ❀ अब प्रभु देखि जुड़ानी छाती
नाथ सकल साधन मैं हीना ❀ कीन्हीं कृपा जानि जन दीना
सो कछु देव न मोर निहोरा ❀ निजप्रण राखेउ जनमन चोरा
तब लगि रहहु दीनहित लागी ❀ जबलगि मिलौं तुम्हैं तनु त्यागी
योग यज्ञ जप तप व्रत कीन्हा ❀ प्रभु कहँ देइ भक्ति वर लीन्हा
यहिविधि सर[३]रचि मुनि शरभङ्गा ❀ बैठे हृदय छाँड़ि सब सङ्गा

दो० सीता अनुज समेत प्रभु, नील जलद[४] तनुश्याम।
मम हिय बसहु निरन्तर, सगुण रूप श्रीराम॥

अस कहि योग अग्नि तनु जारा ❀ रामकृपा वैकुण्ठ सिधारा
ताते मुनि हरिलीन न भयऊ ❀ प्रथमहिं भेद भक्तिवर लयऊ
ऋषिनिकाय मुनिवर गति देखी ❀ सुखी भये निज हृदय विशेखी
अस्तुति करहिं सकल मुनिवृंदा ❀ जयति प्रणतहित करुणा[५]कंदा
पुनि रघुनाथ चले वन आगे ❀ मुनिवर वृन्द विपुल सँग लागे
अस्थिसमूह[६] देखि रघुराया ❀ पूँछा मुनिन लागि अतिदाया
जानतहु का पूँछहु स्वामी ❀ समदर्शी तुम अन्तरयामी
निशिचरनिकर सकल मुनि खाये ❀ सुनि रघुनाथ नयन जल छाये

दो० निशिचरहीन करौं महि, भुज उठाइ प्रण कीन्ह।
सकल मुनिन के आश्रमन, जाइ जाइ सुख दीन्ह॥

मुनि अगस्त्यकर शिष्य सुजाना[७] ❀ नाम सुतीक्ष्ण रत भगवाना
मन क्रम वचन रामकर सेवक ❀ सपनेहुँ आन भरोस न देवक
प्रभु आगमन श्रवण मुनि पावा ❀ करत मनोरथ आतुर[८] धावा
हे विधि दीनबन्धु रघुराया ❀ मोसे शठ पर करिहहिं दाया
सहित अनुज मोहिं राम गुसाईं ❀ मिलिहहिं निज सेवक[९] की नाईं

१ हंस २ रास्ता ३ चिता ४ मेघ ५ दया ६ ढेर ७ चतुर ८ शीघ्र ९ दास॥

मोरे जिय भरोस दृढ़ नाहीं ❀ भक्ति न विरति ज्ञान मन माहीं
नहिं सतसंग योग जप यागा ❀ नहिं दृढ़ चरणकमल अनुरागा
एक बानि करुणानिधान की ❀ सो प्रिय जाके गति न आन की

छं० सोउप्रियअतिपातकीजिनकबहुँप्रभुसुमिरणकरयो।
ते आजु मैं निज नयन देखौं पूरिपुलकित हिय भरयो॥
जे पदसरोज अनेक मुनि करि ध्यान कबहुँ न आवहीं।
ते राम श्रीरघुवंशमणि प्रभु प्रेम ते सुख पावहीं॥

दो० पन्नगारि सुनु प्रेमसम, भजन न दूसर आन।
यह विचारि पुनि पुनि मुनी, करत रामगुणगान॥

ह्वैहैं सफल[2] आजु मम लोचन ❀ देखि वदनपंकज[3] भवमोचन
निर्भर प्रेममगन मुनि ज्ञानी ❀ कहि न जाइ सो दशा भवानी
दिशि अरु विदिशि पंथ नहिं सूझा ❀ को मैं कहाँ चल्यों नहिं बूझा
कबहुँक फिरि पाछे पुनि जाई ❀ कबहुँक नृत्य करै गुणगाई
अविरल[4] प्रेमभक्ति मुनि पाई ❀ प्रभु देखहिं तरु ओट लुकाई
अतिशय प्रीति देखि रघुवीरा ❀ प्रकटे हृदय हरण भवभीरा
मुनि मगु माँझ अचल ह्वै वैसा ❀ पुलक शरीर पनस[5]फल जैसा
तब रघुनाथ निकट चलि आये ❀ देखि दशा निज जनमन भाये

सो० राम सुसहज सुभाव, सेवक सुख दारिददमन।
मुनिसन कह प्रभु आव, उठउठ द्विज ममप्राणसम॥

मुनिहिं राम बहुभाँति जगावा ❀ जाग न ध्यानजनित सुखपावा
भूपरूप तब राम दुरावा[6] ❀ हृदय चतुर्भुज रूप दिखावा
मुनि अकुलाइ उठा तब कैसे ❀ विकल हीनफणि मणि बिनु जैसे
आगे देखि राम तनु श्यामा ❀ सीता अनुज[7] सहित सुखधामा
परेउ लकुट इव चरणन लागी ❀ प्रेममगन मुनिवर बड़भागी
भुज विशाल गहि लिये उठाई ❀ प्रेम प्रीति राखेउ उर लाई

१ गद्गद २ कृतार्थ ३ कमल ४ निरन्तर ५ कटहल ६ छिपावा ७ छोटा भाई॥

मुनिहिं मिलत अस सोह कृपाला ❀ कनकतरुहि जनु भेंट तमाला
रामवदन विलोकि मुनि ठाढ़ा ❀ मानहुँ चित्रमाँझ लिखि काढ़ा

दो० तब मुनि हृदय धीर धरि, गहि पद बारहिंबार।
निजआश्रम प्रभु आनिकरि, पूजा विविध प्रकार॥

कह मुनि प्रभु सुनु विनती मोरी ❀ अस्तुति करौं कौन विधि तोरी
महिमा अमित मोरि मति थोरी ❀ रविसम्मुख खद्योत[1] अजोरी
श्याम तामरस[2] दामशरीरा ❀ जटा मुकुट परिधन मुनि चीरा
पाणि चाप शर कटि तूणीरं ❀ नौमि निरन्तर श्रीरघुवीरं
मोहविपिन घनदहन कृशानू ❀ सन्त सरोरुह कानन भानू
निशिचर करि वरूथ[3] मृगराजं ❀ त्रातु सदा नो भवखगबाजं
अरुण नयन राजीव सुवेशं ❀ सीता नयन चकोर निशेशं
हर हृद मानसराज मरालं[4] ❀ नौमि राम उर बाहु विशालं
संशय सर्प ग्रसन उरगादं[5] ❀ शमन सकल सन्ताप विषादं
भय भंजन रंजन सुरयूथं ❀ त्रातु सदा नो कृपावरूथं
निर्गुण सगुण विषम समरूपं ❀ ज्ञान गिरा गोतीतमनूपं
अमल अखिल अनवद्य अपारं ❀ नौमि राम भंजन महिभारं
भक्त कल्पपादप[6] आरामं ❀ तर्जन क्रोध लोभ मद कामं
अतिनागर भवसागर सेतुं ❀ त्रातु सदा दिनकरकुलकेतुं
अतुलित भुज प्रताप बलधामं ❀ कलिमल विपुल विभंजननामं
धर्म्म वर्म्म नर्म्मद गुणग्रामं ❀ सन्तत शं[7] तनोतु मम कामं
यदपि विरज व्यापक अविनासी ❀ सबके हृदय निरन्तर वासी
तदपि अनुज सिय सहित खरारी[8] ❀ बसहु मनसि मम काननचारी
जे जानहिं ते जानहु स्वामी ❀ सगुण अगुण उर अन्तरयामी
जो कोशलपति राजिवनयना ❀ करो सो राम हृदय मम अयना

सो० मायावश जिमि जीव, रहहिं सदा सन्तत मगन।

१ जुगुनू २ कमल ३ झुण्ड ४ हंस ५ गरुड़ ६ कल्पवृक्ष ७ कल्याण ८ राम॥

तिमि लागहु मोहिं पीव, करुणाकर सुन्दर सुखद ॥

अस अभिमान जाय जनि भोरे ❁ मैं सेवक रघुपति पति मोरे
रामभक्ति तजि चह कल्याना ❁ सो नर अधम शृगाल[1]समाना
सुनि मुनिवचन राम मनभाये ❁ बहुरि हरषि मुनिवर उरलाये
परम प्रसन्न जानि मुनि मोहीं ❁ जो वर माँगु देउँ मैं तोहीं
मुनि कह मैं वर कबहुँ न याँचा ❁ समुझि न परै झूठ का साँचा
तुमहिं नीक लागै रघुराई ❁ सो मोहिं देहु दास सुखदाई
अविरलभक्ति विरति विज्ञाना ❁ होहु सकल गुण ज्ञाननिधाना
प्रभु जो दीन्ह सो वर मैं पावा ❁ अब सो देहु मोहिं जो भावा

दो० अनुज जानकीसहित प्रभु, चाप बाण धरि राम ।
मम हिय गगन इन्दु[2] इव, बसहु सदा निष्काम ॥

एवमस्तु कहि रमा[3]निवासा ❁ हरषि चले कुम्भज[4]ऋषि पासा
मुनि प्रणाम करि युगकर जोरी ❁ सुनहु नाथ कछु विनती मोरी
बहुत दिवस[5] गुरुदरश न पाये ❁ भये मोहिं यहि आश्रम आये
अब प्रभु संग जाउँ गुरु पाहीं ❁ तुम कहँ नाथ निहोरा नाहीं
चले जात मग तव पदकंजा ❁ देखिहौं जो विराध मदगंजा
देखि कृपानिधि मुनि चतुराई ❁ लिये संग बिहँसे दोउ भाई
पन्थ कहत निजभक्ति अनूपा ❁ मुनि आश्रम पहुँचे सुरभूपा
आश्रम देखि महाशुचि सुन्दर ❁ सरित सरोवर कानन[6] भूधर
जलचर थलचर जीव जहीते ❁ वैर न करहिं प्रीति सबहीते

दो० तरु बहुविधि विहंग मृग, बोलत विविध प्रकार ।
बसहिं सिद्ध मुनि तप करहिं, महिमा गुण आगार[7] ॥

तुरत सुतीक्ष्ण गुरु पहँ गयऊ ❁ करि दण्डवत कहत अस भयऊ
नाथ कोशलाधीश कुमारा ❁ आये मिलन जगत आधारा
राम अनुज समेत वैदेही[8] ❁ निशि दिन देव जपतहहु जेही

१ सियार २ चन्द्रमा ३ राम ४ अगस्त्य ५ दिन ६ वन ७ मकान ८ जानकी ॥

सुनत अगस्त्य तुरत उठि धाये ❀ हरि विलोकि लोचनं जल छाये
मुनिपदकमल परे दोउ भाई ❀ ऋषि अति प्रीति लिये उर लाई
सादर कुशल पूँछि मुनि ज्ञानी ❀ आसन पर बैठारे आनी
पुनि करि बहु प्रकार प्रभु पूजा ❀ मोहिं सम भाग्यवन्त नहिं दूजा
जहँ लगि रहे अपरं मुनिवृन्दा ❀ हर्षे सब विलोकि सुखकन्दा

दो० मुनिसमूह महँ बैठ प्रभु, सम्मुख सबकी ओर।
शरद इन्दु जनु चितवत, मानहुँ निकर चकोर॥

पाइ सुथल जल हरषित मीना ❀ पारस पाइ सुखी जिमि दीना
प्रभुहिं निरखि सुख भा यहि भाँती ❀ चातक जिमि पायो जल स्वाती
तब रघुवीर कहा मुनि पाहीं ❀ तुमसन प्रभु दुराव कछु नाहीं
तुम जानहु जेहि कारण आयउँ ❀ ताते तात न कहि समुझायउँ
अब सो मन्त्र देहु प्रभु मोही ❀ जेहि प्रकार मारौं मुनि द्रोही
द्विजद्रोही न बचहिं मुनिराई ❀ जिमि पंकजवन हिमऋतु पाई
मुनि मुसुकाने सुनि प्रभु बानी ❀ पूँछहु नाथ मोहिं का जानी
तुम्हरे भजन प्रभाव अघारी ❀ जानौं महिमा कछुक तुम्हारी

सो० भृकुटी निरखत नाथ, रहत सदा पदकमल तर।
जिन डारे निज हाथ, विविध विधाता सिद्ध हर॥

अति कराल सबपर जग जाना ❀ औरौ कहौं सुनिय भगवाना
ऊमरि तरु विशाल तव माया ❀ फल ब्रह्माण्ड अनेक निकाया
जीव चराचर जन्तु समाना ❀ भीतर बसहिं न जानहिं आना
ते फल भक्षक कठिन कराला ❀ तव भय डरत सदा सो काला
ते तुम सकल लोकपति साईं ❀ पूँछेहु मोहिं मनुज की नाईं
यह वर माँगौं कृपानिकेता ❀ बसहु हृदय सिय अनुज समेता
अविरल भक्ति विरत सतसंगा ❀ चरण सरोरुह प्रीति अभंगा
यद्यपि ब्रह्म अखण्ड अनन्ता ❀ अनुभवगम्य भजहिं जेहि सन्ता

१ नेत्र २ और ३ पपीहा ४ शत्रु ५ पापहारी ६ गूलर ७ मृत्यु ८ कमल ९ अन्तरहित॥

अस तव रूप बखानौं जानौं ❀ फिरि फिरि सगुण ब्रह्म रति मानौं

दो० जेहि जीवहु पर तव कृपा, सन्तत रहत हुलास ।
तिनकी महिमा को कहै, जे अनन्य प्रिय दास ॥

सन्तत दासन देहु बड़ाई ❀ ताते मोहिं पूँछेहु रघुराई
है प्रभु परम मनोहर ठाऊँ ❀ पावन[1] पंचवटी तेहि नाऊँ
गोदावरी नदी तहँ बहई ❀ चारिहु युग प्रसिद्ध सो अहई
दण्डक वन पुनीत प्रभु करहू ❀ उग्र शाप मुनिवर के हरहू
वास करहु तहँ रघुकुलराया ❀ कीजै सकल मुनिन पर दाया
चले राम मुनि आयसु[2] पाई ❀ तुरतहिं पंचवटी नियराई
दिव्यलता द्रुम प्रभु मन भाये ❀ निरखि राम ते भयउ सुहाये
लषण राम सिय चरण निहारी ❀ कानन[3] अघ गा भा सुखकारी

दो० गृध्रराज सों भेंट भइ, बहु विधि प्रीति दृढ़ाय ।
गोदावरी समीप प्रभु, रहे पर्णगृह छाय ॥

जब ते राम कीन्ह तहँ वासा ❀ सुखी भये मुनि बीती त्रासा[4]
गिरि वन नदी ताल छवि छाये ❀ दिनदिन प्रति अति होत सुहाये
खग मृग वृन्द अनन्दित रहहीं ❀ मधुप मधुर गुंजत छवि लहहीं
सो वन वरणि न सक अहिराजा[5] ❀ जहाँ प्रकट रघुवीर विराजा
एक बार प्रभु सुख आसीना[6] ❀ लक्ष्मण वचन कहे छलहीना
सुर नर मुनि सचराचर साईं ❀ मैं पूँछौं निज प्रभु की नाईं
मोहिं समुझाइ कहो सोइ देवा ❀ सब तजि करौं चरणरज सेवा
कहहु ज्ञान विराग अरु माया ❀ कहहु सो भक्ति करहु जेहि दाया

दो० ईश्वर जीवहि भेद[7] प्रभु, सकल कहहु समुझाइ ।
जाते होइ चरण रति, शोक[8] मोह भ्रम जाइ ॥

थोरे महँ सब कहौं बुझाई ❀ सुनहु तात मति मन चितलाई
मैं अरु मोर तोर ते माया ❀ जेहि वश कीन्हे जीव निकाया[9]

१ पवित्र २ आज्ञा ३ वन ४ डर ५ शेष ६ बैठे हुए ७ फ़र्क़ ८ दुःख ९ समूह ॥

गो गोचर जहँ लगि मन जाई ❀ मो सब माया जानेहु भाई
तेहिकर भेद सुनहु तुम सोऊ ❀ विद्या अपर[1] अविद्या दोऊ
एक दुष्ट अतिशय दुख रूपा ❀ जा वश जीव परा भव[2] कूपा
एक रचै जग गुण वश जाके ❀ प्रभु प्रेरित नहिं निजबल ताके
ज्ञान मान जहँ एकौ नाहीं ❀ देखत ब्रह्म रूप सब माहीं
कहिय तात सो परम विरागी ❀ तृणसम सिद्धि तीनि गुण त्यागी

दो॰ माया ईश न आपु कहँ, जानि कहिय सो जीव।
बद्ध मोक्षप्रद सर्वपर, माया प्रेरक सीव॥

धर्म्म ते विरति योग ते ज्ञाना ❀ ज्ञान मोक्षप्रद वेद बखाना
जाते वेगि द्रवौं मैं भाई ❀ सो मम भक्ति भक्तसुखदाई
सो स्वतंत्र अवलम्ब[3] न आना ❀ जेहि आधीन ज्ञान विज्ञाना
भक्ति तात अनुपम[4] सुखमूला ❀ मिलहि जो सन्त होहिं अनुकूला
भक्ति के साधन कहौं बखानी ❀ सुगम पन्थ[5] मोहिं पावहिं प्रानी
प्रथमहिं विप्रचरण अति प्रीती ❀ निजनिज धर्मनिरत श्रुतिनीती
यहिकर फल मन विषय विरागा ❀ तब ममचरण उपज अनुरागा
श्रवणादिक नव भक्ति दृढ़ाहीं ❀ मम लीलारति अति मन माहीं
सन्त चरण पंकज अतिप्रेमा ❀ मन क्रम वचन भजन दृढ़ नेमा
गुरु पितु मातु बन्धु पति देवा ❀ सब मोहिं कहँ जानै दृढ़सेवा
ममगुण गावत पुलकशरीरा ❀ गद्गद गिरा नयन बह नीरा[6]
काम आदि मद दम्भ न जाके ❀ तात निरन्तर वश मैं ताके

दो॰ वचन कर्म मन मोरि गति, भजन करै निष्काम[7]।
तिनके हृदयकमल महँ, करौं सदा विश्राम॥

भक्ति योग सुनि अति सुखपावा ❀ लक्ष्मण प्रभुचरणन शिरनावा
नाथ सुने गत मम सन्देहा ❀ भयउ ज्ञान उपजेउ नवनेहा
अनुजवचन सुनि प्रभु मन भाये ❀ हरषि राम निजहृदय लगाये

१ और २ संसार ३ आश्रय ४ उपमारहित ५ मार्ग ६ जल ७ कामनारहित॥

यहिविधि गये कछुक दिन बीती ❀ कहत विराग ज्ञान गुण नीती
शूर्पणखा रावण की बहिनी ❀ दुष्टहृदय दारुण जिमि अहिनी[1]
पञ्चवटी सो गइ इक बारा ❀ देखि विकल भइ युगल[2] कुमारा
भ्राता पिता पुत्र उरगारी[3] ❀ पुरुष मनोहर निरखत नारी
होइ विकल सक मन नहिं रोकी ❀ जिमि रविमणिद्रवरविहिंविलोकी

दो० अधमनिशाचरिकुटिलअति, चलीकरन उपहास।
सुनु खगेश[4] भावी प्रबल, भा चह निशिचरनास॥

रुचिर रूप धरि प्रभु पहँ जाई ❀ बोली वचन मधुर मुसुकाई
तुमसम पुरुष न मोसम नारी ❀ यह सँयोग विधि रचा विचारी
मम अनुरूप पुरुष जग नाहीं ❀ देखेउँ खोजि लोक तिहुँ माहीं
ताते अबलगि रहिउँ कुमारी ❀ मनमाना कछु तुमहिं निहारी
सीतहिं चितइ कही प्रभु बाता ❀ अहै कुमार मोर लघु[5]भ्राता
गइ लक्ष्मण रिपुभगिनी[6] जानी ❀ प्रभु विलोकि बोले मृदुबानी
सुन्दरि सुनु मैं उनकर दासा ❀ पराधीन नहिं तोर सुपासा
प्रभु समरथ कोशलपुर राजा ❀ जो कछु करहिं उन्हैं सबछाजा

दो० केहरि सम नहिं करिवर, लवा कि बाज समान।
प्रभु सेवक इमि जानहु, मानहु वचन प्रमान॥

सेवक सुख चह मान भिखारी ❀ व्यसनी धन शुभगति व्यभिचारी
लोभी यश चह चार गुमानी ❀ नभ दुहि दूध चहत कोउ प्रानी
पुनि फिरि रामनिकट सो आई ❀ प्रभु लक्ष्मणपहँ बहुरि पठाई
लक्ष्मण कहा तोहिं सो वरई ❀ जो तृण तोरि लाज परिहरई[7]
तब खिसिआनि राम पहँ गई ❀ रूप भयङ्कर प्रकटत भई
बिथुरे केश रदन[8] विकराला ❀ भृकुटीकुटिल करण[9]लागि गाला
सीतहिं सभय देखि रघुराई ❀ कहा अनुजसन सैन बुझाई
अनुज राममन की गति जानी ❀ उठे रिसाइ सो सुनहु भवानी

१ सर्पिणी २ दोनों ३-४ गरुड़ ५ छोटा ६ बहिन ७ छोड़े ८ दाँत ९ कान॥

दो० लक्ष्मण अति लाघवतिहिं, नाक कान बिनु कीन्ह।
ताके कर रावण कहँ, मनहुँ चुनौती दीन्ह॥
नाक कान बिनु भइ बिकरारा ❀ जनु स्रव शैल[1] गेरु कै धारा
खरदूषण पहँ गइ बिलखाता ❀ धिक धिक तव पौरुष बल भ्राता
तेइ पूँछा सब कहेसि बुझाई ❀ यातुधान सुनि सैन बुलाई
चौदह सहस सुभट सँग लीन्हे ❀ जिन सपनेहुँ रण पीठि न दीन्हे
धाये निशिचरनिकर[2] वरूथा ❀ जनु सपक्ष कज्जलगिरि यूथा
नाना वाहन नानाकारा ❀ नाना आयुध[3] घोर अपारा
श्यामघटा देखत नभ केरी ❀ तहँ वासव[4] धनु मनहुँ उयेरी
शूर्पणखहिं आगे करि लीनी ❀ अशुभरूप श्रुति नासा हीनी

दो० निजनिजबलसबमिलिकहहिं, एकहिं एक सुनाइ।
बाजन बाज जुझाऊ, हर्ष न हृदय समाइ॥
अशकुन अमित होहिं भयकारी ❀ गनहिं न मृत्युविवश भयझारी
गर्जहिं तर्जहिं गगन उड़ाहीं ❀ देखि कटक भट अति हरषाहीं
कोउ कह जियत धरहु दोउ भाई ❀ धरि मारहु तिय लेहु छुड़ाई
कोउ कह सुनौ सत्य हम कहहीं ❀ कानन फिरहिं वीर कोउ अहहीं
एकै कहा मष्ट ह्वै रहहू ❀ खर के आगे अस जनि कहहू
यहिविधि कहत वचन रणधीरा ❀ आये सकल जहाँ रघुवीरा
धूरि पूरि नभमण्डल रहेऊ ❀ राम बोलाइ अनुजसन कहेऊ
लै जानकिहिं जाहु गिरिकन्दर ❀ आवा निशिचर कटक भयंकर
रहेउ सजग सुनि प्रभु कै वाणी ❀ चले सहितासिय शरधनुपाणी
देखि राम रिपु दल चढ़ि आवा ❀ बिहँसि कठिन कोदण्ड चढ़ावा

छं० कोदण्डकठिनचढ़ायप्रभुशिरजटाबांधतसोहज्यों।
मरकतशयलपरलसतदामिनि[6]कोटिसोयुगभुजँग[7]ज्यों॥
कटिकसिनिषंगविशालभुजगहिचापविशिख[8]सुधारिकै

१ पर्वत २ झुण्ड ३ अस्त्र ४ इन्द्र ५ धनुष ६ बिजली ७ सर्प ८ बाण॥

चितवत मनहुँ मृगराज प्रभु गजराजघटा निहारिकै ॥
सो० आय गये बगमेल, धरहु धरहु धाये सुभट।
यथा विलोकि अकेल, बालरविहिं घेरत दनुज ॥
घेरि रहे निशिचर समुदाई ❋ दण्डक खग मृग चले पराई
प्रभु विलोकि शर सकहिं न डारी ❋ थकित भये रजनीचर भारी
सचिव बोलि बोले खरदूषण ❋ यह कोउ नृप बालक नरभूषण
सुर नर नाग असुर मुनि जेते ❋ देखे सुने हते हम केते
हम भरि जन्म सुनहु सब भाई ❋ देखी नहिं अस सुन्दरताई
यद्यपि भगिनी कीन्ह कुरूपा ❋ बधलायक नहिं पुरुष अनूपा
देहिं तुरत निजनारि दुराई ❋ जीवत भवन जाहिं दोउ भाई
मोर कहा तुम ताहि सुनावहु ❋ तासु वचन सुनि आतुर आवहु
दो० भये कालवश मूढ़ सब, जानहिं नहिं रघुवीर।
मशकफूँक किमि मेरु उड़, सुनहु गरुड़ मतिधीर ॥
दूतन कहा रामसन जाई ❋ सुनत राम बोले मुसुकाई
आजु भयो बड़ भाग्य हमारा ❋ तुम्हरे प्रभु अस कीन्ह विचारा
हम क्षत्रिय मृगया वन करहीं ❋ तुमसे खल मृग खोजत फिरहीं
रिपु बलवन्त देखि नहिं डरहीं ❋ एक बार कालहुसन लरहीं
यद्यपि मनुज दनुजकुलघालक ❋ मुनिपालक खलशालक बालक
जो न होइ बल घर फिरि जाहू ❋ समरविमुख मैं हतौं न काहू
रण चढ़ि करिय कपट चतुराई ❋ रिपु पर कृपा परम कदराई
दूतन जाइ तुरत सब कहेऊ ❋ सुनि खरदूषण उर अति दहेऊ
छं० उरदहेउकहेउकि धरहु धावहुविकट भटरजनीचरा।
शर चाप तोमर शक्ति शूल कृपाण परिघ परशूधरा ॥
प्रभु कीन्ह धनुष टँकोर प्रथम कठोर घोर भयो महा।

१ सिंह २ दानव ३ पक्षी ४ मन्त्री ५ शीघ्र ६ शिकार ७ दुष्ट ८ तलवार ॥

भये बधिर[1] व्याकुल यातुधान[2] न ज्ञान तेहि अवसर रहा ॥
दो॰ सावधान ह्वै धाये, जानि सबल आराति[3] ।
लागे वर्षन राम पर, अस्त्र शस्त्र बहु भाँति ।
तिनके आयुध[4] तृण सम, करि काटे रघुवीर ।
तानि शरासन[5] श्रवणलागि, पुनि छाँड़े निज तीर ॥
छं॰ तब चले बाण कराल * फुंकरत जनु बहु व्याल[6] ॥
कोपेउ समर श्रीराम * चले विशिख[7] निशित[8] निकाम ॥
अवलोकि खर तर तीर * मुरि चले निशिचर वीर ॥
यक एक कहँ न सँभार * कर तात मात पुकार ॥
कोउ कहै खर कह कीन्ह * जो युद्ध इनसन लीन्ह ॥
ये बाण अतिहि कराल * ग्रसे आइ मानहुँ काल ॥
भय क्रुद्ध तीनों भाइ * जो भागि रणतें जाइ ॥
तेहि बधब हम निज पानि[9] * फिरे मरण मन महँ ठानि ॥
दो॰ उमा एक निज प्रभुहि वश, पुनि इनके बड़ भाग ।
तरण चहहिं प्रभु शर लगे, विना योग जप याग ॥
छं॰ आयुध अनेक प्रकार * सम्मुख ते करहिं प्रहार ॥
रिपु परम कोपे जानि * प्रभु धनुष शर सन्धानि ॥
छाँड़े विपुल नाराच * लगे कटन विकट पिशाच ॥
उर शीश कर भुज चरन * जहँ तहँ लगे महि परन ॥
चिक्करत लागत बान * धर परत कुधर समान ॥
भट कटत तनु शत खंड * पुनि उठत करि पाखंड ॥
नभ उड़त बहु भुज मुंड * बिनु मौलि धावत रुंड ॥
खग कंक काक शृगाल * कटकटहिं कठिन कराल ॥

१ बहिरा २ राक्षस ३ शत्रु ४ हथियार ५ धनुष ६ सर्प ७ बाण ८ पैने ९ हाथ ॥

छं० कटकटहिंजम्बुकंभूत प्रेत पिशाच खप्पर साजहीं।
वैताल वीर कपाल ताल बजाइ योगिनि नाचहीं॥
रघुवीरबाण प्रचण्ड खण्डहिं भटन के उर भुज शिरा।
जहँ तहँ परहिं उठि लरहिं धरुधरुकरहिंसकलभयंकरा॥
अंतावरी गहि उड़हिं गृध्र पिशाच कर गहि धावहीं।
संग्राम पुरवासी मनहुँ बहु बाल गुड़ी उड़ावहीं॥
मारे पछारे उर बिदारे विपुल भट कहरत परे।
अवलोकिनिजदलविकलभटत्रिशिरादिखरदूषणफिरे॥
शर शक्ति तोमर परशु शूल कृपाण एकहि बारहीं।
करि कोप श्रीरघुवीरपर अगणित निशाचर डारहीं॥
प्रभुनिमिषमहँ रिपुशर निवारि प्रचारि डारे शायका।
दशदशविशिखउरमांभमारेसकलनिशिचरनायका॥
महिपरत उठिभटभिरत मरत न करतमाया अतिघनी।
सुरडरत चौदहसहस निशिचर एक श्रीरघुकुलमनी॥
सुरमुनिसभय प्रभु देखि मायानाथ अतिकौतुककरयो।
देखतपरस्पर राम करि संग्राम रिपुदल लरि मरयो॥

दो० राम रामकरि तनु तजहिं, पावहिं पद निर्वान।
करि उपाय रिपु मारेव, क्षणमहँ कृपानिधान॥
हरषित वरषहिं सुमन सुर, बाजहिं गगननिशान।
अस्तुतिकरिकरि सब चले, शोभितविविधविमान॥

जब रघुनाथ समर रिपु जीते ❀ सुर नर मुनि सबके दुख बीते
तब लक्ष्मण सीतहिं लै आये ❀ प्रभुपद परत हरषि उरलाये
सीता निरखि श्याम मृदुगाता ❀ परम प्रेम लोचन न अघाता

१ सियार २ खोपड़ी ३ आँतें ४ पतंग ५ बहुत ६ तलवार ७ एकपल ८ पुष्प॥

पंचवटी बसि श्रीरघुनायक ❀ करत चरित सुरमुनिसुखदायक
धुआँ देखि खरदूषण केरा ❀ शूर्पणखा तब रावण प्रेरा
बोली वचन क्रोध करि भारी ❀ देश कोश की सुरति बिसारी
करसि पान सोवसि दिनराती ❀ सुधि न तोहिं शिर पर आराती
राज नीति बिनु धन बिनु धर्मा ❀ हरिहि समर्पे बिनु सतकर्मा[2]
विद्या बिनु विवेक उपजाये ❀ श्रमफल पाठ किये अरु गाये
संग ते यती कुमन्त्र ते राजा ❀ मान ते ज्ञान पान ते लाजा
प्रीति प्रणय बिनु मद ते गुनी ❀ नाशहिं वेगि नीति अस सुनी

सो० रिपु रुज[3] पावक पाप, प्रभुअहिगनियन छोटकरि।
असकहि विविधविलाप, पुनि लागी रोदन करन॥

दो० सभामाँझ व्याकुल परी, बहु प्रकार करि रोइ।
तोहिं जियत दशकन्धर[4], मोरि कि अस गति होइ॥

सुनत सभासद उठ अकुलाई ❀ समुझाई गहि बाँह उठाई
कह लङ्केश कहसि निज बाता ❀ केइँ तव नासा[5] कान निपाता[6]
अवधनृपति दशरथ के जाये ❀ पुरुषसिंह वन खेलन आये
समुझि परी मोहिं उनकी करणी ❀ रहित निशाचर करिहैं धरणी
जिनकर भुजबल पाइ दशानन ❀ अभय[7] भये मुनि विचरहिं कानन[8]
देखत बालक काल समाना ❀ परम धीर धन्वी गुण नाना
अतुलित[9] बल प्रताप दोउ भ्राता ❀ खलवधरत सुरमुनिसुखदाता
शोभाधाम राम अस नामा ❀ तिनके सँग इक नारि ललामा

सो० अतिसुकुमारि पियारि, पटतर योग्य न आहि कोउ।
मैं मन दीख विचारि, जहँ रहते हि सम आन नहिं॥

रूपराशि विधि नारि सँवारी ❀ रति शतकोटि तासु बलिहारी
अजहुँ जाय देखव तुम अबहीं ❀ ह्वैहौ विकल तासु वश तबहीं
जीवनमुक्ति लोकवश ताके ❀ दशभुख सुनु सुन्दरि अस जाके

१ शत्रु २ अच्छे कर्म्म ३ रोग ४ रावण ५ नाक ६ काटे ७ निडर ८ वन ९ अतौल॥

तासु अनुज काटी श्रुंति[1] नासा ❀ सुनि तव भगिनी करि परिहासा
बिनुऽपराध अस हाल हमारी ❀ अपराधी किमि बचहिं सुरारी
खर दूषण सुनि लाग गुहारा ❀ क्षणमहँ सकल कटक उन मारा
खर दूषण त्रिशिरा कर घाता ❀ सुनि दशशीश जरा सब गाता
भयो शोचवश नहिं विश्रामा ❀ बीतहिं पल मानहुँ शतयामा[3]

दो० शूर्पणखहिं समुझाइकरि, बलबोलेसि बहुभाँति।
भवन गयउ अतिशोचवश, नींद परी नहिं राति॥

सुर नर असुर नाग खग माहीं ❀ मोरे अनुचर सम काउ नाहीं
खर दूषण मोमम बलवन्ता ❀ तिन्हैं को मारै बिनु भगवन्ता
सुररञ्जन भञ्जन[4] महिभारा ❀ जो जगदीश लीन्ह अवतारा
तौ मैं जाइ वैर हठि करिहौं ❀ प्रभुशर ते भवसागर तरिहौं
होइ भजन नहिं तामस[5] देहा ❀ मन क्रम वचन मन्त्र दृढ़ एहा
जो नररूप भूपसुत[6] कोऊ ❀ हरिहौं नारि जीति रण दोऊ
चला अकेल यान[7] चढ़ि तहवाँ ❀ ब स मारीच सिन्धुतट जहवाँ
रथ अनूप जोरे खर चारी ❀ वेगवन्त इमि जिमि उरगारी[8]

छं० उरगारिसमअतिवेगवरणत जाय नहिं उपमा कही।
शिरछत्र शोभित श्यामघन[9] जन चमर श्वेतविराजही॥
यहिभाँति नाँघत सरित शैल अनेक वापी सोहहीं।
वन बाग उपवन वाटिका शुचिनगर मुनिमन मोहहीं॥

दो० बहु तड़ाग शुचि विहँग मृग, बोलत विविध प्रकार।
यहिविधिआयहु सिन्धुतट, शतयोजन विस्तार॥

सुन्दर जीव विविध विधि जाती ❀ करहिं कुलाहल दिन अरु राती
कूदहिं ते गरजहिं घन नाईं ❀ महाबली बल वरणि न जाईं
कनक बाल सुन्दर सुखदाई ❀ बैठहिं सकल जन्तु तहँ आई

१ कान २ बहिन ३ प्रहर ४ नाश ५ क्रोध ६ राजा ७ सवारी ८ गरुड़ ९ मेघ॥

तिहिपर दिव्यलता तरु लागे ❁ जिहि देखत मुनिमन अनुरागे
गुहा विविधि विधि रहहिं बनाई ❁ वरणत शारद मन सकुचाई
चाहिय जहाँ ऋषिनकर वासा ❁ तहाँ निशाचर करहिं निवासा
दशमुख देखि सकल सकुचाने ❁ जे जड़ जीव सजीव पराने
इहाँ राम जसि युक्ति बनाई ❁ सुनहु उमा[1] सो कथा सुहाई

दो॰ लक्ष्मण गये वनहिं जब, लेन मूल फलकन्द।
जनकसुता सन बोले, बिहँसि कृपासुखकन्द॥

सुनहु प्रिया व्रत रुचिर सुशीला ❁ मैं कछु करब ललित नरलीला
तुम पावक[2] महँ करहु निवासा ❁ जब लगि करौं निशाचरनासा
जबहिं राम सब कहेउ बखानी ❁ प्रभुपद धरि हिय अनलसमानी
निज प्रतिबिम्ब राखि तहँ सीता ❁ तैसइ शील स्वरूप विनीता
लक्ष्मणहू यह मर्म न जाना ❁ जो कछु चरित रच्यो भगवाना
दशमुख गयउ जहाँ मारीचा ❁ नाय माथ स्वारथरत नीचा
नवनि नीच की अति दुखदाई ❁ जिमि अंकुश धनु उरग[3] बिलाई
भयदायक खल की प्रियबानी ❁ जिमि अकाशके कुसुम भवानी

दो॰ करि पूजा मारीच तब, सादर पूँछी बात।
कवन हेतु मन व्यग्र[4] अति, यकसर आयउ तात॥

दशमुख सकल कथा तेहि आगे ❁ कही सहित अभिमान[5] अभागे
होहु कपटमृग[6] तुम छलकारी ❁ जेहि विधि हरिआनौं नृपनारी
तेइँ पुनि कहा सुनहु दशशीशा ❁ ते नर रूप चराचर ईशा
तासों तात वैर नहिं कीजै ❁ मारे मरिय जिआये जीजै
मुनिमख[7] राखन गयउ कुमारा ❁ बिनुफरशर रघुपति मोहिं मारा
शत योजन आयउँ क्षण माहीं ❁ तिन सन वैर किये भल नाहीं
भइ मति कीटभृङ्ग[8] की नाईं ❁ जहँ तहँ मैं देखौं दोउ भाई
जो नर तात तदपि अति शूरा ❁ तिनहिं विरोध न आइहि पूरा

१ पार्वती २ अग्नि ३ सर्प ४ विकल ५ घमण्ड ६ हरिण ७ यज्ञ ८ भँभीरी ॥

दो० जेइँ ताड़का सुबाहु हति, खण्डेउ हरकोदण्ड ।
खर दूषण त्रिशिरावधेउ, मनुजकि असबरिबण्ड ॥

राक्षस नाम सुनत दशकन्धर ❀ रहत प्राण नहिं मम उर अन्तर
जाहु भवन कुलकुशल विचारी ❀ सुनतहि शठ दीन्हेसि बहुगारी
गुरु जिमि मूढ़ करसि ममबोधा[1] ❀ कहु जग मोहिं समान को योधा[2]
तब मारीच हृदय अनुमाना ❀ नवहिं विरोधे नहिं कल्याना
शस्त्री मर्मी प्रभु शठ धनी ❀ वैद्य वन्दि कवि कोविद गुनी
उभय भाँति देखा निज मरणा ❀ तब ताकेसि रघुनायक शरणा
उतर देत मोहिं बँधिहि[3] अभागी ❀ कस न मरौं रघुपति शर[4] लागी
अस जिय जानि दशाननसंगा ❀ चला रामपद प्रेम अभंगा
मन अति हर्ष जनाव न तेही ❀ आजु देखिहौं परमसनेही

छं० निजपरमप्रीतमदेखिलोचनसफलकरिसुखपाइहौं ।
श्रीसहित अनुजसमेत कृपानिकेत पद मन लाइहौं ॥
निर्वाणदायक क्रोध जाकर भक्त अवशहि वशकरी ।
निजपाणिशरसन्धानिसो मोहिं बधहिंसुखसागरहरी ॥

दो० मम पाछे धर धावत, धरे शरासन[5] बान ।
फिरिफिरिप्रभुहिंविलोकिहौं, धन्य न मोसम आन ॥

सीता लषण सहित रघुराई ❀ जेहि वन बसहिं मुनिन सुखदाई
तेहि वन निकट दशानन गयऊ ❀ तब मारीच कपटमृग भयऊ
अतिविचित्र कछु वरणि न जाई ❀ कनक[6]देह मणि रची बनाई
सीता परम रुचिर मृग देखा ❀ अंग अंग सुमनोहर वेखा
सुनहु देव रघुवीर कृपाला ❀ यहि मृगकर अतिसुन्दर छाला[7]
सत्यसन्ध प्रभु बध करि एही ❀ आनहु चर्म कहति वैदेही
तब रघुपति जाना सब कारन ❀ उठे हरषि सुरकाज सँवारन
मृग विलोकि कटि[8] परिकर[9] बाँधा ❀ करतल चाप रुचिर शर साँधा

१ सिखापन २ बली ३ मारेगा ४ बाण ५ धनुष ६ सोना ७ खाल ८ कमर ९ फेंट ॥

प्रभु लक्ष्मणहिं कहा समुझाई ❀ फिरत विपिन निशिचर बहु भाई
सीता केरि करेहु रखवारी ❀ बुधि विवेक बल समय विचारी

दो० अस कहि चले तहाँ प्रभु, जहाँ कपटमृग नीच।
देव हर्ष विस्मय विवश, चातक[1] वर्षा बीच॥

प्रभुहिं विलोकि चला मृग भाजी ❀ धाये राम शरासन[2] साजी
निगम नेति शिव ध्यान न पावा ❀ मायामृग पाछे सोइ धावा
कबहुँ निकट पुनि दूरि पराई ❀ कबहुँक प्रकटै कबहुँ छपाई
प्रकटत दुरत करत छल भूरी[3] ❀ यहि विधि प्रभुहिं गयो लै दूरी
तब तकि राम कठिन शर मारा ❀ धरणि पस्यो करि घोर चिकारा
लक्ष्मण कर प्रथमहिं लै नामा ❀ पाछे सुमिरेसि मन महँ रामा
प्राण तजत प्रकटेसि निज देही ❀ सुमिरेसि राम समेत सनेही
अन्तरप्रेम तासु पहिंचाना ❀ मुनिदुर्लभ गति दीन्ह सुजाना

दो० विपुल[4] सुमन सुर वर्षहिं, गावहिं प्रभु गुण गाथ।
निज पद दीन्हों असुरकहँ, दीनबन्धु रघुनाथ॥

खलबधि तुरत फिरे रघुवीरा ❀ सोह चाप कर कटि तूणीरा[5]
आरत गिरा सुनी जब सीता ❀ कह लक्ष्मणसन परम सभीता
जाहु वेगि संकट तव भ्राता ❀ लक्ष्मण बिहँसि कहा सुनु माता
भृकुटि विलास सृष्टि लय होई ❀ सपनेहुँ संकट परै कि सोई
सौंपि गये मोहिं रघुपति थाती ❀ जो तजि जाउँ तोष[6] नहिं छाती
यह जिय जानि सुनहु मम माता ❀ पूँछब कहब कौन मैं बाता
मर्म वचन सीता जब बोली ❀ हरि प्रेरित लक्ष्मणमति डोली
चहुँदिशि रेखा खींचि अहीशा[7] ❀ बारबार नाये पद शीशा
वन दिशि देव सौंपि सब काहू ❀ चले जहाँ रावण शशि राहू
चितवहिं लषण सियहिं फिरि कैसे ❀ तजत बच्छ निज मातुहिं जैसे

दो० एक डरत डर राम के, दूजे सीय अकेलि।

१ पपीहा २ धनुष ३-४ बहुत ५ तरकस ६ धीरज ७ शेष अर्थात् लक्ष्मण॥

लषण तेजतन हत भये, जिमि डाढ़ी[1] दव[2] बेलि ॥

शून्य बीच दशकन्धर देखा ❁ आवा निकट यती[3] के बेखा
जाके डर सुर असुर डराहीं ❁ निशि न नींद दिन अन्न न खाहीं
सो दशशीश श्वान की नाई ❁ इत उत चितै चला भँडिहाई
जिमि कुपन्थ पग देत खगेशा[4] ❁ रह न तेज बल बुधि लवलेशा
करि अनेक विधि छल चतुराई ❁ माँगेउ भीख दशानन जाई
अतिथि जानि सिय कंदमूल फल ❁ देन लगी तेइँ कीन्ह बहुरि छल
कह दशमुख सुनु सुन्दरि बानी ❁ बाँधी भीख न लेउँ सयानी
विधि गति वाम काल कठिनाई ❁ रेख लाँघि सिय बाहर आई

दो० विश्वभरनिअघ[5]दलदलनि, करनि सकल सुरकाज ।
जाना नहिं दशशीश तेहि, मूढ़ कपट के साज ॥

नाना विधि कहि कथा सुनाई ❁ राजनीति भय प्रीति देखाई
कह सीता सुनु यती गुसाई ❁ बोलेसि वचन दुष्ट की नाई
तब रावण निज रूप दिखावा ❁ भइ सभीत जब नाम सुनावा
कह सीता धरि धीरज गाढ़ा ❁ आय गये प्रभु खल रहु ठाढ़ा
जिमि हरिबधुहि[6] क्षुद्रशश चाहा ❁ भयसि कालवश निशिचरनाहा
वायस चह खगपति की समता ❁ सिन्धु समान होइ किमि सरिता
खरि कि होइ सुरधेनु समाना ❁ जाहु भवन निज सुनु अज्ञाना
सुनत वचन दशशीश लजाना ❁ मन महँ चरण वन्दि सुख माना

दो० क्रोधवन्त तब रावण, लीन्हेसि रथ बैठाय ।
चलेउ गगनपथ[7] आतुर, भयवश हाँकि न जाय ॥

हा जगदीश वीर रघुराया ❁ केहि अपराध बिसारेहु दाया
आरतहरण शरण सुखदायक ❁ हा रघुकुलसरोज दिननायक
हा लक्ष्मण तुम्हार नहिं दोषा ❁ सो फल पायउँ कीन्हेउँ रोषा
कैकेयी मन जो कछु रहेऊ ❁ सो विधि आजु मोहिं दुख दयेऊ
पंचवटी के खग मृग जाती ❁ दुखी भये वनचर बहु भाँती

---

१ जली २ वन की अग्नि ३ तपस्वी ४ गरुड़ ५ पाप ६ सिंहिनी ७ आकाशमार्ग ॥

जटायु रावणयुद्ध

उतर न देत दशानन योधा । तबहि गृध्र धावा करि क्रोधा ॥
तब सक्रोध निशिचर खिसियाना । काढेसि परम कराल कृपाना ।

विविध विलाप करति वैदेही ❀ भूरि कृपा प्रभु पूरि सनेही
विपति मोरि को प्रभुहिं सुनावा ❀ पुरोडास[1] चह रासभ[2] खावा
सीता कर विलाप सुनि भारी ❀ भये चराचर जीव दुखारी

दो॰ बहुविधि करत विलापनभ, लियेजात दशशीश।
डरत न खल वर पाइ भल, जो दीन्हो अज ईश॥

गृध्रराज सुनि आरत बानी ❀ रघुकुलतिलक नारि पहिंचानी
अधम निशाचर लीन्हे जाई ❀ जिमि मलेच्छवश कपिला गाई
अहह प्रथम बल मम तनु नाहीं ❀ तदपि जाइ देखौं बल ताहीं
सीता पुत्रि करसि जनि त्रासा[3] ❀ करिहौं यातुधान[4] कर नासा
धावा क्रोधवन्त खग कैसे ❀ छूटै पवि[5] पर्वत पहँ जैसे
रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होहीं ❀ निर्भय चलेसि न जानेसि मोहीं
आवत दीख कृतांत[6] समाना ❀ फिरि दशकन्ध करत अनुमाना
की मैनाक कि खगपति होई ❀ मम बल जानि सहित पति सोई
जाना जरठ जटायू येहा ❀ मम कर तीरथ छाँड़िहि देहा

दो॰ ममभुजबल नहिं जानत, आवत तपिन सहाइ।
समर चढ़े तौ यहि हतौं, जियत न निजथलजाइ॥

सुनत गृध्र क्रोधातुर धावा ❀ कह सुनु रावण मोर सिखावा
तजि जानकी कुशल गृह जाहू ❀ नाहिंत अस होइहि बहुबाहू
रामरोष पावक अति घोरा ❀ होइहि सकल शलभ कुल तोरा
उतर न देइ दशानन योधा ❀ तबहिं गृध्र धावा करि क्रोधा
धरि कँच विरथ कीन्ह महि गिरा ❀ सीतहिं राखि गृध्र पुनि फिरा
दशमुख उठि कृतशर संधाना ❀ गृध्र आइ काटेउ धनुबाना
चोंचन मारि बिदारेसि[8] देही ❀ दण्ड एक भइ मूर्च्छा तेही

दो॰ जेइँ रावण निज वश किये, मुनिगण सिद्ध सुरेश।
तेइँ रावण सन समर[9] अति, धीर वीर गृध्रेश॥

---

१ यज्ञ की खीर २ गधा ३ दुःख ४ राक्षस ५ वज्र ६ काल ७ बाल ८ फाड़ी ९ युद्ध॥

स्वस्थ भये सो पुनि उठि धावा ❀ मारे गृध्र न सम्मुख आवा
कीन्हेसि बहु जब युद्ध खगेशा ❀ थकित भयो तब जरंठ गिधेशा
तब सक्रोध निशिचर खिसियाना ❀ काढ़ेसि परम कराल कृपाना
काटेसि पंख परा खग धरणी ❀ सुमिरि राम की अद्भुत करणी
मन महँ गृध्र परम सुख माना ❀ रामकाज मम लाग्यो प्राना
सीतहिं याने चढ़ाय बहोरी ❀ चला उताइल त्रास न थोरी
करति विलाप जाति नभ सीता ❀ व्याँधविवश जनु मृगी सभीता
गिरि पर बैठे कपिन निहारी ❀ कहि हरिनाम दीन्ह पट डारी
यहिविधि सीतहिं सो लै गयऊ ❀ वन अशोक महँ राखत भयऊ

दो॰ हारिपरा खल बहुत विधि, भय अरु प्रीति दिखाइ।
तब अशोक पादप तरे, राखेसि यतन कराइ॥

उहाँ विधाता मन अनुमाना ❀ सुरपति बोलि मंत्र अस ठाना
तात जनकतनया पहँ जाहू ❀ सुधि न पाव जिहि निशिचरनाहू
अस कहि विधि सुन्दर हवि आनी ❀ सौंपि बहुरि बोले मृदु बानी
यहि भक्षण कृत क्षुधा न प्यासा ❀ वर्ष सहस्रदश संशय नासा
सो प्रसाद लै आयसु पाई ❀ चले हृदय सुमिरत रघुराई
कछु वासव माया निज गोई ❀ रक्षक रहे गये तहँ सोई
तदपि डरत सीता पहँ आयउ ❀ करि प्रणाम निज नाम सुनायउ
निश्चय जानि सुरेश सुजाना ❀ पिता जनक दशरथ सम माना
करि परितोष दूरि करि शोका ❀ हव्य खवाय गये निज लोका

दो॰ जेहिविधि कपटकुरंगसँग, धाय चले श्रीराम।
सो छवि सीता राखि उर, रटतिरहतिहरि नाम॥

रघुपति अनुजहिं आवत देखी ❀ बाहिज चिंता कीन्ह विशेखी
जनकसुता परिहरेउ अकेली ❀ आयहु तात वचन मम पेली
निशिचर निकर फिरहिं वन माहीं ❀ मम मन सीता आश्रम नाहीं

---

१ बूढ़ा २ तलवार ३ सवारी ४ बहेलिया ५ भूख ६ इन्द्र ७ हरिण ८ ऊपर से ९ स्थान॥

अहह तात भल कीन्हेउ नाहीं ❀ सियविहीनं मम जीवन काहीं
यहिते कवन विपति बड़ि भाई ❀ खोयहु सीय काननहिं आई
गहि पदकमल अनुज करजोरी ❀ कहेउ नाथ कछु मोरि न खोरी
अनुज समेत गये प्रभु तहँवाँ ❀ गोदावरि तट आश्रम जहँवाँ
आश्रम देखि जानकी हीना ❀ भये विकल जस प्राकृत दीना

दो॰ कानन रहेउ तड़ाग इव, चकचकई सिय राम।
रावणनिशिबिछुरनकिये, दुख बीते चहुँयामं॥

परदुख हरण शोक दुख नाहीं ❀ भा विषाद तिनके मन माहीं
हा गुणखानि जानकी सीता ❀ रूप शील व्रत नेम पुनीता
लक्ष्मण समुझाये बहु भाँती ❀ पूँछत चले लता तरु पाँती
हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी ❀ तुम देखी सीता मृगनैनी
खंजन शुक कपोतं मृग मीना ❀ मधुपनिकर कोकिला प्रवीना
कुन्दकली दाड़िमं दामिनी ❀ कमलशरद शशि अहि भामिनी
वरुणपाश मनोजधनु हंसा ❀ गज केहरि निज सुनत प्रशंसा
श्रीफल कनक कदलि हरषाहीं ❀ नेकु न शंक सकुच मन माहीं
सुनु जानकी तोहिं बिनु आजू ❀ हर्ष सकल पाइ जनु राजू
किमि सहि जात अनख तोहिं पाहीं ❀ प्रिया वेगि प्रकटति कम नाहीं
यहि विधि विलपत खोजत स्वामी ❀ मनो महाविरही अतिकामी

दो॰ फणि मणिहीन दीन जिमि, मीन हीन जिमिवारि।
तिमिव्याकुलभयेलषणतहँ, रघुवर दशा निहारि॥

धरि उर धीर बुझावहिं रामहिं ❀ तजहिं न शोक अधिक सुखधामहिं
पूरण काम राम सुखराशी ❀ मनुज चरित कर अज अविनाशी
सरवर अमित नदी गिरि खोहा ❀ बहुविधि रामलषण तहँ जोहा
शोच हृदय कछु कहि नहिं आवा ❀ टूट धनुष शर आगे पावा
कहुँ कहुँ शोणितं देखिय कैसे ❀ श्रावण जल भा डाबर जैसे

१ विना २ प्रहर ३ भ्रमर ४ कबूतर ५ अनार ६ हाथी ७ बेल ८ खून ९ मटमैला॥

कहत राम लक्ष्मणहिं बुझाई ❀ काहू कीन्ह युद्ध यहि ठाई
आगे परा गृध्रपति[1] देखा ❀ सुमिरत रामचरण की रेखा

दो० कर सरोज शिर परसेउ, कृपासिन्धु रघुवीर ।
निरखि राम छविधाममुख, विगत[2] भई सब पीर ॥

तब कह गृध्र वचन धरि धीरा ❀ सुनहु राम भञ्जन भवभीरा
नाथ दशानन यह गति कीन्हीं ❀ तेहि खल जनकसुता हरि लीन्हीं
लै दक्षिण दिशि गयउ गोसाईं ❀ विलपति अति कुररी की नाईं
दरश लागि प्रभु राखेउँ प्राना ❀ चलन चहत अब कृपानिधाना
राम कहा तनु राखहु ताता ❀ मुख मुसुकाइ कही तेइँ बाता
जाकर नाम मरत मुख आवा ❀ अधमौ मुक्त होइँ श्रुति[3] गावा
सो मम लोचन गोचर आगे ❀ राखौं देह नाथ केहि लागे
जल भरि नयन कहा रघुराई ❀ तात कर्म निजते गति पाई
परहित बस जिनके मन माहीं ❀ तिनकहँ जग दुर्लभ[4] कछु नाहीं
तनु तजि तात जाहु ममधामा[5] ❀ देउँ कहा तुम पूरणकामा

दो० सीताहरण तात जनि, कहेउ पिता सन जाइ ।
जो मैं राम तौ कुल सहित, कहिहि दशानन आइ ॥

गृध्र देह तजि धरि हरिरूपा ❀ भूषण बहु पट पीत अनूपा
श्याम गात विशाल भुज चारी ❀ अस्तुति करत नयन भरि वारी

छं० जय रामरूप अनूप निर्गुण सगुण गुणप्रेरक सही ।
दशशीश बाहु प्रचण्ड खण्डन चण्ड शर मण्डन मही ॥
पाथोद[6]गात सरोजमुख राजीव आयत लोचनं ।
नित नौमि राम कृपालु बाहुविशाल[7] भव[8]भयमोचनं ॥
बलमप्रमेयमनादिमजमव्यक्तमेकमगोचरं । * ।
गोविन्द गोपरद्वन्द हर विज्ञान घन धरणीधरं ॥

१ जटायु २ नाश ३ वेद ४ अलभ्य ५ वैकुण्ठ ६ मेघ ७ लम्बी ८ संसार ॥

जे राममंत्र जपन्त सन्त अनन्त जनमनरञ्जनं।
नित नौमि राम अकामप्रिय कामादिखलदलगञ्जनं॥
जेहि श्रुति निरंतर ब्रह्म व्यापक विरज[1] अज कहि गावहीं।
करि ज्ञान ध्यान विराग योग अनेक मुनि जेहि पावहीं॥
सो प्रकट करुणाकन्द शोभावृन्द अग जग मोहई।
मम हृदयपङ्कज[2] भृङ्ग अङ्ग अनङ्ग[3] बहु छवि सोहई॥
जो अगम सुगम स्वभाव निर्मल असमसमशीतलसदा।
पश्यन्ति[4] यं योगी यतन करि करत मन गोवश सदा॥
सो राम रमानिवास सन्तत दासवश त्रिभुवन धनी।
मम उर बसहु सो शमनसंसृति जासु कीरति पावनी॥
दो० अविरल भक्ति माँगि वर, गृध्र गयउ हरिधाम।
तेहि की क्रिया यथोचित, निजकर कीन्हीं राम॥

कोमलचित अति दीनदयाला ❀ कारण बिनु रघुनाथ कृपाला
गृध्र अधम[5] खग आमिष[6]भोगी ❀ गति तेहि दीन्ह जो याचत योगी
सुनहु उमा ते लोग अभागी ❀ हरि तजि होहिं विषय अनुरागी
पुनि सीतहिं खोजत दोउ भाई ❀ चले विलोकत वन बहुताई
संकुल लता विटप घन कानन ❀ बहु खग मृग तहँ गज पञ्चानन[8]
आवत पन्थ कबन्ध निपाता ❀ तेइँ सब कही शाप की बाता
दुर्वासा मोहिं दीन्हों शापा ❀ प्रभुपद देखि मिटा सो पापा
सुनु गन्धर्व कहौं मैं तोही ❀ मोहिं न सुहाइ ब्रह्मकुलद्रोही
दो० मन क्रम वचन कपट तजि, जो कर भूसुर सेव।
मोहिंसमेत विरञ्चि शिव, वश ताके सब देव॥
शापत ताड़त परुष कहन्ता ❀ विप्र पूज्य अस गावहिं सन्ता
पूजिय विप्र शील गुणहीना ❀ नाहिंन शूद्र गुण ज्ञानप्रवीना

१ निर्मल २ कमल ३ कामदेव ४ देखते हैं ५ नीच ६ मांस ७ पूर्ण ८ सिंह॥

कहि निज धर्म्म ताहि समुझावा ❀ निजपद प्रीति देखि मन भावा
रघुपति चरणकमल शिर नाई ❀ गयउ गगन आपनि गति पाई
ताहि देइ गति राम उदारा ❀ शबरी के आश्रम पगु धारा
शबरी दीख राम गृह आये ❀ मुनि के वचन समुझि जिय भाये
सरसिजलोचन बाहु विशाला ❀ जटा मुकुट शिर उर वनमाला
श्याम गौर सुन्दर दोउ भाई ❀ शबरी परी चरण लपटाई
प्रेममगन मुख वचन न आवा ❀ पुनि पुनि पदसरोज शिरनावा
सादर जल लै चरण पखारे ❀ पुनि सुन्दर आसन बैठारे

दो० कन्दमूल फल सरस अति, दिये रामकहँ आनि।
प्रेम सहित प्रभु खायउ, बारहिंबार बखानि॥

पाणि जोरि आगे भइ ठाढ़ी ❀ प्रभुहिं विलोकि प्रीति अति बाढ़ी
केहि विधि अस्तुति करौं तुम्हारी ❀ अधम जाति मैं जड़मति भारी
अधमते अधम अधम अतिनारी ❀ तिन महँ मैं अतिमन्द अघारी
कह रघुपति सुनु भांमिनि बाता ❀ मानौं एक भक्ति कर नाता
जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई ❀ धन बल परिजन गुण चतुराई
भक्तिहीन नर सोहै कैसे ❀ बिनु जल वारिद देखिय जैसे
नवधा भक्ति कहौं तोहि पाहीं ❀ सावधान सुनु धरु मन माहीं
प्रथम भक्ति सन्तन कर संगा ❀ दूसरि रत मम कथा प्रसंगा

दो० गुरु पदपंकज सेवा, तीसरि भक्ति अमान।
चौथिभक्तिममगुणगण, करै कपट तजि गान॥

मंत्र जाप मम दृढ़ विश्वासा ❀ पंचम भजन सो वेद प्रकासा
षट दम शील विरत बहु कर्म्मा ❀ निरत निरन्तर सज्जन धर्म्मा
सतईं सब मोहिं मय जग देखै ❀ मोते सन्त अधिक करि लेखै
अठईं यथालाभ सन्तोषा ❀ सपनेहुँ नहिं देखै परदोषा
नवम सरल सब सों छल हीना ❀ मम भरोस हिय हर्ष न दीना

१ अपना २ आकाश ३ कमल ४ चरणकमल ५ रसीला ६ स्त्री ७ मेघ ८ सीधा ॥

नवमहँ एकौ जिनके होई ❀ नारि पुरुष सचराचर कोई
सो अतिशय प्रिय भामिनि मोरे ❀ सकल प्रकार भक्ति दृढ़ तोरे
योगिवृन्द दुर्लभ गति जोई ❀ तो कहँ आजु सुलभ भइ सोई
मम दर्शन फल परम अनूपा ❀ जीव पाव निज सहज स्वरूपा

दो० सब प्रकार तव भाग्य बड़, ममचरणन अनुराग।
तवमहिमा जेहि उरबसिहि, तासु परम बड़भाग ॥

सुनि शुभ वचन हर्ष कहँ पाई ❀ पुनि बोले प्रभु गिरा सुहाई
जनक[३]सुता कै सुधि है भामिनि ❀ जानिहु तौ कहु करिवर[४]गामिनि
पम्पासरहिं जाहु रघुराई ❀ मुनिवर विपुल[५] रहे जहँ छाई
ऋषि मतंग महिमा गुण भारी ❀ जीव चराचर रहत सुखारी
वैर न कर काहू सन कोई ❀ जासन वैर प्रीति करु सोई
शिखर सुहावन कानन[६] फूले ❀ खग मृग जीव जन्तु अनुकूले
करहु सफल श्रम सबकर जाई ❀ तहां होइ सुग्रीव मिताई
सो सब कहिहि देव रघुवीरा ❀ जानत हौ पूंछहु मतिधीरा
बार बार प्रभु पद शिर नाई ❀ प्रेमसहित सब कथा सुनाई

छं० कहिकथासकलविलोकिहरिमुखहृदयपदपंकजधरे।
तजि योगपावक देह हरिपद लीन भइ जहँ नहिं फिरे ॥
नर विविध कर्म अधर्म बहुमत शोकप्रद सब त्यागहू।
विश्वास करि कह दास तुलसी रामपद अनुरागहू ॥

दो० जातिहीन अघजन्ममय, मुक्त कीन्ह अस नारि।
महामन्द मन सुखचहसि, ऐसे प्रभुहिं बिसारि ॥

चले राम त्यागा वन सोऊ ❀ अतुलित बल नर केहरि दोऊ
विरही इव प्रभु करत विषादा ❀ कहत कथा अनेक संवादा
लक्ष्मण देखहु कानन शोभा ❀ देखत केहिकर मन नहिं क्षोभा

१ समूह २ सहज ३ जानकी ४ गजगामिनी ५ बहुत ६ वन ७ योगाग्नि ८ सिंह ॥

नारि सहित सब खग[1] मृग वृन्दा ❀ मानहुँ मोरि करतहहिं निन्दा
हमहिं देखि मृग निकर पराहीं ❀ मृगी कहहिं तुम कहँ भय नाहीं
तुम आनन्द करहु मृग जाये ❀ कंचन मृग खोजन ये आये
संग लाइ करिणी[2] करि लेहीं ❀ मानहुँ मोहिं सिखावन देहीं
शास्त्रसुचिंतित पुनि पुनि देखिय ❀ भूपसुसेवित वश नहिं लेखिय
राखिय नारि यदपि उर माहीं ❀ युवती शास्त्र नृपति वश नाहीं
देखहु तात वसन्त सुहावा ❀ प्रियाहीन मोहिं भय उपजावा

दो॰ विरहविकलबलहीन मोहिं, जानेसिनिपटअकेल।
सहित विपिन मधुकरखगन, मदन कीन्ह बगमेल॥
देखि गयो भ्राता सहित, तासु दूत सुनि बात।
डेरे कीन्हेउ मनहुँ तिन, कटक[3]नभटकहिजात॥

विटप[4] विशाल लता अरुझानी ❀ विविध वितान दिये जनु तानी
कदलि[5] ताल वर ध्वजा पताका ❀ देखि न मोह धीर मन जाका
विविध भाँति फूले तरु नाना ❀ जनु बानैत बने बहु बाना
कहुँ कहुँ सुन्दर विटप सुहाये ❀ जनु भट बिलग बिलग है छाये
कूजत पिक मानहुँ गज माते ❀ ढक महोख ऊंट वेषराते
मोर चकोर कीर[6] वर वाजी ❀ पारावत[7] मराल सब ताजी
तीतर लावा पदचर यूथा ❀ वरणि न जाइ मनोज[8] वरूथा
रथ गिरि शिला दुन्दुभी झरना ❀ चातक वन्दी गुणगण वरना
मधुकर मुखर[9] भेरि सहनाई ❀ त्रिविधि बयारि बसीठी आई
चतुरंगिनी सेन सब लीन्हे ❀ बिचरत सबहिं चुनौती दीन्हे
लक्ष्मण देखहु काम अनीका ❀ रहहिं धीर तिनके जगलीका
यहिके एक परम बल नारी ❀ तेहिते उबर सुभट सोइ भारी

दो॰ तात तीनि अतिप्रबलखल, काम क्रोध अरु लोभ।
मुनि विज्ञान धाम मन, करहिंनिमिषमहँक्षोभ॥

१ पक्षी २ हथिनी ३ फौज ४ वृक्ष ५ केला ६ तोता ७ कबूतर ८ कामदेव ९ शब्द॥

लोभ के इच्छा दम्भबल, काम के केवल नारि।
क्रोध के परुष वचन बल, मुनिवर कहहिं विचारि॥

गुणातीत सचराचर स्वामी ❁ राम उमा सब अन्तरयामी
कामिन कै दीनता देखाई ❁ धीरन के मन विरति दृढ़ाई
क्रोध मनोज लोभ मद माया ❁ छूटहिं सकल राम की दाया
सो नर इन्द्रजाल नहिं भूला ❁ जापर होइ सो नट अनुकूला
उमा कहौं मैं अनुभव अपना ❁ सति हरिभजन जगत सब सपना
पुनि प्रभु गये सरोवर तीरा ❁ पम्पा नाम सुभग गम्भीरा
सन्तहृदय जस निर्मल वारी ❁ बाँधे घाट मनोहर चारी
जहँ तहँ पियहिं विविध मृग नीरा ❁ जनु उदार गृह याचक भीरा

दो० पुरइनि सघन ओटजल, वेगि न पाइय मर्म।
मायाछन्न न देखिये, जैसे निर्गुण ब्रह्म॥
सुखी मीन सब एकरस, अतिअगाधजलमाहिं।
यथा धर्म्म शीलान्ह के, दिन सुख संयुत जाहिं॥

विकसे सरसिज[1] नाना रङ्गा ❁ मधुर मुखर गुंजत बहुभृङ्गा[2]
बोलत जलकुक्कुट[3] कलहंसा ❁ प्रभु विलोकि जनु करत प्रशंसा
चक्रवाक बक खग समुदाई ❁ देखत बनै वरणि नहिं जाई
सुन्दर खगगण गिरा सुहाई ❁ जात पथिक जनु लेत बुलाई
ताल समीप मुनिन गृह छाये ❁ चहुँदिशि कानन[4] विटप सुहाये
चम्पक बकुल कदम्ब तमाला ❁ पाटल पनस[5] पलाश रसाला[6]
नवपल्लव कुसुमित तरु नाना ❁ चञ्चरीक पटली कर गाना
शीतल मन्द सुगन्ध सुभाऊ ❁ सन्तत बहै मनोहर बाऊ
कुहू कुहू कोकिल ध्वनि करहीं ❁ सुनि रव[7] सरस ध्यान मुनि टरहीं

दो० फलभारन नव विटप[8] सब, रहे भूमि नियराइ।
पर उपकारी पुरुष जिमि, नवहिं सुसम्पति पाइ॥

१ कमल २ भ्रमर ३ जलमुर्गा ४ वन ५ कटहल ६ आम ७ शब्द ८ वृक्ष॥

देखि राम अति रुचिर तलावा ❁ मज्जन कीन्ह परम सुख पावा
देखी सुन्दर तरुवर छाया ❁ बैठे अनुज सहित रघुराया
तहँ पुनि सकल देव मुनि आये ❁ अस्तुति करि निजधाम सिधाये
बैठे परम प्रसन्न कृपाला ❁ कहत अनुज सन कथा रसाला
विरहवन्त भगवन्तहिं देखी ❁ नारदमन भा शोच विशेखी
मोर शाप करि अङ्गीकारा ❁ सहत राम नाना दुखभारा
ऐसे प्रभुहिं विलोकौं जाई ❁ पुनि न बनिहि अस अवसर आई
यह विचारि नारद कर बीना ❁ गये जहाँ प्रभु सुख आसीना
गावत रामचरित मृदुबानी ❁ प्रेमसहित बहुभाँति बखानी
करत दण्डवत लिये उठाई ❁ राखे बड़ी बार उरलाई
स्वागत[1] पूँछि निकट बैठारे ❁ लक्ष्मण सादर चरण पखारे

दो॰ नाना विधि विनती करी, प्रभु प्रसन्न जिय जानि।
नारद बोले वचन तब, जोरि सरोरुह पानि॥

सुनहु उदार परम रघुनायक ❁ सुन्दर अगम सुगम वरदायक
देहु एक वर मांगौं स्वामी ❁ यद्यपि जानहु अन्तरयामी
जानहु मुनि तुम मोर स्वभाऊ ❁ जन सन कबहुँ कि करौं दुराऊ
कवन वस्तु अस प्रियमोहिं लागी ❁ जो मुनिवर न सकहु तुम माँगी
जनकहँ कछु अदेय नहिं मोरे ❁ अस विश्वास तजहु जनि भोरे
तब नारद बोले हर्षाई ❁ अस वर माँगौं करौं ढिठाई
यद्यपि प्रभु के नाम अनेका ❁ श्रुति कह अधिक एक ते एका
राम सकल नामन ते अधिका ❁ होहु नाथ अघ[2]खग[3]गणबधिका[4]

दो॰ राकारजनी[5] भक्ति तव, रामनाम सोइ सोम[6]।
अपरनामउडुगण[7] विमल, बसहु भक्त उरव्योम[8]॥
एवमस्तु मुनिसन कहेउ, कृपासिन्धु रघुनाथ।
तब नारद मन हर्ष अति, प्रभुपद नायउ माथ॥

१ कुशल क्षेम २ पाप ३ पक्षी ४ बंहेलिया ५ रात्रि ६ चन्द्रमा ७ तारे ८ आकाश॥

अति प्रसन्न रघुनाथहिं जानी ❀ पुनि नारद बोले मृदुबानी
राम जबहिं प्रेरेहु निज माया ❀ मोहेहु मोहिं सुनहु रघुराया
तब विवाह चाहों मैं कीन्हा ❀ प्रभु केहि कारण करै न दीन्हा
सुनु मुनि तोहिं कहौं सहरोसा ❀ भजहिं जे मोहिं तजि सकलभरोसा
करौं सदा तिनकी रखवारी ❀ जिमि बालक पालै महतारी
गहि शिशु बच्छ अनल अहिधाई ❀ तहँ राखै जननी अरगाई
प्रौढ़ भये तेहि सुत पर माता ❀ प्रीति करै नहिं पाछिलि बाता
मोरे प्रौढ़ तनय सम ज्ञानी ❀ बालकसुतसम दास अमानी
जिनहिं मोर बल निजबल ताहीं ❀ दुहुँ कहँ काम क्रोध रिपु आहीं
यह विचारि पण्डित मोहिं भजहीं ❀ पायहु ज्ञान भक्ति नहिं तजहीं

दो० काम क्रोध लोभादि मद, प्रबल मोह की धारि।
तिनमहँ अतिदारुणदुखद, मायारूपी नारि॥

सुनु मुनि कह पुराण श्रुति सन्ता ❀ मोहविपिन कहँ नारि बसन्ता
जप तप नेम जलाशय भारी ❀ ह्वै ग्रीषम शोषै सब वारी
काम क्रोध मद मत्सर भेका ❀ इनहिं हर्षप्रद वर्षा एका
दुर्वासना कुमुद समुदाई ❀ तिनकहँ शरद सदा सुखदाई
धर्म सकल सरसीरुह[२] वृन्दा ❀ ह्वै हिम तिन्हें देत दुख मन्दा
पुनि ममता जवास बहुताई ❀ पलुहै नारि शिशिर ऋतु पाई
पाप उलूक निकर सुखकारी ❀ नारि निबिड़ रजनी[३] अँधियारी
बुधिबल शील सत्य सब मीना[४] ❀ बंसी सम त्रिय कहहिं प्रवीना

दो० अवगुणमूल शूलप्रद, प्रमदा[५] सब दुखखानि।
तातें कीन्ह निवारण, मुनि मैं यह जियजानि॥

सुनि रघुपति के वचन सुहाये ❀ मुनितनु पुलक नयन भरिआये
कहहु कवन प्रभु कै अस रीती ❀ सेवकपर ममता अतिप्रीती
जे न भजहिं अस प्रभु भ्रम त्यागी ❀ ज्ञानरंक[६] नर मन्द अभागी
पुनि सादर[७] बोले मुनि नारद ❀ सुनहु राम विज्ञान विशारद[८]

१ अग्नि २ कमल ३ रात्रि ४ मछली ५ स्त्री ६ कङ्गाल ७ आदरसमेत ८ चतुर॥

सन्तन के लक्षण रघुवीरा ❁ कहहु राम भञ्जन भवभीरा
सुनु मुनि सन्तन के गुण कहऊँ ❁ जेहि ते मैं उनके वश रहऊँ
षटविकाररजित अनघ अकामा ❁ अचल अकिंचन[2] शुचि सुखधामा
अमित बोध अनीह[3] मित भोगी ❁ सत्यसार कवि कोविद[4] योगी
सावधान मद मान विहीना ❁ धीर धर्म्मगति परम प्रवीना[5]

दो० गुणागार[6] संसार दुख, रहित विगत सन्देह।
तजिममचरणसरोजप्रिय, तिनकहँ देह न गेह॥

निजगुण श्रवण सुनत सकुचाहीं ❁ परगुण सुनत अधिक हर्षाहीं
समशीतल नहिं त्यागहिं नीती ❁ सरल स्वभाव सबहिंसन प्रीती
जप तप व्रत दम संयम नेमा ❁ गुरु गोविन्द विप्र पद प्रेमा
श्रद्धा क्षमा मइत्री दाया ❁ मुदिता ममपद प्रीति अमाया
विरति विवेक विनय विज्ञाना ❁ बोध यथारथ वेद पुराना
दम्भ मान मद करहिं न काऊ ❁ भूलि न देहिं कुमारग पाऊ
गावहिं सुनहिं सदा मम लीला ❁ हेतुरहित परहितरत शीला
सुनु मुनि साधुन के गुण जेते ❁ कहि न सकहिं शारद[7] श्रुति तेते

छं० कहिसक न शारद शेष नारद सुनत पदपंकज गहे।
अस दीनबन्धु कृपालु अपने भक्तगुण निजमुख कहे॥
शिर नाय बारहिंबार चरणन ब्रह्मपुर नारद गये।
ते धन्य तुलसीदास आस विहाय जे हरिरँगरये॥

दो० रावणारि यश पावन, गावहिं सुनहिं जे लोग।
रामभक्ति दृढ़ पावहीं, बिनु विराग जप योग॥
दीपशिखासम युवतिरस, मन जनि होसि पतंग।
भजहिंरामतजिकाममद, करहिं सदा सतसंग॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने आरण्यकाण्डे
विमलवैराग्यसम्पादनो नाम तृतीयस्सोपानः॥ ३॥

---

१ निष्पाप २ दरिद्री २ तृष्णारहित ४ पण्डित ५ चतुर ६ गुणों का घर ७ सरस्वती॥

श्रीगोस्वामि

तुलसीदासकृत रामायण

किष्किन्धाकाण्ड

मङ्गलाचरणम् ।

श्लोक ॥ कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ । मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवन्तौ हितौ सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः ॥ १ ॥ ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाऽव्ययं श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा । संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् ॥ २ ॥

सो० मुक्तिजन्म महि जानि, ज्ञानखानि अघहानिकर।
जहँ बस शम्भु भवानि, सो काशी सेइय कस न॥
जरत सकल सुरवृन्द, विषमगरल जेहिपानकिय।
तेहिनभजासिमतिमन्द, को कृपालु शङ्कर सरिस॥

आगे चले बहुरि रघुराई ❀ ऋष्यमूक पर्वत नियराई
तहँ रह सचिवसहित सुग्रीवा ❀ आवत देखि अतुलबल सीवा[1]
अतिसभीत कह सुनु हनुमाना ❀ पुरुष युगल बल रूप निधाना
धरि वटुरूप देखु तैं जाई ❀ कहेसु मोहिं जिय सैन बुझाई
पठवा बालि होइ मनमैला ❀ भागौं तुरत तजौं यह शैला
विप्ररूप धरि कपि तहँ गयऊ ❀ माथ नाय पूँछत अस भयऊ
को तुम श्यामल गौर शरीरा ❀ क्षत्रिय रूप फिरहु वन वीरा
कठिन भूमि कोमलपदगामी ❀ कवनहेतु वन विचरहु[2] स्वामी
मृदुल[3] मनोहर सुन्दर गाता ❀ सहत दुसह वन आतप[4] वाता
की तुम तीनि देवमहँ कोऊ ❀ नर नारायण की तुम दोऊ

दो० जगकारण तारण भवहिं, भंजन[5] धरणीभार।
की तुम अखिल[6]भुवनपति, लीन्ह मनुज अवतार॥

सुनि बोले रघुवंशकुमारा ❀ विधिकर लिखा को मेटनहारा
कोशलेश दशरथ के जाये ❀ हम पितुवचन मानि वन आये
नाम राम लक्ष्मण दोउ भाई ❀ संग नारि सुकुमारि सुहाई
इहाँ हरी निशिचर वैदेही ❀ खोजत विप्र फिरहिं हम तेही
आपन चरित कहा हम गाई ❀ कहहु विप्र निजकथा बुझाई
प्रभु पहिंचानि परे गहि चरणा ❀ सो सुख उमा[7] जाइ नहिं वरणा
पुलकिततनु मुखआव न वचना ❀ देखत रुचिर वेष की रचना
पुनि धीरजधरि अस्तुति कीन्हा ❀ हरषि हृदय निजनाथहिं चीन्हा
मोर न्याव[8] मैं पूँछौं साईं ❀ तुम कस पूँछहु नर की नाईं

१ तुल्य २ घूमना ३ कोमल ४ घाम ५ नाशन ६ संपूर्ण ७ पार्वती ८ तरह॥

तव मायावश फिरौं भुलाना ❀ ताते मैं नहिं प्रभु पहिंचाना

दो॰ एक मन्द मैं मोहवश, कुटिल हृदय अज्ञान।
पुनि प्रभु मोहिं बिसारेहु, दीनबन्धु भगवान॥

यदपि नाथ अवगुण बहु मोरे ❀ सेवक प्रभुहि परै जनु भोरे
नाथ जीव तव माया मोहू ❀ सो निस्तरै तुम्हारे छोहूं
तापर मैं रघुवीर दुहाई ❀ जानौं नहिं कछु भजन उपाई
सेवक सुत पितु मातु भरोसे ❀ रहैं अशोच बनै प्रभु पोसे
अस कहि चरणपरे अकुलाई ❀ निजतनु प्रकट प्रीति उरछाई
तब रघुपति उठाइ उरलावा ❀ निज लोचनजल सींचि जुड़ावा
सुनुकपि जिय जनि मानसिऊना ❀ तैं मम प्रिय लक्ष्मण ते दूना
समदर्शी मोहिं कह सब कोई ❀ सेवक प्रिय अनन्यगति सोई

दो॰ सो अनन्य अस जाहिकै, मति न टरै हनुमन्त।
मैं सेवक सचराचर, रूपराशि भगवन्त॥

देखि पवनसुत[3] पति अनुकूला ❀ हृदय हर्ष बीते सब शूला[4]
नाथ शैल[5] पर कपिपति रहई ❀ सो सुग्रीव दास तव अहई
तासन नाथ मइत्री कीजै ❀ दीनजानि तेहि अभय करीजै
सो सीताकर खोज कराइहि ❀ जहँ तहँ मरकट[6] कोटि पठाइहि
यहिविधि सकल कथा समुझाई ❀ लिये दोउ जन पीठि चढ़ाई
तब सुग्रीव रामकहँ देखा ❀ अतिशय धन्यजन्म करिलेखा
सादर मिल्यो नाइ पदमाथा ❀ भेंटे अनुज सहित रघुनाथा
कपि के मन विचार यह नीती ❀ करिहहिं विधि मोसन ये प्रीती

दो॰ तब हनुमन्त उभयँदिशि, कहि सब कथा बुझाइ।
पावक[8] साखी देइकरि, जोरी प्रीति दृढ़ाइ॥

कीन्हप्रीति कछु बीच न राखा ❀ लक्ष्मण रामचरित सब भाखा
कह सुग्रीव नयन भरि वारी[9] ❀ मिलिहि नाथ मिथिलेशकुमारी

१ कृपा २ अपने ३ हनुमान् ४ दुःख ५ पर्वत ६ बंदर ७ दोनों ८ अग्नि ९ जल ॥

मंत्रिन सहित इहाँ इकबारा ❀ बैठरहउँ कछु करत विचारा
गगंनपन्थ[1] देखी मैं जाता ❀ परवशपरी बहुत बिलखाता
राम राम हा राम पुकारी ❀ ममदिशि देखि दीन्ह पटडारी
माँगा राम तुरत सो दीन्हा ❀ पट उरलाइ शोच अति कीन्हा
कह सुग्रीव सुनहु रघुवीरा ❀ तजहु शोक मन आनहु धीरा
सब प्रकार करिहौं सेवकाई ❀ जेहिविधि मिलहिं जानकी माई

दो० सखावचन सुनि हरषे, रघुपति करुणासीवँ[2]।
कारण कवन बसहु वन, मोसन कहु सुग्रीव॥

नाथ बालि अरु मैं दोउ भाई ❀ प्रीतिरही कछु वरणि न जाई
मयसुत मायावी तेहि नाऊँ ❀ आवा सो प्रभु हमरे गाऊँ
अर्द्धरात्रि पुरद्वार पुकारा ❀ बालिहु रिपुबल सहै न पारा
धावा बालि देखि सो भागा ❀ मैं पुनि गयउँ बन्धुसँग लागा
गिरिवरगुहा[3] पैठि सो जाई ❀ बालि मोहिं तब कहा बुझाई
परखेउ मोहिं एक पखवारा ❀ नहिं आवौं तौ जानेहु मारा
मास दिवस तहँ रहेउँ खरारी[4] ❀ निसरी रुधिरँ[5]धार तहँ भारी
तब मैं निजमन कीन्ह विचारा ❀ जाना असुर बन्धुकहँ मारा
बालि हतेसि मोहिं मारिहि आई ❀ शिला[6] द्वार दै चलेउँ पराई
मंत्रिन पुर देखा बिनुसाईं ❀ दीन्हेउ राज्य मोहिं बरिआई
बाली ताहि मारि गृह आवा ❀ देखि मोहिं जिय भेद बढ़ावा
रिपु समान मोहिं मारेसि भारी ❀ हरिलीन्हेसि सर्वस अरु नारी
ताके भय रघुवीर कृपाला ❀ सकल भुवन मैं फिरेउँ बिहाला[7]
इहाँ शापवश आवत नाहीं ❀ तदपि सभीत[8] रहौं मनमाहीं
सुनि सेवकदुख दीनदयाला ❀ फरकि उठे दोउभुजा विशाला

दो० सुनु सुग्रीव मैं मारिहौं, बालिहि एकहि बाण।
ब्रह्म रुद्र शरणागतहु, गये न उबरहिं प्राण॥

१ आकाश २ हद ३ कंदरा ४ रामचन्द्र ५ खून ६ पत्थर ७ विकल ८ डरा हुआ॥

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी ❀ तिनहिं विलोकत पातक भारी
निजदुख गिरि सम रज करि जाना ❀ मित्र के दुख रज मेरु समाना
जिनके असमति सहज न आई ❀ ते शठ हठ कत करत मिताई
कुपथं निवारि सुपन्थ चलावा ❀ गुण प्रकटहिं अवगुणहिं दुरावा
देत लेत मन शंक न धरहीं ❀ बल अनुमान सदा हित करहीं
विपतिकाल कर शतगुण नेहा ❀ श्रुतिकह सत्यमित्र गुणएहा
आगे कह मृदु वचन बनाई ❀ पाछे अनहित मन कुटिलाई
जाकर चित अहि गति समभाई ❀ अस कुमित्र परिहरे भलाई

दो० मित्र मित्र सों प्रीति करि, हृदय आन मुख आन।
जाके मन वच प्रेम नहिं, दुरे दुराये जान॥

सेवक शठ नृप कृपण कुनारी ❀ कपटी मित्र शूल सम चारी
सखा सोच त्यागहु बल मोरे ❀ सबविधि करब काज मैं तोरे
कह सुग्रीव सुनहु रघुवीरा ❀ बालि महाबल अति रणधीरा
दुन्दुभि अस्थिताल दिखराये ❀ बिनु प्रयास रघुनाथ ढहाये
देखि अमितबल बाढ़ी प्रीती ❀ बालि बधन की भइ परतीती
बारहिंबार नाइ पदशीशा ❀ प्रभुहिं जानि मन हर्ष कपीशा
उपजा ज्ञान वचन तब बोला ❀ नाथ कृपा मन भयउ अडोला
सुख सम्पति परिवार बड़ाई ❀ सब परिहरि करिहों सेवकाई
ये सब रामभक्ति के बाधक ❀ कहहिं सन्त तव पद अवराधक
शत्रु मित्र दुख सुख जगमाहीं ❀ मायाकृत परमारथ नाहीं
बालि परमहित जासु प्रसादा ❀ मिलेहु राम तुम शमन विषादा
सपने जेहिसन होइ लराई ❀ जागे समुझत मन सकुचाई
अब प्रभु कृपा करहु यहि भाँती ❀ सब तजि भजन करौं दिन राती
सुनि विराग संयुत कपिवाणी ❀ बोले बिहँसि राम धनुपाणी
जो कछु कहेउ सत्य सब सोई ❀ सखा वचन मम मृषा न होई

१ कुमार्ग २ सर्प ३ छोड़े ४ छोड़के ५ ध्यानी ६ नाशक ७ दुःख ८ झूठ ॥

नट मरकट इव सबहिं नचावत ❀ राम खगेश[1] वेद अस गावत
लै सुग्रीव संग रघुनाथा ❀ चले चाप[2] शायक गहि हाथा
तब रघुपति सुग्रीव पठावा ❀ गर्जेसि जाइ निकट बलपावा
सुनत बालि क्रोधातुर धावा ❀ गहिकर चरण नारि समुझावा
सुनु पति जिनहिं मिला सुग्रीवा ❀ ते दोउ बन्धु तेज बलसींवा
कोशलेश सुत लक्ष्मण रामा ❀ कालहु जीति सकहिं संग्रामा
सोइ रघुवीर हृदयमहँ आनहु ❀ छाँड़हु मोह कहा मम मानहु

दो० कहा बालि सुनु भीरु[3]प्रिय, समदरशी रघुनाथ।
जो कदापि मोहिं मारिहैं, तौ पुनि होब सनाथ॥

अस कहि चला महा अभिमानी ❀ तृण समान सुग्रीवहिं जानी
बालि देखि सुग्रीवहिं ठाढ़ा ❀ हृदय क्रोध[4] पुनि बहुबिधि बाढ़ा
भिरेउ युगल बाली अति तर्जा ❀ मुष्टिक मारि महाध्वनि गर्जा
तब सुग्रीव विकल ह्वै भागा ❀ मुष्टिप्रहार वज्रसम लागा
मैं जो कहा रघुवीर कृपाला ❀ बन्धु न होइ मोर यह काला
एक रूप तुम भ्राता दोऊ ❀ तेहि भ्रमते नहिं मारेउँ सोऊ
कर परसा सुग्रीव शरीरा ❀ तनुभा कुलिश[5] गई सब पीरा
मेली कण्ठ सुमन[6] की माला ❀ पठवा पुनि बलदेइ विशाला
पुनि नानाविधि भई लराई ❀ विटप[7]ओट देखहिं रघुराई

दो० बहु छल बल सुग्रीव करि, हृदयहारि भय मानि।
मारा बालिहिं राम तब, हिये माँझ शर[8] तानि॥

परा विकल महि शरके लागे ❀ पुनि उठि बैठ देखि प्रभु आगे
श्यामगात शिरजटा बनाये ❀ अरुण[9] नयन शर चाप चढ़ाये
पुनि पुनि चितै चरण चित दीन्हे ❀ सफलजन्म माना प्रभुचीन्हे
हृदय प्रीति मुख वचन कठोरा ❀ बोला चितै रामकी ओरा
धर्महेतु अवतरेहु गोसाईं ❀ मारेहु मोहिं व्याध की नाईं

१ गरुड़ २ धनुष ३ डरी हुई ४ रिस ५ वज्र ६ फूल ७ वृक्ष ८ बाण ९ लाल॥

मैं वैरी सुग्रीव पियारा ❀ कारण कवन नाथ मोहिं मारा
अनुजबधू भगिनी सुतनारी ❀ सुनु शठ ये कन्यासम चारी
इन्हें कुदृष्टि विलोके जोई ❀ ताहि बधे कछु पाप न होई
मूढ़ तोहिं अतिशय अभिमाना ❀ नारिसिखावन करेसि न काना
ममभुजबल आश्रित तेहि जानी ❀ मारा चहसि अधम अभिमानी

दो० सुनहु राम स्वामी सुभग, चलन चातुरी मोरि।
प्रभु अजहूं मैं पातकी, अन्तकाल गति तोरि॥

सुनत राम अति कोमलवाणी ❀ बालिशीश परसा निजपाणी
अचल करौं तनु राखहुँ प्राना ❀ बालि कहा सुनु कृपानिधाना
जन्म जन्म मुनि यतन कराहीं ❀ अन्त राम कहि आवत नाहीं
जासु नाम बल शङ्कर काशी ❀ देत सबहि समगति अविनाशी
ममलोचन गोचर सोइ आवा ❀ बहुरिकि अस प्रभु बनहिबनावा

छं० सोनयनगोचरजासुगुणनित नेतिकहि श्रुतिगावहीं।
जितिपवनमनगोनिरसकरि मुनिध्यानकबहुंकपावहीं॥
मोहिंजानिअतिअभिमानवश प्रभुकहेउराखुशरीरहीं।
अस कवन शठ हठ काटि सुरतरु बारि करहि बबूरहीं॥
अब नाथ करि करुणा विलोकहु देहु जो वर मांगऊं।
जेहि योनि जन्मों कर्मवश तहँ रामपद अनुरागऊं॥
यह तनय मम सम विनयबल कल्याणप्रद प्रभुलीजिये।
गहिबांह सुरनरनाह अंगद दास आपन कीजिये॥

दो० रामचरण दृढ़ प्रीतिकरि, बालि कीन्ह तनु त्याग।
सुमनमालजिमि कण्ठते, गिरत न जानै नाग॥

राम बालि निजधाम पठावा ❀ नगर लोग सब व्याकुल धावा
नाना विधि विलापकर तारा ❀ छूटे केश न देह सँभारा

१ बहिन २ पतोहू ३ घमण्ड ४ नीच ५ छुआ ६ सन्मुख ७ वेद ८ हाथी॥

पुनि पुनि तासु शीश उर धरई ❁ वदन विलोकि हृदयमहँ हतई
मैं पति तुमहिं बहुत समुझावा ❁ कालविवश पिय मनहिं न आवा
अंगद कहँ कछु कहन न पायहु ❁ बीचहि सुरपुर प्राण पठायहु
तारा विकल देखि रघुराया ❁ दीन्ह ज्ञान हरिलीन्ही माया
छिति[1] जल पावक गगन समीरा[2] ❁ पंचरचित यह अधम शरीरा
प्रकट सो तनु तव आगे सोवा ❁ जीवनित्य तुम केहिलगि रोवा
उपजा ज्ञान चरण तब लागी ❁ लीन्हेसि परमभक्ति वर मांगी
उमा दारुयोषित[3] की नाईं ❁ सबहिं नचावत राम गोसाईं
तब सुग्रीवहिं आयसु दीन्हा ❁ मृतककर्म विधिवत सब कीन्हा
राम कहा अनुजहिं समुझाई ❁ राज्य देहु सुग्रीवहिं जाई
रघुपतिचरण नाइकरि माथा ❁ चले सकल प्रेरित रघुनाथा

दो॰ लक्ष्मण तुरत बुलावा, पुरजन विप्र समाज।
राज्य दीन्ह सुग्रीव कहँ, अंगद कहँ युवराज॥

उमा रामसम हित जग माहीं ❁ गुरु पितु मातु बन्धु कोउ नाहीं
सुर नर मुनि सबकी यह रीती ❁ स्वारथ लागि करैं सब प्रीती
बालित्रास व्याकुल दिनराती ❁ तनुविवरण[4] चिंता जरु छाती
सो सुग्रीव कीन्ह कपिराऊ ❁ अतिकोमल रघुवीर स्वभाऊ
जानतहू अस प्रभु परिहरहीं ❁ काहे न विपतिजाल नर परहीं
पुनि सुग्रीवहिं लीन्ह बुलाई ❁ बहुप्रकार नृपनीति सिखाई
कह प्रभु सुनु सुग्रीव हरीशा[5] ❁ पुर न जाउँ दशचारि बरीशा
गत ग्रीषम वर्षाऋतु आई ❁ रहिहौं निकट शैल[6]पर छाई
अंगदसहित करहु तुम राजू ❁ सँन्तत[7] हृदय राखि मम काजू
तब सुग्रीव भवन फिरि आये ❁ राम प्रवर्षण गिरिपर छाये

दो॰ प्रथमहिं देवन गिरिगुहा, राखी रुचिर बनाय।
रामकृपानिधिकछुकदिन, वास करहिंगे आय॥

१ पृथ्वी २ पवन ३ कठपुतली ४ कांतिहीन ५ वानरेश ६ पर्वत ७ सदा॥

सुन्दर वन कुसुमित अति शोभा ❀ गुंजत चंचरीक मधुलोभा
कन्दमूल फल पत्र सुहाये ❀ भये बहुत जबते प्रभु आये
देखि मनोहर शैल अनूपा ❀ रहे तहँ अनुज सहित सुर भूपा
मधुकर खग मृग तनु धरि देवा ❀ करहिं सिद्ध मुनि प्रभु की सेवा
मंगलमूल भये बन तबते ❀ कीन्ह निवास रमापति जबते
फटिक शिला अति शुभ्र[1] सुहाई ❀ सुख आसीन तहाँ दोउ भाई
कहत अनुजसन कथा अनेका ❀ भक्ति विरति नृपनीति विवेका
वर्षाकाल मेघ नभ छाये ❀ गर्जत लागत परमसुहाये

दो० लक्ष्मण देखहु मोरगण, नाचत वारिद पेखि।
गृही विरतिरत हर्ष युत, विष्णुभक्त कहँ देखि॥

घनघमण्ड नभ गरजत घोरा ❀ प्रियाहीन डरपत मनमोरा
दामिनि[3] दमकिरही घनमाहीं ❀ खलकी प्रीति यथा थिरनाहीं
वरषहिं जलद[4] भूमि नियराये ❀ यथा नवहिं बुध विद्यापाये
बूंदअघात सहैं गिरि कैसे ❀ खलके वचन सन्त सहैं जैसे
क्षुद्रनदी भरि चलि उतराई ❀ जस थोरेधन खल इतराई
भूमि परत भा डाबर पानी ❀ जिमि जीवहिं माया लपटानी
सिमिटि सिमिटि जल भरैं तलावा ❀ जिमि सद्गुण सज्जनपहँ आवा
सरिताजल जलनिधिमहँ जाई ❀ होइअचल जिमि जन हरिपाई

दो० हरितभूमि तृणसंकुल, समुझिपरै नहिं पन्थ।
जिमि पाखण्ड विवाद ते, लुप्त भये सद्ग्रन्थ॥

दादुर[6] धुनि चहुँ ओर सुहाये ❀ वेद पढ़ैं जनु बटु समुदाये
नवपल्लव भे विटप[7] अनेका ❀ साधुकेमन जस मिले विवेका
अर्क जवास पातबिनु भयऊ ❀ जिमि सुराज्य खल उद्यम गयऊ
खोजत पन्थ मिलै नहिं धूरी ❀ करै क्रोध जिमि धर्महिं दूरी
ससिसम्पन्न[8] सोह महि कैसी ❀ उपकारी की सम्पति जैसी

१ फूला हुआ २ सफ़ेद ३ बिजली ४ बादल ५ चोट ६ मेढ़क ७ वृक्ष ८ अन्न॥

निशितमघन खद्योत विराजा ❀ जनु दम्भिनकर जुरा समाजा
महावृष्टि चलि फूटि कियारी ❀ जिमि स्वतंत्र ह्वै बिगरहिं नारी
कृषी निरावहिं चतुर किसाना ❀ जिमि बुध तजहिं मोहमदनाना
देखियत चक्रवाक खगनाहीं ❀ कलिहि पाइ जिमिधर्म पराहीं
ऊषर बरषै तृण नहिं जामा ❀ सन्तहृदय जस उपज न कामा
विविध जन्तु संकुल महि भ्राजा ❀ बढ़ै प्रजा जिमि पाइ सुराजा
जहँ तहँ पथिक रहे थकिनाना ❀ जिमि इन्द्रियगण उपजत ज्ञाना

दो० कबहुँ प्रबल चल मारुत, जहँ तहँ मेघ बिलाहिं।
जिमि कुपूत कुल ऊपजे, सम्पति धर्म नशाहिं॥
कबहुँदिवस[3]महँनिबिड़तम[4], कबहुँक प्रकट पतंग[5]।
उपजै विनशै ज्ञान जिमि, पाइ सुसंग कुसंग॥

वर्षा विगत शरद ऋतु आई ❀ देखहु लक्ष्मण परम सुहाई
फूले कास सकल महि छाई ❀ जनु वर्षाऋतु प्रकट बुढ़ाई
उदित अगस्त्य पन्थ जल शोषा ❀ जिमि लोभहिं शोषै सन्तोषा
सरिता सर जल निर्मल सोहा ❀ सन्त हृदय जस गत मद मोहा
रस रस शोष सरित सर पानी ❀ ममता त्याग करहिं जिमि ज्ञानी
जानि शरदऋतु खञ्जन आये ❀ पाइ समय जिमि सुकृत सुहाये
पंक[6] न रेणु सोह अस धरणी ❀ नीति निपुण नृपकी जसकरणी
जलसंकोच विकल भये मीना ❀ अबुध कुटुम्बी जिमि धनहीना
बिनु घन निर्मल सोह अकाशा ❀ जिमि हरिजन परिहरि सब आशा
कहुँ कहुँ वृष्टि शरदऋतु थोरी ❀ कोउइक पाव भक्ति जिमि मोरी

दो० चले हरषि तजि नगर नृप, तापसवणिक भिखारि।
जिमि हरिभक्ति पाइजन, तजहिं आश्रमी चारि॥

सुखी मीन[7] जहँ नीर अगाधा ❀ जिमि हरि शरण न एकौबाधा
फूले कमल सोह सर[8] कैसे ❀ निर्गुणब्रह्म सगुण भये जैसे

१ खेती २ बहुत ३ दिन ४ अँधेरा ५ सूर्य ६ कीच ७ मछली ८ तालाब॥

गुञ्जत मधुकर मुखर अनूपा ❀ सुन्दर खगरव नानारूपा
चक्रवाक मन दुख निशि पेखी ❀ जिमि दुर्जन परसम्पति देखी
चातक रटत तृषा अति वोही ❀ जिमि सुख लहै न शंकर द्रोही
शरदातप निशि शशि अपहरई ❀ सन्तदरश जिमि पातक टरई
देखहिं विधु[1] चकोर समुदाई ❀ चितवहिं हरिजन हरि जिमि पाई
मसक[2] दंश बीते हिम त्रासा ❀ जिमि द्विजद्रोह[3] किये कुलनासा

दो० भूमिजीव संकुल रहे, गये शरदऋतु पाइ।
सतगुरु मिले ते जाहिं जिमि, संशय भ्रम समुदाइ॥

वर्षाविगत शरद ऋतु आई ❀ सुधि न तात सीता की पाई
एकबार कैसेउ सुधि पावों ❀ कालहु जीति निमिष[4] महँ लावों
कतहुँ रहै जो जीवति होई ❀ तात यतन करि आनौं सोई
सुग्रीवहु सुधि मोरि बिसारी ❀ पावा राज्य कोष[5] पुर नारी
जेहि शायक[6] मैं मारा बाली ❀ तेहि शर हतौं मूढ़ कहँ काली
जासु कृपा छूटै मद मोहा ❀ ताकहँ उमा कि सपनेहु कोहा
जानहिं यह चरित्र मुनिज्ञानी ❀ जिन रघुबीरचरण रति मानी
लक्ष्मण क्रोधवन्त प्रभु जाना ❀ धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना

दो० तब अनुजहि समुझायहू, रघुपति करुणासीव।
भय देखाइ लै आवहू, तात सखा सुग्रीव॥

यहां पवनसुत हृदय विचारा ❀ रामकाज सुग्रीव बिसारा
निकट जाइ चरणन शिर नावा ❀ चारिहु विधि तेहि कहि समुझावा
सुनि सुग्रीव परम भय[7] माना ❀ विषय मोर हरि लीन्हेउ ज्ञाना
अब मारुतसुत[8] दूतसमूहा ❀ पठवहु जहँ तहँ वानरयूहा
कहहु पाख महँ आव न जोई ❀ मोरे कर ताकर बध होई
तब हनुमन्त बुलाये दूता ❀ सबकर करि सनमान बहूता
भय अरु प्रीति नीति दिखराई ❀ चले सकल चरणन शिरनाई

१ चन्द्रमा २ मच्छड़ ३ वैर ४ पकपल ५ खज़ाना ६ बाण ७ डर ८ हनुमान्॥

तेहि अवसर लक्ष्मण पुर आये ❀ क्रोध देखि जहँ तहँ कपि धाये

दो० धनुष चढ़ाइ कहा तब, जारि करौं पुर क्षार।
व्याकुल नगर देखि तब, आवा बालिकुमार॥

चरण नाइ शिर विनती कीन्ही ❀ लक्ष्मण अभयबाहँ तेहि दीन्ही
क्रोधवन्त लक्ष्मण सुनि काना ❀ कह कपीश अतिशय अकुलाना
सुनु हनुमन्त संग लै तारा[1] ❀ करि विनती समुझाउ कुमारा
तारा सहित जाइ हनुमाना ❀ चरणवन्दि प्रभु सुयश बखाना
करि विनती मन्दिर लै आये ❀ चरण पखारि पलँग बैठाये
तब कपीश चरणन शिर नावा ❀ गहि भुज लक्ष्मण कण्ठ लगावा
नाथ विषयसम मद कछु नाहीं ❀ मुनिमन मोह करै क्षण माहीं
सुनत विनीत वचन सुख पावा ❀ लक्ष्मण तेहि बहुविधि समुझावा
पवनतनय सब कथा सुनाई ❀ जेहि विधि गये दूत समुदाई

दो० हरषि चले सुग्रीव तब, अंगदादि कपि[2] साथ।
राम अनुज आगे किये, आये जहँ रघुनाथ॥

नाय चरण शिर कह कर जोरी ❀ नाथ मोरि कछु नाहिं न खोरी
अतिशय प्रबल देव तव माया ❀ छूटै राम करहु जब दाया
विषयविवश सुर नर मुनि स्वामी ❀ मैं पामर पशु कपि अतिकामी
नारिनयनशर[3] जाहि न लागा ❀ घोर क्रोधतम निशि जो जागा
लोभपाश[4] जेहि गर न बँधाया ❀ सो नर तुम समान रघुराया
यह गुण साधनते नहिं होई ❀ तुम्हरी कृपा पाव कोइ कोई
तब रघुपति बोले मुसुकाई ❀ तुम प्रिय मोहिं भरत जिमि भाई
अब सोइ यतन करहु मनलाई ❀ जेहिविधि सीता की सुधि पाई

दो० यहिविधि होत बतकही, आये वानर यूथ[5]।
नानावरण अतुलबल, देखिय कीश वरूथ॥

वानरकटक[6] उमा मैं देखा ❀ सो मूरुख जो किय चह लेखा[7]

---

१ बालि की स्त्री २ बन्दर ३ बाण ४ फाँसी ५ समूह ६ फ़ौज ७ शुमार॥

आय रामपद नावहिं माथा ❀ निरखि बदन सब होहिं सनाथा
अस कपि एक न सेना माहीं ❀ रामकुशल पूंछी जेहि नाहीं
यह नहिं कछु प्रभु की अधिकाई ❀ विश्वरूप व्यापक रघुराई
ठाढ़े जहँ तहँ आयसु पाई ❀ कहि सुग्रीव सबहिं समुझाई
रामकाज अरु मोर निहोरा ❀ वानरयूथ जाहु चहुँ ओरा
जनकसुता कहँ खोजहु जाई ❀ मास दिवस महँ आयहु भाई
अवधि मेटि जो बिनु सुधि पाये ❀ ताहि बधौं मैं निजकर आये

दो० वचन सुनत सब वानर, जहँ तहँ चले तुरन्त।
तब सुग्रीव बुलायउ, अंगद नल हनुमन्त॥

सुनहु नील अंगद हनुमाना ❀ जामवन्त मतिधीर सुजाना
सकल सुभट[३] मिलि दच्छिण जाहू ❀ सीतासुधि पूंछेहु सब काहू
मन वच क्रम सों यतन विचारेहु ❀ रामचन्द्र कर काज सँवारेहु
भानु पीठि सेइय उर आगी ❀ स्वामी भजिय कपट छल त्यागी
तजि माया सेइय परलोका ❀ मिटहिं सकल भवसंभव शोका
देह धरे कर यह फल भाई ❀ भजिय राम सब काम विहाई
सोइ गुणज्ञ सोई बड़भागी ❀ जो रघुवीरचरण अनुरागी
आयसु माँगि चरण शिरनाई ❀ चले सकल सुमिरत रघुराई
पाछे पवनतनय शिर नावा ❀ जानिकाज प्रभु निकट बुलावा
परसा शीश सरोरुहपानी ❀ करमुद्रिका दीन्ह सहिदानी
बहुप्रकार सीतहिं समुझायहु ❀ कहि बल वीर वेगि तुम आयहु
हनुमत जन्म सफल करि जाना ❀ चले हृदय धरि कृपानिधाना
यद्यपि प्रभु जानत सब बाता ❀ राजनीति राखत सुरत्राता

दो० चले सकल वन खोजत, सरिता सर गिरिखोह।
रामकाज लवलीन मन, बिसरा तनु कर छोह॥

कतहुँ होइ निशिचरसन भेटा ❀ प्राण लेहिं इक एक चपेटा

१ अपने हाथ २ चतुर ३ योद्धा ४ संसार ५ कमल ६ नदी ७ तालाब ८ कन्दरा॥

बहुप्रकार गिरि कानन हेरहिं ❀ कोउ मुनि मिलै ताहि सब घेरहिं
लागि तृषा अतिशय अकुलाने ❀ मिलै न जल वन गहन भुलाने
मन हनुमान कीन्ह अनुमाना ❀ मरण चहत सब बिनु जल पाना
चढ़ि गिरिशिखर चहूं दिशि देखा ❀ भूमिविवर इक कौतुक पेखा
चक्रवाक बक हंस उड़ाहीं ❀ बहुतक खग प्रविशहिं तेहि माहीं
गिरि ते उतरि पवनसुत आवा ❀ सबकहँ लै सो विवर दिखावा
आगे करि हनुमन्तहिं लीन्हा ❀ पैठे विवर विलम्ब न कीन्हा

दो० दीखजाइ उपवन सुभग, सर विकसे बहुकंज।
मन्दिर एक रुचिर तहँ, बैठि नारि तपपुंज॥

दूरिहि ते तेहि सब शिरनावा ❀ पूंछेसि निज वृत्तान्त[1] सुनावा
तब तेहिं कहा करहु जल पाना ❀ खाहु सरस सुन्दर फल नाना
मज्जन कीन्ह मधुर फल खाये ❀ तासु निकट[2] पुनि सब चलि आये
तेहिं सब आपनि कथा सुनाई ❀ मैं अब जाउँ जहाँ रघुराई
मूंदहु नयन विवर[3] तजि जाहू ❀ पैहहु सीतहि जनि कदराहू
नयन मूंदि सब देखहिं वीरा ❀ ठाढ़े सकल सिंधु के तीरा
सो पुनि गई जहाँ रघुनाथा ❀ जाइ कमलपद नायसि माथा
नाना भाँति विनय तेइँ कीन्ही ❀ अनपायनी[4] भक्ति प्रभु दीन्ही

दो० बदरीवन कहँ सो गई, प्रभु आज्ञा धरि शीश।
उर धरि रामचरण युग[5], जो वंदित अज[6] ईश॥

इहाँ विचारहिं कपि मन माहीं ❀ बीती अवधि[7] काज कछु नाहीं
सब मिलि करहिं परस्पर बाता ❀ बिनु सुधि लिये करब का भ्राता
कह अंगद लोचन भरि वारी ❀ दुहुँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी
इहाँ न सुधि सीताकर पाई ❀ उहाँ गये मारिहि कपिराई
पिताबधे पर मारत मोहीं ❀ राखा रामनिहोरा वोहीं
पुनि पुनि अंगद कह सब पाहीं ❀ मरण भयो कछु संशय[8] नाहीं

१ हाल २ नज़दीक ३ छेद ४ अचल ५ दो ६ ब्रह्मा ७ हद्द ८ संदेह॥

अंगदवचन सुनत कपिवीरा ❀ बोलि न सकहिं नयन बह नीरा
क्षण इक शोक मगन ह्वैगये ❀ पुनि अस वचन कहत सब भये
हम सीता की बिनु सुधि लीने ❀ फिरब न सुनु युवराज प्रवीने
अस कहि लवणसिंधु[1] तट जाई ❀ बैठे कपि सब दर्भ[2] डसाई
जामवन्त अंगद दुख देखी ❀ कही कथा उपदेश विशेखी
तात राम कहँ नर जनि जानहु ❀ निर्गुणब्रह्म अजित अज मानहु
हम सब सेवक अति बड़भागी ❀ सन्तत सगुणब्रह्म अनुरागी

दो० निज इच्छा अवतरेउ प्रभु, सुर द्विज गो महि लागि।
सगुणउपासक रहहिं सब, मोक्ष सकल सुखत्यागि॥

यहि विधि कहत कथा बहुभांती ❀ गिरिकन्दरा सुना सम्पाती
बाहर ह्वै देखे सब कीशा ❀ मोहिं अहार दीन्ह जगदीशा
आजु सबनकहँ भक्षण करऊँ ❀ दिन बहुगे अहार बिनु मरऊँ
कबहुँ न मिल भरि उदर अहारा ❀ आजु दीन्ह विधि एकहि बारा
डरपे गृध्रवचन सुनि काना ❀ अब भा मरण सत्य हम जाना
कपि सब उठे गृध्र कहँ देखी ❀ जामवन्त मन शोच विशेखी
कह विचारि अंगद मन माहीं ❀ धन्य जटायुसरिस[3] कोउ नाहीं
रामकाज कारण तनु त्यागी ❀ हरिपुर[4] गयउ परम बड़भागी
जो रघुवीरचरण चित लावै ❀ तिहिसम धन्य न आन कहावै
सुनि खग[5] हर्ष शोक युत बानी ❀ आवा निकट कपिन भयमानी
ताहि देखि सब चले पराई ❀ ठाढ़ कीन्ह तिन शपथ[6] दिवाई
तिन्हैं अभय[7] करि पूंछेसि जाई ❀ कथा सकल तिन ताहि सुनाई
सुनि सम्पाति बन्धु की करणी ❀ रघुपति महिमा[8] बहुविधि वरणी

दो० म्वहिं लैचलहु सिन्धुतट, देउँ तिलांजलि ताहि।
वचनसहाय करब मैं, पैहहु खोजहु जाहि॥

अनुजक्रिया करि सागरतीरा ❀ कह निजकथा सुनहु कपिवीरा

१ खारी समुद्र २ कुश ३ तुल्य ४ वैकुण्ठ ५ पक्षी ६ सौगन्द ७ निडर ८ तारीफ़॥

हम दोउ बन्धु प्रथम तरुणाई ❀ गगन गये रविनिकट उड़ाई
तेज न सहिसक सो फिरि आवा ❀ मैं अभिमानी रवि नियरावा
जरे पंख रवितेज अपारा ❀ परेउँ भूमि करि घोर चिकारा
मुनि इक नाम चन्द्रमा ओही ❀ लागी दया देखिकर मोही
बहुप्रकार तिन ज्ञान सिखावा ❀ देहजनित अभिमान छुड़ावा
त्रेता ब्रह्म मनुजतनु धरिहैं ❀ तासुनारि निशिचरपति हरिहैं
तासु खोज पठवहिं प्रभु दूता ❀ तिन्हैं मिले तुम होब पुनीता[1]
जमिहहिं पंख करसि जनि चिंता ❀ तिन्हैं देखाइ देव तैं सीता
यहकहि मुनि निज आश्रम गयऊ ❀ तिहि चण हृदय ज्ञान कछु भयऊ
सदा रामकर सुमिरण करऊँ ❀ निशिदिन मग जोवंत[2] दिनभरऊँ
मुनि की गिरा[3] सत्य भइ आजू ❀ सुनि मम वचन करहु प्रभुकाजू
गिरि त्रिकूट ऊपर बस लङ्का ❀ तहँ रह रावण सहज अशङ्का
तहँ अशोक उपवन जहँ रहई ❀ सीय बैठि तहँ शोचति अहई

दो० मैं देखौं तुम नाहिंन, गृध्रहि दृष्टि अपार।
बूढ़ भयों नतु करतेउँ, कछुक सहाय तुम्हार ॥

जो लांघै शत[4] योजन सागर ❀ करै सो रामकाज मतिआगर
जो कोइ करै रामकर काजू ❀ तेहिसम धन्य आन नहिं आजू
मोहिं विलोकि धरहु मन धीरा ❀ रामकृपा कस भयउ शरीरा
पापिउ जाकर नाम सुमिरहीं ❀ अति अपार भवसागर तरहीं
तासु दूत तुम तजि कदराई[5] ❀ राम हृदय धरि करहु उपाई
अस कहि उमा गृध्र जब गयऊ ❀ तिनके मन अति विस्मय भयऊ
निजनिज बल सबकाहू भाखा ❀ पार जानकर संशय राखा
जरठ[6] भयों अब कह ऋचेशा ❀ नहिं तनु रहा प्रथम बल लेशा
जबहिं त्रिविक्रम[7] भये खरारी ❀ तब मैं तरुण रहा बल भारी

दो० बलि बांधत प्रभु बाढ़ेऊ, सो तनु[8] वरणि न जाइ।

१ पवित्र २ खोजना ३ वाणी ४ सौ ५ कायरता ६ बूढ़ा ७ विष्णु ८ शरीर ॥

उभय घरी महँ कीन्ह मैं, सात प्रदच्छिण धाइ ॥

अंगद कहा जाऊँ मैं पारा ❀ जिय संशय कछु फिरती बारा
जामवन्त कह तुम सब लायक ❀ किमि पठवों सबही कर नायक
कहा ऋच्छपति सुनु हनुमाना ❀ का चुप साधि रहा बलवाना
पवनतनय बल पवन समाना ❀ बुधि विवेक विज्ञान निधाना
कौन सो काज कठिन जग माहीं ❀ जो नहिं तात होइ तुम पाहीं
रामकाज लगि तव अवतारा ❀ सुनि कपि भयउ पर्व्वताकारा
कनकवरण तनु तेज विराजा ❀ मानहुँ अपर गिरिन कर राजा
सिंहनाद करि बारहिंबारा ❀ लीलहिं लांघौं जलनिधि खारा
सहित सहाय रावणहिं मारी ❀ आनौं इहां त्रिकूट उपारी
जामवन्त मैं पूंछों तोहीं ❀ उचित सिखावन दीजे मोहीं
इतना करहु तात तुम जाई ❀ सीतहि देखि कहो सुधि आई
तब निज भुजबल राजिवनयना ❀ कौतुक लागि संग कपिसयना

छं० कपिसेनसंगसँहारिनिशिचर रामसीतहिं आनिहैं।
त्रयलोकपावन[2] सुयश सुर मुनि नारदादि बखानिहैं ॥
जो सुनत गावत कहत समुझत परमपद नर पावहीं।
रघुवीर पद पाथोज[3] मधुकर[4] दासतुलसी गावहीं ॥

दो० भवभेषज[6] रघुनाथयश[7], सुनैं जे नर अरु नारि।
तिनकर सकल मनोरथ, सिद्धि करहिं त्रिपुरारि[8] ॥

सो० नीलोत्पल तनु श्याम, कामकोटिशोभाअधिक।
सुनिय तासु गुणग्राम, जासु नाम अघखगबधिक ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने किष्किन्धाकाण्डे
विमलवैराग्यसम्पादनो नाम चतुर्थस्सोपानः ॥ ४ ॥

१ दो २ पवित्र ३ कमल ४ भौंरा ५ संसार ६ औषध ७ कीर्ति ८ महादेव ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीगोस्वामि

तुलसीदासकृत रामायण

सुन्दरकाण्ड

मङ्गलाचरणम् ।

श्लोक ॥ शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशा-
न्तिप्रदं ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं
विभुम् । रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥ १ ॥
नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये सत्यं वदामि च भ-
वानखिलान्तरात्मा । भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे
कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥ २ ॥ अतुलितब-
लधामं स्वर्णशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनाम-
ग्रगण्यम् । सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपति-
वरदूतं वातजातं नमामि ॥ ३ ॥

जामवन्त के वचन सुहाये ❀ सुनि हनुमान हृदय अतिभाये
तब लागि मोहिं परखियहु भाई ❀ सहि दुख कन्दमूल फल खाई

जबलगि आवौं सीतहिं देखी ❀ होइ काज मोहिं हर्ष विशेखी
अस कहि नाइ सबनकहँ माथा ❀ चले हरषि हिय धरि रघुनाथा
सिन्धुतीर इक सुन्दर भूधर[1] ❀ कौतुक कूदि[2] चढ़े तिहि ऊपर
बारबार रघुवीर सँभारी ❀ तरकेउ पवनतनय बलभारी
जेहि गिरि चरण देइ हनुमन्ता ❀ सो चलिजाय पताल तुरन्ता
जिमि अमोघ रघुपति के बाना ❀ ताही भाँति चला हनुमाना
जलनिधि[3] रघुपतिदूत विचारी ❀ तैं मैनाक होसि श्रमहारी

सो० सिन्धु वचन सुनि कान, तुरत उठे मैनाक तब।
कपिकहँ कीन्ह प्रणाम, बारबार कर जोरिकै॥

दो० हनूमान तेहि परसिकरि, पुनि तेहि कीन्ह प्रणाम।
रामकाज कीन्हे विना, मोहिं कहाँ विश्राम॥

जात पवनसुत देवन देखा ❀ जाना चह बल बुद्धि विशेखा
सुरसा नाम अहिन की माता ❀ पठयउ सुरन कही तेहिं बाता
आजु सुरन मोहिं दीन्ह अहारा ❀ सुनि हँसि बोला पवनकुमारा
रामकाज करि फिरि मैं आवौं ❀ सीता की सुधि प्रभुहिं सुनावौं
तब तुव वदनें[4] पैठिहौं[5] आई ❀ सत्य कहौं मोहिं जान दे माई
कवनिहुँ यतन देहि नहिं जाना ❀ ग्रससि न मोहिं कहा हनुमाना
योजन[6] भरि तेहि वदन पसारा ❀ कपि तनु कीन्ह दुगुन विस्तारा
सोरह योजन मुख तेइँ ठयऊ ❀ तुरत पवनसुत बत्तिस भयऊ
जस जस सुरसा वदन बढ़ावा ❀ तासु दुगुन कपि रूप दिखावा
शतयोजन तेहिं आननँ[7] कीन्हा ❀ अतिलघुरूप पवनसुत लीन्हा
वदन पैठि पुनि बाहर आवा ❀ मांगी बिदा ताहि शिर नावा
मोहिं सुरन जेहि लागि पठावा ❀ बुधि बल मर्म्म[8] तोर मैं पावा

दो० रामकाज सब करिहहु, तुम बल बुद्धिनिधान।
आशिष दै सुरसा चली, हरषि चले हनुमान॥

---

१ पर्वत २ कूदा ३ समुद्र ४-७ मुँह ५ घेरना ६ चारकोस ८ भेद॥

निशिचर एक सिन्धु महँ रहई ❀ करि माया नभ के खग[1] गहई
जीव जन्तु जे गगन[2] उड़ाहीं ❀ जल विलोकि तिनकी परिछाहीं
गहै छांह सक सो न उड़ाई ❀ यहि विधि सदा गगनचर खाई
सोइ छल हनूमानसन कीन्हा ❀ तासु कपट कपि तुरतहिं चीन्हा
ताहि मारि मारुतसुत वीरा ❀ वारिधि[3] पार गयउ मतिधीरा
तहां जाइ देखी वनशोभा ❀ गुञ्जत चंचरीक[4] मधु लोभा
नाना तरु फल फूल सुहाये ❀ खग मृग वृन्द देखि मन भाये
शैल विशाल देखि इक आगे ❀ तापर कूदि चढ़ेउ भय त्यागे
उमा न कछु कपि की अधिकाई ❀ प्रभुप्रताप जो कालहि खाई
गिरि पर चढ़ि लङ्का तेहिं देखी ❀ कहि न जाइ अतिदुर्ग विशेखी
अतिउतंग जलनिधि चहुँपासा ❀ कनककोट कर परम प्रकासा

छं० कनक[5]कोट विचित्रमणिकृत सुन्दरायत अतिघना।
चौहट्ट हाट सुबाट वीथी चारु पुर बहुविधि बना॥
गज वाजि खच्चरनिकर पदचर रथवरूथ[6]न को गनै।
बहुरूप निशिचरयूथ अतिबल सेन वर्णत नहिं बनै॥
वन बाग उपवन वाटिका सर कूप वापी सोहहीं।
नर नाग सुर गन्धर्वकन्या रूप मुनिमन मोहहीं॥
कहुँ मल्ल देह विशाल शैलसमान अतिबल गर्जहीं।
नाना अखारन भिरहिं बहुविधि एक एकन तर्जहीं॥
करियतन भट कोटिन विकटतनु नगर चहुँदिशि रक्षहीं।
कहुँमहिष मानुष धेनु खर अज[8] खल निशाचर भक्षहीं॥
यहि लागि तुलसीदास इनकी कथा संक्षेपहि कही।
रघुवीरशरतीरथसरित तनु त्यागि गति पैहैं सही॥

दो० पुर रखवारे देखि बहु, कपि मन कीन्ह विचार।

१ पक्षी २ आकाश ३ समुद्र ४ भ्रमर ५ सोना ६ समूह ७ गधा ८ बकरी॥

अति लघुरूप धरौं निशि, नगर करौं पैसार ॥

मसकसमान रूप कपि धरी ❁ लङ्कहि चलेउ सुमिरि नरहरी
नाम लङ्किनी एक निशिचरी ❁ सो कह चलेसि मोहिं निन्दरी
जानसि नाहिं मर्म[1] शठ मोरा ❁ मोर अहार लंककर चोरा
मुष्टिक एक ताहि कपि हनी ❁ रुधिर बमंत[2] धरणी ठनमनी
पुनि सम्भारि उठी सो लङ्का ❁ जोरिपाणि कर विनय सशङ्का[3]
जब रावणहिं ब्रह्म वर दीन्हा ❁ चलत विरंचि कहा मोहिं चीन्हा
विकल होसि जब कपि के मारे ❁ तब जानेसि निशिचर संहारे
तात मोर अति पुण्य बहूता ❁ देखेउँ नयन रामकर दूता

दो० सात स्वर्ग अपवर्ग[4] सुख, धरिय तुला[5] इक अंग ।
तुलै न ताहि सकल मिलि, जो सुख लवसतसंग ॥

प्रविशि नगर कीजै सब काजा ❁ हृदय राखि कोशलपुर राजा
गरल सुधा रिपु करै मिताई ❁ गोपद सिंधु अनल शितलाई
गरुअ सुमेरु रणु सम ताही ❁ राम कृपाकरि चितवहिं जाही
अति लघुरूप धरेउ हनुमाना ❁ पैठे नगर सुमिरि भगवाना
मन्दिर मन्दिर प्रति करि शोधा ❁ देखे जहँ तहँ अगणित[6] योधा
गयउ दशानन मन्दिर माहीं ❁ अतिविचित्र कहिजात सो नाहीं
शयनँ[7] किये देखा कपि तेही ❁ मन्दिर महँ न दीख वैदेही
भवन एक पुनि दीख सुहावा ❁ हरिमन्दिर तहँ भिन्न बनावा
रामनामअंकित गृह सोहा ❁ वरणि न जाइ देखि मनमोहा

दो० रामनामअंकित गृह, शोभा वरणि न जाय ।
नवतुलसी के वृन्द[8] तहँ, देखि हर्ष कपिराय ॥

लंका निशिचर निकर निवासा ❁ इहां कहां सज्जन कर वासा
मन महँ तर्क करन कपि लागा ❁ ताही समय विभीषण जागा
राम राम तेहिं सुमिरण कीन्हा ❁ हृदय हर्ष कपि सज्जन चीन्हा

---

१ भेद २ उद्गार करना ३ डर कर ४ मोक्ष ५ तराजू ६ बेप्रमाण ७ सोते ८ झुंड ॥

यहिसन हठि करिहौं पहिचानी ❀ साधु ते होइ न कारज हानी
विप्ररूप धरि वचन सुनावा ❀ सुनत विभीषण उठि तहँ आवा
करि प्रणाम पूंछी कुशलाई ❀ विप्र कहहु निज कथा बुझाई
की तुम हरिदासनमहँ कोई ❀ मोरे हृदय प्रीति अति होई
की तुम दीनबन्धु अनुरागी ❀ आयहु मोहिं करन बड़भागी

दो० तब हनुमन्त कही सब, राम कथा निज नाम।
सुनत युगल तन पुलक अति, मगन सुमिरि गुणग्राम॥

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी ❀ जिमि दशननमहँ[1] जीभ बिचारी
तात कबहुँ मोहिं जानि अनाथा ❀ करिहहिं कृपा भानुकुलनाथा[2]
तामस तनु कछु साधन नाहीं ❀ प्रीति न पदसरोज मनमाहीं
अब मोहिं भा भरोस हनुमन्ता ❀ बिनु हरिकृपा मिलहिं नहिं सन्ता
जो रघुवीर अनुग्रह[3] कीन्हा ❀ तौ तुम मोहिं दरश हठि दीन्हा
सुनहु विभीषण प्रभु की रीती ❀ करहिं सदा सेवक पर प्रीती
कहहु कवन मैं परमकुलीना ❀ कपि चंचल सबही विधि हीना
प्रात लेइ जो नाम हमारा ❀ ता दिन ताहि न मिलै अहारा[4]

दो० अस मैं अधम सखा सुनु, ताहू पर रघुवीर।
कीन्ही कृपा सुमिरि गुण, भरे विलोचन नीर[5]॥

जानतहूं अस स्वामि बिसारी ❀ ते नर काहे न होहिं दुखारी
यहिविधि कहत रामगुण ग्रामा ❀ पावा अनिर्वाच्य[6] विश्रामा
पुनि सब कथा विभीषण कही ❀ जेहिविधि जनकसुता[7] जहँ रही
तब हनुमन्त कहा सुनु भ्राता ❀ देखा चहौं जानकी माता
युक्ति विभीषण सकल सुनाई ❀ चलेउ पवनसुत बिदा कराई
धरि सोइ रूप गयउ पुनि तहँवां ❀ वन अशोक सीता रह जहँवां
देखि मनहिं मन कीन्ह प्रणामा ❀ बैठे बीति गई निशि यामा[8]
कृशतन शीशजटा इक वेणी ❀ जपति हृदय रघुपतिगुणश्रेणी

१ दाँत २ रामचन्द्रजी ३ कृपा ४ भोजन ५ जल ६ जो वाणी में न आ सके ७ सीता ८ पहर॥

दो० निजपद नयन दिये मन, रामचरण लवलीन।
परम दुखी भा पवनसुत, निरखि जानकी दीन॥

तरुपल्लव महँ रहा लुकाई ❀ करै विचार करौं का भाई
तेहि अवसर रावण तहँ आवा ❀ संग नारि बहु किये बनावा
बहुविधि खल सीतहिं समुझावा ❀ साम दाम भय भेद दिखावा
कह रावण सुनु सुमुखि सयानी ❀ मन्दोदरी आदि सब रानी
तव अनुचरी[1] करौं पन मोरा ❀ एक बार विलोकु मम ओरा
तृण धरि ओट कहति वैदेही ❀ सुमिरि अवधपति परमसनेही
सुनु दशमुख खद्योत[2] प्रकाशा ❀ कबहुँकि नलिनी[3] करहिं विकाशा
अस मन समुझहु कहत जानकी ❀ खल सुधि नहिं रघुवीर बानकी
शठ सूने हरिआनेसि मोहीं ❀ अधम निलज्ज लाज नहिं तोहीं

दो० आपुहि सुनि खद्योत सम, रामहिं भानु समान।
परुषवचनसुनिकाढ़िअसि, बोला अतिखिसियान॥

सीता तैं मम कृत अपमाना ❀ काटौं तव शिर कठिन कृपाना
नाहिंत सपदि[4] मानु मम बानी ❀ सुमुखि होत नतु जीवनहानी
श्यामसरोज दामसम सुन्दर ❀ प्रभुभुज करिकरसम दशकन्धर
सोइ भुज कंठ कि तव असि घोरा ❀ सुनु शठ अस प्रमाणपन मोरा
चन्द्रहास हरु मम परितापा ❀ रघुपति विरह अनल संतापा
शीतल निशि तव असि वरधारा ❀ कह सीता हरु मम दुख भारा
सुनत वचन पुनि मारन धावा ❀ मयतनया[5] कहि नीति बुझावा
कहेसि सकल निशिचरी बुलाई ❀ सीतहि बहु विधि त्रासहु जाई
मास दिवस महँ कहा न माना ❀ तौ मैं मारब कठिन कृपाना[6]

दो० भवन गयउ दशकन्ध तब, इहां निशाचरिवृन्द।
सीतहि त्रास[7] दिखावहीं, धरहिं रूप बहु मन्द[8]॥

त्रिजटा नाम राक्षसी एका ❀ रामचरण रत निपुण विवेका

१ दासी २ जुगुनू ३ कमलिनी ४ शीघ्र ५ मन्दोदरी ६ तलवार ७ दुःख ८ नीच॥

सबहिं बुलाय सुनायसि सपना ❀ सीतहिं सेइ करो हित अपना
सपने वानर लङ्का जारी ❀ यातुधान सेना सब मारी
खर आरूढ़ नगन दशशीशा ❀ मुण्डितशिर खण्डित भुज बीशा
यहिविधि सो दक्षिण दिशि जाई ❀ लङ्का मनहुँ विभीषण पाई
नगर फिरी रघुवीर दुहाई ❀ तब प्रभु सीतहिं बोलि पठाई
यह सपना मैं कहौं विचारी ❀ होइहि सत्य गये दिनचारी
तासु वचन सुनि ते सब डरीं ❀ जनकसुता के चरणन परीं

दो० जहँतहँ गईं सकल मिलि, सीता के मन शोच।
मास दिवस बीते मोहिं, मारिहि निशिचर पोच॥

त्रिजटासन बोलीं करजोरी ❀ मातु विपतिसंगिनि तैं मोरी
तजौं देह करु वेगि उपाई ❀ दुसह विरह अब सहा न जाई
आनि काठ रचि चिता बनाई ❀ मातु अनल तुम देहु लगाई
सत्य करहि मम प्रिया सयानी ❀ सुनै को श्रवण शूलसम बानी
सुनत वचन पदगहि समुझावा ❀ प्रभुप्रताप बल सुयश सुनावा
निशि[२] न अनल[३] मिलु राजकुमारी ❀ अस कहि सो निजभवन सिधारी
कह सीता विधि भा प्रतिकूला[४] ❀ मिलै न पावक[५] मिटै न शूला
देखियत प्रकट गगन अंगारा ❀ अवनि न आवत एकौ तारा
पावकमय शशि स्रवत न आगी ❀ मानहुँ मोहिं जानि हतभागी
सुनहु विनय मम विटप अशोका ❀ सत्य नाम करु हरु मम शोका
नूतन किसलय[६] अनल समाना ❀ देहु अगिनि मम करहु निदाना
देखि परम विरहाकुल सीता ❀ सो क्षण कपिहि कल्पसम बीता

सो० कपि करि हृदय विचार, दीन्ह मुद्रिका[७] डारि तब।
जनु अशोक अंगार, लीन्ह हरषि उठि करगहेउ॥

तब देखी मुद्रिका मनोहर ❀ रामनाम अङ्कित[८] अतिसुन्दर
चकित चितै मुद्रिक पहिंचानी ❀ हर्ष विषाद हृदय अकुलानी

१ सवार २ रात्रि ३-५ अग्नि ४ उलटा ६ पत्ते ७ मुंदरी ८ चिह्नित॥

जीति को सकै अजय रघुराई ❁ मायाते अस रची न जाई
सीता मन विचार कर नाना ❁ मधुर वचन बोले हनुमाना
रामचन्द्र गुण वर्णन लागे ❁ सुनतहि सीता के दुख भागे
लागी सुनै श्रवण मनलाई ❁ आदिहि ते सब कथा सुनाई
श्रवणामृत जिन कथा सुनाई ❁ काहे न प्रकट होत सो भाई
तब हनुमन्त निकट चलिगयऊ ❁ फिरि बैठी मन विस्मय भयऊ
रामदूत मैं मातु जानकी ❁ सत्य शपथ[१] करुणानिधानकी
यह मुद्रिका मातु मैं आनी ❁ दीन्ह राम तुमकहँ सहिदानी[२]
नर वानरहि संग कहु कैसे ❁ कही कथा संगति भइ जैसे

दो० कपिके वचन सप्रेम सुनि, उपजा मन विश्वास।
जाना मन क्रम वचन यह, कृपासिन्धुकर दास॥

हरिजन जानि प्रीति अतिबाढ़ी ❁ सजल नयन रोमावलि ठाढ़ी
बूड़त विरहजलधि[३] हनुमाना ❁ भयहु तात मोकहँ जलयाना[४]
अब कहु कुशल जाउँ बलिहारी ❁ अनुजसहित सुखभवन खरारी
कोमलचित कृपालु रघुराई ❁ कपि केहि हेतु धरी निठुराई
सहज बानि सेवक सुखदायक ❁ कबहुँक सुरति करत रघुनायक
कबहुँ नयन मम शीतल ताता ❁ ह्वैहैं निरखि श्याम मृदु गाता
वचन न आव नयन भरि वारि[५] ❁ अहह नाथ मोहिं निपट बिसारी
देखि विरह व्याकुल अति सीता ❁ बोलेउ कपि मृदु वचन विनीता[६]
मातु कुशल प्रभु अनुज समेता ❁ तव दुख दुखी सो कृपानिकेता
जननी जनि मानहु मन ऊना ❁ तुमते प्रेम राम कहँ दूना

दो० रघुपतिकर सन्देश अब, सुनु जननी धरिधीर।
असकहि कपि गदगद भयउ, भरे विलोचन नीर॥

राम कहा वियोग तव सीता ❁ मोकहँ सकल भयउ विपरीता
नूतन[७] किसलय मनहुँ कृशानू ❁ कालनिशासम निशि शशि भानू[८]

१ सौगन्द २ साची ३ समुद्र ४ नौका ५ जल ६ नीतियुक्त ७ नवीन ८ सूर्य ॥

कुवलय¹ विपिन कुन्तवनसरिसा ❀ वारिद तपतेल जनु बरिसा
जेहि तरु रहौं करत सो पीरा ❀ उरगश्वास सम त्रिविध समीरा
कहेते दुख नहिं घटि कछु होई ❀ काहि कहौं यह जान न कोई
तत्त्व प्रेमकर मम अरु तोरा ❀ जानत प्रिया एक मन मोरा
सो मन रहत सदा तोहिं पाहीं ❀ जानु प्रीतिरस इतनेहि माहीं
प्रभु संदेश सुनत वैदेही ❀ मगन प्रेम तनु सुधि नहिं तेही
कह कपि हृदय धीरधरु माता ❀ सुमिरि राम सेवक सुखदाता
उर आनहु रघुपति प्रभुताई ❀ सुनि मम वचन तजहु विकलाई

दो॰ निशिचर निकर पतङ्गसम, रघुपतिबाण कृशानु²।
जननि हृदय निज धीर धरु, जरे निशाचर जानु॥

जो रघुवीर होत सुधि पाई ❀ करते नहिं विलम्ब रघुराई
रामबाण रवि उदय जानकी ❀ तमवरूथ कहँ यातुधान³की
अबहिं मातु मैं जाउँ लिवाई ❀ प्रभुआयसु नहिं राम दुहाई
कछुक दिवस⁴ जननी धरु धीरा ❀ कपिन सहित ऐहैं रघुवीरा
निशिचर मारि तुमहिं लैजैहैं ❀ तिहुंपुर नारदादि यश गैहैं
हैं सुत कपि सब तुम्हैं समाना ❀ यातुधान भट अति बलवाना
मोरे हृदय परम सन्देहा ❀ सुनि कपि प्रकट कीन्ह निजदेहा
कनकभूधराकार⁵ शरीरा ❀ समर भयङ्कर अति रणधीरा
सीता मन भरोस तब भयऊ ❀ पुनि लघुरूप पवनसुत लयऊ

दो॰ सुनु माता शाखामृग⁶हिं, नहिं बल बुद्धि विशाल।
प्रभु प्रतापते गरुड़ही, खाइ परम लघु व्याल॥

मन सन्तोष सुनत कपिबानी ❀ तनु अतिपुलक नयन दरपानी
भक्ति प्रताप तेज बल सानी ❀ आशिष दीन्ह राम प्रिय जानी
अजर अमर गुणनिधि सुत होहू ❀ करहिं सदा रघुनायक छोहू
करहिं कृपा प्रभु अस सुनि काना ❀ निर्भर⁷ प्रेम मगन हनुमाना

१ कमल २ अग्नि ३ राक्षस ४ दिन ५ स्वर्णपर्वताकार ६ वानर ७ पूर्ण॥

बारबार नायउ पद शीशा ❀ बोला वचन जोरिकर कीशा
अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता ❀ आशिष तव अमोघ विख्याता
सुनिय मातु मोहिं अतिशय भूखा ❀ लागि देखि सुन्दर फल रूखा
सुनु सुत करैं विपिन रखवारी ❀ परम सुभट रजनीचर[1] भारी
तिनकर भय माता मोहिं नाहीं ❀ जो तुम सुख मानहु मनमाहीं

दो० देखि बुद्धिबलनिपुण कपि, कहेउ जानकी जाहु।
रघुपतिचरण हृदय धरि, तात मधुर फल खाहु॥

चलेउ नाइ शिर पैठेउ बागा ❀ फल खाये तरु[2] तोरन लागा
रहे तहाँ बहु भट रखवारे ❀ कछु मारे कछु जाइ पुकारे
नाथ एक आवा कपि भारी ❀ तेइँ अशोकवाटिका[3] उजारी
खायेसि फल अरु विटप उपारे ❀ रक्षक मर्दि मर्दि महि डारे
सुनि रावण पठये भट नाना ❀ तिनहिं देखि गरजा हनुमाना
सब रजनीचर कपि संहारे ❀ गये पुकारत कछु अधमारे
पुनि पठवा तेइँ अक्षयकुमारा ❀ चला संग लै सुभट[4] अपारा
आवत देखि विटप गहि तर्जा ❀ ताहि निपाति महाधुनि गर्जा

दो० कछु मारेसि कछु मर्देसि, कछुक मिलायसि धूरि।
कछु पुनि जाइ पुकारे, प्रभु मर्कट[5] बल भूरि॥

सुनि सुतबध लङ्केश रिसाना ❀ पठवा मेघनाद बलवाना
मारेसि जनि सुत बांधेसि ताही ❀ देखौं कीश कहांकर आही
चला इन्द्रजित अतुलित योधा ❀ बन्धुबधन सुनि उपजा क्रोधा
कपि देखा दारुण भट आवा ❀ कटकटाइ गरजा अरु धावा
अतिविशाल तरु एक उपारा ❀ विरथ कीन्ह लङ्केशकुमारा
रहे महाभट ताके संगा ❀ गहिगहि कपि मर्देसि निजअंगा
तिन्हैं निपाति[6] ताहिसन बाँजा ❀ भिरे युगल मानहुँ गजराजा
मुष्टिक[8] मारि चढ़ा तरु जाई ❀ ताहि एकक्षण मूर्च्छा आई

---

१ राक्षस २ वृक्ष ३ फुलवारी ४ योद्धा ५ बन्दर ६ मारके ७ भिड़ा ८ घूँसा॥

उठि बहोरि कीन्हेसि बहुमाया ❀ जीति न जाइ प्रभञ्जनजाया

दो० ब्रह्मअस्त्र तेइँ साधेऊ, कपि मन कीन्ह विचार ।
जो न ब्रह्मशर मानऊं, महिमा मिटै अपार ॥

ब्रह्मबाण ते कपिकहँ मारा ❀ परतिहु बार कटक[१] संहारा
तेइँ जाना कपि मूर्च्छित भयऊ ❀ नागफांस बांधेसि लै गयऊ
जासु नाम जपि सुनहु भवानी[२] ❀ भवबन्धन काटहिं नरज्ञानी
तासु दूत बन्धनतर आवा ❀ प्रभुकारज लगि आपु बँधावा
कपिबंधन सुनि निशिचर धाये ❀ कौतुक लागि सभा लै आये
दशमुख सभा दीख कपि जाई ❀ कहि न जाय कछु अतिप्रभुताई
करजोरे सुर दिशप विनीता ❀ भृकुटि विलोकहिं सकल सभीता
देखि प्रताप न कपिमन शङ्का ❀ जिमि अहिगणमहँ[३] गरुड़ अशङ्का

दो० कपिहि विलोकि दशानन, विहँसि कहेसि दुर्वाद ।
सुतबध सुरति कीन्ह पुनि, उपजा हृदय विषाद ॥

कह लंकेश कवन तैं कीशा ❀ केहिके बल घालेसि वनखीशा[४]
कीधौं श्रवण सुनेसि नहिं मोहीं ❀ देखौं अति अशङ्क शठ तोहीं
मारेसि निशिचर केहि अपराधा ❀ कहु शठ तोहिं न प्राण की बाधा
सुनु रावण ब्रह्माण्ड निकाया ❀ पाइ जासु बल विरचत माया
जाके बल विरञ्चि हरि ईशा ❀ पालत हरत सृजत[५] दशशीशा
जा बल शीश धरे सहसानन ❀ अण्डकोश समेत गिरि कानन
धरे जो विविध देह सुरत्राता ❀ तुमसे शठन सिखावनदाता
हरकोदण्ड[६] कठिन जेइँ भञ्जा ❀ तोहिं समेत नृपदलमद गँञ्जा
खर दूषण विराध अरु बाली ❀ बधे सकल अतुलित बलशाली

दो० जाके बल लवलेश ते, जितेउ चराचर झारि ।
तासु दूतहौं जाहि की, हरिआनेहु प्रियनारि ॥

जानौं मैं तुम्हारि प्रभुताई[८] ❀ सहसबाहुसन परी लराई

१ फ़ौज २ पार्वती ३ सर्प ४ नाश ५ उत्पन्न करते ६ धनुष ७ नाश किया ८ बहादुरी ॥

समर बालिसन करि यश पावा ❀ सुनि कपिवचन बिहँसि बहलावा
खायउँ फल मोहिं लागी भूखा ❀ कपिस्वभाव ते तोरेउँ रूखा
सबके देह परमप्रिय स्वामी ❀ मारहिं मोहिं कुमारगगामी
जिन मोहिं मारा तेहिं मैं मारा ❀ तेहिपर बांधेउ तनय तुम्हारा
मोहिं न कछु बांधेकर लाजा ❀ कीन्ह चहौं निजप्रभुकर काजा
विनती करौं जोरि कर रावन ❀ सुनहु मान तजि मोर सिखावन
देखहु तुम निजहृदय विचारी ❀ भ्रम तजि भजहु भक्तभयहारी
जाके डर अति काल डराई ❀ जो सुर असुर चराचर खाई
तासों वैर कबहुँ नहिं कीजै ❀ मोरे कहे जानकी दीजै

दो० प्रणतपाल रघुवंशमणि, करुणासिन्धु खरारि।
गये शरण प्रभु राखिहैं, तव अपराध बिसारि॥

रामचरणपङ्कज उर धरहू ❀ लंका अचलराज्य तुम करहू
ऋषिपुलस्त्य यश विमलमयङ्का ❀ तेहि कुलमहँ जनि होसि कलंका
रामनाम बिनु गिरा न सोहा ❀ देखु विचारि त्यागि मद मोहा
वसनहीन नहिं सोह सुरारी ❀ सब भूषण भूषित वरनारी
रामविमुख सम्पति प्रभुताई ❀ जाय रही पाई बिनुपाई
शैलमूल जेहि सरिताँ नाहीं ❀ वरषि गये पुनि तबहिं सुखाहीं
सुनु दशकण्ठ कहौं प्रणरोपी ❀ रामविमुख त्राता नहिं कोपी
शङ्कर सहस विष्णु अज तोही ❀ सकहिं न राखि रामकर द्रोही

दो० मोह मूल बहु शूलप्रद, त्यागहु तुम अभिमान।
भजहु राम रघुनायकहि, कृपासिन्धु भगवान॥

यदपि कही कपि अतिहित बानी ❀ भक्ति विवेक विरति नयै सानी
बोला विहँसि अधम अभिमानी ❀ मिला हमहिं कपि गुरु बड़ज्ञानी
मृत्यु निकट आई खल तोहीं ❀ लागेसि अधम सिखावन मोहीं
उलटा होइ कहा हनुमाना ❀ मतिभ्रम तोरि प्रकट मैं जाना

१ बन्दर २ पुत्र ३ हाथ ४ देवता ५ दयासागर ६ रामजी ७ नदी ८ कोई भी ९ नीति॥

सुनि कपिवचन बहुत रिसियाना ❀ वेगि न हरहु मूढ़कर प्राना
सुनत निशाचर मारन धाये ❀ सचिवन सहित विभीषण आये
नाइ शीश करि विनय बहूता ❀ नीति विरोध न मारिय दूता
आनदण्ड कछु करिय गुसाँई ❀ सबही कहा मन्त्र भल भाई
सुनत विहँसि बोला दशकन्धर ❀ अंग भंग करि पठवहु बन्दर

दो० कपिकर ममता पूंछपर, सबहिं कहा समुझाइ।
तेलबोरि पट[1] बांधि पुनि, पावक[2] देहु लगाइ॥

पूंछहीन बन्दर जब जाइहि ❀ तब शठ निजनाथहि लै आइहि
जिनकी कीन्हेसि अमित बड़ाई ❀ देखौं धौं तिनकी प्रभुताई
वचन सुनत कपि मन मुसुकाना ❀ भइ सहाय शारद मैं जाना
यातुधान[3] सुनि रावण वचना ❀ लागे रचन मूढ़ सोइ रचना
रहा न नगर वसन घृत तेला ❀ बाढ़ी पूंछ कीन्ह कपिखेला
कौतुक कहँ आये पुरवासी ❀ मारहिं चरण करहिं बहुहांसी
बाजहिं ढोल देहिं सब तारी ❀ नगर फेरि पुनि पूंछ प्रजारी[4]
पावक जरत दीख हनुमन्ता ❀ भयउ परम लघु रूप तुरन्ता
निबुंकि[5] चढ़ेउ पुनि कनकअटारी ❀ भई सभीत निशाचर नारी

दो० हरि प्रेरित तेहि अवसर, बहीं पवन उनचाश।
अट्टहास करि गरजा, कपि बढ़ि लाग अकाश॥

देह विशाल परम हरुआई ❀ मन्दिर ते मन्दिर चढ़ि जाई
जरा नगर भे लोग बिहाला ❀ लपटझपट बहुकोटि कराला
तात मात सब करहिं पुकारा ❀ यहि अवसर को हमहिं उबारा
हम जो कहा यह कपि नहिं होई ❀ वानर रूप धरे सुर कोई
साधु अवज्ञा[6] कर फल ऐसा ❀ जरै नगर अनाथ कर जैसा
जारा नगर निमिष इकमाहीं ❀ एक विभीषण को गृह नाहीं
जाकर भक्त अनल तेइँ सिरिजा ❀ जरा न सो तेहि कारण गिरिजा[7]

१ वस्त्र २ अग्नि ३ राक्षस ४ जलाई ५ कूदिके ६ अनादर ७ पार्वती ॥

उलटि पलटि लङ्का कपिजारी ❁ कूदिपरा तब सिन्धु मँझारी

दो० पूंछ बुझाई खोय श्रम, धरि लघुरूप बहोरि।
जनकसुता के आगे, ठाढ़ भयउ करजोरि॥

मातु मोहिं दीजै कछु चीन्हा ❁ जैसे रघुनायक मोहिं दीन्हा
चूड़ामणि उतारि तब दयऊ ❁ हर्षसमेत पवनसुत लयऊ
कहेउ तात अस मोर प्रणामा ❁ सब प्रकार प्रभु पूरणकामा
दीनदयालु विरद सम्भारी ❁ हरहु नाथ मम संकट भारी
तात शक्रसुत[1] कथा सुनायहु ❁ बाणप्रताप प्रभुहि समुझायहु
मास दिवस महँ नाथ न आवहिं ❁ तौ पुनि मोहिं जियत नहिं पावहिं
कहु कपि केहि विधि राखौं प्राना ❁ तुमहूं तात कहत अब जाना
तुमहिं देखि शीतल भइ छाती ❁ पुनि मोकहँ सोइ दिन सोइ राती

दो० जनकसुतहिसमुझाइ करि, बहुविधि धीरज दीन्ह।
चरणकमल शिरनाइ करि, गमन रामपहँ कीन्ह॥

चलत महाधुनि गरजेउ भारी ❁ गर्भस्रवहिं सुनि निशिचरनारी
लांघि सिंधु यहि पारहिं आवा ❁ शब्दकिलकिला[2] कपिन सुनावा
हरषे सब विलोकि हनुमाना ❁ नूतन[3] जन्म कपिन तब जाना
मुख प्रसन्न तनु तेज विराजा ❁ कीन्हेसि रामचन्द्रकर काजा
मिले सकल अति भये सुखारी ❁ तलफत मीन पाव जनु वारि
चले हरषि रघुनायक पासा ❁ पूंछत कहत नवल[4] इतिहासा
तब मधुवन भीतर सब आये ❁ अंगद सहित मधुरफल खाये
रखवारे जब बरजन लागे ❁ मुष्टि[6] प्रहार करत सब भागे

दो० जाइ पुकारे सकल ते, वन उजार युवराज।
सुनि सुग्रीवहिं हर्ष[7] अति, करिआये प्रभुकाज॥

जो न होत सीता सुधि पाई ❁ मधुवन के फल को सक खाई
यहिविधि मन विचार कर राजा ❁ आयगये कपि सहित समाजा

१ जयन्त २ टपकें ३-५ नवीन ४ जल ६ घूँसा ७ खुशी॥

आइ सबहिं नावा पद शीशा ❀ मिले सबन अतिप्रेम कपीशा
पूंछेउ कुशल कुशलपद देखी ❀ रामकृपा भा काज विशेखी
नाथ काज कीन्हेउ हनुमाना ❀ राखे सकल कपिनकर प्राना
सुनि सुग्रीव बहुरि उठि मिलेऊ ❀ कपिनसहित रघुपतिपै चलेऊ
राम कपिनकहँ आवत देखा ❀ किये काज मन हर्ष विशेखा
फटिकशिला बैठे दोउ भाई ❀ परे सकल कपि चरणन जाई

दो० प्रीति सहित भेंटे सकल, रघुपति करुणापुंज।
पूंछेउ कुशल नाथ अब, कुशल देखि पदकंज॥

जामवन्त कह सुनु रघुराया ❀ जापर नाथ करहु तुम दाया
ताहि सदा[२] शुभ कुशल निरन्तर ❀ सुर नर मुनि प्रसन्न तेहि ऊपर
सो विजयी विनयी गुणसागर ❀ तासु सुयश तिहुँलोक उजागर
प्रभुकी कृपा भयउ सब काजू ❀ जन्म हमार सफल भा आजू
नाथ पवनसुत[३] कीन्ह जो करणी ❀ सो मुखलाखहु जाइ न वरणी
पवनतनय के चरित सुहाये ❀ जामवन्त रघुपतिहि सुनाये
सुनत कृपानिधि मन अतिभाये ❀ पुनि हनुमान हरषि उरलाये
कहहु तात केहि भाँति जानकी ❀ रहति करति रक्षा स्वप्रान की

दो० नाम पाहरू दिवस निशि, ध्यान तुम्हार कपाट[४]।
लोचन निजपद यन्त्रिका, प्राण जाहिं केहि बाट॥

चलती बार कह्यो म्वहिं टेरी ❀ सुरति कराय शक्रसुत[६] केरी
चलत मोहिं चूड़ामणि दीन्ही ❀ रघुपति हृदय लाइ तेहि लीन्ही
नाथ युगललोचन भरि वारी ❀ वचन कह्यो कछु जनककुमारी
अनुज समेत गहेहु प्रभुचरणा ❀ दीनबन्धु प्रणतारतिहरणा
मन क्रम वचन चरण अनुरागी ❀ केहि अपराध नाथ मोहिं त्यागी
अवगुण एक मोर मैं जाना ❀ बिछुरत प्राण न कीन्ह पयाँना
नाथ सो नयनन कर अपराधा ❀ निसरत प्राण करहिं हठि बाधा

१ कमल २ सदा ३ हनुमान् ४ किवाड़ ५ जंजीर ६ जयन्त ७ गमन॥

विरह अनल[1] तनु तूल[2] समीरा[3] ❀ श्वास जरै क्षणमाहिं शरीरा
नयन स्रवैं जल निज हितलागी ❀ जरै न पाव देह विरहागी
सीताकी अतिविपति विशाला ❀ विना कहे भल दीनदयाला

दो॰ निमिषनिमिष करुणायतन, जाहिं कल्प[4]शत बीति।
वेगि चलिय प्रभु आनिये, भुजबल खलदल जीति॥

सुनि सीतादुख प्रभु सुखअयना ❀ भरिआये दोउ राजिवनयना
वचन काय मन ममगति जाही ❀ सपन्यहु विपतिकि बूझिय ताही
कह हनुमान विपति प्रभु सोई ❀ जब तव सुमिरण भजन न होई
कितिकबात प्रभु यातुधानकी ❀ रिपुहि जीति आनिये जानकी
सुनु कपि तोहिं समान उपकारी ❀ नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी
प्रतिउपकार करौं का तोरा ❀ सम्मुख है न सकत मन मोरा
सुनु सुत तोहिं उऋण मैं नाहीं ❀ देखेउँ करि विचार मनमाहीं
पुनिपुनि कपिहि चितव सुरत्राता[5] ❀ लोचननीर पुलकि अतिगाता

दो॰ सुनि प्रभुवचनविलोकिमुख, हृदय हर्ष हनुमन्त।
चरण परेउ परमाकुल, त्राहित्राहि भगवन्त॥

बारबार प्रभु चहत उठावा ❀ प्रेम मगन तेहि उठब न भावा
प्रभुपदपङ्कज[6] कपिकर शीशा ❀ सुमिरि सो दशा मगन गौरीशा[7]
सावधान मन करि पुनि शंकर ❀ लागे कहन कथा अतिसुन्दर
कपि उठाय प्रभु हृदय लगावा ❀ करगहि परम निकट बैठावा
कहु कपि रावणपालित लंका ❀ केहि विधि दहेउ दुर्ग अतिबंका
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना ❀ बोले वचन विगत अभिमाना
शाखामृग की अति मनुसाई ❀ शाखा ते शाखा पर जाई
लांघि सिन्धु हाटकपुर जारा ❀ निशिचरगण बधि विपिन[8] उजारा
सो सब तव प्रताप रघुराई ❀ नाथ न कछुक मोरि प्रभुताई

दो॰ ताकहँ प्रभु कछु अगम नहिं, जापर तुम अनुकूल।

१ अग्नि २ रुई ३ हवा ४ देवतों के दो हज़ार युग ५ रक्षक ६ कमल ७ शिव ८ वन॥

तव प्रताप बड़वानलहि, जारि सकै खल तूल ॥

सुनत वचन प्रभु बहु सुखमाना ❀ मन क्रम वचन दास निज जाना
मांगु वचन सुत वर अनुकूला ❀ देउँ आजु तुमकहँ सुखमूला
नाथ भक्ति तव सब सुखदायिनि ❀ देहु कृपाकरि सो अनपायिनि
सुनि प्रभु परम सरल कपिबानी ❀ एवमस्तु तब कहेउ भवानी
उमा² रामस्वभाव जिन जाना ❀ ताहि भजन तजि भाव न आना
यह संवाद जासु उर आवा ❀ रघुपति चरणभक्ति तेइँ पावा
सुनि प्रभु वचन कहैं कपिवृन्दा ❀ जय जय जय कृपालु सुखकन्दा
तब रघुपति कपिपतिहि बुलावा ❀ कहा चलैकर करहु बनावा
अब विलम्ब केहि कारण कीजै ❀ तुरत कपिनकहँ आयँसु दीजै
कौतुक देखि सुमन सुर वर्षे ❀ नभ ते भवन चले अति हर्षे

दो० कपिपति वेगि बुलायउ, आये यूथपयूथ ।
नानावरण अतुलबल, वानर भालु वरूथ ॥

प्रभु पद पङ्कंज नावहिं शीशा ❀ गर्जहिं भालु महाबल कीशा
देखी राम सकल कपिसैना ❀ चितव कृपाकरि राजिवनैना
रामकृपा बल पाइ कपिन्दा ❀ भये पक्षयुत मनहुँ गिरिन्दा
हरषि राम तब कीन्ह पयाना⁵ ❀ शकुन भये सुन्दर शुभ नाना
जासु सकल मंगलमय कीती ❀ तासु पयान शकुन यह नीती
प्रभु पयान जाना वैदेही ❀ फरके वामअंग शुभ तेही
जो जो शकुन जानकिहि होई ❀ अशकुन भयउ रावणहिं सोई
चला कटक को वरणै पारा ❀ गरजहिं वानर भालु अपारा
नख आयुध गिरि पादँपधारी ❀ चले गगन महि इच्छाचारी
केहरि नाद भालु कपि करहीं ❀ डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं

छं० चिक्करहिंदिग्गजडोलमहिगिरिलोलसागरखरभरे ।
मनहर्ष दिनकर⁸ सोम सुर मुनि नाग किन्नर दुख टरे ॥

१ पुत्र २ पार्वती ३ आज्ञा ४ कमल ५ कूच ६ फ़ौज ७ वृक्ष ८ सूर्य ॥

कटकटहिं मर्कट विकट भट बहु कोटि कोटिन धावहीं।
जय राम प्रबल प्रताप कोशलनाथ गुणगण गावहीं॥
सकसहि न भार अपार अहिपति बारबार बिमोहई।
गहि दशन पुनिपुनि कमठपीठकठोर सो किमि सोहई।
रघुवीर रुचिर पयान प्रस्थितं जानि परम सुहावनी॥
जनु कमठखप्पर सर्पराज सो लिखत अविचल पावनी॥

दो० यहि विधि जाय कृपानिधि, उतरे सागर तीर।
जहँ तहँ लागे खान फल, भालु विपुल कपिवीर॥

उहां निशाचर रहहिं सशंका ❀ जबते जारिगयउ कपि लंका
निज निज गृह सब करैं विचारा ❀ नहिं निशिचरकुलकेर उबारा
जासु दूतबल वरणि न जाई ❀ तेहि आये पुर कवनि भलाई
दूतिन सन सुनि पुरजन बानी ❀ मन्दोदरी हृदय अकुलानी
रहसि जोरिकर पतिपद लागी ❀ बोली वचन नीतिरस पागी
कन्त कर्ष[2] हरिसन परिहरहू ❀ मोर कहा अतिहित चित धरहू
समुझत जासु दूतकी करणी ❀ स्रवहिं[3] गर्भ रजनीचरघरणी
तासु नारि निज सचिव बुलाई ❀ पठवहु कन्त जो चहहु भलाई
तव कुलकमल विपिन[4] दुखदाई ❀ सीता शीतनिशासम आई
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें ❀ हित न तुम्हार शम्भु अज कीन्हें

दो० रामबाण अहिगण सरिस, निकर निशाचर भेक[5]।
जबलगिग्रसतनतबहिंलगि, यतन करहु तजि टेक॥

श्रवण सुनत शठ ताकी बानी ❀ विहँसा जगतविदित अभिमानी
सभय स्वभाव नारिकर सांचा ❀ मंगल महँ भय मन अतिकांचा
जो आवै मरकट[6] कटकाई ❀ जियहिं विचारे निशिचर खाई
कम्पहिं लोकप जाके त्रासा[7] ❀ तासु नारि भय करि बड़ि हासा

१ उद्यत २ वैर ३ गिरते हैं ४ वन ५ मेंढ़क ६ बन्दर ७ डर॥

असकहि विहँसि ताहि उरलाई ❀ चलेउ सभा ममता अधिकाई
मन्दोदरी हृदय कर चीता ❀ भयो कन्तपर विधि विपरीता
बैठेउ सभा खबरि अस पाई ❀ सिन्धुपार सेना सब आई
बूझेसि सचिव उचित मत कहहू ❀ ते सब हँसे मौन करि रहहू
जितेहु सुरासुर तब श्रम नाहीं ❀ नर वानर केहि लेखे माहीं

दो० सचिव वैद्य गुरु तीनि जो, प्रिय बोलहिं भयआश।
राज धर्म तन तीनकर, होइ वेगिही नाश॥

सोइ रावण कहँ बनी सहाई ❀ अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई
अवसर जानि विभीषण आवा ❀ भ्राता चरण शीश तेहि नावा
पुनि शिरनाइ बैठ निजआसन ❀ बोला वचन पाइ अनुशासन
जो कृपालु पूंछेहु मोहिं बाता ❀ मति अनुरूप कहब मैं ताता
जो आपन चाहौ कल्याना ❀ सुयश सुमति शुभगति सुख नाना
तौ परनारि लिलार गुसाईं[1] ❀ तजो चौथिचन्दा की नाईं
चौदह भुवन एक पति होई ❀ भूत द्रोह तिष्ठै नहिं सोई
गुणसागर नागर[2] नर जोऊ ❀ अल्पलोभ भल कहै न कोऊ

दो० काम क्रोध मद लोभ सब, नाथ नरककर पन्थ।
सब परिहरि[3] रघुवीर पद, भजहु कहहिं सद्ग्रन्थ॥

तात राम नहिं नर भूपाला ❀ भुवनेश्वर कालहु के काला
ब्रह्म अनामय[4] अज भगवन्ता ❀ व्यापक अजित अनादि अनन्ता
गो द्विज[5] धेनु देव हितकारी ❀ कृपासिन्धु मानुष तनुधारी
जनरञ्जन भञ्जन खल व्राता[6] ❀ वेद धर्म्म रक्षक सुरत्राता
ताहि वैर तजि नाइय माथ। ❀ प्रणतारति भञ्जन रघुनाथा
देहु नाथ प्रभुकहँ वैदेही ❀ भजहु राम विनुकाम सनेही
शरण गये प्रभु ताहु न त्यागा ❀ विश्वद्रोहकृत अघ[8] जेहि लागा
जासु नाम त्रयताप नशावन ❀ सोइ प्रभु प्रकट समुझु जिय रावन

१ माथा २ चतुर ३ छोड़के ४ नीरोग ५ ब्राह्मण ६ समूह ७ देखना ८ पाप॥

दो० बारबार पद लागौं, विनय करौं दशशीश।
परिहरि मान मोह मद, भजहु कोशलाधीश॥
मुनिपुलस्त्यनिजशिष्यसन, कहि पठई यह बात।
तुरत सो मैं तुमसन कही, पाय सुअवसर तात॥

मालवन्त अति सचिव सयाना ❀ तासु वचन सुनि अति सुख माना
तात अनुज तव नीतिविभूषण ❀ सोइ उरधरहु जो कहत विभीषण
रिपु उतकर्ष कहत शठ दोऊ ❀ दूरि न करहु इहां है कोऊ
मालवन्त गृह गयउ बहोरी ❀ कहेउ विभीषण पुनि करि जोरी
सुमति कुमति सबके उर रहई ❀ नाथ पुराण निगम[3] अस कहई
जहां सुमति तहँ सम्पति नाना ❀ जहां कुमति तहँ विपति निदाना
तव उर कुमति बसी विपरीती ❀ हित अनहित मानहु रिपु[4] प्रीती
कालरात्रि निशिचरकुलकेरी ❀ तेहि सीता पर प्रीति घनेरी

दो० तात चरण गहि मांगौं, राखहु मोर दुलार।
सीता देहु रामकहँ, अतिहित होइ तुम्हार॥

बुध पुराण श्रुति सम्मति बानी ❀ कही विभीषण नीति बखानी
सुनत दशानन उठा रिसाई ❀ खल तोहिं मृत्यु निकट चलि आई
जियसि सदा शठ मोर जियावा ❀ रिपुकर पच्छ मूढ़ तोहिं भावा
कहसि न खल अस को जगमाहीं ❀ भुजबल जेहिं जीता हम नाहीं
ममपुर बसि तपसिन पर प्रीती ❀ शठ मिलु जाइ तिनहिं कहु नीती
असकहि कीन्हेसि चरणप्रहारा ❀ अनुज गहे पद बारहिंबारा
उमा[5] सन्त की यही बड़ाई ❀ मन्द करत जो करै भलाई
तुम पितुसरिस भले मोहिं मारा ❀ राम भजे हित नाथ तुम्हारा
सचिव संगलै नभपंथ[6] गयऊ ❀ सबहि सुनाइ कहत अस भयऊ

दो० राम सत्यसंकल्प प्रभु, सभा कालवश तोरि।
मैं रघुनायक शरण अब, जाउँ खोरि[7] नहिं मोरि॥

---

१ मौक़ा २ हाथ ३ वेद ४ शत्रु ५ पार्वती ६ आकाशमार्ग ७ कलंक॥

असकहि चला विभीषण जबहीं ❀ आयुहीन भे निशिचर तबहीं
साधुअवज्ञा[1] तुरत भवानी ❀ कर कल्याण अखिलकर हानी
रावण जबहिं विभीषण त्यागा ❀ भयो विभव बिनु तबहिं अभागा
चलेउ हरषि रघुनायकपाहीं ❀ करत मनोरथ बहु मनमाहीं
देखिहौं जाइ चरण जलजाता[2] ❀ अरुण मृदुल सेवक सुखदाता
जे पद परसि तरी ऋषिनारी[3] ❀ दण्डक कानन पावनकारी
जे पद जनकसुता उरलाये ❀ कपट कुरंग[4] संग धरिधाये
हर उर सर सरोजपद जोई ❀ अहोभाग्य मैं देखब सोई

दो० जिन पायँन की पादुका[5], भरत रहे मन लाइ।
ते पद आजु विलोकिहौं, इन नयनन अब जाइ॥

यहि विधि करत सप्रेम विचारा ❀ आये सपदि[6] सिन्धु के पारा
कपिन विभीषण आवत देखा ❀ जानेउ कोउ रिपुदूत विशेखा
ताहि राखि कपिपतिपहँ आये ❀ समाचार सब तिनहिं सुनाये
कह सुग्रीव सुनिय रघुराई ❀ आवा मिलन दशाननभाई
कह प्रभु सखा बूझिये काहा ❀ कहा कपीश सुनहु नरनाहा
जानि न जाइ निशाचरमाया ❀ कामरूप केहि कारण आया
भेद हमार लेन शठ आवा ❀ राखिय बांधि मोहिं असभावा
सखा नीति तुम नीकि विचारी ❀ मम प्रण शरणागत भयहारी
सुनि प्रभुवचन हरषि हनुमाना ❀ शरणागत वत्सल भगवाना

दो० शरणागत कहँ जे तजहिं, निज अनहित अनुमानि।
ते नर पामर[7] पापमय, तिनहिं विलोकत हानि॥

कोटि विप्रवध लागहिं जाहू ❀ आये शरण तजों नहिं ताहू
सम्मुख होइ जीव मोहिं जबहीं ❀ जन्मकोटि अघ नाशौं तबहीं
पापवन्तकर सहज स्वभाऊ ❀ भजन मोर तेहि भाव न काऊ[8]
जो पै दुष्ट हृदय सो होई ❀ मोरे सम्मुख आव कि सोई

१ अपमान २ कमल ३ अहल्या ४ मृग ५ खड़ाऊँ ६ शीघ्र ७ नीच ८ कभी॥

निर्मल मन जन सो मोहिं पावा ❀ मोहिं कपट छल छिद्र न भावा
भेद लेन पठवा दशशीशा ❀ तबहुँ न कछु भय हानि कपीशा
जगमहँ सखा निशाचर जेते ❀ लक्ष्मण हनहिं निमिषमहँ तेते
जो सभीत आवा शरणाई ❀ रखिहौं ताहि प्राणकी नाई

दो० उभय[1] भाँति लै आवहु, हँसि कह कृपानिधान।
जय कृपालु कहि कपि चले, अङ्गदादि हनुमान॥

सादर तेहि आगे करि वानर ❀ चले जहाँ रघुपति करुणाकर
दूरिहिते देखे दोउ भ्राता ❀ नयनानन्ददान के दाता
बहुरि राम छविधाम विलोकी ❀ रहे ठिठुकि इकटक पल रोकी
भुजप्रलम्ब कञ्जारुण[2] लोचन ❀ श्यामल गात प्रणत भयमोचन
सिंहकन्ध आयत उरसोहा ❀ आनन[3] अमित मदनछवि[4] मोहा
नयननीर पुलकित अतिगाता ❀ मन धरि धीर कही मृदु बाता
नाथ दशानन कर मैं भ्राता ❀ निशिचरवंश जन्म सुरत्राता
सहज पापप्रिय तामस देहा ❀ यथा उलूकहिं[5] तम[6] पर नेहा

दो० श्रवण सुयश मुनि आयउँ, प्रभु भञ्जन भवभीर।
त्राहि त्राहि आरतहरण, शरणसुखद रघुवीर॥

अस कहि करत दण्डवत देखा ❀ तुरत उठे प्रभु हर्ष विशेखा
दीन वचन सुनि प्रभुमन भावा ❀ भुज विशाल गहि हृदय लगावा
अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी ❀ बोले वचन भक्तभयहारी
कहु लंकेश सहित परिवारा ❀ कुशल कुठाहर वास तुम्हारा
खलमण्डली बसहु दिन राती ❀ सखा धर्म निबहै केहि भाँती
मैं जानौं तुम्हारि सब रीती ❀ अतिशय निपुण न भाव अनीती
बरु भलवास नरककर ताता ❀ दुष्टसंग जनि देइ विधाता
अब पद देखि कुशल रघुराया ❀ जो तुम कीन्ह जानि जन दाया

दो० तबलगि कुशल न जीवकहँ, सपनेहु मन विश्राम[7]।

१ दोनों २ लालकमल ३ मुख ४ कामदेव ५ घुग्घूपक्षी ६ अँधेरा ७ आराम॥

जबलगि भजन न रामके, शोकधाम तजि काम ॥
तबलगि हृदय बसत खल नाना ❀ लोभ मोह मत्सर मद माना
जबलगि उर न बसत रघुनाथा ❀ धरे चाप शायक कटिभाथा
ममता तिमिर[1] तरुण अँधियारी ❀ राग द्वेष उलूक सुखकारी
तबलगि बसत जीव मनमाहीं ❀ जबलगि प्रभुप्रताप रवि नाहीं
अब मैं कुशल मिटे भवभारे ❀ देखि राम पदकमल तुम्हारे
तुम कृपालु जापर अनुकूला ❀ ताहि न व्याप त्रिविध भवशूला
मैं निशिचर अतिअधम स्वभाऊ ❀ शुभआचरण कीन्ह नहिं काऊ
जासु रूप मुनि ध्यान न पावा ❀ सो प्रभु हरषि हृदय मोहिं लावा

दो॰ अहोभाग्य मम[2] अमित[3] अति, रामकृपा सुखपुंज[4]।
देखेउँ नयन विरंचि शिव, सेव्ययुगलपदकंज ॥

सुनहु सखा निज कहहुँ स्वभाऊ ❀ जानु भुशुण्डि शंभु गिरिजाऊ
जो नर होइ चराचर द्रोही ❀ आवै सभय शरण तकि मोही
तजि मद मोह कपट छलनाना ❀ करौं सद्य[5] तेहि साधु समाना
जननी जनक बन्धु सुत दारा[6] ❀ तन धन भवन सुहृद परिवारा
सबकै ममताताग बटोरी ❀ ममपद मनहिं बांधि बटिडोरी
समदरशी इच्छा कछु नाहीं ❀ हर्ष शोक[7] भय नहिं मनमाहीं
अस सज्जन ममउर बस कैसे ❀ लोभी हृदय बसत धन जैसे
तुमसारिखे सन्त प्रियमोरे ❀ धरौं देह नहिं आन निहोरे

दो॰ सगुण उपासक परमहित, निरत[8] नीति दृढ़ नेम।
ते नर प्राणसमान मोहिं, जिनके द्विजपद प्रेम ॥

सुनु लङ्केश सकल गुण तोरे ❀ ताते तुम अतिशय प्रिय मोरे
रामवचन सुनि वानरयूथा ❀ सकल कहहिं जय कृपावरूथा
सुनत विभीषण प्रभुकी बानी ❀ नहिं अघात श्रवणामृत जानी
पदअम्बुज[9], गहि बारहिंबारा ❀ हृदय समात न प्रेम अपारा

१ अँधेरा २ मेरे ३ बेप्रमाण ४ ढेर ५ तुरन्त ६ स्त्री ७ दुःख ८ लगा हुआ ९ चरणकमल॥

सुनहु देव सचराचरस्वामी ❀ प्रणतपाल उर अन्तरयामी
उर कछु प्रथम वासना रहेऊ ❀ प्रभुपद प्रीति सरित सो बहेऊ
अब कृपालु निजभक्ति पावनी ❀ देहु सदा शिवमन भावनी
एवमस्तु कहि प्रभु रणधीरा ❀ मांगा तुरत सिन्धुकर नीरा[1]
यदपि सखा तोहिं इच्छा नाहीं ❀ मम दर्शन अमोघ[2] जगमाहीं
असकहि राम तिलक तेहि सारा ❀ सुमन[3]वृष्टि नभ भई अपारा

दो० रावण क्रोधानल सरिस, श्वास समीर[4] प्रचण्ड।
जरत विभीषण राखेऊ, दीन्हेउ राज अखण्ड॥
जो सम्पति शिवरावणहिं, दीन्ह दिये दशमाथ।
सो सम्पदा विभीषणहिं, सकुचि दीन्ह रघुनाथ॥

अस प्रभु छांड़ि भजहिं जे आना ❀ ते नर पशु बिनु पूंछ विषाना[5]
निजजन जानि ताहि अपनावा ❀ प्रभुस्वभाव कपिकुल मन भावा
पुनि सर्वज्ञ सर्वउरवासी ❀ सर्वरूप सबरहित उदासी
बोले वचन नीतिप्रतिपालक ❀ कारण मनुज दनुज[6]कुलघालक
सुनु कपीश लंकापति वीरा ❀ केहिविधि उतरिय जलधि गँभीरा
संकुल उरग[8] मकर झषजाती ❀ अतिअगाध दुस्तर सब भाँती
कह लंकेश सुनहु रघुनायक ❀ कोटि सिंधु शोषक तव शायक
यद्यपि तदपि नीति अस गाई ❀ विनय करिय सागरपहँ जाई

दो० प्रभुतुम्हारकुलगुरुजलधि, कहहि उपाय विचारि।
बिनु प्रयास सागर तरहिं, सकल भालुकपिधारि॥

सखा कह्यो तुम नीक उपाई ❀ करब दैव जो होइ सहाई
मन्त्र न यह लक्ष्मण मन भावा ❀ रामवचन सुनि अति दुखपावा
नाथ दैवकर कवन भरोसा ❀ शोषिय सिन्धु करिय मन रोसा[9]
कादरमनकर एक अधारा ❀ दैव दैव आलसी पुकारा
सुनत विहँसि बोले रघुवीरा ❀ ऐसइ करब धरहु मन धीरा

१ जल २ सफल ३ पुष्प ४ पवन ५ सींग ६ दैत्य ७ समुद्र ८ सांप ९ क्रोध॥

असकहि प्रभु अनुजहि समुझाई ❀ सिन्धु समीप गये रघुराई
प्रथम प्रणाम कीन्ह प्रभु जाई ❀ बैठे तट पुनि दर्भ डसाई
जबहिं विभीषण प्रभुपहँ आये ❀ पाछे रावण दूत पठाये

दो० सकल चरित उन देखेउ, धरे कपट कपिदेह।
प्रभुगुण हृदय सराहि अति, शरणागत पर नेह॥

प्रकट बखानत रामस्वभाऊ ❀ अतिसप्रेम गा बिसरि दुराऊ
रिपुके दूत कपिन जब जाने ❀ तिनहिं बांधि कपिपतिपहँ आने
कह सुग्रीव सुनहु सब वनचर ❀ अंग भंग करि पठवहु निशिचर
सुनि सुग्रीववचन कपि धाये ❀ बांधि कटक[2] चहुँ पास फिराये
बहु प्रकार मारन कपि लागे ❀ दीन पुकारत तदपि न त्यागे
जो हमार हर नासा[3] काना ❀ तेहि कोशलाधीश[4]कर आना
सुनि लछमण तब निकट बुलाये ❀ दया लागि हँसि दीन्ह छुड़ाये
रावणकर[5] दीन्हेउ यह पाती ❀ लछमणवचन बांचु कुलघाती

दो० कहेउ मुखागर मूढ़सन, मम सन्देश उदार।
सीता देहु मिलहु नतु, आवा काल तुम्हार॥

तुरत नाइ लछमणपद माथा ❀ चले दूत वरणत गुणगाथा[6]
कहत रामयश लंकहि आये ❀ रावणचरण शीश तिन नाये
बिहँसि दशानन पूंछेसि बाता ❀ कहसि न शुक आपनि कुशलाता
पुनि कहु कुशल विभीषण केरी ❀ जासु मृत्यु आई अतिनेरी
करत राज लंका शठ त्यागा ❀ होइहि यवकर कीट[7] अभागा
पुनि कहु भालु कीश कटकाई ❀ कठिन काल प्रेरित चलिआई
तिनके जीवनकर रखवारा ❀ भयउ मृदुलचित सिन्धु बिचारा
कहु तपसिनके बात बहोरी ❀ जिनके हृदय त्रास[8] बड़ि मोरी

दो० भई भेंट की फिरिगये, श्रवण सुयश सुनि मोर।
कहसि न रिपुदल तेज बल, कस चकित चित तोर॥

१ कुश २ फ़ौज ३ नाक ४ रामजी ५ हाथ ६ कथा ७ घुन ८ त्रास ९ डर॥

नाथ कृपाकरि पूंछेहु जैसे ❀ मानहु वचन क्रोध तजि तैसे
मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा ❀ जातहि राम तिलक तेहि सारा
रावणदूत हमहिं सुनि काना ❀ कपिन बांधि दीन्हे दुख नाना
श्रवण नासिका काटन लागे ❀ रामशपथ[1] दीन्ही तब त्यागे
पूंछहु नाथ कीशकटकाई ❀ वदन कोटि शत वरणि न जाई
नाना वरण भालु कपि[2] धारी ❀ विकटानन विशाल भयकारी
जेइँ पुर दहेउ बधेउ सुत तोरा ❀ सकल कपिनमहँ तेहि बल थोरा
अमित नाम भट कठिन कराला ❀ अमित नागबल विपुल विशाला

दो० द्विविद मयन्दरु नील नल, अंगदादि विकटासि।
दधिमुख केहरि कुमुद गव, जामवन्त बलरासि॥

ये कपि सब सुग्रीव समाना ❀ इनसम कोटि गनै को नाना
राम कृपा अतुलित[3] बल तिनहीं ❀ तृण समान त्रयलोकहि गिनहीं
अस मैं श्रवण सुना दशकन्धर ❀ पद्म अठारह यूथप बन्दर
नाथ कटकमहँ सो कपि नाहीं ❀ जो न तुम्हैं जीतहि रणमाहीं
परमक्रोध मींजहिं सब हाथा ❀ आयसु पै न देहिं रघुनाथा
शोषहिं सिन्धु सरित झष[4] व्याला ❀ फारहिं नखधरि कुधर[5] विशाला
मर्दि गर्द मिलवहिं दशशीशा ❀ ऐसे वचन कहहिं सब कीशा
गर्जहिं तर्जहिं सहज अशंका[6] ❀ मानहुँ ग्रसन चहत अब लंका

दो० सहज शूर कपि भालु सब, पुनि शिरपर श्रीराम।
रावण कोटिन काल कहँ, जीति सकहिं संग्राम॥

राम तेज बल बुधि विपुलाई ❀ शेष सहस शत सकहिं न गाई
सक शर एक शोषि शत सागर ❀ तव भ्रातहिं पूंछेउ नयनागर
तासु वचन सुनि सागर पाहीं ❀ मांगत पन्थ[7] कृपा मनमाहीं
सुनत वचन विहँसा दशशीशा ❀ जो अस मति सहायकृत कीशा
सहज भीरु[8] कर वचन दृढ़ाई ❀ सागरसन ठानी मचलाई

१ सौगंद २ बन्दर ३ बेप्रमाण ४ मछली ५ पहाड़ ६ निडर ७ रास्ता ८ डरपोक॥

मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई ❀ रिपुबलबुद्धि थाह मैं पाई
सचिव सभीत विभीषण जाके ❀ विजय विभूति कहांलगि ताके
सुनि खलवचन दूत रिस बाढ़ी ❀ समय विचारि पत्रिका काढ़ी
रामअनुज दीन्ही यह पाती ❀ नाथ बँचाइ जुड़ावहु छाती
बिहँसि वाम कर लीन्हेसि रावन ❀ सचिव बोलि शठ लाग बँचावन

दो॰ बातन मनहिं रिझाव शठ, जनि घालसि कुलखीश।
रामविरोध न उबरिहसि, शरण विष्णु अज ईश[२]॥
होसिमानतजिअनुजइव, प्रभु पदपङ्कज[३] भृङ्ग[४]।
होहिरामशरअनल[५] खल, जनि कुलसहित पतङ्ग[६]॥

सुनत सभय मनमहँ मुसुकाई ❀ कहत दशानन सबहिं सुनाई
भूमि परा कर गहत अकासा ❀ लघुतापस कर वाकविलासा
कह शुक नाथ सत्य सब बानी ❀ समुझहु छांड़ि प्रकृति अभिमानी
सुनहु वचन मम परिहरि क्रोधा ❀ नाथ रामसन तजहु विरोधा
अतिकोमल रघुवीर स्वभाऊ ❀ यद्यपि अखिललोककर राऊ
मिलत कृपा प्रभु तुम पर करिहैं ❀ उर अपराध न एकौ धरिहैं
जनकसुता[८] रघुनाथहिं दीजै ❀ इतना कहा मोर प्रभु कीजै
जब तेइँ देन कहेउ वैदेही ❀ चरणप्रहार कीन्ह शठ तेही
चरणनाइ शिर चला सो ताहां ❀ कृपासिन्धु रघुनायक जाहां
करि प्रणाम निजकथा सुनाई ❀ रामकृपा आपनि गति पाई
ऋषि अगस्त्यकर शाप भवानी ❀ राक्षस भयउ रहा मुनि ज्ञानी
वन्दि रामपद बारहिं बारा ❀ पुनि निज आश्रमकहँ पगुधारा

दो॰ विनय न मानत जलधि जड़, गये तीनिदिन बीति।
बोले राम सकोप तब, भयबिनुहोय न प्रीति॥

लक्ष्मण बाण शरासन आनू ❀ शोषै वारिधि विशिख कृशानू
शठसन विनय कुटिलसन प्रीती ❀ सहज कृपणसन सुन्दर नीती

१ ब्रह्मा २ शम्भु ३ कमल ४ भौंरा ५-६ अग्नि ६ पाँखी ७ छोड़के ८ सीता॥

ममतारतसन ज्ञान कहानी ❁ अतिलोभीसन विरति बखानी
क्रोधिहि शम कामिहि हरि कथा ❁ ऊषर बीज बये फल यथा
अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा ❁ यह मत लक्ष्मण के मन भावा
सन्धानेउ प्रभु विशिख कराला ❁ उठी उदधिउर अन्तर ज्वाला
मकर उरग झषगण अकुलाने ❁ जरत जन्तु जलनिधि जब जाने
कनकथार भरि मणिगण नाना ❁ विप्ररूप आये तजि माना

दो० काटे पै कदली फरै, कोटि यतन करि सीच।
विनय न मान खगेश सुनु, डाटेहि ते नव नीच॥

सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे ❁ क्षमहु नाथ सब अवगुण मेरे
गगन समीर अनल जलधरणी ❁ इनकी नाथ सहज जड़करणी
तव प्रेरित माया उपजाये ❁ सृष्टि हेतु सब ग्रन्थन गाये
प्रभु आयसु जेहिकहँ जस अहही ❁ सो तेहि भाँति रहै सुख लहही
प्रभु भल कीन्ह मोहिंशिष दीन्हीं ❁ मर्य्यादा पुनि तुम्हरी कीन्हीं
ढोल गँवार शूद्र पशु नारी ❁ ये सब ताड़न के अधिकारी
प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई ❁ उतरिहि कटक न मोरि बड़ाई
प्रभुआज्ञा अपेल श्रुति गाई ❁ करहु वेगि जो तुमहिं सुहाई

दो० सुनत विनीत वचन अति, कह कृपालु मुसुकाइ।
जेहिविधि उतरै कपिकटक, तात सो करहु उपाइ॥

नाथ नील नल कपि दोउ भाई ❁ लरिकाई ऋषिआशिष पाई
तिनके परस किये गिरिभारे ❁ तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे
मैं पुनि उरधरि प्रभु प्रभुताई ❁ करिहौं बल अनुमान सहाई
यहि विधि नाथ पयोधि बँधाइय ❁ जेहि यह सुयश लोकतिहुँ गाइय
यहि शर मम उत्तरतट वासी ❁ हतहु नाथ खलगण अघरासी
सुनि कृपालु सागरमनपीरा ❁ तुरतहिं हरी राम रणधीरा
देखि रामबल अतुलितभारी ❁ हरषि पयोनिधि भयो सुखारी

१ समुद्र २ केला ३ आकाश ४ वायु ५ अग्नि ६ आज्ञा ७ फ़ौज ८ समुद्र॥

सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा ❀ चरणवन्दि पाथोधि[1] सिधावा

छं० निजभवन गमनेउ सिन्धुश्रीरघुवीरहियमतभायऊ।
यहचरित कलिमल हरणजसमति दासतुलसी गायऊ॥
सुखभवन[2] संशय[3]दमन[4] शमन[5]विषाद[6] रघुपति गुणगना।
तजि सकल आशभरोसगावहिंसुनहिंसज्जन शुचि[7]मना॥

दो० सकल सुमङ्गलदायक, रघुनायक गुणगान।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव, सिन्धु विना जलयान[8]॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने सुन्दरकाण्डे
विमलवैराग्यसम्पादनो नाम पञ्चमस्सोपानः ॥ ५ ॥

१ समुद्र २ घर ३ सन्देह ४ वश करना ५ शान्ति ६ दुःख ७ पवित्र ८ जहाज़ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीगोस्वामि

तुलसीदासकृत रामायण

लंकाकाण्ड

मङ्गलाचरणम् ।

श्लोक ॥ रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालम-
त्तेभसिंहं योगीन्द्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं
निर्विकारम् । मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्म-
वृन्दैकदेवं वन्दे कुन्दावदातं सरसिजनयनं देवमुर्वी-
शरूपम् ॥ १ ॥ शङ्खेन्द्वाभमतीवसुन्दरतनुं शार्दूलचर्मा-
म्बरं कालव्यालकरालभूषणधरं गङ्गाशशाङ्कप्रियम् ।
काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं नौ-
मीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं श्रीशंकरं कामहम् ॥ २ ॥

दो० लव निमेष परमाणु युग, वर्ष कल्प शरचण्ड ।
भजसि न मन तेहि राम कहँ, काल जासु कोदण्ड ॥

सो० सिंधु वचन सुनि राम, सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ ।
अब विलम्ब केहि काम, रचहु सेतु उतरै कटक ॥
सुनहु भानुकुलकेतु, जाम्बवन्त करजोरि कह ।
नाथ नाम तव सेतु, नर चढ़ि भवसागर तरहिं ॥

यह लघुजलधि[1] तरत कतबारा ❀ अस सुनि पुनि कह पवनकुमारा
प्रभुप्रताप बड़वानल[2] भारी ❀ शोषेउ प्रथम पयोनिधि[3] वारी
तव रिपुनारिरुदन जलधारा ❀ भस्यो बहोरि भयो तेहि खारा
सुनि अस उक्ति पवनसुत केरी ❀ विहँसे रघुपति कपितन हेरी
जाम्बवन्त बोले दोउ भाई ❀ नल नीलहिं सब कथा सुनाई
रामप्रताप सुमिरि उरमाहीं ❀ करहु सेतु[4] प्रयास कछु नाहीं
बोलिलिये कपिनिकर बहोरी ❀ सकल सुनहु विनती इक मोरी
रामचरणपङ्कज[5] उर धरहू ❀ कौतुक एक भालु कपि करहू
धावहु मर्कट विकट वरुथा[6] ❀ आनहु विटप गिरिन के यूथा
सुनि कपि भालुँ चले करि हूहा ❀ जय रघुवीर प्रतापसमूहा

दो० अति उतंग तरु शैलगण, लीलहिं लेहिं उठाइ।
आनि देहिं नल नीलकहँ, विरचहिं सेतु बनाइ॥

शैल विशाल आनि कपि देहीं ❀ कन्दुक[8]इव नल नील सो लेहीं
देखि सेतु अतिसुन्दर रचना ❀ बिहँसि कृपानिधि बोले वचना
परम रम्य सुन्दर यह धरणी ❀ महिमा अमित जाइ नहिं वरणी
करिहौं इहां शम्भु थापना ❀ मोरे हृदय परम कल्पना
सुनि कपीश बहु दूत पठाये ❀ मुनिवर निकर बोलि लै आये
लिंग थापि विधिवत करि पूजा ❀ शिव समान प्रिय मोहिं न दूजा
शिवद्रोही मम दास कहावै ❀ सो नर स्वप्नेहु मोहिं न भावै
शंकर विमुख भक्ति चह मोरी ❀ सो नर मूढ़ मन्द मति थोरी

दो० शङ्करप्रिय मम द्रोही, शिवद्रोही मम दास।
ते नर करहिं कल्पभरि, घोर नरक महँ वास॥

जो रामेश्वर दर्शन करिहैं ❀ सो तनु तजि ममधाम सिधरिहैं
जो गङ्गाजल आनि चढ़ाइहि ❀ सो सायुज्यमुक्ति नर पाइहि
है अकाम जो छल तजि सेइहि ❀ भक्ति मोरि तेहि शङ्कर देइहि

१-३ समुद्र २ अग्नि ४ पुल ५ कमल ६ झुण्ड ७ झुण्ड ८ गेंद॥

ममकृत सेतु जे दर्शन करिहैं ❀ ते बिनुश्रम भवसागर तरिहैं
रामवचन सब के मन भाये ❀ मुनिवर निज निज आश्रम आये
गिरिजा[1] रघुपति की यह रीती ❀ सन्तत करहिं प्रणतपर प्रीती
बाँधेउ सेतु नील नल नागर ❀ रामकृपा यश भयउ उजागर
बूड़हिं आनहिं बोरहिं जेई ❀ भये उपल बोहितसम तेई
महिमा यह न जलधि[2]की वरणी ❀ पाहनगुण न कपिन की करणी

दो० श्रीरघुवीर प्रताप ते, सिन्धु तरे पाषान।
ते मतिमन्द जे रामतजि, भजहिं जाय प्रभुआन॥

बांधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा ❀ देखि कृपानिधि के मन भावा
चली सेन[3] कछु वरणि न जाई ❀ गरजहिं मरकट भट समुदाई
सेतुबन्ध ढिग चढ़ि रघुराई ❀ चितव कृपालु सिन्धु बहुताई
देखन कहँ प्रभु करुणाकन्दा ❀ प्रकट भये सब जलचर वृन्दा
नाना मकर नक्र झष[4] व्याला ❀ शतयोजन तनु परमविशाला
ऐसे एक तिनहिं धरिखाहीं ❀ एकन के डर एक पराहीं[5]
प्रभुहि विलोकहिं टरहिं न टारे ❀ मन हरषित सब भये सुखारे
तिनकी ओट न देखिय वारी ❀ मगन भये हरिरूप निहारी
चला कटक कछु वरणि न जाई ❀ को कहि सक कपिदल विपुलाई

दो० सेतुबन्ध भइ भीर अति, कपि नभपन्थ[6] उड़ाहिं।
अपरजलचरन उपर चढ़ि, बिनु श्रम पारहि जाहिं॥

अस कौतुक विलोकि दोउ भाई ❀ बिहँसि चले कृपालु रघुराई
सेन सहित उतरे रघुवीरा ❀ कहि न जात कछु यूथप[7] भीरा
सिन्धु पार प्रभु डेरा कीन्हा ❀ सकल कपिनकहँ आयसु दीन्हा
खाहु जाइ फल मूल सुहाये ❀ सुनत भालु कपि जहँ तहँ धाये
सब तरु फले राम हितलागी ❀ ऋतु अनऋतुहि कालगति त्यागी
खाहिं मधुरफल विटप हिलावहिं ❀ लंका सम्मुख शिखर चलावहिं

१ पार्वती २ समुद्र ३ फ़ौज ४ मछली ५ भागते हैं ६ रास्ता ७ सेनप॥

जहँ कहुँ फिरत निशाचर पावहिं ❀ घेरि सकल तेहि नाच नचावहिं
दशनन काटि नासिका काना ❀ कहि प्रभुसुयश देहिं तब जाना
जिन कर नासा कान निपाता ❀ तिन रावणहिं कही सब बाता
सुनत श्रवण वारिधि बन्धाना ❀ दशमुख बोलि उठा अकुलाना

दो॰ बांधेउ वननिधि नीरनिधि, जलधि सिन्धु वारीश।
सत्य तोयनिधि पङ्कनिधि, उदधि पयोधि नदीश॥

व्याकुलता निज समुझि बहोरी ❀ बिहँसि चला गृह करि मति भोरी
मन्दोदरी सुना प्रभु आये ❀ कौतुकही पाथोधि बँधाये
करगहि पतिहि भवन निज आनी ❀ बोली परम मनोहर बानी
चरण नाइ शिर अंचल रोपा ❀ सुनहु वचन प्रिय परिहरि कोपा
नाथ वैर कीजे ताही सों ❀ बुधिबल जीति सकिय जाही सों
तुमहिं रघुपतिहिं अंतर कैसा ❀ खलु खद्योत दिवाकर जैसा
अतिबल मधुकैटभ जिन मारा ❀ महावीर दितिसुत संहारा
जेहि बलि बांधि सहसभुज मारा ❀ सोइ अवतरेउ हरण महि भारा
तासु विरोध न कीजिय नाथा ❀ काल कर्म गुण जिनके हाथा

दो॰ रामहिं सौंपहु जानकी, नाइ कमलपद माथ।
सुत कहँ राज्य देइ वन, जाइ भजहु रघुनाथ॥

नाथ दीनदयालु रघुराई ❀ बाघो सम्मुख गये न खाई
चाहिय करन सो सब करि बीते ❀ तुम सुर असुर चराचर जीते
वेद कहहिं अस नीति दशानन ❀ चौथेपनहिं जाइ नृप कानन
तासु भजन कीजिय तहँ भर्त्ता ❀ जो कर्त्ता पालक संहर्त्ता
सोइ रघुवीर प्रणत अनुरागी ❀ भजहु नाथ ममता मद त्यागी
मुनिवर यतन करहिं जेहि लागी ❀ भूप राज्य तजि होहिं विरागी
सोइ कोशलाधीश रघुराया ❀ आये करन तोहिंपर दाया
जो पिय मानहु मोर सिखावन ❀ होइहि सुयश तिहूँपुर पावन

१ राक्षस २ दाँतों से ३ जुगुनू ४ सूर्य ५ पृथ्वी ६ वन ७ नाशनेवाला ८ त्यागी॥

दो० असकहि लोचन वारिभरि, गहिपद कम्पित गात।
नाथ भजहु रघुनाथपद, मम अहिवात न जात॥

तब रावण मयसुता[1] उठाई ❁ कहै लाग खल निज प्रभुताई
सुनु तैं प्रिया मृषा[2] भय माना ❁ जग योधा को मोहिं समाना
वरुण कुबेर पवन यम काला ❁ भुजबल जिते सकल दिक्पाला
देव दनुज नर सब वश मोरे ❁ कौनहेतु भय उपजा तोरे
नाना विधि कहि तेहि समुझाई ❁ सभा बहोरि बैठ सो जाई
मन्दोदरी हृदय अस जाना ❁ कालविवश उपजा अभिमाना[3]
सभा जाइ मन्त्रिन सों बूझा ❁ करिय कवनविधि रिपु[4]सन जूझा
कहहिं सचिव[5] सुनु निशिचरनाहा ❁ बार बार प्रभु पूँछहु काहा
कहहु कवन भय करिय विचारा ❁ नर कपि भालु अहार हमारा

दो० वचन सबनके श्रवणसुनि, कह प्रहस्त करजोरि।
नीतिविरोध न करिय प्रभु, मंत्रिन मति अतिथोरि॥

कहहिं सचिव सब ठकुरसुहाती ❁ नाथ न पूरि आव यहि भाँती
वारिधि[6] लाँघि एक कपि आवा ❁ तासु चरित मनमहँ सब गावा
क्षुधा न रही तुमहिं तब काहू ❁ जारत नगर न कस धरि खाहू
सुनत नीक आगे दुख पावा ❁ सचिवन असमत प्रभुहिं सुनावा
जेइँ वारीश[7] बँधायउ हेला[8] ❁ उतरे कपिदल सहित सुबेला
सो मनु मनुज खाब हम भाई ❁ वचन कहहु सब गाल फुलाई
सुनि ममवचन तात अति आदर ❁ जनि मन गुणहु मोहिं करि कादर
प्रियवाणी जे सुनहिं जे कहहीं ❁ ऐसे जग निकाय नर अहहीं
वचन परमाहित सुनत कठोरे ❁ कहहिं सुनहिं ते नर जग थोरे
प्रथम बसीठ[9] पठव सुनु नीती ❁ सीतहि देइ करिय पुनि प्रीती

दो० नारि पाइ फिरि जाहिं जो, तौ न बढ़ाइय रार।
नाहिं तो सम्मुख समरमहँ, नाथ करिय हठ मार॥

१ मन्दोदरी २ झूठ ३ घमण्ड ४ शत्रु ५ मन्त्री ६-७ समुद्र ८ खेल ९ दूत॥

यह मत जो मानहु प्रभु मोरा ❀ उभय प्रकार सुयश जग तोरा
सुतसन कह दशकन्ध रिसाई ❀ असमत तोहिं शठ कौन सिखाई
अबहींते उर संशय होई ❀ वेणुंमूल सुत भयसि घमोई
सुनि पितुगिरां परुष अतिघोरा ❀ चला भवन कहि वचन कठोरा
हितमत तोहिं न लागत कैसे ❀ कालविवश कहँ भेषंज जैसे
सन्ध्या समय जानि दशशीशा ❀ भवन चला निरखत भुजबीशा
लङ्काशिखर उपर आगारां ❀ अति विचित्र तहँ होय अखारा
बैठ जाय तेहि मन्दिर रावन ❀ लागे किन्नर गन्धब गावन
बाजैं ताल पखावज वीणा ❀ नृत्य करहिं अप्सरा प्रवीणा

दो० सुनासीर शत सरिस सो, सन्तत करे विलास।
परम प्रबल रिपु शीशपर, तदपि न कछु मनत्रास॥

इहाँ सुबेल शैल रघुवीरा ❀ उतरे सेनसहित अतिभीरा
शैलशृङ्ग इक सुन्दर देखी ❀ अति उतङ्ग समसुभग विशेखी
तहँ तरु किसलय सुमन सुहाये ❀ लक्ष्मण रचि निज हाथ डसाये
तेहिपर रुचिर मृदुल मृगछाला ❀ तेहि आसन आसीन कृपाला
प्रभुकृत शीश कपीश उछंगा ❀ वामदहिन दिशि चाप निषंगा
दुहुँ करकमल सुधारत बाना ❀ कह लंकेश मन्त्र लगिकाना
बड़भागी अङ्गद हनुमाना ❀ चरणकमल चापत विधिनाना
प्रभु पाछे लक्ष्मण वीरासन ❀ कटि निषंग कर बाण शरासन

दो० यहिविधि करुणाशीलगुण, धाम राम आसीन।
ते नर धन्य जो ध्यानयहि, रहत सदा लवलीन॥
पूरब दिशा विलोकि प्रभु, देखा उदित मयङ्कं।
कह्यो सबहिं देखहु शशिहि, मृगपतिसरिस अशङ्क॥

पूरब दिशि गिरिगुहा निवासी ❀ परमप्रताप तेज बल रासी
मत्त नांग तम कुम्भ बिदारी ❀ शशि केहरी गगन वनचारी

१ बाँस २ वाणी ३ औषध ४ मकान ५ तरकस ६ कमर ७ चन्द्रमा ८ हाथी॥

बिथुरे नभ मुक्ताहल तारा ❀ निशिसुन्दरी केर शृङ्गारा
कह प्रभु शशिमहँ मेचकताई ❀ कहहु कहा निजनिज मति भाई
कह सुग्रीव सुनहु रघुराया ❀ शशिमहँ प्रकट भूमिकी छाया
मारेहु राहु शशिहि कह कोई ❀ उर महँ परी श्यामता सोई
कोउ कह जबविधिरतिमुख कीन्हा ❀ सारभाग शशिकर हरि लीन्हा
छिद्र सो प्रकट इन्दु[2]उर माहीं ❀ तेहि मग देखिय नभ परिछाहीं
कह प्रभु गरल बन्धु शशिकेरा ❀ अतिप्रीतम उर दीन्ह बसेरा
विषसंयुत कर[3]निकर पसारी ❀ जारत विरहवन्त नर नारी

दो॰ कह मारुतसुत सुनहु प्रभु, शशि तुम्हारप्रियदास।
तव मूरति विधु उरबसत, सोइ श्यामता भास॥
पवनतनय के वचन सुनि, बिहँसे राम सुजान।
दच्छिणदिशाविलोकिप्रभु, बोले कृपानिधान॥

देखु विभीषण दच्छिण आ[4]सा ❀ घनघमण्ड दामिनी विलासा
मधुर मधुर गर्जत घनघोरा ❀ होइ वृष्टि जनु उपल[5] कठोरा
कहत विभीषण सुनहु कृपाला ❀ होइ न तड़ित[6] न वारिद माला
लङ्का शिखर उपर आगारा ❀ तहँ दशकन्धर केर अखारा
छत्र मेघडम्बर शिरधारी ❀ सो जनु जलद घटा अतिकारी
मन्दोदरी श्रवण[7] ताटंका ❀ सोइ प्रभु जनु दामिनी दमंका
बाजहिं ताल मृदंग अनूपा ❀ सोइ रवसरिस सुनहु सुरभूपा
प्रभु मुसुकान देखि अभिमाना ❀ चाप चढ़ाइ बाण सन्धाना

दो॰ छत्र मुकुट ता[8]टंक सब, हते एकही बान।
सबके देखत महि गिरे, मर्म न कोऊ जान॥
यह कौतुककरि रामशर, प्रविश्यो आइ निषंग।
रावण सभा सशंक सब, देखि महा रसभंग॥

१ श्यामता २ चन्द्रमा ३ किरण ४ दिशा ५ पत्थर ६ बिजली ७ कान ८ कर्णफूल॥

कम्प न भूमि न मरुत[1] विशेखा ❀ अस्त्रशस्त्र कोउ नयन न देखा
शोचहिं सब निज हृदय विचारी ❀ अशकुन भयउ भयंकर भारी
रावण दीख सभा भय पाई ❀ बिहँसि वचन कह युक्ति बनाई
शिरौ गिरे सन्तत शुभ जाही ❀ मुकुट गिरे कस अशकुन ताही
शयन करहु निजनिज गृह जाई ❀ गमने भवन सकल शिरनाई
मन्दोदरी शोच उर बसेऊ ❀ जबते श्रवणफूल महि खसेऊ
सजलनयन कह युग कर जोरी ❀ सुनहु प्राणपति विनती मोरी
राम विरोध कन्त परिहरहू ❀ जानि मनुज जनि हठ उरधरहू

दो० विश्वरूप रघुवंशमणि, करहु वचन विश्वास।
लोक कल्पना वेद कह, अंग अंग प्रति जास॥

पद पाताल शीश अज[2]धामा ❀ अपर लोक अँग अँग विश्रामा
भृकुटिविलास भयंकर काला ❀ नयन दिवाकर[3] कच[4] घनमाला
जासु घ्राण[5] अश्विनीकुमारा ❀ निशि अरुदिवस निमेष अपारा
श्रवण दिशा दश वेद बखानी ❀ मारुत श्वास निगम निजबानी
अधर लोभ यम दशन कराला ❀ मायाहास बाहु दिक्पाला
आनन अनल अम्बुपति जीहा ❀ उतपति पालन प्रलय समीहा
रोमावलि अष्टादश भारा ❀ अस्थि[6] शैल सरिता नस जारा
उदर उदधि अधगोकुयातना ❀ जगमय प्रभुकी बहुत कल्पना

दो० अहंकार शिव बुद्धि अज, मन शशिचित्त महान।
मनुजवास चर अचरमय, रूपराशि भगवान॥
असविचारिसुनुप्राणपति, प्रभुसन वैर बिहाइ।
प्रीति करहु रघुवीरपद, मम अहिवात न जाइ॥

बिहँसा नारिवचन सुनि काना ❀ अहो मोहमहिमा बलवाना
नारिस्वभाव सत्य कवि कहई ❀ अवगुण आठ सदा उर रहई
सहसा अनृत[8] चपलता माया ❀ भय अविवेक अशौच अदाया

---

१ पवन २ ब्रह्मा ३ सूर्य ४ बाल ५ नाक ६ हाड़ ७ छोड़के ८ झूठ ॥

रिपु[१]कर रूप सकल तैं गावा ❀ अतिविशाल भय मोहिं सुनावा
सो सब प्रिया सहज वश मोरे ❀ समुझि परा प्रसाद अब तोरे
जानेउँ प्रिया तोरि चतुराई ❀ यहि मिसु[२] कहेउ मोरि प्रभुताई
तव[३] बतकही गूढ़ मृग[४]लोचनि ❀ समुझत सुखद सुनत भयमोचनि
मन्दोदरि मनमहँ अस ठयऊ ❀ पियहि कालवश मतिभ्रम भयऊ

दो० बहुविधि जल्[५]पत सकल निशि, प्रात भये दशकन्ध ।
सहज अशंक[६] सो लंकपति, सभागयोमदअन्ध ॥

सो० फूलै फलै न बेत, यदपि सुधा[७] वर्षहिं जलद ।
मूरुख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहिं विरञ्चिसम ॥

अथ क्षेपक ॥

दो० मन्त्रिन सहित दशानन, चढ़ेउ धवरहर जाय ।
सारण कह तब राजसन, देखहु कपि समुदाय ॥

ये जो सिंहनाद किलकरहीं ❀ सप्ततालं उन्नत संचरहीं
सहसकोटि अतुलित बलवाना ❀ इनके सँग वानर परिमाना
रणअजीत ये सहज अशंका ❀ नाद सुने काँपै गढ़ लंका
नभ निरखहु इनके लंगूरे ❀ जनु ऋतुपावस युग धनुपूरे
विश्वकर्म्मा के सुत गुणखानी ❀ इन परसे पय शिल उतरानी
बसहिं ताम्रगिरिकन्दर माहीं ❀ गोदावरी विमलजल पाहीं
अतिबल आगे धावहिं वीरा ❀ इनपर कृपा करहिं रघुवीरा
करहिं यमहु कर संगर ढीला ❀ कज्जलवरण नाम नल नीला

दो० पद्म अठारह कपि कटक, चल इनकी भुज छाहँ ।
निजकर सुरभि[८] सुमन लै, रघुपति पूजी बाहँ ॥

यह जो आवत अचल समाना ❀ चौदह ताड़ ऊँच परिमाना
वास पुलिन्दा के तट करई ❀ अम्बुदनिकर निरखि करधरई

१ बैरी २ बहाना ३ तुम्हारी ४ हरिण ५ बका ६ निडर ७ अमृत ८ सुगन्धित ॥

रक्तकमलदल सम सब देहा ❁ जनु बिकसेउ सन्ध्याकर मेहा
हतै मेदिनी[1] पूंछ भँवाई ❁ लङ्का सौंह चितव जनु खाई
तारासुवन[2] बालिको जायो ❁ अतिउभ्भार रघुपति मन भायो
हृदय गगन यहिके प्रभु भानू ❁ पञ्च पदुम कपिनिकर पयानू
करै वज्र वासव[3] कर भङ्गा ❁ उदयाचल कहँ लेइ उछङ्गा
परम चतुर सेनप यहि लागी ❁ रघुपतिकृपा परम बड़भागी

दो॰ पांव धरा धरि चापै, पन्नग[4] होइ अकाज।
सेन अग्रसर देखहु, यह अङ्गद युवराज॥

यह जो श्वेत वरण तनु रेखा ❁ मनहुँ रजत[5] गिरिशृङ्ग विशेखा
दीर्घकेश दारुण भुजदण्डा ❁ चपल चलत बलबुद्धि प्रचण्डा
वास करै जलनिधि के तीरा ❁ पान करै गोमती सुनीरा
नृप सुग्रीवकेर अधिकारी ❁ सबलव्यूह यह रचै सँवारी
जनमत चन्द्रहि ग्रसन उड़ाना ❁ यहिकर पुरुषारथ जगजाना
निरखिगगन राका[6] शशि सोहा ❁ शिशुअजान तेहि लगिमनमोहा
धरणी धसकि धरन जब उड़ेऊ ❁ सत्तरियोजन ते पुनि फिरेऊ

दो॰ कोटि पञ्चशत मर्कट, रहैं सर्वदा साथ।
कालहुते रण[7] लरिसकैं, कुमुदनाम कपिनाथ॥

ये देखहु जे चहुँदिशि घुमड़े ❁ मनहुँ लङ्क सावनघन उमड़े
आगू पीछू दशदिशि धावहिं ❁ शिला शृङ्ग तरु तोरत आवहिं
सहसनाग बल सबहि समाना ❁ सप्तपदुम इनकर परिमाना
काशीपुरी वास इन केरी ❁ समर कतहुँ जिन पीठि न फेरी
तीक्ष्ण दन्त नखायुधधारी ❁ द्वन्द्व युद्ध ये जानहिं भारी
धूम्रकेतु यूथप इनकेरा ❁ लङ्का निकट कीन्ह जेहिं डेरा
यहिकर जेठ बन्धु जमवन्ता ❁ तेहिके बलकर पाव को अन्ता
देव दनुज को जूझै ताही ❁ धरा होइ कर कन्दुक[8] जाही

१ पृथ्वी २ पुत्र ३ इन्द्र ४ शेष ५ चाँदी ६ पूर्णमासी ७ लड़ाई ८ गेंद॥

बसै अशङ्क नर्मदा तीरा ❀ अशनि समान अभेद्य शरीरा

दो० सचिव सुकण्ठराजकर, रघुवरकर प्रियदास।
सो जड़ मन्द जो याहिरण, चह जीतनकी आस॥

अब देखहु यह यूथ अपारा ❀ पीतवरण ह्वै गयो पहारा
बाल अरुण मरीचि जसफूटी ❀ निशिचर निकर तमी चह छूटी
चौबिस अर्बुद इनकर यूहा ❀ सहस बुन्दसम कोटि समूहा
शिला शैल जे आगे परहीं ❀ पांयन मर्दि गर्दसम करहीं
कञ्चन गिरि कन्दर के वासी ❀ इनकर यूथनाथ अविनासी
अतिबल वासवकर हितकारी ❀ सखा सुकण्ठ केर सुखकारी
पान करै गङ्गाकर नीरा ❀ पर्वत शृङ्ग समान शरीरा
छिन छिन सिंहनाद जो होई ❀ गर्जत आवत है कपि सोई

दो० यश तिहुँमण्डलगलितगज, बलकर नाहिंन अन्त।
यह कपिराजा केशरी, सुवन जासु हनुमन्त॥

उत्तर दिशि देखहु रजधानी ❀ जनु दुकाललगि शलभँ उड़ानी
मरकटनिकर विकल बल टूटे ❀ आवत उदधिकूल जनु छूटे
यहि दल यूथनाथ जो अहई ❀ अति बलवन्त राजसँग रहई
कपिके रूप अनल अविनासी ❀ ये द्वौ पारिपात्र के वासी
अतिसुन्दर अरु समरविपच्छा ❀ महाबली द्वौ गवय गवच्छा
ये द्वौ गर्जत अति रणधीरा ❀ पीवहिं तुङ्गभद्र कर नीरा
सत्तरि सहस नागबल जाही ❀ इनमहँ एक कहौं मैं ताही
अपर बली गँधमादन नामा ❀ रणअजेय पुनि सब गुणधामा

दो० वासव विबुधवृन्दमहँ, तेजनमहँ जस भानु।
पनसनाम यह वानर, अतिबल नीतिनिधानु॥

यहँ जो कुमुदपत्र सम देहा ❀ जस कैलास शरदकर मेहा
लोचन मधुपिंगल अति लोने ❀ कामरूप चितवत चहुँकोने

---

१ वज्र २ किरण ३ मींजि ४ सोना ५ जल ६ हाथी ७ टीड़ी ८ बन्दर॥

लङ्का सौंह लँगूर फिराई ❀ गर्जत प्रलयमेघ की नाई
सुरपति साथ युद्ध कहँ गयऊ ❀ तबते कामरूप यह भयऊ
मघवा[1] यहिसन कीन्ह मिताई ❀ करै सदा यह देव सहाई
सहसकोटि कपि[2] यहि के सङ्गा ❀ राते पीत श्वेत बहु रङ्गा
वचनमृषा मम प्रभु यह नाहीं ❀ अपरबालि जानहु मनमाहीं
दर्दुर शैल सदन[3] यहिकेरा ❀ मन वच कर्म्म रामकर चेरा

दो० गिरिवर लांघत आवत, चलत उड़ावत रेणु।
तरणि[4] तेज इन रूंधेउ, तारातनय सुषेणु॥

यह कपि लसत मनहुँ गिरि गेरू ❀ दिन मुखछवि जस लहत सुमेरू
सोइ कपि प्रथम लङ्क जेहिं जारी ❀ प्रभु केहिलागि आवत यहिबारी
अञ्जनि गर्भ जन्म जब भयऊ ❀ क्षुधित[5] जननिसन आरत ठयऊ
तेइँकह सुपक अरुण फल खाहू ❀ सुनत चितव इतउत चितचाहू
बालअरुण लखि गगन उड़ाना ❀ ग्रसेसि तरणि वासव तब जाना
मारेउ वज्र चिबुक[6] भइ टेढ़ी ❀ कोपि पवन समीरसम बेढ़ी
देव विकल है अस्तुति कीन्हा ❀ कुलिश होउ तनु अस वर दीन्हा
विद्या पढ़त भानु के पाहीं ❀ उलटीगति रवि आगे जाहीं
वारिधि[7] लांघेउ गोपद जैसे ❀ यहि कपीशसन जूझब कैसे

दो० अम्बक पीत बालरवि, वदन तेज अतिराज।
पवनते वेग अधिक जनु, अनल नितम्ब सुभ्राज॥

अतसी कुसुम वरण तनुरेखा ❀ पुरुष पुराण धरे नर वेखा
मत्त गजेन्द्र शुण्ड भुजदण्डा ❀ धनुष बाण असि धरे प्रचण्डा
उर विशाल अति उन्नत कन्धर ❀ कम्बुकण्ठ रेखा प्रसन्न वर
मुखछवि की उपमा कवि जोहै ❀ शशि सरोज सम कहै न सोहै
दशन पांति की कान्ति कहै को ❀ ललकत मन पटतरिय लहै को
देखत अधरन की अरुणाई ❀ बिम्बाफल बन्धूक[8] लजाई

१ इन्द्र २ बन्दर ३ घर ४ सूर्य ५ भूखा ६ ठोढ़ी ७ समुद्र ८ दुपहरिया॥

शुकतुण्डहि नासिका लजावै ❀ थके सुकवि नहिं पटतर आवै
शीशजटा के मुकुट बनाये ❀ भाल विशाल तिलक अतिभाये
दक्षिण दिशि लक्ष्मण बलवीरा ❀ रम्पबाहु सम अति रणधीरा

दो० बायें भाग विभीषण, शिर अभिषेका राज।
बीजमन्त्र सब जानहिं, यकसर करहिं सुकाज॥

अब देखहु यह सेन[1] सुहाई ❀ भादों मेघघटा जनु छाई
कन्या एक ब्रह्म उपजाई ❀ नयन भूरि अरु रूपलुनाई
बालभाव दिनकर बल दीन्हा ❀ ऋतु जानी वासव रति कीन्हा
जातक जमल वीर द्वौ जाये ❀ देव अंश वानर तनु पाये
किष्किन्धा पर इनकर थाना ❀ देवसरिस[2] मधुवन उद्याना[3]
ऋष्यमूक इनकर विश्रामा ❀ चातुर्मास बसे जहँ रामा
बाली ज्येष्ठ राम रण मारा ❀ यहि कहँ राजतिलक प्रभु सारा
तारा तासु भई पटरानी ❀ जेहिकर सुत[4] अंगद अतिज्ञानी
सहस शंकुकर अर्बुद एका ❀ अर्बुदसहस कि बिन्दु विवेका
सहसबिन्दु गणकन गनि माना ❀ महापद्म तेहिकर परिमाना
ऐसे पद्म अठारह साजा ❀ विग्रह बढ़ेउ राम के काजा
वीर वेष अरु नयन विशाला ❀ कम्बु[5]कण्ठ मोतिन की माला

दो० हस्ती साठि सहस्रबल, सदा धर्म्म की सीँव[6]।
श्वेत छत्र शिर शोभित, यह राजा सुग्रीव॥
यहिविधि सकल दिखाये, सारन[7] कपिदल यूह।
गनै न रावण कालवश, अतिशय गर्व्व समूह॥

इति क्षेपक॥

इहां प्रात जागे रघुराई ❀ पूंछा मत सब सचिव[8] बुलाई
कहहु वेगि का करिय उपाई ❀ जामवन्त कह पद शिरनाई
सुनु सर्वज्ञ सकल उरवासी ❀ सर्व्वरूप सब रहित उदासी

१ फ़ौज २ समान ३ वन ४ पुत्र ५ शंख ६ हद्द ७ दूत ८ मन्त्री॥

मन्त्र कहउँ निजमति अनुसारा ❀ दूत पठाइय बालिकुमारा
नीक मन्त्र सबके मन माना ❀ अंगदसन कह कृपानिधाना
बालितनय बुधि बल गुणधामा ❀ लंका जाहु तात मम कामा
बहुत बुझाइ तुमहिं का कहऊं ❀ परम चतुर मैं जानत अहऊं
काज हमार तासु हित होई ❀ रिपुसन करेहु बतकही सोई

सो० प्रभु आज्ञा धरि शीश, चरण वन्दि अंगद कहेउ।
सोइ गुणसागर ईश, राम कृपा जापर करहु॥
स्वयं सिद्ध सब काज, नाथ मोहिं आदर दयउ।
अस विचारि युवराज, तनुपुलकितहरषित भयउ॥

वन्दि चरण उरं धरि प्रभुताई ❀ अंगद चल्यो सबहिं शिर नाई
प्रभुप्रताप उर सहज अशंका ❀ रणबांकुरा बालिसुत बंका
पुर पैठत रावणकर बेटा ❀ खेलत रहा सो ह्वैगइ भेटा
बातहिं बात कर्ष बढ़िआई ❀ युगल अतुलबल पुनि तरुणाई
तेहि अंगद कहँ लात उठाई ❀ गहिपद पटकेउ भूमि भ्रमाई
निशिचरनिकर देखि भट भारी ❀ जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी
एक एकसन मर्म न कहहीं ❀ समुझि तासु बल चुपह्वै रहहीं
भयउ कोलाहल नगर मँझारी ❀ आवा कपि लंका जेइँ जारी
अबधौं काह करिहि करतारा ❀ अति सभीत सब करहिं विचारा
बिनु पूंछे मर्गु देहिं बताई ❀ जेहि विलोक सो जाहि सुखाई

दो० गयो सभा दरबार रिपु, सुमिरि राम पदकंज।
सिंह ठवनि इत उत चितै, धीर वीर बलपुंज॥

तुरत निशाचर एक पठावा ❀ समाचार रावणहिं सुनावा
सुनत वचन बोलेउ दशशीशा ❀ आनहु बोलि कहांकर कीशा
आयसु पाइ दूत बहु धाये ❀ कपिकुंजरहिं बोलि लैआये
अंगद दीख दशानन बैसा ❀ सहित प्राण कज्जलगिरि जैसा

---

१ मेरे २ हृदय ३ निडर ४ रिस ५ दोनों ६ सलास ७ शब्द ८ रास्ता ९ रावण ॥

भुजा विटप शिरशृङ्ग समाना ❀ रोमावली लताविधि नाना
मुख नासिका नयन अरु काना ❀ गिरिकन्दरा खोह अनुमाना
गयउ सभा मन नेकु न मुरा ❀ बालितनय अतिबल बाँकुरा
उठे सभासद कपि कहँ देखी ❀ रावण उर भा क्रोध विशेखी

दो० यथा मत्तगजयूथ महँ, पंचानन[1] चलिजाय।
रामप्रताप सँभारि उर, बैठ सभा शिरनाय॥

कह दशकन्ध कवन तैं बन्दर ❀ मैं रघुवीर दूत दशकन्धर
मम जनकहि तोहिं रही मिताई ❀ तव हितकारण आयउँ भाई
उत्तमकुल पुलस्त्यकर नाती ❀ शिव विरंचि[2] पूज्यो बहुभाँती
वर पायउ कीन्हेउ सब काजा ❀ जीतेहु लोकपाल सुरराजा
नृप अभिमान मोहवश किम्बा ❀ हरिआनेउ सीता जगदम्बा
अब शुभ कहा करहु तुम मोरा ❀ सब अपराध क्षमहिं प्रभु तोरा
दशनै[3] गहहु तृण कंठकुठारी ❀ पुरजन संग सहित निजनारी
सादर जनकसुता[4] करि आगे ❀ यहिविधि चलहु सकल भय त्यागे

दो० प्रणतपाल रघुवंशमणि, त्राहि त्राहि अब मोहिं।
सुनतहिंआरतवचनप्रभु, अभय[5] करहिंगे तोहिं॥

रे कपि पोच[6] बोलु संभारी ❀ मूढ़ न जाने मोहिं सुरारी
कहु निजनाम जनककर भाई ❀ केहि नाते मानिये मिताई
अंगद नाम बालि कर बेटा ❀ तासों कबहुँ भई तोहिं भेटा
अंगद वचन सुनत सकुचाना ❀ रहा बालि वानर मैं जाना
अंगद तुहीं बालिकर बालक ❀ उपजेउ वंश अनल[7] कुलघालक
गर्भ न गयउ वृथा तुम जाये ❀ निज मुख तापस दूत कहाये
अब कहु कुशल बालि कहँ अहई ❀ बिहँसि वचन अंगद तब कहई
दिन दश गये बालि पहँ जाई ❀ पूँछेहु कुशल सखा उरलाई
राम विरोध[8] कुशल जस होई ❀ सो सब तुमहिं सुनाइहि सोई

१ सिंह २ ब्रह्मा ३ दाँत ४ सीताजी ५ निडर ६ नीच ७ अग्नि ८ बैर॥

सुनु शठ भेद होइ मन ताके ❀ श्रीरघुवीर हृदय नहिं जाके

दो॰ हम कुलघालक[1] सत्य तुम, कुलपालक दशशीश।
अन्धउ बधिर[2] न कहहिं अस, श्रवण नयन तव बीश॥

शिव विरंचि सुर मुनि समुदाई ❀ चाहत जासु चरण सेवकाई
तासु दूत है हम कुल बोरा ❀ ऐसी मति उर बिहरु न तोरा
सुनि कठोर वाणी कपि केरी ❀ कहत दशानन नयन तरेरी
खल तव वचन कठिन मैं सहऊँ ❀ नीति धर्म सब जानत अहऊँ
कह कपि धर्मशीलता तोरी ❀ हमहुँ सुनी कृत परतिय चोरी
देखेउ नयन दूत रखवारी ❀ बूड़ि न मरेहु धर्म व्रतधारी
नाककान बिनु भगिनि निहारी ❀ चमा कीन्ह तुम धर्म विचारी
धर्मशीलता तव जग[3] जागी ❀ पावा दरश हमहुँ बड़भागी

दो॰ जनि जल्पसि जड़ जन्तु कपि, शठ विलोकु मम बाहु।
लोकपाल बल विपुल शशि, ग्रसन हेतु जिमि राहु॥
पुनि नभसर[4] मम करनिकर, कर कमलन पर वास।
शोभित भयो मराल इव, शम्भु सहित कैलास॥

तुम्हरे कटकमाहिं सुनु अङ्गद ❀ मोसन भिरहि कवन योधा बद
तव प्रभु नारिविरह बलहीना ❀ अनुज[5] तासु दुख दुखित मलीना
तुम सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ ❀ बन्धु हमार भीरु अति सोऊ
जाम्बवन्त मन्त्री अतिबूढ़ा ❀ सो किमि होइ समर[6] आरूढ़ा
शिल्पकर्म जानत नल नीला ❀ है कपि एक महाबलशीला
आवा प्रथम नगर जेहिं जारा ❀ सुनि हँसि बोलेउ बालिकुमारा
सत्यवचन कह निशिचरनाहा ❀ साँचहु कीश कीन्ह पुरदाहा
रावण नगर अल्प कपि दहई ❀ को अस झूँठ कहै को सुनई
जो अतिसुभट सराहेहु रावन ❀ सो सुग्रीवकेर लघु धावन
चलै बहुत सो वीर न होई ❀ पठवा खबरि लेन हम सोई

१ नाशक २ बहिरा ३ संसार ४ तालाब ५ छोटा भाई ६ लड़ाई ७ बंदर॥

दो० अब जाना पुर दहेउ कपि, बिनु प्रभु आयसु पाइ।
गयउ न फिरि निज नाथ पहँ, तेहि भय रहेउ लुकाइ॥
सत्य कहसि दशकण्ठ तैं, मोहिं न सुनि कछु कोह[1]।
कोउ न हमारे कटक[2] अस, तुमसन लरत जो सोह॥
प्रीति विरोध समान सन, करिय नीति अस आहि।
जो मृगपति वध मेढुकहि, भलो कहै को ताहि॥
यद्यपि लघुता राम कहँ, तोहिं बधे बड़ दोष।
तदपि कठिन दशकण्ठ सुनु, क्षत्रि जाति कर रोष॥
हँसि बोलेउ दशमौलि तब, कपिकर बड़ गुण एक।
जो प्रतिपालै तासु हित, करै उपाय अनेक॥

धन्य कीश जो निज प्रभु काजा ❀ जहँ तहँ नाचहिं परिहरि लाजा
नाचि कूदि करि लोग रिझाई ❀ पतिहित करत कर्म निपुणाई[3]
अङ्गद स्वामिभक्त तव जाती ❀ प्रभुगुण कस न कहसि यहि भाँती
मैं गुणगाहक परम सुजाना ❀ तव कटु[4] वचन करौं नहिं काना
कह कपि तव[5] गुणगाहकताई ❀ सत्य पवनसुत मोहिं सुनाई
वन विध्वंसि सुत बधि पुर जारा ❀ तदपि न तेइ कृत कछु अपकारा
सोइ विचारि तव प्रकृति सुहाई ❀ दशकन्धर मैं कीन्ह ढिठाई
देखेउँ आइ जो कछु कपि भाषा ❀ तुम्हरे लाज न रोष न माषा

दो० वक्रउक्ति धनु वचन शर, हृदय दह्यो रिपु कीश।
प्रतिउत्तर सँगसी मनहुँ, काढ़त भट दशशीश॥

जो असमति पितु खायहु कीशा ❀ कहि असवचन हँसा दशशीशा
पितहि खाइ खातेउँ अब तोहीं ❀ अबहीं समुझि परा कछु मोहीं
बालि विमलयशभाजन[6] जानी ❀ हतौं न तोहिं अधम अभिमानी
सुनु रावण रावण जग केते ❀ मैं निज[7] श्रवण[8] सुने सुनु तेते

१ रिस २ फ़ौज ३ चतुरता ४ कडुवे ५ तेरी ६ बर्तन ७ अपने ८ कान॥

बलि जीतन यक गयउ पताला ❀ राखा बाँधि शिशुन हयशाला
खेलहिं बालक मारहिं जाई ❀ दया लागि बलि दीन्ह छुड़ाई
एक बहोरि सहसभुज देखा ❀ धाइधरा जनु जन्तु विशेखा
कौतुक लागि भवन लै आवा ❀ सो पुलस्त्य मुनि जाइ छुड़ावा

दो० एक कहत मोहिं सकुच अति, रहा बालि की काँख।
तिनमहँ रावण कवन तैं, सत्य कहसि तजि माख॥

सुनु शठ सोइ रावण बलशीला ❀ हरगिरि जानु जासु भुजलीला
जानु उमापति जासु शुराई ❀ पूजे जेहि शिरसुमन[1] चढ़ाई
शिरसरोज निजकरन उतारी ❀ पूजे अमित बार त्रिपुरारी
भुजविक्रम जानहिं दिकपाला ❀ शठ अजहूँ जिनके उरशाला
जानहिं दिग्गज उर कठिनाई ❀ जब जब भिरेउँ जाइ बरिआई
जिनके दशन करालन फूटे ❀ उर लागत मूलक इव टूटे
जासु चलत डोलत इमि धरणी ❀ चढ़त मत्तगज जिमि लघु तरणी
सोइ रावण जग विदित प्रतापी ❀ सुने न श्रवण अलीक[3] प्रलापी

दो० तेहि रावण कहँ लघु कहसि, नरकर करसि बखान।
रे कपि बर्बर खर्ब खल, तब न जान अब जान॥

सुनि अंगद सकोप कह बानी ❀ बोलु सँभारि अधम अभिमानी
सहसबाहु भुज गहन[4] अपारा ❀ दहन अनल[5] सम जासु कुठारा
जासु परशु सागर खरधारा ❀ बूड़े नृप अगणित बहुबारा
तासु गर्व जेहि देखत भागा ❀ सो नर किमि दशकंठ अभागा
राम मनुज[6] कस रे शठ बङ्गा ❀ धन्वी काम नदी पुनि गङ्गा
पशु सुरधेनु कल्पतरु रूखा ❀ अन्न दान पुनि रस कि पियूँखा[7]
वैनतेय[8] खग अहि सहसानन ❀ चिन्तामणि पुनि उपल दशानन
सुनु मतिमन्द लोक वैकुण्ठा ❀ लाभकि रघुपति भक्ति अकुण्ठा

दो० सेन सहित तव मान मथि, वन उजारि पुरजारि।

१ घोड़शाल २ मूड़ की फूल ३ झूंठ ४ वन ५ अग्नि ६ मनुष्य ७ अमृत ८ गरुड़॥

कसरे शठ हनुमान कपि, गयेउ जो तव सुत मारि॥

सुनु रावण परिहरि चतुराई ❁ भजसि न कृपासिन्धु रघुराई
जो खल भयसि रामकर द्रोही ❁ ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही
मूढ़ मृषा[१] जनि मारसि गाला ❁ रामवैर होइहि अस हाला
तव शिरनिकर कपिन के आगे ❁ परिहैं धरणि राम शर लागे
ते तव शिर कन्दुक[२]इव नाना ❁ खेलहिं भालु कीश चौगाना
जबहिं समर कोपहिं रघुनायक ❁ छूटहिं अतिकराल बहु शायक
तबकि चलिहि अस गाल तुम्हारा ❁ अस विचारि भजु रामउदारा
सुनत वचन रावण फिरि जरा ❁ बरत महानल जनु घृत परा

दो॰ कुम्भकर्ण मम बन्धु मम, सुत प्रसिद्ध शक्रारि।
मोर पराक्रम सुनेसि नहिं, जितेउँ चराचर झारि॥

शठ शाखामृग जोरि सहाई ❁ बांधा सिन्धु इहै प्रभुताई
लांघहिं खग अनेक वारीशा[३] ❁ शूर न होहिं सुनहु जड़ कीशा
मम भुजसागर बलजल पूरा ❁ जहँ बूड़े बहु सुर नर शूरा
बीस पयोधि अगाध अपारा ❁ को अस वीर जो पावहि पारा
दिकपालन मैं नीर भरावा ❁ भूप सुयश खल मोहिं सुनावा
जो पै समर सुभट तव नाथा ❁ पुनि पुनि कहसि जासु गुणगाथा
तौ बसीठ[४] पठवा केहि काजा ❁ रिपुसन प्रीति करत नहिं लाजा
हर[६]गिरिमथन निरखि मम बाहू ❁ पुनि शठ कपि निजस्वामि सराहू

दो॰ शूर कवन रावण सरिस, निजकर काटे शीश।
हुतेउँ अनलमहँ बारबहु, हरषित साखि गिरीश॥

जरत विलोकेउँ जबहिं कपाला[७] ❁ विधि के लिखे अंक निजभाला
नर के कर आपन बध बांची ❁ हँसेउँ जानि विधिगिरा[८] असांची
सो मन समुझि त्रास नहिं मोरे ❁ लिखा विरञ्चि जरठ मतिभोरे
आन वीर को शठ मम आगे ❁ पुनि पुनि कहसि लाज परित्यागे

१ महादेव २ झूंठ ३ गेंद ४ समुद्र ५ दूत ६ कैलास ७ मूँड़ ८ ब्रह्मवाणी॥

कह अंगद सलज्ज जगमाहीं ❀ रावण तोहिं समान कोउ नहीं
लाजवन्त तव सहज स्वभाऊ ❀ निज गुण निज मुख कहसि न काऊ
शिर अरु शैल कथा चित रही ❀ ताते बार बीस तैं कही
सो भुजबल राखेउ उर घाली ❀ जितेउ न सहसबाहु बलि बाली
सुनु मतिमन्द देह अब पूरा ❀ काटे शीश न होइय शूरा
बाजीगर कहँ कहिय न वीरा ❀ काटै निजकर सकल शरीरा

दो॰ जरहिं पतंग विमोहवश, भार बहहिं खर[2]वृन्द।
ते नहिं शूर कहावहीं, समुझि देखु मतिमन्द॥

अब जनि बतबढ़ाव खल करई ❀ सुनु मम वचन मान परिहरई
दशमुख मैं न ब[3]सीठी आयउ ❀ अस विचारि रघुवीर पठायउ
बारबार इमि कहेउ कृपाला ❀ नहिं गजारियश बधे शृ[4]गाला
मनमहँ समुझि वचन प्रभुकेरे ❀ सहेउँ कठोर वचन शठ तेरे
नाहिंत करि मुखभंजन तोरा ❀ लै जातेउँ सीतहिं बरजोरा
जानेउँ तव बल अधम सुरारी ❀ सूने हरिआनी परनारी
तैं निशिचरपति गर्व बहूता ❀ मैं रघुपति सेवक कर दूता
जो न राम अपमानहिं डरऊँ ❀ तव देखत अस कौ[6]तुक करऊँ

दो॰ तोहिं पटकि महि सेन हति, चौपट करि तव गाउँ।
मन्दोदरी समेत शठ, जनकसुतहि लैजाउँ॥

जो अस करउँ न तदपि बड़ाई ❀ मुये बधे कछु नहिं मनुसाई
कौलँ कामवश कृपण विमूढ़ा ❀ अतिदरिद्र अयशी अतिबूढ़ा
सदा रोगवश सन्तत क्रोधी ❀ रामविमुख श्रुतिसन्त विरोधी
तनुपोषक निन्दक अँघखानी ❀ जीवत शव सम चौदह प्रानी
अस विचारि खल बधौं न तोहीं ❀ अब जनि रिस उपजावसि मोहीं
सुनि सकोप कह निशिचरनाथा ❀ अधर दशन गहि मींजत हाथा
रे कपि पोच मरण अब चहसी ❀ छोटे वदन बात बड़ि कहसी

१ कोई २ गदहा ३ दूत ४ सिंह ५ सियार ६ खेल ७ वाममार्गी ८ पापी ६ ओठ॥

कटु जल्पसि जड़कपि बल जाके ❀ बुधि बल तेज प्रताप न ताके

दो० अगुण अमान विचारि तेहि, दीन्ह पिता वनवास।
सो दुख अरु युवतीविरह, पुनिनिशिदिनममत्रास॥
जिनके बलको गर्व तोहिं, ऐसे मनुज अनेक।
खाहिं निशाचर दिवसनिशि, मूढ़ समुझुतजिटेक[२]॥

जब तेहिं कीन्ह रामकी निन्दा ❀ क्रोधवन्त तब भयउ कपिन्दा
हरिहर निन्दा सुनहिं जो काना ❀ होय पाप गोघात समाना
कटकटाइ कपिकुञ्जर[३] भारी ❀ दोउ भुजदण्ड तमकि महिमारी
डोलत धरणि सभासद खसे ❀ चले भागि मारुत[४] भय ग्रसे
गिरत दशानन उठा सँभारी ❀ भूतल परे मुकुट षट[५]चारी
कछु निजकर लै शिरन सँवारे ❀ कछु अंगद प्रभु पास पँवारे
आवत मुकुट देखि कपि भागे ❀ दिनहीं लूक परन विधि लागे
की रावण करि कोप चलाये ❀ कुलिश चारि आवत अतिधाये
कह प्रभु हँसि जनि हृदय डराहू ❀ लूक न अशनि केतु नहिं राहू
ये किरीट दशकन्धर केरे ❀ आवत बालितनय के प्रेरे

दो० कूदि गहे कर पवनसुत, आनिधरे प्रभु पास।
कौतुक देखहिं भालु कपि, दिनकर[८] सरिस प्रकास॥

उहाँ कहत दशकन्ध रिसाई ❀ धरिमारहु कपि भागि न जाई
यहिविधि वेगि सुभट सब धावहु ❀ खाहु भालु कपि जहँतहँ पावहु
महि अकीश करि फेरि दुहाई ❀ जियत धरहु तपसी दोउभाई
पुनि सकोप बोलेउ युवराजा ❀ गाल बजावत तोहिं न लाजा
मरु गलकाटि निलज कुलघाती ❀ बल विलोकि बिहरत नहिं छाती
रे तियचोर कुमारगगामी ❀ खलमलराशि मन्दमति कामी
सन्निपात जल्पसि दुर्वादा ❀ भयसि कालवश शठ मनुजादा
याको फल पावहुगे आगे ❀ वानर भालु चपेटन लागे

१ स्त्री २ प्रण ३ हाथी ४ वायु ५ दश ६—७ वज्र ८ सूर्य ६ राक्षस॥

राम मनुज बोलत असबानी ❀ गिरहिं न तव रसनां अभिमानी
गिरिहैं रसन[1] संशय नाहीं ❀ शिरन समेत समरमहि माहीं

सो॰ सो नर क्यों दशकन्ध, बालि बधेउ जिन एकशर।
बीसहु लोचन अन्ध, धिकतवजन्मकुजातिजड़॥
तवशोणितकी[2] प्यास, तृषित रामशायकनिकर[3]।
तजेउँतोहिंतेहित्रास, कटुजल्पसिनिशिचरअधम॥

मैं तव दर्शन तोरिबे लायक ❀ आयसु पै न दीन्ह रघुनायक
अस रिसहोत दशौमुख तोरों ❀ लङ्का गहि समुद्रमहँ बोरों
गूलरफल समान तव लङ्का ❀ बसहु मध्य जनु जन्तु अशङ्का
मैं वानर फल खात न बारा ❀ आयसु दीन्ह न राम उदारा
युक्ति सुनत रावण मुसुकाई ❀ मूढ़ सिखेसि कहँ अधिक झुठाई
बालि कबहुँ अस गाल न मारा ❀ मिलि तपसिन तैं भयसि लबारा
सांचहु मैं लबार दशशीशा ❀ जो न उपारों तव भुज बीशा
रामप्रताप सुमिरि कपि कोपा ❀ सभामांझ प्रणकरि पदरोपा
जो ममचरण सकसि शठ टारी ❀ फिरहिं राम सीता मैं हारी
सुनहु सुभट सब कह दशशीशा ❀ पदगहि धरणि पछारहु कीशा
इन्द्रजीत[5] आदिक बलवाना ❀ हरषि उठे जहँ तहँ भट नाना
झपटहिं करि बल विपुल उपाई ❀ पद न टरै बैठहिं शिर नाई
पुनि उठि झपटहिं सुरआराती[6] ❀ टरै न कीशचरण यहि भाँती
पुरुष कुयोगी जिमि उरगारी[7] ❀ मोह विटप[8] नहिं सकहिं उपारी

दो॰ भूमि न छाँड़ै कपि चरण, देखत रिपुमद भाग।
कोटि विघ्नजिमिसन्तकहँ, तदपिनीतिनहिंत्याग॥

कपिबल देखि सकल हियहारे ❀ उठा आप युवराज प्रचारे
गहत चरण कह बालिकुमारा ❀ मम पद गहे न तोर उबारा
गहसि न रामचरण शठ जाई ❀ सुनत फिरा मन अति सकुचाई

१ जीभ २ रक्त ३ समुद्र ४ दाँत ५ मेघनाद ६ राक्षस ७ गरुड़ ८ वृक्ष ॥

भयो तेजहत श्री सब गई ❀ मध्यदिवस जिमि शंशि[1] सोहई
सिंहासन बैठा शिरनाई ❀ मानहु सम्पति सकल गँवाई
जगदाधार प्राणपति रामा ❀ तासु विमुख किमि लह विश्रामा
उमा रामकर भृकुटि[2] विलासा ❀ होइ विश्व पुनि पावै नासा
तृणते कुलिश[3] कुलिश तृण करहीं ❀ तासु दूत पद कहु किमि टरहीं
पुनि कपि कही नीति विधिनाना ❀ मानत नाहिं काल नियराना
रिपुमदमथि प्रभुसुयश सुनाये ❀ अस कहि चले बालिनृपजाये
अबहीं मुख का करौं बड़ाई ❀ हतिहौं तोहिं खेलाइ खेलाई
प्रथमहिं तासुतनय कपि मारा ❀ सो सुनि रावण भयो दुखारा
यातुधान[4] अङ्गद बल देखी ❀ भे व्याकुल अति हृदय विशेखी

दो॰ रिपुबल धर्षित हर्षि हिय, बालितनय बलपुञ्ज[5]।
सजलसुलोचन पुलकमन, गहे रामपदकञ्ज॥
सांझ जानि दशकण्ठ तब, भवन गयो बिलखाइ।
मन्दोदरि निशिचरपतिहिं, बहुरि कहा समुझाइ॥

कन्त समुझि मन तजहु कुमतिही ❀ सोह न समर तुमहिं रघुपतिही
रामअनुज लघुरेख खँचाई ❀ सो नहिं लांघेउ अस मनुसाई
पिय तेहिते जीतब संग्रामा ❀ जाके दूतन के अस कामा
कौतुक सिन्धु लांघि तव लङ्का ❀ आयउ कपिकेहरी अशङ्का
रखवारे हति विपिन[6] उजारा ❀ देखत तुमहिं अक्ष जिहिं मारा
जारि नगर जेइँ कीन्हेसि छारा ❀ कहाँ रहा बल गर्व्व तुम्हारा
अब पति मृषा[7] गाल जनि मारहु ❀ मोर कहा कछु हृदय विचारहु
पतिरघुपतिहिं मनुज जनि जानहु ❀ अगजगनाथ अतुलबल मानहु
बाण प्रताप जान मारीचा ❀ तासु कहा नहिं मानेहु नीचा
जनकसभा अगणित महिपाला[8] ❀ रहेउ तुमहुँ बल गर्व विशाला
भंजि[9] धनुष जानकी विवाही ❀ तब संग्राम जितेहु नहिं ताही

१ चन्द्रमा २ भौंह ३ वज्र ४ राक्षस ५ समूह ६ वन ७ झूठ ८ राजा ९ तोड़के॥

सुरपतिसुत जाना बलथोरा ❀ राखा जियत आँखि इक फोरा
शूर्पणखा की गति तुम देखी ❀ तदपि हृदय नहिं लाज विशेखी

दो० बधि विराध खरदूषणहिं, लीलहि हतेउ कबन्ध।
बालि एक शर मारेउ, तेहि नर कह दशकन्ध॥

जेहि जलनाथ बँधायो हेला ❀ उतरेउ कपिदल सहित सुबेला
कारुणीक दिनकरकुलकेतू[2] ❀ दूत पठायउ तव हित हेतू
सभा मांझ जेइँ तव बल मथा ❀ करिवरूथ[3] महँ मृगपति[4] यथा
अंगद हनुमत अनुचर जाके ❀ रणबाँकुरे वीर अति बाँके
तेहिकहँ पिय पुनिपुनि नर कहहू ❀ मृषा मान ममता मद गहहू
अहह कन्त कृत रामविरोधा ❀ काल विवश मन उपज न बोधा
काल दण्ड गहि काहु न मारा ❀ हरै धर्म्म बल बुद्धि विचारा
निकट काल जेहि आवत साईं ❀ तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाईं

दो० दुइ सुत मारेउ दहेउ पुर, अजहुँ पीय सिय देहु।
कृपासिंधु रघुवीर भजि, नाथ विमलयश लेहु॥

नारिवचन सुनि विशिख[5]समाना ❀ सभा गयो उठि होत बिहाना
बैठा जाइ सिंहासन फूली ❀ अतिअभिमान त्रास सब भूली
उहां राम अंगदहि बुलावा ❀ आइ चरणपङ्कज शिर नावा
अति आदर समीप बैठारी ❀ बोले बिहँसि कृपालु खरारी
बालितनय अतिकौतुक मोहीं ❀ तात सत्य कहु पूंछों तोहीं
रावण यातुधान[7] कुल टीका ❀ भुजबल अतुल जासु जगलीका
तासु मुकुट तुम चारि चलाये ❀ कहहु तात कवनी विधि पाये
सुनु सर्वज्ञ प्रणत हितकारी ❀ मुकुट न होइँ भूपगुण[8] चारी
साम दाम अरु दण्ड विभेदा ❀ नृप उर बसहिं नाथ कह वेदा
नीति धर्म्म के चरण सुहाये ❀ अस जिय जानि नाथपहँ आये

दो० धर्म्महीन प्रभुपद विमुख, काल विवश दशशीश।

---

१ अवन्त २ सूर्य ३ हाथियों का झुण्ड ४ सिंह ५ बाण ६ राम ७ राक्षस ८ राजगुण।

आये गुण तजि रावणहिं, सुनहु कोशलाधीश ॥
परम चतुरता श्रवण सुनि, बिहँसे राम उदार ।
समाचार पुनि सब कहे, गढ़के बालिकुमार ॥

रिपुके समाचार जब पाये ❀ राम सचिव[1] सब निकट बुलाये
लङ्का बङ्का चारि दुआरा ❀ केहिविधि लांघिय करहु विचारा
तब कपीश[2] ऋच्छेश[3] विभीषण ❀ सुमिरि हृदय दिनकर कुलभूषण
करि विचार तिन मन्त्र दृढ़ावा ❀ चारि अनी[4] कपिकटक बनावा
यथायोग्य सेनापति कीन्हे ❀ यूथप सकल बोलि तब लीन्हे
प्रभुप्रताप सब कहि समुझाये ❀ सुनि कपि सिंहनादकरि धाये
हरषित रामचरण शिर नावैं ❀ गहि गहि शिखर[5] वीर सब धावैं
गर्जहिं तर्जहिं भालु कपीशा ❀ जय रघुवीर कोशलाधीशा
जानत परम दुर्ग अति लङ्का ❀ प्रभुप्रताप कपि चले अशङ्का
घटाटोप करि चहुँदिशि घेरी ❀ मुखहिं निशान बजावहिं भेरी

दो॰ जयति राम भ्राता सहित, जय कपीश सुग्रीव ।
गर्जैं केहरिनाद कपि, भालु महाबल सीव ॥

लङ्का भयउ कोलाहल भारी ❀ सुनेउ दशानन अति अहँकारी
देखहु बँदरन केरि ढिठाई ❀ बिहँसि निशाचरसेन बुलाई
आये कीश काल के प्रेरे ❀ क्षुधावन्त रजनीचर मेरे
सुभट सकल चारिहुदिशि जाहू ❀ धरिधरि भालु कीश सब खाहू
असकहि अट्टहास शठ कीन्हा ❀ गृह बैठे अहार विधि दीन्हा
उमा रावणहिं अस अभिमाना ❀ जिमि टिटीभगण सूत उताना
चले निशाचर आयसु मांगी ❀ गहि कर भिन्दिपाल वर सांगी
तोमर मुद्गर परिघ प्रचण्डा ❀ शूल कृपाण परशु गिरिखण्डा
जिमि अरुणोपल[6]निकर निहारी ❀ धाये खग शठ मांस अहारी
चोंचभङ्ग दुख तिनहिं न सूझा ❀ तिमि धाये मनुजाद अबूझा

१ मन्त्री २ सुग्रीव ३ जाम्बवान् ४ फ़ौज ५ कँगूरा ६ लाल पत्थर ७ बादल ॥

दो० नानायुध शर चाप धरि, यातुधान बलवीर ।
कोट कँगूरन चढ़िगये, कोटि कोटि रणधीर ॥

कोट कँगूरन सोहहिं कैसे ❀ मेरुश्रृंग पर जनु घन वैसे
बाजहिं ढोल निशान जुझाऊ ❀ सुनि सुनि सुभटन के मन चाऊ
बाजहिं भेरि नफीरि अपारा ❀ सुनि कादर[1] उर होहिं दरारा
देखि न जाइ कपिन कर ठट्टा ❀ अतिविशाल तनु भालु सुभट्टा
धावहिं गनहिं न औघटघाटा ❀ पर्वत फोरि करहिं गहि बाटा
कटकटाहिं कोटिन भट[2] गर्जहिं ❀ दशन[3]नओंठ काटि अतितर्जहिं
उत रावण इत राम दुहाई ❀ जयति जयति कहि परी लराई
निशिचर शिखरसमूह ढहावहिं ❀ कूदि धरहिं कपि फेरि चलावहिं

छं० धरि कुधर[4]खण्ड प्रचण्ड मर्कट[5] भालुगढ़परडारहीं ।
झपटैं चरणगहि पटकि महिभजि चलतबहुरि प्रचारहीं ॥
अतितरल तरुण प्रतापतर्जहिं तमकि गढ़पर चढ़िगये ।
कपिभालुचढ़ि मन्दिरन जहँतहँ रामयश गावत भये ॥

दो० एकएक गहि रजनिचर, पुनि कपि चले पराइ ।
ऊपर आपुन तर असुर, गिरहिं धरणिपर आइ ॥

राम प्रताप प्रबल कपियूथा ❀ मर्दहिं निशिचर निकर वरूथा
चढ़े दुर्ग पुनि जहँ तहँ वानर ❀ जय रघुवीरप्रताप दिवाकर
चले तमीचर[6] निकर पराई ❀ प्रबल पवन जिमि घन[7]समुदाई
हाहाकार भयो पुर भारी ❀ रोवहिं आरत बालक नारी
सब मिलि देहिं रावणहिं गारी ❀ राज्य करत जेहि मृत्यु हँकारी
निजदल बिचल सुना जब काना ❀ फिरे सुभट लंकेश रिसाना
जेहि रणविमुख फिरा मैं जाना ❀ तेहि मारिहौं कराल कृपाना[8]
सर्बस खाइ भोगकरि नाना ❀ समरभूमि भा दुर्लभ प्राना

१ कायर २ योधा ३ दाँतन ४ पहाड़ ५ वानर ६ राक्षस ७ बादल ८ तलवार ॥

उग्र वचन सुनि सकल डराने ❀ फिरे क्रोध करि सुभट लजाने
सम्मुख मरण वीर की शोभा ❀ तब तिन तजा प्राणकर लोभा

दो० बहु आयुंध[2] धरि सुभट सब, भिरहिं प्रचारि प्रचारि।
कीन्हे व्याकुल भालु कपि, परिघप्रचण्डन मारि॥

भयआतुर कपि भागन लागे ❀ यद्यपि उमा जीतिहैं आगे
कोउ कह कहँ अङ्गद हनुमन्ता ❀ कहँ नल नील द्विविद बलवन्ता
निजदल बिचल सुना हनुमाना ❀ पश्चिम द्वार रहा बलवाना
मेघनाद तहँ करै लराई ❀ टूट न द्वार परम कठिनाई
पवनतनय मनभा अतिक्रोधा ❀ गर्जेउ प्रलयकाल सम योधा
कूदि लङ्कगढ़ ऊपर आवा ❀ गहि गिरि मेघनाद पर धावा
भंजेउ रथ सारथी निपाता[3] ❀ तासु हृदय महँ मारेउ लाता
दूसर सूत[4] विकल तेहि जाना ❀ स्यन्दन[5] घालि तुरत घर आना

दो० अङ्गद सुनेउ कि पवनसुत, गढ़पर गयउ अकेल।
समरबाँकुरा बालिसुत, तर्कि चढ़ेउ कपि खेल॥

युद्ध विरुद्ध क्रुद्ध दोउ बन्दर ❀ रामप्रताप सुमिरि उरअन्तर
रावण भवन[6] चढ़े दोउ धाई ❀ करहिं कोशलाधीश दुहाई
कलशसहित गहि भवन ढहावा ❀ देखि निशाचर अतिभय पावा
नारिवृन्द कर पीटहिं छाती ❀ अब दोउ कपि आये उतपाती
कपि लीला करि तिनहिं डरावहिं ❀ रामचन्द्रकर सुयश सुनावहिं
पुनि कर गहि कञ्चन[7] के खम्भा ❀ करन लगे उतपात अरम्भा
कूदि परे रिपुकटक[8] मँझारी ❀ लागे मर्दन भुजबल भारी
काहू लात चपेटन केहू ❀ भजेहु न रामहिं सो फल लेहू

दो० एक एक सन मर्दिकर, तोरि चलावहिं मुण्ड।
रावण आगे परहिं ते, जनु फूटहिं दधिकुण्ड॥

महा महा मुखिया जे पावहिं ❀ ते पदगहि प्रभुपास चलावहिं

१ योद्धा २ हथियार ३ मारा ४ सारथी ५ रथ ६ घर ७ सोना ८ फ़ौज॥

कहहिं विभीषण तिनके नामा ❀ देहिं राम तिनकहँ निज धामा
खल मनुंजाद जो आमिषं भोगी ❀ पावहिं गति जो याचत योगी
उमा राम मृदुचित करुणाकर ❀ वैरभाव मोहिं सुमिरत निशिचर
देहिं परमगति अस जिय जानी ❀ को कृपालु अस अहै भवानी
जे अस प्रभु न भजहिं भ्रमत्यागी ❀ नर मतिमन्द ते परम अभागी
अंगद अरु हनुमन्त प्रवेशा ❀ कीन्ह दुर्ग अस कह अवधेशा
लंकामहँ कपि सोहहिं कैसे ❀ मथहिं सिन्धु दुइ मन्दर जैसे

दो० भुजबलरिपुदलदलिमलेउ, देखि दिवसकर अन्त।
कूदे युगल प्रयास बिनु, आये जहँ भगवन्त॥

प्रभुपदकमल शीश तिन नाये ❀ देखि सुभट रघुपति मन भाये
राम कृपा करि युगल निहारे ❀ भये विगतश्रम परम सुखारे
गये जानि अंगद हनुमाना ❀ फिरे भालु मर्कट भट नाना
यातुधानं प्रदोष बल पाई ❀ धाये करि दशशीश दुहाई
निशिचरअनी देखि कपि फिरे ❀ जहँ तहँ कटकटाइ भट भिरे
दोउ दल प्रबल प्रचारि प्रचारी ❀ लरहिं सुभट नहिं मानहिं हारी
वीर तमीचर सब अतिकारे ❀ नाना वरण बलीमुख भारे
सबल युगलदलसम बल योधा ❀ विविध प्रकार भिरहिं करि क्रोधा
प्रावृट शरद पयोद घनेरे ❀ लरत मनहुँ मारुत के प्रेरे
अनिप अकम्पन अरु अतिकाया ❀ विचलत सेन करी तिन माया
भयउ निमिषमहँ अतिअँधियारा ❀ काहु न सूझै अपन परारा
मारु खाहु सब करहिं पुकारा ❀ वृष्टि होय रुधिरोपल छारा

दो० देखिनिविड़तमदशहुदिशि, कपिदल भयउखभार।
एकहि एक न देखहीं, जहँतहँ करहिं पुकार॥

सकल मर्म्म रघुनायक जाना ❀ लिये बोलि अंगद हनुमाना
समाचार सब कहि समुझाये ❀ सुनत कोपि कपिकुञ्जर धाये

१—४ राक्षस २ मांस ३ पार्वती ५ सेना ६ वानर ७ दोनों ८ वर्षा ९ बादल १० घना॥

पुनि कृपालु हँसि चाप चढ़ावा ❀ पावकशायक संपदि चलावा
भयउ प्रकाश कतहुँ तम नाहीं ❀ ज्ञान उदय जिमि संशय जाहीं
भालु बलीमुख पाइ प्रकासा ❀ धाये कोपि विगतश्रम त्रासा
हनूमान अंगद रण गाजे ❀ हाँक सुनत रजनीचर भाजे
भागत भट पटकहिं गहि धरणी ❀ करहिं भालु कपि अद्भुत करणी
गहि पद डारहिं सागर माहीं ❀ मकर उरग झष[2] धरि धरि खाहीं

दो॰ कछु घायल कछु रणपरे, कछु गढ़ चले पराइ।
गर्जे मर्कट भालु भट, रिपुदलबल बिचलाइ॥

निशा[3] जानि कपि चारिउ अनी ❀ आये सब जहँ कोशलधनी
राम कृपाकरि चितवा जबहीं ❀ भये विगतश्रम वानर तबहीं
उहाँ दशानन सचिव हँकारे ❀ सबसन कहेसि सुभट जे मारे
आधा कटक कपिन संहारा ❀ कहहु वेगि का करिय विचारा
मालवन्त यक जरठ[4] निशाचर ❀ रावण मातुपिता मन्त्रीवर
बोला वचन नीति अतिपावन ❀ तात सुनहु कछु मोर सिखावन
जबते तुम सीता हरि आनी ❀ अशकुन होहिं न जात बखानी
वेद पुराण जासु यश गावा ❀ तासुविमुख सुख काहु न पावा

दो॰ हिरण्याक्ष भ्राता सहित, मधुकैटभ बलवान।
जेइ मारेउ सोइ अवतरेउ, कृपासिन्धु भगवान॥
कालरूप खल वन दहन, गुणागार[5] घनबोध।
ज्यहि सेवहिंशिवकमलभव[6],त्यहिसन कौनविरोध॥

परिहरि वैर देहु वैदेही ❀ भजहु कृपानिधि परमसनेही
ताके वचन बाणसम लागे ❀ करिया मुख करि जाहु अभागे
बूढ़ भयसि नतु मरतेउँ तोहीं ❀ अब जनि वदन[7] देखावसि मोहीं
तेइँ अपने मन अस अनुमाना ❀ बध्यो चहत यहि कृपानिधाना
सो उठि गयउ कहत दुर्वादा ❀ तब सकोप बोलेउ घन[8]नादा

१ जलद २ मछली ३ रात्रि ४ बूढ़ा ५ गुणमन्दिर ६ ब्रह्मा ७ मुख ८ मेघनाद॥

कौतुक प्रात देखियहु मोरा ❀ करिहौं बहुत कहत हौं थोरा
सुनि सुतवचन भरोसा आवा ❀ प्रीति समेत निकट[1] बैठावा
करत विचार भयउ भिनुँसारा[2] ❀ लगे भालु कपि चारिहु द्वारा
कोपि कपिन दुर्गम गढ़ घेरा ❀ नगर कोलाहल भयउ घनेरा
विविध अस्त्र गहि निशिचर धाये ❀ गढ़ते पर्व्वत शिखर ढहाये

छं० ढाहे महीधर[3] शिखर कोटिन विविध विधि गोला चले।
घहरात जिमि पवि[4] पात गर्जत प्रलयके जनु बादले॥
मर्कट[5] विकट भट जुटत कटत न लगत तनु जर्जर भये।
गहि शैल ते गढ़पर चलावहिं जहँ सो तहँ निशिचर हये॥

दो० मेघनाद सुनि श्रवण अस, गढ़ पुनि लंका आइ।
उतरि दुर्ग ते वीरवर, सम्मुख चला बजाइ॥

कहँ कोशलाधीश दोउ भ्राता ❀ धन्वी सकल लोक विख्याता
कहँ नल नील द्विविद सुग्रीवा ❀ कहँ हनुमत अङ्गद बलसीवा
कहाँ विभीषण भ्राता द्रोही ❀ आजु शठहि हठि मारउँ ओही
अस कहि कठिन बाण सन्धाने ❀ अतिशय कोपि श्रवणलगि ताने
शरसमूह सो छाँड़न लागा ❀ जनु सपक्ष धावैं बहु नागा[6]
जहँ तहँ परत देखिअहि वानर ❀ सम्मुख होइ न सकत तेहि अवसर
भागे भय व्याकुल कपि ऋच्छा ❀ बिसरी सबहिं युद्धकी इच्छा
सो कपि भालु न रण में देखा ❀ कीन्हेसि जेहि न प्राण अवशेखा

दो० मारेसि दशदश विशिख[7] सब, परे भूमि कपिवीर।
सिंहनाद करि गर्ज तब, मेघनाद रणधीर॥

देखि पवनसुत कटक बिहाला ❀ क्रोधवन्त धावा जनु काला
महा महीधर तमकि उपारा ❀ अति रिस मेघनाद पर डारा
आवत देखि भयउ नभ[8] सोई ❀ रथ सारथी तुरँग सब खोई

१ पास २ सबेरा ३ पहाड़ ४ वज्र ५ वानर ६ साँप ७ बाण ८ आकाश ॥

बारबार प्रचार हनुमाना ❀ निकट न आव मर्म सो जाना
रामसमीप गयो घननादा ❀ नाना भाँति कहत दुर्वादा
अस्त्र शस्त्र बहु आयुध डारे ❀ कौतुकही प्रभु काटि निवारे
देखि प्रभाव मूढ़ खिसियाना ❀ करै लाग माया विधि नाना
जिमि कोउ करै गरुड़सन खेला ❀ डरपावहि गहि स्वल्पसपेला

दो० जासु प्रबल माया विवश, शिव विरंचि बड़ छोट।
ताहि देखावै रजनिचर, निजमाया मतिखोट॥

नभचढ़ि वर्षै विपुल अँगारा ❀ महितें प्रकट होइ जलधारा
नाना भाँति पिशाच पिशाची ❀ मारु काटु ध्वनि बोलहिं नाची
विष्ठा पीब रुधिर[2] कच[3] हाड़ा ❀ वर्षै कबहुँ उपल[4] बहु छाड़ा
वरषि धूरि कीन्हेसि अँधियारा ❀ सूझ न आपन हाथ पसारा
अकुलाने कपि माया देखे ❀ सबकर मरण बना यहि लेखे
कौतुक देखि राम मुसुकाने ❀ भये सभीत सकल कपि जाने
एकहि बाण काटि सब माया ❀ जिमि दिनकरहर तिमिरनिकाया[5]
कृपादृष्टि कपि भालु विलोके ❀ भये प्रबल रण रहहिं न रोके

दो० आयसु मांगी रामपहँ, अंगदादि कपि साथ।
लक्ष्मण चले सकोपि तब, बाण शरासन हाथ॥

खंजनयन[6] उर बाहु विशाला ❀ हिमगिरिनिभ तनु कछु इक लाला
उहां दशानन सुभट पठाये ❀ नाना अस्त्र शस्त्र गहि धाये
भूधर नख विटपायुध धारी ❀ धाये कपि जय राम पुकारी
भिरे सकल जोरी सन जोरी ❀ इतउत जय इच्छा नहिं थोरी
मुठिकन लातन दाँतन काटहिं ❀ कपि गिरिशिला मारि पुनि डाटहिं
मारु मारु धरु धरु धरु मारू ❀ शीश तोरि गहि भुजा उपारू
अस ध्वनि पूरि रही नवखण्डा ❀ धावहिं जहँ तहँ रुण्ड प्रचण्डा
देखहिं कौतुक नभ सुरवृन्दा ❀ कबहुँक विस्मय कबहुँ अनन्दा

१ भेद २ रक्त ३ बाल ४ पत्थर ५ समूह ६ रुधिर ७ प्रभा ८ वृन्द ९ देवता॥

दो० जमेउ गाड़ भरि भरि रुधिर, ऊपर धूरि उड़ाइ।
जिमि अंगारन राशि पर, मृतक क्षार रहि छाइ॥

घायल वीर विराजहिं कैसे ❀ कुसुमित किंशुक के तरु जैसे
लक्ष्मण मेघनाद दोउ योधा ❀ भिरहिं परस्पर करि अतिक्रोधा
एकहि एक सकैं नहिं जीती ❀ निशिचर छलबल करैं अनीती
क्रोधवन्त तब भये अनन्ता[२] ❀ भंजेउ रथ सारथी तुरन्ता
नानाविधि प्रहार करि शेषा ❀ राक्षस भयउ प्राण अवशेषा
रावणसुत निजमन अनुमाना ❀ संकट भये हरिहि मम प्राना
वीरघातिनी छांड़ेसि सांगी ❀ तेजपुञ्ज लक्ष्मणउर लागी
मूर्च्छा भई शक्ति के लागे ❀ तब चलिगयउ निकट[३] भय त्यागे

दो० मेघनाद सम कोटिशत, योधा रहे उठाय।
जगदाधार अनन्त सो, उठहिं न चला खिसाय॥

सुनु गिरिजा[४] क्रोधानल जासू ❀ जारै भुवन चारिदश आसू[५]
सक संग्राम जीति को ताही ❀ सेवहिं सुर नर अग जग जाही
यह कौतुक जानहि जन सोई ❀ जेहि पर कृपा राम की होई
सन्ध्या भई फिरीं दोउ ऐनी ❀ लगे सँभारन निज निज सैनी
व्यापक ब्रह्म अजित भुवनेश्वर ❀ लक्ष्मण कहँ पूछा करुणाकर
तौ लगि लै आये हनुमाना ❀ अनुज देखि प्रभु अतिदुख माना
जामवन्त कह वैद्य सुषेना ❀ लंकारह पठइय कोउ लेना
धरि लघुरूप गये हनुमन्ता ❀ आनेउ भवन समेत तुरन्ता

दो० रघुपति चरण सरोज[६] शिर, नायउ आय सुषेन।
कहा नाम गिरि औषधी, जाहु पवनसुत लेन॥

रामचरण सरसिज[७] उरराखी ❀ चलेउ प्रभञ्जनसुत[८] बलभाखी
उहां दूत यक मर्म जनावा ❀ रावण कालनेमि गृह आवा
दशमुख कहा मर्म तेहि सुना ❀ पुनिपुनि कालनेमि शिर धुना

१ ढाँख २ लक्ष्मण ३ पास ४ पार्वती ५ शीघ्र ६-७ कमल ८ वायुपुत्र॥

देखत तुमहिं नगर जेहि जारा ❁ तासु पन्थ को रोकनहारा
भजि रघुपतिहि करहु हित अपना ❁ तजौ नाथ अब मृषा[1] कल्पना
नीलकंज तनु सुन्दर श्यामा ❁ हृदय राखु लोचन अभिरामा
अहंकार ममता मद[2] त्यागहु ❁ महामोह निशि सोवत जागहु
काल व्याल[3] कर भक्षक जोई ❁ सपनेहु समर कि जीतिय सोई

दो० मुनि दशकन्ध रिसान अति, तेइँ मन कीन्ह विचार।
रामदूतकर मरण वर, यह खल न तु मोहिं मार॥

अस कहि चला रची मग माया ❁ सर मन्दिर वर बाग बनाया
मारुतसुत देखा शुभ आश्रम[4] ❁ मुनिहिं बूझि जल पियों जाय श्रम
राक्षस कपटवेष तहँ सोहा ❁ मायापति दूतहि चह मोहा
जाय पवनसुत नायउ माथा ❁ लागा कहन रामगुणगाथा
होत महारण रावण रामहिं ❁ जीतहिं राम न संशय यामहिं
इहां भये मैं देखौं भाई ❁ ज्ञानदृष्टिबल मोहिं अधिकाई
मांगा जल तेइँ दीन्ह कमण्डल ❁ कपि कह नहिं अघाउँ थोरे जल
सर मज्जन करि आतुर[5] आवहु ❁ दीक्षा[6] देउँ ज्ञान जेहि पावहु

दो० सर पैठत कपिपद गहेउ, मकरी अति अकुलान।
मारी सो धरि दिव्य तनु, चली गगन चढ़ि यान[7]॥

कपि तव दरश भइउँ निष्पापा ❁ मिटा तात मुनिवर कर शापा
मुनि न होइ यह निशिचर घोरा ❁ मानहु सत्य वचन कपि मोरा
अस कहि गई अप्सरा जबहीं ❁ निशिचर निकट गयउ कपि तबहीं
कह कपि मुनि गुरुदक्षिणा लेहू ❁ पाछे हमहिं मन्त्र तुम देहू
शिर लंगूर लपेटि पछारा ❁ निजतनु प्रकटेसि मरती बारा
राम राम कहि छांडेसि प्राना ❁ सुनि मन हरषि चले हनुमाना
देखा शैल[8] न औषधि चीन्हा ❁ सहसा[9] कपि उपारि गिरि लीन्हा
गहि गिरि निशि नभ धावत भयऊ ❁ अवधपुरी ऊपर कपि गयऊ

---

१ झूठ २ घमंड ३ सांप ४ स्थान ५ जल्द ६ उपदेश ७ विमान ८ पहाड़ ९ यकायक॥

दो० देखा भरत विशाल अति, निशिचर मन अनुमानि ।
बिनु फर शायक मारेउ, चांप श्रवण लगि तानि ॥

परेउ मूर्च्छि महि लागत शायक ❀ सुमिरत रामराम रघुनायक
सुनि प्रियवचन भरत उठि धाये ❀ कपिसमीप अतिआतुर आये
विकल विलोकि कीश उरलावा ❀ जागत नहिं बहुभाँति जगावा
मुख मलीन मन भयउ दुखारी ❀ कहत वचन भरिलोचन वारी
जेहि विधि रामविमुख मोहिं कीन्हा ❀ तेहि पुनि यह दारुण दुख दीन्हा
जो मोरे मन वच अरु काया ❀ प्रीति रामपदकमल अमाया
तौ कपि होउ विगत श्रम शूला ❀ जो मोपर रघुपति अनुकूला
वचन सुनत उठि बैठ कपीशा ❀ कहि जय जयति कोशलाधीशा

सो० लीन्ह कपिहि उरलाइ, पुलकगात लोचन सजल ।
प्रीति न हृदय समाइ, सुमिरि रामरघुकुलतिलक ॥

तात कुशल कहु सुखनिधानकी ❀ सहित अनुज अरु मातु जानकी
कपि सब चरित सँक्षेप बखाने ❀ भये दुखित मनमहँ पछिताने
अहह दैव मैं कत जग जायों ❀ प्रभुके एको काज न आयों
जानि कुअवसर मन धरिधीरा ❀ पुनि कपिसन बोले बलवीरा
तात गहरु ह्वैहै तुहिं जाता ❀ काज नशाइहि होत प्रभाता
चढु मम शायक शैल समेता ❀ पठवों तोहिं जहँ कृपानिकेता
सुनि कपिमन उपजा अभिमाना ❀ मोरे भार चलहि किमि बाना
राम प्रताप विचारि बहोरी ❀ वन्दि चरण बोलेउ करजोरी
तव प्रताप उर राखि गोसाईं ❀ जैहौं राम बाण की नाईं
हरषि भरत तब आयसु दीन्हा ❀ पद शिर नाय गमन कपि कीन्हा

दो० भरत बाहुबल शीलगुण, प्रभुपद प्रीति अपार ।
जात सराहत मनहिं मन, पुनिपुनि पवनकुमार ॥

१ धनुष २ जल ३ कठिन ४ नूभाव ५ बाण ६ आज्ञा ७ देहद ॥

उहाँ राम लछमणहिं निहारी ❁ बोले वचन मनुज अनुहारी
अर्द्धरात्रि गइ कपि नहिं आवा ❁ राम उठाइ अनुज उरलावा
सकेहु न दुखित देखि मोहिं काऊ ❁ बन्धु सदा तव मृदुल स्वभाऊ
मम हित लागि तजे पितु माता ❁ सहेउ विपिन[2] हिम आतप[3] वाता
सो अनुराग कहां अब भाई ❁ उठहु विलोकि मोरि विकलाई
जो जनत्यों वन बन्धु बिछोहू ❁ पिता वचन नहिं मनत्यों वोहू
सुत[4] वित नारि भवन परिवारा ❁ होहिं जाहिं जग बारहिंबारा
अस विचारि जिय जागहु ताता ❁ मिलहि न जगत सहोदर भ्राता
यथा पंखबिनु खगपति दीना ❁ मणिबिनुफणि करिवर करहीना
अस मम जिवन बन्धुबिनु तोहीं ❁ जो जड़ दैव जियावै मोहीं
जैहौं अवध कवन मुहँ लाई ❁ नारि हेतु प्रिय बन्धु गँवाई
बरु अपयश सहतेउँ जगमाहीं ❁ नारिहानि विशेष छति नाहीं
अब अवलोकि शोक यह तोरा ❁ सहै कठोर निठुर उर मोरा
निज जननी के एक कुमारा ❁ तात तासु तुम प्राण अधारा
सौंपेउ मोहिं तुमहिं गहि पानी ❁ सब विधि सुखद परमहित जानी
उतर ताहि देहौं का जाई ❁ उठि किन म्वहिं समुझावहु भाई
बहुविधि शोचत शोचविमोचन ❁ स्रवत सलिल[5] राजिवदल[6]लोचन
उमा अखण्ड राम रघुराई ❁ नरगति भाव कृपालु दिखाई

सो० प्रभु विलाप सुनि कान, विकल भये वानरनिकर[7]।
आय गये हनुमान, जिमिकरुणामहँ वीररस॥

हरषि राम भेंटे हनुमाना ❁ अति कृतज्ञ प्रभु परमसुजाना
तुरत वैद्य तब कीन्ह उपाई ❁ उठि बैठे लछमण हर्षाई
हृदय लाइ भेंटे प्रभु भ्राता ❁ हर्षे सकल भालु कपि व्राता[8]
पुनि कपि वैद्य तहां पहुँचावा ❁ जेहिविधि तबहिं ताहि लै आवा
यह वृत्तान्त दशानन सुनेऊ ❁ अतिविषाद पुनिपुनि शिर धुनेऊ

१ छोटा भाई २ वन ३ घाम ४ पुत्र ५ पानी ६ कमल ७ समूह ८ झुण्ड ९ हाल॥

व्याकुल कुम्भकर्णपहँ गयऊ ❁ करि बहु यतन जगावत भयऊ
जागा निशिचर देखिय कैसा ❁ मानहुँ कालदेह धरि वैसा
कुम्भकर्ण पूछा सुनु भाई ❁ काहे तव मुख रहा सुखाई
कथा कही सब तेहिं अभिमानी ❁ जेहि प्रकार सीता हरि आनी
तात कपिन निशिचर संहारे ❁ महामहा योधा सब मारे
दुर्मुख सुररिपु मनुज अहारी ❁ भट अतिकाय अकम्पन भारी
अपर महोदर आदिक वीरा ❁ परे समर महँ सब रणधीरा

दो० दशकन्धर के वचन सुनि, कुम्भकर्ण बिलखान।
जगदम्बा हरि आनिके, शठ चाहसि कल्यान॥

भल न कीन्ह तैं निशिचर नाहा ❁ अब मोहिं आनि जगायहु काहा
अजहुँ तात त्यागहु अभिमाना ❁ भजहु राम होइहि कल्याना
हैं दशशीश मनुज रघुनायक ❁ जिनके हनूमान से पायक
अहह बन्धु तैं कीन्ह खुटाई ❁ प्रथमहिं मोहिं न जगायहु आई
कीन्हेहु प्रभुविरोध तेहि देवक ❁ शिव विरंचि सुर जाके सेवक
नारदमुनि मोहिं ज्ञान जो कहेऊ ❁ कहतेउँ तोहिं समय नहिं रहेऊ
अब भरि अंक भेंटु मोहिं भाई ❁ लोचन सफल करौं मैं जाई
श्यामगात सरसीरुह लोचन ❁ देखौं जाइ ताप त्रयमोचन

दो० रामरूपगुण सुमिरि मन, मगन भयो क्षण एक।
रावण मांगेउ कोटि घट, मद अरु महिष अनेक॥

महिष खाइ करि मदिरापाना ❁ गर्जेउ वज्रघात अनुमाना
कुम्भकर्ण दुर्म्मद रणरङ्गा ❁ चला दुर्ग तजि सेन न सङ्गा
देखि विभीषण आगे आयउ ❁ पुनिपदगहि निज नाम सुनायउ
अनुज उठाय हृदय तेहि लावा ❁ रघुपतिभक्त जानि मनभावा
तात लात मोहिं रावण मारा ❁ कहत परमहित मन्त्र विचारा
तेहि गलानि रघुपति पहँ आयउँ ❁ दीनजानि प्रभु के मन भायउँ

१ गर्वीला २ नाश किये ३ योद्धा ४ लड़ाई ५ सोना ६ मनुष्य ७ ब्रह्मा ८ गोदी॥

सुनु सुत[1] भयउ कालवश रावन ❀ सो किमि मानै परम सिखावन
धन्य धन्य तैं धन्य विभीषण ❀ भयउ तात निशिचर कुलभूषण
बन्धु वंश तैं कीन्ह उजागर ❀ भजहु राम शोभा सुखसागर

दो० मन क्रम वचन कपट तजि, भजहु राम रणधीर।
जाहु न निज पर सूझ मोहिं, भयउँ कालवशवीर॥

बन्धुवचन सुनि फिरा विभीषण ❀ आयउ जहँ त्रैलोक्य विभूषण
नाथ भूधराकार[2] शरीरा ❀ कुम्भकर्ण आवत रणधीरा
इतना कपिन सुना जब काना ❀ किलकिलाइ धाये बलवाना
लिये उपारि विटप[3] अरु भूधर ❀ कटकटाइ डारे तिहिं ऊपर
कोटि कोटि गिरि शिखर[4] प्रहारा ❀ करहिं भालु कपि एकहिबारा
गिरै न मुरै टरै नहिं टारे ❀ जिमि गज आँक[5]फलन के मारे
तब मारुतसुत मुष्टिक हनेऊ ❀ परेउ धरणि व्याकुल शिर धुनेऊ
पुनि उठि तेइँ मारेउ हनुमन्ता ❀ घुर्मित घायल परेउ तुरन्ता
पुनि नलनीलहिं आनि पछारेसि ❀ जहँतहँ पटकि पटकि भट मारेसि
चली बलीमुख[6] सेन पराई ❀ अति भयत्रसित न कोउ समुहाई

दो० अङ्गदादि कपि मूर्च्छित, करि समेत सुग्रीव।
काँखदाबि कपिराज कहँ, चला अमित बलसीव॥

उमा करत रघुपति नरलीला ❀ खेल गरुड़ जिमि अहिगण मीला
भृकुटिभङ्ग जिहि कालहि खाई ❀ ताहि कि ऐसी सोह लराई
जगपावन कीरति विस्तरहीं ❀ गाइ गाइ नर भवनिधि तरहीं
मूर्च्छा गइ मारुतसुत जागा ❀ सुग्रीवहिं तब खोजन लागा
कपिराजहु कर मूर्च्छा बीती ❀ निबुँकि[7] गयो तेहि मृतक प्रतीती
काटेसि दशन नासिका काना ❀ गर्जि अकाश चला तेहि जाना
गहेसि चरण त्यहि धरणि पछारा ❀ अतिलाघव[8] पुनि उठि तेहि मारा
पुनि आयउ प्रभुपहँ बलवाना ❀ जयति जयति जय कृपानिधाना

१ पुत्र २ पर्वत-सरीखा ३ वृक्ष ४ कँगूरा ५ मदार ६ वानर ७ कूदकर ८ शीघ्र ॥

नाक कान काटे तेहि जानी ❀ फिरा क्रोधकरि मानि गलानी
सहज भीम पुनि बिनु श्रुतिनासा ❀ देखत कपिदल उपजी त्रासा

दो० जय जय जय रघुवंशमणि, धाये कपि करि हूह।
एकहिबार जो तासु पर, डारे गिरि तरु जूह॥

कुम्भकर्ण रणरङ्ग विरोधा ❀ सम्मुख चला काल जनु क्रोधा
कोटि कोटि कपि धरि धरि खाई ❀ जनु टीड़ी गिरिगुहा समाई
कोटिन गहि शरीर महँ मर्दा ❀ कोटिन मींजि मिलायसि गर्दा
मुख नासिका श्रवण की बाटा ❀ निकसि पराहिं भालुकपि ठाटा
रण मदमत्त निशाचर दर्प्पा ❀ मानहुँ विश्वग्रसन कहँ अर्प्पा
भिरे सुभट[1] रण फिरहिं न फेरे ❀ सूझ न नयन सुनहिं नहिं टेरे
कुम्भकर्ण कपिफौज[2] बिडारी ❀ सुनि धाये रजनीचर भारी
देखी राम विकल कटकाई ❀ रिपु अनीक[3] नाना विधि आई

दो० सुनहु विभीषण लषणसह, सकल सँभारहु सैन।
मैं देखौं खलबल दलहिं, बोले राजिवँनैन[4]॥

कर शारंग विशिख[5] कटिभाथा ❀ मृगपति[6] ठवनि चले रघुनाथा
प्रथम कीन्ह प्रभु धनु टंकोरा ❀ रिपुदल बधिर भये सुनि शोरा
सत्यसंध छांड़े शरलक्षा ❀ कालसर्प्प जनु चले सपक्षा
अतिबल चले निकर नाराचा ❀ लगे कटन भट विकट पिशाँचा
कटहिं चरण शिर उर भुजदण्डा ❀ बहुतक वीर होहिं शतखण्डा
घूर्मि घूर्मि घायल भट परहीं ❀ उठहिं सँभारि सुभट फिरि लरहीं
लागत बाण जलद[8] जिमि गार्जें ❀ बहुतक देखि कठिन शर भाजें
रुण्ड प्रचण्ड मुण्ड बिनु धावहिं ❀ धरु धरु मारु मारु गोहरावहिं

दो० क्षण महँ प्रभु के शायकन, काटे विकट पिशाच।
पुनि रघुपति के त्रोण[9]महँ, प्रविशे सब नाराच॥

कुम्भकर्ण मन दीख विचारी ❀ क्षणमहँ हते निशाचर भारी

१ काम २ योधा ३ फ़ौज ४ श्रीराम ५ बाण ६ सिंह ७ राक्षस ८ बादल ९ तर्कस॥

भयउ क्रोध दारुण बलवीरा ❀ करि मृगनायक नाद गँभीरा
कोपि महीधर लिये उपारी ❀ डारेसि जहँ मर्कट भट भारी
आवत देखि शैल प्रभु भारे ❀ शरन काटि रजसम करि डारे
पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक ❀ छांड़े अतिकराल बहुशायक
तन महँ प्रविशि निसरि शर जाहीं ❀ जिमि दामिनि घन माहिं समाहीं
शोणित[1] स्रवत[2] सोह तनुकारे ❀ जिमि कज्जलगिरि गेरुपनारे
विकल विलोकि भालु कपि धाये ❀ बिहँसा जबहिं निकट चलि आये

दो० गर्जत धायउ वेग अति, कोटि कोटि गहि कीश।
महि पटकै गजराज इव, शपथ[3] करै दशशीश॥

भागे भालु कपिन के यूथा ❀ वृक[4] विलोकि जिमि मेषवरूथा[5]
चले भालु कपि भाजि भवानी ❀ विकल पुकारत आरत बानी
यह निशिचर दुकाल सम अहई ❀ कपिकुल देश परन अब चहई
कृपा वारिधर राम खरारी ❀ पाहि पाहि प्रणतारतिहारी
करुणावचन[6] सुनत भगवाना ❀ चले सुधारि शरासन बाना
राम सेन निज पाछे घाली ❀ चले सकोप महाबलशाली
खैंचि धनुष शत शर संधाने ❀ छूटे तीर शरीर समाने
लागत शर धावा रिस भरा ❀ कुधर[7] डगमगेउ डोली धरा
लीन्ह एक तेइँ शैल उपाटी ❀ रघुकुलतिलक भुजा सोइ काटी
धावा वामबाहु गिरि धारी ❀ प्रभु सो भुजा काटि महि डारी
काटे भुज सोहै खल कैसा ❀ पच्छहीन मन्दरगिरि जैसा
उग्र विलोकनि प्रभुहिं विलोका ❀ मानहुँ ग्रसन चहत त्रैलोका

दो० करि चिकार मुख घोर अति, धावा वदन पसार।
गगन सिद्ध सुर त्रसित सब, हाहाकार पुकार॥

सभय देव करुणाकर जाने ❀ श्रवण प्रयन्त शरासन ताने
विशिख निकर निशिचर मुख भरेऊ ❀ तदपि महाबल भूमि न परेऊ

---

१ खून २ चुवत ३ क़सम ४ भेड़िया ५ भेड़ीसमूह ६ मीठी बात ७ पहाड़॥

शरन भरा मुख सम्मुख धावा ❀ कालत्रोणं जनु तनु धरि आवा
तब प्रभु कोपि तीव्र शर लीन्हा ❀ धड़ ते भिन्न तासु शिर कीन्हा
सो शिर परा दशानन आगे ❀ विकलभयो जिमि फणिमणित्यागे
धरणि धसै धरधाव प्रचण्डा ❀ तब प्रभु काटि कीन्ह युगखण्डा
परे भूमि जिमि नभ ते भूधर ❀ तरे दाबि कपि भालु निशाचर
तासु तेज प्रभुवदन समाना ❀ सुर मुनि सबहिं अचम्भव माना
नभ दुन्दुभी बजावहिं हर्षहिं ❀ जय जय कहि प्रसून सुर वर्षहिं
करि विनती सुर सकल सिधाये ❀ तब तेहि समय देवऋषि आये
गगनोपंरि हरिगुणगण गाये ❀ रुचिर वीररस प्रभुहिं सुनाये
वेगि हतहु खल मुनि कहि गये ❀ राम समर महँ शोभित भये

छं० संग्रामभूमिविराजरघुपति अतुलबल शोभाधनी।
श्रमबिन्दुमुखराजीवलोचन रुचिरतनु शोणितकनी॥
भुजयुगलफेरत शरशरासन भालुकपि चहुँदिशि बने।
कह दासतुलसी कहि न सक छवि शेष जेहि आनन घने॥

दो० निशिचर अधम मलायतन, ताहि दीन्ह निजधाम।
गिरिजा ते नर मन्दमति, जे न भजहिं श्रीराम॥

दिन के अन्त फिरीं दोउ अनी ❀ समर भई सुभटनसन घनी
रामकृपाबल कपिदल बाढ़ा ❀ जिमि तृणबढ़ै लगे अतिडाढ़ा
छीजहिं निशिचर दिन अरु राती ❀ निजमुख कहे धर्म्म जेहि भाँती
बहु विलाप दशकन्धर करई ❀ पुनि पुनि बन्धुशीशँ उरधरई
रोवहिं नारि हृदय हति पानी ❀ तासु तेज बल विपुल बखानी
मेघनाद तेहि अवसर आवा ❀ कहि बहु कथा पितहिं समुझावा
देखहु कालिह मोरि मनुसाई ❀ अबहिं बहुत का करौं बड़ाई
इष्टदेव सन जो वर पायउँ ❀ सो बल तात न तुमहिं सुनायउँ
यहि विधि जल्पत भयो बिहाना ❀ चारिहु द्वार लगे कपि नाना

१ तरकस २ आकाश में ३ पसीना ४ शोभा ५ मूढ़ ६ घास ७ मस्तक ८ पिता॥

इत कपि भालु कालसम वीरा ❀ उत रजनीचर अति रणधीरा
लरहिं सुभट निज निज जयहेतू ❀ वरणि न जाइ समर खगकेतू

दो० मेघनाद माया विरचि, रथचढ़ि गयो अकास।
गर्जेउ प्रलयपयोद जिमि, भा कपिदल अतित्रास॥

शक्ति शूल शर परिघ कृपाना ❀ अस्त्र शस्त्र कुलिशायुध नाना
डारै परशु परिघ पाषाणा ❀ लागा वृष्टि करै बहु बाणा
रहे दशहुँ दिशि शायक छाई ❀ मानहुँ मघा मेघ झरिलाई
धरु धरु मारु सुनहिं कपिकाना ❀ जो मारै तेहि कोउ न जाना
गहि गिरि तरु अकाश कपि धावैं ❀ देखहिं तेहि न दुखित फिरि आवैं
अवघट घाट बाट गिरिकन्दर ❀ मायावश कीन्हेसि शरपञ्जर
जाहिं कहां भय व्याकुल बन्दर ❀ सुरपति वन्दि परे जिमि मन्दर
मारुतसुत[2] अंगद नल नीला ❀ कीन्हेसि विकल सकल बलशीला
पुनि लक्ष्मण सुग्रीव विभीषन ❀ शरन मारि कीन्हेसि जर्जर तन
पुनि रघुपति सन जूझन लागा ❀ छांड़त शर ह्वै लागहिं नागा[3]
व्याल[4]फांस वश भये खरारी ❀ स्ववश अनन्त एक अविकारी
नटइव चरित करत विधि नाना ❀ सदा स्वतन्त्र राम भगवाना
रणशोभाहित आपु बँधावा ❀ देखि दशा देवन भय पावा

दो० खगपति[5] जाकर नामजपि, नर काटहिं भवफांस।
सो प्रभु आव कि बन्धतर, व्यापक विश्वनिवास॥

चरित राम के सगुण भवानी ❀ तर्कि न जाइँ बुद्धि मन बानी
अस विचारि जे तज्ञ विरागी ❀ रामहिं भजहिं तर्क[6] सब त्यागी
व्याकुल कटक कीन्ह घननादा[7] ❀ पुनिभा प्रकट कहत दुर्वादा
जामवन्त कह खल रहु ठाढ़ा ❀ सुनिकै ताहि क्रोध अति बाढ़ा
बूढ़ जानि शठ छांड़ेउँ तोहीं ❀ लागेसि अधम प्रचारन मोहीं
अस कहि ताहि त्रिशूल चलावा ❀ जामवन्त सो कर गहि धावा

१ कृपा २ हनुमान् ३ सर्प्प ४ नागफांस ५ गरुड़ ६ विचार ७ मेघनाद॥

मारेउ मेघनाद की छाती ❀ परा धरणि घुर्मित सुरघाती
पुनि रिसाइ गहिचरण फिरावा ❀ महि पछारि निज बल दिखरावा
वर प्रसाद सो मरहि न मारा ❀ तब पद गहि लङ्का पर डारा
इहां देवऋषि गरुड़ पठाये ❀ रामसमीप सपदि सो आये

दो० खगपति सब धरि खायऊ, माया नाग वरूथ।
माया विगत भये सब, हर्षे वानर यूथ॥
गहि गिरिपादप उपलनख, धाये कीश रिसाइ।
चले तमीचर विकल तब, गढ़ पर चले पराइ॥

मेघनाद की मूर्च्छा जागी ❀ पितहिं विलोकि लाज अति लागी
तुरत गयो सो गिरिवर कन्दर ❀ करौं अजय मख[2] अस मन महँ धर
सो सुधि पाइ विभीषण कहई ❀ सुनु प्रभु समाचार अस अहई
मेघनाद मख करै अपावन[3] ❀ खल मायावी देव सतावन
सो प्रभु सिद्धि होइ जो पाइहि ❀ नाथ वेगि रिपु जीति न जाइहि
सुनि रघुपति अतिशय[4] सुखमाना ❀ बोलि लिये अङ्गद हनुमाना
लक्ष्मण संग जाहु सब भाई ❀ यज्ञ विध्वंस करहु तुम जाई
तुम लक्ष्मण रण मारेहु ओही[5] ❀ देखि सभय सुर बड़दुख मोहीं
मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई ❀ जेहि छीजै निशिचर सुनु भाई
जामवन्त कपिराज[6] विभीषन ❀ सेन समेत रहेहु तीनों जन
जब रघुवीर दीन्ह अनुशासन[7] ❀ कटि निषंग कसि साजि शरासन
प्रभु प्रताप उरधरि रणधीरा ❀ बोले घनइव गिरा गँभीरा
जो तेहिं आजु बधे बिनु आवों ❀ तौ रघुपति सेवक न कहावों
जो शत शङ्कर करहिं सहाई ❀ तदपि हतौं रघुवीर दुहाई

दो० वन्दि रामपद कमलयुग, चले तुरन्त अनन्त।
अङ्गद नील मयन्द नल, सङ्ग सुभट हनुमन्त॥

जाइ कपिन देखा सो वैसा ❀ आहुति देत रुधिर[8] अरु भैंसा

१ वृक्ष २ यज्ञ ३ अपवित्र ४ बहुत ५ मेघनाद ६ सुग्रीव ७ आज्ञा ८ खून॥

कीन्ह कपिन तब यज्ञ विध्वंसा ❀ जब न उठै तब करहिं प्रशंसा
तदपि न उठै धरहिं कच जाई ❀ लातन हति हति चलहिं पराई
लै त्रिशूल धावा कपि भागे ❀ आये राम अनुज[1] के आगे
आवा परमक्रोध करि मारा ❀ गर्जि घोर रव बारहिंबारा
कोपि मरुतसुत अङ्गद धाये ❀ हति त्रिशूल उर धरणि गिराये
प्रभु पर छाँड़ेसि शूल प्रचण्डा ❀ शरहति कृत अनन्त युग खण्डा
उठि बहोरि मारुत युवराजा ❀ हतेउ कोपि तेहि घाव न बाजा
फिरे वीर रिपु मरै न मारा ❀ पुनि धावा करि घोर चिकारा
आवत देखि क्रोध जनु काला ❀ लक्ष्मण छाँड़े विशिख कराला
आवत देखि वज्रसम बाना ❀ तुरत भयो खल अन्तर्द्धाना
विविध वेष धरि करै लड़ाई ❀ कबहुँक प्रकट कबहुँ दुरिजाई
तब त्रिशूल छाँड़ेसि लक्ष्मण पर ❀ काटि कीन्ह शतखण्ड धरणिधर
शिखर एक लै पुनि सो धावा ❀ रामअनुज सो काटि खसावा

दो० आयुध[2] विविध प्रहार किय, रजसम कीन्ह फणीश।
हर्ष विवश कपि रीछ सब, विबुधसहित सुरईश[3]॥

बहुरि विविध शर छाँड़न लागा ❀ रणकारण छूटहिं जिमि नागा
राम अनुज शर गरुड़ समाना ❀ उमा ग्रसत[4] छूटहिं अभिमाना
देखि अजय रिपु डरपेउ कीशा ❀ परम क्रुद्ध तब भये अहीशा
देखिय जिमि रवितेज समाना ❀ फुकरत मनहुँ व्याल अनुमाना
लक्ष्मण मन अस मन्त्र दृढ़ावा ❀ याहि पापिहिं मैं बहुत खेलावा
सुमिरि कोशलाधीश प्रतापा ❀ शर सन्धान कीन्ह अतिदापा[5]
छांड़ा बाण तासु उर लागा ❀ शीश भुजा काटे नृपनागा
घनसमान सो गर्जि अभागा ❀ मरती बार कपट सब त्यागा

दो० रामअनुज कहि राम कहि, अस कहि छाँड़ेसिप्रान।
धन्य शक्रजित[6] मातु तव, कह अङ्गद हनुमान॥

---

१ श्रीलक्ष्मण २ हथियार ३ इन्द्र ४ लगते ही ५ बड़े घमंड से ६ मेघनाद॥

बिनु प्रयास हनुमान उठाये ❀ लङ्काद्वार राखि तेहि आये
तासु मरण सुनि सुर गन्धर्वा ❀ चढ़ि विमान आये नभ सर्वा
वरषि सुमन दुन्दुभी बजावहिं ❀ श्रीरघुवीर विमल यश गावहिं
जय अनन्त जय जगदाधारा ❀ तुम प्रभु सर्व देव निस्तारा
अस्तुति करि सुरसिद्ध सिधाये ❀ लक्ष्मण कृपासिन्धु पहँ आये

अथ क्षेपक॥

प्रभुहिं विलोकि शीश पद नाये ❀ उठि प्रभु अनुज हरषि उर लाये
कृपादृष्टि करि अनुजहिं हेरा ❀ विगत भयो श्रम[1] जब कर फेरा
बाण बेधि तनु देखियत कैसे ❀ कनक[2]तूण शर पूरित जैसे
मुख प्रसन्नता देखि छके सब ❀ रिपुबध कहा विभीषणहू तब
धारेउ शीश आनि प्रभु आगे ❀ वानर भालु विलोकन लागे
प्रभु कौतुकी निरखि सोइ शीशा ❀ राखन कहेउ कोशलाधीशा

दो॰ प्रभु आयसु सुनि कीशपति[3], राखेउ यतन कराय।
कटकसहित रघुवंशमणि, शोभितअति दोउभाय॥

कृपादृष्टि सब कटक निहारे ❀ भे श्रम रहित राम बैठारे
सुनहु उमा यहि विधि रिपु[4] मारे ❀ सुर गँधर्व मुनि भये सुखारे
अब सो सुनहु भुजा तेहि केरी ❀ खग[5] जिमि गई लंक शरप्रेरी
मेघनाद आंगन में परी ❀ बाणबेधि शोणित सों भरी
देखति तहाँ सुलोचनि कैसी ❀ रति ते रुचिर रूप गुण जैसी
नागसुता दशकन्ध पतोहू ❀ वासवरिपुतिय[6] छविमय जोहू
हेमसिंहासन सोहत बाला ❀ सेवत विद्याधरि त्रयकाला
पूजत विविध विनय कर ताही ❀ मुख प्रमोद[7] को सकत सराही
तहँ पतिभुजा परी यहि भांती ❀ मनहुँ सकल सुख तरु की कांती

दो॰ तब निजदासिन देखि तहँ, शोणस्रवत भुजदण्ड।
भयउ समर आश्चर्यमय, मनहुँ अखण्डनखण्ड॥

---

१ थकावट २ सुवर्ण ३ सुग्रीव ४ दुश्मन ५ गरुड़ ६ मेघनाद की स्त्री ७ आनन्द॥

सुनिकर सकल सखी मुखबैना ❁ तजि सिंहासन उठी सुनैना
प्रेम सुभाय धुकधुकी धरकी ❁ सूचक अशुभ दहिन भुज फरकी
होत महारण रावण रामहिं ❁ वीर धुरीण मोर पिय तामहिं
सकल सुरासुर सकहिं न जूझी ❁ विधि वामता परत नहिं बूझी
इतना कहत गई चलि आपू ❁ पतिभुज लखि करि कोटि कलापू
कंचन मणिगण भूषण सोई ❁ महाविटप सम[1] आन न होई
देखत मनहिं न आवत तेही ❁ जासु प्रभाव सुनत किन लेही
नींद नारि भोजन परिहरई[2] ❁ बारह वर्ष तासु कर मरई

दो० करि विचार मम टेक दै, मैं पतिदेवत[3] नारि।
भुज लिखि मेटहु दुचितई, सुनि कर दीन्ह पसारि॥

लखि रुख तासु सखी उठि धाई ❁ सो तेहि खोजि खरी लै आई
दीन्ह हाथ मणिमय अँगनाई ❁ लिखन लषणकीरति रुचिराई
नींद नारि भोजन शतकोटी ❁ तजत तासु महिमा अतिछोटी
अक्षय अखंड अलख अविनासी ❁ अतुल अमित घटघट के वासी
प्रकटहिं पालहिं पुनि संहरई ❁ त्रिगुणरूप त्रय मूरति धरई
जो कालहु कर काल भयंकर ❁ वर्णत शेष शारदा शंकर
लीलातनु सुर सेवक हेतू ❁ जासु नाम भवसागर सेतू
मुनि मन पुण्डरीक[4] जाके घर ❁ वचन विवेक विचार बुद्धिवर

दो० कोटिकल्प वर्णत निगम[5], अगम जासु गुणगाथ।
तम शरीर जड़ जीव बिनु, किमि[6] वर्णत लिखि हाथ॥

मम शिर गयो दरश रघुराई ❁ तव प्रतीति[7] लगि भुजा पठाई
यहि विधि लिखेउ सकल भुज बाता ❁ परी भूमि तब अति विकलाता
बाँचि सकल भुजलिखित यथारथ ❁ लक्ष्मण राम नाम परमारथ
त्रियास्वभाव तदपि बहुभाँती ❁ बिलखत सकल सखिन कर पाँती
गुणगण साहस शील नाह[8]को ❁ कहि रोवत बल विपुल बाँहको

१ बराबर २ छोड़े ३ पतिव्रता ४ कमल ५ वेद ६ क्योंकर ७ विश्वास ८ स्वामी ॥

जेहि भुजबल सुरनाथ बिगोवा ❀ सो भुज आजु समर महि सोवा
मणिगण भूषण वसन बिसारत ❀ महि लोटत करतल शिर मारत
मगन विपति निजतनु सुधि नाहीं ❀ दारुण विपति कहिन केहि पाहीं
छिनक प्रबोध सखी कोउ करही ❀ बहुरि शोक दावानल[1] जरही
क्षण क्षण उठत परत धरणीतल ❀ पुनिपुनि सब सराह पति को बल

दो० तिन में सखी सयानि इक, कहि समुझावत बैन।
शोक छाँड़ि पतिदेवता[2], सुमति करौ मतिऐन॥

सुनिकर सहसानन तनजाता ❀ सत्य कहत तुम सखी सुमाता
विधि निर्मित दुख मोकहँ लाहू ❀ सुख परिपूर भवन सबकाहू
विजय राम लक्ष्मण कहँ आवा ❀ सुयश सकल मर्कट[3]कुल पावा
कुलकलंक बड़ लहेउ विभीषन ❀ कुलकुठार[4] अस सुनेउ न दीख न
छूटि बन्दि अब सुरगणकेरी ❀ निज निज पुरन दुहाई फेरी
मुनि पुलस्त्यकर भा कुलनाशा ❀ अब रवि शशि सुख करहिं प्रकाशा
तेजवन्त पावक परिहरि दुख ❀ बहब समीर[5] आजु अपने सुख
सलिल गंग निर्मल जल आजू ❀ सुबस बसहिं सुरनायक राजू

दो० यम कुबेर दिकपाल सब, प्रमुदित सुर नर नाग।
खाय अघाय विहाय दुख, पाय सुयज्ञ विभाग॥

इतना कहि मन्दिर महँ आई ❀ देखत मणिगण धन बहुताई
सुरपतिभवन सुपटतर नाहीं ❀ जहँ ऋधिसिधि तनुधरे कमाहीं
देखत विभव न मन अनुरागा ❀ पतिपद प्रेम निपुण मन पागा
देत दान मणि भूषण चीरा ❀ धेनु धरणि गज हाटक हीरा
मणिमय शिबिका[6] रुचिर सुहाई ❀ भुज चढ़ाइ पहिराइ बनाई
आपहु चढ़त भई पुनि आई ❀ सुरदुर्लभ सुखसदन[7] विहाई
वीतराग[8] जिमि तजत विषयगन ❀ तेहिं तस भाँति दियो पतिपद मन
शुक सारिका[9] सुलोचनि ज्याये ❀ कनक पींजरन राखि पढ़ाये

१ अग्नि २ पतिव्रता ३ वानर ४ कुल्हाड़ी ५ हवा ६ पालकी ७ घर ८ वैरागी ९ मैना॥

व्याकुल कह कहँ जात सुनयना ❀ सुनि धीरज परिहरत सुबयना
भये विकल खग मृग यहि भाँती ❀ अपर दशा कैसे कहि जाती
प्रजा लोग गृह तजि सँग लागे ❀ प्रेम उमँगि लोचन जल पागे

दो॰ बाजन लगे निशान[1] बहु, ढोल दुन्दुभी भेरि।
पुरजन परिजन संग सब, चले पालकी घेरि॥

देखि भीर दशकन्धर द्वारे ❀ सजग[2] भये सब वीर प्रचारे
जानेउ कटक रिपुन कर आवा ❀ अस्त्र शस्त्र कर गहिकर धावा
धनुचढ़ाइ कटितरकस बांधे ❀ कोउ असि[3] चर्म शरासन सांधे
तोमर परशु प्रचण्ड गदा गहि ❀ रोषन चोखे शूल शक्ति लहि
मारु मारु धरु धरु कहि धाये ❀ प्रकट दशानन विजय सुनाये
गर्जत तर्जत गिरा गँभीरा ❀ समर भयंकर[4] निशिचर वीरा
निपटहिं निकट पालकी आई ❀ चीन्हि सकल भट रहे लजाई
देखि जुहारि नागपतिकन्या[5] ❀ सतीशिरोमणि त्रिभुवनधन्या

दो॰ द्वारपाल दशकन्ध बहु, खबरि जनाई जाय।
भयउ रजायसु वेगि तब, वचन कहत बिलखाय॥

तुमहिं अछत अस दशा हमारी ❀ सुख तजि भई शोक अधिकारी
नभपथ[6] ह्वै भुज मम गृह परा ❀ बाणबेधि शोणित तनुभरा
देखि भुजा मन में अति डरी ❀ संशँय जानि दीन्ह कर खरी
लिखी राम लक्ष्मण महिमा इन ❀ क्रम क्रम सों सब कथा कही तिन
ठगिसी रही बांचि गुणगाथा ❀ जरहुँ संग जो पाऊं माथा
रण कबन्ध भुज मम गृह आई ❀ शिर तहँ गयउ जहाँ रघुराई
कर सो यतन मिलहि मोहिं शीशा ❀ तुम सामर्थ निशाचरईशा
सुनत कुलिश[8]सम गिरा बधूकी ❀ जीवनआश दशानन मूकी
तदपि धीर धरि करसि प्रबोधा ❀ कहु को मोहिं समान जग योधा

दो॰ राम लषण सुग्रीव नल, नील द्विविद हनुमन्त।

१ नगाड़ा २ होशियार ३ तलवार ४ विकराल ५ सुलोचना ६ आकाश मार्ग ७ शक ८ वज्र॥

माथ विभीषण ऋषभकर, आनब मारि तुरन्त ॥

अबलगि रहेउ भरोसा भारी ❁ कुम्भकर्ण घननाद सुरारी[1]
हमहुँ आजु लगि कीन्ह न जूझा[2] ❁ इन सबकर पुरुषारथ बूझा
मरेउ सो नर वानर के मारे ❁ बात सुनत अतिलाज हमारे
गिनती कौन वीर में तिनकी ❁ अति दुर्दशा कीन्ह कपि जिनकी
तजहु शोक कुलबधू[3] पतोहू ❁ उन समान जनि मानसि मोहू
पुत्रि विलम्ब करौ घटिचारी ❁ देखहु मोरि भयङ्कर मारी
आनि शीश तव शत्रुन केरा ❁ बिनु प्रयास[4] नहिं लावों बेरा
भोगत जन्तु पराक्रम भोगा ❁ नतुकिन निशिचर वनचर योगा

दो० मेरु उखारनहार जे, धरा धरत कर बीच ।
ते भट खाये मशकशिशु[5], काल कुटिलता नीच ॥

क्रोधावेश प्रगल्भहिं बोली ❁ हृदय शोक तनु अचल[6] न डोली
समाधान नहिं मानत सोई ❁ सुनि प्रलाप परितोष न होई
नर वानर पुरुषारथ देखत ❁ बड़ो प्रभाव छोट करि लेखत
कूदि सिंधु कपि लङ्का जारी ❁ लघुकर मानत ताहि सुरारी
कुम्भकरण अतिकाय महोदर ❁ मम पति गिरेउ समेत सहोदर
ते रिपु चहत दशानन जीती ❁ देखहु महामोह कर रीती
उतर देउँ तौ पातक होई ❁ कह विवादकर सर्वस खोई
फिरहि राज्य कछु मोहिं न काजू ❁ बिनु पिय सकल नरक कर साजू

दो० तुरतहि उठी सुलोचना, गइ मयतँनया[7] पास ।
पदगहि रोवत सकल कह, प्रकट शोक इतिहास ॥

आदिहि ते सब कथा बखानी ❁ सुनि सुनि रोवत रावणरानी
कह निजपति भुजलिखित बहोरी ❁ राम लषण महिमा नहिं थोरी
कह्यो बहुरि दशकन्धर क्रोधा ❁ मुये विडंबन[8] कीन्हेसि बोधा
सुनि निज पुत्रबधू की बानी ❁ बोली दुखित मँदोदरि रानी

१ राक्षस २ लड़ाई ३ पतिव्रता ४ मिहनत ५ मच्छड़ ६ स्थिर ७ मन्दोदरी ८ निन्दा ॥

कहत सो मानहु सत्य सयानी ❀ सुनी जो नारद मुनि की बानी
पाछिलि बात भई सब सांची ❀ अनुभव कीन्ह न एकहु बाँची
देवि न होय मृषा ऋषि भाखा ❀ अपने महामोह मन राखा
अगली कथा समास समेता ❀ सुनु पुत्री ऋषि वरणेउ जेता
वैरभाव दशकन्धर जूझब ❀ प्राणहु गये नीति नहिं बूझब
सिया शोक सङ्कट ते छूटहिं ❀ वानर भालु राजघर लूटहिं
सुर मणि भूषण वसन विमाना ❀ भोग करहिं वनचरकुल नाना

दो॰ राज्य विभीषण पाइ हैं, अमर कल्प निर्वाह।
भावीवश दुखसुख जगत, उपदेशिय कहु काह॥

मुनिवर वचन मोहिं परतीती ❀ अनुभव दोउ हार अरु जीती
अब पुत्री परिहरि सब शोका ❀ पतिसँग वेगि साधु परलोका
जाहु रामपहँ पतिशिर लागी ❀ तजि सङ्कोच आनुकिन माँगी
आजु न होइ लाजकर भूषण ❀ समयहीन गुण गनिय न दूषण
है पुनि श्वशुर विभीषण तोरा ❀ बालितनय बालकसम मोरा
एक नारि व्रत रघुवर केरा ❀ लषण सुयश तुम सुनेउ घनेरा
जाम्बवन्त मन्त्री सुग्रीवा ❀ द्विविद मयंद महाबलसींवा
जानहु ब्रह्मचर्य हनुमन्ता ❀ शिवस्वरूप भव हर भगवन्ता
सदा नीतिरत राम नरेशा ❀ तहां जात कहु कवन कलेशा

दो॰ विदित तोर पति भुजलिखित, लक्ष्मण राम प्रभाव।
हमहूं ऋषिभाषित कहेउ, अब विलम्ब जनि लाव॥

सुनत सासुमुख की हितबानी ❀ जाहुँ रामपहँ अस जिय जानी
बार बार वर्णत शिर नाई ❀ चली जहाँ लक्ष्मण रघुराई
देखत कटक भालु कपि केरा ❀ सिन्धु सुबेल महीधर घेरा
उमँगेउ मनो महोदधि दूसर ❀ हरित पीत कपि धूमर धूसर
व्योमलाल भाषत अनहेरी ❀ मनहुँ लेत बड़वानल घेरी

१ विचार २ झूठ ३ वानर ४ छोड़ के ५ परमधाम ६ फ़ौज ७—८ समुद्र॥

गिरि तरु धरि भुज सहस भयंकर ❀ जहँ तहँ प्रकट होइ जनु जलधर[1]
लक्ष्मण शेष सुअङ्क शीशधर ❀ कटक[2] जलधि सोवत राघववर
अषवट जहँ तहँ बैठि विभीखन ❀ अस सुकृती कहुँ सुनै न दीख न

दो॰ देखत डरत सुलोचना, धीरज धरत बहोरि।
महाराज रघुवीर कहँ, विनय सुनावहु मोरि॥

वानर सकल उठे अस बोली ❀ अरिपुर[3] ते आवत इक डोली
जानि परत रावण अब बूझा ❀ भइ मति मेघनाद जब जूझा
हठ तजि सीतहिं दीन्ह पठाई ❀ तजहु शोच अब मिटी लराई
जिहि लगि प्रकट कीन्ह पुर आगी ❀ बाँधेउ सेतु हेतु जेहि लागी
सोइ सीता अब बिनु श्रम पाई ❀ जानहु विधि अनुकूल[4] सहाई
विजय[5] राम सुग्रीवहि आवा ❀ सुयश वीर वानरकुल पावा
विरह[6] राम लक्ष्मण कर छूटा ❀ बिनु कलेश लङ्कागढ़ टूटा
युग युग कीरति चलब हमारी ❀ कहँ राक्षस कहँ लघुवनचारी

दो॰ यहिविधि चारु विचारकरि, निश्चय करि मन माहिं।
भयहु काज रघुराज कर, बात दूसरी नाहिं॥

पैठत कटक अतिहि सकुचाई ❀ अनबिनारि जनु परघर आई
आगेहि जाइ देखि रघुवीरा ❀ छवि श्यामलमय गौर शरीरा
मरकत कनक छविहिं जनु निंदत ❀ धन्य सुजन महिमा ते बिंदत
मत्तगयन्द शुण्ड भुजदण्डा ❀ धनुष बाण असि धरे प्रचण्डा
उर विशाल अति उन्नत कन्धर ❀ कम्बुकण्ठ रेखा त्रय सुन्दर
दशन पांति की कांति कहै को ❀ लावत मन पटतरहि लहै को
देखत अधरन की अरुणाई ❀ बिम्बाफल[7] बन्धूक[8] लजाई
शुकतुण्डक नासिका लजाई ❀ थाकेउ कवि पटतरहि न पाई

दो॰ छविमय गुणमय तेजमय, राम उदधि अवगाह।
जहाँ न पावत पार सुर, किमि बरणै कवि थाह॥

१ बादल २ फ़ौज ३ शत्रुपुर अथवा लंका ४ प्रसन्न ५ जीत ६ जुदाई ७ कुँदुरू ८ दुपहरिया॥

भृकुटी ललित कपोल सुहाये ❋ शीशजटाकर मुकुट बनाये
भाल विशाल तिलकयुत सोहै ❋ ध्यानसमय मुनिमानस मोहै
बलकल वसन तूण कटि बाँधे ❋ करशर सुभग[२] शरासन काँधे
वीरासन आसीन कृपाला ❋ नव पल्लव प्रसून कर माला
चरणसरोज[३] वरणि नहिं जाई ❋ जहँ मुनि मधुकर रहे लुभाई
प्रकट भई जिहि थलते गंगा ❋ श्रुतिपुराण कह कथा प्रसंगा
नमत महेश विरञ्चि जाहिको ❋ लोचन गोचर[४] होत काहिको
जन आरतिभंजन जो कोई ❋ भवसागर तारण कै सोई

दो० प्रणतपाल विरदावली, जिन चरणन की बानि।
शोकहरण संशयदलन, करण सुमंगल खानि॥

कर जोरे अंगद हनुमाना ❋ द्विविद मयंद कुमुद बलवाना
जाम्बवन्त कपिपति[५] बलशीला ❋ ऋषभ सुषेण सहित नल नीला
महावीर वानर सब राजत ❋ लषण विभीषणदोउदिशिभ्राजत
मितभाषित[६] प्रभुचरण सुसेवक ❋ चितवत रुख रघुनन्दन देवक
सभामध्य सोहत अघमोचन[७] ❋ कीन्हेउसफलनिरखिनिजलोचन
करत दण्डवत शिर धरि धरणी ❋ तेहिकर चरित विभीषण वरणी
पुत्रबधू दशकन्धर केरी ❋ बड़ि पतिव्रता जानि प्रभु हेरी
मेघनाद की नारि सुशीला ❋ अस गति तव विरोधकर लीला
करत प्रणाम प्रेम नहिं थोरे ❋ करुणावचन कहत कर जोरे

दो० मुयेजानिपतिभुजहिं तब, लिखि समुझाई मोहिं।
महाराज रघुवंशमणि, याचन आई तोहिं॥

छं० परसे चरण-कर प्रेमपूरण प्रणतपाल खरारि के।
जेहि नमत शंकर शेष सुरमुनि धरणिभंजन भारके॥
प्रभुजानि सो विनती सुलोचनि करत कहि विनती घनी।

१ भौंह २ सुन्दर ३ कमल ४ सामने ५ सुग्रीव ६ थोड़ा बोलनेवाले ७ श्रीराम॥

जयशोकहरणकृपालु जयजयजयतिजयरघुकुलमनी
प्रभुब्रह्मरूप स्वभाव शीतल अतुलबल त्रिभुवनधनी।
जयहरण धरणीभार बाहुविशाल खण्डन खलअनी॥
तव दीनबन्धु दयालु अपरम्पार सब गुण आगरे।
करुणानिधान सुजान शील सनेह रूप उजागरे॥
षटअष्ट लोक जो रचत पालत प्रलय सो मायासुरी।
केहि भाँति वरणौं नाथ गुणगण नारि जड़मति बावरी॥
जे चरण ईश महेश शारद श्रुति निरन्तर ध्यावहीं।
हूँ भूरिभाग्य सरोजपद सोइ हर्ष शिरसि लगावहीं॥
छं० गहकरबानी शारँगपानी सबगुणखानी रामबली।
सुरसुरभीरक्षक राक्षसभक्षक भक्तिहिरक्षकमानबली॥
मैं रिपुसुतनारी जानिअघारी अधिकारीनहिंदुखभारी॥
हरिविरहदवारी अतिभयकारी सहबहुबारी दुखकारी॥
तव शरणहि आई जनसुखदाई रघुराई करुणासागर।
पतिमस्तकपाऊँ जरिसँगजाऊँ शिरपाऊँ शोभाआगर॥
पतिममतनुत्यागीअतिबड़भागीअनुरागीजिनमुक्तिलही।
ममताकिमितासूबरणौंआसूजासुअचलजगपंक्तिरही॥
यहिविधिपदपङ्कजसेव्यरमाअजशिरनमिदोउकरजोरिरही।
सुनिपङ्कजलोचनवचनसुलोचनलोचँनतेजलधारवही॥
दो० अस प्रभु दीनबन्धु हरि, कारणरहित दयाल।
तुलसिदास शठ ताहि भजु, छाँड़ि कपट जंजाल॥
तुम अन्तरयामी भगवाना ❀ नहिं तव आदि मध्य अवसाना
करुणा वचन सुनत रघुवीरा ❀ पुलकरोम भयो शिथिल शरीरा

१ बोझ २ निपुण ३ महादेव ४ वेद ५ देवता ६ खानि ७ नेत्र ८ अंत॥

देहुँ जियाय तोर पति आजू ❀ लङ्का करहु कल्प शत राजू
छाँड़ि शोच अब मन हरषाहू ❀ तुरत भवन अपने फिरि जाहू
सुनि अस सत्यसन्धकर बानी ❀ मनमें वनचर अति भय मानी
कहि न सकत कछु प्रभुरुख देखी ❀ कहा करब करतार विशेखी
सब देवन कर शोच न जाई ❀ जो करि कृपा राम यहि ज्याई

दो० राज्य विभीषण लङ्ककर, केहिविधिकरिहहिंजाइ ।
समुझि वैर[1] घननाद[2] जब, गहिहि शरासन[3] धाइ ॥

मुखरुख देखि कपिन भय माना ❀ प्रणतपाल भगवन्त सुजाना
देखि बहुत रघुवर कर छोहू[4] ❀ विनय करत दशकन्धपतोहू
तुम उदार सब देबे लायक ❀ करुणामय देखे रघुनायक
हमहुँ विचारि दीख मनमाहीं ❀ जीवन ते अस मरण[5] सराहीं
भुजबल जीति लोक वश कीन्हे ❀ चौदह भुवन भोग करि लीन्हे
रणतीरथ याचक बड़ चीन्हा ❀ प्राण सुधन लच्मणकर दीन्हा
अब न उचित पति दै उपहारा ❀ तेहि पर अधिकसोदरश तुम्हारा
हमहूँ जाइ मरब सतसाधी ❀ मिलब तुमहिं जस मिलत समाधी

दो० निर्मलगति अवसर भयउ, सुनहु सत्य रघुवीर ।
तुमहिं मिलत नहिं होयभव, यथा सिंधु[6] गतनीर ॥

मनकी जाननहार सुजेवा ❀ भवसागर[7] तारहु यह खेवा
लीन्हेउ राम कपीश[8] बुलाई ❀ मेघनाद शिर दीन्ह मँगाई
पाय कृतारथ मानेउ आपू ❀ पियाविरह सम्भव परितापू
अञ्चल पोंछत मुख की धूरी ❀ कहि मम प्राण सजीवनमूरी
देखि सँदेह कहत सुग्रीवा ❀ भुजमहि लिखत जीवबिनुग्रीवा
हँसै वदन तौ तिय यह साँची ❀ नातरु निशिचर माया काँची
कत असज्ञान मृतक भुज गावा ❀ जो मुनिवर साधन नहिं पावा
प्रभु अस कहेउ हँसब यह शीशा ❀ करत कुतर्क न उचित कपीशा

१ वैर २ मेघनाद ३ धनुष ४ दया ५ मृत्यु ६ समुद्र ७ संसार-समुद्र ८ सुग्रीव ॥

दो० शिर सों कहत सुलोचना, हँसहु वेगि मम नाथ।
नातरु सत्य न मानिहैं, लिखा जो तुम्हरे हाथ॥

क्षणकविलम्बकीन्ह नहिं बोला ❀ मृतकवदन मूँदत नहिं खोला
पुनिपुनिकहत सो नागकुमारी ❀ श्रमित भयउ रणमें करि मारी
लगे लषण शर[1] क्षोभ बढ़ावा ❀ प्रभुसमीप कस मोहिं लजावा
जो मन वचन कर्म यह देही ❀ पतिदेवता न आन सनेही
तौ प्रभु सभा बीच शिर बोलै ❀ रहहि छाय यश सुयश अमोलै
जो जानत तव यह गति साँई ❀ बोलि पठावत पितहि सहाई
सुनि तियवचन हँसेउ तब शीशा ❀ चौंके चकित भालु[2] भटकीशा
हँसेउ ठठाय वदन सब देखा ❀ विस्मय भयउ सकल जिहिं पेखा
कुलिश समान सुना नहिं जाई ❀ रहेउ सो वदन बहुरि अरगाई
सकुचि कपीशहि तोषेउ नारी ❀ बड़ आश्चर्य्य भयो वनचारी
पूँछत कपिपति पद शिर नाई ❀ कारण कवन हँसा शिर साँई
प्रभु[3] कह सुनु सुग्रीव कपीशा ❀ शीश हँसेकर सुनहु अदीशा
मन क्रम वचन पतिहि सेवकाई ❀ तियहि न यहि सम आन उपाई
अस जियजानि करहि पतिसेवा ❀ तेहिपर सानुकूल मुनिदेवा
यह सतवति अहिराजकुमारी ❀ तेहि सतते हँस शीश सुरारी
सुनिप्रभुवचन कपिन सुखमाना ❀ पुनि पुनि चरण गहे हनुमाना
सुनु गिरिजा[5] अस प्रभु प्रभुताई ❀ केवल भक्तहिं देत बड़ाई
जासु दृष्टि जग उपजत नाशा ❀ असकौतुककर[6] केतिक आशा

दो० शीशपाइ प्रभुचरणगहि, बहु विधि विनय सुनाय।
आजकदिनरण[7]परिहरहु, ममहित कोशलराय॥

बहुरि विभीषण पगन परी सो ❀ रघुपतिचरण दिये मन पुनि सो
तुम पितुसम दशकन्धर भाई ❀ यहि कुलकी तोहिं लाज बड़ाई
मुनि पुलस्त्य परिवारक दीपा ❀ पायउ फल रघुवीर समीपा[8]

१ बाण २ ऋक्ष ३ रामचन्द्र ४ प्रसन्न ५ पार्वती ६ तमाशा ७ युद्ध ८ पास॥

महामोह वश अनभल माना ❁ ज्ञान भयो तब गुण पहिंचाना
युग युग करहु अंकण्टक राजू ❁ सहित सुकीरति सुकृत समाजू
सुमिरत तुमहिं सुजन गतिपावा ❁ रघुपति चरित संगकर गावा
सुनत विभीषण मन करुणाभर ❁ प्रकट न कहत समय विरहाकर
काल कर्म्मगति कह समुझाई ❁ चली तुरत गुरुआयसु पाई

दो० बाहर करि कपि कटकते, फिरेउ विभीषण आप।
बिसरेउ दशमुख वैरही, हृदय अधिक सन्ताप॥

शिर चढ़ाइ पालकी चढ़ीसो ❁ रघुपति कृपा प्रभाव बढ़ीसो
हृदय राखि मूरति घनश्यामा ❁ रसना[2] रटत निरन्तर नामा
सरित सिन्धुसंगम जहँ पावन ❁ अस सुधि पाय गयो तहँ रावन
संग मँदोदरि सब रनिवासू ❁ मनो शोकरवि कीन्ह प्रकासू
पाय रजायसु सेवक धाये ❁ चन्दन अगुरु सुगँध बहु लाये
रचि दृढ़ दारुण चिता बनाई ❁ जनु सुरलोक निसेनी लाई
करि प्रणाम सब जन परितोषी ❁ धीरज धरसि तासु मति पोषी
शिर भुज धरि बैठी करि आसन ❁ भइ जनु योगसिद्धिकर भाजन

दो० देखि अनल[3] ज्वाला बढ़ी, लपटगगन[4] लगि ताय।
लखी न काहू जात तेहि, सुरपुर पहुँची जाय॥

इति क्षेपक॥

सुतबध सुना दशानन जबहीं ❁ संभ्रम मूर्छि परा महि[5] तबहीं
दुखित भयउ लोचन भरि आये ❁ जनु निजमणि अहिराज[6] गँवाये
हा सुत सन्तत आज्ञाकारी ❁ करि विलाप दशकन्ध पुकारी
शक्र[7] आदि जीतेउ सब देवा ❁ सुर मुनि बन्दि करायहु सेवा
दूसर रहा न भुजबल दापा ❁ स्वर्ग भूमितल तपेउ प्रतापा[8]
यहि विधि कर विलाप लंकेशा ❁ भयउ तेजहत सुनु उरगेशा
मन्दोदरी रुदन करि भारी ❁ उर ताड़ति बहु भाँति पुकारी

---

१ निडर २ जीभ ३ अग्नि ४ आकाश ५ पृथ्वी ६ शेषनाग ७ इन्द्र ८ यश॥

नगर लोग सब व्याकुल शोचा ❀ सकल कहहिं दशकन्धर पोचा[1]

दो० तब दशकन्ध अनेक विधि, समुझाई सब नारि।
नश्वर[2] रूप प्रपञ्च सब, देखहु हृदय विचारि॥

तिनहिं ज्ञान उपदेशेउ रावन ❀ आपनमन्द कथा अतिपावन
पर उपदेश कुशल बहुतेरे ❀ जे आचरहिं ते नर न घनेरे
तासु क्रिया करि निशिचरनाहा ❀ भयउ शोचवश अति उरदाहा
सचिव[3] आइ सब लगे बुझावन ❀ बादिविषाद करिय जनि रावन
सुत वित नारि त्रिविधसुख कैसे ❀ उपजहिं घटा जाहिं नभ जैसे
तड़ित विदित देखिय घनमाहीं ❀ रहै न थिर तहँ तुरत छिपाहीं
यह जिय जानि सुनहु दशभाला ❀ बचहि न कोउ जग आये काला
अब प्रभु यतन विचारहु सोई ❀ रिपुकर नाश जवन विधि होई

अथ क्षेपक॥

दो० लागेउ करन विचार पुनि, बहुप्रकार दशशीश।
समुझि हृदय अहिरावणहि, आयउ जहाँ गिरीश॥

दण्डचारि तब तहँ निशि बीती ❀ सन्ध्यावन्दन कीन्ह सप्रीती
लागेउ करन ध्यान दशशीशा ❀ करि हरषित सम्पुट भुजबीशा
शंकर[4] सेवक अति अनुरागी ❀ सुनु खगेश[5] तेहिते बड़भागी
मन्त्राकर्षण जपि दशभाला[6] ❀ अहिरावण चित डोल पताला
लगेउ करन सो मन अनुमाना ❀ केहि कारण दशमुख अकुलाना
निशिचरनाह भुवन वश जाके ❀ जीतनकहँ न वीर कोउ ताके
मन क्रम वचन आन नहिं सेवी ❀ धरेउ ध्यान उर कामद देवी
चलेउ बहुँरि[7] आयउ सो तहँवाँ ❀ शिवमण्डप रावण रह जहँवाँ
निशिचरपतिकहितेहि शिरनायउ ❀ कर गहि निज आसन बैठायउ

दो० अहिरावण तब रावणहिं, बूझी कुशल सप्रीति।
[illegible], [illegible][8] [illegible]॥

१ नीच २ नाशवान् ३ मंत्री ४ महादेव ५ गरुड़ ६ रावण ७ फिरि ८ बहिनि॥

बध खर दूषण जिमि सुधि पाई ❀ मृग मारीच कपटकृत गाई
कहेसि बहुरि सीताकर हरणा ❀ लंकदहन हनुमतकर वरणा
सेतु[2]बाँधि जिमि प्रभु चलिआयउ ❀ बालिकुमार विवाद सुनायउ
अनीअकम्पन अरु अतिकाया ❀ परे समरमहि सुनु अहिराया
तात कुशल अब सबै सिरानी ❀ कटक[3]निशाचर सकल नशानी
कुम्भकर्ण घननादहु मारे ❀ राम लषण दुइ मनुज बिचारे
आनेउँ बोलि तोहिं निजपासा ❀ कहहु सुयतन होइ रिपु[4]नासा
सुनत शोच भा मन अहिरावन ❀ बोला वचन सुहावन पावन[5]
सुनु रावण जग नीति पियारी ❀ करे अनीति होय भय भारी
विना विचार रारि तुम ठानी ❀ कीन्ह सेन कुल सर्बस हानी
मनुजप्रताप प्रभाव न जानेउ ❀ सबते बड़ तेहि लघुकरि मानेउ
यदपि न योग्य मोहिं असबाता ❀ तदपि हरहुँ तवलगि दोउभ्राता
लै पताल देविहिं बलि देहों ❀ यशपूरण निशिचरकुल लेहों
लै जैहों तुम जानेउ तबहीं ❀ रवि सम तेज होइ निशि जबहीं

दो॰ कहि असवचन प्रबोधकरि, शीर्ष नाइ बल भाखि।
आयउ रघुपति कटक तब, निजदेविहि उरराखि॥

सूझ न निजकर अतिअँधियारी ❀ मर्कटभट जागहिं तहँ भारी
कहहिं जयति जय जयति कृपाला ❀ अतिहि अगमजहँनहिंगतिकाला
तहँ मारुतसुत[6] रचेउ उपाई ❀ करि लंगूर कोट[7] कठिनाई
सो शोभा यहि भाँति सुनाई ❀ भुजगराज कुण्डली लगाई
देखिय उन्नत शैल[8] समाना ❀ द्वार जहाँ तहँ मुख हनुमाना
देखि हृदय अहिरावण हारा ❀ किमि रविगृह कर तिमिर पसारा
एकौ युक्ति न मन ठहरानी ❀ कपटवेष तेहि कीन्ह भवानी
वेष विभीषण सब अनुहारी ❀ पवनतनय पहँ गा छलकारी

दो॰ सहज प्रतापी पवनसुत, पुनि सुर[9]पतिपतिदास।

१ हरिण २ पुल ३ फ़ौज ४ वैरी ५ पवित्र ६ हनुमान्‌जी ७ क़िला ८ पर्वत ९ इन्द्र ॥

तिनहिं निदरिचल रामपहँ, मूढ़ हृदय नहिं त्रास॥

मर्म न जान प्रभंजनजाता ❀ कीन्होसि गमन विभीषण भाँता
ठाढ़ होउ बोलेउ सुनु भ्राता ❀ चलेउँ जहाँ कृपालु जनत्राता
मैं रघुपतिसन आयसु पाई ❀ सन्ध्याकरन गयउँ सुनु भाई
तेहिते तुरत चलेउँ प्रभु पाहीं ❀ भइ विलम्ब जानि राम रिसाहीं
सत्यवचन कपि निजमनमाना ❀ सुनु खगेश भावी बलवाना
कपटचतुरगति जानि न जाई ❀ परमन हरै हरै धन भाई
आयसु पाइ गयउ सो तहँवाँ ❀ रहे फणीशरु प्रभु दोउ जहँवाँ
कपिपति जाम्बवन्त नलनीला ❀ बालीसुत सुषेण बलशीला

दो० द्विविद मयन्दरु कीशगण, गय गवाक्ष कपिवीर।
सहित विभीषण अपरभट, सोये सब रणधीर॥

तिनहिं मध्य रावण शशिराहू ❀ एक संग सोवत फणिनाहू
दक्षिण दिशि सोवत रघुनाथा ❀ अनुजँ वामदिशि तेहिपर हाथा
प्रभुकर करपर राजेत कैसे ❀ जातरूप पङ्कज फणि जैसे
कपि समूह जनु सागरक्षीरा ❀ तहँ सोये मानहुँ दोउ वीरा
सुभगबाण धनु धरे बनाई ❀ लक्ष्मणसह समीप रघुराई
अहिरावण मन कीन्ह प्रणामा ❀ देखि राम सुन्दर घनश्यामा
ब्रह्मादिक जेहि ध्यान न पावहिं ❀ मुनि महेश पूजा मनलावहिं
करहिं विविध जप योग विरागी ❀ जपहिं निरन्तर निशिदिन जागी
सो प्रभु तेहि देखा भरिलोचँन ❀ कृपासिन्धु सेवक भयमोचन
बहुँरि हृदय तेहिं कीन्ह विचारा ❀ करहुँ काज रावण अनुसारा
कछु निजमायाकृत गुण आई ❀ कवनी भाँति जाहिं दोउ भाई

दो० मोहन ते मोहे सकल, मन्त्रन ते मुख मूँदि।
भयउ अदृश्य उठायकरि, प्रभुहि चलेउ लै कूदि॥

यहि विधि गयउ दुहुँन लै सोई ❀ नभमारग प्रकाश अति होई

---

१ भेद २ आज्ञा ३ लक्ष्मण ४ छोटा भाई ५ सोहता ६ कमल ७ नेत्र ८ फिर ९ आकाश॥

सो प्रकाश जब रावण देखा ❀ किय प्रमाण तेहि वचन विशेखा
मनमहँ हर्ष[1] करहि अतिभारी ❀ अहिरावण लैगा असुरारी
लै निजलोक गयउ पलमाहीं ❀ भयउ शोर तब कपिदलमाहीं
जागे वानर श्रीहत भारी ❀ देखिय जिमि सरिता[2] बिनु बारी
पुनि देखियजिमि निशि[3] बिनु इन्दू[4] ❀ भे वानर जिमि उडु बिनु चन्दू
रवि बिनु दिवस जीव बिनु देहा ❀ जिमि देखिय दीपक बिनु गेहा
एकहि एक लगे तब बूझन ❀ कहाँ गये त्रैलोक्यविभूषन

दो॰ शोधेउसबमिलिकटकतिन, नहिं पाये दोउ वीर।
भे व्याकुल सब भालु कपि, जिमिजलचरगतनीर॥

सकल कहहिं यह विधिकह कीन्हा ❀ रघुपतिविरह प्राण कत लीन्हा
शोकग्रसित धरिसकहिं न धीरा ❀ कहाँ राम लक्ष्मण दोउ वीरा
करुणा करहिं कपीश अपारा ❀ बनी बात विधि कहा बिगारा
कटक निशाचर सकल सँहारी ❀ रहा एक रावण रिपु भारी
सोउ न रहत रामशर लागे ❀ भाइउ हम सब परम अभागे
कबहुँ जो दशशिर अरि रण जीतहिं ❀ उत्तर[5] कवन देब हम सीतहिं
अस कहि विकल मूर्च्छि महिपरे ❀ लागत वज्र शैल जिमि गिरे
दशा विभीषण कही न जाई ❀ विगत वत्स[6] जनु धेनु लवाई

दो॰ सहित पवनसुत ऋक्षपति[7], दुख मनभा बड़ि भाँति।
खगपति सूझ न कतहुँ कछु, तम अपार तिहि राति॥

पवनतनय पुनि कह सबपाहीं ❀ विस्मय एक होत मनमाहीं
कोउ इक आव विभीषण वेखा ❀ प्रभुके निकट जात हम देखा
पूछत वचन कहेसि अतिनीका ❀ कपट न जानिय निशिचरजीका
वचन सुनत बोलेउ लंकेशा[8] ❀ अहिरावण लैगा अवधेशा
पन्नगलोक निवासी सोई ❀ मम तनुवेष अपर नहिं कोई
महाबली जानै सब माया ❀ निश्चय तेहि दशशीश पठाया

---

१ खुशी २ नदी ३ रात्रि ४ चंद्रमा ५ जवाब ६ बछड़ा ७ जाम्बवान् ८ विभीषण ॥

जेहि बल होय तहाँ सो जाई ❀ ताहि जीति आनै दोउ भाई
कहेउ भालुपति सुनु हनुमाना ❀ तव बल तात सकल जग जाना
वेगि सो यतन विचारहु ताता ❀ कृपासिन्धु आनहु दोउ भ्राता

दो० विलखिकहेउ कपिपतिबहुरि, सुनु मारुत सुत तात।
बिनु रघुनायक जन्म धिक, पलयुगसरिसबिहात॥

यथा तृषित बिनु वारि दुखारी ❀ रवि बिनु जलज मीन[2] बिनु वारी
भट अशस्त्र रण अनी[3] अनाथा ❀ वह्नि अनिन्धन गात अमाथा
दीप अवर्त्ति[4] सकल क्षणभंगी ❀ तिमि हम सब देखिय बजरंगी
जिमि सीतासुधि भेषज[5] आनी ❀ तेहि प्रकार आनहु सुखदानी
सुनत वचन मारुतसुत बोला ❀ राखहु चित थिर कटक अडोला
भुवन चारिदश तीनिहुँ लोका ❀ आनहुँ प्रभुबल प्रभु तजु शोका[6]
अब तुम सजग रहेउ सब भाई ❀ लरेहु कालसन जो चढ़िआई
अस कहि सकृत चलेउ हनुमाना ❀ गर्जत प्रलय पँयोद[7] समाना
चलत बाट इक तरु[8]तर गयऊ ❀ गीधिनि गीध कहत अस भयऊ

दो० नारि गर्भिणी गृध्रकी, बोली पतिसन बैन।
आनहु आमिष मनुज पिय, खाउँ होइ जिय चैन॥

तासु वचन सुनि खग अस कह्यऊ ❀ अहिरावण रामहिं लै गयऊ
देइहि बलि देविहि सो जाई ❀ सो आमिष बड़भागन पाई
कवनेउ यतन देब मैं आनी ❀ असकहि विहँग वाम सनमानी
जबहिं पवनसुत अस सुधि पाई ❀ चलेउ तहाँ सुमिरत रघुराई
अभय प्लवंग[9] पतालहि गयऊ ❀ अहिरावणपुर प्रविशत भयऊ
द्वारपाल मकरध्वज कीशा ❀ कपिसन डाटि कहत बहुरीशा
निदरि जात मोहिं तोहिं डर नाहीं ❀ दीपहि जिमि न पतङ्ग डराहीं
जानसु मोहिं न मरुतसुत बालक ❀ स्वामिभक्त भञ्जन मुख कालक

सो० सुनत वचन हनुमान, बोलतभे विस्मय विवश।

१ जल्द २ मछली ३ फ़ौज ४ बिनबत्ती ५ औषध ६ दुःख ७ बादल ८ वृक्ष ९ बंदर॥

अरे मूढ़ अज्ञान, मोरे सुत सपनेहुँ नहीं ॥

कहत वचन शठ संयुत खोरी ❀ कामविवश कब भइ मति मोरी
मम सुत[1] बनसि मूढ़ केहि काजा ❀ इतना कहत तोहिं नहिं लाजा
केहिप्रकार तैं मम सुत भयऊ ❀ निज उत्पाति मोसन किन कहऊ
सुनत कहहि मकरध्वज वचना ❀ किहेउ दाह रावणपुर रचना
जब आयउ चलि उदधि समीपा[2] ❀ बहेउ स्वेद तब तन कपिदीपा
सो प्रस्वेद[3] सागरमहँ गयऊ ❀ पियउ मीन[4] तेहिते मैं भयऊ
यहि प्रकार मैं तवसुत ताता ❀ गोवहुँ नहिं निजपिता न माता
अहिरावण सेवा मैं करहूं ❀ राखहुँ द्वार न कबहूं टरहूं

दो० सत्यवचन हनुमान कहि, पुनि पूंछी सब बात ।
लावा लच्छमण रामकहँ, काह करत सो तात ॥

कहहु तात तेहि अस्थल नाऊं ❀ जान चहौं मैं तव प्रभु ठाऊं
यह वृतान्त अस जानहु ताता ❀ यह मैं श्रवण सुनेउँ कछु बाता
सीतापति[5] अरु फणपति[6] साथा ❀ सो लै आयउ निशिचरनाथा
करत होम तेहि कारण आजू ❀ देविहिं बलि देई नृपराजू
जो कछु निज श्रवणन सुनि पायउँ ❀ तात सकल सो तुमहिं सुनायउँ
निज प्रभुकाज लागि दुख सहेऊं ❀ तुम्सन सत्य वचन मैं कहेऊं
जान कहहु तुम जान न देऊं ❀ प्रभु आज्ञा तजि अयश न लेऊं
सुनि अस पेलि चलेउ हनुमाना ❀ भयउ क्रोध मकरध्वज जाना

दो० तेहि मुष्टिक कपिकहँ हनेउ, पुनि मारेउ कपि ताहिं ।
हनहिं परस्पर एक इक, बलसमान घटि नाहिं ॥

एकहिं एक सकहिं नहिं पारी ❀ पिता पुत्र दोऊ भट[7] भारी
सुतहिं लूम[8] सन बांधि भवानी ❀ चलेउ वातसुत विलँब न आनी
धरि लघुरूप होमगृह देखा ❀ जीव सजीव परे नहिं लेखा
तहँ देवीकर मण्डप रहई ❀ शोणितघट बहु को कहि सकई

१ पुत्र २ पास ३ पसीना ४ मछली ५ रामचन्द्र ६ लक्ष्मण ७ योद्धा ८ पूँछ ॥

विविध भाँति मेवा पकवाना ❀ धरे आनि देवी अस्थाना
मालिनि तहँ प्रसून[1] लै आई ❀ सुमनमध्य प्रविशेउ कपिराई
सुमनहुँते करि अति हलुकाई ❀ लेत पानि[2] जेहि जानि न जाई
जब देविहिं सो पुष्प चढ़ायउ ❀ विकटरूप तब कपि दिखरायउ

दो० छुवत चरण देवी तुरत, धरणी[3] रही समाइ।
मुख बगारि ठाढ़े भये, कपि छवि लखत[4] डराइ॥

देवी प्रकट समुझि खलभारी ❀ करहिं विचार हृदय अतिभारी
कहहिं कि देवि प्रकट भइ आजू ❀ बड़भागी भा निशिचरराजू
करि प्रणाम पुनि पूजा करहीं ❀ जो चढ़ाउ सो कपिमुख परहीं
जो जहँ रही वस्तु समुदाई ❀ बची न कछू सकल कपि खाई
कपि खिलार कौतुक विस्तारा ❀ भाचह निशिचर कुल संहारा
अहिरावण उर भा सुख कैसे ❀ चढ़ै कांधपर बलिपशु जैसे
जबहीं होम सिद्ध तेहिं जाना ❀ लक्ष्मण राम तुरत तहँ आना
ठाढ़ कीन्ह प्रभु कहँ तहँ आनी ❀ निशिचर बहु आयुध धरि पानी
कोऊ गदा कोऊ धनु बाणा ❀ शक्तिशूल धरि कोउ कृपाणा[5]

दो० तोमर मुद्गर परशु असि, पाश परिघ अरु बेत।
शूल भुशुण्डी पटि परशु, देखत बिसरत चेत॥

मायाबल ते सकल विचक्षण ❀ अति विकारमय मूढ़ कुलक्षण
यहि विधि सकल वीर तहँ रहहीं ❀ अहिरावण आज्ञा[6] दृढ़ गहहीं
आयसु पाइ खड्ग तिन काढ़े ❀ मारन कहँ प्रभुपर भे ठाढ़े
कोउ कह राजनीति अनुसरहू ❀ भरि त्रयदण्ड विलँब अब करहू
पुनि अस वचन मूढ़मति कहहीं ❀ सुमिरहु जो तुम्हरे हितु अहहीं
नाहिंत काल आइ नियराना ❀ निशा[7]स्वप्नसम दोउ जन प्राना
बोलहिं मूढ़ असम्भव बानी ❀ सकुच लगै सो कहत भवानी

दो० फणिपति[8] चितवत रामतन, राम चितव अहिराज।

१ फूल २ हाथ ३ पृथ्वी ४ देखत ५ तलवार ६ हुक्म ७ रात्रि ८ लक्ष्मण॥

प्रभुकर कौतुक कहिय किमि, सुनहु दशा खगराज॥

बिहँसि कीन्ह प्रभु हृदय विचारा ❋ जपै सकल जग नाम हमारा
जाना देवि रूप हनुमाना ❋ बिहँसि कहा तब राम सुजाना
काल कौर तुम सुमिरहु रत्तक ❋ भई तुम्हारि देवि तुव भत्तक
सुनत गिरा[1] तिन मारन ठयऊ ❋ घन[2]समान कपि गर्जत भयऊ
निशिचर सकल त्रसित[3] भे भारी ❋ कहहिं वचन भय हृदय विचारी
अहिरावण भल कीन्ह न काजू ❋ आने कपटवेष सुरराजू
तेहिते देवि क्रुद्ध कृत आजू ❋ अब भा सबकर मरण समाजू
संभ्रमवश तब निशिचरभारी ❋ बहुरि कीश गर्जेउ अतिभारी

दो० प्रकट रूप करि पवनसुत, अट्टहास गम्भीर।
अतिभयत्रासितरजनिचर, सुनहु उमा[6] मतिधीर॥

डगमगान निशिचर अभिमानी ❋ मारुत वेग यथा नदि पानी
तेहिछण कपि लीन्हे दोउ भाई ❋ धुनत तूल निशिचर समुदाई
छीनि कृपाण लीन्ह हनुमाना ❋ काटत भुज शिर कृषीसमाना
खण्डखण्ड तब खलदल कीन्हा ❋ गहिपद डारि अनलमहँ दीन्हा
करि लंगूर कोट[8] कपिराई ❋ तेहिमहँ घिरि कोउ भागि न जाई
यहि विधि सब निशिचर संहारे ❋ अहिरावण लखि वचन उचारे
रे कपि ढीठ त्रास नहिं तोहीं ❋ अहिरावण तैं जानु न मोहीं
जम्बुमालिकहँ जिमि तैं मारा ❋ अरु रावणसुत हतेउ बिचारा

दो० कालनेमि सम नाहिं मैं, करु कपि वचन प्रमान।
असकहिखड्गप्रहारकिय, कपितनु वज्रसमान॥

लै असि ताहि पवनसुत मारा ❋ काटि शीश पावकमहँ डारा
आहुतिपूर्ण दीन्ह तब कीशा ❋ लै पुनि चलेउ लषण जगदीशा
मकरध्वज प्रणाम तब कीन्हा ❋ बन्धन छोरि राज्य तेहिं दीन्हा
इहाँ राज्य भोगहु तुम ताता ❋ भजहु सदा मम प्रभु दोउ भ्राता

१ वाणी २ मेघ ३ दुःखी ४ हनुमान् ५ निशाचर ६ पार्वती ७ रुई ८ क़िला॥

अस कहि कपि निज दल सो आवा ❀ हर्षेउ कटक सबन सुख पावा
मृतकशरीर प्राण जिमि आवहिं ❀ मणिगण पाइ फणी सुख पावहिं
बिछुरि अलभ्य मिले जनु आई ❀ तिमि हर्षे सब लखि दोउ भाई
मिलेउ कपीश चरणधरि माथा ❀ पुनि पद गहे निशाचरनाथा[1]

दो० जामवन्त अङ्गद सहित, मिले भालु[2] अरु कीश[3]।
सनमाने कहि वचन प्रिय, लषण कोशलाधीश[4]॥

बहुरि सबहिं भेंटे हनुमाना ❀ कहहिं तात तुम राखे प्राना
देवन सुमनवृष्टि तब कीन्ही ❀ प्रमुदित हृदय दुन्दुभी दीन्ही
अनुज सहित हरषित रघुवीरा ❀ कहेउ वचन सुनु तनयसमीरा
तव समान नहिं कोउ हितकारी ❀ सुर मुनि सिद्ध मनुज तनुधारी
यश तुम्हार त्रिभुवनमहँ भयऊ ❀ सुनि प्रभुवचनचरण कपि नयऊ
नाथ कीन्ह सब मैं केहि लेखे ❀ तरणी[5] चलत अगम जल देखे
तैसे सब प्रताप तव नाथा ❀ सुनि अस मिले कपिहि रघुनाथा
कटक[6] सहित हर्षे दोउ भाई ❀ तेहि अवसर सुख किमिकहिजाई

छं० कहिजाइसुखकिमितेहि समयकरसुनहुगिरिजा[7]चितधरे।
रघुवीर रुख अवलोकि हरषित आरती सुरगण करे॥
अतिप्रेमसों मारुतसुवन यश गाइ विबुधन[8] अस कहा।
नर नारि यह कीरति सुनत गावत लहत मङ्गल महा॥
दो० करि बहुविधि हरि आरती, वाणी सत्य सुनाय।
रामचरण अनुरागेउ, अमरसुमनझरिलाय॥

देव निडर प्रभुगुणगण गावहिं ❀ आरतहर कहँ बिनय सुनावहिं
विबुधविनय रघुपति सुनि काना ❀ कह प्रभु सत्यसन्ध भगवाना
चतुरानन वर दीन्ह अपेला ❀ तेहि कारण यह बाढ़्यो खेला
नाहित लषण एक पलमाहीं ❀ राखत यातुधानकुल नाहीं
अजहुँ होय रण कौतुक भारी ❀ निरखहु तुम सब शोच बिसारी

१ विभीषण २ ऋक्ष ३ बन्दर ४ रामचन्द्र ५ नौका ६ फ़ौज ७ पार्वती ८ देवतन॥

अब जो रहेउ निशाचरशेखा ❀ भटमहँ जासु भुजाकर रेखा
ते रणमहि महँ हतहुँ प्रचारी ❀ बिनुश्रम सबसों कहत खरारी
शम्भुकृपा अब संशय नाहीं ❀ सुनि सुर अतिहर्षे मन माहीं

दो० सत्य वचन सुनि रामके, आनन्दित सुरयूह।
चले कहत जयजयति प्रभु, वर्षे सुमन समूह॥

यह चरित्र शुचि सुभग सुहावा ❀ खगपति रामकृपा मैं गावा
अब हिय हरषि सुनहु द्विजराई ❀ मानस कहहुँ सुमिरि रघुराई
याज्ञवल्क्यपद वन्दि सप्रीती ❀ भरद्वाज बोले शुचि नीती
यह चरित्र अतिरुचिर सुहावा ❀ सुनि मम नाथ परम सुख पावा
अहिरावण बधान्त भगवाना ❀ चरित किये सो करहु बखाना
सुनि मुनिविनय ऋषय पुलकाई ❀ बोले हृदय सुमिरि गिरिराई
प्रश्न तुम्हार तात अतिपावन[2] ❀ सहज सुभग[3] सज्जन मनभावन
मानस हरिचरित्र सुठि नीका ❀ सुनत करत जो कोउ मन फीका

दो० सोई जगवञ्चक सुनहु, जेहि मानस न सुहाय।
भवसागर महँ भ्रमत सो, अमित कल्प चलिजाय॥

मानस सुनत न मनहिं अघाहीं ❀ तासम धन्य अवर कोउ नाहीं
धन्य धन्य तुमसन को आना ❀ ललित चरित अति सुनहु सुजाना[4]
रामलषण दलसहित विराजे ❀ जयति राम कहि कपिगण गाजे
राम सेन सुषमा अधिकाई ❀ निगमागम[5] जानेउ बुधभाई
उहाँ दशानन सब सुधि पाई ❀ दूतसँदेश दीन्ह सब जाई
अहिरावणकर बध सुनि काना ❀ भयउ तेजहत अतिदुख माना
वचन वज्रसम लागेउ ताही ❀ संभ्रम मूर्च्छि परेउ महिमाही[6]
कटे पङ्ख जिमि विहँग[7] बिहाला ❀ रंगचीरगत निशि[8] हिम काला
मुख सुखान लोचन जल बहई ❀ वचन न आव शीश धुनि रहई

दो० मयतनया तब आइ पुनि, बहु प्रकार समुझाइ।

१ रामचन्द्र २ पवित्र ३ सुन्दर ४ चतुर ५ वेद शास्त्र ६ पृथ्वी ७ पक्षी ८ रात्रि॥

मान न मूरुख कालवश, परमक्रोध कहँ पाइ ॥
नारिवचन सुनि तेहि रिस बाढ़ी ❁ उठि बैठेउ धरि धीरज गाढ़ी
तेहि अवसर मंत्री इक आवा ❁ करि आदर दशमुख बैठावा
सिन्धुरनाद नाम बलवाना ❁ वृद्ध ज्ञानमय परम सुजाना
सदा विभीषणकर सँग ठयऊ ❁ कबहूं दशमुख सभा न गयऊ
आवा सो भल अवसर पाई ❁ कहेसि नीति रावणहिं बुझाई
ज्ञानकथा दशमुख न सुहानी ❁ तब बहिराइ बात कह आनी
करिवरनाद हृदय अस गुनेऊ ❁ प्रभु दुहुँताग हृदयपट बुनेऊ
अब यहि कहौं सो सहज उपाई ❁ जेहि यहि मूल समूल नशाई
दो० यह विचारि बोलेउ सचिव, सुनहु दनुज कुलराउ ।
धीर धरहु संशय विगत, कहहुँ सो करिय उपाउ ॥
अक्षादिकन सुतन बल दूना ❁ कस सुरारि मन मानहु ऊना
सचिव वचन सुनि दशमुख कहई ❁ अब हमरे कुल को भट[1] अहई
अपने मनमहँ करहु विचारा ❁ है नारान्तक तनय तुम्हारा
मूल अभुक्त माहिं भा जोई ❁ दियो बहाय मरा नहिं सोई
शम्भु[4]प्रसाद ताहि कछु भयऊ ❁ पुर बिह्वाबल नृपता दयऊ
कोटि बहत्तर एक प्रभाऊ ❁ राजा प्रजा भेद नहिं काऊ
दूत पठाइ बुलावहु ताही ❁ जीतिहि सो रिपु रणके माही
दनुजअधीश चतुरचर[5] पठवो ❁ धरहु धीर चित चिन्ता घटवो
दो० तासु मन्त्र सुनि दशवदन, हृदय प्रमोद[6] अमान ।
धूम्रकेतु कहँ बोलि ढिग, समुझायउ सनमान ॥
धूम्रकेतु तुम परम सयाना ❁ लै मम पाती करहु पयाना
बसत जहाँ नारान्तक राजा ❁ तहाँ न तातें अवरकर काजा
अवसर पाइ हेतु समुझाई ❁ सपदि ताहि लै आनहु भाई
आयसु[8] पाइ चार तहँ गवना ❁ यह सुनि बिहँसि कह्यो अहिदवना

१ समय २ रावण ३ योद्धा ४ महादेव ५ दूत ६ आनन्द ७ शीघ्र ८ आज्ञा ॥

काकनाथ यह गाथ सुहाई ❀ मोसन तात कहहु समुझाई
नारान्तक उतपत्ति यथाविधि ❀ पुर त्रिह्वाबल गा कवनी सिधि
सुमिरि काकपति उर अवधेशा ❀ मन प्रसन्नकर कह काकेशा
अतिसुन्दर शुचि यह संवादू ❀ चित थिरकरि सुनिये उरगादू

दो॰ नख[1] चौगुण वसु[2] ऊन[3] तहँ, सप्त अकाश[4] मिलाइ।
इतने निशिचर एक दिन, भे रावणपुर आइ॥

पुर महँ उपजे खल इकसाथा ❀ तब मुनि हर्षा निशिचरनाथा
निजगुरु बोलि चरण शिरनाई ❀ बूझा मुदित सो कलश धराई
भृगुनन्दन तब तेहिसन कहेऊ ❀ आजु बाल सब मूलन भयऊ
सत्य कहत दशमुख तुम पाहीं ❀ भये आजु जे तवपुर माहीं
वे सुत सब निजनिज पितुघाती ❀ मुख देखत सुनु सुरआराती
घर राखे धनसहित विनाशा ❀ होइ अवशि नहिं उबरन आशा
शुक्र वचन सुनि डरे निशाचर ❀ कह करियें अतिवाद परस्पर
निश्चय कीन्ह प्रसव शिशु आजू ❀ सौंपिय सिन्धुहिं अवर न काजू

दो॰ सपदि[5] करहु सब काज यह, लावहु बाल बटोरि।
राखे होई हानि अति, कह दशवदन बहोरि॥

सेवक दशमुख आयसु पाई ❀ धाये तुरत चरण शिरनाई
रावण आयसु नगर पुकारी ❀ सुनहु सकल पुर नर अरु नारी
आजु अभुक्तमूल भये बालक ❀ डारहु सागर सब कुलघालक
बोरे सबन बाल इकठाई ❀ भावीवश मधुमाखी नाई
पाय अधार वृत्त वट बोरा ❀ पीवन लगे चीर चहुँ ओरा
पीवत चीर अब्द[6] भर साती ❀ पुष्ट भये खल निशिचर जाती
पुनि सब एक सङ्ग तहँ जाई ❀ सुरसँरि[7] सङ्गम भा जेहि ठाँई
तहँ शिवमन्दिर परम सुहावा ❀ सबन विलोकि[8] मुदित शिर नावा

छं॰ शिरनाइमुदित विलोकि शिवमन्दिरसुहावनपावनं।

१ बीस २ आठ ३ कम ४ शून्य ५ शीघ्र ६ वर्ष ७ गंगाजी ८ देखि॥

कछु दिन रहे तहँ सकल पुनि उठि चले सुनु अहिदावनं ॥
रावणपुरी ते दिशाप्रांची कोस शत रस चलि गये ।
बैठे जलधिमहँ पाइ थलवर शम्भु चरणन चितदये ॥
दो० जानत नहिं उत्पत्ति निज, मनमहँ करत विचार ।
गे तेहि ढिग जाकर विदित, रविते छठवीं बार ॥
हरिअरिगुरु निजशिष्यन चीन्हा ❁ करत प्रणाम आशिषा दीन्हा
कहि निजनाम सबन समुझावा ❁ कुलगुरु जाना विनय सुनावा
निज उतपति बूझी शिरनाई ❁ भृगुनन्दन सो सकल[2] सुनाई
सुनि आपन वृत्तान्त लजाने ❁ लखि रुख भृगुनायक सनमाने
करि परितोष मन्त्र गुरु दीन्हा ❁ शिक्षा पाइ गमन तिन कीन्हा
ज्ञान लहेउ सब संशय त्यागी ❁ भे विरञ्चि[3]पद सब अनुरागी
निराहार बैठे इक आसन ❁ वर्षसहस तप किय उरगासन[4]
श्वासधार कृत वर्ष हजारा ❁ रहे ऊर्ध्वमुख विना अहारा
दो० एक पाद पुहुमी[5] दये, अपर अङ्ग अनयास ।
सबल पुष्टतनु मन हरष, सपनेहु भूख न प्यास ॥
तप अतिउग्र विचारि विधाता ❁ तिन ढिग गमने मुख मुसुकाता
हंसारूढ़ कमण्डलु हाथे ❁ श्वेत मुकुट शुचि चारिउ माथे
आनन चारि नयन वसु नीके ❁ चारिउ भाल[6] भस्म शुभ टीके
उपमामय प्रभु सब जग अयना ❁ भाष्यो दयासदन वर बयना
मांगहु वर जो सब मनभावा ❁ सुनेउ सबन विधिपद शिरनावा
नाथ चहत हम यह वरदाना ❁ हमहिं न कोउ जीतै मैदाना
एवमस्तु विधि कहेउ विचारी ❁ आनपाणि नहिं मृत्यु तुम्हारी
हरिसुत है तुम्हार गुरुभाई ❁ तेहिसन किहेउ न कबहुँ लराई
दो० जो तेहिसन करिहौ समर, मरिहौ वचन प्रमान ।
एकहि कहँ वरदान यह, दै कह कृपानिधान ॥

---

१ पूर्व २ सब ३ ब्रह्मा ४ गरुड़ ५ धरती ६ मस्तक ७ हाथ ८ दधिबल ॥

दीन्ह नरान्तक कहँ वरदाना ❀ रहे अपरं जे धरि उरध्याना
तिनसन वरम्रूहि[२] विधि कहेऊ ❀ सुनत प्रमोद सबन उर लहेऊ
सुनि विधिगिरा[१] सबन कह स्वामी ❀ देहु एक वर अन्तरयामी
देवासुर संग्रामहिं माहा ❀ जीतहिं हम यह वर सुरनाहा
असकहि रहे दनुज शिरनाई ❀ तिनसन कहेउ विरञ्चि बुझाई
तुम अजीत सबसन सबभाँती ❀ वानर भालु त्यागि दुइ जाती
यहि विधि सबकहँ दै वरदाना ❀ ब्रह्मलोक गे ब्रह्म सुजाना
विधिते लहि वर तिन सुख बाढ़ा ❀ लागे करन बहुरि तप गाढ़ा

दो० गिरा गिरीश समेत सब, जपहिं निरन्तर[३] नाम।
जोरि युगलकर एक पद, निशिदिन आठौ याम॥

बिनु प्रयास ठाढ़े सब भाई ❀ क्षुधा तृषा निद्रा बिसराई
गुण सहस्र सम्बत सब ऐसे ❀ गये बीति प्रथमहिं तप जैसे
सबन शीश पुनि अवनी दीन्हा ❀ उभयं[४] चरण ऊरध कहँ कीन्हा
जोरे कर निरोधकर श्वासा ❀ जपहिं मन्त्र शङ्कर वर आसा
मुनिगण तिनकर साधन देखी ❀ मनमहँ मानत सकुच विशेखी
हरिइच्छा बल हृदय विचारी ❀ निरखि चले मुनि जपत पुरारी
अयुत अब्द[५] बीते खगनायक[६] ❀ भे प्रसन्न शिव जनसुखदायक
चढ़े बरद[७] हिमसुता समेता ❀ आये तिनतट कृपानिकेता

दो० बोले तिनहिं प्रशंसि शिव, मांगहु वर मनभाव।
नारान्तक करि दण्डवत, बोला सुनु सुरराव॥

मैं तप किह्यउँ दरश तव लागी ❀ नाथ दीनजन चित अनुरागी
अब मांगत आवत मोहिं लाजा ❀ ठाढ़ रहा कहि निशिचरराजा
मांगु सकुच तजि अस हर[८] कह्यऊ ❀ नारान्तक तब मांगत भयऊ
मोहिं विभव अस देहु गोसांई ❀ भूप प्रजा नहिं परहुँ लखाई
पुर अनयास बसहि मम नाथा ❀ यह कहि रहा जोरि युग हाथा

१ और २ वाणी ३ सदा ४ दोनों ५ वर्ष ६ गरुड़ ७ बैल ८ शिव॥

एवमस्तु कहि हर सुरईशा ❋ गमने भवन सहित वागीशा
शिवप्रसाद नारान्तक पावा ❋ अन्तरिक्ष[1] पुर सपदि बसावा
पुर बिह्वाबल की रुचिराई ❋ कहत कछू इक तुमसन गाई

दो० ऋतु रवि दूने कोटि सो, भवन बसे इकठोर।
जातरूप[2]मय नग जटित, अतिशोभित चहुँ ओर॥

योजन ढाई शत चकलाई ❋ चौंसठ कोस उतङ्ग[3] सुहाई
दुर्गम दुर्ग जलधि चहुँ फेरा ❋ विस्मय विश्वकर्म्म मन घेरा
चारि दुवार कुलिश पट रूरे ❋ गढ़ भीतर चौहट निधिपूरे
वणिक पद्मधन तुच्छ बखाना ❋ वन उपवन[4] सरिता सर नाना
बसत प्रजा पुर सघन अपारा ❋ नारान्तक गढ़ मध्य सँभारा
षोड़श[5] कोस कोट चहुँ ओरा ❋ मणि माणिक लागे नहिं थोरा
हय गय रथ खच्चर समुदाई ❋ कहि न जाइ खग मृग विपुलाई
कोटि बहत्तर एकै साथा ❋ विद्या पढ़न लगे खगनाथा

दो० हरि प्रेरित तेहि कालमहँ, दधिबल पहुँचा आइ।
पुर बिह्वाबल निरखि सो, कछु दिन रहा लुभाइ॥

भावीवश निशिचर सँग कीशा ❋ वर्ष एक पढ़ सुनहु मुनीशा
गुरु इक बार कहेउ रिसियाई ❋ हतिहसि तैं आपन गुरुभाई
बिनुअघ सुनि दधिबल गुरुशापा ❋ बिदा माँगि गमना करि दापा
मारग मिले देव[6]ऋषि तेही ❋ गहे सुकण्ठमुवन पग नेही
लखि अशीश दै बूझा तेही ❋ दधिबल कवन काज गे जेही
तब नारान्तकपुर प्रभुताई ❋ दधिबल नारद मुनिहिं सुनाई
सुनी निशाचर संपति भारी ❋ रहे ब्रह्मसुत हृदय विचारी
क्षणक देवऋषि कीन्ह गुमाना ❋ बारबार सुमिरे भगवाना

दो० दधिबल ते नारद कहेउ, सुनहु तात चितलाइ।
तनुधारि जेहि हरिभक्ति नहिं, जन्म बादि जगजाइ॥

१ आकाश २ सोना ३ उँचाई ४ फुलवारी ५ सोलह ६—७ नारद ॥

यह विचारि भजु रामहिं ताता ❀ उपजेउ सुनत ज्ञान मुनि बाता
ऋषिपद परसि आशिषा पाई ❀ कपिपतिसुत गमने हर्षाई
सपदि कीश तब पहुँचा जहँवाँ ❀ पयनिधिमध्य रुचिर गिरि तहँवाँ
धवलागिरि तेहि नाम सुहावा ❀ सुभग देखि कपिवर मनभावा
गौरि गिरीश सुमिरि गणराई ❀ कीन्ह निवास बैठ हरषाई
नारद ताहि देइ उपदेशा ❀ गये विरञ्चि के धाम खगेशा
उत दशमुखसुत विद्या पाई ❀ जहां तहां की विविध लराई
बिन्दुनाम इक निशिचर आहा ❀ सो खल रहा वितलथल माहा

सो० अति रणधीर जुझार, चढ़े शक्रपर बल विपुल।
कीन्हेउ समर अपार, अब्द एक श्रुतिसन्तकह ॥

सप्तकोटि निशिचर सँग ताके ❀ असित मेरुसम खल भट बाँके
सुनासीर कोपेउ इकबारा ❀ सबकहँ समरमध्य संहारा
भाजि बिन्दु केवल गृह गयऊ ❀ तासु नारि निशिचर सुख दयऊ
सब निशि भोग करा खल पापी ❀ उपजे बहु बालक परितापी
सप्तकोटि सुत नाना नामा ❀ ऊदर वक्र सकल बलधामा
कोटि बहत्तर तनयाँ जाके ❀ लाजहिं मृगलोचन लखि ताके
तिनमहँ बिन्दुमती इक सुन्दरि ❀ नभचारिनि रतिरूप निरन्तरि
निरखि बिन्दु निजमन अनुमाना ❀ नहिं नारान्तक सम कोउ आना

दो० यह विचारि चित बिन्दु तब, नारान्तकहि बुलाइ।
बिन्दुमती आदिक सुता, सुन्दर साज सजाइ ॥

सकल सुता इकसङ्ग विवाही ❀ यथायोग्य जेहिकहँ जस चाही
नारान्तक सब सेन समेता ❀ करि विवाह फिरि गयउ निकेता
पुर बिह्वाबल कीन्ह बसेरा ❀ प्रजासहित सुख करत घनेरा
जो तिय चहिय विबुधगृह भाई ❀ सो भावीवश निशिचर पाई
नारि पतिव्रत जेहि घरमाहीं ❀ तेहि प्रताप नित अमर डराहीं

१ दधिबल २ गणेशजी ३ गरुड़ ४ इन्द्र ५ लड़की ६ कामदेवकी स्त्री ७ घर ८ देवता ॥

बिन्दुमती विद्या सम ताता ❀ बुधजनसभा चरित विख्याता
नारान्तक उतपति मैं गावा ❀ सुनु खगेश पुनि चरित सुहावा
पुनि पुनि हरि हरपद शिरनाई ❀ गुरुसन सुनेउँ सो कहेउँ बुझाई

दो० चारन दशमुख को तुरत, मग चलि पहुँचो जाय।
ग्रामान्तर योजन युगल, ठाढ़ भयउ हरषाय॥

तेहि मारुत दिशि कानन भारी ❀ पर्ण[2] लेत देखेउ तहँ बारी
सकुचि समीप जाइ भा ठाढ़ा ❀ बूझेसि ताहि धीर धरि गाढ़ा
कवन रीति यहि पुर महँ भाई ❀ तरु पर चढ़त भूपसुत आई
चार वचन सुनि सो मुसुकाना ❀ कवन नगर तुम बसत अयाना[3]
नारान्तक नृप कै यह बारी ❀ तेहिकर सेवक मैं लघुचारी
धूम्रकेतु तेहि उतर न दीन्हा ❀ कछु डरि पुनि निजमारग लीन्हा
लिये कनकघट सुषमा पूरी ❀ वाँरि[4] लेन आई तिय रूरी
देखि भयउ तेहि संशय भारी ❀ बूझा सत्य कहहु सुकुमारी

दो० तुम्हरे पुर कह चेरि नहिं, रानी कहहु स्वभाव।
आइउ तुम जल भरनकहँ, बोलउ त्यागि डराव॥

दूत वचन सुनि निशिचर चेरी[5] ❀ बोली हँसिकर एकहि बेरी
नारान्तक दासिन की दासी ❀ हम ताकी दासी विश्वासी
सदा भरैं यहि सागर पानी ❀ इहँ आवहिं केहि कारण रानी
कहिहौ और काहु अस बाता ❀ पैहहु मार मुष्टिका[6] लाता
असकहि गमनी लै जल नारी ❀ तिनसँग धूम्रकेतु मँग[7] धारी
गढ़ भीतर कीन्हेसि पैसारी ❀ निरखे विपुल कूप[8] सर वारी
नाना गज रथ खच्चर घोरा ❀ फिरत विलोकत पुर चहुँओरा
अन्तर गढ़ तेहि चारि दुवारा ❀ तहां न चर पावहिं पैसारा

छं० पावत नहीं पैसार चरगति द्वारलगि फिरि आयऊ।
यहि भाँति रावणदूत घटिका युगल दिवस गँवायऊ॥

१ दूत २ पत्ता ३ बेसमझ ४ जल ५ टहलुई ६ घूँसा ७ रास्ता ८ कुवाँ॥

मनमहँ विसूरत ठाढ़ चौहट मध्य मो जब रहिगयो ।
निशिचरनिकन्दन होनलगिविधिताहिइकअवसरदयो

सो० गमनो भूपतिद्वार, नृत्य करन इक कौतुकी ।
लीन्ह साथ तेहि धार, गढ़ इमि कीन्ह प्रवेश चर ॥

बैठेउ सभा नरान्तक जाई ❀ कोटि बहत्तर संयुत भाई
व्योमं[1] तीनि रसं[2] गुणं[3] वसु[4] एका ❀ अङ्कगति लिखि गुणी विवेका
वन्दीजन नट कौतुक करहीं ❀ प्रतिदिन कवि कोविद उच्चरहीं
रावणदूत सभा मो देखी ❀ मनमहँ चक्रत भयो विशेखी
तब चारण[5] मन अस अनुमाना ❀ कोटि बहत्तर रूप न आना
भूषण वसन सुआसन जोहा ❀ देखि सुखद चारण मन मोहा
याम दिवस गत अवसर पावा ❀ नारान्तक कहँ शीश नवावा
दीन्ह पत्रिका[6] पद शिरनाई ❀ कुशल तासु बूझी हरषाई

दो० नारान्तक निज कुशलकहि, बूझा दशमुख हेतु ।
समाचार गढ़ लङ्ककर, वरणेउ दूत सचेतु ॥

चरभाषित नारान्तक सुनेऊ ❀ क्षणकमाहिं निजकारण गुनेऊ
पुनि पत्री निशिचरपति बाँची ❀ मानी चारबात सब साँची
उठेउ सभाते हृदय रिसाई ❀ गा निजभवन शोच सरसाई
बिन्दुमती कहँ बांचि सुनाई ❀ पितुपर भीर पत्रिका आई
समाचार सुनि कह तेइ नारी ❀ तुम जनि करहु रामसन रारी[7]
गहहु चरण पिय यकसर जाई ❀ रसन[8] सफल करि विनय सुनाई
माँगि भक्तिवर प्रेम दृढ़ाई ❀ निर्भय राज्य करहु गृह आई
नारिवचन तेहि मनहिं न भावा ❀ तब उठि कोटद्वार खल आवा

दो० कहत बजाव निशान घन, सजहु सेन चतुरङ्ग ।
जन्मभूमि जावा चहहुँ, पितुचारण के सङ्ग ॥

---

१ शून्य २ छः ३ तीन ४ आठ ५ दूत ६ चिट्ठी ७ लड़ाई ८ जीभ ॥

आयसु दीन्ह नरान्तक राजा ❀ लगे निशाचर सजन समाजा
अमित वाजि गज उष्ट्र नाना ❀ रथ खच्चर खेचर बहु याना
नाना अस्त्र शस्त्र गहि पानी ❀ निशिचरअनी न जाइ बखानी
जे सब संयुत साज सजाई ❀ विविध निशान हने हर्षाई
कन्त जात निश्चय जिय जानी ❀ बिन्दुमती निजचित अनुमानी
राम विरोध न यहि कल्याना ❀ महूँ सङ्ग अब करहुँ पयाना
भूषण वसन[1] सुअङ्ग बनाई ❀ कन्तचरण गहि विनय सुनाई
सासु ससुर दर्शनहित नाथा ❀ हमहूँ चलब प्राणपति साथा

दो० दशमुखसुत सुनि तियवचन, हृदयपरमसुख मानि।
कहेउ चलहु सब सखिन सह, प्रमुदित छांड़ि गलानि॥

सुनि पतिवचन नारि हर्षानी ❀ चली सङ्ग लै सखी सयानी
लै दल नारान्तक पगुधारा ❀ अमित सेन को कहिसक पारा
बुध[2]जन कहत सुनहु खगराजा ❀ अयुत सतावन बाजन बाजा
धूम्रकेतु कहँ ढिग सँग लीन्हे ❀ अति आतुर गमना रिस कीन्हे
चलत शकुन भल ताहि न होई ❀ गनै न मृत्युविवश शठ सोई
तासु पयान जानि दिकपाला ❀ जियमहँ संशय करत विशाला
कोल कूर्म अहिपति[3] अतिडरहीं ❀ पुनिपुनि रामचरण चित धरहीं
समुझि रामबल संशय त्यागी ❀ सुरविशेष प्रभुपद अनुरागी

दो० नारान्तक लङ्का तुरत, दल समेत नियरान।
दिकयोजन दल रहेउजब, सुनु मुनीश सज्ञान॥

इहाँ कृपालु रमेश खरारी[4] ❀ असित जलदसम सेन निहारी
प्रभु सर्वज्ञ नीति हितसेतू ❀ सचिव[5] बोलि कह रघुकुलकेतू
सखा विलोकहु दक्षिण ओरा ❀ गर्जतघन आवत नहिं थोरा
उमा[6] राम सब अन्तरयामी ❀ चरितहेतु बूझा अस स्वामी
रामवचन सुनि दशमुखभ्राता[7] ❀ कह हँसि गहि प्रभुपदजलजाता[8]

१ कपड़ा २ पण्डित ३ शेषनाग ४ श्रीरामचन्द्र ५ मन्त्री ६ पार्वती ७ भाई ८ कमल॥

देवदेव नहिं दल जलबाहा[१] ❀ अहहि नरान्तक निशिचरनाहा
बिह्वाबलपुर बसत गुसांई ❀ पठवा तेहि दशकन्ध बुलाई
आवत धूम्रकेतु चर[२] संगा ❀ करत कुलाहल नाद उतंगा

दो० तेहि सँग गुणी अनेक प्रभु, गावत हनत निशान।
सेन संग चतुरंग खल, डोलत विविध दिशान॥

कह प्रभाव तेहि सुनु भगवाना ❀ बिहँसे प्रभु बल बुद्धि निधाना
पाइ रामरुख पवनकुमारा ❀ उठे हरषि हिय गरजि प्रचारा
सहित लषण प्रभुपद शिर नाई ❀ धाये कहि जय जय रघुराई
वातज़ात निशिचर समुदाई ❀ देखि सपदि[३] ढिग पहुँचे जाई
कटकटाइ गर्जे अति भारी ❀ देखेउ इमि आवत वनचारी
बूझेउ दूतहि निशिचरत्राता ❀ यह आवत धावत को भ्राता
स्वर्णशैल[४] विकराल शरीरा ❀ गर्जत प्रलयजलद[५] सम वीरा
तब नारान्तकसन कह दूता ❀ यहै पवनसुत बली अकूता

दो० सिन्धु लांघि लंकहि दहेसि, पुनि हति अच्छकुमार।
कालनेमि कहँ मारि मग, लावा मेरु[६] उपार॥

पुनि अहिरावण सहपरिवारा ❀ पैठि पताल सदल संहारा
लै आवा नापस दोउ भाई ❀ आवत अब तव ढिग सोइ धाई
यहिकर भुजबल अहै अपारा ❀ सुनि रिसान दशकण्ठकुमारा
चाप चढ़ाइ सुधारेसि बाना ❀ तजन न पाव गहेउ हनुमाना
सो शर धनुष तोर कपि डारा ❀ पुनि रिसाइ उर मुष्टिक मारा
परा दशाननसुत महि कैसे ❀ वज्र रसातल गे गिरि जैसे
पवनपूत बल लूम[७] पसारा ❀ कोटिन रथ गहि तापरडारा
रथ सारथी[८] चूर्ण सम भयऊ ❀ विधिवश तेहिकर प्राण न गयऊ

दो० एक दण्ड अतिविकल खल, रह भूतल धुनि माथ।
पुनि शठ उठा सँभारि तनु, धायउ धनु धरि हाथ॥

१—५ मेघ २ दूत ३ जल्दी ४ सोना ६ पहाड़ ७ पूंछ ८ कोचवान॥

छांड़ेसि अगणित शायक कोपी ❀ क्षणइक कीशकटक गा तोपी
राम प्रताप प्रभंजनजाया ❀ करगहि अरिशर तोरि बहाया
देखि पवनसुत की प्रभुताई ❀ वर्षत सुमन विबुध झरिलाई
जय जय पिंग[२]अक्ष सुर भाषा ❀ सुनि दशकन्धतनय[३] मन माषा
नारान्तक अति हृदय रिसाई ❀ कपितट पहुँचा आतुर धाई
कह कल कीश जो कछु बलधरहू ❀ मोसन मल्लयुद्ध रण करहू
गावहिं विबुध तोरभुज जोरा ❀ निजउर सहु इक मुष्टिक मोरा
लागत ठाढ़ रहै जो वानर ❀ तौ जानहुँ तव भुजबल आगर

सो० हरि सुनि ताकर बात, रामदूत रिस रोंकि उर।
अति सकोप मुसुकात, क्षणक ठाढ़ सम्मुख रहेउ॥

तब तेहिं कपिकहँ मुष्टिक मारा ❀ भयउ तड़ित सम शब्द अपारा
टरा न तहँ ते पग हनुमाना ❀ हृदय न निशिचर नेकु लजाना
दुइ मुष्टिक तेहिं फेरि चलावा ❀ तब मारुतसुत कोप बढ़ावा
किलकिलाय लंगूर[४] लपेटा ❀ डारि भूमि तेहिं दीन्ह चपेटा
विकल ताहि करि कपि अतिगाजे ❀ भे व्याकुल निशिचर बहु भाजे
कोटिन निशिचर कपि करगहहीं ❀ रामदूतकर कौतुक अहहीं
मर्दि मर्दि बहु वारिधि[५] डारे ❀ देखि देव जय जयति पुकारे
एक दण्डगत निशिचर जागा ❀ बहुविधि समर करन सो लागा

छं० लागेउकरनपुनिसमरबहुविधिनिजसुभटबहुफेरिकै।
खलकोटि[६]कोटिप्रचण्ड शायक कपिहि रणमहँ घेरिकै॥
रणरङ्ग रंजित[७] वीर मारुतपूत पुनि पुनि गर्जही।
गहि गहि विपुल दनुजहिं पछारत उर बिदारत तर्जही॥

दो० सघनवाहिनी जलजवन[८], जिमि करिकृत उतपात।
रिपुनहनततिमिवायुसुत, बिनु श्रम प्रमुदित गात॥

करत समर आयउ तेहि ठामा ❀ जहँ नित होत रहा संग्रामा

१—२ हनुमान् ३ पुत्र ४ पूँछ ५ समुद्र ६ करोड़ ७ रंगा हुआ ८ कमल॥

लरत अकेल तहां हनुमाना ❁ धायउ बालितनय बलवाना
ता पाछे कपि चमू अपारा ❁ चले कहत जय कृपाअगारा
लीन्हे गिरिवर तरु पाषानां[1] ❁ जहँ तहँ करन लगे मैदाना
अङ्गद आइ पवनसुत पाहां ❁ कहि जय रघुवरसन द्विज नाहां
दोऊ भट इकसँग करि हूहा ❁ हतन लगे अरि[2]सेन समूहा
देखत भालु[3] कीश कृत भारी ❁ भागि चले निशिचर भयभारी
देखि अनी निज त्रसित बहूता ❁ भा अति कुपित दशानन पूता

छं० अतिकुपितभादशमुखसुवननिजभटनशपथ[4] दिवाइकै।
फेरेउ सबन करि कोप बोला जात कहां पराइकै॥
विधिदीन्ह विविध अहारकपिदल खात कस न अघाइकै।
बिनुभालु कपि महि करहु पुनि हठि धरहु तापस धाइकै॥

दो० सुनि नारान्तक सरुष वच, रजनीचर समुदाय।
लागे लरन सकोप सब, मायाकपट कुभाय॥

माया तिमिर[5] पसार अपारा ❁ अस्त्र शस्त्र बहुभाँति प्रहारा
शक्ति शूलवर विशिख[6] कराला ❁ डारहिं रज तरु शैल विशाला
गिरत ऋच्छ कपि लागत शायक ❁ उठहिं बहुरि कहि जय रघुनायक
निजदल विकल विलोकि खरारी ❁ सत्यसन्ध इक शर संचारी
रिपुशर काटि तिमिर करि दूरी ❁ प्रभुशर हते निशाचर भूरी
हरिनिषङ्ग[7]महँ पुनि सो तीरा ❁ प्रविशे आइ सुनहु मुनि धीरा
निरखि प्रकाश भालु अरु कीशा ❁ गहि गिरि तरु कहिजयजगदीशा
निशिचर अनी मध्य गे जबहीं ❁ दिये डारि गिरि रज तरु तबहीं

दो० मरे तमीचर[8] कोटि षट, जानि निशा परिवेश।
दलयुत अङ्गद पवनसुत, चले जहां अवधेश॥

अङ्गद हनुमदादि कपि भालू ❁ आये जहँ रघुवीर कृपालू

१ पत्थर २ शत्रु ३ ऋक्ष ४ क़सम ५ अँधेरा ६ बाण ७ तरकस ८ राक्षस॥

प्रभुहि विलोकि चरण शिर धरे ❀ भे श्रमरहित सकल सुखभरे
अतिआदर प्रभु किय सनमाना ❀ सबकहँ बैठन कह भगवाना
पुनि रजाइं[1] लै थलन सिधाये ❀ छविवारिधि प्रभुपद शिर नाये
अङ्गद हनुमत निकट निवासी ❀ रामचरण सुषमा गुणरासी
दोउ भट कर परसत प्रभु पाऊ ❀ देखि सुरन मन भा अतिचाऊ
हमहुँ होत जग कीशस्वरूपा ❀ पदगहि नित्त रहत नरभूपा
हरिन सिहाहिं सुमन झरिलाये ❀ निजनिज आश्रम अमर[2] सिधाये

दो० बन्धु सचिव सेना सहित, शोभित श्रीभगवान।
तुलसिदास ते धन्य नर, जे यहि ध्यान लुभान॥

उत नारान्तक सेन समेता ❀ गयउ जहां दशकन्धनिकेता
सुतहि सुरारि[3] मिला पुलकाई ❀ कुशल बूझि बैठेउ हरषाई
देखि नरान्तक कै समुदाई ❀ दशमुख शठ सब शोच दुराई
जेहि विधि हरि लावा जगमाता ❀ ताहि आदिकृत कृत विख्याता
कुम्भकर्ण घननाद[4] निपाता[5] ❀ कहि बिलखा अहिरावणघाता
पितु मन मलिन नरान्तक देखा ❀ बोला खल उर गर्व विशेखा
तजहु सकल संशय[6] विबुधारी ❀ करिहहुँ प्रांत समर अतिभारी
चमूकीश बिनु छिति करि ताता ❀ धरिहौं तापस होत प्रभाता

छं० धरि आनि तापस भ्रात दोउ परभात बार न लाइहौं।
धरिधरि विपुल कपि भालु दीन निशाचरन अघवाइहौं॥
भुजबल कहहुँ निजनहिं बहुत करि रिपुन प्रकट दिखाइहौं।
बिनु श्रमहिं तातनको बयर लै तव चरण शिर नाइहौं॥

दो० सुनत बीसभुज सुतवचन, बार बार उरलाइ।
लाग करावन नृत्य जड़, गुणी समूह बुलाइ॥

बिन्दुमती आदिक रनिवासू ❀ सब चलिगईं मँदोदरि पासू
सासुहिं मिलि बैठीं सब नारी ❀ मयतनया[8] करि आदर भारी

१ आज्ञा २ देवता ३ राक्षस ४ मेघनाद ५ मारा ६ संदेह ७ सबेरा ८ मंदोदरी॥

बूझि परस्पर रावण घरणी ❀ प्रभुयश ताहि सुनायउ वरणी
देइ पतोहुन वास सुहावन ❀ आपु लगी सुमिरन जगपावन
शयन करहु कह सुतहि निशाचर ❀ उठा आपु मतिमन्द अघाकर
गा तेहिभवन कुटिल दशग्रीवा ❀ जहँ मयतनया सद्गुणसीवा
आयउ पिय मन्दोदरि जानी ❀ पाइ सुअवसर गहि पग पानी[2]
पिय सुनाय अतिकोमल बयना[3] ❀ लगी कहन जलभरि युग नयना

दो० नाथ निगम आगम विबुध[4], कहत प्रकट यह बात।
बुधजन सो जो आधहू, राखै सरबस[5] जात॥

तजहि न हठ शठ सरबस खोवै ❀ यद्यपि अन्त शीश धुनि रोवै
सो विचारि प्रभु परम सुजाना ❀ मोर वचन सुनि कीजिय काना
अजहुँ करहु हठ दूरि गोसांई ❀ अनुज भाँति मिलिये प्रभु जाई
प्रथमहिं सीतहिं देहु पठाई ❀ पुनि तुम गमनहु पुत्र लवाई
प्रभुपद गहि मांगहु वर एहू ❀ पदपङ्कज रति विमल सनेहू
प्रियावचन तेहि विषसम लागा ❀ सो गृह तजिगा अनत अभागा
निजनारी कहि कटु अभिमानी ❀ कीन्ह शयन निशिगइबड़ि जानी
सो रजनी गत भयउ प्रभाता[6] ❀ जागे रघुवर त्रय जगत्राता

दो० ऋच्छकीश जगदीश पद, शीश नाइ रुख पाइ।
धरि गिरि तरु धावत भये, कहि जयजय रघुराइ॥

कपि घेरा गढ़ यह सुनि काना ❀ रावणसुत लखि निपट रिसाना
साजि विपुलदल हनत निशाना ❀ गढ़ते चला निकरि बलवाना
चारिद्वार करि कठिन लराई ❀ विशिख[7] वरषि कपिदल बिचलाई
निकरे निशिचर गढ़ ते कैसे ❀ शलभ[8] समूह शैल ते जैसे
मारुतसुत देखा कपि भाजे ❀ कटकटाइ मति विक्रम गाजे
कपि लँगूर चहुँ ओर भवांई ❀ रोके खल निशिचर समुदाई
पटकत महि निशिचर फल बेलू ❀ केतिक देत विदिशि दिशि मेलू

१ रावण २ हाथ ३ वचन ४ देवता ५ सब ६ सबेरा ७ बाण ८ टीड़ी॥

इकदिशि इमि हरिकृत संग्रामा ❀ दिशि दूजी अङ्गद बलधामा

दो० निशिचरसेना उदधि सम, मन्दर¹ इव दोउ कीश।
मथत देखि जयरतनलगि, हँसे विबुध सुरईश²॥

छं० इमिनिरखि पराक्रम करत कीश ❀ भा क्रोध परम रजनीचरीश
करि प्रलयकन्द³ ते घोर शोर ❀ धर कुधर अस्त्र धाये कठोर
इकबार मारकर शर समूह ❀ किय विकल अस्त्रहानि कीशजूह
कोउ टेरत कपिपति चितउचोट ❀ कोउ मुरत करत निजधाम ओट
बहु चले कन्दरा शैल ताकि ❀ कोउ दबकत इतउत पातझांकि
कोउ देत दुहाई लषण राम ❀ कोउ कहत विधाता⁴ भयो वाम⁵
यहि बीच नरान्तककर प्रधान ❀ तेहि धाय गहेउ युवराज पानि⁶
बहु भट लपटाने अङ्ग सङ्ग ❀ सब सङ्ग उठेउ अंगद उतङ्ग
नभ कीश कीन्ह कौतुक अभूत ❀ रविमण्डल पहुँचेउ बालिपूत
अँगगारे जारे तपनि आंच ❀ पुनि आयेउ जहँ संग्राम रांच
यह निरखि अपर यूथप पिशाच ❀ तुर आइगयो सेनासमाच
लै विषम शूल मारेसि प्रचंड ❀ उरलाग आनि अतिकठिन दंड
महि परेउ तनयतारा तुरन्त ❀ लखि दौरिपरेउ हनुमन्त सन्त
सोइ शूल खैंचि मारेउ प्रचंड ❀ ह्वै गिरेउ यूथपति सहँसखंड
सब चरित सुनेउ रविकुलदिनेश ❀ कह जाहु वेगि अहिराज शेश
चले नाइ माथ शंकर मनाइ ❀ धनु बांधि बांधि विकराल लाइ
उर अंगदकर धरि सुमिरि राम ❀ श्रमविगत भयउ बल अतुलधाम

दो० विगत भई मूर्च्छा तुरत, बहुरि चलेउ युवराज।
लक्ष्मण चाप टँकोर सुनि, फिरा कीशदल साज॥

सुनत टँकोर शरासन निशिचर ❀ बधिर भये नहिं सुनत शब्दपर
वर्षा विशिख कीन्ह अहिनाथा ❀ काटे पाणि पायँ बहु माथा
उड़हिं अकाश शीश भुज कैसे ❀ धुनकत तूंख रोमगण जैसे

१ पहाड़ २ इन्द्र ३ मेघ ४ ब्रह्मा ५ टेढ़ा ६ हाथ ७ हज़ार ८ रुई॥

रुण्ड अशीश फिरहिं रणधरणी ❀ यथा अकाल क्षुधारत करणी
इत कपि भालु विजय अभिलाखे ❀ उतहि निशाचर जय हित राखे
मारुतसुत अङ्गद बलवीरा ❀ समर बांकुरे अतिरणधीरा
सिंहनाद कीन्हा हरि[1] दोऊ ❀ भाजे कपि रण गाजे सोऊ
दोउ दल युद्ध परस्पर करहीं ❀ प्रमुदित भट[3] कायर हिय डरहीं

छं० कायर डरहिं प्रमुदित सुभटसबलरतहारि नमानहीं।
जहँ तहँ गिरैं पुनि उठि भिरैं दुहुँ ओर जयति बखानहीं॥
कौतुक[4] विलोकत विबुधगण विस्मय हरष उर आनहीं।
रघुवीर सेननपर सुमन[5] झरि लाय विनती ठानहीं॥

दो० अतिअद्भुत करणी करहिं, ऋक्ष कीश बल भूरि[6]।
कर पद बिनु कर रैनिचर, तिन मुख डारहिं धूरि॥

बहुतनके शिर तोरि चलावहिं ❀ निजभुजबल रावणहिं जनावहिं
गये याम युग दिवस भवानी ❀ नारान्तक सब सेन सिरानी
मरे निशाचर अमित[7] निहारी ❀ रावणसुवन कोपकरि भारी
रथ समेत ऊपर नभ जाई ❀ भयउ अदृश्य अस्त्र झरिलाई
क्षणमहँ करि मूर्च्छित कपिसैना ❀ पुनि शठ गा जहँ राजिवनैना
गर्जा मनहुँ मेघ समुदाई ❀ कहन लाग कटु वचन रिसाई
होसि सजग निशिचरकुलद्रोही ❀ बन्धुवैर लगि मारहुँ तोही
प्रभुकहँ कटुक कहत सुनि काना ❀ कोपेउ जामवन्त बलवाना

दो० शूल एक तेहि छांड़ेऊ, सो कर गहि ऋक्षेश[8]।
धाय तासु उर मारेऊ, भाषि जयति अवधेश॥

लागत शूल सो मूर्च्छित भयऊ ❀ जामवन्त तब कर गहि लयऊ
बार अमित महिमाहिं पछारा ❀ बांधि गाड़ि बारूमहँ डारा
जागे सकल बलीमुख ऋच्छा ❀ लगे करन रण निजनिज इच्छा
जामवन्त यह हृदय विचारा ❀ मरै नहीं यह खल मम मारा

१ जीति २ बन्दर ३ योद्धा ४ तमाशा ५ फूल ६ बहुत ७ बेहद ८ जाम्बवान्॥

विधिइच्छा पुनि ताहि उखारी ❀ मुष्टिमारि उरमाहिं प्रहारी
गहि पद संचारा गढ़ माहा ❀ सपदि परा जहँ निशिचरनाहा
दशौवदन हाहा करि धावा ❀ नारान्तकहि हृदय तब लावा
निरखि निशाचर गण समुदाई ❀ गढ़ कहँ गे सब सम्भ्रम धाई

दो० कपिगण समय प्रदोष[2] लखि, रामचरण धरिमाथ।
ठाढ़ भये सब तन चितय, दयादृष्टि[3] रघुनाथ॥

बिनु श्रम कीन्ह सबन जगदीशा ❀ गये सुवास भालु अरु कीशा
रुचिरासन आसीन रमेशा ❀ ढिग वीरासन उरग नरेशा
अङ्गद मारुतसुत प्रभुचरणा ❀ लाग पलोटन सुनहु अपरणा[4]
पुण्यपुंज अरु भाग्यनिधाना ❀ जिनपर नित प्रसन्न भगवाना
उहां सुरारि सुतहिं पौढ़ाई ❀ बिलखहिं तासु नारि समुदाई
होत प्रभात नरान्तक जागा ❀ पितु विलोकि लज्जारस पागा
रथ चढ़ि तुरत इकाकी[5] धावा ❀ नभपथ समरभुभूमि[6] महँ आवा
कीशकटक यह मर्म न जाना ❀ होइ लोप कीन्हेसि झरि बाना

दो० धावहिं व्योमहि भालु कपि, ताहि न हेरैं नैन।
घायल ह्वै ह्वै गिरहिं महि, भाषहिं आरत बैन॥

बाण एक शत तड़ित समाना ❀ छांड़ेसि शठ जहँ कृपानिधाना
लागत विपुल कीश मुरझाने ❀ बहुतक कायर देखि पराने
भागि सेतु ढिग एक अयाना ❀ टेरे फिरहिं न सुनु हरियाना[7]
मारुतसुत अङ्गद सुग्रीवा ❀ कुमुद मयन्द द्विविद बलसींवा
ये सब वीर हांक दै धावहिं ❀ नभपथ ताहि न खोजत पावहिं
तब सब वीर एक मत ठाना ❀ लै गिरि तरु किय लङ्क पयाना
दशमुखभवन तासु कंगूरा ❀ बैठे कपि पसारि लंगूरा
करते डारि देहिं पाषाना ❀ बहुत दनुज[8] भे चूर्ण समाना

छं० भे चूर्ण निशिचरयूथ * गईं निशिचरी भय गूथ॥

१ रावण २ सन्ध्या ३ निगाह ४ पार्वती ५ अकेले ६ पृथ्वी ७ गरुड़ ८ राक्षस॥

मुखबीन आरत दीन * भईं भवन रावण लीन ॥
सुनि बोलि भट दशभाल * कह खाहु कीश कराल ॥
करि यत्न भागैं कीश * अस कहेउ वच दशशीश ॥
मम लहहु आयसु छोर * सोइ जानिहौं रिपु मोर ॥
सो शूर मोकहँ प्यार * जो खाय मर्कट धार ॥
जो जाय आयसु छोर * सोइ जानिहौं रिपु मोर ॥

दो० ऐतु ऐतु गुण रजनिचर, एक एक भुज जोर ।
रावन पावन राखि शिर, धाये करि रवँ घोर ॥

देखि लँगूर सकल हरषाने ❀ मधुमाखी सम सब लपटाने
कपिउर सुमिरि रमेशप्रतापा ❀ डारे सबन पटकि करि दापा
काचे घटसम दनुज बिदारी ❀ जयति राम जय लषण खरारी
सुभट छुहनि पुनि फेरि लँगूरा ❀ भूमि गिरावहिं कोट कँगूरा
अतिविशाल गहि कञ्चनखम्भा ❀ जिमि प्रयास बिनु करु आरम्भा
लै ढाहत अपक्वघटजूहा ❀ कपि तिमि तोरत दनुजसमूहा
पुनि विचारकरि हरिभट धाये ❀ निशिचरनिकर मध्य चलि आये
करि कोटिन बिनु नासा काना ❀ कर पद हीन कीन रिपु नाना

छं० रिपुकीन कर पदहीन अगणित दीन वचन पुकारहीं ।
गढ़तेनिकरिनिशिचरअखिल खलविपिनबाटसिधारहीं ॥
पीपरपरण सम धरणिलङ्का कम्प षट कीशन करा ।
तोरे कपाँट निपाटि अरितिय केश खैंचत गहि करा ॥

दो० भयउ कुलाहल लङ्कअति, नारान्तक सुनि कान ।
नभते स्यन्दन सहितशठ, प्रकटि परम रिसियान ॥

निरखि दशा निज नारिनकेरी ❀ कहन लाग कटु गिरा घनेरी
शठ आयउ संग्राम बिहाई ❀ लस्त तियनसँग लाज न आई

१ बंदर २ शब्द ३ श्रीराम ४ सोना ५ कच्चा ६ रास्ता ७ किवाड़ ८ रथ ॥

अबलनपै बल भट न कराहीं ❀ छांड़हु तियन लरहु मम पाहीं
सुनि मर्कटन भयउ सुखभारी ❀ तजीं निशाचरि दीन पुकारी
भाजि भवन भययुत गहि नारी ❀ लीन्ह कपिन कर शिला उपारी
शिलप्रहार हय स्यन्दन भंजा ❀ आयुध तोरि सारथी गंजा
धरि पछारि रावण दृग देखा ❀ कौतुक कीशन कीन्ह विशेखा
लागे पदगहि खलन फिरावन ❀ नाचहिं गाइ रामयश पावन

दो० तोरत तिन तनपटकि महि, कहत जयति रघुवीर।
करत युद्ध गत याम युग, कीश छहौ रणधीर॥

अस्ताचल रवि कीन्ह प्रवेशा ❀ वन्दे चरण जाइ अवधेशा
श्याम सरोरुह प्रभुतनु देखी ❀ पद धरि शिर सुख लहेउ विशेखी
राम सबन सादर सनमाना ❀ को दयालु रघुवीर समाना
कह प्रभु होहु थलन आसीना ❀ आयसु पाइ भये श्रमहीना
भये विगत श्रम वानर भालू ❀ अनुजसहित मन मुदित कृपालू
सुनहु उमा ता निशि रघुनायक ❀ गावत जन गुण सब गुणदायक
याम तीनि यामिनि गत जबहीं ❀ उत नारान्तक जागेउ तबहीं
शोचविवश मींजत दोउ हाथा ❀ लज्जित हृदय निशाचरनाथा

छं० लाजकै रथै सँभारि वाजि साजि हृष्टपुष्ट।
शङ्क छांड़ि अस्त्र मांड़ि गाढ़ वीर सङ्ग दुष्ट॥
भेरि दुन्दुभी निशान गानका डकैत कर्त।
धीर वीर अग्र गौन गाजि गाजि शब्द भर्त॥
जीव आस त्रास भास वाजि मोह छण्ड छण्ड।
बङ्क शूर शङ्क दूर वीरता सपूर चण्ड॥
वाजि नाग शोर घोर पूरिगे दशौ दिशान।
धूरि पूरि मेघ बोध शोध ना परो अपान॥

१ मारा २ श्रीराम ३ कमल ४ पहर ५ रात्रि ६ घोड़ा ७ मोटे ८ हाथी॥

कूदि कूदि व्योमपन्थ[1] जाइ आइ जाइ भूमि।
अस्त्र शस्त्र काढ़ि काढ़ि क्रुद्ध क्रुद्ध झूमि झूमि॥
दो॰ प्रलय मनहुँ चाहत करन, अनी तमीचर चण्ड।
सुनु खगेश मर्कट विकट, जिमि धाये बरबण्ड॥
छं॰ निहारि हर्ष कीश ऋक्ष फूलि फूलि शैल भे।
बजाइ कटकटाइ दूह एक बार के अभे॥
उपारि भूधरां[2] अपार वृक्ष अश्मशृङ्गहू।
मरे निशाचरानि रुण्ड मुण्ड शुण्ड भङ्गहू॥
रदी हरी मृगावती सवार उष्ट्र मण्डहू।
मनो विचित्र वाहिनी दई मनोज[3] खण्डहू॥
हलै धरा बलै विचारि भार धारि को सकै।
सुनै पुकारि जयति राम शत्रु से नहीं धकै॥
लँगूर शूल से अकाश भीत उच्च औचख्यो।
गिरे पयोद पौन ते झपेट भेट ते कख्यो॥
सो॰ शब्द करत अतिघोर, इमिपहुँच्योदल भालु कपि।
आयुध झारि अतिजोर, परै लागि घन प्रलयसम॥

सजग होन कपि भालु न पाये ❁ अतिशय निकट तमीचर[4] आये
असित निशाचर अति अँधियारी ❁ तापर करैं शस्त्र की मारी
सूझहिं कपिन न हाथ पसारे ❁ जहँ तहँ एकन एक पुकारे
सम्मुख[5] कोउ न करत लराई ❁ कपिन मारि रणभूमि सोवाई
गे अनेक भजि सिन्धु[6] समीपा ❁ सेन विकल लखि रघुकुलदीपा
साजि शारंग तजा इक बाना ❁ भा प्रकाश दिक तरणिसमाना
लखितम विगत भालु कपि हरषे ❁ कटकटाइ धाये रिपु धरषे
भिरे एक सन एक प्रचाँरी[7] ❁ लागे करन कठिन हठ मारी

१ आकाश २ पहाड़ ३ कामदेव ४ राक्षस ५ सामने ६ समुद्र ७ ललकार कर॥

दो० शीशशिला तरु करन धरि, कांखन भरिभरि धूरि ।
गरजे भालु बली वदन, धाय धाय नभ टूरि ॥

डारहिं गिरि तरु निशिचर शीशा ❀ दधिघटसम फोरहिं भट कीशा
चढ़हिं अनेक कन्ध पर जाई ❀ काटहिं कान दृगन रजनाई
तोरहिं शूल चाप नाराचा[1] ❀ अरिदल अस्त्र न एकौ बाचा
शस्त्रहीन रिपुसेन पराई ❀ देखि पवनसुत हँसेउ ठठाई
बैठि अवनि अति लूमं[2] फुलाई ❀ अति उतङ्ग दीरघ चौड़ाई
तर्कित खसे निशाचर कैसे ❀ पच्छ[3]हीन नभ ते खग जैसे
गिरत कीश गहिचरण फिरावहिं ❀ पटकि भूमि गाड़हिं बिहँसावहिं
तुम्बरिसम अगणित शिर तोरत ❀ अगणित रुण्ड सिन्धुमहँ बोरत

दो० कोटि बयालिस तमीचरं[4], नारान्तक कर घात ।
रामकृपा बल हति खलन, कपिन बिताई रात ॥

प्रभुतुणीर[5] महँ हरिशर जबहीं ❀ प्रविशे कीन्ह उदय रवि तबहीं
देखि कटक निज परम बिहाला ❀ नारान्तक भट कोटि कराला
करि बहु शपथ लिये सँग वीरा ❀ वर्षत शक्ति उपलं[6]गण तीरा
शर अस्तम्भन विपुल पँवारे ❀ भये अचल कपि टरहिं न टारे
लै लै पाश निशाचर धाई ❀ बांधत जिमि चुंगलि शुक पाई
व्याध पींजरासम बहु जाना ❀ भरे जान प्रति अयुतप्रमाना
जे कपि लखें विपुलबल बङ्का ❀ ते मूर्च्छित फेंकें गढ़ लङ्का
रावण देखि तनय की करणी ❀ वन्दीजनं[7] जिमि भुजबल वरणी

दो० हरिइच्छा जानै न कस, सुतहिं सराहत मूढ़ ।
कालविवश मति संभ्रमित, सुनहु ऋषय बुधिगूढ़ ॥

अंगद हनूमान जब जागे ❀ नारान्तक सन जूझन लागे
क्षण इक कीश न पायउ लरई ❀ पुनि शर हति मूर्च्छावश करई
यांम[8] युगल तेहिकर वरदाना ❀ राखेउ तेहि कारण भगवाना

१ बाण २ पूँछ ३ पर ४ राक्षस ५ तरकस ६ पत्थर ७ भाट ८ पहर ॥

रिपुहिं खेलावत रघुकुलकेतू ❀ पालक बुधि वाणी श्रुतिसेतू
सो युग याम गये जब बीती ❀ तब रघुवीर सजी जयरीती
हांक देइ कपि भालु जगाये ❀ भये विगत मूर्च्छा सब धाये
हनूमान अंगद जब जागे ❀ राम लषण चरणन अनुरागे
प्रभुपद शीश रहे धरि कीशा[२] ❀ तब हँसि बोले श्रीजगदीशा

सो० विधिवाचा लखि आज, तात तुमहिं मूर्च्छा भई।
पुनि कह प्रभु रघुराज, अब श्रम स्वप्नेहुँ अनत नहिं॥

तुमहिं सुमिरि अंगद हनुमाना ❀ जितिहैं जगत मनुज रण नाना
अस वर जबहिं रमापति भाखा ❀ सुनत गिरा हर्षे मृगशाखा
कहेउ बहोरि वचन रघुवीरा ❀ सुनु अंगद हनुमत रणधीरा
तात तुरत तुम उभय सिधावहु ❀ लङ्क गये कपि तिन्हैं छुटावहु
सुनि दोउ भट गहि शैल[३] विशाला ❀ सुमिरि कोशलाधीश कृपाला
सपदि कीश गढ़ पर चढ़ि गये ❀ देखि लंक महँ खरभर भये
सकल कपिन कै मूर्च्छा बीती ❀ तोरि पाश भजि राम सप्रीती
वायुसूनु[४] युवराज निहारी ❀ हर्षे कहि जय जयति खरारी

दो० मेषवरूथहिं पाइ जिमि, वृक[५]गण करहिं सँहार।
तिमि मर्दहिं दनुजन[६] समुद, कीश भालु बरियार॥

याम एक वासर अवशेखा ❀ कह अंगद कीशनतन देखा
चलिय तात अब जहँ सुरभूपा ❀ देखिय पद पाथोज[७] अनूपा
अंगद वचन पवनसुत भाये ❀ सपदि सहित दल प्रभुपहँ आये
निशिचर कोटि नरान्तकसङ्गा ❀ करत रहे बहुविधि रणरङ्गा
मायाकरि निजगात बजावहिं ❀ जहँतहँ खल रावणयश गावहिं
अदितिनन्द लखि तिनकरि माया ❀ सभय भये जाना रघुराया
दीन्ह नाथ अनुजहिं अनुशासन ❀ उठे नमित गहि विशिख शरासन
अहिपति कहेहु तिष्ठ[८] क्षण एका ❀ तैं कीन्हें रण खेल अनेका

१ रीछ २ वानर ३ पहाड़ ४ हनुमान् ५ भेड़िया ६ राक्षस ७ कमल ८ ठहर॥

छं० तैंकीन्हखेलअनेकविधि अब तिष्ठ खल रणभूथला।
इमिकहिअहीशंचढ़ाय धनुशरकरन निशिचरदलमला
निजअनी[2]निरखि निदान हरि अरिसुवनधावारिसभरा।
डारत अनेक नराच प्रभुपर शिला[3] तरुवर भूधरा॥
रघुवीर अनुज प्रवीण खलबलदलन श्रुति यश गावहीं।
तरु उपलगिरि अरितीर उपरहि बाण लषण चलावहीं॥
रिपुशस्त्र अस्त्र अनेक आयुध कनक[4] करि करि डारहीं।
सुरगण प्रफुल्लितसुमन[5]झरिकरि जयतिलषणपुकारहीं॥
दो० मायापति के अनुजसन, माया करत अयान।
लगत न एकौ जानिजिय, तबखल निकट तुलान॥

हना लषण उर पविसम शायक[6] ❀ लगत गिरे रण महि अहिनायक
पुनि खलदल भा प्रबल अपारा ❀ भक्षण लाग भालु कपिधारा
चले पराय कीशं[7] भयभीता ❀ अब न बचब करि कालप्रतीता
निशिचर धारि भालुकपिवेखा ❀ लागे खान कपिन अस देखा
कपि डर कीश भालु डर अच्छा ❀ आपु आपु भय मिलन अनिच्छा
कोउ न काहु निकट नियराई ❀ जो जेहि पाव ताहि तेहि खाई
पुनि शठ साधि विभीषणरूपा ❀ गहि अंगद हनुमत कपिभूपा
काहु न यह माया कछु जानी ❀ कपट मिलाप विभीषण ठानी
दो० तेहि अवसर जागे लषण, देखा सेन विनाश।
अहिरावणछल पवनसुत, समुझत उड़ा अकाश॥

गर्जेउ जाय भयंकर भारी ❀ फटेउ हृदय सुनि निशिचरझारी
मायाहत शर लषण पँवारा ❀ उघरे कपट कपाट अपारा
नारान्तक की माया बीती ❀ गयउ यज्ञशाला अतिप्रीती
खोजेसि सकल समग्री ताकी ❀ कीन्ह अरंभ विजय निज ताकी

१ लक्ष्मण २ फ़ौज ३ पत्थर ४ टुकड़े ५ फूल ६ बाण ७ बानर॥

यज्ञ आसुरी तेहिं तब ठाना ❀ पशुसमूह बलि कारण आना
भये निशामुख श्रमवश सैना ❀ फिरे सुमिरि सब राजिवनैना
तुरत अहीश राम पहँ आये ❀ सहित अनी प्रभुपद शिर नाये
कृपाअयन निरखे मृगशाखा ❀ प्रभु श्रमछीन दीन अभिलाखा

दो० टिकहु थलन सबसन कहा, सुखसागर रघुनाथ।
पाय सुआयसु भालु कपि, चले सुमिरि श्रीनाथ॥

तब रघुराज अनुज उर लावा ❀ निज आसन समीप बैठावा
मघवासुतसुत[2] अरु हनुमाना ❀ इनसम भाग्यवंत नहिं आना
अमलाम्बुजपद गहि निजपानी ❀ परशे सबन सनेह भवानी
जाम्बवन्त लंकेश हरीशा[3] ❀ प्रभुसमीप सब मुदित मुनीशा
अनुज सखा नारान्तक करणी ❀ युद्धप्रबलता बहुविधि वरणी
शिवप्रताप तेहि अमित प्रतापा ❀ मरण न दीन्हे बहु सन्तापा
सुने वचन रघुपति मुसुकाने ❀ अतिसनेह हरचरित बखाने
सुनहु सकल हम शम्भु न आना ❀ जिनहिं भेद ते वश अज्ञाना

दो० जे सुमिरहिं शिव सहउमा[4], ते जानहु मम प्रीय।
शंकरभजहिंसोमोहिंभजहिं, मोहिंसोशंभुअतीय॥

चारि पदारथ करतल ताके ❀ बसहिं महेश उमा उर जाके
जो मम प्रण शिव सदा निबाहा ❀ सो जयदेव न संशय आहा
सुख कलत्र जय विजय विभूती ❀ शंकर सुमिरत होइ अकूती[5]
भक्ति मोरि शंकर आधीना ❀ जलाधीन जिमि जीवन मीना
कह आश्चर्य नरान्तक येहा ❀ मोपर गिरिपति[6] परम सनेहा
सुमिरहु सदा विश्व यक साथा ❀ कपट त्यागि सब नावहु माथा
होइहि विजय धीर मन धरहू ❀ वेगि उपाव पाव सुख करहू
शम्भु उपासन कर मम दासा ❀ तातँ हृदय धरि दृढ़ विश्वासा

दो० जो नर चाहत भक्ति मम, सो छल कपट दुराइ।

१ राम २ अंगद ३ सुग्रीव ४ पार्वती ५ अप्रमाण ६ महादेव ७ पुत्र॥

शिवासमेत गिरीशपद, निशिदिन रहु मन लाइ॥

मन क्रम वचन शम्भुपद आसा ❀ करहिं ताहि उर सब गुण वासा
निर्भय करि जो हरपद नेहू ❀ ताउर रमासहित मम गेहू
भववारिधि लांघहिं बिनु खेवहिं ❀ यह बिचारि बुधजन भव सेवहिं
भवभंजन यह हित उपदेशा ❀ अनुजहिं सखहिं बुझाव रमेशा
ध्रुव[2] वाणी सुनि अति सुखपावा ❀ अहिपति रामचरण शिरनावा
अंगद हनूमान नल नीला ❀ कपिपति अरु ऋक्षेश सुशीला
सहित विभीषण ये जन साता ❀ मुनि श्रीमुख हरयश विख्याता
रामहिं शिवहिं एक जे जाने ❀ भय तजि नाम जपत हर्षाने

दो० कहत सुनत इतिहास शुचि[3], निशिबीती युग याम।
खगपति[4] आये देवऋषि, जित शोभित श्रीराम॥

राम लषण सुखसींव विराजे ❀ मार अपार निहारत लाजे
निरखि मानि मुनि हृदय सनाथा ❀ उठे हरषि प्रभु रघुकुलनाथा
शीश नाइ प्रभु आसन दीन्हा ❀ आशिष पाइ हरषि हित कीन्हा
मुनि नीके हरिरूप विलोका ❀ यथा इन्दु[5] लखि सुख लह कोका
पुलकिगात तब कह ऋषिराजा ❀ सुनहु नाथ आयउँ जेहि काजा
चतुरानन पठवा मोहिं स्वामी ❀ यदपि कृपानिधि अन्तरयामी
सदा अनाथ नाथ भगवाना ❀ विनय[6] विरञ्चि करिय परिमाना
अबलगि होन प्रभात न पावहि ❀ तबलागि हरिहरिसुत लै आवहि

दो० जपत निरन्तर नाम तव, सो जानहु भगवान।
विधिविरहित इत आनिये, तेहि कहँ कृपानिधान॥

नारान्तकवध है तेहि हाथा ❀ दधिबल नाम भक्त तव नाथा
नाथ बहुत याहि खलहिं खिलावा ❀ रण विलोकि देवन दुख पावा
अब रघुवीर करहु सोइ बाता ❀ बिनु प्रयासँ रिपु मरै प्रभाता
तेहिमन तुमहिं न सोह लराई ❀ दधिबल सम्मुख करहु बुलाई

१ महादेव २ निश्चय ३ पवित्र ४ गरुड़ ५ चंद्रमा ६ विनती ७ श्रम॥

सविनय नाइ शीश वर भाखी ❁ गमने मुनि प्रभुछवि उर राखी
नारद गये जबहिं विधिलोका ❁ वायुतनय[1] तन राम विलोका
तात तुरत तुम गमनहु तहँवां ❁ वारिधि[2]महँ धवलागिरि जहँवां
तहँ दधिबल रह ध्यान लगाये ❁ बहुत दिवस चलिगये सुभाये

दो० अहै तपोबल तेजस्वी, तात तासु ढिग जाइ।
मन प्रसन्न करि चतुरई, आनहु वेगि बुलाइ॥

पवनकुमार पाइ अनुशासन[3] ❁ चले वन्दि पद हरषि उदास न
वेगवन्त धावा कपि कैसे ❁ वर नाराच धनुष ते जैसे
लोक अर्द्धघटिका तेहि ठामा ❁ पहुँचे वायुपुत्र बलधामा
देखि तरणि[4]सम तासु प्रकासा ❁ ठाढ़ भयउ कपि मन्दिरपासा
दण्डयुगल[5] कपि अस्थित रहेऊ ❁ हियमहँ राम राम अस कहेऊ
उत रण होई होत प्रभाता ❁ इत इनकर चित हरिपदराता
क्षण इक कपि मन कीन्ह विचारा ❁ प्रभुपहँ चलिये कवन प्रकारा
जो गृहसहित चलहुँ लै येही ❁ नहिं अस आयसु भक्त[6]सनेही

दो० बुधजनशीश शिरोरतन, अति लजात मुनिराय।
ताहि जगावन हेतु तब, कीन्हे अमित उपाय॥

अचल ध्यान कपि तासु प्रमाना ❁ तजि प्रवीणता भजि भगवाना
रामचरण चित कपिवर दयऊ ❁ दण्ड एक औरौ चलि गयऊ
विधिप्रेरित दधिबल लघुशंका ❁ करन उठेउ देखा भट बंका
जय श्रीराम वायुसुत बोला ❁ मुनिदधिबल निज लोचँन[7] खोला
बूझि हरिहिं कीशहिं उर लाई ❁ कही परस्पर दोउ कुशलाई
पुनि हनुमान कहेउ सुनु भ्राता ❁ चलहु विलोकन त्रिभुवन त्राता
सानुज राम सुखद पदकंजा[8] ❁ जिनमकरन्द शिला अघगंजा
जेहिलागि तप कीन्हेउ बहुकाला ❁ सो तुम पर अनुकूल कृपाला

दो० धूरजटी[9] हृद मानसर, बसत हंस इव जोइ।

१ हनुमान् २ समुद्र ३ आज्ञा ४ सूर्य्य ५ दो ६ श्रीराम ७ नेत्र ८ कमल ६ शिव॥

सादर तुम कहँ लेन लगि, पठवा मोहिं प्रभु सोइ ॥

मुनि शुभ वचन सुकंठकुमारा ❀ हरिपहँ हरिसँग तुरत सिधारा
आये नाथ निकट मृगशाखा ❀ देखे पद जे हर हिय राखा
रहेउ चरण गहि प्रीतिसमेता ❀ दधिबल निरखेउ कृपानिकेता[१]
सानुज हरषि मिले सुखपुंजा[२] ❀ तासुपाणि गहि निजकर कंजा
बैठे ताहि निकट बैठावा ❀ तेहि अवसर सुकंठ तहँ आवा
निरखि तनय कपिपति हर्षाना ❀ मिलत प्रेम नहिं जाय बखाना
गइ मणि पन्नग[३] जनु पुनि पाई ❀ देही देह मीन[४] जल जाई
सुख सुग्रीव लहेउ प्रभु भेंटे ❀ अवगुण तीन ताहि क्षण मेटे

सो॰ दधिबल बालिकुमार, मिले परस्पर हरषि हिय ।
भयउ आइ भिनुसार, न्हाइ सबन प्रभुपद गहे ॥

जहँ तहँ समर करन बनचारी ❀ चले कहत जय लषण खरारी
उहां नरान्तक प्रात प्रबोधा ❀ रथ चढ़ि चलेउ भयंकर योधा
निशिचर हठी सुभट सँग ताके ❀ आयुध अखिल भयानक वाके
महि संग्राम निशाचर ठाढ़े ❀ असित[५] मेघसम अतिरिस बाढ़े
करि माया तेहिं गात छिपावा ❀ भयउ प्रकट तब प्रभु ढिग आवा
दधिबललखा सखा चलि आयउ ❀ भुजा पसारि हरषि उठि धायउ
नारान्तकहु दीख गुरुभाई ❀ मुदित मिले उर उभय[६] अघाई
भेंटि सप्रेम बूझि कुशलाता ❀ निजनिज दशा कीन्ह विख्याता

दो॰ हरिपतिपूत प्रवीणअति, सुनि तेहि मुख विख्यात ।
लगे बुझावन मित्र कहँ, सुनहु वीयँपति बात ॥

वंशस्वभाव सत्य कवि कहहीं ❀ फलपियूष[८] विषबेलि न लहहीं
समुझहु तात विचारि निदाना ❀ किये अनीति न जग कल्याना
पितुचरित्र समुझहु मनमाहीं ❀ रामविरोध कतहुँ जय नाहीं
तुम प्रवीण भा मतिभ्रम कैसे ❀ कूप धसत बिक[९] बाट अनैसे

१–२ राम ३ सर्प ४ मछली ५ काला ६ दोनों ७ गरुड़ ८ अमृत ९ भेड़ ॥

तुमहुँ कीन्ह दिन चारि लड़ाई ❀ जानेउ भालु कीश बल भाई
ताजि कुमंत्र सम्भव अज्ञाना ❀ कहहु पाहि रघुवर भगवाना
सफल करहु भव[1] प्रभुपदपरशी ❀ करिहैं अभय तोहिं समदरशी
मानहु सीख मोरि सुखकारी ❀ प्रणतपाल रघुवीर खरारी

दो० शारंगीशर तरणिसम, दशमुखवपु खग[2] लेख।
जरतराखु यहिसमय तव, करि विज्ञान विशेख॥

सुनत वचन गुरुभ्राता केरा ❀ नारान्तक भा क्रोध घनेरा
कहनलाग खल ताहि कुभाँती ❀ सहज सभीत कीश दिन राती
बालिहिं हतेउ जौन तपधारी ❀ भा अंगद तिन आज्ञाकारी
दधिबल यह वानर कुलरीती ❀ हमरे करहिं न अरिसन प्रीती
यह कहि प्रभुसम्मुख सो धावा ❀ दधिबल लूम[3] लपेटि टिकावा
नारान्तक कह रे शठ वानर ❀ तव मन नहीं मोर डर कादर
छांड़हुँ मूढ़ समुझि गुरुभाई ❀ कहि अस पेलि चला कठिनाई
तब सुकंठसुत क्रोधित भयऊ ❀ सपदि[4] जाय आगे गहिलयऊ

दो० नारान्तक दधिबल भिरे, निरखिभालु[5]अरुकीश।
लगेकरनसँग निशिचरन, कहि जय श्रीजगदीश॥

छं० कपि शूर सँहारे शिलनमारि।
बहु मर्दि करे सिकता[6] पहारि॥
भट बिक्षाबल वासी जितेक।
कपि मारि गिराये बच न एक॥
रह एकाकी मनुजाद[7] वीर।
किय द्वन्द्वयुद्ध उरगाद धीर॥
दोउ लरत लहैं छवि एक भाँति।
गिरिकज्जल कञ्चन उभयगाति॥

१ संसार २ पक्षी ३ पूंछ ४ जल्दी ५ रीछ ६ बालू ७ राक्षस॥

युगघटिका ऊपर एक याम।
दोउ भिरे समर बलयोगधाम॥
पुनि भा अलक्ष सो करत युद्ध।
बलवन्त उभय श्रमगत सक्रुद्ध॥
कह षटप्रकार श्रुति युद्धरीति।
सुख मानेउ सुर देखत सुप्रीति॥
लखि पुत्र इकाकी पुलकिगात।
कह बालि अनुज अति हर्ष बात॥

दो॰ जाम्बवन्तसन वचन मृदु, कहेउ सुकण्ठ पुकारि।
कहहु तात दधिबल कबहिं, दनुजहि डारिहिमारि॥

समर करत लागी अति बांरा[1] ❁ यह सुनि बोलेउ ऋक्षभुवारा
क्षणक हृदय धरु धीर कपीशा ❁ दधिबल गुरुसन लही अशीशा
सो अवसर अब आनि तुलाना[2] ❁ एकपलकमहँ मरिहि अयाना[3]
सुनि हरीश मनमहँ अति हर्षे ❁ तबहीं विबुध सुमन[4] बहु वर्षे
दधिबल धन्य भुजाबल तोरा ❁ रण कौतूहल कीन्ह न थोरा
हरि अस्तुति सुनिहरि अरिकोपा[5] ❁ कपिहि सहित खल भयो अलोपा
योजन अयुत अष्ट नभ जाई ❁ दधिबल सुमिरि हृदय रघुराई
गहि मनुजाद भूमि पर डारा ❁ करि चिकार तेहिं मरती बारा[6]

छं॰ मरतीसमयअतिशब्दकरिदशमुखतनयहरिहरकही।
तजिअधमतनुधरिसुभगवपु द्विजनाथमुनिसोगतिलही
जेहिहेतु सुर मुनि सिद्ध नानाभाँति जप तप मख किये।
श्रीराम करुणासिन्धु सो फल सहजहीं दनुजै दिये॥

दो॰ देखि तासुगति विबुधगण, अभय भये खगराई[7]।
प्रमुदित वर्षे पुहुपझरि[8], रामचरण चितलाइ॥

१ देर २ पहुँचा है ३ मूर्ख ४ फूल ५ नारान्तक ६ समय ७ गरुड़ ८ फूलों की वर्षा॥

मरा नरान्तक दधिबल जानी ❀ तोरि तासु शिर गहि निजपानी
रुण्ड तासु गहि लङ्क सँचारी ❀ आपु चले जहँ नाथ खरारी
निशा प्रवेश भूत बैताला ❀ चढ़ि चढ़ि वाहन वेष कराला
जाइ समरमहि सुखद समेता ❀ उदर अघाइ गये सुनिकेता
आयउ दधिबल प्रभुके पासा ❀ देखि हरषि उठि रमानिवासा
सानुज राम मिले अति प्रीती ❀ परम प्रसाद नाथ नित रीती
बैठे रघुकुलमणि दोउ भाई ❀ सखासुतहिं निजदिग बैठाई
हनुमदादि मर्कट प्रभु पाहीं ❀ नाइ माथ प्रमुदित मनमाहीं

दो० रामरजायसु[२] पाय पुनि, होइ विगत श्रम कीश[३]।
तबदधिबलप्रभुचरणगहि, आगे धरि अँरिशीश ॥

समुझि कौतुकी रिपुसुतशीशा ❀ सुनहु सुकंठ कह्यो जगदीशा
नारान्तक कर शीश धरावहु ❀ यतन समेत न सेंत चलावहु
नाथ रजाय पाइ कपिराई ❀ राखेउ सो शिर यतन कराई
पुनि दधिबल हरि कीन्ह बड़ाई ❀ श्रीपति श्रीमुख बहुविधि गाई
जासु बड़ाई किय बड़ ईशा ❀ सबहिं सराहत सो जगदीशा
दधिबल प्रभु अनुकूल[५] विलोकी ❀ सफल जन्म लखि भयउ विशोकी
प्रेमवारि लोचन कर जोरी ❀ बोलेउ गिरा भक्तिरस बोरी
जगदात्मा तुम्हार यह बाना ❀ सन्तत करहु दीन मनमाना

दो० वनचर पामर सहज जड़, बुद्धि विषम अज्ञान।
विरद स्वभाव कृपालु प्रभु, सेवक सुयश बखान॥

तव यशविमल विदित अवधेशा ❀ कहत न पार पाव श्रुति शेशा
सो मैं प्रभु कहि सकहुँ न कैसे ❀ पर्णवणिक[६] गजमणिगुण जैसे
अस कहि हरि हरिपद लपटाने ❀ देखि प्रेम कपि विबुध सिहाने
अनअभिमान ताहि प्रभु जाना ❀ दीनदयालु बहुरि सनमाना
माँगु बच्छ जो वर मनभावा ❀ सुनि दधि बलकरि विनय सुनावा

१ दधिबल को २ आज्ञा ३ वानर ४ बैरी ५ प्रसन्न ६ कुंजरा ७ ललचाने ॥

नाथ तुम्हार रूप गुण नामा ❀ करहिं निरन्तर मम उर धामा
हों मोहिं प्रिय पद्पंकज तैसे ❀ कामिहिं वाम सूम[2] धन जैसे
एवमस्तु तुम कहँ वर येहू ❀ मम इच्छा कछु औरौ लेहू

सो० बिछावलपुर राज, करहु तात तुम मुदितमन ।
छाँड़ि और सबकाज, शिवाशम्भुपद भक्ति दृढ़[3] ॥

यहै काज शुभ संतत[4] चहई[5] ❀ ज्वइ स्वइ प्राणी मम मन रहई
उमा राम कर यहै स्वभाऊ ❀ जनपर प्रेम न कबहुँ दुराऊ
मोहिं निजरूप रमापति जानै ❀ ताते बारम्बार बखानै
जानेउ श्रीरघुवरस्वभाव जिन ❀ सब तजि प्रेम भक्ति माँगी तिन
राम भक्ति वारीश जासु उर ❀ महिमा तासु कहत श्रुति बुधवर
सर[6] सरिता सब सुखद सुहाये ❀ सहजहिं आवत बिनहिं बुलाये
ताहि शुद्ध शिष दै रघुनाथा ❀ पुनि प्रभु कीन्ह तिलक निजहाथा
शारंगी रुख सबहीं पावा ❀ अंगदादि ताकहँ शिरनावा

दो० पाइ भक्तिवर राज्यवर, प्रभु चरणन शिर नाइ ।
दधिबल पठयउ तुरतहठ, सुनहु ऋषय शुभभाइ ॥

तन मन रामचरण अनुरागे ❀ दधिबल राज्य करत भय त्यागे
सेन सहित श्रीराजिव[7]नयना ❀ राजत देखि विबुधचितचयना
हनत दुन्दुभी विविध प्रकारा ❀ पुहु[8]पमाल झरि करत अपारा
करि अस्तुति वर विनय पुकारे ❀ आंदितिसूनु निजगेह सिधारे
उतहिं जहाँ बैठा दशभाला ❀ बिनु शिर वपु सो परा विशाला
देखि विकल आपै उठि धावा ❀ पहिंचानत तेहि अतिदुखपावा
हा नारान्तक कहि खल परा ❀ महा खँभार लंकगढ़ भरा
मयतनयाआदिक निशिचरीं ❀ शोकसमाज विषादहिं भरीं

दो० बिन्दुमतीआदिक सकल, नारान्तक की नारि ।
व्याकुल महिलोटाहिंपरी, निजतनुदशा बिसारि ॥

१ कमल २ लोभी ३ मजबूत ४ हमेशा ५ वेद ६ तालाब ७ श्रीराम ८ पुष्प ॥

करि विलाप जिमि निशिचरनारी ❀ सो न जात कहि सुनु नभचारी
शोकजलधि लंकालघुतरणी ❀ चढ़ीं सकल निशिचरकी घरणी
बूड़त जानि न कतहुँ निबाहा ❀ कहत मँदोदरि तब सब पाँहा
बिन्दुमती कर गहि बैठाई ❀ नागसुता की कथा सुनाई
सुनत सुनयनाकी शुचिकरणी ❀ धारि धीर नारान्तक घरणी
सबन बुझाय सासुपग लागी ❀ तजि धन धाम स्वामि अनुरागी
मातु करहु सो यतन उतावल ❀ मिलहुँ जाइ जेहिपद निजरावल
सुनु सुतबधू न आन उपाऊ ❀ जाउ जहाँ राजत रघुराऊ

दो० जेहिविधि गई सुलोचना, तेहिगतितुमभयत्यागि।
निरखहुरघुपतिपदकमल, लावहु पतिशिर माँगि॥

सासुवचन सुनि जानि प्रभाता ❀ उठिनिशिचरतिय पुलकितगाता
जातरूप मय यान मँगाई ❀ निजकर गहि पतिदेह चढ़ाई
चली अकेलि यान चढ़ि जबहीं ❀ तासु सवति इक आई तबहीं
नाम चित्ररेखा अस तासू ❀ गुणगणसुभग बसैं तनु जासू
सो करि विनय चढ़ी तेहि संगा ❀ कीन्ह पयान रँगी शत रंगा
रथ अकेल आवत कपि देखा ❀ कार्थर डरपे हृदय विशेखा
आवत मानि सबल रिपु कोऊ ❀ नल अरु नील सुभट वर दोऊ
आये धाय सपदि तब आगे ❀ युगल नारि तन निरखन लागे

दो० समुझिबूझि वृत्तांन्तदोउ, फिरि आये प्रभुपास।
वन्दि कंजपद उभय कह, सुनिये रमानिवास॥

नाथ नरान्तक की दोउ नारी ❀ आवत शरण प्रणत भयहारी
सुनि रघुवीर हृदय मुसुकाने ❀ उतहि टिकावहु सखा सयाने
सुनि प्रभुवचन बहुरि सो धाये ❀ कटकविगत रथ दूरि टिकाये
बिन्दुमती चितरेखा दूनो ❀ विनय हमारि कीश अस सूनो
कहहु जाइ तुम प्रभुहिं बुझाई ❀ केहिकारण हम दरश न पाई

१ गरुड़ २ नौका ३ स्त्री ४ जल्दी ५ सुवर्ण ६ डरपोक ७ हाल ८ कमल ९ फ़ौज॥

हम अबला कपि विनवैं तोहीं ❀ बूझि नाथसन कहबै मोहीं
नारि विनय सुनि कपि दोउ भले ❀ नीति विचारि रामपहँ चले
विनती नारि जाय नल वरणी ❀ सुनि बिहँसे प्रभु तिनकै करणी

दो० परम मृदुल रघुनाथचित, कहत सन्त बुध वेद।
तिनकहँ देत न दरश प्रभु, सुनु खगेश[1] सो भेद॥

प्रेम परीक्षा हित रघुनायक ❀ कौतुक करत समर सुखदायक
नाथ सखा तब बहुरि बुझाई ❀ पुनि नल नारिनपास पठाई
कह नल सुनहु नरान्तक नारी ❀ दर्शन तुमहिं न देत खरारी[2]
तुम गृह जाहु वचन मम मानी ❀ बोलीं सो तिय वचन सयानी
हम अबला दर्शनहित आई ❀ नयन सफल बिनु किमि गृहजाई
यहिविधि करत बिनय दोउनारी ❀ कीशन[3] कटक[4] कीन्ह पैठारी
आवत निकट जानि रिपुरवनी[5] ❀ यद्यपि पतिव्रत हैं सुखभवनी
तदपि नाथ तिन्हैं दरश न देहीं ❀ जाइ निकट विनती की तेहीं

दो० प्रभु सीतापति जगतपति, सुर नरपति रघुनाथ।
देउ दरश करुणायतन, दीनबन्धु श्रुति[6]माथ॥

बोले राम न सो तिय बोलीं ❀ विमलज्ञान पतिव्रत अनुडोलीं
नाथ सत्य यह नीति बखानै ❀ पुरुष न परतिय सपनेहुँ जानै
प्राकृत पुरुषनकी यह रीती ❀ जिनके हृदय कपटपर प्रीती
समदरशी कछु दोष न स्वामी ❀ सो विचारु प्रभु अन्तरयामी
आरतबन्धु विलम्ब न कीजै ❀ करुणाकर वर दर्शन दीजै
नहिं बोले प्रभु पुनि सो कहई ❀ तव यश अस श्रुति गावत अहई
गौतमनारि नाथ तुम तारी ❀ अधम जाति भिलनी निस्तारी
सुनि मम हृदय परी परतीती ❀ अब प्रभु कस देखिय विपरीती

दो० तारितारि अधमन अमित[7], बार बार श्रम जान।
ताते करत अनाकनी[8], मोरि ओर भगवान॥

१ गरुड़ २ श्रीराम ३ वानरन ४ फ़ौज ५ शत्रु की स्त्री ६ वेद ७ बहुतेरे ८ आगा-पीछा॥

प्रभु मुसुकाहिं न उत्तर देहीं ❀ तिनकी प्रेम परीक्षा लेहीं
विकल भई नारान्तकबाला ❀ बार बार करि विनय विशाला
धर्म्म धुरन्धर प्रभु अवतारा ❀ केवल पतिव्रत धर्म्म हमारा
जो हम सत्य सत्य तुम स्वामी ❀ द्रवहु[2] वेगि उर अन्तरयामी
वृथा करत कत प्रभु श्रुति भाषा ❀ पूजत नाथ न मम अभिलाषा
लीन भयउ पतिप्राण नाथमहँ ❀ अर्द्धभाग हम कहहु जाइँ कहँ
वृन्दाचरित नाथ सुधि करहू ❀ विनय हमारि वेगि उर धरहू
विनय प्रीति सत धर्म जनाई ❀ परीं प्रेमवश महि अकुलाई

दो० पाहि पाहि रघुवंशमणि, हतहु न विरद[3] प्रतीति।
प्रीतम प्रीति न करत डर, तुमकहँ नाथ अनीति॥

सती निराश विनय सुनि बानी ❀ पुलके दीनदयालु भवानी
दुहुन लीन्ह निज कटक[4] बुलाई ❀ परीं युगल प्रभुपदतर आई
तिन्हैं उठाय राम बैठावा ❀ जगदीश्वर मृदु[5] वचन सुनावा
बिन्दुमती तैं परम सयानी ❀ पतिपदरति दृढ़ हृदय समानी
बहुत करहुँ का तव गुण गाना ❀ मांगु वेगि वर जो मनमाना
सुनत वचन लोचन[6] जल बाढ़ीं ❀ जोरि युगलकर दोऊ ठाढ़ीं
प्रभु तुम दानि देवतरुवरसे ❀ पद जलजात देवसरि सरिसे
परम पवित्र भई हम दोऊ ❀ हमसम धन्य नारि नहिं कोऊ

छं० कोधन्य हमसम नारि जग महँ सुनहु श्रीरघुनायकं।
दै दरश कीन्हीं पतित[7] पावन[8] नाथ सुरअरि घायकं॥
हे कृपासागर यश उजागर देहु वर सुरभावरं।
जेहि मिलैं पति कहँ जाइ बिनुश्रम बढ़ै तव यश श्रीधरं॥

सो० यह कहि बिन्दुकुमारि, सहितसौंति प्रभुपद [illegible]।
तिन्हैं उठाइ खरारि, जगत्राता इमि कहत्[illegible]नि॥

धरहु धीर तुम जनि अब डरहू ❀ निजपति लेहु भवन सुख करहू

१ स्त्री २ प्रसन्न होवो ३ विनयकर्त्ता ४ फ़ौज ५ कोमल ६ नेत्र ७ [illegible]च ८ पवित्र॥

कहेउ देव हमकहँ यह नीका ❁ हमहुँ कहत अब भावत जीका
गिरिजासहित गिरीश[1] विरागी ❁ नाथ तुम्हार दरश अनुरागी
नारदादि सनकादिक जेते ❁ जप तप करहिं विविधविधितेते
तेउ न कबहुँ हमारी नाईं ❁ देखहिं पद जलजात अघाईं
हरिदर्शन लवलेश प्रमाना ❁ जगके सब सुख नाहिं समाना
अमिय[2] अघाइ गरल को खाई ❁ विनय हमारि यहै सुरसाई
देहु कन्तशिर सपदि मँगाई ❁ दया शील सागर रघुराई

दो० नारान्तक कर शीश तब, दीन्ह मँगाइ रमेश।
पाइ स्वामिशिर मुदित[3] ह्वै, बोलीं दोउ उरगेश॥

नाथ विनय हम औरौ करहीं ❁ दारु[4]विना हम केहिविधि जरहीं
सुखसागर सुनि वचन प्रमाना ❁ हनुमत अंगदादि भट नाना
कह प्रभु सखा लङ्कमहँ धावहु ❁ चन्दन अगुरु भार बहु लावहु
पाइ राम अनुशासन धाये ❁ लंकागढ़ गृह गृह सचुपाये
कपिन शोधि चन्दन बहु भारा ❁ लाये जहँ श्रीनाथ उदारा
कह रघुवीर सुनहु लंकेशा[5] ❁ तात यहै बड़ हित उपदेशा
बिन्दुमती जहँ चाहत ठांऊ ❁ दाहभार सँग तुम तहँ जाऊ
दशाकन्धर कर बैर विहाई ❁ चिता चारु शुचि देहु बनाई

दो० रघुवर आज्ञा धारि शिर, उठे दशानन भाइ।
अयुत भार चन्दन अगुरु, तेहि सँग चले लिवाइ॥

जहाँ जरी मघवाजित नारी ❁ तेही गह्वर[6] शुचि चिता सँवारी
उहवां अपर सौति पगुधारी ❁ बिन्दुमती मन भाव पियारी
मूर्च्छित परीं प्रथम सुधि नाहीं ❁ चलीं सुनत गति दुख मनमाहीं
चलीं चतुर्दश निशिचरि कैसे ❁ निरखि दवांस[7] मृगीगण जैसे
हा हा बिन्दुमती पति प्यारी ❁ कहाँ गई तुम हमहिं बिसारी
पहुँचीं रुदन विलाप तहँ सोऊ ❁ हरषीं हृदय विलोकत दोऊ

१ महादेव २ अमृत ३ खुशी ४ काठ ५ बिभीषण ६ स्थान ७ वनाग्नि॥

षोड़श निशिचरि भईं सभागी ❁ मन वच क्रम पतिपद अनुरागी
सकल नहाय मृतक नहवाई ❁ सुमिरत हृदय राम गतिदाई

दो॰ उत दशकन्धर जगेउ शठ, सुनेउ श्रवण सबहेतु।
संग मँदोदरि आदि तिय, गमना लै खगकेतु[2]॥

बाजत ढोल कपिन सुनि काना ❁ अपने मन तिन अस अनुमाना
आव युद्धहित उत कोउ वीरा ❁ हमकहँ ठाढ़ करत यहि तीरा
कीश अयुत तब प्रभुपहँ आये ❁ पूरण प्रेम चरण शिरनाये
नाथ उतहिं दशकन्धर जाता ❁ कीश एक कह सुनु जनत्राता[3]
प्रभु कह कुमुद तुरत तुम धावहु ❁ वेगि[4] विभीषणकहँ लै आवहु
रामरजाय[5]सु शिर धरि धाये ❁ सपदि विभीषण पहँ सो आये
तात तुमहिं रघुराज बुलावा ❁ सुनत लङ्कपति आतुर आवा
हेतु पतोहुन कहि समुझावा ❁ कुमुदसहित रघुपतिपहँ आवा

दो॰ मोहनिशा तहँ तरुणरवि, तिनचरणन शिरनाइ।
भाग्यवन्त रावण अनुज, बैठेउ प्रभु रुख पाइ॥

दशमुख तियनसहित गा तहवां ❁ बिन्दुमती चितरेखा जहवां
देखत अति बिलखा विबुधारी ❁ करुणा करत निशाचरिभारी
सासु ससुर कहँ देखि दुखारी ❁ ज्ञान नवीन नरांतक नारी
कहि शुचिगाथ सबन समुझाई ❁ स्वामिसमेत चितापर आई
यथायोग्य बैठीं सब तैसे ❁ पतिगृह रहत रहीं नित जैसे
अग्नि दीन्ह ज्वाला अतिधाई ❁ पहुँचीं सुरपुर[7] सब तिय जाई
देखि दशा तिनकी सुररमनी[8] ❁ तिनहि सराहि भवननिज गमनी
रावणसहित युवति निजगेहा ❁ गयउ भरो सासति सन्देहा

छं॰ सन्देह सासति[9] भरो रावण सहित दारन गृह गयो।
इमिमयसुतादिकनिशिचरिनलखि विकलबलमूर्छितभयो॥
दशमाथगति देखत विपुल बिलखैं निशाचर निशिचरी।

---

१ कारण २ गरुड़ ३ रक्षक ४ शीघ्र ५ आज्ञा ६ रावण ७ स्वर्ग ८ देवी ९ डर॥

सन्ताप शोक विलाप भय भ्रम कटक लंकामहँ परी ॥

दो० रामविरोधिहिं जस उचित, तस दिन पहुँचा आइ।
सो विचार करि लंकगढ़, उतरी विपति बजाइ ॥

इहां देव देवायसु जाना ❀ वर आसन शोभित भगवाना
यथायोग्य बैठे मृगशाखा ❀ सब कीन्हे प्रभुपद अभिलाखा
रिपु बड़ मरेउ हर्ष[1] सबके मन ❀ पुनि पुनि हेरत सुभगश्यामतन
तिनकी रुचि लखि दीनदयाला ❀ शिवयश गावहु कह्यो कृपाला
भरद्वाज प्रभु आज्ञा पाई ❀ गावहिं कपि कलकंठ लजाई
डमरु भृङ्गि शृङ्गी[3] करतारी ❀ घ्राण पाणि मुखते वनचारी
गोंडरतन्तु वेणु मंजीरा ❀ शंख मृदंग नाद गम्भीरा
नृत्यत कीश भाव दिखरावत ❀ शिवासहित शिवकीरतिगावत

छं० शिवशिवाकीरतिविमलगावतभालुवानरसुखभरे।
अहिनाथयुत रघुनाथछवि निरखत सकल चितपदधरे ॥
प्रभुदेखि कौतुक अनुजसहित सखनबखानत श्रीमुखम्।
तुलसी पगे यहिध्यान जे जन पाइहैं नित यश सुखम् ॥

सो० गत रजनी युग याम, तब कीशन करुणाअयन।
करि पूरण मनकाम, सबन कहेउ राजहु थलन ॥

बैठे निज निज थल रणधीरा ❀ अनुजसहित राजत रघुवीरा
सुषमासींवँ सेन युत राजैं ❀ जयजयध्वनि कपिभालुसमाजैं
उमा चरित यह रुचिर सुहावा ❀ नाथकृपा मैं तुमहिं सुनावा
अपर चरित गिरिराजकुमारी ❀ सुनहु कहत तव प्रीति निहारी
उहां मध्यनिशि रावण जागा ❀ कोउ कोउ सचिवँ सिखावन लागा
उग्र सिखावन कहि बुध वाके ❀ थके न कछु मन मानै ताके
रावण मन औरै कछु लसई ❀ मेटि को सकै जो विधि उर बसई

१ डाह २ आनन्द ३ सींग ४ मर्य्याद ५ पार्वती ६ अर्धरात्र ७ मन्त्री ॥

प्रभुविरोध करि चह कल्याना ❀ मोहविवश सो शठ अज्ञाना

इति क्षेपक

निशा सिरानि भयो भिनुसारा ❀ लगे भालु कपि चारिहुँ द्वारा
सुभट बुलाय दशानन बोला ❀ रणसम्मुख जाकर मन डोला
सो अबहीं बरु जाहु पराई ❀ रणसम्मुख भागे न भलाई
निजभुजबल मैं वैर बढ़ावा ❀ देहौं उतर जो रिपु चढ़ि आवा
अस कहि मरुत[1]वेग रथ साजा ❀ बाजहिं सकल जुझाऊ बाजा
चले वीर सब अतुलित[2] बली ❀ जनु कज्जल की आँधी चली
अशकुनअमित[3] होहिं तेहि काला ❀ गनै न भुजबलगर्व विशाला

छं० अतिगर्वगिनतनशकुनअशकुनस्रवहिंआयुधहाथते।
भट गिरहिं रथते वाजि गज चिक्करत भाजत साथते॥
गोमायु[4] गृध्र कराल खर[5] रव श्वान रोवहिं अतिघने।
जनु कालदूत उलूक बोलहिं वचन परम भयावने॥

दो० ताहिकिसम्पतिशकुनशुभ, स्वप्नेहु मन विश्राम।
भूत द्रोहरत मोहवश, रामविमुखरतकाम॥

चली निशाचरअनी अपारा ❀ चतुरङ्गिणी चमू बहु धारा
विविध भाँति वाहन रथ याना ❀ विपुल वरण पताक ध्वजनाना
चले मत्त गजयूथ घनेरे ❀ मनहुँ जलद[6] मारुत के प्रेरे
वरण वरण वर दैत्य निकाया ❀ समरशूर जानहिं बहु माया
अति विचित्र वाहिनी विराजी ❀ वीर वसन्त सेन जनु साजी
चलत कटकदिकसिन्[7]धुर डगहीं ❀ क्षुभित पयोधि कुधर डगमगहीं
उठी रेणु रवि गयउ छिपाई ❀ पवन थकित वसुधा अकुलाई
पणवनिशान घोर रव[8] बाजहिं ❀ महाप्रलय के जनु घन गाजहिं
भेरि नफीरि बाजु सहनाई ❀ मारू राग सुभट सुखदाई
केहरिनाद वीर सब करहीं ❀ निजनिजबल पौरुष उच्चरहीं

१ हवा २ बे प्रमाण ३ बेहद ४ सियार ५ गधा ६ मेघ ७ दिग्गज ८ शब्द॥

कहै दशानन सुनहु सुभट्टा ❀ मर्दहु भालु कपिन के ठट्टा
हौं मारिहौं भूप दोउ भाई ❀ अस कहि सम्मुख फौज चलाई
यह सुधि सकल कपिन जब पाई ❀ धाये करि रघुवीर दुहाई

छं० धाये विशाल कराल मर्कट[1] भालु कालसमान ते।
मानहुँ सपक्ष उड़ाहिं भूधरवृन्द[2] नाना बान ते॥
नख दशन[3] शैल महाद्रुमायुध[4] सबल शङ्क न मानहीं।
जय राम रावण मत्तगज मृगराज सुयश बखानहीं॥

दो० दुहुँदिशि जयजयकार करि, निजनिज जोरी जानि।
भिरे वीर इत रघुपतिहिं, उत रावणहिं बखानि॥

रावण रथी विरथ रघुवीरा ❀ देखि विभीषण भयउ अधीरा
अधिक प्रीति उर भा सन्देहा ❀ वन्दि चरण कह सहित सनेहा
नाथ न रथ नाहीं पदत्राना ❀ केहिविधि जीतब रिपु बलवाना
सुनहु सखा कह कृपानिधाना ❀ जेहि जय होइ सो स्यन्दन[5] आना
शौरज धर्म्म जाहि रथचाका ❀ सत्य शील दृढ़ ध्वजा पताका
बल विवेक[6] दम परहित घोरे ❀ क्षमा दया समता रजु जोरे
ईशभजन सारथी सुजाना ❀ विरति चर्म्म सन्तोष कृपाना
दान परशु बुधि शक्ति प्रचण्डा ❀ वर विज्ञान कठिन कोदण्डा[7]
संयम नियम शिलीमुख नाना ❀ अमल अचल मन त्रोणसमाना
कवच अभेद्य विप्रपद पूजा ❀ यहिसम विजय उपाय न दूजा
सखा धर्म्ममय अस रथ जाके ❀ जीतनकहँ न कतहुँ रिपु[8] ताके

दो० महाअजय संसार रिपु, जीति सकै सो वीर।
जाके अस रथ होइ दृढ़, सुनहु सखा मतिधीर॥
सुनत विभीषण प्रभुवचन, हरषि गहे पदकञ्ज।
यहिविधि मोहिं उपदेश किय, राम कृपा सुखपुञ्ज॥

१ वानर २ पर्वत समूह ३ दाँत ४ हथियार ५ रथ ६ ज्ञान ७ धनुष ८ शत्रु॥

उत प्रचार दशकन्धर, इत अङ्गद हनुमान।
लड़त निशाचर भालु कपि, करि निज निज प्रभु आन

सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना ❀ देखहिं रण[2] नभ चढ़े विमाना
मैं हूं उमा रहेउँ तेहि सङ्गा ❀ देखत रामचरित रण रङ्गा
सुभट समररस दुहुँदिशि माते ❀ कपि जयशील रामबल ताते
एक एक सन भिरहिं प्रचारहिं ❀ एक एक मर्दहिं महि[3] पारहिं
मारहिं काटहिं धरणि पछारहिं ❀ शीशतोरि शीशनसन मारहिं
उदर बिदारहिं भुजा उपारहिं ❀ गहिपद अवनि पटकि भट डारहिं
निशिचर भट महि गाड़हिं भालू ❀ ऊपर डारि देहिं बहु बालू
वीर बलीमुख[4] युद्ध विरुद्धा ❀ देखिय विपुल काल जनु क्रुद्धा

छं० क्रुद्धेकृतान्तसमान कपि तनु स्रवत[5] शोणितराजहीं।
मर्दहिंनिशाचरकटकभट बलवन्तजिमिघन गाजहीं॥
मारहिं चपेटन काटि दाँतन डारि लातन मींजहीं।
चिक्करहिंमर्कटभालुछल बलकरहिं जेहि खलछीजहीं॥
धरि गाल फारहिं उर बिदारहिं गल अँतावरि मेलहीं।
प्रह्लादपति जनु विविधतनु धरि समरअङ्गन[6] खेलहीं॥
धरु मारु काटि पछारु घोरगिरा गगन महि भरिरही।
जयराम जो तृणते कुलिशकर कुलिश[7]तेकरुतृणसही॥

दो० निजदलबिचलविलोकितब, बीस भुजा दशचाप।
चला दशानन कोप करि, फिरहुफिरहुकरिदाप॥

धावा परम क्रोध दशकन्धर ❀ सम्मुख चले हूह करि बन्दर
गहि कर पादप उपल पहारा ❀ डारहिं तेहि पर एकहिबारा
लागहिं शैल वज्र तनु तासू ❀ खण्ड खण्ड ह्वै फूटहिं आसू
चला न अचल रहा रथ रोपी ❀ रणदुर्मद रावण अतिकोपी

१ सौगन्द २ संग्राम ३ पृथ्वी ४ वानर ५ बहना ६ आँगन ७ वज्र॥

इत उत झपटि दपटि कपि योधा ❁ मर्दै लाग भयो अतिक्रोधा
चले पराय भालु[2] कपि[3] नाना ❁ त्राहि त्राहि अङ्गद हनुमाना
पाहि पाहि रघुवीर गुसाई ❁ यह खल खाय काल की नाई
तेहि देखे कपि सकल पराने ❁ दशहु चाप शायक संधाने

छं० संधानिधनुशरनिकरछांड़ेसि उरगजिमिउरलागहीं
रहपूरिशरधरणीगगन दिशिविदिशिकहँ कपिभागहीं॥
भा अतिकोलाहल विकलदल कपिभालु बोलहिंआतुरे।
रघुवीर करुणासिन्धु आरतबन्धु जनरच्छा करे॥

दो० बिचलत देखी निजकटक, कटि निषङ्ग धनु हाथ।
लच्मण चले सकोप तब, नाइ रामपद माथ॥

रे खल का मारसि कपि भालू ❁ मोहिं विलोकु तोर मैं कालू
खोजत रहेउँ तोहिं सुतघाती ❁ आजु निपाति जुड़ावौं छाती
असकहि छांड़ेसि बाणप्रचण्डा ❁ लच्मण किये तुरत शतखण्डा
कोटिन आयुध रावण डारे ❁ तिलप्रमाण प्रभु काटि निवारे
पुनि निजबाणन कीन्ह प्रहारा ❁ स्यन्दन भञ्जि सारथी मारा
शत शत शर मारे दशभाला ❁ गिरिशृङ्गनजनु प्रविशहिं व्याला
पुनि शतशर मारे उरमाहीं ❁ परेउ अवनि तनुसुधि कछु नाहीं
उठा प्रबल पुनि मूर्च्छा जागी ❁ छाँड़ेसि ब्रह्मदत्त जो सांगी

छं० जो ब्रह्मदत्त प्रचण्डशक्ति अनन्तउर लागी सही।
पर्यो विकलवीर उठावदशमुख अतुलबलमहिमा रही॥
ब्रह्माण्डभुवन विराज जाके एकशिर जिमि रजकनी।
तेहि चह उठावन मूढ़ रावन जान नहिं त्रिभुवनधनी॥

दो० देखत धावा पवनसुत, बोलत वचन कठोर।
आवत तेहि उरमहँ हनेसि, मुष्टिप्रहार प्रघोर॥

१ भागि २ ऋच्छ ३ बन्दर ४ समूह ५ सर्प ६ आकाश ७ कमर ८ मारि॥

जानु टेकि कपि भूमि न परेऊ ❀ उठा सँभारि बहुरि रिस भरेऊ
मुष्टिक एक ताहि कपि मारा ❀ परेउ शैल[1] जिमि वज्रप्रहारा
मूर्च्छा गई बहुरि सो जागा ❀ कपिबल विपुल[2] सराहनलागा
धिकधिक मम पौरुष धिक मोही ❀ जो तैं जियत उठा सुरद्रोही
असकहि कपि लक्ष्मणकहँ लावा ❀ देखि दशानन विस्मय पावा
कह रघुवीर समुझि जिय भ्राता ❀ तुम कृतान्तभक्षक सुरत्राता[3]
सुनत वचन उठि बैठ कृपाला ❀ गगन[4] गई सो शक्ति कराला
पुनि कोदण्ड[5] बाण गहि धाये ❀ रिपु[6]सम्मुख अतिआतुर आये

छं० आतुरबहोरिविभञ्जिस्यन्दनमारितेहिव्याकुलकियो
गिरयोधरणिदशकन्धर विकलतनुबाणशतवेध्योहियो
सारथी रथ घालि दूसर ताहि लङ्का लै गयो।
रघुवीर बन्धुप्रतापपुञ्ज बहोरि प्रभुचरणन नयो॥

दो० उहां दशानन जाय करि, करन लाग कछु यज्ञ।
जय चाहत रघुपतिविमुख, शठहठवश अतिअज्ञ॥

इहां विभीषण सब सुधि पाई ❀ सपदि जाय रघुपतिहिं सुनाई
नाथ करै रावण इक यागा ❀ सिद्ध भये नहिं मरहि अभागा
पठवहु नाथ वेगि भट बन्दर ❀ करहिं विध्वंस आव दशकन्धर
प्रात होत प्रभु सुभट पठाये ❀ हनुमदादि अंगद सब धाये
कौतुक कूदि चढ़े कपि लंका ❀ पैठे रावण भवन अशंका
जबहीं यज्ञ करत तेहिं देखा ❀ सकल कपिन भा क्रोध विशेखा
रणते भागि निलज गृह आवा ❀ इहां आइ बँक[7]ध्यान लगावा
अस कहि अंगद मारेउ लाता ❀ चितव न शठ स्वारथ मनराता

छं० नहिंचितवजबकपिकोपितबगहिदशनलातनमारहीं।
धरि केश नारि निकारिबाहर जब सो दीन पुकारहीं॥
तब उठा कोपि कृतान्तसम गहि चरण वानर डारई।

१ पर्वत २ बहुत ३ रक्षक ४ आकाश ५ धनुष ६ शत्रु ७ तोड़कर ८ बगुला॥

यहिबीच कपिन विध्वंसकृत मख देखि मनमहँ हारई ॥

दो० मखविध्वंसिकपिकुशल सब, आये रघुपति पास।
चला दशानन क्रोधकरि, तजिजीवनकीआस ॥

चलत होहिं तेहि अशुभ भयङ्कर ❀ बैठहिं गृध्र उड़ाहिं शिरनपर
भयउ कालवश काहु न माना ❀ कहेसि बजावहु युद्धनिशाना
चली तमीचर अनी[1] अपारा ❀ बहु गज रथ पदचर असवारा
प्रभुसम्मुख खल धावहिं कैसे ❀ शलभ[2]समूह अनल[3]कहँ जैसे
इहां देव सब विनती कीन्हीं ❀ दारुण[4] विपति हमहिं यहि दीन्हीं
अब जनि नाथ खेलावहु एही ❀ अतिशय दुखित होति वैदेही
देववचन सुनि प्रभु मुसुकाना ❀ उठि रघुवीर सुधारेउ बाना
जटाजूट बांधी दृढ़ माथे ❀ सोहत सुमन[5] बीच बिच गाथे
अरुण[6]नयन वारिद तनुश्यामा ❀ अखिललोकलोचन अभिरामा
कटितट परिकर कसे निषंगा ❀ कर कोदण्ड कठिन शारंगा

छं० शारंगकर सुन्दर निषंग शिलीमुखाँ[7]करकटिकस्यो।
भुजदण्ड पीन[8] मनोहरायत उर धरासुरपद लस्यो ॥
कह दासतुलसी जबहिं प्रभुशर चाप कर फेरन लगे।
ब्रह्माण्ड दिग्गज कमठ अहि महिसिन्धु भूधर डगमगे ॥

दो० हर्षे देव विलोकि छवि, वर्षहिं सुमन अपार।
जयजय प्रभुगुणज्ञानबल, धाम हरण महिभार ॥

ताही बीच निशाचर अनी ❀ कसमसाति आई अतिघनी
देखि चले सम्मुख कपि भट्टा ❀ प्रलयकाल के जिमि घनघट्टा
शक्ति शूल तलवार चमकहिं ❀ जनु दशादिशिदामिनी[9] दमकहिं
गजरथ तुरँग चिकार कठोरा ❀ गर्जत मनहुँ बलाहक[10] घोरा
कपि लंगूर विपुल नभ छाये ❀ मनहुँ इन्द्रधनु उगेउ सुहाये

१ फ़ौज २ पतिंगा ३ अग्नि ४ कठिन ५ फूल ६ लाल ७ बाणसमूह ८ मोटे ९ बिजली १० मेघ॥

उठी रेणु मानहुँ जलधारा ❀ बाणबुन्द भइ वृष्टि अपारा
दुहुँ दिशि पर्वत करहिं प्रहारा ❀ वज्रपात जनु बारहिं बारा
रघुपति कोपि बाण झरिलाई ❀ घायल भे निशिचर समुदाई
लागत बाण वीर चिक्करहीं ❀ घुर्मिघुर्मि घायल महि परहीं
स्रवहिं शैल जनु निर्झर[1] वारी ❀ शोणितसरि कादर भयकारी

छं० कादर भयंकर रुधिरसरिता बाढ़ि परम अपावनी।
दोउ कूल[2] दल रथ रेत चक्र अवर्त्त बहति भयावनी॥
जलजन्तु गज पदचर तुरँग खर विविध वाहन को गने।
शर[3] शक्ति तोमर सर्प चाप तरंग चर्म कमठ घने॥

दो० वीर परहिं जनु तीर तरु, मज्जा बह जनु फेन।
कादर देखत डरहिं जिय, सुभटनके मन चैन॥

मज्जहिं भूत पिशाच वेताला ❀ केलि करहिं योगिनी कराला
काक[4] कन्धधरि भुजा उड़ाहीं ❀ एकते एक छीनि धरि खाहीं
एक कहहिं ऐसिउ बहुताई ❀ शठ तुम्हार दारिद्र न जाई
कहरत भट घायल तट गिरे ❀ जहँ तहँ मनहुँ अर्द्धजल परे
खैंचत आंत गृध्र तट भये ❀ जनु बंसी खेलत चित दये
बहु भट बहे चढ़े खग जाहीं ❀ जिमि नावरि खेलहिं सरि माहीं
योगिनि भरिभरि खप्पर साजहिं ❀ भूत पिशाच बधू नभ नाचहिं
भट कपाल[5] करताल बजावहिं ❀ चामुण्डा नानाविधि गावहिं
जम्बुक[6]निकर कटक कटकटहीं ❀ खाहिं अघाहिं हुआहिं दपटहीं
कोटिन रुण्ड मुण्ड बिनु डोलहिं ❀ शीश परे महि जयजय बोलहिं

छं० बोलहिं जो जयजय रुंडमुंडप्रचंड शिरबिनु धावहीं।
संग्राम भूमि अगुह्य जूझहिं सुभट सुरपुर[7] पावहीं॥
निशिचर वरूथ[8] विमर्दि गर्जहिं भालु कपि दर्पित भये।

१ झरना २ किनारा ३ बाण ४ पक्षी ५ मुण्ड ६ सियार ७ स्वर्ग ८ समूह॥

संग्रामआंगन सुभट सोहहिं रामशरनिकरन हये ॥

दो० हृदय विचारेसि दशवदन, भा निशिचर संहार ।
मैं अकेल कपि भालु बहु, माया करौं अपार ॥

देवन प्रभुहिं पयादेहिं देखा ❀ उर उपजा अति क्षोभ विशेखा
सुरपति[1] निजरथ तुरत पठावा ❀ हर्षसहित मातलि लै आवा
तेजपुंज[2] रथ दिव्य अनूपा ❀ बिहँसि चढ़े कोशलपुरभूपा[3]
चंचल तुरँग[4] मनोहर चारी ❀ अजर अमर मनसा गतिकारी
रथारूढ़ रघुनाथहिं देखी ❀ धाये कपि बल पाइ विशेखी
सही न जाय कपिन की मारी ❀ तब रावण माया विस्तारी
सो माया रघुवीरहिं बांची ❀ सब काहू मानी करि सांची
देखी कपिन निशाचर अनी[5] ❀ बहु अंगद कपि लक्ष्मण धनी

छं० बहु बालिसुतलक्ष्मण कपीशविलोकि[6] मर्कट अपडरे ।
जनुचित्रलिखितसमेतलक्ष्मण जहँ सो तहँ चितवतखरे ॥
निजसेनचकितविलोकिहँसिधनुतानिशरकोशलधनी ।
माया हरी हरि निमिष[7]महँ हरषी सकल मर्कट[8] अनी ॥

दो० बहुरि राम सबतन चितय, बोले वचन गँभीर ।
द्वन्द्व युद्ध[9] देखहु सकल, श्रमित भये अतिवीर ॥

असकहि रथ रघुनाथ चलावा ❀ बिप्र चरण पङ्कज शिरनावा
तब लङ्केश क्रोधकरि धावा ❀ गर्जि तर्जि प्रभुसम्मुख आवा
जीतेहु जे भट संयुग माहीं ❀ सुनु तापस मैं तिनसम नाहीं
रावण नाम जगत यश जाना ❀ लोकप जेहिके बन्दीखाना
खर दूषण विराध तुम मारा ❀ बधेउ व्याधइव बालि बिचारा
निशिचर सुभट सकल संहारे ❀ कुम्भकरण घननादहिं मारे
आजु वैर सब लेउँ निबाही ❀ जो रणभूमि भागि नहिं जाही

१ इन्द्र २ समूह ३ श्रीराम ४ घोड़ा ५ सेना ६ देखि ७ पल ८ बानर ९ युद्ध ॥

आजु करौं खल काल हवाले ❀ परेउ कठिन रावण के पाले
सुनि दुर्वचन कालवश जाना ❀ कहेउ बिहँसि तब कृपानिधाना
सत्य सत्य तव सब प्रभुताई ❀ जनि जल्पसि देखब मनुसाई

छं० जनिजल्पनाकरिसुयशनाशहिनीतिसुनु शठकरुक्षमा ।
संसार महँ पूरुष त्रिविध पाटल[1] रसाल[2] पनस[3] समा ॥
इक सुमनप्रद इक सुमन फल इक फलै केवल लागहीं ।
इककहहिं करत न करहिं कहहीं करहिं यकनहिंबागहीं ॥

दो० रामवचनसुनि बिहँसिकह, मोहिं सिखावहु ज्ञान ।
वैर करत तब नाहिं डरेहु, अब लागत प्रियप्रान ॥

कहि दुर्वचन क्रोधि दशकन्धर ❀ कुलिश[3]समान लाग छांड़न शर
नानाकार शिलीमुख धाये ❀ दिशिअरुविदिशिगगनमहि छाये
अनल बाण छांड़ेउ रघुबीरा ❀ क्षणमहँ जरे निशाचर तीरा
छांड़ेसि ब्रह्मशक्ति खिसियाई ❀ बाणसंग प्रभु फेरि पठाई
कोटिन चक्र त्रिशूल पँवारे[4] ❀ बिनु प्रयास प्रभु काटि निवारे
निफल होइँ रावणशर कैसे ❀ खलके सकल मनोरथ जैसे
तब शतबाण सारथिहि मारेसि ❀ परेउ भूमि जय राम पुकारेसि
राम कृपा करि सूत उठावा ❀ तब प्रभु परम क्रोधकहँ पावा

छं० भये क्रुद्धयुद्ध विरुद्ध रघुपति त्रोणशायक कसमसे ।
कोदण्ड[5]ध्वनिअतिचण्डसुनि मनुजाद[6]भयमारुतग्रसे ॥
मन्दोदरीउर कम्प कम्पित कमठ भूधर अतित्रसे ।
चिक्करहिं दिग्गज दशन[7] गहि महि देखि कौतुक सुरहँसे ॥

दो० तान्योचाप जो श्रवण[8]लगि, छांड़े विशिख कराल ।
रघुनायक शायक चले, लहलहातजनुव्याल ॥

चले बाण सपक्ष जनु उरगा ❀ प्रथमहिं हते सारथी तुरगा

---

१ आंब २ कटहल ३ वज्र ४ फेंके ५ धनुष ६ राक्षस ७ दाँत ८ कान ॥

रथ विभञ्जि हति केतु पताका ❀ गर्जा अति अन्तरबल थाका
तुरत आनिरथ चढ़ि खिसियाना ❀ छांड़ेसि अस्त्रशस्त्र विधिनाना
विफल होइँ सब उद्यम ताके ❀ जिमि परद्रोह निरत मनसाके
तब रावण दश शूल चलाये ❀ बाजि[1]चारि महि मारि गिराये
तुरँग उठाय कोपि रघुनायक ❀ खैंचि शरासन छांड़े शायक
रावणशिर सरोज वनचारी ❀ चले रघुनाथ शिलीमुख धारी
दश दश बाण भाल दशमारे ❀ निसरि गये चल रुधिर पनारे
स्रवत[2] रुधिर धावा बलवाना ❀ प्रभु पुनि कृत धनुशर सन्धाना
तीस तीर रघुवीर पँवारे ❀ भुजन समेत शीश महि पारे
काटत ही पुनि भये नवीने ❀ राम बहोरि भुजा शिर छीने
कटित झटित पुनि नूतन भये ❀ प्रभु बहुबार बाहु शिर हये
पुनि पुनि प्रभु काटहिं भुजशीशा ❀ अति कौतुकी कोशलाधीशा
रहे छाइ नभ शिर अरु बाहू ❀ मानहुँ अमित केतु अरु राहू

छं० जनु राहुकेतुअनेक नभपथ स्रवतशोणित धावहीं।
रघुवीर तीर प्रचण्ड लागहिं भूमि गिरन न पावहीं॥
इक एकशर शिरनिकर छेदे नभउड़त इमि सोहई।
जनु कोपि दिन[3]करकरनिकर जहँतहँ विधुन्तुद[4] पोहई॥

दो० जिमिजिमिप्रभुहततासुशिर, तिमितिमिहोहिंअपार।
सेवत विषय विवर्द्ध जिमि, नितनित नूतन[5] मार॥

दशमुख दीख शिरनकी बाढ़ी ❀ बिसरा मरण भई रिस गाढ़ी
गर्जेउ मूढ़ महा अभिमानी[6] ❀ धायहु दशहु शरासन तानी
समरभूमि दशकन्धर कोपा ❀ वरषि बाण रघुपति रथ तोपा
दण्ड एक रथ देखि न परेऊ ❀ जनु निहार[7] महँ दिनकर दुरेऊ
हाहाकार सुरन सब कीन्हा ❀ तब प्रभु कोपि धनुष कर लीन्हा
शर निवारि रिपुके शिर काटे ❀ ते दिशि विदिशि गगन[8] महि पाटे

१ घोड़ा २ चुवत ३ सूर्य ४ राहु ५ मये ६ अहंकारी ७ कुहिरा ८ पृथ्वी॥

काटे शिर नभमारग धावहिं ❀ जयजय ध्वनिकहिभयउपजावहिं
कहँ लक्ष्मण हनुमन्त कपीशा ❀ कहँ रघुवीर कोशलाधीशा

छं० कहँरामकहिशिरनिकरधावहिंदेखिमर्कटभजिचले।
सन्धानि धनु रघुवंशमणि तव शरन शिर बेधे भले॥
शिरमालिका गहि कालिका तहँ वृन्द वृन्दनिसों मिलीं।
करि रुधिर सरमज्जन मनहुँ संग्राम[2] वट[3] पूजन चलीं॥

दो० पुनि रावण अतिकोपकरि, छांड़ी शक्ति प्रचण्ड।
सम्मुख चली विभीषणहिं, मनहुँ कालकरदण्ड॥

आवत देखि शक्ति खरधारा ❀ प्रणतारति हर विरद सँभारा
तुरत विभीषण पाछे मेला ❀ सम्मुख राम सहेउ सो शेला
लगी शक्ति मूर्च्छा कछु भई ❀ प्रभुकृत खेल सुरन विकलई
देखि विभीषण प्रभु श्रम पायउ ❀ गहिकर गदा क्रोधकरि धायउ
रे कुभाग्य शठ मन्द कुबुद्धे ❀ तैं सुर नर मुनि नाग विरुद्धे
सादर शिवकहँ शीश चढ़ाये ❀ एक एक के कोटिन पाये
तोहिकारण खँल अबलगि बाचा ❀ अब तव काल शीश पर नाचा
रामविमुख शठ चहसि सम्पदा ❀ अस कहि हनेसि मांझ उर गदा

छं० उरमांझ गदाप्रहार घोर कठोर लागत महिपर्‌यो।
दशवदन[6] शोणितस्रवत[7] पुनि सम्भारिधायो रिसभर्‌यो॥
दोउभिरे अतिबल मल्लयुद्ध विरुद्ध एकहि इक हने।
रघुवीरबल गर्वित विभीषण घाउ नहिं ताको गने॥

दो० उमा[8] विभीषण रावणहिं, सम्मुख चितव कि काउ।
भिरतसोकालसमानअब, श्री रघुवीर प्रभाउ॥

देखा श्रमित विभीषण भारी ❀ धावा हनूमान गिरिधारी
रथ तुरंग सारथी निपाता[9] ❀ हृदय मांझ मारेउ तेहि लाता

१ शिरोंकी माला २ युद्ध ३ बरगद ४ दुष्ट ५ हृदय ६ रावण ७ चुवाता ८ पार्वती ९ मारा॥

ठाढ़ रहा अति कम्पितगाता ❀ गयउ विभीषण जहँ जनत्राता
पुनि रावण तेहि हतेउ प्रचारी ❀ चला गगन कपि पूंछ पसारी
गहेसि पूंछ कपिसहित उड़ाना ❀ पुनि नभ भिखो प्रबल हनुमाना
लरत अकाश युगल सम योधा ❀ हनत एक एकहि करि क्रोधा
शोभित नभ छलबल बहु करहीं ❀ कज्जलगिरि सुमेरु जनु लरहीं
बुधिबल निशिचर परै न पारा ❀ तब मारु[2]तसुत प्रभुहिं सँभारा

छं० संभारि श्रीरघुवीर धीर प्रचारि कपि रावण हन्यो ।
महिपरतपुनिउठिलरतदेवन युगलकहँजयजयभन्यो ॥
हनुमन्त सङ्कट देखि मर्कट भालु[3] क्रोधातुर चले ।
रणमत्तरावण सकल सुभट प्रचण्ड भुजबल दलिमले ॥

दो० राम प्रचारे वीर सब, धाये कीश प्रचण्ड ।
कपिदल विपुलविलोकितेइँ, कीन्हप्रकटपाखण्ड ॥

अन्तर्द्धान भयो क्षण एका ❀ पुनि प्रकटेसि खलरूप अनेका
रघुवर कट[4]क भालु कपि जेते ❀ जहँ तहँ प्रकट दशानन तेते
देखे कपिन अमित दशशीशा ❀ भागे भालु विकल भट कीशा
चले बलीमुख धरहिं न धीरा ❀ त्राहि त्राहि लक्ष्मण रघुवीरा
दशदिशि कोटिन धावहिं रावन ❀ गर्जहिं घोर कठोर भयावन
डरे सकल सुर चले पराई ❀ जय की आश तजहु रे भाई
सब सुर जिते एक दशकन्धर ❀ अब बहु भये तकहु गिरिकन्दर
रहे विरं[5]चि शम्भु मुनि ज्ञानी ❀ जिनानिज प्रभुकी महिमा जानी

छं० जानहिं प्रतापते रहे निर्भय कपिनरिपु मान्योफुरे ।
चलेबिचलिमर्कटभालु सकल कृपालुपाहि भयातुरे ॥
हनुमन्त अङ्गद नील नल बलवन्त अति रणबांकुरे[6] ।
मर्दहिं दशानन कोटि कोटिन कपट भूभट आंकुरे[7] ॥

१ रक्षक २ हनुमान् ३ रीछ ४ सेना ५ ब्रह्मा ६ बहादुर ७ कुल ॥

दो० सुर वानर देखे विकल, हँसे कोशलाधीश।
साजिशरासन निमिषमहँ, हरे सकल दशशीश॥

प्रभु क्षणमहँ माया सब काटी ❀ जिमि रविउदय जाइ तमफाटी
रावण एक देखि सुर हर्षे ❀ फिरे सुमन पुनि प्रभुपर वर्षे
भुज उठाय रघुपति कपि फेरे ❀ फिरे एक एकन के टेरे
प्रभुबल पाइ भालु कपि धाये ❀ तरलतमकि संयुगमहि आये
करत प्रशंसा सुर तेइँ देखे ❀ भयउँ एक मैं इनके लेखे
शठहु सदा तुम मोर मरायल ❀ असकहि कोपि गगनपथधायल
हाहाकार करत सुर भागे ❀ शठहु जाहु कहँ मोरे आगे
देखि विकल सुर अंगद धावा ❀ कूदि चरण गहि भूमि गिरावा

छं० गहि भूमिपाग्यो लातमाग्यो बालिसुतप्रभुपहँगयो।
संभारि उठि दशकण्ठ घोर कठोर रव गर्जतभयो॥
करि दाप धनुष चढ़ाइ दश सन्धानि शर बहु बर्षई।
किय सकल भट घायल बियाकुल देखि निजबल हर्षई॥

दो० तब रघुपति लङ्केशके, शीश भुजा शर चाप।
काटे भये नवीन पुनि, जिमि तीरथ के पाप॥

शिर भुज बाढ़ि देखि रिपुकेरी ❀ भालु कपिन रिस भई घनेरी
मरत न मूढ़ कटे भुज शीशा ❀ धाये कोपि भालु अरु कीशा
बालितनय मारुत नल नीला ❀ द्विविद कपीश पनस बलशीला
विटप महीधर करहिं प्रहारा ❀ सोइ गिरितरुगहि कपिन सो मारा
एक नखन रिपु वपुष बिदारी ❀ भागि चलहिं यक लातन मारी
तब नलनील शिरन चढ़ि गयऊ ❀ नखन ललाट बिदारत भयऊ
रुधिर बिलोकि सकोप सुरारी ❀ तिनहिं धरनकहँ भुजा पसारी
गहे न जाहिं शिरनपर फिरहीं ❀ जनु युग मधुप कमलवनचरहीं

१ धनुष २ सूर्य्य ३ अन्धकार ४ फूल ५ कपटी ६ आकाशमार्ग ७ देवता ८ वृक्ष ९ भौंरा॥

कोपि कूदि दोउ धरेसि बहोरी ❀ महि पटकेसि गहि भुजा मरोरी
पुनि सकोपि दशधनुकरलीन्हा ❀ शरन मारि घायल कपि कीन्हा
हनुमदादि मूर्च्छित सब बन्दर ❀ पाय प्रदोष हर्ष दशकन्धर
मूर्च्छित देखि सकल कपिवीरा ❀ जाम्बवन्त धावा रणधीरा
संग भालु भूधर तरु भारी ❀ मारन लगे प्रचारि प्रचारी
भयो क्रुद्ध रावण बलवाना ❀ गहि पद महि पटकै भट नाना
देखि भालुपति निजदल घाता ❀ कोपि मांझ उर मारेसि लाता

छं० उरलातघातप्रचण्डलागत विकलरथतेमहिगिरा।
गहिभालुबीसहुकरनमानहुँ कमलनिशिबसमधुकरा॥
मूर्च्छितविलोकिबहोरिपदहति भालुपतिप्रभुपहँगयो।
निशिजानिस्यन्दनघालितेहि तब सूतयत्नकरतभयो॥

दो० मूर्च्छा गइ कपिभालु तब, सब आये प्रभु पास।
सकल निशाचर रावणहिं, घेरि रहे अति त्रास॥

तेहि निशिमहँ सीतापहँ जाई ❀ त्रिजटा कहि सब कथा बुझाई
शिर भुज बाढ़ि सुनत रिपुकेरी ❀ सीता उर भै त्रास घनेरी
मुख मलीन उपजी मन चिंता ❀ त्रिजटासन बोली तब सीता
होइहि कहा कहसि किन माता ❀ केहिविधिमरिहि विश्व दुखदाता
रघुपति शर शिर कटे न मरई ❀ विधि विपरीत चरित सब करई
मोर अभाग्य जिआवत ओही ❀ जेहि हौं हरिपदकमल बिछोही
जेइ कृत कनक कपटमृग झूठा ❀ अजहुँ सो दैव मोहिंपर रूठा
जेहि विधिमोहिंदुखदुसहसहावा ❀ लक्ष्मणकहँ कटुवचन कहावा
रघुपति विरह विषमशर भारी ❀ तकि तकि बार बार मोहिं मारी
ऐसेहु दुख जो राखु मम प्राना ❀ सोविधिताहि जिआव न आना
बहुविधि करत विलाप जानकी ❀ करि करि सुरति कृपानिधानकी
कह त्रिजटा सुनु राजकुमारी ❀ उर शर लागत मरिहि मुरारी

१ वृक्ष २ रात्रि ३ उदास ४ संसार ५ सोना ६ कडुये ७ रोदन ८ रावण॥

तातें प्रभु उर हतहिं न तेही ❀ यहि के हृदय बसत वैदेही

छं० यहिके हृदय बस जानकी मम जानकी उर वास है।
मम उदर¹ भुवन अनेक लागत बाण सबकर नास है॥
सुनिवचन विरहविषाद मनअतिदेखिपुनित्रिजटाकहा।
अबमरिहिरिपु²यहिभाँतिसुन्दरि तजहुतुम संशय³महा॥

दो० काटतशिर होइहि विकल, छुटि जाइ जब ध्यान।
तब रावण के हृदय शर, मारहिं राम सुजान॥

अस कहि बहु प्रकार समुझाई ❀ पुनि त्रिजटा निज भवन सिधाई
राम स्वभाव सुमिरि वैदेही ❀ उपजी विरहव्यथा अति तेही
निशिहिशशिहिनिन्दतबहुभाँती ❀ युगसम भई बिहाति न राती
करत विलाप⁴ मनहिं मन भारी ❀ राम विरह जानकी दुखारी
जब अति भयो विरह उर दाहू ❀ फरकेउ वाम नयन अरु बाहू
शकुन विचारि धस्यो उर धीरा ❀ अब मिलिहहिं कृपालु रघुवीरा
इहां अर्द्धनिशि रावण जागा ❀ निज सारथिसन खीझन लागा
शठ रणभूमि छुड़ायसि मोहीं ❀ धिकाधिक अधम मन्द मति तोहीं
तेइँ पद गहि बहुविधि समुझावा ❀ भोर भये रथ चढ़ि पुनि आवा
सुनि आगमन दशानन केरा ❀ कपिदल खरभर भयउ घनेरा
जहँ तहँ भूधर⁵ विटप⁶ उपारी ❀ धाये कटकटाइ भट भारी

छं० धाये जो मर्कट⁷ विकटभालु⁸ करालकर भूधरधरा।
अतिकोपि करहिं प्रहार मारत भजि चले रजनीचरा॥
बिचलाइदल बलवन्तकीशन घेरि पुनि रावण लियो।
चहुँदिशिचपेटनमारिनखनबिदारितेहिव्याकुलकियो॥

दो० देखि महामरकट प्रबल, रावण कीन्ह विचार।
अन्तरहित ह्वै निमिषमहँ, कृत माया विस्तार॥

१ पेट २ शत्रु ३ सन्देह ४ रोदन ५ पहाड़ ६ वृक्ष ७ बन्दर ८ रीछ॥

छं० जबकीन्हतेइँपाखण्ड * भये प्रकट जन्तु प्रचण्ड ॥
बैताल भूत पिशाच * कर धरे धनुष नराच ॥
योगिनि गहे करवाल * इक हाथ मनुजकपाल ॥
करि सद्य शोणित पान * नाचहिं करहिं बहुगान ॥
धरु मारु बोलहिं घोर * रहि पूरि धुनि चहुँओर ॥
मुख बाय धावहिं श्वान[1] * तब लगे कीश[2] परान ॥
जहँ जाहिं मर्कट भागि * तहँ बरत देखहिं आगि ॥
भय विकल वानर भालु * पुनि लाग वर्षन बालु ॥
जहँ तहँ थकितकरि कीश * गर्जेउ बहुरि दशशीश[3] ॥
लक्ष्मण कपीश समेत * भये सकल[4] वीर अचेत ॥
हा राम हा रघुनाथ * कहि सुभट[5] मींजहिं हाथ ॥
यहिविधि सकलबल तोरि * तेहिं कीन्ह कपट बहोरि ॥
प्रकटे विपुल हनुमान * धाये गहे पाषान ॥
तिन राम घेरे जाइ * चहुँदिशि वरूथ बनाइ ॥
मारहु धरहु जनि जाइ * कटकटहिं पूंछ उठाइ ॥
दशदिशि लँगूर विराज * तेहि मध्य कोशलराज ॥
छं० तेहिमध्यकोशलराजसुन्दरश्यामतनुशोभालही ।
जनु इन्द्रधनुष अनेक किय वरवारि तुंग तमालही ॥
प्रभुदेखि हर्ष विषाद उर सुर वदति जयजयजयकरी ।
रघुवीर एकहि तीर कोपित निमिषमहँ मायाहरी ॥
माया विगत कपि भालु हर्षे विटपगिरि गहिसबफिरे ।
शरनिकर[8] छांड़े राम रावण बाहु शिर पुनि महिगिरे ॥

१ कुत्ता २ वानर ३ रावण ४ सम्पूर्ण ५ योद्धा ६ छल ७ दुःख ८ समूह ॥

श्रीराम रावण समरचरित अनेक कल्प जो गावहीं।
शतशेष शारद निगम कवि त्यउ तदपि पार न पावहीं ॥
दो० कहे तासु गुणगण कछुक, जड़मति तुलसीदास।
निज पौरुष अनुसार जिमि, मशक उड़हिं आकास ॥
काटि शीश भुज बार बहु, मरै न भट लङ्केश।
प्रभु क्रीड़त मुनि सिद्ध सुर, व्याकुल देखि कलेश ॥
काटत बढ़त शीश समुदाई ❀ जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई
मरै न रिपु श्रम भयउ विशेखा ❀ राम विभीषण तन तब देखा
उमा[2] काल सम जाकी इच्छा ❀ सो प्रभु जनकी लेत परिच्छा
सुनु सर्वज्ञ चराचरनायक ❀ प्रणतपाल सुरमुनिसुखदायक
नाभी कुण्ड सुधा बस याके ❀ नाथ जियत रावण बल ताके
सुनत विभीषण वचन कृपाला ❀ हरषि गहे कर बाण कराला
अशकुन होनलगे विधि नाना ❀ रोवहिं बहु शृगाल[3] खर[4] श्वाना
बोलहिं खग अति आरतहेतू ❀ प्रकट भये जहँ तहँ नभकेतू
दशदिशि दाह होन तब लागा ❀ भये पर्व बिनु रवि उपरागा[5]
मन्दोदरि उर कम्पित भारी ❀ प्रतिमा स्रवहिं[6] नयन मगु वारी
छं० प्रतिमास्रवहिंपविपातनभ अतिवातबहडोलतमही।
वर्षहिं बलाहक रुधिरकचरज अशुभता सक को कही ॥
उतपात अमितविलोकिनभसुरविकलबोलहिंजयजये।
सुर सभय जानि कृपालु रघुपति चाप शर जोरतभये ॥
दो० आकर्षेउ[7] धनु श्रवण लगि, छांड़े शर यकतीश।
रघुनायक शायक[8] चले, मानहुँ काल फणीश ॥
शायक एक नाभिसर शोषा ❀ अपर लगे शिर भुज करि रोषा
लै शिर बाहु चले नाराचा ❀ शिरभुजहीन रुण्ड महि नाचा

१ वेद २ पार्वती ३ सियार ४ गधा ५ ग्रहण ६ चुवैं ७ खैंचेउ ८ बाण ॥

धरणि धसै धर धाव प्रचण्डा ❀ तब शरहति प्रभु कृतयुगखण्डा
गर्जेउ मरत घोर रव[1] भारी ❀ कहाँ राम रण हतौं प्रचारी
डोली भूमि गिरत दशकन्धर ❀ क्षुभित सिन्धुसह दिग्गज भूधर
परेउ भूमि युग खण्ड बढ़ाई ❀ चापि भालु मर्कट समुदाई
मन्दोदरि आगे भुज शीशा ❀ धरि शर चले जहाँ जगदीशा[2]
प्रविशे सब निषङ्ग महँ आई ❀ देखि सुरन दुन्दुभी[3] बजाई
तासु तेज समान प्रभु आनन ❀ हर्षे देखि शम्भु चतुरानन
जय ध्वनि पूरिरही नवखण्डा ❀ जय रघुवीर प्रबल भुजदण्डा
वर्षहिं सुमन देव मुनिवृन्दा ❀ जयकृपालु जय जयति मुकुन्दा

छं० जयकृपाकन्दमु कुन्दद्वन्दहरण शरणसुखदाप्रभो ।
खलदल विदारण परमकारण कारुणीक सदा विभो ॥
सुर सुमन वर्षत सकल हर्षत बाजु दुन्दुभि गहगही ।
संग्राम आँगन राम अङ्ग अनङ्ग[4] बहु शोभा लही ॥
शिरजटा मुकुट प्रसून[5] बिचबिच अतिमनोहर राजहीं ।
जनु नीलगिरिपर तड़ितपटलसमेत उडुगण[6] भ्राजहीं ॥
भुजदण्ड शरकोदण्ड फेरत रुधिरकण तनु अतिबने ।
जनु रायमुनिय तमाल तरुपर बैठि बहु सुख आपने ॥

दो० कृपादृष्टि करि वृष्टि प्रभु, अभय किये सुरवृन्द ।
हर्षे वानर भालु सब, जय सुखधाम मुकुन्द ॥

पति शिर दीख जबहिं मन्दोदरि ❀ मूर्च्छित विकल खसी धरणी[7]परि
युवतिवृन्द रोवत उठि धाई ❀ तेहि उठाय रावणपहँ ल्याई
पतिगति देखि सोकरति पुकारा ❀ छूटे केश न देह सँभारा
उर ताड़ना करै विधि नाना ❀ रोदन करै प्रताप बखाना
तव बल नाथ डोल नित धरणी ❀ तेजहीन पावक[8] शशि तरणी

१ शब्द २ रामचन्द्र ३ नगाड़ा ४ कामदेव ५ पुष्प ६ नक्षत्र ७ पृथ्वी ८ अग्नि ॥

शेष कमठं सहि सकहिं न भारा ❁ सो तनु आजु परा महिछारा
वरुण कुबेर सुरेश समीरा ❁ रणसम्मुख धरु काहु न धीरा
भुजबल जीति काल यम साईं ❁ आजु सो परेउ अनाथ कि नाईं
जगत विदित तुम्हारि प्रभुताई ❁ सुत परिजन बल वरणि न जाई
रामविमुख अस हाल तुम्हारा ❁ रहा न कुल कोउ रोवनहारा
तव वश विधि प्रपञ्च सब नाथा ❁ सब दिशिपति तोहिं नावहिं माथा
अब तव शिर भुज जम्बुक खाहीं ❁ रामविमुख यह अनुचित नाहीं
कालविवश प्रभु कहा न माना ❁ अगजगनाथ मनुज करि जाना

छं० जानेउ मनुज करि दनुजकानन दहनपावक हरि स्वयं।
जेहि नमत शिव ब्रह्मादि सुर पिय भजेहु ना करुणामयं॥
आजन्म ते परद्रोहरत पापौघमय तव तन अयं।
तुमहूँ दियो निजधाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं॥

दो० अहह नाथ रघुनाथसम, कृपासिन्धु को आन।
मुनिदुर्लभ जो परमगति, तुमहिं दीन्ह भगवान॥

मन्दोदरी वचन सुनि काना ❁ सुरमुनि सिद्ध सबहिं सुखमाना
अज महेश नारद सनकादी ❁ जे मुनिवर परमारथ वादी
भरिलोचन रघुपतिहिं निहारी ❁ प्रेम मगन सब भये सुखारी
रोदन करत देखि नर नारी ❁ गये विभीषण मन दुखभारी
बन्धु दशा देखत दुख भयऊ ❁ तब प्रभु अनुजहि आयसु दयऊ
लक्ष्मण तेहि बहुविधि समुझाये ❁ सहित विभीषण प्रभुपहँ आये
कृपादृष्टि प्रभु ताहि बिलोका ❁ करहु क्रिया परिहरि सब शोका
कीन्ह क्रिया प्रभु आयसु मानी ❁ विधिवत देशकालगति जानी

दो० मयतनयादिक नारिसब, देइँ तिलांजलि ताहि।
भवन गईं रघुवीरगुण, गणवरणति मनमाहि॥

आइ विभीषण पुनि शिर नावा ❁ कृपासिन्धु तब अनुज बुलावा

---

१ कच्छप २ इन्द्र ३ सियार ४ ब्रह्मा ५ महादेव ६ आज्ञा ७ छोड़के ८ मन्दोदरी॥

तुम कपीश अङ्गद नल नीला ❀ जाम्बवन्त मारुतसुत शीला
सब मिलि जाहु विभीषण साथा ❀ सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा
पिता वचन मैं नगर न जाऊँ ❀ आपुसरिस प्रिय अनुज पठाऊँ
तुरत चले कपि सुनि प्रभु वचना ❀ कीन्हीं जाय तिलककी रचना
सादर सिंहासन बैठारी ❀ तिलक कीन्ह अस्तुति अनुसारी
जोरि पाँणि[2] सबही शिरनाये ❀ सहित विभीषण प्रभुपहँ आये
तब रघुवीर बोलि कपि लीन्हे ❀ कहि प्रियवचन सुखी सब कीन्हे

छं० कीन्हे सुखी सब कहिसुवाणी बल तुम्हारे रिपुहयो ।
पायो विभीषण राज्यतिहुँपुर यश तुम्हारो नितनयो ॥
मोहिंसहित शुभकीरति तुम्हारी परमप्रीति जो गाइ हैं ।
संसारसिन्धु अपारपार प्रयास[3] बिनु नर पाइ हैं ॥
दो० सुनत राम के वचन मृदु, नहिं अघात कपि पुञ्ज ।
बारहिंबार विलोकि मुख, गहहिं राम पद कञ्ज[4] ॥

पुनि प्रभु बोलिलिये हनुमाना ❀ लङ्का जाहु कहेउ भगवाना
समाचार जानकिहि सुनावहु ❀ तासु कुशलले तुम चलि आवहु
तब हनुमान नगर महँ आये ❀ सुनि निशिचरी निशाचर धाये
पूजा बहुप्रकार तिन कीन्हीं ❀ जनकसुता[5] दिखाय पुनि दीन्हीं
दूरिहिते प्रणाम कपि कीन्हा ❀ रघुपति दूत जानकी चीन्हा
कहहु तात प्रभु कृपानिकेता ❀ कुशल अनुज कपिसेन समेता
सबविधि कुशल कोशलाधीशा ❀ मातु समर जीत्यो दशशीशा
अविचल राज्य विभीषण पावा ❀ सुनि कपि वचन हर्ष उर छावा

छं० अतिहर्षमनतनपुलकलोचन[6]सजलपुनिपुनिकहरमा ।
कादेउँतोहिं त्रैलोक्यमहँ कपि किमपि नाहिं वाणीसमा ॥
सुनु मातु मैं पायउँ अखिल जगराज आज न संशयं ।

१ हनुमान् २ हाथ ३ परिश्रम ४ कमल ५ सीता ६ नेत्र ७ सम्पूर्ण ॥

रणं जीति रिपुदल बन्धुयुत पश्यामि राम निरामयं ॥
दो० सुनुसुत सद्गुणसकलतव, हृदय बसैं हनुमन्त ।
सानुकूल रघुवंशमणि, रहहिं समेत अनन्त ॥

अब सोइ यतन करहु तुम ताता ❀ देखौं नयन श्याम मृदु गाता
तब हनुमन्त राम पहँ आये ❀ जनकसुता कर कुशल सुनाये
सुनि वाणी पतङ्गकुलभूषण ❀ बोलि लिये युवराज विभीषण
मारुतसुत के संग सिधावहु ❀ सादर जनकसुता लै आवहु
तुरतहि सकल गये जहँ सीता ❀ सेवहिं सब निशिचरी विनीता
वेगि विभीषण तिनहिं सिखावा ❀ सादर तिन सीतहिं नहवावा
दिव्य वसन भूषण पहिराये ❀ शिबिका रुचिर साजि पुनि लाये
तेहि पर हरषि चढ़ीं वैदेही ❀ सुमिरि राम सुखधाम सनेही
वेतपाणि रक्षक चहुँपासा ❀ चले सकल मन परम हुलासा
संग लिये त्रिजटा निशिचरी ❀ चली राम पहँ सुमिरत हरी
देखन भालु कीश बहु आये ❀ रक्षक कोटि निवारण धाये
कह रघुवीर कहा मम मानहु ❀ सीतहि सखा पयादेहि आनहु
देखहिं कपि जननी की नाईं ❀ बिहँसि कहा रघुवीर गुसाईं
सुनि प्रभुवचन भालु कपि हर्षे ❀ नभते सुरन सुमन बहु वर्षे
सीतहिं प्रथम अग्निमहँ राखी ❀ प्रकट कीन्ह चह अन्तर साखी

दो० तेहि कारण करुणाअयन, कहे कछुक दुर्वाद ।
सुनत यातुधानी सकल, लागीं करन विषाद ॥

प्रभु के वचन शीश धरि सीता ❀ बोलीं मन क्रम वचन पुनीता
लक्ष्मण होहु धर्म्म के नेगी ❀ पावक प्रकट करहु तुम वेगी
सुनि लक्ष्मण सीता की बानी ❀ विरह विवेक धर्म नयँ सानी
लोचन सजल जोरि कर दोऊ ❀ प्रभुसन कछु कहि सकत न ओऊ
देखि राम रुख लक्ष्मण धाये ❀ पावक प्रकट काठ बहु लाये
प्रबल अनल विलोकि वैदेही ❀ हृदय हर्ष कछु भय नहिं तेही

१ संग्राम २ बशवर्ती ३ लक्ष्मण ४ सूर्य ५ फूल ६ राक्षसी ७ नीति ८ हाथ ॥

जो मन क्रम वच मम उर माहीं ❀ तजि रघुवीर आन गति नाहीं
तौ कृशानु सबकी गति जाना ❀ मोकहँ होहु श्रीखंड[1] समाना

छं० श्रीखंडसमपावकप्रवेशकियसुमिरिप्रभुपदमैथिली।
जय कोशलेश महेशवन्दित चरणरज अतिनिर्मली॥
प्रतिबिम्ब अवलोकित कलङ्क प्रचण्ड पावकमहँ जरे।
प्रभुचरित काहु न लखेउ नभसुर सिद्ध मुनि देखहिं खरे॥
तब अनल भूसुररूप करगहि सत्य श्री श्रुति विदितसो।
जिमि क्षीरसागर इन्दिरा[2] रामहिं समर्पी आनि सो॥
सोइ रामवामविभागराजित रुचिर अतिशोभा भली।
नव नीलनीरज निकट मानहुँ कनक पङ्कजकी कली॥

दो० हरषि सुमन वर्षहिं विबुध[3], बाजहिं गगन निशान।
गावहिं किन्नर अप्सरा, नाचहिं चढ़ी विमान॥
श्रीजानकी समेत प्रभु, शोभा अमित अपार।
देखि भालु कपि हर्षेउ, जय रघुपति सुखसार॥

तब रघुपति अनुशासन[4] पाई ❀ मातलि चलेउ चरण शिरनाई
आये देव सदा स्वारथी ❀ वचन कहहिं जनु परमारथी
दीनबन्धु दयालु रघुराया ❀ देव कीन्ह देवन पर दाया
विश्व[5]द्रोहरत खल अतिकामी ❀ निज अघ गयउ कुमारगगामी
तुम सर्वज्ञ ब्रह्म अविनासी ❀ सदा एकरस सहज उदासी
अकल अगुण अनवद्य अनामय ❀ अजित अमोघ एक करुणामय
मीन कमठ शूकर नरहरी ❀ वामन परशुराम वपुधरी
जब जब नाथ सुरन दुख पावा ❀ नाना तनु धरि तुमहिं नशावा
रावण पापमूल सुरद्रोही ❀ काममोहमद[6]रत अतिकोही
सो कृपालु तव धामँ[7] सिधावा ❀ यह हमरे मन अचरज आवा

१ चन्दन २ लक्ष्मी ३ देवता ४ आज्ञा ५ संसार ६ गर्व ७ स्थान॥

हम देवता परम अधिकारी ❀ स्वारथरत तव[1] भक्ति बिसारी
भव प्रवाह सन्तत[2] हम परे ❀ अब प्रभु पाहि[3] शरण अनुसरे

दो० करि विनती सुर सिद्ध सब, रहे जहँ तहँ करजोरि।
अतिशय[4] प्रेम सरोजभव, अस्तुति करत बहोरि॥

छं० जय राम सदा सुखधाम[5] हरे।
रघुनायक शायक चाप धरे॥
भव वारण[6] दारण सिंह प्रभो।
गुणसागर नागर नाथ विभो॥
तनु काम अनेक अनूप छवी।
गुण गावत सिद्ध मुनीन्द्र कवी॥
यश पावन रावन नाग महा।
खगनाथ यथा करि कोप गहा॥
जनरञ्जन भञ्जन शोक भयं।
गतकोह सदा प्रभु बोधमयं॥
अवतार उदार अपार गुनं।
महि[7] भार विभञ्जन ज्ञानघनं॥
अज व्यापकमेकमनादि सदा।
करुणाकर राम नमामि मुदा॥
रघुवंश विभूषण दूषणहा।
कृतभूप विभीषण दीन रहा॥
गुण ज्ञान निधान अमान अजं।
नित राम नमामि विभुं विरजं॥
भुजदण्ड प्रचण्ड प्रताप बलं।

१ तुम्हारी २ हमेशह ३ रक्षा करो ४ अत्यन्त ५ मन्दिर ६ हाथी ७ पृथ्वी॥

खलवृन्द निकन्द महाकुशलं ॥
बिनु कारण दीनदयालु हितं ।
छविधाम नमामि रमासहितं ॥
भवतारण कारण काजपरं ।
मनसम्भव दारुण[2] दोषहरं ॥
शर चाप मनोहर तूण धरं ।
जलजारुण[3] लोचन भूप वरं ॥
सुखमन्दिर सुन्दर श्रीरमनं ।
मद मार मुधा ममता शमनं ॥
अनवद्य[4] अखण्ड[5] अगोचरगो ।
सब रूप सदा सब होइ न सो ॥
इति वेद वदन्ति[6] न दन्तकथा ।
रवि आतप भिन्न न भिन्न यथा ॥
कृतकृत्य विभो सब वानर ये ।
निरखन्त तवानन सादर ये ॥
धिक जीवन देव शरीर हरे ।
तव भक्ति विना भव भूलि परे ॥
अब दीनदयालु कृपा करिये ।
मति मोरि विभेदकरी हरिये ॥
जेहिते विपरीत कृपा करिये ।
दुख में सुख मान सुखी चरिये ॥
खलखण्डन मण्डन रम्य क्षमा ।
पदपङ्कज सेवित शम्भु उमा[7] ॥

१ दुष्ट २ कठिन ३ कमल ४ निर्दोष ५ पूर्ण ६ कहते हैं ७ पार्वती ॥

नृपनायक दे वरदानमिदं।
चरणाम्बुज प्रेम सदा शुभदं॥

दो० विनयकीन्हबहुभाँति विधि[1], प्रेम प्रफुल्लित गात।
वदन[2] विलोकत रामकर, लोचन नाहिं अघात॥

तिहि अवसर दशरथ तहँ आये ❀ तनय[3] विलोकि[4] नयन जल छाये
सहित अनुज प्रणाम प्रभु कीन्हा ❀ आशिर्वाद पिता तब दीन्हा
तात[5] सकल तव पुण्य प्रभाऊ ❀ जीतेउँ अजय निशाचर[6] राऊ
सुनि सुतवचन प्रीति अतिबाढ़ी ❀ नयन सलिल रोमावलि ठाढ़ी
रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना ❀ चितै पितहिं दीन्हेउ दृढ़ ज्ञाना
ताते उमा मोक्ष नहिं पावा ❀ दशरथ भेद भक्ति मन लावा
सगुण उपासक मोक्ष न लेहीं ❀ तिन कहँ राम भक्ति निज देहीं
बारबार करि प्रभुहिं प्रणामा ❀ दशरथ हरषि गये सुरधामा

दो० अनुज जानकीसहित प्रभु, कुशलकोशलाधीश।
छविविलोकिमनहरषिअति, अस्तुतिकरसुरईश[7]॥

छं० जय राम शोभाधाम * दायक प्रणत विश्राम॥
धृत तूण वर शर चाप * भुजदण्ड प्रबल प्रताप॥
जय दूषणारि खरारि * मर्दन निशाचर भारि॥
यह दुष्ट मारेउ नाथ * भे देव सकल सनाथ॥
जय हरण धरणी भार * महिमा उदार अपार॥
जय रावणारि कृपाल * किय यातुधान[8] बिहाल॥
लङ्केश अतिबल गर्व * किय वश्य सुर गन्धर्व॥
मुनि सिद्ध नर खग नाग * हठि पन्थ सबके लाग॥
परद्रोहरत अति दुष्ट * पायो सो फल पापिष्ट॥

---

१ ब्रह्मा २ मुख ३ पुत्र ४ देखि ५ पिता ६ रावण ७ इन्द्र ८ राक्षस॥

अब सुनहु दीनदयाल * राजीवनयन विशाल ॥
मोहिं रहा अतिअभिमान * नहिं कोउ मोहिं समान ॥
अब देखि प्रभुपदकंज * गतमान दुखप्रदपुंज ॥
कोउ ब्रह्म निर्गुण ध्याव * अव्यक्त जेहि श्रुतिगाव ॥
मोहिं भाव कोशलभूप * श्रीराम सगुणस्वरूप ॥
वैदेहि अनुज समेत * ममहृदय करहु निकेत ॥
मोहिं जानिये निज दास * दे भक्ति रमानिवास ॥
छं० दे भक्ति रमानिवास त्रासहरण शरणसुखदायकं ।
सुखधाम राम नमामि काम अनेक छवि रघुनायकं ॥
सुरवृन्दरंजन द्वन्दभंजन मनुजतनु अतुलितबलं ।
ब्रह्मादिशङ्करसेव्यं राम नमामि करुणाकोमलं ॥
दो० अबकरिकृपाविलोकिमोहिं,आयसु देहु कृपालु ।
कहा करौं सुनि प्रियवचन, बोले दीनदयालु ॥
सुनु सुरपति कपि भालु हमारे * परे भूमि निशिचरन जे मारे
मम हित लागि तजे इन प्राना * सकल जियाउ सुरेश सुजाना
सुनु खगेश प्रभुकी यह बानी * अतिअगाध जानहिं मुनि ज्ञानी
प्रभु चह त्रिभुवन मारि जियाई * केवल शक्रहि दीन्हि बड़ाई
सुधा वरषि कपि भालु जियाये * हरषि उठे सब प्रभुपहँ आये
सुधावृष्टि भइ दुहुँ दल ऊपर * जिये भालु कपि नहिं रजनीचर
रामाकार भये तिनके मन * गये ब्रह्मपद तजि शरीर रन
सुर अंशक सब कपि अरु ऋच्छा * जिये सकल रघुपति की इच्छा
राम सरिस को दीन हितकारी * कीन्हें मुक्त निशाचर भारी
खल मलधाम कामरत रावन * गति पाई जो मुनिवर पावन
दो० सुमन वरषि सब सुर चले, चढ़िचढ़िरुचिरविमान ।

१ कमल २ स्थान ३ मनुष्य ४ सेवने योग्य ५ मेरे ६ गरुड़ ७ इन्द्र ८ अमृत ॥

देखि सुअवसर रामपहँ, आये शम्भु सुजान ॥
परमप्रीति कर जोरि युग, नयननलिन[1] भरिवारि ।
पुलकिततनु गदगद गिरा, विनय करत त्रिपुरारि ॥

मामभिरक्षय रघुकुल नायक ❀ धृत वर चाप[2] रुचिर कर शायक
मोह महाघनपटल प्रभंजन ❀ संशय विपिन अनल सुररंजन
अगुण सगुण गुणमन्दिर सुन्दर ❀ भ्रम तम प्रबल प्रताप दिवाकर[3]
काम क्रोध मद गज पञ्चानन[4] ❀ बसहु निरन्तर जन मन कानन
विषय मनोरथ पुंज कंज वन ❀ प्रबल तुषार[5] उदार पार मन
भववारिधि मन्दर पर मन्दर ❀ वारय तारय संसृति दुस्तर
श्यामगात राजीव विलोचन ❀ दीनबन्धु प्रणतारतिमोचन
अनुज जानकी सहित निरन्तर ❀ बसहु राम नृप मम उर अन्तर
मुनिरंजन महिमण्डलमण्डन ❀ तुलसिदास प्रभु त्रासविखण्डन

दो० नाथ जबहिं कोशलपुरी, होइहि तिलक[6] तुम्हार ।
तब आउब हम सुनहु प्रभु, देखन चरित उदार ॥

करि विनती जब शम्भु सिधाये ❀ तब प्रभु निकट[7] विभीषण आये
नाय चरण शिर कह मृदुवाणी ❀ विनय सुनिय मम शारँगपाणी
सकुल सदल प्रभु रावण मारा ❀ पावन यश त्रिभुवन विस्तारा
दीन मलीन हीनमति जाती ❀ मोपर कृपा कीन्ह बहुभाँती
अब जन गृह पुनीत प्रभु कीजै ❀ मज्जन करिय सकल श्रम छीजै
देश कोष[8] मन्दिर सम्पदा ❀ देहु कृपालु कपिन कहँ मुदा
सब विधि नाथ मोहिं अपनाइय ❀ पुनि मोहिं सहित अवधपुर जाइय
सुनत वचन मृदु दीनदयाला ❀ सजल भये हरिनयन विशाला

दो० तोर कोष गृह मोर सब, सत्य वचन सुनु तात ।
दशा भरत की सुमिरि मोहिं, निमिष कल्प सम जात ॥

१ कमल २ धनुष ३ सूर्य ४ सिंह ५ पाला ६ राजगद्दी ७ पास ८ खज़ाना ॥

तापसवेष शरीर कृश, जपैं निरन्तर मोहिं।
देखौं वेगि सो यतन करु, सखा निहोरों तोहिं॥
जो जैहौं बीते अवधि, जियत न पाऊं वीर।
प्रीति भरतकी समुझिप्रभु, पुनिपुनि पुलकशरीर॥
करहुकल्पभरि राज्य तुम, सुमिरेहु मोहिंमनमाहिं।
पुनि मम धाम सिधारेउ, जहां सन्त सब जाहिं॥

सुनत विभीषण वचन रामके ❁ हरषि गहे पद कृपाधामके
वानर भालु सकल हर्षाने ❁ प्रभुपद गहि गुण विमल बखाने
बहुरि विभीषण भवन[2] सिधाये ❁ पुष्पक मणिगण वसन भराये
लै पुष्पक[3] प्रभु आगे राखा ❁ हँसिकै कृपासिन्धु अस भाखा
चढ़िविमान सुनु सखा विभीषण ❁ गगन जाइ वर्षहु पट भूषण
नभ[4] पर जाइ विभीषण तबहीं ❁ वरषि दिये मणि अम्बर सबहीं
जो जेहि मन भावै सो लेहीं ❁ मणि मुख मेलि डारि कपि देहीं
हँसत राम सिय अनुज समेता ❁ परम कौतुकी कृपानिकेता

दो० ध्यान न पावहिं जासु मुनि, नेति नेति कह वेद।
कृपासिन्धु सोइ कपिन सों, करत अनेक विनोद॥
उमा योग जप ज्ञान तप, नाना व्रत मख[5] नेम।
राम कृपा नहिं करहिं तस, जस निष्केवल प्रेम॥

भालु कपिन पट भूषण[6] पाये ❁ पहिरि पहिरि रघुपति पहँ आये
नाना जिनिस देखि प्रभु कीशा ❁ पुनिपुनि हँसत कोशँलाधीशा
चितै सबनपर कीन्हीं दाया ❁ बोले मधुर वचन रघुराया
तुम्हरे बल मैं रावण मारा ❁ तिलक विभीषण कहँ पुनि सारा
निजनिज गृह अब तुम सब जाहू ❁ सुमिरहु मोहिं डरहु जनि काहू
वचन सुनत प्रेमाकुल वानर ❁ जोरि पाणि[8] बोले सब सादर

१ दुबला २ घर ३ विमान ४ आकाश ५ यज्ञ ६ गहना ७ राम ८ हाथ॥

प्रभु जो कहहु तुमहिं सब सोहा ❀ हमरे होत वचन सुनि मोहा
दीनजानि कपि किये सनाथा ❀ तुम त्रैलोक्यईश रघुनाथा
सुनि प्रभु वचन लाज हम मरहीं ❀ मशकं कबहुँ खगपति हित करहीं
देखि रामरुख वानर ऋच्छा ❀ प्रेममगन नहिं गृह की इच्छा

दो० प्रभु प्रेरित कपि भालु सब, रामरूप उरराखि।
हर्षं विषाद समेत सब, चले विनय बहुभाखि॥
जाम्बवन्त कपिराज नल, अङ्गदादि हनुमन्त।
सहित विभीषण अपर जे, यूथप कपिबलवन्त॥
कहि न सकहिंकछुप्रेमवश, भरिभरि लोचनवाँरि।
सम्मुख चितवहिं रामतनु, नयन निमेष निवारि॥

अतिशय प्रीति देखि रघुराई ❀ लीन्हे सकल विमान चढ़ाई
मनमहँ विप्रचरण शिरनावा ❀ उत्तरादिशिहि विमान चलावा
चलत विमान कोलाहल होई ❀ जय रघुवीर कहै सब कोई
सिंहासन अतिउच्च मनोहर ❀ सिय समेत बैठे ताऊपर
राजत राम समेत भामिनी ❀ मेरु शृंङ्ग जनु घनं दामिनी
रुचिर विमान चला अतिआतुर ❀ कीन्हीं सुमनवृष्टि हर्षे सुर
परमसुखद चलि त्रिविधँ बयारी ❀ सागर सुरसरि निर्मल वारी
शकुन होहिं सुन्दर चहुँपासा ❀ मन प्रसन्न निर्मल आकासा
कह रघुवीर देखु रण सीता ❀ लछमण हत्यो इहां इँद्रजीता
हनूमान अङ्गद के मारे ❀ रणमहँ परे निशाचर भारे
कुम्भकर्ण रावण दोउ भाई ❀ इहां हतेउँ सुरमुनि दुखदाई

दो० यह लखु सुन्दरि सेतु जहँ, थापेउँ शिव सुखधाम।
सीता सहित कृपायतन, शम्भुहिंकीन्ह प्रणाम॥
जहँ जहँ करुणासिन्धु वन, कीन्ह वास विश्राम।

---

१ मच्छर २ भालू ३ आनन्द ४ आँसू ५ कँगूरा ६ बादल ७ शीतल, मन्द, सुगन्ध॥

सकल दिखाये जानकिहि, कहि कहि सबके नाम ॥

सपदि विमान तहाँ चलिआवा ❀ दण्डकवन जहँ परम सुहावा
कुम्भजादि मुनिनायक नाना ❀ गये राम सब के अस्थाना
सकल मुनिन सों पाइ अशीशा ❀ आये चित्रकूट जगदीशा
तहँ करि ऋषिनकेर सन्तोखा ❀ चला विमान तहाँते चोखा
बहुरि राम जानकी दिखाई ❀ यमुना कलिमल हरणि सुहाई
पुनि देखी सुरसरी[2] पुनीता ❀ राम कहा प्रणाम करु सीता
तीरथपति पुनि दीख प्रयागा ❀ देखत जन्म कोटि अघभागा
देखि राम पावनि पुनि बेनी ❀ हरणशोक सुरलोक निशेनी[3]
देखी अवधपुरी अतिपावनि ❀ त्रिविध ताप भवदाप नशावनि

दो० तब रघुनन्दन सियसहित, अवधहि कीन्ह प्रणाम।
सजलविलोचनपुलकतनु, पुनिपुनि हरषित राम॥
बहुरि त्रिवेणी आय प्रभु, हरषित मज्जन कीन्ह।
कपिन समेत महीसुरन, दानविविधविधिदीन्ह॥

प्रभु हनुमन्तहि कहा बुझाई ❀ धरि द्विजरूप अवधपुर जाई
भरतहिं कुशल हमारि सुनावहु ❀ समाचार लै आतुर आवहु
तुरत पवनसुत[5] गमनत भयऊ ❀ तब प्रभु भरद्वाज पहँ गयऊ
नाना विधि पूजा मुनि कीन्हीं ❀ अस्तुति करि पुनि आशिषदीन्हीं
मुनिपद वन्दि युगल[6] कर जोरी ❀ चढ़ि विमान प्रभु चले बहोरी
इहां निषाद सुना प्रभु आये ❀ नाव नाव करि लोग बुलाये
सुरसरि लांघि यान[7] जब आवा ❀ उतरा तट[8] प्रभु आयसु पावा
तब सीता पूजी सुरसरी ❀ बहुप्रकार करि चरणन परी
दीन्ह अशीश मुदितमन गङ्गा ❀ सुन्दरि तव अहिवात अभङ्गा
सुनतहि गुह धावा प्रेमाकुल ❀ आवा निकट परमसुखसंकुल

१ शीघ्र २ गङ्गाजी ३ सीढ़ी ४ हाल ५ हनुमान् ६ दोनों ७ विमान ८ किनारा ॥

प्रभुहिं विलोकि सहित वैदेही ❀ परेउ अवनि तनु सुधि नहिं तेही
परम प्रीति विलोकि रघुराई ❀ हरषि उठाइ लीन्ह उरलाई

छं० लिय हृदयलाइ कृपानिधान सुजान रामरमापती।
बैठारि परम समीप पूंछी कुशल सो करि बीनती॥
अब कुशल पदपङ्कज विलोकि विरंञ्चि शङ्कर सेव्यजे।
सुखधाम पूरण काम राम नमामि राम नमामि ते॥
सब भाँति अधम निपाद सो हरि भरत ज्यों उरलाइये।
मतिमन्द तुलसीदास सो प्रभु मोहवश बिसराइये॥
यह रावणारिचरित्र पावन रामपदरतिप्रद सदा।
कामादिहर विज्ञानकर सुर सिद्ध मुनि गावहिं मुदा॥

दो० समर विजय रघुनाथ के, सुनहिं जे सदा सुजान।
विजय विवेक विभूति नित, तिनहिं देहिं भगवान॥
यह कलिकाल मलायतन[6], मन करि देखु विचार।
श्रीरघुनायक नाम तजि, नहिं कछु आन अधार॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने लङ्काकाण्डे विमलवैराग्यसम्पादनो नाम षष्ठस्सोपानः॥ ६॥

१ पृथ्वी २ ब्रह्मा ३ नीच ४ श्रीरामचन्द्र ५ हर्ष से ६ मल का घर॥

श्लोक ॥ केकीकण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदासुप्रसन्नम् ॥ पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानं नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढ रामम् ॥ १ ॥ कोशलेन्द्रपदकञ्जमञ्जुलौ पद्मयोनिशितिकण्ठवन्दितौ ॥ जानकीकरसरोजलालितौ चिन्तकस्य मनभृङ्गसङ्गिनौ ॥ २ ॥ कुन्दइन्दुदरगौरसुन्दरं चाम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम् ॥ कारुणीककलकञ्जलोचनं नौमि शङ्करमनङ्गमोचनम् ॥ ३ ॥

दो० रहा एक दिन अवधिकर, अतिआरत पुरलोग।
जहँ तहँ शोचहिं नारि नर, कृशतनु रामवियोग ॥
शकुन होहिं सुन्दर सकल, मन प्रसन्न सबकेर।

प्रभु आगमन जनाव जनु, नगर रम्यं चहुँफेर ॥
कौशल्यादिक मातु सब, मन अनंद अस होइ ।
आये प्रभु सिय अनुँजयुत, कहनचहत अस कोइ ॥
भरत नयन भुज दक्षिण, फरकहिं बारहिंबार ।
जानि शकुन मनहर्ष[3]अति, लागे करन विचार ॥

रहा एक दिन अवँधि अधारा ❀ समुझत मन दुख भयउ अपारा
कारण कवन नाथ नहिं आये ❀ जानि कुटिल प्रभु मोहिं बिसराये
अहह धन्य लक्ष्मण बड़भागी ❀ राम पदारविन्द अनुरागी
कपटी कुटिलनाथ मोहिं चीन्हा ❀ ताते नाथ सङ्ग नहिं लीन्हा
जो करणी समुझैं प्रभु मोरी ❀ नहिं निस्तार कल्पशतकोरी
जन अवगुण प्रभु मान न काऊ ❀ दीनबन्धु अतिमृदुल स्वभाऊ
मोरे जिय भरोस दृढ़[4] सोई ❀ मिलिहहिं राम शकुन शुभ होई
बीते अवधि रहे जो प्राना ❀ अधम कवन जग मोहिं समाना

दो० रामविरहसागर महँ, भरत मगन मन होत ।
विप्ररूप धरि पवनसुत, आइ गये जिमि पोत[6] ॥
बैठे देखि कुशासन, जटामुकुट कृशगात ।
राम राम रघुपति जपत, स्रवत नयन जलजात[7] ॥

देखत हनूमान अति हर्षे ❀ पुलकगात लोचन जल वर्षे
मनमहँ बहुत भाँति सुखमानी ❀ बोले श्रवण सुधासम बानी
जासु विरह शोचहु दिन राती ❀ रटहु निरन्तर गुणगण पाँती
रघुकुलतिलक सुजन सुखदाता ❀ आये कुशल देवमुनित्राता
रिपुरण जीति सुयश सुर गावत ❀ सीता अनुज सहित प्रभु आवत
सुनत वचन बिसरे सब दूखा ❀ तृषावन्त जिमि पाव पियूखा[8]
को तुम तात कहाँते आये ❀ मोहिं परमप्रिय वचन सुनाये

१ सुन्दर २ लक्ष्मण ३ खुशी ४ मुहृत ५ मज़बूत ६ जहाज़ ७ कमल ८ अमृत ॥

मारुतसुत मैं कपि हनुमाना ❀ नाम मोर सुनु कृपानिधाना
दीनबन्धु रघुपति कर किङ्कर[1] ❀ सुनत भरत भेंटे उठि सादर[2]
मिलत प्रेम नहिं हृदय समाता ❀ नयन स्रवत जल पुलकितगाता
कपि तव दरश सकल दुख बीते ❀ मिले आजु मोहिं राम सप्रीते
बारबार पूंछी कुशलाता ❀ तो कहँ काह देउँ सुनु भ्राता[3]
यहि सन्देश सरिस जगमाहीं ❀ करि विचार देखा कछु नाहीं
नाहिंन उऋण तात मैं तोहीं ❀ अब प्रभु चरित सुनावहु मोहीं
तब हनुमान नाइ पद माथा ❀ कही सकल रघुपति गुणगाथा[4]
कहु कपि कबहुँ कृपालु गुसाईं ❀ सुमिरत मोहिं दास की नाईं

छं० निजदासज्योंरघुवंशभूषणकबहुँममसुमिरणकर्‌यो।
सुनिभरतवचनविनीतअतिकपिपुलकतनुचरणनपर्‌यो
रघुवीर निजमुख जासुगुणगण कहत अगजगनाथ जो।
काहे न होहु विनीत परम पुनीत सद्‌गुणसिन्धु[5] सो॥

दो० राम प्राणप्रिय नाथ तुम, सत्य वचन मम तात।
पुनिपुनि मिलत भरतसन, प्रेम न हृदय समात॥

सो० भरत चरण शिरनाय, तुरत गये कपि रामपहँ।
कही कुशल सब जाय, हरषिचले प्रभु यानचढ़ि॥

हरषि भरत कोशलपुर[6] आये ❀ समाचार सब गुरुहिं सुनाये
पुनि मन्दिर महँ बात जनाई ❀ आवत नगर कुशल रघुराई
सुनत सकल जननी[7] उठिधाईं ❀ कहि प्रभुकुशल भरत समुझाई
समाचार पुरवासिन पाये ❀ नर अरु नारि हरषि उठि धाये
दधि दूर्वा रोचन फल फूला ❀ नव तुलसीदल मङ्गलमूला
भरि भरि थार हेम वर भामिनि ❀ गावत चलीं सिन्धुरागामिनि[8]
जो जैसहिं तैसहिं उठि धावहिं ❀ बाल वृद्ध कोउ सङ्ग न लावहिं

१ सेवक २ आदर समेत ३ भाई ४ कथा ५ समुद्र ६ अयोध्या ७ माता ८ गजगमनी॥

एक एक सन पूंछहिं धाई ❀ तुम देखे दयालु रघुराई
अवधपुरी प्रभु आवत जानी ❀ भई सकल शोभा की खानी
भा सरयू अतिनिर्म्मल नीरा ❀ बहै सुहावनि त्रिविध समीरा[1]

दो० हरषित गुरु पुरजन अनुज, भूसुर[2] वृन्द समेत।
चले भरत अतिप्रेम मन, सम्मुख कृपानिकेत॥
बहुतक चढ़ी अटारिन, निरखहिं गगनविमान।
देखि मधुर स्वर हरषित, करहिं सुमङ्गल गान॥
राकाशशि[3] रघुपतिपुरी, सिन्धु देखि हर्षान।
बढ़े कोलाहल करत जनु, नारि तरङ्ग[4] समान॥

इहां भानुकुलकमलदिवाकर[5] ❀ कपिन देखावत नगर शुभाकर
सुनु कपीश अङ्गद लङ्केशा ❀ पावनि पुरी रुचिर यह देशा
यद्यपि सब वैकुण्ठ बखाना ❀ वेद पुराण विदित जग जाना
अवधसरिस प्रिय मोहिं न सोऊ ❀ यह प्रसङ्ग जानै कोउ कोऊ
जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि ❀ उत्तरदिशि सरयू बह पावनि
जे मज्जहिं ते बिनहिं प्रयासा ❀ मम समीप नर पावहिं वासा
अतिप्रिय मोहिं इहां के वासी ❀ ममधामदा पुरी सुखरासी
हर्षे कपि सुनि प्रभु की बानी ❀ धन्य अवध जेहि राम बखानी

दो० आवत देखे लोग सब, कृपासिन्धु भगवान।
नगर निकट प्रभु प्रेरेऊ, उतरा भूमि विमान॥
बहुरि कहेउ प्रभु पुष्पकहि[6], तुम कुबेर पहँ जाहु।
प्रेरित राम चलेउ सो, हर्ष बिरह अति ताहु॥

आये भरत सङ्ग सब लोगा ❀ कृशतनु श्रीरघुवीर वियोगा
वामदेव वशिष्ठ मुनिनायक ❀ देखा प्रभु महि धरि धनुशायक
धाइ धरे गुरुचरण सरोरुह[7] ❀ अनुज सहित अतिपुलकतनोरुह

१ वायु २ ब्राह्मण ३ पूर्णिमा का चन्द्रमा ४ लहर ५ राम ६ कुबेर का विमान ७ कमल॥

भरत भेंट।

प्रभु मिलत अनुजहिं सोह मोपहँ जाति नहिं उपमा कही।

भेंटे कुशल पूंछि मुनिराया ❀ हमरे कुशल तुम्हारिहि दाया
सकल द्विजन कहँ नायउ माथा ❀ धर्म धुरन्धर रघुकुलनाथा
गहे भरत पुनि प्रभु पदपङ्कज ❀ नवहिं जिनहिं शङ्कर सुर मुनि अजं
परे भूमि नहिं उठत उठाये ❀ बलकरि कृपासिन्धु उरलाये
श्यामलगात रोम भये ठाढ़े ❀ नवराजीव नयन जल बाढ़े

छं० राजीवलोचनस्रवतजलतनु ललितपुलकावलिबनी
अतिप्रेमहृदयलगाइअनुजहिमिलतप्रभुत्रिभुवनधनी ॥
प्रभुमिलत अनुजहि सोह मोपहँ जात नहिं उपमा कही ।
जनु प्रेम अरु शृङ्गार तनुधरि मिलत वर सुषमा[3] लही ॥
पूँछत कृपानिधि कुशल भरतहिं वचन वेगि न आवई ।
सुनि शिवा सो सुख वचन मनते भिन्न जान न पावई ॥
अबकुशल कोशलनाथ आरत जानि जनदर्शन दियो ।
बूड़तविरहवारिधिकृपानिधिकाढ़िमोहिंकरगाहिलियो ॥

दो० पुनि प्रभु हरषित शत्रुहन, भेंटे हृदय लगाइ ।
लक्ष्मण भेंटे भरत पुनि, प्रेम न हृदय समाइ ॥

भरत अनुज लक्ष्मण तब भेंटे ❀ दुसह विरह सम्भव दुख मेटे
सीता चरण भरत शिरनावा ❀ अनुज समेत परम सुख पावा
प्रभु विलोकि हर्षे पुरवासी ❀ जनितवियोग विपति सब नासी
प्रेमातुर सब लोग निहारी ❀ कौतुक[5] कीन्ह कृपालु खरारी[6]
अमितरूप प्रकटे तेहि काला ❀ यथायोग्य मिलि सबहिं कृपाला
कृपादृष्टि सबलोग विलोकी ❀ किये सकल नर नारि विशोकी
क्षणमहँ सबहिं मिले भगवाना ❀ उमा मर्म[7] यह काहु न जाना
यहि विधि सबहिं सुखी करि रामा ❀ आगे चले शीलगुणधामा
कौशल्यादि मातु सब धाईं ❀ निरखि बच्छ जनु धेनु[8] लवाईं

१ ब्रह्मा २ समता ३ शोभा ४ समुद्र ५ खेल ६ श्रीरामचन्द्र ७ भेद ८ गाय ॥

छं० जनु धेनु बालकबच्छतजि गृह चरनवन परवशगईं ।
दिनअन्त पुर रुख स्रवत थन हुङ्कार करि धावत भईं ॥
अतिप्रेम प्रभु सब मातु भेंटे वचन मृदु[2] बहुविधि कहे ।
गइ विषम[3] विपतिवियोगभव तिनहर्षसुखअगणितलहे ॥
दो० भेंटेउ तनय सुमित्रा, रामचरणरत जानि ।
रामहिं मिलत केकयी, हृदय बहुत सकुचानि ॥
लक्ष्मण सब मातन मिले, हर्षे आशिष पाइ ।
केकयिकहँपुनिपुनिमिले, मनकर क्षोभ[4] न जाइ ॥
सासुन सबहिं मिली वैदेही[5] ❀ चरणन लागि हर्ष अति तेही
देहिं अशीश पूंछि कुशलाता ❀ होइ अचल तुम्हार अहिवाता
सब रघुपति मुखकमल विलोकी ❀ मङ्गल जानि नयनजल रोकी
कनक[6] थार आरती उतारहिं ❀ बारबार प्रभु गात निहारहिं
नाना भाँति निछावरि करहीं ❀ परमानन्द हर्ष उर भरहीं
कौशल्या पुनि पुनि रघुवीरहिं ❀ चितवहिं कृपासिन्धु रणधीरहिं
हृदय विचारति बारहिंबारा ❀ कवन भाँति लङ्कापति मारा
अतिसुकुमार युगल मम बाँरे[7] ❀ निशिचर सुभट महाबल भारे
दो० लक्ष्मण अरुसीतासहित, प्रभुहिं विलोकहिं मात ।
परमानन्द मगन मन, पुनिपुनि पुलकितगात ॥
लङ्कापति कपीश नल नीला ❀ जामवन्त अङ्गद शुभशीला
हनुमदादि सब वानर वीरा ❀ धरे मनोहर मनुजशरीरा
भरत सनेह शील व्रत नेमा ❀ सादर सब वर्णहिं अतिप्रेमा
देखि नगरवासिन की रीती ❀ सकल सराहहिं प्रभुपदप्रीती
पुनि रघुपति निज सखा बुलाये ❀ मुनिपद लागहु सबहिं सिखाये
गुरु वशिष्ठ कुलपूज्य हमारे ❀ इनकी कृपा दनुज[8] रण मारे

१ सन्ध्या २ मीठे ३ कठिन ४ सन्देह ५ सीता ६ सोना ७ लड़के ८ राक्षस ॥

ये सब सखा सुनिय मुनि मेरे ❀ भये समरसागर कहँ बेरे
मम हित लागि जन्म इन हारे ❀ भरतहुते मोहिं अधिक पियारे
सुनि प्रभुवचन मगन सब भये ❀ निमिष निमिष उपजत सुख नये

दो॰ कौशल्या के चरणयुग, पुनि तिन नायउ माथ ।
आशिषदीन्हेहरषि तुम, मोहिंप्रियजिमिरघुनाथ॥
सुमनवृष्टि नभ संकुल, भवन चले सुखकन्द ।
चढे अटारिन देखहीं, नगर नारि नर वृन्द ॥

कञ्चन कलश विचित्र सँवारे ❀ सबन धरे सजि निज निज द्वारे
बन्दनवार पताका केतू ❀ सबन बनाये मंगल हेतू
वीथिन[२] सकल सुगन्ध सिंचाये ❀ गजमणि रचि बहुचौक पुराये
नानाभाँति सुमङ्गल साजे ❀ हर्ष निशान नगर बहु बाजे
जहँ तहँ नारि निछावरि करहीं ❀ देहिं अशीश हर्ष उर भरहीं
कञ्चन[३]थार आरती नाना ❀ युवती साजि करहिं कल गाना
करहिं आरती आरतहर[४]की ❀ रघुकुल कमल विपिन[५] दिनकरकी
पुर शोभा सम्पति कल्याना ❀ निगम[६] शेष शारदा बखाना
तेऊ चरित देखि ठगि रहहीं ❀ उमा तासुगुण नर किमि कहहीं

दो॰ नारि कुमुँदिनी[७] अवध सर, रघुपति विरह दिनेश ।
अस्त भये विकसित भईं, निरखि राम राकेश ॥
होहिंशकुनशुभविविधविधि, बाजहिंगगननिशान।
पुर नर नारि सनाथ करि, भवन चले भगवान ॥

प्रभु जाना केकयी लजानी ❀ प्रथम तासु गृह गये भवानी
ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हा ❀ तब निज भवन गवन प्रभु कीन्हा
कृपासिन्धु जब मन्दिर गयऊ ❀ पुर नर नारि सुखी सब भयऊ
गुरु वशिष्ठ द्विज लिये बुलाई ❀ आजु सुघरी सुदिन सुखदाई
सब द्विज देहु हरषि अनुशासन ❀ रामचन्द्र बैठहिं सिंहासन

१ पल २ सड़कें ३ सोना ४ श्रीरामचन्द्र ५ वन ६ वेद ७ कोकाबेली ॥

मुनि वशिष्ठ के वचन सुहाये ❀ सुनत सकल विप्रन[1] मन भाये
कहहिं वचन मृदु विप्र अनेका[2] ❀ जग अभिराम राम अभिषेका
अब मुनिवर विलम्ब नहिं कीजे ❀ महाराज कहँ तिलक करीजे

दो० तब मुनि कहेउ सुमन्त्रसन, तुरत चले शिरनाइ।
रथ अनेक गज वाजि[3] बहु, सकल सँवारे जाइ॥
जहँ तहँ धावन पठै पुनि, मङ्गल द्रव्य मँगाइ।
हर्ष समेत वशिष्ठ पद, पुनिशिर नायउ आइ॥

अवधपुरी अति रुचिर बनाई ❀ देवन सुमनै[4] वृष्टि झरिलाई
राम कहा सेवकन बुलाई ❀ प्रथम सखन नहवावहु जाई
सुनत वचन जन जहँ तहँ धाये ❀ सुग्रीवादि तुरत नहवाये
पुनि करुणानिधि भरत हँकारे ❀ निज कर जटा राम निरवारे
नहवाये प्रभु तीनिहुँ भाई ❀ भक्तवछल कृपालु रघुराई
भरत भाग्य प्रभु कोमलताई ❀ शेष कोटिशत सकहिं न गाई
पुनि निज जटा राम बिवराये ❀ मुनि अनुशासन पाय नहाये
करि मज्जन भूषण प्रभु साजे ❀ अङ्ग अनङ्ग[5] कोटि छवि लाजे

दो० सासुन सादर जानकिहिं, मज्जन तुरत कराइ।
दिव्यवसन वरभूषणनि, अँग अँग सजे बनाइ॥
राम वाम दिशि शोभित, रमा रूप गुण खानि।
देखि सासु सब हरषित, जन्मसफल निज[6] जानि॥
सुनु खगेश तेहि अवसर, ब्रह्मा शिव मुनिवृन्द[7]।
चढ़ि विमान आये सकल, सुर देखन सुखकन्द॥

प्रभु विलोकि मुनिमन अनुरागा ❀ तुरत दिव्य सिंहासन माँगा
रविसम तेज वरणि नहिं जाई ❀ बैठे राम द्विजन शिरनाई
जनकसुता समेत रघुराई ❀ देखि प्रहर्षे मुनि समुदाई

१ ब्राह्मण २ बहुत ३ घोड़ा ४ फूलों की वर्षा ५ कामदेव ६ अपना ७ झुंड॥

वेद मन्त्र तब द्विजन उचारे ❀ नभ[1] सुर मुनि जय जयति पुकारे
प्रथम तिलक वशिष्ठ मुनि कीन्हा ❀ पुनि सब विप्रन आयसु दीन्हा
सुत विलोकि हरषीं महतारी ❀ बारबार आरती उतारी
विप्रन दान विविध विधि दीन्हें ❀ याचक[2] सकल अयाचक कीन्हें
सिंहासन पर त्रिभुवनसाईं ❀ देखि सुरन दुन्दुभी बजाईं

छं० नभ दुन्दुभी बाजहिं विपुल गन्धर्व किन्नर गावहीं।
नाचहिं अप्सरावृन्द परमानन्द सुर मुनि पावहीं॥
भरतादि अनुज विभीषणाङ्गद हनुमदादि समेत जे।
गहे छत्र चामर व्यजन[3] धनु असि[4] चर्म शक्ति विराजते॥
सियसहित दिनकर वंशभूषण काम बहु छवि सोहहीं।
नवअम्बुधर वर गात अम्बर पीत मुनिमन मोहहीं॥
मुकुटाङ्गदादि विचित्र भूषण अङ्ग अङ्गन प्रति सजे।
अम्भोज[5]नयन विशाल उर भुज धन्य नर निरखन्त जे॥

दो० वह शोभा सुसमाज सुख, कहत न बनै खगेश।
वरणै शारद[6] शेष श्रुति, सो रस जानु महेश॥
भिन्न भिन्न अस्तुति करि, गे सुर निजनिज धाम।
वन्दि वेष धरि वेद तब, आये जहँ श्रीराम॥
प्रभु सर्वज्ञ कीन्ह अति, आदर कृपानिधान।
लख्यो न काहू मर्म कछु, लगे करन गुणगान॥

छं० जय सगुण निर्गुणरूप राम अनूप भूप[7]शिरोमने।
दशकन्धरादिप्रचण्डनिशिचर प्रबलखलभुजबलहने॥
अवतार नर संसारभार विभंजि दारुण दुख दहे।
जय प्रणतपाल दयाल प्रभु संयुक्त शक्ति नमामहे॥

१ आकाश २ भिखारी ३ पंखा ४ तलवार ५ कमल ६ सरस्वती ७ राजा॥

तव विषम मायावश सुरासुर नाग नर अग जग[1] हरे।
भवपन्थभ्रमितश्रमितदिवस निशिकालकर्मगुणनभरे॥
जेहि नाथ करि करुणाविलोकहु त्रिविध दुख ते निर्वहे।
भवखेदछेदनदत्त हम कहँ रत्त राम नमामहे॥
जे ज्ञान मानविमत्त तव भवहरणि भक्ति न आदरी।
ते पाइ सुरदुर्लभपदादपि परत हम देखत हरी॥
विश्वास करि सब आश परिहरि दास तव जे ह्वैरहे।
जपि नाम तव बिनुश्रम तरहिं भव नाथ राम नमामहे॥
जे चरण शिवअजपूज्य रज शुभपरसि मुनिपत्नी तरी।
नखनिर्गता मुनिवन्दिता त्रैलोक्यपावनि सुरसरी॥
ध्वजकुलिशअंकुशकंजयुत वन फिरतकंटक जिनलहे।
पदकंज द्वन्द मुकुन्द राम रमेश नित्य भजामहे॥
अव्यक्तमूलमनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने।
षट कन्ध शाखा पञ्चविंश अनेक पर्ण सुमन घने॥
फलयुगलविधिकटुमधुरबेलि अकेलि जेहिआश्रितरहे।
पल्लवित फूलत नवल नित संसारविटप नमामहे॥
जे ब्रह्म अज अद्वैत अनुभवगम्य मन पर ध्यावहीं।
ते कहहु जानहु नाथ हम तव सगुण यश नित गावहीं॥
करुणायतन प्रभु सद्गुणाकर देव यह वर माँगहीं।
मन कर्म वचन विकार तजि तव चरण हम अनुरागहीं॥
दो० सबके देखत वेदनहु, विनती कीन्ह उदार।
अन्तर्द्धान भये पुनि, गये ब्रह्म आगार॥
वैनतेय सुनु शम्भु तब, आये जहँ रघुवीर।

१ स्थावर २ जङ्गम ३ दुःख ४ अहल्या ५ वज्र ६ घर ७ गरुड़॥

विनय करत गद्गदगिरा, पूरित पुलक शरीर ॥

छं० जय राम रमारमणं शमनं ।
भवताप[1]भयाकुल पाहि जनं ॥
अवधेश सुरेश रमेश विभो ।
शरणागत माँगत पाहि प्रभो ॥
दशशीश[2]विनाशन बीस भुजा ।
कृत दूरि महा महि भूरि रुजा ॥
रजनीचर[3] वृन्द पतङ्ग[4] रहे ।
शर पावक तेज प्रचण्ड दहे ॥
महि मण्डल मण्डन चारुतरं ।
धृत शायक चाप निषङ्ग[5]वरं ॥
मद मोह महाममता रजनी[6] ।
तमपुंज दिवाकर तेज अनी[7] ॥
मनुजाद किरात निपात किये ।
मृगलोग कुभोग शरेण हिये ॥
हति नाथ अनाथन पाहि हरे ।
विषयावन पामर भूलि परे ॥
बहुरोग वियोगन लोग हये ।
भवदंघ्रि निरादर के फल ये ॥
भवसिन्धु अगाध[8] परे नर ते ।
पदपङ्कज प्रेम न जे करते ॥
अतिदीन मलीन दुखी नितहीं ।
जिनके पदपङ्कज प्रीति नहीं ॥

१ संसार २ रावण ३ राक्षस ४ पतिंगा ५ तरकस ६ रात्रि ७ सेना ८ अथाह ॥

अवलम्ब भवन्त कथा जिनके।
प्रिय सन्त अनन्त सदा तिनके॥
नहिं राग न रोष[2] न मान मदा।
तिनके सम वैभव वा विपदा॥
यहिते तव सेवक होत मुदा।
मुनि त्यागत योग भरोस सदा॥
करि प्रेम निरन्तर[3] नेम लिये।
पदपङ्कज सेवत शुद्ध हिये॥
सम मान निरादर आदरही।
सोइ सन्त सुखी विचरन्त मही॥
मुनि मानस पङ्कज भृङ्ग[5] भजे।
रघुवीर महारणधीर अजे॥
तव नाम जपामि नमामि हरी।
भवरोग महामद मानअरी॥
गुण शील कृपा परमायतनं।
प्रणमामि निरन्तर श्रीरमनं॥
रघुनन्द निकन्दन[6] द्वन्द घनं।
महिपाल विलोकिय दीनजनं॥

दो० बारबार वर माँगौं, हरषि देहु श्रीरंग।
पद सरोज अनपावनी, भक्ति सदा सतसंग॥
वरणि उमापति[7] रामगुण, हरषि गये कैलास।
तब प्रभु कपिन दिवाये, सबविधि सुखप्रदवास॥

सुनु खगपति यह कथा सुहावनि ❀ त्रिविध ताप भवदोष नशावनि

१ आप की २ क्रोध ३ सदा ४ पृथ्वी ५ भँवरा ६ नाशनेवाले ७ शिव॥

महाराजकर शुभ अभिषेका ❀ सुनत लहहिं नर विरति विवेका
जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं ❀ सुखसम्पति नानाविधि पावहिं
सुरदुर्लभ सुख करि जगमाहीं ❀ अन्तकाल रघुपतिपुर जाहीं
सुनहिं विमुक्त विरत अरु विषई ❀ लहहिं भक्ति सुख सम्पति नितई
खगपति रामकथा मैं वरणी ❀ सुमति विलास त्रास दुखहरणी
विरति विवेक भक्ति दृढ़ करणी ❀ मोहनदी कहँ सुन्दर तरणी
नित नव मंगल कोशलपुरी ❀ हरषित रहहिं लोग सब कुरी
नित नव प्रीति रामपद पंकज ❀ सेवत जेहि शङ्कर सुर मुनि अज
मंगन बहु प्रकार पहिराये ❀ द्विजन दान नानाविधि पाये

दो० ब्रह्मानन्द मगन कपि, सबके प्रभुपदप्रीति।
जात न जानेउ दिवसनिशि, गये मास षट बीति॥

बिसरे गृह सपनेहु सुधि नाहीं ❀ जिमि परद्रोह सन्त मन माहीं
तब रघुपति सब सखा बुलाये ❀ आइ सबन सादर शिर नाये
प्रेम सभेत निकट बैठारे ❀ भक्त सुखद मृदु वचन उचारे
तुम अति कीन्हि मोरि सेवकाई ❀ मुख पर केहि विधि करौं बड़ाई
ताते मोहिं तुम अतिप्रिय लागे ❀ मम हित लागि भवनसुख त्यागे
अनुज राज सम्पति वैदेही ❀ देह गेह परिवार सनेही
सबमोहिं प्रियनहिं तुमहिंसमाना ❀ मृषा न कहौं मोर यह बाना
सब कहँ प्रिय सेवक यह नीती ❀ मोरे अधिक दास पर प्रीती

दो० अब गृह जाहु सखा सब, भजहु मोहिं दृढ़ नेम।
सदा सर्वगत सर्वहित, जानि करेहु अतिप्रेम॥

सुनि प्रभुवचन मगन सब भये ❀ को हम कहाँ बिसरि तनु गये
इकटक रहे जोरि कर आगे ❀ कहि न सकत कछु अति अनुरागे
परम प्रेम तिनकर प्रभु देखी ❀ कहा विविधविधि ज्ञान विशेखी
प्रभु सम्मुख कछु कहै न पारहिं ❀ पुनि पुनि चरणसरोजँ निहारहिं

१ तिलक २ नाव ३ भिखारी ४ मित्र ५ कुँठ ६ स्वभाव ७ कमल ॥

तब प्रभु भूषण वसन मँगाये ❀ नाना रङ्ग अनूप सुहाये
सुग्रीवहि प्रथमहिं पहिराये ❀ भरत वसन निज हाथ बनाये
प्रभु प्रेरित लक्ष्मण पहिराये ❀ लङ्कापति रघुपति मनभाये
अङ्गद बैठि रहे नहिं डोले ❀ प्रीति देखि प्रभु ताहि न बोले

दो० जाम्बवन्त नीलादि सब, पहिराये रघुनाथ।
हियधरि रामस्वरूप सब, चले नाय पद माथ॥
तब अङ्गद उठि नाइ शिर, सजलनयन कर जोरि।
अतिविनीत बोले वचन, मनहुँ प्रेमरस बोरि॥

सुनु सर्वज्ञ कृपासुख सिन्धू ❀ दीनं दयाकर आरतबन्धू
मरती बार नाथ मोहिं बाली ❀ गयो तुम्हारे पगतर घाली
अशरणशरण विरद सम्भारी ❀ मोहिं जनि तजहु भक्त भयहारी
मोरे प्रभु तुम गुरु पितु माता ❀ जाउँ कहाँ तजि पद जलजाता
तुमहिं विचारि कहहु नरनाहा ❀ प्रभु तजि भवन काज मम काहा
बालक अबुध ज्ञान बलहीना ❀ राखहु शरण जानि जनदीना
नीच टहल गृह की सब करिहौं ❀ पद विलोकि भवसागर तरिहौं
अस कहि चरण परे प्रभु पाहीं ❀ अब जनि नाथ कहहु गृह जाहीं

दो० अंगद वचन विनीत सुनि, रघुपति करुणासीव।
प्रभु उठाय उर लायऊ, सजल नयन राजीव॥
निज उरमालावसन मणि, बालितनय पहिराय।
बिदा किये भगवान तब, बहुप्रकार समुझाय॥

भरत अनुज सौमित्रि समेता ❀ पठवन चले भक्तकृतचेता
अङ्गद हृदय प्रेम नहिं थोरा ❀ फिरि फिरि चितवत प्रभु की ओरा
बार बार करि दण्डप्रणामा ❀ मन अस रहन कहहिं मोहिं रामा
राम विलोकनि बोलनि चलनी ❀ सुमिरि सुमिरि शोचत हँसिमिलनी
प्रभुरुख देखि विनय बहु भाखी ❀ चले हृदय पदपंकज राखी

१ अपने २ बिभीषण ३ सब जाननेवाले ४ ग़रीब ५ कमल ६ राजा ७ लक्ष्मण॥

अति आदर सब कपि पहुँचाये ❀ भाइन सहित राम फिरि आये
तब सुग्रीव चरण गहि नाना ❀ भाँति विनय कीन्हीं हनुमाना
दिन दश करि रघुपति पद सेवा ❀ तब फिरि चरण देखिहौं देवा
पुण्यपुञ्ज[२] तुम पवनकुमारा ❀ सेवहु जाइ कृपा आगारा
अस कहि कपिपति चले तुरंता ❀ अंगद कहेउ सुनहु हनुमंता

दो॰ करेहु दण्डवत प्रभुसन, तुमहिं कहौं करजोरि।
बार बार रघुनायकहिं, सुरति करायहु मोरि॥
अस कहि चलेउ बालिसुत, फिरि आये हनुमन्त।
तासु प्रीति प्रभुसन कही, मगन भये भगवन्त॥
कुलिशहुचाहिकठोरअति, कोमलकुसुम[३]हुचाहि।
चित खगेश रघुनाथ अस, समुझि परै कहु काहि॥

पुनि कृपालु लिय बोलि निषादा ❀ दीन्हेउ भूषण वसन प्रसादा
जाहु भवन मम सुमिरण करेहू ❀ मन क्रम वचन धर्म अनुसरेहू
तुम मम सखा भरत सम भ्राता ❀ सदा रहेहु पुर[४] आवत जाता
वचन सुनत उपजा सुख भारी ❀ परेउ चरण लोचन[५] भरि वारी
चरणकमल उर धरि गृह आवा ❀ प्रभुप्रभाव परिजन[६]हिं सुनावा
रघुपति चरित देखि पुरवासी ❀ पुनि पुनि कहहिं धन्य सुखरासी
राम राज बैठे त्रय लोका ❀ हरषित भयउ गयउ सब शोका
वैर न कर काहूसन कोई ❀ रामप्रताप विषमता खोई

दो॰ वर्णाश्रम निज निजधरम, निरत वेदपथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुखहिं, नहिंभय शोक न रोग॥

दैहिक दैविक भौतिक तापा ❀ रामराज्य नहिं काहुहिं व्यापा
सब नर करहिं परस्पर प्रीती ❀ चलहिं सुधर्म निरत श्रुतिनीती
चारिउ चरण धर्म जग माहीं ❀ पूरि रहा सपनेहुँ अघ[७] नाहीं
रामभक्तिरत नर अरु नारी ❀ सकल परम गति के अधिकारी

१ पकड़ २ ढेर ३ फूल ४ नगर ५ आंख ६ कुटुम्बी ७ पाप ॥

अल्पमृत्यु नहिं कवनिउँ पीरा ❀ सब सुन्दर सब निरुज शरीरा
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना ❀ नहिं कोउ अबुंध न लच्चणहीना
सब निर्दम्भ धर्म्मरत धुनी ❀ नर अरु नारि चतुर शुभगुनी
सब गुणज्ञ सब पण्डित ज्ञानी ❀ सब कृतज्ञ नहिं कपट सयानी

दो० रामराज्य विहगेश[1] सुनु, सचराचर जग माहिं।
काल कर्म्म स्वभाव गुण, कृतदुख काहुहि नाहिं॥

भूमि सप्त सागर मेखला ❀ एक भूप रघुपति कोशला
भुवन अनेक रोम[4] प्रति जासू ❀ यह प्रभुता कछु बहुत न तासू
सो महिमा समुझत प्रभुकेरी ❀ यह वर्णत हीनता घनेरी
सोउ महिमा खगेश जिन जानी ❀ फिरि यह चरित तिनहुँ रतिमानी
सोउ जाने कर फल यह लीला ❀ कहहिं महामुनिवर दमशीला
राम राज्य कर सुख सम्पदा ❀ वरणि न सकहिं फणीश[5] शारदा
सब उदार सब परउपकारी ❀ विप्रचरण सेवक नर नारी
एकनारिव्रत सब नर भारी ❀ ते मन वच क्रम पतिहितकारी

दो० दण्ड यतिन कर भेद जहँ, नृत्यक नृत्यसमाज।
जीतहिं मनहिं सुनिय अस, रामचन्द्र के राज॥

फूलहिं फलहिं सदा तरु कानन[6] ❀ रहहिं एकसँग गज पञ्चानन
खग मृग वैर सहज बिसराई ❀ सबन परस्पर प्रीति बढ़ाई
कूजहिं खग मृग नाना वृन्दा ❀ अभय चरहिं वन करहिं अनन्दा
शीतल सुरभि पवन बह मन्दा ❀ गुञ्जत अलि[8] लै चलु मकरन्दा
लता विटप माँगे मधु द्रवहीं ❀ मनभावते धेनु पय स्रवहीं
ससिसम्पन्न सदा रह धरणी ❀ त्रेता मे सतयुग की करणी
प्रकटीं गिरि नानामणिखानी ❀ जगदातमा भूप पहिंचानी
सरिता सकल बहैं वरवारी ❀ शीतल अमल स्वादु सुखकारी
सागर निज मर्य्यादा रहहीं ❀ डारहिं रत्न तटनि नर लहहीं

१ वेसमझ २ गरुड़ ३ सात ४ रोवां ५ शेष ६ वन ७ सिंह ८ भँवरा॥

सरसिज संकुल सकल तड़ागा[1] ❀ अतिप्रसन्न दश दिशा विभागा

दो० विधु[2] महि पूर मयूखन[3]न, रवि तप तेज न काज।
माँगे वारिद देहिं जल, रामचन्द्र के राज॥

कोटिन वाजिमेध[4] प्रभु कीन्हें ❀ अमितदान विप्रन कहँ दीन्हें
श्रुतिपथ पालक धर्मधुरन्धर ❀ गुणातीत अरु भोग पुरन्दर
पति अनुकूल सदा रह सीता ❀ शोभाखानि सुशील विनीता
जानति कृपासिन्धु प्रभुताई ❀ सेवति चरणकमल मनलाई
यद्यपि गृह सेवक सेवकिनी ❀ सब प्रकार सेवाविधि गुनी
निजकर गृह परिचर्य्या[5] करहीं ❀ रामचन्द्र आयसु अनुसरहीं
जेहिविधि कृपासिन्धु सुखमानहिं ❀ सोइ सिय सेवाविधि उर आनहिं
कौशल्यादि सासु गृहमाहीं ❀ सेवहिं सबै मान मद नाहीं
उमा रमा[6] ब्रह्माणि वन्दिता ❀ जगदम्बा सन्तत अनिन्दिता

दो० जाकी कृपा कटाक्ष सुर, चाहत चितवनि सोइ।
राम पदारविन्द रत, रहति स्वभावहिं खोइ॥

सेवहिं सानुकूल सब भाई ❀ रामचरणरति उर अधिकाई
प्रभुपदकमल विलोकत रहहीं ❀ कबहुँ कृपालु हमहिं कछु कहहीं
राम करहिं भ्रातन पर प्रीती ❀ नाना भाँति सिखावहिं नीती
हरषित रहहिं नगर के लोगा ❀ करहिं सकल सुरदुर्लभ भोगा
अहनिशि विधिहिं मनावत रहहीं ❀ श्रीरघुवीर चरण रति चहहीं
दुइ सुत सुन्दर सीता जाये ❀ लव कुश वेद पुराणन गाये
दोउ विजयी विनयी अतिसुन्दर ❀ हरिप्रतिबिम्ब मनहुँ गुणमन्दिर
दुइ दुइ सुत सब भ्रातन केरे ❀ भये रूप गुण शील घनेरे

दो० ज्ञान गिरा गोतीत अज, माया मन गुण पार।
सोइ सच्चिदानन्द घन, कर नरचरित उदार॥

प्रातकाल सरयू करि मज्जन[7] ❀ बैठहिं सभा संग द्विजसज्जन

---

१ तालाब २ चन्द्रमा ३ किरणें ४ अश्वमेध ५ सेवा ६ लक्ष्मी ७ स्नान॥

वेद पुराण वशिष्ठ बखानहिं ❁ सुनहिं राम यद्यपि सब जानहिं
अनुजन संयुत भोजन करहीं ❁ देखि सकल जननी सुख भरहीं
भरत शत्रुहन दोनों भाई ❁ सहित पवनसुत उपवन जाई
पूछहिं बैठि रामगुणगाहा ❁ कह हनुमान सुमतिअवगाहा
सुनतविमलगुण अतिसुखपावहिं ❁ बहुरि बहुरिकै विनय सुनावहिं
सबके गृह गृह होयँ पुराना ❁ रामचरित सुन्दर विधि नाना
नर अरु नारि रामगुण गानहिं ❁ करहिं दिवसनिशिजातनजानहिं

दो० अवधपुरी वासीन कर, सुख सम्पदा समाज।
सहसशेष नहिं कहि सकहिं, जहँ नृप राम विराज॥

नारदादि सनकादि मुनीशा ❁ दर्शन लागि कोशलाधीशा
दिनप्रति सकल अयोध्या आवहिं ❁ देखि नगर विराग बिसरावहिं
रत्नजटित मणि कनक अटारी ❁ नाना रंग रुचिर गच ढारी
पुर चहुँपास कोट अतिसुन्दर ❁ रचे कँगूरा रंग रंग वर
नव गृह सुन्दर निकर बनाई ❁ मनहुँ घेरि अमरावति आई
महि बहुरूप रुचिर गचकाँचा ❁ जो विलोकि मुनिवर मनराँचा
धवलधाम ऊपर नभ चुम्बत ❁ कलश मनहुँ रविशशिद्युतिनिंदत
बहुमणिरचित झरोखन भ्राजैं ❁ गृहगृहप्रति मणिदीप विराजैं

छं० मणिदीप राजहिं भवन भ्राजहिं देहरी विद्रुमरची।
मणिखम्भभीति विरञ्चिविरचित कनकमणिमरकतखची॥
सुन्दर मनोहर मन्दिरायत अजिरँ मणि फटिकन रचे।
प्रतिद्वारद्वार कपाट पुरट बनाय बहु वज्रन खचे॥
दो० चारु चित्रशाला अमित, गृह प्रति रचे बनाइ।
रामधाम जो निरखत, मुनि मन लेत चुराइ॥

सुमनवाटिका सबहिं लगाई ❁ विविध भाँति करि यतन बनाई
लता ललित बहु भाँति सुहाई ❁ फूलहिं सदा वसन्त की नाईं

१ फुलवाड़ी २ राम ३ श्रेष्ठ ४ इन्द्रपुरी ५ चन्द्रमा ६ मूँगा ७ आँगन॥

गुञ्जत मधुकर[1] मुखर मनोहर ❀ मारुत[2] त्रिविध सदा बह सुन्दर
नाना खग बालकन जिआये ❀ बोलत मधुर उड़ात सुहाये
मोर हंस सारस पारावत ❀ भवनन पर शोभा अति पावत
जहँ तहँ देखहिं निज परिछाहीं ❀ बहुविधि कूजहिं नृत्य कराहीं
शुक[3] सारिका[4] पढ़ावहिं बालक ❀ कहहु राम रघुपति जनपालक
राजद्वार सबही विधि चारू ❀ वीथी चौहट रुचिर बजारू

छं० बाजार रुचिर न बनै वर्णत वस्तु बिनु गथ पाइये।
जहँ भूप रमानिवास तहँ की सम्पदा किमि गाइये॥
बैठे बजाज सराफ वणिक अनेक मनहुँ कुबेर ते।
सब सुखी सब सुचरित्र सुन्दर नर युवा शिशु जरठ[5] ते॥

दो० उत्तर दिशि सरयू बहै, निर्मल जल गम्भीर।
बाँधे घाट मनोहर, स्वल्प पङ्क[6] नहिं तीर॥

दूरि फराक रुचिर सो घाटा ❀ जहँ जल पिवहिं वाजि गज ठाटा
पनिघट परममनोहर नाना ❀ तहाँ न पुरुष करहिं अस्नाना
राजघाट सबही विधि सुन्दर ❀ मज्जहिं तहाँ वर्ण चारिउ नर
तीर तीर देवनकर मन्दिर ❀ चहुँदिशि तेहिके उपवन सुन्दर
कहुँ कहुँ सरिता तीर उदासी ❀ बसहिं ज्ञानरत मुनि संन्यासी
जहँ तहँ तुलसीवृन्द सुहाये ❀ बहुप्रकार सब मुनिन लगाये
पुर शोभा कछु वरणि न जाई ❀ बाहर नगर परम रुचिराई
देखत पुरी अखिल अघ भागा ❀ वन उपवन वापिका[7] तड़ागा

छं० वापी तड़ाग अनूप कूप मनोहरायत सोहई।
सोपान[8] सुन्दर नीर निरमल देखि सुर मुनि मोहई॥
बहु रङ्ग कंज अनेक खग कूजहिं मधुप गुंजारहीं।
आरामरम्य पिकादिखगरव मनहुँ पथिक हँकारहीं॥

१ भँवरा २ वायु ३ सुवा ४ मैना ५ बुड्ढा ६ कीचड़ ७ बावली ८ सीढ़ी॥

दो॰ रमानाथ जहँ राजा, सो पुर वरणि न जाइ।
अणिमादिक सुखसम्पदा, रहीं अवधपुर छाइ॥

जहँ तहँ नर रघुपतिगुण गावहिं ❁ बैठि परस्पर यहै सिखावहिं
भजहु प्रणतप्रतिपालक रामहिं ❁ शोभा शील रूप गुण धामहिं
जलजविलोचन श्यामल गातहिं ❁ पलक नयन इव सेवक त्रातहिं
धृत शर रुचिर चाप तूणीरहिं ❁ सन्त कञ्ज वन रवि रणधीरहिं
काल कराल व्याल खगराजहिं ❁ नमत राम अकाम ममताजहिं
लोभ मोह मृगयूथ किरातहिं ❁ मनसिज करि हरिजनसुखदातहिं
संशय शोक निविड़तम भानुहिं ❁ दनुजगहन वनदहन कृशानुहिं
जनकसुता समेत रघुवीरहिं ❁ कस न भजहु भञ्जन भवभीरहिं
बहु वासना मशक हिमराशिहिं ❁ सदा एकरस अज अविनाशिहिं
मुनिरञ्जन भञ्जन महिभारहिं ❁ तुलसिदास के प्रभुहि उदारहिं

दो॰ यहिविधि नगर नारि नर, करहिं रामगुणगान।
सानुकूल सन्तत रहत, सबपर कृपानिधान॥

जबते रामप्रताप खगेशा ❁ उदित भयो अतिप्रबल दिनेशा
पूरि प्रकाश रह्यो तिहुँ लोका ❁ बहुतन सुख बहुतन मन शोका
जिनहिं शोक तेहि कहौं बखानी ❁ प्रथम अविद्या निशा सिरानी
अघ उलूक जहँ तहाँ लुकाने ❁ काम क्रोध कैरव सकुचाने
विविध कर्म गुण काल स्वभाऊ ❁ ये चकोर सुख लहहिं न काऊ
मत्सर मान मोह मद चोरा ❁ इन कहँ सुख नहिं कवनिहुँ ओरा
धर्म तड़ाग ज्ञान विज्ञाना ❁ ये पङ्कज विकसे विधि नाना
सुख सन्तोष विराग विवेका ❁ विगतशोक ये कोक अनेका

दो॰ यह प्रतापरवि जासु उर, जब प्रभु करहिं प्रकाश।
पाछिल बाढ़हिं प्रथम जे, कहे ते पावहिं नाश॥

भ्रातन सहित राम इकबारा ❁ संग परमप्रिय पवनकुमारा

१ आपस २ तरकस ३ सूर्य ४ साँप ५ कुंड ६ अग्नि ७ कोकाबेली॥

सुन्दर उपवन देखन गयऊ ❀ सब तरु¹ कुसुमित पल्लव² नयऊ
जानि समय सनकादिक आये ❀ तेजपुंज गुण शील सुहाये
ब्रह्मानन्द सदा लवलीना ❀ देखत बालक बहुकालीना
धरे देह जनु चारिउ वेदा ❀ समदरशी मुनि विगत विभेदा
आशा³वसन व्यसन यह तिनहीं ❀ रघुपतिचरित होइ तहँ सुनहीं
तहाँ रहे सनकादि भवानी ❀ जहँ घटसम्भव⁴ मुनिवर ज्ञानी
रामकथा मुनि बहुविधि वरणी ❀ ज्ञानयोगपावक जिमि अरणी

दो॰ देखि राम मुनि आवत, हरषि दण्डवत कीन्ह।
स्वागत पूँछी पीतपट, प्रभु बैठन कहँ दीन्ह॥

कीन्ह दण्डवत तीनिउँ भाई ❀ सहित पवनसुत सुख अधिकाई
मुनिरघुपति छ⁵वि अतुलविलोकी ❀ भये मगन मन सकत न रोकी
श्यामल गात सरोरुह लोचन ❀ सुन्दरतामन्दर भवमोचन
इकटक रहे निमेष न लावहिं ❀ प्रभु कर जोरे शीश नवावहिं
तिनकी दशा देखि रघुवीरा ❀ स्रवत नयनजल पुलक शरीरा
कर गहि प्रभु मुनिवर बैठारे ❀ परम मनोहर वचन उचारे
आजु धन्य मैं सुनहु मुनीशा ❀ तुम्हरे दरश जाहिं अघ खीशा
बड़े भाग्य पाइय सतसंगा ❀ बिनहिं प्रयास होइँ भवभंगा

दो॰ सन्तसंग अपवर्ग⁶कर, कामी भवकर पंथ।
कहहिं सन्त कवि कोविद⁷, श्रुति पुराण सद्ग्रंथ॥

मुनि प्रभुवचन हरषि मुनि चारी ❀ पुलकगात अस्तुति अनुसारी
जय भगवन्त अनन्त अनामय ❀ अनघ अनेक एक करुणामय
अज निर्गुण जयजय गुणसागर ❀ सुखनिधान तिहुँलोक उजागर
जय इन्दिरारमण जय भूधर ❀ अनुपम यश अनादि शोभाकर
ज्ञाननिधान अमान मानप्रद ❀ पावन सुयश पुराण वेद वद
तज्ञ कृतज्ञ अज्ञताभंजन ❀ नाम अनेक अनाम निरंजन

१ वृक्ष २ पत्ता ३ दिशा ४ अगस्त्यमुनि ५ शोभा ६ मोक्ष ७ पण्डित॥

सर्व सर्वगत सर्व उरालय ❀ बसहु सदा हम कहँ परिपालय
द्वन्द विपति भवफन्द विभंजन ❀ हृदि बसु राम काममदगंजन

दो० परमानन्द कृपायतन, तुम परिपूरण काम।
प्रेम भक्ति अनपावनी, देहु हमहिं श्रीराम॥

देहु भक्ति रघुपति अतिपावनि ❀ त्रिविधताप भवदाप नशावनि
प्रणतकाम सुरधेनु[1] कल्पतरु[2] ❀ ह्वै प्रसन्न प्रभु दीजै यह बरु
भववारिधिकुम्भज रघुनायक ❀ सेवकसुलभ सकल सुखदायक
मनसम्भव दारुण[3] दुख दारय ❀ दीनबन्धु समता विस्तारय
आस त्रास ईर्षादि निवारक ❀ विनय विवेक विरतिविस्तारक
भूपमौलिमणि मण्डन धरणी ❀ देहु भक्ति संसृति[4] सरि तरणी
मुनिमनमानस हंस निरन्तर ❀ चरणकमल वन्दित अज शङ्कर
रघुकुलकेतु सेतु श्रुतिरक्षक ❀ काल कर्म स्वभाव गुणभक्षक
तारण तरण हरण सब दूषण ❀ तुलसिदास प्रभु त्रिभुवनभूषण

दो० बारबार अस्तुति करि, प्रेम सहित शिर नाइ।
ब्रह्मभवन सनकादि गे, अतिअभीष्ट वर पाइ॥

सनकादिक विधिलोक सिधाये ❀ भ्रातन रामचरण शिर नाये
पूँछत प्रभुहिं सकल सकुचाहीं ❀ चितवहिं सब मारुतसुत पाहीं
सुना चहहिं प्रभुमुख की बानी ❀ जो सुनि होय सकल भ्रम[5] हानी
अन्तरयामी प्रभु सब जाना ❀ पूँछत कहहु कहा हनुमाना
जोरिपाणि[6] तब कह हनुमन्ता ❀ सुनिये दीनबन्धु भगवन्ता
नाथ भरत कछु पूँछन चहहीं ❀ प्रश्न करत मन सकुचत अहहीं
तुम जानहु कपि मोर स्वभाऊ ❀ भरतहिं मोहिं न कछू दुराऊ
सुनि प्रभुवचन भरत गहिचरणा ❀ सुनिय नाथ[7] प्रणतारतिहरणा

दो० नाथ न मोहिं सन्देह कछु, सपनेहु शोक न मोह।
केवल कृपा तुम्हारि प्रभु, चिदानन्द सन्दोह॥

---

१ कामधेनु २ कल्पवृक्ष ३ कठिन ४ संसार ५ सन्देह ६ हाथ ७ स्वामी॥

करौं कृपानिधि एक दिठाई ❀ मैं सेवक तुम जनसुखदाई
सन्तन की महिमा रघुराई ❀ बहुविधि वेद पुराणन गाई
श्रीमुख पुनि तुम कीन्ह बड़ाई ❀ तिनपर प्रभुहिं प्रीति अधिकाई
सुना चहौं प्रभु तिनकर लक्षण ❀ कृपासिन्धु गुणज्ञानविचक्षण
सन्त असन्त भेद बिलगाई ❀ प्रणतपाल मोहिं कहिय बुझाई
सन्तन के लक्षण सुनु भ्राता ❀ अगणित श्रुति[2] पुराण विख्याता
सन्त असन्तन की अस करणी ❀ जिमि कुठार चन्दन आचरणी
काटे परशु[3] मलय[4] सुनु भाई ❀ निज गुण देइ सुगन्ध बसाई

दो० ताते सुर शीशन चढत, जगवल्लभ श्रीखण्ड।
अनल[5] दाहि पीटत घनहिं, परशु वदन यह दण्ड॥

विषय अलम्पट शील गुणाकर ❀ पर दुख दुख सुख सुख देखे पर
सम अभूत रिपु विमद विरागी ❀ लोभामर्ष[6] हर्ष भय त्यागी
कोमल चित दीनन पर दाया ❀ मन वच क्रम मम भक्ति अमाया
सबहिं मानप्रद आपु अमानी ❀ भरत प्राणसम मम ते प्राणी
विगतकाम मम नामपरायन ❀ शान्ति विरति विनीत मुदितायन
शीतलता सरलता मयत्री ❀ द्विजपद प्रेम धर्मजनयत्री
यह सब लक्षण बसहिं जासु उर ❀ जानेउ तात सन्त सन्तत फुर
शमदमनियम नीतिनहिं डोलहिं ❀ परुष वचन कबहूँ नहिं बोलहिं

दो० निन्दा अस्तुति उभयसम, ममता मम पदकंज।
ते सज्जन मम प्राणप्रिय, गुणमन्दिर सुखपुंज॥

सुनहु असन्तन केर स्वभाऊ ❀ भूले सङ्गति करिय न काऊ
तिनकर सङ्ग सदा दुखदाई ❀ जिमि कपिलहिं घालै हरहाई
खलन हृदय अतिताप विशेखी ❀ जरहिं सदा परसम्पति देखी
जहँ कहुँ निन्दा सुनहिं पराई ❀ हर्षहिं मनहुँ परी निधि[7] पाई
काम क्रोध मद लोभ परायन ❀ निर्दय कपटी कुटिल मलायन

१ होशियार २ वेद ३ फरसा ४ चन्दन ५ अग्नि ६ लालच-क्रोध ७ खज़ाना॥

वैर अकारण सब काहू सों ❁ जो करु हित अनहित ताहूसों
झूठै लेना झूठै देना ❁ झूठै भोजन झूठ चबेना
बोलहिं मधुर वचन जिमि मोरा ❁ खाहिं महाअहि[1] हृदय कठोरा

दो॰ परद्रोही परदार[2] रत, परधन परअपवाद[3]।
ते नर पामर पापमय, देह धरे मनुजाद[4]॥

लोभै ओढ़न लोभै डासन ❁ शिश्नोदर पर यमपुर त्रासन
काहूकी जो सुनहिं बड़ाई ❁ श्वास लेहिं जनु जूड़ी आई
जब काहूकी देखहिं विपती ❁ सुखी होहिं मानहुँ जगनृपती
स्वारथ रत परिवार विरोधी ❁ लम्पट काम लोभ अति क्रोधी
मातु पिता गुरु विप्र न मानहिं ❁ आपु गये अरु घालहिं आनहिं
करहिं मोहवश द्रोह परावा ❁ सन्तसङ्ग हरिभक्ति न भावा
अवगुण सिन्धु मन्दमति कामी ❁ वेदविदूषक परधन स्वामी
विप्र द्रोह[5] परद्रोह विशेखी ❁ दम्भ[6] कपट जिय धरे सुवेषी

दो॰ ऐसे अधम[7] मनुष्य खल, कृतयुग त्रेता नाहिं।
द्वापर कछुक वृन्द बहु, ह्वैहैं कलियुग माहिं॥

परहित[8] सरिस धर्म नहिं भाई ❁ परपीड़ा सम नहिं अधमाई
निर्णय सकल पुराण वेदकर ❁ कहेउँ तात जानहिं कोविद नर
नरशरीर धरि जे परपीरा ❁ करहिं ते सहहिं महाभवभीरा
करहिं मोहवश नर अघ नाना ❁ स्वारथरत परलोक नशाना
कालरूप मैं तिनकर ताता ❁ शुभ अरु अशुभ कर्मफलदाता
अस विचारि जो परमसयाने ❁ भजहिं मोहिं संसृति दुख जाने
त्यागहिं कर्म शुभाशुभदायक ❁ भजहिं मोहिं सुरनरमुनिनायक
सन्त असन्तन के गुण भाखे ❁ ते न परहिं भव जिन लखिराखे

दो॰ सुनहु तात मायाकृत, गुण अरु दोष अनेक।
गुण यह उभय न देखिये, देखिय सो अविवेक॥

---

१ साँप २ स्त्री ३ निन्दा ४ राक्षस ५ वैर ६ पाखण्ड ७ नीच ८ भलाई॥

श्रीमुख वचन सुनत सब भाई ❀ हर्ष प्रेम नहिं हृदय समाई
करहिं विनय अति बारहिं बारा ❀ हनूमान हिय हर्ष अपारा
पुनि रघुपति निज मन्दिर गये ❀ यहिविधि चरित करत नित नये
बार बार नारदमुनि आवहिं ❀ चरित पुनीत¹ रामकर गावहिं
नित नव² चरित देखि मुनि जाहीं ❀ ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीं
सुनि विरञ्चि अतिशय सुखमानहिं ❀ पुनिपुनि तात करहु गुणगानहिं
सनकादिक नारदहिं सराहहिं ❀ यद्यपि ब्रह्मनिरत मुनि आहहिं
सुनि गुणगान समाधि बिसारी ❀ सादर सुनहिं परम अधिकारी

दो० जीवनमुक्त ब्रह्म पर, चरितसुनहिंतजिध्यान।
जेहरि कथा न करहिं रति, तिनके हृदय पषा³न॥

एक बार रघुनाथ बुलाये ❀ गुरु द्विज⁴ पुरवासी सब आये
बैठे गुरु द्विजवर मुनि सज्जन ❀ बोले वचन भक्तभयभंजन
सुनहु सकल पुरजन मम बानी ❀ कहौं न कछु ममता उर आनी
नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई ❀ सुनहु करहु जो तुमहिं सुहाई
सोइ सेवक प्रीतम मम सोई ❀ मम अनुशासन मानै जोई
जो अनीति कछु भाषौं भाई ❀ तौ मोहिं बरजेहु भय बिसराई
बड़े भाग्य मानुष तनु पावा ❀ सुरदुर्लभ सद्ग्रन्थन गावा
साधन धाम मोक्ष कर द्वारा ❀ पाइ न जेहिं परलोक सँवारा

दो० सो परन्तु दुख पावई, शिर धुनिधुनि पछिताइ।
कालहिंकर्म्महिंईश्वरहिं, मिथ्या दोष लगाइ॥

यहि तनुकर फल विषय न भाई ❀ स्वर्गहु स्वल्प अन्त दुखदाई
नरतनु पाय विषय मन देहीं ❀ पलटि सुधा⁶ ते शठ विष लेहीं
ताहि कबहुँ भल कहै न कोई ❀ गुंजा⁷ गहै परसमणि खोई
आकर⁸ चारि लाख चौरासी ❀ योनिभ्रमत यह जिव अविनासी
फिरत सदा माया के प्रेरे ❀ काल कर्म स्वभाव गुण घेरे

१ पवित्र २ नया ३ पत्थर ४ ब्राह्मण ५ झूठा ६ अमृत ७ घुँघची ८ खानि॥

कबहुँक करि करुणा[1] नर देही ❁ देत ईश बिनु हेतु सनेही
नरतनु भववारिधि कहँ बेरे ❁ सम्मुख मरुत अनुग्रह मेरे
कर्णधार[2] सद्गुरु दृढ़ नावा ❁ दुर्लभ साज सुलभ करि पावा

दो॰ जो न तरै भवसागरहि, नर समाज अस पाय।
सो कृतनिन्दक मन्दमति, आतमहन गति जाय॥

जो परलोक इहाँ सुख चहहू ❁ सुनि मम वचन हृदय दृढ़ गहहू
सुलभ सुखद यह मारग भाई ❁ भक्ति मोरि पुराण श्रुति गाई
ज्ञान अगम प्रत्यूह[3] अनेका ❁ साधन कठिन न मनमहँ टेका
करत कष्ट बहु पावत कोई ❁ भक्तिहीन प्रिय मोहिं न सोई
भक्ति स्वतंत्र सकल गुणखानी ❁ बिनु सतसंग न पावहिं प्रानी
पुण्य पुंज[4] बिनु मिलहिं न संता ❁ सतसंगति संसृतिकर अंता
पुण्य एक जगमहँ नहिं दूजा ❁ मन क्रम वचन विप्रपदपूजा
सानुकूल तिहि पर सब देवा ❁ जो तजि कपट करै द्विजसेवा

दो॰ औरौ एक गुप्त मत, सबहिं कहौं करजोरि।
शङ्करभजन विना नर, भक्ति न पावै मोरि॥

कहहु भक्तिपथ कवन प्रयासा ❁ योग न मख[5] जप तप उपवासा[6]
सरल स्वभाव न मन कुटिलाई ❁ यथा लाभ सन्तोष सदाई
मोर दास कहाइ नर आसा ❁ करै तौ कहहु कहा विश्वासा
बहुत कहौं का कथा बढ़ाई ❁ यहि आचरणवश्य मैं भाई
वैर न विग्रह आश न त्रासा ❁ सुखमय ताहि सदा सब आसा
अनारम्भ अनिकेत अमानी ❁ अनघ अरोष दच्छ विज्ञानी
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा ❁ तृणसम विषय स्वर्ग अपवर्गा[7]
भक्तिपच्छता नहिं शठताई ❁ दुष्टकर्म्म सब दूरि बिहाई

दो॰ मम गुणग्राम नाम रत, गत ममता मद[8] मोह।
ताकर सुख सोइ जानै, परानन्द सन्दोह॥

१ दया २ केवट ३ विघ्न ४ समूह ५ यज्ञ ६ व्रत ७ मोक्ष ८ गर्व॥

सुनत सुधा सम वचन राम के ❀ सबन गहे पद कृपाधाम के
जननि[2] जनक[3] गुरु बन्धु हमारे ❀ कृपानिधान प्राण ते प्यारे
तन धन धाम राम हितकारी ❀ सब विधि तुम प्रणतारतिहारी
अस शिष तुम बिनु देइ न कोऊ ❀ मातु पिता स्वारथरत ओऊ
हेतुरहित युग युग उपकारी ❀ तुम तुम्हार सेवक असुरारी
स्वारथमीत सकल जगमाहीं ❀ सपनेहुँ कोउ परमारथ नाहीं
सबके वचन प्रेमरस साने ❀ सुनि रघुनाथ हृदय हर्षाने
निज निज गृह गे आयसु पाई ❀ वर्णत प्रभु बतकही सुहाई

दो॰ उमा अवधवासी नर, नारि कृतारथ रूप।
ब्रह्म सच्चिदानन्द घन, रघुनायक जहँ भूप॥

एक बार वशिष्ठ मुनि आये ❀ जहाँ राम सुखधाम सुहाये
अतिआदर रघुनायक कीन्हा ❀ पद पखारि चरणोदक लीन्हा
राम सुनहु मुनि कह कर[5] जोरी ❀ कृपासिन्धु विनती इक मोरी
देखि देखि आचरण तुम्हारा ❀ होत मोह मम हृदय अपारा
महिमा अमित[6] वेद नहिं जाना ❀ मैं केहि भाँति कहौं भगवाना
उपरोहिती कर्म्म अतिमन्दा ❀ वेद पुराण स्मृति कर निन्दा
जब न लेउँ तब विधि कह मोहीं ❀ अहै लाभ आगे सुत तोहीं
परमातमा ब्रह्म नर रूपा ❀ होइहि रघुकुलभूषण भूपा

दो॰ तब मैं हृदय विचार किय, योग यज्ञ व्रत दान।
जाकहँ करिय सो पाइहौं, धर्म न यहिसम आन॥

जप तप नियम योग निज धर्मा ❀ श्रुति[7] सम्भव नानाशुभ कर्मा
ज्ञान दया दम तीरथ मज्जन ❀ जहँ लगि धर्म कहैं श्रुतिसज्जन
आगम[8] निगम पुराण अनेका ❀ पढ़े सुनै कर फल प्रभु एका
तव पदपङ्कज प्रीति निरन्तर ❀ सब साधनकर फल यह सुन्दर
छूटै मल कि मलहि के धोये ❀ घृत कि पाव कोउ वारि[9] बिलोये

१ अमृत २ माता ३ पिता ४ समूह ५ हाथ ६ बेप्रमाण ७ वेद ८ शास्त्र ९ जल॥

प्रेम भक्ति जल बिनु रघुराई ❀ अभ्यन्तर मल कबहुँ न जाई
सोइ सर्वज्ञ तज्ञ सोइ पंडित ❀ सोइ गुणज्ञ विज्ञान अखंडित
दक्ष सकल लक्षण युत सोई ❀ जाके पद सरोज रति होई

दो० नाथ एक वर माँगों, राम कृपा करि देहु।
जन्मजन्म प्रभु पद कमल, कबहुँ घटै जनि नेहु॥

अस कहि मुनिवशिष्ठ गृह आये ❀ कृपासिन्धु के मन अतिभाये
हनूमान भरतादिक भ्राता ❀ संग लिये सेवक सुखदाता
पुनि कृपालु पुर बाहर गयऊ ❀ गजरथ तुरँग[1] मँगावत भयऊ
देखि कृपाकरि सकल सराहे ❀ दिये उचित जिनजिन जो चाहे
हरण सकल श्रम प्रभु श्रमपाई ❀ गये जहाँ शीतल अमराई
भरत दीन्ह निज वसन डसाई ❀ बैठे प्रभु सेवहिं सब भाई
मारुतसुत[2] तब मारुत करई ❀ पुलकिगात लोचन जल भरई
हनूमान सम नहिं बड़भागी ❀ नहिं कोउ रामचरण अनुरागी[3]
गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई ❀ बार बार प्रभु निज मुख गाई

दो० तेहि अवसर[4] मुनि नारद, आये करतल बीन।
गावन लागे रामगुण, कीरति सदा नवीन॥

मामवलोकय पङ्कजलोचन ❀ कृपाविलोकनि शोचविमोचन
नील तामरस[5] श्याम कामअरि[6] ❀ हृदय कंज मकरन्द मधुप[7] हरि
यातुधान[8] वरूथ बल गंजन ❀ मुनिसज्जनरंजन अघभंजन
भूसुर नव ससि वृन्द बलाहक ❀ अशरणशरण दीनजनगाहक
भुजबल विपुल भारमहिखण्डित ❀ खरदूषण विराध वध पण्डित
रावणारि सुखरूप भूपवर ❀ जय दशरथकुलकुमुदसुधाकर
सुयशपुनीत विदित निगमागम ❀ गावत सुर मुनि सन्त समागम
कारुणीक बाली मद खण्डन ❀ सब विधि कुशल कोशलामण्डन
कलिमलमथन नाम ममताहन ❀ तुलसिदास प्रभु पाहि प्रणतजन

---

१ घोड़ा २ हनुमान् ३ प्रीतिमान् ४ समय ५ कमल ६ महादेव ७ भँवरा ८ राक्षस॥

दो० प्रेमसहित मुनिनारद, बरणि राम गुणग्राम।
शोभासिन्धु हृदय धरि, गये जहाँ विधिधाम॥
गिरिजा सुनहु विशद यह कथा ❀ मैं सब कही मोरि मति यथा
राम चरित शतकोटि अपारा ❀ श्रुति शारदा न बरणैं पारा
राम अनन्त अनन्त गुणानी ❀ जन्म कर्म अगणित नामानी
जल शीकर महि रज गनि जाहीं ❀ रघुपतिचरित न बरणि सिराहीं
विमल कथा यह हरिपददायिनि ❀ भक्ति होइ सुनि अति अनपायिनि
उमा कहेउँ सो कथा सुहाई ❀ जो भुशुण्डि खगपतिहि सुनाई
कछुक रामगुण कहेउँ बखानी ❀ अब का कहौं सो कहहु भवानी
सुनि शुभकथा उमा हरषानी ❀ बोलीं अतिविनीत मृदुबानी
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी ❀ सुनेउँ रामगुण भवभयहारी

दो० तुम्हरी कृपा कृपायतन, अब कृतकृत्य न मोह।
जानेउँ राम प्रभाव प्रभु, चिदानन्द सन्दोह॥
नाथ तवानन शशि स्रवत, कथा सुधा रघुवीर।
श्रवणपुटन मनपानकरि, नाहिं अघात मतिधीर॥
रामचरित जे सुनत अघाहीं ❀ रसविशेष जाना तिन नाहीं
जीवनमुक्त महामुनि जेऊ ❀ हरिगुण सुनहिं निरन्तर तेऊ
भवसागर चह पार जो पावा ❀ रामकथा ताकहँ दृढ़ नावा
विषयिन कहँ पुनि हरिगुणग्रामा ❀ श्रवण सुखद अरु मन अभिरामा
श्रवणवन्त अस को जगमाहीं ❀ जिनहिं न रघुपतिचरित सुहाहीं
ते जड़ जीव निजातमघाती ❀ जिनहिं न रघुपतिकथा सुहाती
रामचरित मानस तुम गावा ❀ सुनि मैं नाथ अमित सुख पावा
तुम जो कही यह कथा सुहाई ❀ काकभुशुण्डि गरुड़प्रति गाई

दो० विरत ज्ञान विज्ञान दृढ़, रामचरण अतिनेह।
वायस तनु रघुपतिभगति, मोहिं परम सन्देह॥

१ ब्रह्मलोक २ पार्वती ३ उज्ज्वल ४ किनका ५ शिव ६ कान ७ कौवा॥

नर सहस्र महँ सुनहु पुरारी ❀ कोउ इक होइ धर्म्मव्रतधारी
धर्म्मशील कोटिन महँ कोई ❀ विषयविमुख विरागरत होई
कोटि विरक्त मध्य श्रुति कहई ❀ सम्यक ज्ञान सुकृत कोउ लहई
ज्ञानवन्त कोटिन महँ कोई ❀ जीवनमुक्त सुकृत कोइ होई
तिन सहसन महँ सब सुखखानी ❀ दुर्लभ ब्रह्मनिरत विज्ञानी
धर्म्मशील विरक्त अरु ज्ञानी ❀ जीवनमुक्त ब्रह्म पर प्रानी
सबते सो दुर्लभ सुरराया ❀ रामभक्तिरत गत मद माया
सो हरिभक्ति काक किमि पाई ❀ विश्वनाथ मोहिं कहहु बुझाई

दो० रामपरायण ज्ञानरत, गुणागार मतिधीर।
नाथ कहहु केहि कारण, पायहु काकशरीर॥

यह प्रभुचरित पवित्र सुहावा ❀ कहहु कृपालु काक किमि पावा
तुम केहि भाँति सुना मदनारी ❀ कहहु मोहिं अति कौतुक भारी
गरुड़ महाज्ञानी गुणरासी ❀ हरिसेवक अति निकट निवासी
तेहिं केहि हेतु काक सन जाई ❀ सुनी कथा मुनिनिकर बिहाई
कहहु कवन विधि भा संवादा ❀ दोउ हरिभक्त काक उरगादा
गौरिगिरा सुनि सरल सुहाई ❀ बोले शिव सादर सुखपाई
धन्य सती पावनि मति तोरी ❀ रघुपति चरण प्रीति नहिं थोरी
सुनहु परम पुनीत इतिहासा ❀ जो सुनि होय शोक भ्रमनासा
उपजहि रामचरण विश्वासा ❀ भवनिधि तर नर बिनहिं प्रयासा

दो० ऐसे प्रश्न विहंगपति, कीन्ह काकसन जाइ।
सो सब सादर कहब मैं, सुनहु उमा चितलाइ॥

मैं जिमि कथा सुनी भवमोचनि ❀ सो प्रसंग सुनु सुमुखि सुलोचनि
प्रथम दक्ष गृह तव अवतारा ❀ सती नाम तब रहा तुम्हारा
दक्षयज्ञ तव भा अपमाना ❀ तुम अतिक्रोध तजा तहँ प्राना
मम अनुचरन कीन्ह मखभंगा ❀ जानहु तुम सो सकल प्रसंगा

१ अहङ्कार २ कैसे ३ शिव ४ समूह ५ गरुड़ ६ पावित्र ७ सेवक॥

तब अतिशोच भयउ मन मोरे ❀ दुखित भयउँ वियोग प्रिय तोरे
सुन्दर गिरि वन सरित[1] तड़ागा ❀ कौतुक देखत फिरौं विभागा
गिरि सुमेरु उत्तर दिशि दूरी ❀ नील शैल[2] इक सुन्दर भूरी
तासु कनकमय शिखर[3] सुहाये ❀ चारि चारु[4] मोरे मन भाये
तिन पर इक इक विटप विशाला ❀ वट[5] पीपर पाकरी रसाला[6]
शैलोपरि सुन्दर सर सोहा ❀ मणिसोपान देखि मन मोहा

दो० शीतल अमल मधुर जल, जलज विपुल बहुरङ्ग।
कूजत कलरव हंसगण, गुंजत मंजुल भृङ्ग॥

तेहि गिरि रुचिर बसै खग सोई ❀ तासु नाश कल्पान्त न होई
मायाकृत गुण दोष अनेका ❀ मोह मनोज आदि अविवेका
रहेउ व्यापि समस्त जग माहीं ❀ तेहिगिरि निकट कबहुँ नहिं जाहीं
तहँ बसि हरिहि भजै जिमि कागा ❀ सो सुनु उमा सहित अनुरागा
पीपर तरु तर ध्यान सो धरई ❀ जाप यज्ञ पाकरि तर करई
आंब छांह करि मानस पूजा ❀ तजि हरिभजन काज नहिं दूजा
वट तर कह हरिकथा प्रसंगा ❀ आवहिं सुनहिं अनेक विहंगा
रामचरित विचित्र विधि नाना ❀ प्रेमसहित कर सादर गाना
सुनहिं सकल मति विमल मराला[7] ❀ बसहिं निरन्तर जो तेहि काला
जब मैं जाइ सो कौतुक देखा ❀ उर उपजा आनन्द विशेखा

दो० तब कछु काल मराल तनु, धरि तहँ कीन्ह निवास।
सादर सुनि रघुपतिचरित, पुनि आयउँ कैलास॥

गिरिजा कहेउँ सो सब इतिहासा ❀ मैं जेहि समय गयउँ खगपासा
अब सो कथा सुनहु जेहि हेतू ❀ गयउ काकपहँ खगकुलकेतू
जब रघुनाथ कीन्ह रणक्रीड़ा ❀ समुझत चरित होत मोहिं व्रीड़ा[8]
इन्द्रजीत कर आपु बँधावा ❀ तब नारदमुनि गरुड़ पठावा
बन्धन काटि गयउ उरगादा ❀ उपजा हृदय प्रचण्ड विषादा

---

१ नदी २ पर्वत ३ कँगूरा ४ सुन्दर ५ बरगद ६ आंब ७ हंस ८ लज्जा॥

प्रभु बन्धन समुझत बहु भाँती ❀ करत विचार उरगे आराती
व्यापक ब्रह्म विरज वागीशा ❀ माया मोह पार परमीशा
सो अवतार सुनेउँ जग माहीं ❀ देखा सो प्रभाव कछु नाहीं

दो० भवबन्धन से छूटहीं, नर जपि जाकर नाम।
खर्व निशाचर बाँधेऊ, नागफाँस सोइ राम॥

नानाभाँति मनहिं समुझावा ❀ प्रकट न ज्ञान हृदय भ्रम छावा
खेदखिन्न[2] मन तर्क बढ़ाई ❀ भयउ मोहवश तुम्हरी नाई
व्याकुल गयउ देवऋषि[3] पाहीं ❀ कहेसि जो संशय निज मन माहीं
सुनि नारदहि लागि अतिदाया ❀ सुनु खग प्रबल राम की माया
जो ज्ञानिन कर चित अपहरई ❀ बरिआई विमोह वश करई
जेहि बहु बार नचावा मोहीं ❀ सो व्यापेउ विहङ्गपति तोहीं
महामोह उपजा मन तोरे ❀ मिटहि न वेगि कहे खग मोरे
चतुरानन[5] पहँ जाहु खगेशा ❀ सोइ करेहु जो देहिं निदेशा[6]

दो० अस कहि चले देवऋषि, करत रामगुणगान।
हरिमाया बल वरणत, पुनि पुनि परम सुजान॥

तब खगपति विरञ्चि पहँ गयऊ ❀ निज सन्देह सुनावत भयऊ
सुनि विरञ्चि रामहिं शिरनावा ❀ समुझि प्रताप प्रेम उरछावा
मनमहँ करहिं विचार विधाता ❀ मायावश कवि कोविद ज्ञाता
हरिमाया कर अमित प्रभावा ❀ विपुल[7] बार जो मोहिं नचावा
अगजगमय जग मम उपजाया ❀ नहिं आश्चर्य मोह खगराया
पुनि बोले विधि गिरा सुहाई ❀ जानु महेश राम प्रभुताई
वैनतेय शङ्कर पहँ जाहू ❀ तात अनत पूँछेहु जनि काहू
तहाँ होइ तव संशय हानी ❀ चला विहँगपति सुनि विधिबानी

दो० परमातुर विहङ्गपति, तब आयउ मम पास।
जात रहेउँ कुबेर गृह, उमा रहिउ कैलास॥

१ गरुड़ २ दुःखित ३ नारद ४ पक्षी ५ ब्रह्मा ६ आज्ञा ७ बहुत॥

तेइँ मम पद सादर शिरनावा ❀ पुनि आपन सन्देह सुनावा
सुनि ताकी पुनीत मृदु बानी ❀ प्रेमसहित मैं कहेउँ भवानी
मिलेउ गरुड़ मारग महँ मोहीं ❀ कौनि भाँति समुझावों तोहीं
जब कछु काल करिय सतसङ्गा ❀ तब यह होइ मोह भ्रमभङ्गा
सुनिय तहाँ हरिकथा सुहाई ❀ नाना भाँति मुनिन जो गाई
जेहिमहँ आदि मध्य अवसाना ❀ प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना
नित हरिकथा होइ जहँ भाई ❀ पठवौं तोहिं सुनहु तहँ जाई
जाइहि सुनत सकल सन्देहा ❀ होइहि रामचरण दृढ़ नेहा

दो० बिनु सतसङ्ग न हरिकथा, तेहि बिनु मोह न भाग।
मोह गये बिनु रामपद, होइ न दृढ़ अनुराग॥

मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा ❀ किये योग जप ज्ञान विरागा
उत्तर दिशि सुन्दर गिरि नीला ❀ तहँ रह काकभुशुण्डि सुशीला
राम भक्ति पथ परम प्रवीना ❀ ज्ञानी गुणगृह बहुकालीना
रामकथा सोइ कहै निरन्तर ❀ सादर सुनहिं विविध विहंगवर
जाइ सुनहु तहँ हरिगुण भूरी ❀ होइहि मोह जनित दुख दूरी
मैं जब सब तेहि कहा बुझाई ❀ चलेउ हरषि मम पद शिरनाई
ताते उमा न मैं समुझावा ❀ रघुपतिकृपा मर्म सब पावा
होइहि कीन्ह कबहुँ अभिमाना ❀ सो खोवै चह कृपानिधाना
कछु तेहिते पुनि मैं नहिं राखा ❀ खग जानै खगही की भाखा
प्रभुमाया बलवन्त भवानी ❀ जाहि न मोह कवन अस ज्ञानी

दो० ज्ञानी भक्त शिरोमणि, त्रिभुवनपतिकर यान।
ताहि मोह माया प्रबल, पामर करहिं गुमान॥
शिव विरञ्चि कहँ मोहई, को है बपुरा आन।
असजिय जानिभजहिंमुनि, मायापति भगवान॥

गयउ गरुड़ जहँ बसै भुशुण्डी ❀ मति अकुण्ठ हरिभक्ति अखण्डी

१ मेरे २ पार्वती ३ रास्ता ४ अन्त ५ प्रेम ६ चतुर ७ उत्पन्न॥

देखि शैल प्रसन्न मन भयऊ ❀ माया मोह शोक सब गयऊ
करि तड़ाग मज्जन जलपाना ❀ वटतर गयउ हृदय हर्षाना
वृन्द वृन्द विहङ्ग तहँ आये ❀ सुनन राम के चरित सुहाये
कथा अरम्भ करै सो चाहा ❀ ताही समय गयउ खगनाहा
आवत देखि सकल खगराजा ❀ हर्षेउ वायस सहित समाजा
अतिआदर खगपति कर कीन्हा ❀ स्वागत पूंछि सुआसन दीन्हा
करि पूजा समेत अनुरागा ❀ मधुर वचन बोलेउ तब कागा

दो० नाथ कृतारथ भयउँ मैं, तव दर्शन खगराज।
आयसु होय सो करहुँ अब, प्रभु आयहु केहि काज॥
सदा कृतारथरूप तुम, कह मृदु वचन खगेश।
जाकी अस्तुति सादर, निज मुख कीन्ह महेश॥

सुनहु तात जेहि कारण आयउँ ❀ सो सब भयउ दरश तव[३] पायउँ
देखि परम पावन तव आश्रम[४] ❀ गयउ मोह संशय नाना भ्रम
अब श्रीरामकथा अतिपावनि ❀ सदा सुखद दुखपुंजनशावनि
सादर तात सुनावहु मोहीं ❀ बारबार विनवौं प्रभु तोहीं
सुनत गरुड़ की गिरा विनीता ❀ सरल[५] सप्रेम सुखद सुपुनीता
भयउ तात मन परम उछाहा ❀ कहै लाग रघुपतिगुणगाहा
प्रथमहिं अतिअनुराग भवानी ❀ रामचरित सर कहेसि बखानी
पुनि नारदकर मोह अपारा ❀ कहेसि बहुरि रावण अवतारा
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई ❀ पुनि शिशुचरित कहेसि मनलाई

दो० बालचरितकहिविविधविधि, मनमहँ परम उछाह।
ऋषि आगमन कहेसि पुनि, श्रीरघुवीर विवाह॥

बहुरि राम अभिषेक[६] प्रसंगा ❀ पुनि नृप वचन राजरसभंगा
पुरवासिन कर विरह[७] विषादा ❀ कहेसि राम लक्ष्मण संवादा
विपिन[८] गमन केवट अनुरागा ❀ सुरसरि उत्तरि निवास प्रयागा

१ स्नान २ पक्षी ३ तुम्हारा ४ स्थान ५ सीधी ६ तिलक ७ जुदाई ८ जंगल॥

वालमीकि प्रभु मिलन बखाना ❀ चित्रकूट जिमि बस भगवाना
सचिवागमन नगर नृपमरणा ❀ भरतागमन प्रेम अति वरणा
करि नृपक्रिया संग पुरवासी ❀ भरत गये जहँ प्रभु सुखरासी
पुनि रघुपति बहुविधि समुझाये ❀ लै पादुका[2] अवधपुर आये
भरत रहनि सुरपतिसुत[3] करणी ❀ प्रभु अरु अत्रिभेंट पुनि वरणी

दो० कहि विराधवध जाहि विधि, देह तजी शरभङ्ग।
वरणि सुतीक्ष्ण प्रेम पुनि, प्रभुअगस्त्यसतसङ्ग॥

कहि दण्डकवन पावनताई ❀ गृध्र मयत्री पुनि तेइँ गाई
पुनि प्रभु पंचवटी कृत वासा ❀ भंजी[4] सकल मुनिन की त्रासा
पुनि लक्ष्मण उपदेश अनूपा ❀ शूर्प्पणखा जिमि कीन्ह कुरूपा
खर दूषण बध बहुरि बखाना ❀ जिमि सब मर्म दशानन जाना
दशकन्धर मारीच बतकही ❀ जेहि विधि भई सकल तेइँ कही
पुनि माया सीताकर हरणा ❀ श्रीरघुवीर विरह कछु वरणा
पुनि प्रभु गृध्रक्रिया जिमिकीन्हीं ❀ बधि कबन्ध शबरिहिं गति दीन्हीं
बहुरि विरह वरणत रघुवीरा ❀ जेहि विधि गये सरोवर[6] तीरा

दो० प्रभु नारद संवाद कहि, मारुतिमिलन प्रसङ्ग।
पुनि सुग्रीव मिताई, बालि प्राणकर भङ्ग॥
कपिहितिलककरिप्रभुकृत, शैल प्रवर्षण वास।
वरणत वर्षा शरद ऋतु, राम रोष कपित्रास॥

जेहि विधि कपिपति कीश पठाये ❀ सीता खोज सकल दिशि धाये
विवँर[7] प्रवेश कीन्ह जेहि भाँती ❀ कपिन बहोरि मिला सम्पाती
सुनि सब कथा समीरकुमारा ❀ लाँघत भयउ पयोधि[8] अपारा
लङ्का कपि प्रवेश जिमि कीन्हा ❀ पुनि सीतहिं धीरज जिमि दीन्हा
वन उजारि रावणहिं प्रबोधी ❀ पुर दहि लाँघेउ बहुरि पयोधी
आये कपि सब जहँ रघुराई ❀ वैदेही की कुशल सुनाई

१ मन्त्री का आना २ खराऊँ ३ जयन्त ४ नाशेउ ५ क्रेया ६ तालाब ७ बिल ८ समुद्र॥

सेन समेत यथा रघुवीरा ❀ उतरे जाइ वारिनिधि तीरा[1]
मिला विभीषण जेहि विधि आई ❀ सागर निग्रह[2] कथा सुनाई
दो० सेतुबाँधि कपिसेन जिमि, उतरे सागर पार।
गयो बसीठी[3] वीरवर, जेहिविधिबालिकुमार॥
निशिचर कीश लड़ाई, वरणेसि विविध प्रकार।
कुम्भकर्ण घननाद[4] कर, बल पौरुष संहार॥
निशिचरनिकर मरण विधिनाना ❀ रघुपति रावण समर[5] बखाना
रावण बध मन्दोदरि शोका ❀ राज्य विभीषण देव अशोका
सीता रघुपति मिलन बहोरी ❀ सुरन कीन्ह अस्तुति करजोरी
पुनि पुष्पक चढ़ि कपिन समेता ❀ अवध चले प्रभु कृपानिकेता
जेहि विधि राम नगर नियराये ❀ वायस विशद चरित सब गाये
कहेसि बहोरि राम अभिषेका ❀ पुर वर्णत नृपनीति अनेका
कथा समस्त भुशुण्डि बखानी ❀ जो मैं तुमसन कहा भवानी
सुनि शुभ रामकथा खगनाहा ❀ विगतमोह मन परम उछाहा
सो० गयउ मोर सन्देह, सुनेउँ सकल रघुपतिचरित।
भयउ रामपद नेह, तव प्रसाद वायस तिलक॥
मोहिंभयउअतिमोह, प्रभु बन्धन रणमहँ निरखि।
चिदानन्द सन्दोह, राम विकल कारण कवन॥
देखि चरित अति नर अनुहारी ❀ भयउ हृदय मम संशय भारी
सो भ्रम अब मैं हितकरि माना ❀ कीन्ह अनुग्रह कृपानिधाना
जो अति आतप[6] व्याकुल होई ❀ तरु[7] छाया सुख जानै सोई
जो नहिं होत मोह अति मोहीं ❀ मिलतेउँ तात कवन विधि तोहीं
सुनतेउँ किमि हरिकथा सुहाई ❀ अतिविचित्र सबविधि तुम गाई
निगमागम[8] पुराण मत एहा ❀ कहहिं सिद्ध मुनि नहिं सन्देहा
सन्त विशुद्ध मिलहिं पुनि तेही ❀ चितवहिं राम कृपाकरि जेही

१ किनारा २ दण्ड ३ दूत ४ मेघनाद ५ युद्ध ६ घाम ७ वृक्ष ८ वेद-शास्त्र॥

रामकृपा तव दरशन भयऊ ❀ तव प्रसाद मम संशय गयऊ

दो० सुनि विहंगपति वाणी, सहितविनय अनुराग।
पुलकगात लोचन सजल, मन हर्षेउ अतिकाग॥
श्रोतासुमति सुशीलशुचि, कथारसिक हरिदास।
पाइ उमा यह गोप्य मत, सज्जन करहिं प्रकास॥

बोलेउ काकभुशुण्डि बहोरी ❀ नभगनाथ पर प्रीति न थोरी
सब विधि नाथ पूज्य तुम मेरे ❀ कृपापात्र रघुनायक केरे
तुमहिं न संशय मोह न माया ❀ मोपर नाथ कीन्ह तुम दाया
पठै मोह मिसु खगपति तोहीं ❀ रघुपति दीन्ह बड़ाई मोहीं
तुम निज मोह कहा खगसाईं ❀ सो नहिं कछु आश्चर्य गुसाईं
नारद शिव विरंचि सनकादी ❀ जो मुनिनायक आतमवादी
मोह न अन्ध कीन्ह केहि केही ❀ को जग काम नचाव न जेही
तृष्णा केहि न कीन्ह बौराहा ❀ केहिके हृदय क्रोध नहिं दाहा

दो० ज्ञानी तापस शूर कवि, कोविद गुणआगार।
केहिके लोभ विडम्बना, कीन्ह न यहि संसार॥
श्रीमद वक्र न कीन्ह केहि, प्रभुता बधिर न काहि।
मृगनयनी के नयनशर, को असलागु न जाहि॥

गुणकृत सन्निपात नहिं केही ❀ को न मान मद व्यापेउ जेही
यौवनज्वर केहि नहिं बलकावा ❀ ममता केहिकर यश न नशावा
मत्सर काहि कलङ्क न लावा ❀ काहि न शोक समीर डोलावा
चिन्तासांपिनि काहि न खाया ❀ को जग जाहि न व्यापी माया
कीट मनोरथ दारु शरीरा ❀ जेहि न लाग घुन को अस धीरा
सुत वित्त नारि एषणा तीनी ❀ केहिकी मति इनकृत न मलीनी
यह सब मायाकृत परिवारा ❀ प्रबल अमित को वरणै पारा
शिव चतुरानन देखि डराहीं ❀ अपर जीव केहि लेखे माहीं

---

१ शरीर २ गूढ़ ३ गरुड़ ४ बहाना ५ डाह ६ वायु ७ लकड़ी ८ घन॥

दो० व्यापि रह्यो संसार महँ, माया कटक प्रचण्ड।
सेनापति कामादि भट, दम्भ कपट[2] पाखण्ड॥
सो दासी रघुवीर की, समुझै मिथ्या[3] सोपि।
छुटै न रामकृपा बिनु, नाथ कहौं प्रण रोपि॥

सो माया सब जगहि नचावा ❀ जासु चरित लखि काहु न पावा
सो प्रभु भ्रूविलास खगराजा ❀ नाच नटीइव सहित समाजा
व्यापक ब्रह्म अखण्ड अनन्ता ❀ अखिल अमोघ एक भगवन्ता
सोइ सच्चिदानन्द घनश्यामा ❀ अज विज्ञानरूप गुणधामा
अगुण अदम्भ गिरा गोतीता ❀ समदर्शी अनवद्य[5] अजीता
निर्गुण निराकार निर्मोहा ❀ नित्य निरंजन सुखसंदोहा
प्रकृतिपार प्रभु सब उरवासी ❀ ब्रह्म निरीह बिरज अविनासी
इहां मोह कर कारण नाहीं ❀ रवि सम्मुख तम[6] कबहुँ न जाहीं

दो० भक्तहेतु भगवान प्रभु, राम धरेउ तनु भूप।
किये चरित पावन परम, प्राकृत नर अनुरूप॥
यथा अनेकन वेष धरि, नृत्य करै नट कोइ।
सोइ सोइ भाव दिखावै, आपु न होइहि सोइ॥

अस रघुपतिलीला उरगारी ❀ दनुजविमोहन जनसुखकारी
जे मतिमलिन विषयवश कामी ❀ प्रभुपर मोह धरहिं इमि स्वामी
नयनदोष जाकहँ जब होई ❀ पीतवरण शशिकहँ कह सोई
जब जेहि दिशि भ्रम होइ खगेशा ❀ सो कह पश्चिम उगेउ दिनेशा
नौकारूढ़ चलत जग देखा ❀ अचल मोहवश आपुहि लेखा
बालक भ्रमहिं न भ्रमहिं गृहादी ❀ कहहिं परस्पर मिथ्यावादी
हरिविषयिक अस मोह विहङ्गा ❀ सपनेहु नहिं अज्ञान प्रसङ्गा
मायावश मतिमन्द अभागी ❀ हृदय जवनिका[8] बहुविधि लागी
ते शठ हठवश संशय करहीं ❀ निज अज्ञान राम पर धरहीं

१ योद्धा २ छल ३ झूठ ४ इन्द्रियों से परे ५ अनिन्द्य ६ अन्धकार ७ सूर्य ८ कनात॥

दो० काम क्रोध मद लोभरत, गृहासक्त दुखरूप।
ते किमि जानहिं रघुपतिहि, मूढ़ परे तमकूप॥
निर्गुणरूप सुलभ अति, सगुण न जानै कोइ।
सुगम अगम नाना चरित, सुनिमुनिमनभ्रमहोइ॥

सुनु खगपति रघुपति प्रभुताई ❀ कहौं यथामति कथा सुहाई
ज्यहि विधि मोह भयउ प्रभु मोहीं ❀ सो सब चरित सुनावों तोहीं
राम कृपा भाजन[2] तुम ताता ❀ हरिगुण प्रीति मोहिं सुखदाता
ताते नहिं कछु तुमहिं दुरावों ❀ परम रहस्य मनोहर गावों
सुनहु रामकर सहज स्वभाऊ ❀ जन अभिमान न राखैं काऊ
संसृतिमूल शूलप्रद नाना ❀ सकल शोकदायक अभिमाना
ताते करहिं कृपानिधि दूरी ❀ सेवक पर ममता अति भूरी
जिमि शिशु[3] तन व्रण[4] होइ गुसाईं ❀ मातु चिराव कठिन की नाईं

दो० यदपि प्रथम दुख पावै, रोवै बाल अधीर।
व्याधिनाश हित जननी, गनै न सो शिशुपीर॥
तिमिरघुपति निजदासकर, हरहिं मान हितलागि।
तुलसिदास ऐसे प्रभुहिं, कसनभजहुभ्रमत्यागि॥

राम कृपा आपनि जड़ताई[5] ❀ कहौं खगेश सुनहु मनलाई
जब जब राम मनुज तनु धरहीं ❀ भक्त हेतु लीला बहु करहीं
तब तब अवधपुरी मैं जाऊँ ❀ शिशुलीला विलोकि हर्षाऊँ
जन्ममहोत्सव देखौं जाई ❀ वर्ष पाँच तहँ रहौं लुभाई
इष्टदेव मम बालक रामा ❀ शोभावपुष कोटिशत कामा
निज प्रभु वदन[6] निहारि निहारी ❀ लोचन सफल करौं उरगारी
लघु वायस वपु[7] धरि हरिसङ्गा ❀ देखौं बालचरित बहु रङ्गा

दो० लरिकाईं जहँ जहँ फिरहिं, तहँ तहँ सङ्ग उड़ाउँ।

१ अनेक २ पात्र ३ लड़का ४ फोड़ा ५ मूर्खता ६ मुँह ७ शरीर॥

जूठन परै अँजिर महँ, सो उठाय पुनि खाउँ॥
एकबार अतिशय प्रबल, चरित कीन्ह रघुवीर।
सुमिरत प्रभु लीला सोई, पुलकित भयउ शरीर॥

कहै भुशुण्डि सुनहु खगनायक ❀ रामचरित सेवक सुखदायक
नृपमन्दिर सुन्दर सबभाँती ❀ खचित कनकमणि नानाजाती
वरणि न जाय रुचिर[2] अँगनाई[1] ❀ जहँ खेलहिं नित चारो भाई
बाल विनोद करत रघुराई ❀ विचरत अजिर जननि सुखदाई[3]
मरकत मृदुल कलेवँर[4] श्यामा ❀ अङ्गअङ्ग प्रति छवि बहु कामा
नव राजीव अरुण मृदु चरणा ❀ पदजरुचिर नख शशिद्युतिहरणा
ललित अङ्क कुलिशादिक चारी ❀ नूपुर[5] चारु मधुर रवकारी
चारु पुरट मणि रचित बनाई ❀ कटि किङ्किणिं[6] कलमुखर सुहाई

दो॰ रेखा त्रय सुन्दर उदर, नाभि रुचिर गम्भीर।
उर आयतँ भ्राजतविविध, बाल विभूषण चीर॥

अरुण पाणि नख करज मनोहर ❀ बाहु विशाल विभूषण सोहर
कन्ध बाल केहरि[8] दर ग्रीवा ❀ चारु चिबुक आनन छविसींवा
कलबल वचन अधर अरुणारे ❀ दुइ दुइ दशन विशद वर बारे
ललित कपोल मनोहर नासा ❀ सकल सुखद शशि करसमहासा
नीलकञ्ज लोचन भयमोचन ❀ भ्राजत भाल तिलक गोरोचन
विकट भृकुटि सम श्रवण सुहाये ❀ कुञ्चित कच मेचक छवि छाये
पीत भीन भँगुली तनु सोही ❀ किलकनि चितवनि भावत मोही
रूपराशि नृप अजिर विहारी ❀ नाचहिं निज प्रतिबिम्ब निहारी
मोसन करहिं विविधविधि क्रीड़ा ❀ वर्णत चरित होत मन व्रीड़ा
किलकत मोहिं धरन जब धावहिं ❀ चलौं भाजि तब पूर्प[9] दिखावहिं

दो॰ आवत निकट हँसहिं प्रभु, भाजत रुदन कराहिं।
जाउँ समीप गहन पद, फिरिफिरिचितैपराहिं॥

१ आँगन २ सुन्दर ३ आनन्द ४ शरीर ५ पहुँटिया ६ करधनी ७ चौड़ा ८ सिंह ९ पुवा॥

प्राकृत शिशुइव लीला, देखि भयउ मोहिं मोह।
कवन चरित्र करत प्रभु, चिदानन्द सन्दोह॥

इतना मन आनत खगराया[1] ❀ रघुपति प्रेरित व्यापी माया
सो माया न दुखद मोहिं काहीं ❀ आन जीव इव संसृति नाहीं
नाथ इहाँ कछु कारण आना ❀ सुनहु सो सावधान हरियाना
ज्ञान अखण्ड एक सीतावर ❀ मायावश्य जीव सचराचर
जो सबके रह ज्ञान एक रस ❀ ईश्वर जीवहि भेद कहहु कस
मायावश्य जीव अभिमानी ❀ ईशवश्य माया गुणखानी
परवश[2] जीव स्ववश[3] भगवन्ता ❀ जीव अनेक एक श्रीकन्ता
द्विविधा भेद यदपि कृत माया ❀ बिनु हरिजाइ न कोटि उपाया

दो० रामचन्द्र के भजन बिनु, जो चह पद निर्वाण[4]।
ज्ञानवन्त अपि सोपि नर, पशु बिनु पुच्छ विषाण[5]॥
राकापति[6] षोड़श उगहिं, तारागण समुदाय।
सकल गिरिन दव[8] लाइये, रवि बिनु राति न जाय॥

ऐसेहि बिनु हरिभजन खगेशा ❀ मिटै न जीवन केर कलेशा
हरिसेवकहिं न व्याप अविद्या ❀ प्रभु प्रेरित तेहि व्यापै विद्या
ताते नाश न होइ दासकर ❀ भेद भक्ति बाढ़ै विहंगवर
भ्रममय चकित राम मोहिं देखा ❀ बिहँसे सो सुनु चरित विशेखा
तेहि कौतुक कर मर्म न काहू ❀ जाना अनुज न मातु पिताहू
जानु पाणि धाये मोहिं धरना ❀ श्यामल गात अरुण कर चरना
तब मैं भागि चलेउँ उरगारी ❀ राम गहन कहँ भुजा पसारी
जिमि जिमि दूरि उड़ाउँ अकासा ❀ तिमितिमि भुज देखौं निजपासा

दो० ब्रह्मलोक लौं गयउँ मैं, चितवत पाछ उड़ात।
युग अंगुलकर बीच रह, रामभुजहि मोहिं तात॥

---

१ गरुड़ २ पराधीन ३ स्वतन्त्र ४ मोक्ष ५ सींग ६ चन्द्रमा ७ नक्षत्र ८ अग्नि॥

सप्तावरण भेद करि, जहँलगिगति रहिमोरि।
गयोंतहाँप्रभुभुजनिरखि, व्याकुल भयों बहोरि॥

मूँदेउँ नयन तृषित जब भयऊं ❀ पुनि चितवत कोशलपुर गयऊं
मोहिं विलोकि राम मुसुकाहीं ❀ बिहँसत तुरत गयउँ मुखमाहीं
उदर मांझ सुनु अण्डजरांया ❀ देखेउँ बहु ब्रह्माण्ड निकाया
अतिविचित्र तहँ लोक अनेका ❀ रचना अधिक एक ते एका
कोटिन चतुरानन[2] गौरीशा ❀ अगणित उडुगण रवि रजनीशा[3]
अगणित लोकपाल यम काला ❀ अगणित भूधर भूमि विशाला
सागर सरिता विपिन[4] अपारा ❀ नानाभाँति सृष्टि विस्तारा
सुर मुनि सिद्ध नाग नर किन्नर ❀ चारि प्रकार जीव सचराचर

दो० जो नहिं देखा नाहिं सुना, जो मनमहँ न समाइ।
असअद्भुत तहँ देखेउँ, वरणि कवनविधिजाइ॥
एक एक ब्रह्माण्डमहँ, रहेउँ वर्ष शत एक।
यहि विधि मैं देखत फिरेउँ, अण्डकटाह अनेक॥

लोक लोकप्रति भिन्न विधाता ❀ भिन्न विष्णु शिव मनु दिशित्राता[5]
नर गन्धर्व भूत वैताला ❀ किन्नर निशिचर पशु खग व्याला
देव दनुजगण नाना जाती ❀ सकल जीव तहँ आनहिं भाँती
महि सरि[6] सागर सर[7] गिरि नाना ❀ सब प्रपञ्च तहँ आनहिं आना
अण्डकोश प्रति प्रति निज रूपा ❀ देखेउँ जिनिसि अनेक अनूपा
अवधपुरी प्रति भुवन निहारी ❀ सरयू भिन्न भिन्न नर नारी
दशरथ कौशल्यादिक माता ❀ विविधरूप भरतादिक भ्राता
प्रति ब्रह्माण्ड राम अवतारा ❀ देखेउँ बाल विनोद अपारा

दो० भिन्न भिन्न सब देखेऊं, अतिविचित्र हरियान।
अगणित भुवन फिरेउँ मैं, राम न देखा आन॥

१ गरुड़ २ ब्रह्मा ३ चन्द्रमा ४ वन ५ दिशाओं के रक्षक ६ नदी ७ तालाब॥

सोइ शिशुपन[1] सोइ शोभा, सोइ कृपालु रघुवीर।
भुवन भुवन देखत फिरेउँ, प्रेरित मोहसमीर[2]॥
भ्रमत मोहिं ब्रह्माण्ड अनेका ❀ बीते मनहुँ कल्पशत एका
फिरत फिरत निज आश्रम आयउँ ❀ तहँ पुनि रहि कछु काल गवाँयउँ
निज प्रभुजन्म अवध सुनि पायउँ ❀ निर्भर प्रेम हरषि उठि धायउँ
देखेउँ जन्म महोत्सव जाई ❀ जेहिविधि प्रथम कहा मैं गाई
राम उदर देखेउँ जग नाना ❀ देखत बनै न जात बखाना
तहँ पुनि देखेउँ राम सुजाना ❀ मायापति कृपालु भगवाना
करौं विचार बहोरि बहोरी ❀ मोहकलित व्यापित मतिभोरी
उभय घरीमहँ मैं सब देखा ❀ भयउँ भ्रमित मन मोह विशेखा
दो० देखि कृपालु विकल मोहिं, बिहँसे तब रघुवीर।
बिहँसतही मुख बाहर, आयउँ सुनु मतिधीर॥
सोइ लरिकाईं मोहिंसन, लगे करन पुनि राम।
कोटि भाँति समुझायों, मन न लहै विश्राम॥
देखि चरित यह सो प्रभुताई ❀ समुझत देहदशा बिसराई
धरणि परेउँ मुख आव न बाता ❀ त्राहि त्राहि आरतजन[3] त्राता[4]
प्रेमाकुल[5] प्रभु मोहिं विलोकी ❀ निजमाया प्रभुता तब रोंकी
कर सरोज प्रभु मम शिर धरेऊ ❀ दीनदयालु सकल दुख हरेऊ
कीन्ह राम मोहिं विगत विमोहा ❀ सेवक सुखद कृपासन्दोहा
प्रभुता प्रथम विचारि विचारी ❀ मन महँ होइ हर्ष अतिभारी
भक्तबछलता प्रभुकै देखी ❀ उपजी मम उर प्रीति विशेखी
सजल नयन पुलकित करजोरी ❀ कीन्ही बहुविधि विनय बहोरी
दो० सुनि सप्रेम मम वाणी, देखि दीन निज दास।
वचन सुखद गम्भीर मृदु[6], बोले रमानिवास॥

१ बालपन २ मोह की हवा ३ दुःखी लोग ४ रक्षक ५ प्रेम से विकल ६ कोमल॥

काकभुशुण्डी मांगु वर, अतिप्रसन्नमोहिंजानि।
अणिमादिकसिधिअपरनिधि, मोक्षसकलसुखखानि॥
ज्ञान विवेक विरति विज्ञाना ❋ मुनि दुर्लभ गुण जे जगजाना
आजु देउँ सब संशय नाहीं ❋ माँगु जो तोहिं भाव मनमाहीं
सुनि प्रभुवचन बहुत अनुरागेउँ ❋ मन अनुमान करन तब लागेउँ
प्रभु कह देन सकल सुख सही ❋ भक्ति आपनी देन न कही
भक्तिहीन गुण सुख सब कैसे ❋ लवण विना बहु व्यञ्जन जैसे
भजनहीन सुख कवने काजा ❋ अस विचारि बोलेउँ खगराजा
जो प्रभु है प्रसन्न वर देहू ❋ मोपर करहु कृपा अरु नेहू
मन भावत वर मांगौं स्वामी ❋ तुम उदार उर अन्तरयामी
दो० अविरल भक्ति विशुद्ध तव, श्रुति पुराण जो गाव।
जेहि खोजत योगीश मुनि, प्रभुप्रसाद कोउ पाव॥
भक्त कल्पतरु प्रणतहित, कृपासिन्धु सुखधाम।
सोइ निज भक्ति मोहिं प्रभु, देहु दयाकरि राम॥
एवमस्तु कहि रघुकुलनायक ❋ बोले वचन परम सुखदायक
सुनु वायस तैं परम सयाना ❋ काहे न माँगसि अस वरदाना
सब सुखखानि भक्ति तैं माँगी ❋ नहिं कोउ तोहिं समान बड़भागी
जो मुनि कोटियत्न नहिं लहहीं ❋ करि जप योग अनलतनु दहहीं
रीझेउँ देखि तोरि चतुराई ❋ मांगेउ भक्ति मोहिं अति भाई
सुनु विहंग प्रसाद अब मोरे ❋ सब शुभगुण बसिहैं उर तोरे
भक्ति ज्ञान विज्ञान विरागा ❋ योग चरित्र रहस्य विभागा
जानब तैं सबहीकर भेदा ❋ मम प्रसाद नहिं साधन खेदा
दो० मायासम्भव सकल भ्रम, अबनहिंव्यापिहितोहिं।
जान्यसु ब्रह्म अनादिअज, अगुण गुणाकर मोहिं॥

१ बहुत खुश २ आठ सिद्धियों में एक का नाम ३ नमक ४ वेद ५ ऐसाही हो॥

मोहिं भक्त प्रिय सन्तत¹, अस विचारि सुनु काग।
काय वचन मन ममचरण, करहु अचल अनुराग॥
अब सुनु परम विमल ममबानी ❀ सत्य सुगम निगमादि² बखानी
निज सिद्धान्त सुनावों तोहीं ❀ सुनि मन धरु सब तजि भजु मोहीं
मम माया सम्भव³ संसारा ❀ जीव चराचर विविध प्रकारा
सब मम प्रिय सब मम उपजाये ❀ सबते अधिक मनुज मोहिं भाये
तेहिमहँ द्विज द्विजमहँ श्रुतिधारी⁴ ❀ तिनमहँ निगमधर्म अनुसारी
तिनमहँ पुनि विरक्त पुनि ज्ञानी ❀ ज्ञानिहुँ ते अतिप्रिय विज्ञानी
तेहिते पुनि मोहिं प्रिय निजदासा ❀ जेहि गति मोरि न दूसरि आसा
पुनि पुनि सत्य कहौं तोहिं पाहीं ❀ मोहिं सेवकसम प्रिय कोउ नाहीं
भक्तिहीन विरञ्चि किन होई ❀ सब जीवन मम प्रिय मोहिं सोई
भक्तिवन्त अति नीचहु प्राणी ❀ मोहिं प्राणप्रिय अस मम वाणी
दो० शुचिसुशीलसेवकसुमति, कहु प्रिय काहि न लाग।
श्रुतिपुराण कह नीतिअस, सावधान सुनु काग॥
एक पिताके विपुल⁶ कुमारा ❀ होइँ पृथक गुण शील अचारा
कोउ पण्डित कोउ तापस ज्ञाता ❀ कोउ धनवन्त शूर कोउ दाता
कोउ सर्वज्ञ धर्मरत कोई ❀ सबपर पितहिं प्रीति सम होई
कोउ पितुभक्त वचन मन कर्म्मा ❀ सपनेहुँ जान न दूसर धर्म्मा
सो प्रिय सुत पितु प्राण समाना ❀ यद्यपि सो सब भाँति अयानाँ⁷
यहि विधि जीव चराचर जेते ❀ त्रिजग देव नर असुर समेते
अखिल विश्व यह मम उपजाया ❀ सब पर मोरि बराबरि दाया
तिनमहँ जो परिहरि मद माया ❀ भजहिं मोहिं मन वच अरु काया
दो० पुरुष नपुंसक नारि नर, जीव चराचर कोइ।
सर्वभाव भजु कपट तजि, मोहिं परमप्रिय सोइ॥
सो० सत्य कहौं खग तोहिं, शुचि सेवक मम प्राण प्रिय।

१ सेवक २ हमेशा ३ वेदादि ४ उत्पत्ति ५ वेदपाठी ६ बहुत ७ अज्ञान॥

असविचारिभजुमोहिं, परिहरिआशभरोससब॥
कबहुँ काल नहिं व्यापै तोहीं ❀ सुमिरेसु भजेसु निरन्तर मोहीं
प्रभु वचनामृत सुनि न अघाऊं ❀ तनु पुलकित मन अतिहर्षाऊं
सो सुख जानैं मन अरु काना ❀ नहिं रसनां[२] प्रति जाइ बखाना
प्रभु शोभा सुख जानत नयना ❀ किमिकहिसकैं तिन्हैं नहिं बयना
बहुविधि मोहिं प्रबोधि शिष देई ❀ लगे करन शिशु कौतुक[३] तेई
सजलनयन कछु मुखकरि रूखा ❀ चितै मातु तन लागी भूखा
देखि मातु आतुरं उठिधाई ❀ कहि मृदुवचन लिये उरलाई
गोदराखि कराव पय पाना ❀ रघुपति चरित ललित करिगाना
सो० जेहि सुखलागि पुरारि[५], अशिववेषकृतशिवसुखद।
अवधपुरी नर नारि, तेहि सुखमहँ संततमगन॥
सोइ सुखकर लवलेश, जिन बारेक सपनेहुँ लहेउ।
ते नहिं गनहिं खगेश[६], ब्रह्मसुखहिं सज्जन सुमति॥
मैं पुनि रह्यों अवध कछुकाला ❀ देख्यों बाल विनोद रसाला
रामप्रसाद भक्ति वर पायउँ ❀ प्रभुपदवन्दि निजाश्रम आयउँ
तबते मोहिं न व्यापी माया ❀ जबते रघुनायक अपनाया
यह सब गुप्त चरित मैं गावा ❀ हरिमाया जिमि मोहिं नचावा
निज अनुभव अब कहौं खगेशा ❀ बिनु हरिभजन न जाहिं कलेशा
राम कृपा बिनु सुनु खगराई ❀ जानि न जाइ राम प्रभुताई
जाने बिनु न होइ परँतीती ❀ बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती
प्रीति विना नहिं भक्ति दृढ़ाई ❀ जिमि खगेश जलकी चिकनाई
सो० बिनु गुरु होइ कि ज्ञान, ज्ञान कि होइ विराग बिनु।
गावहिं वेद पुरान, सुखकिलहियहरिभक्तिबिनु॥
कोउ विश्राम कि पाव, तात सहज सन्तोष बिनु।
चलै कि जल बिनुनाव, कोटियतनपचिपचिमरिय

१ छोड़कर २ जीभ ३ खेल ४ शीघ्र ५ शिव ६ गरुड़ ७ विश्वास॥

बिनु सन्तोष न काम नशाहीं ❀ काम अछत सुख सपनेहुँ नाहीं
राम भजन बिनु मिटहिं कि कामा ❀ थलविहीन तरु[1] कबहुँ कि जामा
विना ज्ञान की समता आवै ❀ कोउ अवकाश कि नभ[2] बिनु पावै
श्रद्धा विना धर्म नहिं होई ❀ बिनु महि[3] गन्ध कि पावै कोई
बिनु तप तेज कि करु विस्तारा ❀ जल बिनु रस कि होइ संसारा
शील कि मिलु बिनु बुध[4] सेवकाई ❀ जिमि बिनु तेज न रूप गुसांई
निजसुख बिनु मन होइ कि थीरा ❀ परस कि होइ विहीन समीरा[5]
कवनिउँ सिद्धि कि बिनु विश्वासा ❀ बिनु हरिभजन न भव भय नासा

दो० बिनु विश्वास भक्ति नहिं, तेहि बिनु द्रवहिं न राम।
रामकृपा बिनु सपनेहुँ, मन कि लहै विश्राम॥

सो० अस विचारि मतिधीर, तजि कुतर्क[7] संशय[6] सकल।
भजहु राम रणधीर, करुणाकर सुन्दर सुखद॥

निजमति सरिस नाथ मैं गाई ❀ प्रभु प्रताप महिमा खगराई
कह्यों न कछु करियुक्ति विशेखी ❀ यह सब मैं निजनयनन देखी
महिमा नाम रूप गुणगाथा ❀ सकल अमित अनन्त रघुनाथा
निजनिजमतिमुनिहरिगुणगावहिं ❀ निगम शेष शिव पार न पावहिं
तुम्हें आदि खग मशक[8] प्रयन्ता ❀ नभ उड़ाहिं नहिं पावहिं अन्ता
तिमि रघुपति महिमा अवगाहा ❀ तात कबहुँ कोउ पाव कि थाहा
राम काम शतकोटि सुभगतन ❀ दुर्गा कोटि अमित अरिमर्दन
शक्र कोटिशतसरिस विलासा ❀ नभशतकोटि अमित अवकासा

दो० मरुतकोटिशत विपुलबल, रविशतकोटिप्रकास।
शशिशतकोटि सुशीतल, शमनसकलभवत्रास॥
कालकोटिशतसरिसअति, दुस्तर दुर्ग दुरन्त।
धूम्रकेतु शतकोटि सम, दुराधर्ष भगवन्त॥

---

१ वृक्ष २ आकाश ३ पृथ्वी ४ ज्ञानी ५ हवा ६ संदेह ७ गुर्णों की कहानी ८ मशा॥

प्रभु अगाध शतकोटि पताला ❁ शमन कोटिशत सरिस कराला
तीरथ अमित कोटिशत पावन ❁ नाम अखिल अघपुञ्ज[1] नशावन
हिमगिरिकोटि अचल रघुबीरा ❁ सिन्धु कोटिशत सरिस गँभीरा
कामधेनु शतकोटि समाना ❁ सकल कामदायक भगवाना
शारद कोटि अमित चतुराई ❁ विधि शतकोटि अमित निपुणाई
विष्णु कोटिशत पालनकर्त्ता ❁ रुद्र कोटिशत सम संहर्त्ता
धनद[2] कोटिशत सम धनवाना ❁ माया कोटि प्रपञ्च निधाना
धराधरण शतकोटि अहीशा ❁ निरवधि निरुपम प्रभु जगदीशा

छं० निरवधिनिरूपमरामसमनहिंआननिगम[3]आगमकहै।
जिमि कोटिशतखद्योत[4] रविसम कहतअतिलघुतालहै॥
यहिभाँतिनिजनिजमतिविलासमुनीशहरिहि बखानहीं
प्रभु भावगाहक अतिकृपालु सुप्रेमते सुख मानहीं॥

दो० राम अमित गुणसागर, थाह कि पावै कोइ।
सन्तनसनजसकछुसुनेउँ, तुमहिं सुनायउँ सोइ॥

सो० भाववश्य भगवान, सुखनिधानकरुणाभुवन[5]।
तजि ममता मद मान, भजिय रामसीतारमण॥

सुनि भुशुण्डिके वचन सुहाये ❁ हरषित खगपति पंख फुलाये
नयन नीर मन अतिहर्षाना ❁ श्रीरघुपति प्रताप उर[6]आना
पाछिल मोह समुझि पछिताना ❁ ब्रह्म अनादि मनुज करि जाना
पुनि पुनि काक चरण शिरनावा ❁ जानि रामसम प्रेम बढ़ावा
गुरु बिनु भवनिधि तरै न कोई ❁ जो विरञ्चि शंकर सम होई
संशय सर्प ग्रसेउ मोहिं ताता ❁ दुखद लहरि कुतर्क बहु वाता[7]
तव स्वरूप गारुड़ि रघुनायक ❁ मोहिं जियायहु जनसुखदायक
तव प्रसाद मम मोह नशाना ❁ राम रहस्य अनूपम[8] जाना

१ पापसमूह २ कुबेर ३ वेद ४ जुगुनू ५ लोक ६ मन में ७ हवा ८ उपमा-रहित॥

दो० ताहि प्रशंसि विविधविधि, शीश नाइ करजोरि।
वचन विनीत सप्रेम मृदु, बोले गरुड़ बहोरि॥
प्रभु अपने अविवेक ते, पूछौं स्वामी तोहिं।
कृपासिन्धु सादर कहहु, जानिदासनिजमोहिं॥

तुम सर्वज्ञ तज्ञ[1] तम पारा ❀ सुमति सुशील सरल[2] आचारा
ज्ञान विरति विज्ञान निवासा ❀ रघुनायक के प्रिय तुम दासा
कारण कवन देह यह पाई ❀ तात सकल[3] मोहिं कहहु बुझाई
रामचरित सर सुन्दर स्वामी ❀ पायहु कहां कहहु नभगामी
नाथ सुना मैं अस शिवपाहीं ❀ महाप्रलय महँ क्षय तव नाहीं
मृषा[4] वचन नहिं शंकर कहहीं ❀ सो मोरे मन संशय अहहीं
अग जग जीव नाग नर देवा ❀ नाथ सकल जग काल कलेवा
अण्डकटाह[5] अमित लयकारी ❀ काल महादुरतिक्रम भारी

सो० तुमहिं न व्यापै काल, अतिकराल कारणकवन।
सो मोहिं कहहु कृपाल, ज्ञानप्रभाव कि योगबल॥

दो० प्रभु तव आश्रम आयउँ, मोर मोह भ्रम भाग।
कारणकवन सो नाथ अब, कहहु सहित अनुराग[6]॥

गरुड़ गिरा[7] सुनि हर्षेउ कागा ❀ बोलेउ उमा सहित अनुरागा
धन्य धन्य तव मति उरगारी[8] ❀ प्रश्न तुम्हारि मोहिं अतिप्यारी
मुनि तव प्रश्न सप्रेम सुहाई ❀ बहुत जन्मकी सुधि मोहिं आई
सब निज कथा कहौं मैं गाई ❀ तात सुनहु सादर मनलाई
जप तप मख शम दम व्रत दाना ❀ विरति विवेक योग विज्ञाना
सबकर फल रघुपति पदप्रेमा ❀ तेइ बिनु कोउ न पाव सुखक्षेमा
यहि तनु राम भक्ति मैं पाई ❀ ताते मोहिं परम प्रिय भाई
जेहिते कछु निज स्वारथ होई ❀ तेहि पर ममता कर सब कोई

१ ब्रह्मयज्ञ २ सीधा ३ संपूर्ण ४ झूंठ ५ ब्रह्माण्डसमूह ६ प्रीति ७ वाणी ८ गरुड़॥

सो० पन्नगारि सुनु नीति, श्रुतिसम्मत सज्जन कहहिं।
अतिनीचहुसनप्रीति,करियजानिनिजपरमहित॥
पाट कीट ते होइ, तेहिते पाटम्बर रुचिर।
कृमि पालै सब कोइ, परमअपावन प्राणसम॥

स्वारथ सर्व जीव कहँ येहा ❀ मन क्रम वचन रामपद नेहा
सोइ पावन सोइ सुभग[1] शरीरा ❀ जो तनु पाइ भजै रघुवीरा
रामविमुख लहि विधिसम देही ❀ कवि कोविद[2] न प्रशंसहिं तेही
रामभक्ति यहि तनु उर जामी ❀ ताते मोहिं परमप्रिय स्वामी
तजौं न तनु निज इच्छा मरणा ❀ तनु बिनु वेद भजन नहिं वरणा
प्रथम मोह मोहिं बहुत बिगोवा[3] ❀ रामविमुख सुख कबहुँ न सोवा
नानाजन्म कर्म्म पुनि नाना ❀ किये योग जप तप मख[4] दाना
कवनि योनि जन्मेउँ जहँ नाहीं ❀ मैं खगेश भ्रमि भ्रमि जगमाहीं
देखेउँ सब करि कर्म्म गुसाईं ❀ सुखी न भयउँ अबहिंकी नाईं
सुधि मोहिं नाथ जन्म बहुकेरी ❀ शिवप्रसाद मति मोह न घेरी

दो० प्रथम जन्मके चरित अब, कहौं सुनहु विहँगेश[5]।
सुनि प्रभुपद रति ऊपजै, जाते मिटै कलेश॥
पूर्वकल्पते एक प्रभु, युग कलियुग मलमूल।
नर अरु नारि अधर्मरत, सकलनिगमप्रतिकूल॥

तेहि कलियुग कोशलपुर जाई ❀ जन्मत भयउँ शूद्रतनु[6] पाई
शिवसेवक मन क्रम अरु बानी ❀ आन देव निन्दक अभिमानी
धन मदमत्त परम वाचाला[7] ❀ उग्रबुद्धि उर दम्भ विशाला
यदपि रहेउँ रघुपति रजधानी ❀ तदपि न कछु महिमा उरआनी
अब जाना मैं अवध प्रभावा ❀ निगमागम पुराण अस गावा
कवनेहुँ जन्म अवध बस जोई ❀ राम परायण सो परि होई

१ सुन्दर २ पण्डित ३ भटकाया ४ यज्ञ ५ गरुड़ ६ नीचदेह ७ बकवादी॥

अवधप्रभाव जान तब प्राणी ❀ जब उर बसहिं राम धनुपाणी
सो कलिकाल कठिन उरगारी ❀ पापपरायण सब नर नारी

दो० कलिमल ग्रसेउ धर्म सब, गुप्त भये सदग्रन्थ।
दम्भिन[1] निजमतिकल्पिकरि, प्रकटकीन्हबहुपन्थ॥
भये लोग सब मोहवश, लोभ ग्रसे शुभकर्म।
सुनु हरियान सुज्ञाननिधि, कहौंकछुककलिधर्म॥

वर्ण धर्म नहिं आश्रम चारी ❀ श्रुति विरोधरत सब नर नारी
द्विज श्रुतिवंञ्चक भूप प्रजासन ❀ कोउनहिंमान निगम अनुशासन
मारग सोइ जाकहँ जो भावा ❀ पण्डित सोइ जो गाल बजावा
मिथ्यारम्भ दम्भरत जोई ❀ ताकहँ सन्त कहैं सब कोई
सोइ सयान जो परधनहारी ❀ जो करु दम्भ सो बड़ आचारी
जो बहु झूंठ मसखरी जाना ❀ कलियुग सोइ गुणवन्त बखाना
निराचार जो श्रुतिपंथ[2] त्यागी ❀ कलियुग सोइ ज्ञानी वैरागी
जाके नख अरु जटा विशाला ❀ सोइ तापस प्रसिद्ध[3] कलिकाला

दो० अशुभ वेष भूषण धरे, भक्ष्याभक्ष्य जे खाहिं।
ते योगी ते सिद्ध नर, पूज्य ते कलियुग माहिं॥
सो० जे अपकारी चार, तिनकर गौरव मान्यता।
मन क्रम वचन लबार, ते वक्ता[4] कलिकालमहँ॥

नारि विवश नर सकल गुसाई ❀ नाचहिं नट मर्कट की नाई
शूद्र द्विजन उपदेशहिं ज्ञाना ❀ मेलि[5] जनेऊ लेहिं कुदाना
सब नर काम लोभरत क्रोधी ❀ देव विप्र श्रुति सन्त विरोधी
गुणमन्दिर सुन्दर पति त्यागी ❀ भजहिं नारि परपुरुष अभागी
सौभागिनी विभूषण[6] हीना ❀ विधवनके शृङ्गार नवीना
गुरु शिष अंध बधिर कर लेखा ❀ एक न सुनहिं एक नहिं देखा
हरै शिष्यधन शोक[7] न हरई ❀ सो गुरु घोर नरकमहँ परई

१ दम्भी २ वेदमार्ग ३ जाहिर ४ बांचनेवाले ५ डालकर ६ गहना ७ रंज॥

मातु पिता बालकन बुलावहिं ❀ उदर भरै सोइ धर्म सिखावहिं

दो० ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर, कहहिं न दूसरि बात।
कौड़ी कारण मोहवश, करहिं विप्र गुरु घात॥
वाद शूद्र कर द्विजनसन, हम तुमते कछु घाटि।
जानै ब्रह्म सो विप्रवर, आंखिदिखावहिं डाटि॥

परतिय लम्पट कपट सयाने ❀ मोह द्रोह ममता लपटाने
तेइ अभेदवादी ज्ञानी नर ❀ देखा मैं चरित्र कलियुग कर
आपु गये अरु आनहिं घालहिं ❀ जे कोउ सत्मारग प्रतिपालहिं
कल्प कल्प भरि इक इक नर्का ❀ परहिं जे दूषहिं श्रुति करि तर्का
जे वर्णाधम तेलि कुम्हारा ❀ श्वपंच[1] किरात कोल कलवारा
नारि मुई गृहसम्पति नासी ❀ मूड़ मुड़ाइ भये संन्यासी
ते विप्रनसन पांव पुजावहिं ❀ उभयलोक[2] निजहाथ नशावहिं
विप्र निरच्छर लोलुप कामी ❀ निराचार शठ वृषैलीस्वामी[3]
शूद्र करहिं जप तप मख दाना ❀ बैठि वरासन[4] कहहिं पुराना
सब नर कल्पित करहिं अचारा ❀ जाइ न वरणि अनीति अपारा

दो० भये वर्णसंकर कलिहिं, भिन्नसेतु[5] सब लोग।
करहिं पाप दुख पावहीं, भयरुजशोक वियोग॥
श्रुतिसम्मत हरिभक्तिपथ, संयुत विरति विवेक।
ते न चलहिं नर मोहवश, कल्पहिं पन्थ अनेक[6]॥

छं० बहुधाम सँवारहिं योगि यती।
विषया हरिलीन्ह गई विरती॥
तपसी धनवन्त दरिद्र गृही।
कलि कौतुक तात न जात कही॥
कुलवन्ति निकारहिं नारि सती[7]।

१ चांडाल २ दोनों लोक ३ शूद्रापति ४ व्यासगद्दी ५ मर्य्यादाहीन ६ बहुत ७ पतिव्रता॥

गृह आनहिं चेरिहिं चोरगती ॥
सुत मानहिं मातु पिता तबलौं ।
अबलानन[1] दीख नहीं जबलौं ॥
ससुरारि पियारि लगी जबते ।
रिपुरूप कुटुम्ब[2] भये तबते ॥
नृप पाप परायण धर्म नहीं ।
करु दण्ड विदण्ड प्रजा नितहीं ॥
धनवन्त कुलीन मलीन अपी ।
द्विज चिह्न जनेउ उघारतपी ॥
नहिं मान पुराणहिं वेदहिं जो ।
हरिसेवक सन्त सही कलि सो ॥
कविवृन्द उदार दुनी न सुनी ।
गुणदूषक व्रातन कोपि गुनी ॥
कलि बारहिंबार दुकाल[3] परैं ।
बिनु अन्न दुखी बहुलोग मरैं ॥

दो० सुनु खगेश कलिकपट हठ, दम्भ द्वेष पाखण्ड ।
मान मोह मारादि मद, व्यापि रहेउ ब्रह्मण्ड ॥
तामस धर्म करहिं नर, जप तप मख व्रत दान ।
दैव न वर्षै धरणि[4] पर, बये न जामहिं धान ॥

छं० अबला कच[5] भूषण भूरि छुधा ।
धनहीन दुखी ममता बहुधा ॥
सुख चाहहिं मूढ़ न धर्मरता ।

---

१ स्त्री का मुख २ परिवार ३ अकाल ४ पृथ्वी ५ बार ६ अधिक ॥

मतिथोरि कठोरि न कोमलता ॥
नरपीड़ित रोग न भोग कही।
अभिमान विरोध अकारणही ॥
लघुजीवन संतत पञ्चदशा।
कल्पान्त न नाश गुमान अशा ॥
कलिकाल बेहाल किये मनुजा।
नहिं मानत कोउ अनुंजा[1] तनुंजा[2] ॥
नहिं तोष विचार न शीतलता।
सब जाति कुजाति भये मँगता ॥
इरषा परुषा छल लोलुपता[3]।
भरिपूरि रही समता विगता ॥
सब लोग वियोग विशोक हये।
वर्णाश्रमधर्म अचार गये ॥
दम दान दया नहिं जान पनी।
जड़ता[4] परिपञ्चकताति घनी ॥
तनुपोषक नारि नरा सगरे।
परनिन्दक जे जग में बगरे ॥

दो० सुनु व्यालारि[5] करालकलि, मल अवगुण आगार[6]।
गुणहु बहुत कलिकालकर, बिनु प्रयास निस्तार ॥
कृतयुग[7] त्रेता द्वापरहु, पूजा मख अरु योग।
जोगतिहोइसोकलिहिंहरि, नामते पावहिं लोग ॥

कृतयुग सब योगी विज्ञानी ❀ करि हरिध्यान तरहिं भव प्रानी
त्रेता विविध यज्ञ नर करहीं ❀ प्रभुहिं समर्पि कर्म भव तरहीं

---

१ बहिन २ बेटी ३ लालच ४ मूर्खता ५ गरुड़ ६ मन्दिर ७ सतयुग।

द्वापर करि रघुपति पदपूजा ❀ नर भव तरहिं उपाय न दूजा
कलि केवल हरिगुणगण गाहा ❀ गावत नर पावहिं भव थाहा
कलियुग योग यज्ञ नहिं ज्ञाना ❀ एक अधार रामगुण गाना
सब भरोस तजि जो भजु रामहिं ❀ प्रेम समेत गाव गुणग्रामहिं
सो भवतरु कछु संशय नाहीं ❀ नाम प्रताप प्रकट कलिमाहीं
कलिकर एक पुनीत प्रतापा ❀ मानस पुण्य होइ नहिं पापा

दो० कलियुगसमयुगआननहिं, जो नर करु विश्वास।
गाइ रामगुणगण विमल, भवतरु बिनहिं प्रयास[2]॥
प्रकट चारिपद धर्म के, कलिमहँ एक प्रधान[3]।
येन केन विधि दीन्हे, दान करै कल्यान॥

नित युग धर्म होहिं सब केरे ❀ हृदय राम माया के प्रेरे
शुद्ध तत्त्व समता विज्ञाना ❀ कृत प्रभाव प्रसन्न मनजाना
सत्त्व बहुत कछु रज रतिकर्मा ❀ सब विधि शुभ त्रेताकर धर्मा
बहु रज सत्त्व स्वल्प कछु तामस ❀ द्वापर धर्म हर्ष भय मानस
तामस बहुत रजोगुण थोरा ❀ कलिप्रभाव विरोध चहुँ ओरा
बुध[4] युगधर्म जानि मनमाहीं ❀ तजि अधर्म रत धर्म कराहीं
कालधर्म नहिं व्यापहिं ताही ❀ रघुपतिचरण प्रीति अति जाही
नटकृत कपट विकट खगराया[5] ❀ नट सेवकहिं न व्यापै माया

दो० हरिमाया कृत दोष गुण, बिनु हरिभजन न जाहिं।
भजियरामसबकामतजि, अस विचारि मनमाहिं॥
तेहि कलिकाल वर्षबहु, बसेउँ अवध विहँगेश।
परेउ दुकाल विपत्ति वश, तब मैं गयउँ विदेश॥

गयउँ उजैन सुनहु उरगारी ❀ दीन मलीन दरिद्र दुखारी
गये काल कछु सम्पति पाई ❀ तहँ पुनि करौं शम्भु[6] सेवकाई
विप्र एक वैदिक शिव पूजा ❀ करै सदा तेहि काज न दूजा

१ गुणसमूह २ मेहनत ३ मुख्य ४ पण्डित ५ गरुड़ ६ महादेव॥

परमसाधु परमारथविन्दक ❀ शंभु उपासक नहिं हरिनिन्दक
सेवों मैं तेहि कपट समेता ❀ द्विज दयालु अति नीतिनिकेता[1]
बाहिर नम्र दोखि मोहिं साईं ❀ विप्र पढ़ाव पुत्र की नाईं
शम्भुमन्त्र मोहिं द्विजवर दीन्हा ❀ शुभ उपदेश विविधविधि कीन्हा
जपौं मन्त्र शिवमंदिर जाई ❀ हृदय दम्भ अहंमिति[2] अधिकाई

दो॰ मैं खल मल संकुल मति, नीचजाति वश मोह।
द्विज हरिजन देखत जरौं, करौं विष्णुकर द्रोह॥

सो॰ गुरु नित मोहिं प्रबोध, दुखित देखि आचरणमम।
मोहिंउपजैअतिक्रोध, दम्भिहि नीति कि भावई॥

एक बार गुरु लीन्ह बुलाई ❀ मोहिं नीति बहुभाँति सिखाई
शिव सेवाकर फल सुत सोई ❀ अविरल भक्ति रामपद होई
रामहिं भजहिं तात शिव धाता ❀ नरपामर कर केतिक बाता
जासु चरण शिव अज अनुरागी ❀ तासु द्रोह सुख चहसि अभागी
हरकहँ हरिसेवक गुरु कहेऊ ❀ सुनि खगनाथ हृदय मम दहेऊ[3]
अधमजाति में विद्या पाये ❀ भयउँ यथा अहि दूध पियाये
मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती ❀ गुरुसन द्रोह करौं दिनराती
अतिदयालु गुरु स्वल्प न क्रोधा ❀ पुनिपुनि मोहिं सिखाव सुबोधा
ज्यहिते नीच बड़ाई पावा ❀ सो प्रथमहिं हठि ताहि नशावा
धूम अनल[4] सम्भव सुनु भाई ❀ तेहि बुझाव घनपदवी पाई
रज मगु परी निरादर रहई ❀ सब कर पदप्रहार नित सहई
मरुत उड़ाव प्रथम तेहि भरई ❀ पुनि नृप नयन किरीटन[5] परई
सुनु खगपति अस समुझि प्रसंगा ❀ बुध न करहिं अधमनकर संगा
कवि कोविद गावहिं अस नीती ❀ खलसन कलहनभलिनहिं प्रीती
उदासीन बरु रहिय गुसाईं ❀ खल[6] परिहरिय श्वान की नाईं
मैं खल हृदय कपट कुटिलाईं[7] ❀ गुरु हित कहैं न मोहिं सुहाई

१ नीति के घर २ अहंकार ३ जला ४ आगी ५ मुकुट ६ दुर्जन ७ टेढ़ाई॥

दो॰ एक बार हरमन्दिर, जपत रहेउँ शिवनाम।
गुरु आये अभिमान ते, उठि नहिं कीन प्रणाम॥
सो दयालु नहिं कहेउ कछु, उर न रोष लवलेश।
अति अघ[2] गुरु अपमानता, सहि नहिं सके महेश॥

मंदिर मांझ भई नभबानी ❀ रे हतभाग्य अधम अभिमानी
यद्यपि तवगुरु स्वल्प न क्रोधा ❀ अतिकृपालु चित सम्यकबोधा
तदपि शाप देहौं शठ तोहीं ❀ नीतिविरोध सुहात न मोहीं
जो नहिं करौं दण्ड खल तोरा ❀ भ्रष्ट होइ श्रुतिमारग मोरा
जे शठ गुरुसन ईर्षा करहीं ❀ रौरवनरक कल्पशत परहीं
त्रिजगयोनि पुनि धरहिं शरीरा ❀ अयुत[3] जन्मभरि पावहिं पीरा
बैठि रहेसि अजगरइव पापी ❀ होसि सर्प्प खल मलमतिव्यापी
महाविटप कोटर[4] महँ जाई ❀ रहुरे अधम अधोगति पाई

दो॰ हाहाकार कीन्ह गुरु, सुनि दारुण शिवशाप।
कंपित मोहिं विलोकि अति, उर उपजा परिताप[5]॥
करि दण्डवत सप्रेम गुरु, शिवसम्मुख कर जोरि।
विनय करत गद्गदगिरा, समुझि घोरगति मोरि॥

छं॰ नमामीशमीशान निर्वाणरूपं।
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं॥
अजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं।
चिदाकाशमाकाशवासं भजेहं[6]॥
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं।
गिराज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं[7]॥
करालं महाकालकालं कृपालं।

---

१ घमंड २ बड़ा पाप ३ दश हज़ार ४ खोखला ५ शोक ६ भजता हूँ ७ शिव॥

गुणागार संसारपारं नतोहं ॥
तुषाराद्रि[1] संकाशगौरं गँभीरं ।
मनो भूतकोटिप्रभासी शरीरं ॥
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगंगा।
लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा[2] ॥
चलत्कुंडलं शुभ्रनेत्रं विशालं ।
प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं ॥
मृगाधीश[3]चर्माम्बरं मुण्डमालं ।
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं ।
अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं ॥
त्रिधाशूलनिर्मूलनं शूलपाणिं ।
भजेहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥
कलातीतकल्याण कल्पांतकारी ।
सदासज्जनानन्ददाता पुरारी ॥
चिदानन्दसंदोह मोहापहारी[5] ।
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥
न यावत् उमानाथ पादारविन्दं ।
भजंतीह लोके परे वा नराणाम् ।
न तावत्सुखं शांति संतापनाशं ।
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां ।

१ हिमाचल २ सर्प ३ सिंह ४ शिव ५ मोहनाशक ६ कामदेव के बैरी शिव ॥

नतोहं सदा सर्व्वदा शम्भुतुभ्यं ॥
जराजन्मदुःखौघ तातप्यमानं ।
प्रभो पाहिशापान्नमामीशशंभो॥

श्लो० रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥

दो० सुनि विनती सर्वज्ञशिव, देखि विप्र अनुरागु ।
पुनि मन्दिरनभवाणिभइ, हे द्विजवर वरमांगु ॥
जो प्रसन्न प्रभु मोहिं पर, नाथ दीन पर नेहु ।
निजपदभक्ति देहु प्रभु, पुनि दूसर वर देहु ॥
तव मायावश जीव जड़, सन्तत फिरै भुलान ।
तेहिपर क्रोध न करियप्रभु, कृपासिन्धु भगवान ॥
शङ्कर दीनदयालु अब, यहिपर होहु कृपाल ।
शापानुग्रह होइ जेहि, नाथ थोरही काल ॥

यहिकर होइ परम कल्याना ❀ सोइ करहु अब कृपानिधाना
विप्रगिरा सुनि परहितसानी ❀ एवमस्तु इति भइ नभबानी
यदपि कीन्ह यहि दारुण पापा ❀ मैं पुनि दीन्ह क्रोध करि शापा
तदपि तुम्हारि साधुता देखी ❀ करिहौं यहिपर कृपा विशेखी
क्षमाशील जे परउपकारी ❀ ते द्विज प्रिय मोहिं यथा खरारी
मोर शाप द्विज मृषा न जाइहि ❀ जन्म सहस्र अवशि यह पाइहि
जन्मत मरत दुसह दुख होई ❀ यहिकहँ स्वल्प न व्यापिहि सोई
कौनेहु जन्म मिटिहि नहिं ज्ञाना ❀ सुनहु शूद्र ममवचन प्रमाना
रघुपतिपुरी जन्म तव भयऊ ❀ पुनि तैं ममसेवा मन दयऊ
पुरी प्रभाव अनुग्रह मोरे ❀ रामभक्ति उपजहि उर तोरे
सुनु मम वचन सत्य अब भाई ❀ हरितोषक व्रत द्विज सेवकाई

१ शिवप्रसन्नतार्थ २ समय ३ ऐसा ही हो ४ रामचन्द्र ५ झूठ ६ प्रसन्न करनेवाला ॥

अब जनि करेसि विप्रअपमाना ❀ जानेसु सन्त अनन्त समाना
इन्द्र कुलिश ममशूल विशाला ❀ कालदण्ड हरिचक्र कराला
जो इनकर मारा नहिं मरई ❀ विप्ररोष पावक[1] सो जरई
अस विवेक राखेउ मनमाहीं ❀ तुम कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं
औरौ एक आशिषा मोरी ❀ अव्याहत गति होइहि तोरी

दो० सुनि शिववचन सप्रेमगुरु, एवमस्तु इति भाखि।
मोहिं प्रबोधि गयउ गृह, शम्भुचरण उर राखि॥
प्रेरित काल विन्ध्यगिरि, जाय भयउँ मैं व्याल[2]।
बिनु प्रयास सो तनु तजेउँ, नाथ थोर ही काल॥
जो तनु धरौं सो तजौं पुनि, अनायास हरियान[3]।
जिमि नूतनपट पहिरिकै, नर परिहरै[4] पुरान॥
शिवराखेउश्रुतिनीतिअरु, मैं नहिं पाव कलेश।
यहिविधिधरेउँ विविधतनु, ज्ञान न गयउ खगेश॥

त्रियग देव नर जो तनु धरेऊं ❀ तहँ तहँ रामभक्ति अनुसरेऊं
एक शूल मोहिं बिसरु न काऊ ❀ गुरुकर कोमल शील स्वभाऊ
परमदेह द्विजकर मैं पाई ❀ सुरदुर्लभ पुराण श्रुति गाई
खेलौं तहां बालकन मीला ❀ करौं सकल रघुनायक लीला
प्रौढ़[5] भये मोहिं पिता पढ़ावा ❀ समुझौं सुनौं गुनौं नहिं भावा
मनते सकल वासना भागी ❀ केवल रामचरण लय लागी
कहु खगेश अस कवन अभागी ❀ खरी[6] सेव सुरधेनुहिं[7] त्यागी
प्रेममगन मोहिं कछु न सुहाई ❀ हारेउ पिता पढ़ाय पढ़ाई
भयउ कालवश जब पितु माता ❀ मैं वन गयउँ भजन जनत्राता
जहँ जहँ विपिन मुनीश्वर पावौं ❀ आश्रम जाइ जाइ शिर नावौं
पूँछौं तिनहिं रामगुण गाहा ❀ कहौं सुनौं हरषित खगनाहा

---

१ अग्नि २ साँप ३ गरुड़ ४ छोड़े ५ जवान ६ गधी ७ कामधेनु॥

सुनत फिरौं हरिगुण अनुवादा ❀ अव्याहतगति शम्भुप्रसादा
छूटी त्रिविध एषणा गाढ़ी ❀ एक लालसा उर अति बाढ़ी
रामचरण पंकज जब देखौं ❀ तब निजजन्म सफलकरि लेखौं
जेहि पूँछौं सो मुनि अस कहई ❀ ईश्वर सर्वभूतमय अहई
निर्गुण मत नहिं मोहिं सुहाई ❀ सगुणब्रह्मरति उर[1] अधिकाई

दो० गुरुके वचन सुरति करि, रामचरण मन लाग।
रघुपति यश गावत फिरौं, क्षणक्षण नवअनुराग॥
मेरु शिखर वट[2] छाया, मुनि लोमश आसीन।
देखि चरण शिर नायउँ, वचन कहेउँ अतिदीन॥
सुनिममवचनविनीतमृदु, मुनि कृपालु खगराज।
मोहिं सादर बूझतभयउ, द्विज[3]आयउकेहिकाज॥
तब मैं कहेउँ कृपानिधि, तुम सर्वज्ञ सुजान।
सगुण ब्रह्म आराधना, मोहिं कहहु भगवान॥

तब मुनीश रघुपति गुणगाथा[4] ❀ कहेउ कछुक सादर खगनाथा
ब्रह्मज्ञानरत मुनि विज्ञानी ❀ मोहिं परम अधिकारी जानी
लागे करन ब्रह्म उपदेशा ❀ अज अद्वैत अगुण हृदयेशा
अकल अनीह अनाम अरूपा ❀ अनुभवगम्य अखण्ड अनूपा
मनगोतीत अमल अविनाशी ❀ निर्विकार निरवधि सुखराशी
सो तैं ताहि तोहिं नहिं भेदा ❀ वारि वीचि[5] इव गावहिं बेदा
विविध भाँति मोहिं मुनि समुझावा ❀ निर्गुणमत मम हृदय न आवा
पुनि मैं कहेउँ नाइ पदशीशा ❀ सगुण उपासन कहहु मुनीशा
रामभक्तिजल ममसन मीना[6] ❀ किमि बिलगाइ मुनीश प्रवीना
सोइ उपदेश करहु करिदाया ❀ निज नयनन देखौं[7] रघुराया
भरि लोचन विलोकि अवधेशा ❀ तब सुनिहौं निर्गुण उपदेशा
पुनि मुनि कह हरिकथा अनूपा ❀ खंडि सगुणमत अगुण निरूपा

१ हृदय २ बरगद ३ ब्राह्मण ४ रामकथा ५ लहरी ६ मछली ७ देखिकर॥

तब मैं निर्गुण मत करि दूरी ❀ सगुण निरूपौं करि हठ भूरी
उत्तर प्रत्युत्तर मैं दीन्हा ❀ मुनिउर भयउ क्रोधकर चीन्हा
सुनु प्रभु बहुत अवज्ञा किये ❀ उपज क्रोध ज्ञानिहुँ के हिये
अतिसंघर्षण करै जो कोई ❀ अनल[1] प्रकट चन्दनते होई

दो० बारहिंबार सकोप मुनि, करहिं निरूपण ज्ञान।
मैं अपने मन बैठि तब, करौं विविध[2] अनुमान॥
क्रोध कि द्वैतक बुद्धि बिनु, द्वैत कि बिनु अज्ञान।
मायावश प्रच्छन्न जड़, जीव कि ईश समान॥

कबहुँक दुख सब कर हित ताके ❀ तेहि कि दरिद्र परसमणि जाके
कामी पुनि कि रहै निकलंका[3] ❀ परद्रोही कि होइ निश्शंका
वंश कि रह द्विज अनहित कीन्हे ❀ कर्म कि होहिं स्वरूपहि चीन्हे
काहू सुमति कि खलसँग जामी ❀ शुभगति पाव कि परतियगामी
राज्य कि रहै नीति बिनु जाने ❀ अघ कि रहै हरिचरित बखाने
भव कि परहिं परमारथ विंदक ❀ सुखी कि होहिं कबहुँ परनिंदक
पावनयश कि पुण्य बिनु होई ❀ बिनु अघ अयश कि पावै कोई
लाभ कि कछु हरि भक्ति समाना ❀ जेहि गावहिं श्रुति सन्त पुराना
हानि कि जग यहि सम कछु भाई ❀ भजिय न रामहिं नरतनु पाई
अघ कि बिना तामस कछु आना ❀ धर्म कि दया सरिस हरियाना
यहि विधि अमित युक्ति मन गुनेऊं ❀ मुनि उपदेश न सादर सुनेऊं
पुनि पुनि सगुण पच्छ मैं रोपा[4] ❀ तब मुनि बोले वचन सकोपा
मूढ़ परम शिष देउँ न मानसि ❀ उत्तर प्रत्युत्तर बहु आनसि
सत्यवचन विश्वास न करही ❀ वायस[5] इव सबहीसन डरही
शठ सपच्छ तव हृदय विशाला ❀ सपँदि[6] होहु पच्छी चण्डाला
लीन्ह शाप मैं शीश चढ़ाई ❀ नहिं कछु भय न दीनता आई

दो० तुरत भयउँ मैं काक तब, पुनि मुनिपद शिरनाइ।

१ अग्नि २ अनेक ३ बेदाग़ ४ ठहराया ५ कौवा ६ जल्द ॥

सुमिरि राम रघुवंशमणि, हरषित चलेउँ उड़ाइ ॥
उमा जो रामचरणरत, विगत काम मद क्रोध ।
निजप्रभुमयदेखहिंजगत, कासन करहिं विरोध ॥

सुनु खगेश नहिं कछु ऋषि दूषण ❀ उर प्रेरक रघुवंशविभूषण
कृपासिन्धु मुनिमति करि भोरी ❀ लीन्हीं प्रेम परीक्षा मोरी
मन क्रम वचन मोहिं जन जाना ❀ मुनि मति पुनि फेरी भगवाना
ऋषि मम सहजशीलता देखी ❀ रामचरण विश्वास विशेखी
अतिविस्मय पुनिपुनि पछिताई ❀ सादर मुनि मोहिं लीन्हबुलाई
मम परितोष विविधविधि कीन्हा ❀ हरषित राममन्त्र मोहिं दीन्हा
बालक रूप रामकर ध्याना ❀ कहेउ मोहिं मुनि कृपानिधाना
सुन्दर सुखद[3] मोहिं अतिभावा[4] ❀ जो प्रथमहिं मैं तुमहिं सुनावा
मुनि मोहिं कछुककाल तहँ राखा ❀ रामचरित मानस सब भाखा
सादर मोहिं यह कथा सुनाई ❀ पुनि बोले मुनि गिरा[5] सुहाई
रामचरित सर गुप्त[6] सुहावा ❀ शम्भुप्रसाद तात मैं पावा
तोहिं निजभक्त रामकर जानी ❀ ताते मैं सब कहेउँ बखानी
रामभक्ति जिनके उर नाहीं ❀ कबहुँ न तात कहिय तेहिपाहीं
मुनिमोहिं विविधभाँति समुझावा ❀ मैं सप्रेम मुनिपद शिरनावा
निजकरकमलपरसि मम शीशा ❀ हरषित आशिष दीन्ह मुनीशा
रामभक्ति अविरल उर तोरे ❀ बसिहि सदा प्रसाद अब मोरे

दो० सदा रामप्रिय होहु तुम, शुभ गुण भवन अमान ।
कामरूप इच्छा मरण, ज्ञान विराग निधान ॥
जेहिआश्रमतुमबसबपुनि, सुमिरब श्रीभगवन्त ।
व्यापिहि तहँ न अविद्या, योजन इक पर्यन्त ॥

काल करम गुण दोष स्वभाऊ ❀ कछुदुख तुमहिं न व्यापिहिकाऊ
रामरहस्य ललित विधि नाना ❀ गुप्त प्रकट इतिहास पुराना

१ इन्तिहान २ बड़ा आश्चर्य ३ सुख देनेवाला ४ बहुत अच्छा लगा ५ वाणी ६ छिपा ॥

बिनु श्रम तुम सब जानब सोऊ ❀ नित नवप्रेम रामपद होऊ
जो इच्छा करिहौ मनमाहीं ❀ हरिप्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं
सुनि मुनिआशिष सुनु मतिधीरा ❀ ब्रह्मगिरा भइ गगन गँभीरा
एवमस्तु तव वच मुनिज्ञानी ❀ यह ममभक्त कर्म मन बानी
सुनि नभगिरा हर्ष मोहिं भयऊ ❀ प्रेममगन मम संशय गयऊ
करि विनती मुनि आयसु पाई ❀ पदसरोज पुनि पुनि शिरनाई
हर्षसहित यहि आश्रम आयउँ ❀ प्रभुप्रसाद दुर्लभ वर पायउँ
इहां बसत मोहिं सुनु खगईशा ❀ बीते कल्प सात अरु बीशा
करौं सदा रघुपति गुणगाना ❀ सादर सुनहिं विहंग सुजाना
जब जब अवधपुरी रघुवीरा ❀ धरहिं भक्तहित मनुजशरीरा
तब तब जाय अवधपुर रहऊं ❀ शिशुलीला विलोकि सुखलहऊं
पुनि उर राखि राम शिशुरूपा ❀ यहि आश्रम आवों खगभूपा
कथा सकल मैं तुमहिं सुनाई ❀ काकदेह जेहि कारण पाई
कहेउँ तात सब प्रश्न तुम्हारी ❀ रामभक्ति महिमा अतिभारी

दो॰ ताते यह तनु मोहिं प्रिय, भयउ रामपद नेह।
निजप्रभु दरशन पायउँ, गयउ सकल संदेह॥
भक्तिपक्ष हठ करि रहेउँ, दीन्ह महामुनि शाप।
मुनि दुर्लभ वर पायउँ, देखहु भजन प्रताप॥

जे अस भक्ति जानि परिहरहीं ❀ केवल ज्ञान हेतु श्रम करहीं
ते जड़ कामधेनु गृहँ त्यागी ❀ खोजत आकँ फिरहिं पयँ लागी
सुनु खगेश हरिभक्ति बिहाई ❀ जे सुख चाहहिं आन उपाई
ते शठ महासिन्धु बिनु तरणी ❀ पैरि पार चाहत जड़करणी
सुनि भुशुण्डिके बचन भवानी ❀ बोलेउ गरुड़ हरषि मृदुबानी
तव प्रसाद प्रभु मम उर माहीं ❀ संशय शोक मोह भ्रम नाहीं
सुनेउँ पुनीत रामगुणग्रामा ❀ तुम्हरीकृपा लहेउँ विश्रामा

१ आकाश २ हुक्म ३ पक्षी ४ बालचरित्र ५ स्थान ६ घर ७ मदार ८ दूध॥

एक बात प्रभु पूंछौं तोहीं ❀ कहहु बुझाइ कृपानिधि मोहीं
कहहिं सन्त मुनि वेद पुराना ❀ नहिं कछु दुर्लभ ज्ञान समाना
सो मुनि तुमसन कहेउ गोसाईं ❀ नहिं आदरेउ भक्तिकी नाईं
ज्ञानहिं भक्तिहिं अन्तर केता ❀ सकल कहहु प्रभु कृपानिकेता
सुनि उरगारि[1] वचन सुखमाना ❀ सादर बोलेउ काक सुजाना
ज्ञानहिं भक्तिहिं नहिं कछु भेदा ❀ उभय[2] हरहिं भवसम्भव खेदा[3]
नाथ मुनीश कहहिं कछु अन्तर[4] ❀ सावधान ह्वै सुनहु विहँगवर
ज्ञान विराग योग विज्ञाना ❀ ये सब पुरुष सुनहु हरियाना
पुरुष प्रताप प्रबल सब भाँती ❀ अबला[5] अबल[6] सहज जड़जाती

दो० पुरुष त्यागिसक नारिकहँ, जो विरक्त मतिधीर।
नहिं तो कामी विषय वश, विमुख जो पद रघुवीर॥

सो० सो मुनि ज्ञाननिधान, मृगनयनीविधुमुख[7]निरखि।
विकल होहिं हरियान, नारि विश्व माया प्रकट॥

इहां न पच्छपात कछु राखों ❀ वेद पुराण सन्त मत भाखों
मोह न नारि नारि के रूपा ❀ पन्नगारि यह नीति अनूपा
माया भक्ति सुनहु तुम दोऊ ❀ नारिवर्ग जानै सब कोऊ
पुनि रघुवीरहिं भक्ति पियारी ❀ माया खलु नर्त्तकी विचारी
भक्तिहिं सानुकूल रघुराया ❀ ताते तेहि डरपति अति माया
रामभक्ति निरुपम निरुपाधी ❀ बसै जासु उर सदा अबाधी
तेहि विलोकि माया सकुचाई ❀ करि न सकै कछु निज प्रभुताई
अस विचारि जो मुनि विज्ञानी ❀ याचहिं भक्ति सकलगुणखानी

दो० यह रहस्य[8] रघुनाथकर, वेगि न जानै कोय।
जानै ते रघुपति कृपा, सपनेहुँ मोह न होय॥
अवरौ ज्ञान भक्ति कर, भेद सुनहु परवीण।

१ गरुड़ २ दोनों ३ दुःख ४ फ़र्क़ ५ स्त्री ६ कमज़ोर ७ चंद्रवदन ८ चरित्र॥

जो मुनि होय रामपद, प्रीति सदा अवच्छीण ॥

सुनहु तात यह अकथ कहानी ❀ समुझत बनै न जात बखानी
ईश्वर अंश जीव अविनाशी ❀ चेतन अमल सहज सुखराशी
सो मायावश भयउ गुसाईं ❀ बँध्यो कीर मरकट की नाईं
जड़ चेतनहिं ग्रन्थि परिगई ❀ यदपि मृषा छूटत कठिनई
तब ते जीव भयो संसारी ❀ ग्रन्थि न छूट न होइ सुखारी
श्रुति पुराण बहु कहें उपाई ❀ छूट न अधिक अधिक अरुझाई
जीव हृदय तम मोह विशेखी ❀ ग्रन्थि छुटै किमि परै न देखी
अस संयोग ईश जब करई ❀ तबहुँ कदाचित सो निरुअरई
सात्त्विक श्रद्धा धेनु सुहाई ❀ जो हरिकृपा हृदय बस आई
जप तप व्रत यम नियम अपारा ❀ जो श्रुति कह शुभ धर्म अचारा
सो तृण हरित चरै जब गाई ❀ भाववत्स शिशुपाइ पन्हाई
नोइनि वृत्ति पात्र विश्वासा ❀ निर्मल मन अहीर निज दासा
परमधर्म्ममय पय दुहि भाई ❀ अवटै अनल अकाम बनाई
तोष मरुत तब चमा जुड़ावै ❀ धृतिसम जावन देइ जमावै
मुदिता मथै विचार मथानी ❀ दम अधार रजु सत्य सुबानी
तब मथि काढ़ि लेइ नवनीता ❀ विमल विराग सुभग सुपुनीता

दो० योग अग्नि करि प्रकट तब, कर्म शुभाशुभ लाइ ।
बुद्धि सिरावै ज्ञान घृत, ममतामल जरिजाइ ॥
तब विज्ञाननिरूपिणी, बुद्धि विशद घृत पाय ।
चित्त दिया भरि धरै दृढ़, समतादियटिबनाय ॥
तीन अवस्था तीनिगुण, तेहि कपासते काढ़ि ।
तूल तुरीय सँवारि पुनि, बाती करै सुगाढ़ि ॥
सो० यहि विधि लेसै दीप, तेजराशि विज्ञानमय ।

१ सुवा २ झुंड ३ अन्धकार ४ खर ५ रस्सी ६ स्वच्छ ७ रुई ८ जलादे ॥

जातहि जासु समीप, जरहिंमदादिकशलभसब॥

सोहमास्मि इति वृत्ति अखण्डा ❀ दीपशिखा सोइ परम प्रचण्डा
आतम अनुभव सुख सुप्रकाशा ❀ तब भवमूल भेदभ्रम नाशा
प्रबल अविद्याकर परिवारा ❀ मोह आदि तम मिटहिं अपारा
तब सोइ बुद्धि पाइ उंजियारा ❀ उरगृह बैठि ग्रन्थि निरुवारा
छोरन ग्रन्थि पाव जब सोई ❀ तब यह जीव कृतारथ होई
छोरत ग्रन्थि जानि खगराया ❀ विघ्न अनेक करै तब माया
ऋद्धि सिद्धि प्रेरै बहु भाई ❀ बुद्धिहि लोभ दिखावै जाई
कलबल छल करि जाइ समीपा ❀ अञ्चल वात बुझावै दीपा
होइ बुद्धि जो परम सयानी ❀ तिनतन चितव न अनहित जानी
जो तेहि विघ्न बुद्धि नहिं बाधी ❀ तो बहोरि सुर[2] करहिं उपाधी
इन्द्रिय द्वार भरोखा नाना ❀ तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना
आवत देखहिं विषय बयारी ❀ ते हठि देहिं कपाट उघारी
जब सो प्रभञ्जन उरगृह जाई ❀ तबहिं दीपविज्ञान बुझाई
ग्रन्थि न छूट मिटा सो प्रकाशा ❀ बुद्धि विकलभइ विषयबताशा
इन्द्रियसुरन न ज्ञान सुहाई ❀ विषय भोग पर प्रीति सदाई
विषय समीर[3] बुद्धिकृत भोरी ❀ तेहि विधि दीपको बार बहोरी

दो० तब फिरि जीव विविधविधि, पावै संसृति क्लेश।
हरिमाया अति दुस्तर, तरि न जाइविहँगेश॥
कहतकठिन समुझतकठिन, साधनकठिन विवेक[4]।
होइ घुणाक्षर न्याय जो, पुनि प्रत्यूह[5] अनेक॥

ज्ञानकि पन्थ कृपाण[6]कि धारा ❀ परत खगेश न लागै बारा
जो निर्विघ्न पन्थ निर्बहई ❀ सो कैवल्य[7] परमपद लहई
अतिदुर्लभ कैवल्य परमपद ❀ सन्त पुराण निगम आगम वद
रामभजत सो मुक्ति गुसाईं ❀ अनइच्छित आवै बरिआई

१ पास २ देवता ३ हवा ४ विचार ५ विघ्न ६ तलवार ७ मोक्ष॥

जिमि थल बिनुजलरहि न सकाई ❀ कोटि भाँति कोउ करै उपाई
तथा मोच्छसुख सुनु खगराई ❀ रहि न सकै हरि भक्ति बिहाई
अस विचारि हरिभक्त सयाने ❀ मुक्ति निरादर भक्ति लुभाने
भक्ति करत बिनु यतन प्रयासा ❀ संसृतिमूल अविद्या नासा
भोजन करिय तृप्तिहित लागी ❀ जिमि सो अन्न पचवै जठरांगी[1]
अस हरिभक्ति सुगम सुखदाई ❀ को अस मूढ़ न जाहि सुहाई

दो० सेवक सेव्य प्रभाव बिनु, भव न तरिय उरगारि ।
भजहु रामपदपंकज, अस सिद्धान्त विचारि ॥
जो चेतन कहँ जड़ करै, जड़हि करै चैतन्य ।
अस समर्थ रघुनाथ कहँ, भजहिं जीव ते धन्य ॥

कहेउँ ज्ञानसिद्धान्त बुझाई ❀ सुनहु भक्तिमणिकी प्रभुताई
रामभक्ति चिन्तामणि सुन्दर ❀ बसै गरुड़ जाके उर अन्तर
परम प्रकाशरूप दिन राती ❀ नहिं कछु चहिय दिया घृत बाती
मोह दरिद्र निकट नहिं आवहि ❀ लोभ वात नहिं ताहि बुझावहि
प्रबल[2] अविद्या तम मिटि जाई ❀ हारैं सकल शलभ[3] समुदाई
खलकामादि निकट नहिं जाहीं ❀ बसै भक्तिमणि जेहि उरमाहीं
गरल[4] सुधासम[5] अरि हित होई ❀ तेहि मणि बिनु सुख पाव न कोई
व्यापहिं मानस रोग न भारी ❀ जेहिके वश सब जीव दुखारी
रामभक्ति मणि उर बस जाके ❀ दुख लवलेश न सपनेहुँ ताके
चतुर शिरोमणि ते जगमाहीं ❀ जे मणि लागि सुयतन कराहीं
सो मणि यदपि प्रकट जग अहई ❀ रामकृपा बिनु कोउ न लहई
सुगम[6] उपाइ पाइबे केरे ❀ नर हतभाग्य देत भटभेरे
पावन पर्वत वेद पुराना ❀ राम कथा रुचिराकर नाना
मर्मी सज्जन सुमति कुदारी ❀ ज्ञान विराग नयन[7] उरगारी
भावसहित जो खोदै प्रानी ❀ पाव भक्तिमणि सब सुखखानी

१ पेट की अग्नि २ बलवान् ३ पांखी ४ विष ५ अमृत-समान ६ सहज ७ नेत्र ॥

मोरे मन प्रभु अस विश्वासा ❀ रामते अधिक रामकर दासा
राम सिन्धु घन सज्जनधीरा ❀ चन्दनतरु हरि सन्त समीरा
सबकर फल हरिभक्ति सुहाई ❀ सो बिनु सन्त न काहू पाई
अस विचारि जो करु सतसंगा ❀ रामभक्ति तेहि सुलभ विहंगा

दो० ब्रह्म पयोनिधि मन्दर, ज्ञान सन्त सुर आहि।
कथा सुधामथि काढ़हीं, भक्ति मधुरता जाहि॥
विरतिचर्म असि ज्ञान मद, लोभ मोह रिपु मारि।
जय पाई सोइ हरिभगति, देखु खगेश विचारि॥

पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ ❀ जो कृपालु मोहिं ऊपर भाऊ
नाथ मोहिं निजसेवक जानी ❀ अष्ट प्रश्न मम कहहु बखानी
प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा ❀ सबते दुर्लभ कवन शरीरा
बड़ दुख कवन कवन सुखभारी ❀ सो संक्षेपहि कहहु विचारी
सन्त असन्त मर्म तुम जानहु ❀ तिनकर सहज स्वभाव बखानहु
कवन पुण्य श्रुतिविदित विशाला ❀ कहहु कवन अघ परम कराला
मानस रोग कहहु सबगाई ❀ तुम सर्वज्ञ कृपा अधिकाई
तात सुनहु सादर अति प्रीती ❀ मैं संक्षेप कहौं यह नीती
नर समान नहिं कवनिहुँ देही ❀ जीव चराचर याचत जेही
नरक स्वर्ग अपवर्ग[2] नसेनी[3] ❀ ज्ञान विराग भक्ति दृढ़ देनी
सो तनुधरि हरिभजहिं न जे नर ❀ होयँ विषयरत मन्द मन्दतर
कांच किरीच बदलि ते लेहीं ❀ करते डारि परसमणि देहीं
नहिं दरिद्रसम दुख जग माहीं ❀ सन्तमिलनसम सुख कछु नाहीं
पर उपकार वचन मन काया ❀ सन्त सहज स्वभाव खगराया
सन्त सहहिं दुख परहित लागी ❀ पर दुख हेतु असन्त अभागी
भूर्ज[4] तरुसम[5] सन्त कृपाला ❀ परहित सह नित विपति विशाला
शणइव[6] खल[7] परबन्धन करहीं ❀ खाल कढ़ाइ विपति सहि मरहीं

१ तलवार २ मोक्ष ३ सीढ़ी ४ भोजपत्र ५ वृक्षके समान ६ सन ७ क्रूर॥

खल बिनु स्वारथ पर अपकारी ❀ अहि मूषकइव सुनु उरगारी
पर सम्पदा विनाशि नशाहीं ❀ जिमिकृषिहतिहिमउपल बिलाहीं
दुष्ट उदय जग आरति हेतू ❀ यथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू
सन्त उदय सन्तत सुखकारी ❀ विश्वसुखद जिमि इन्दु तमारी
परमधर्म श्रुति विदित अहिंसा ❀ परनिंदासम अघ न गरिंसा
हरिगुरुनिन्दक दादुर होई ❀ जन्म सहस्र पाव तनु सोई
द्विजनिन्दक बहु नरक भोग करि ❀ जग जन्मै वायस शरीर धरि
सुर श्रुतिनिंदक जो अभिमानी ❀ रौरवनरक परहिं ते प्रानी
होहिं उलूक सन्त निन्दारत ❀ मोहनिशा प्रिय ज्ञान भानु गत
सबकी निन्दा जे जड़ करहीं ❀ ते चमगादुर ह्वै अवतरहीं
सुनहु तात अब मानस रोगा ❀ जेहिते दुख पावहिं सब लोगा
मोह सकल व्याधिन कर मूला ❀ तेहिते पुनि उपजहिं बहु शूला
काम वात कफ लोभ अपारा ❀ क्रोध पित्त नित छाती जारा
प्रीति करहिं जो तीनों भाई ❀ उपजे सन्निपात दुखदाई
विषय मनोरथ दुर्गम नाना ❀ ते सब शूल नाम को जाना
ममता दद्रु कण्डु इरषाई ❀ हर्ष विषाद गरह बहुताई
पर सुख देखि जरनि सो छई ❀ कुष्ठ दुष्टता मन कुटिलई
अहंकार अति दुखद डमरुवा ❀ दम्भ कपट मद मान नहरुवा
तृष्णा उदरकृच्छ्र अतिभारी ❀ त्रिविध एषणा तरुण तिजारी
युगविधिज्वर मत्सर अविवेका ❀ कहँलगि कहौं कुरोग अनेका

दो० एकव्याधिवशनर मरहिं, ये असाध्य बहु व्याधि।
सन्तत पीड़हिं जीवकहँ, सोकिमिलहहिसमाधि॥
नेम धर्म आचार तप, ज्ञान यज्ञ जप दान।
भेषजपुनिकोटिनकरहिं, रुज न जाहिं हरियान॥

यहिविधि सकलजीव जग रोगी ❀ शोक हर्ष भय प्रीति वियोगी

१ सर्प २ वेद ३ पाप ४ सूर्य ५ दाद ६ औषध ७ रोग ८ संपूर्ण प्राणी॥

मानस रोग कछुक मैं गाये ❀ हैं सबके लखि बिरलहि पाये
जाने ते छीजंहिं कछु पापी ❀ नाश न पावहिं जन परितापी
विषय कुपथ्य पाइ अंकुरे ❀ मुनिहुँ हृदय का नर बापुरे
रामकृपा नाशहिं सब रोगा ❀ जो यहि भाँति बनै संयोगा
सद्गुरु वैद्यवचन विश्वासा ❀ संयम यह न विषय की आसा
रघुपति भक्ति सजीवनमूरी ❀ अनूपान श्रद्धा अतिरूरी
यहि विधि भले कुरोग[2] नशाहीं[1] ❀ नाहिंतो यतन कोटि नहिं जाहीं
जानिय तब मन विरुज गोसांई ❀ जब उर बल विराग अधिकाई
सुमति छुधा[3] बाढ़ै नित नई ❀ विषय आश दुर्बलता गई
विमलज्ञान जल जब सो न्हाई ❀ तब रहै रामभक्ति उरछाई
शिव अज शुकसनकादिक नारद ❀ जो मुनि ब्रह्मविचार विशारद
सबकर मत खगनायक येहा ❀ करिय रामपद पङ्कज[4] नेहा
श्रुति पुराण सदग्रन्थ कहाहीं ❀ रघुपति भक्ति विना सुख नाहीं
कमठ[5] पीठि जामहिं बरु बारा ❀ बन्ध्यासुत बरु काहुहि मारा
फूलहि नभ बरु बहुविधि फूला ❀ जीव न लह सुख प्रभुप्रतिकूला
तृषा जाइ बरु मृगजलपाना ❀ बरु जामहिं शशशिश[6] विषाना
अन्धकार बरु रविहि नशावै ❀ रामविमुख सुख जीव न पावै
हिमते प्रकट अनल बरु होई ❀ रामविमुख सुख पाव न कोई

दो० वारि मथे बरु होइ घृत, सिकता ते बरु तेल।
बिनु हरिभजन न भवतरिय, यह सिद्धान्त अपेल॥
मशकहि करहिं विरञ्चिप्रभु, अजहिं मशकतेहीन।
अस विचारि तजि संशय, रामहिं भजहिं प्रवीन॥

श्लो० विनिश्चितं वदामि ते नचान्यथा वचांसि मे।
हरिं नरा भजन्ति[7] येऽतिदुस्तरं तरन्ति ते॥

कहेउँ नाथ हरिचरित अनूपा ❀ व्याससमास स्वमति अनुरूपा

१ नष्ट हों २ बुरे रोग ३ भूख ४ कमल ५ कछुआ ६ सींग ७ भजते हैं॥

श्रुति सिद्धान्त इहै उरगारी ❀ राम भजिय सबकाम बिसारी
प्रभु रघुपति तजि सेइय काही ❀ मोहिं से शठपर ममता जाही
तुम विज्ञानरूप नहिं मोहा ❀ कीन्ह नाथ मोपर अतिछोहा
पूँछेहु रामकथा अतिपावनि ❀ शुकसनकादि शम्भुमनभावनि
सत सङ्गति दुर्लभ संसारा ❀ निमिष दण्ड भरि एकोबारा
देखु गरुड़ निज हृदय विचारी ❀ मैं रघुवीर चरण अधिकारी
शकुनाधम[2] सब भाँति अपावन ❀ प्रभुमोहिं कीन्हविदित जगपावन

दो० आजु धन्य मैं धन्य अति, यद्यपि सबविधिहीन।
निजजन जानि राम मोहिं, सन्त समागम दीन॥
नाथ यथामति भाषेउँ, राखेउँ कछु नहिं गोय।
चरित सिन्धु रघुनाथकर, थाह कि पावै कोय॥

सुमिरि रामके गुणगण नाना ❀ पुनि पुनि हर्ष भुशुण्डि सुजाना
महिमा निगम नेति कहि गाई ❀ अतुलित बल प्रताप प्रभुताई
शिव[1] अज[3] पूज्य चरण रघुराई ❀ मोपर कृपा परम मृदुलाई
अस स्वभाव कहुँ सुनौं न देखौं ❀ केहि खगेश रघुपतिसम लेखौं
साधक सिद्ध विमुक्त उदासी ❀ कवि कोविद कृतज्ञ संन्यासी
योगेश्वर अरु तापस ज्ञानी ❀ धर्म निरत पण्डित विज्ञानी
तरहिं न बिनु सेये ममस्वामी ❀ राम नमामि नमामि नमामी
शरण गये मोसेउ अघराशी[4] ❀ होहिं शुद्ध नमामि अविनाशी

दो० जासु नाम भवभेषज, हरण घोर त्रयशूल।
सो कृपालु मोहिं तोहिंपर, सदा रहहिं अनुकूल॥
सुनि भुशुण्डिके वचनवर, देखि रामपद नेह।
बोले गरुड़ सप्रेम[6] अति, विगत मोह सन्देह॥

मैं कृतकृत्य भयउँ तव बानी ❀ सुनि रघुवीर भक्तिरस सानी
रामचरण नूतन[7] रति भई ❀ माया जनित[8] विपति सब गई

१ महादेव २ पक्षियों में नीच ३ ब्रह्मा ४ पापसमूह ५ प्रसन्न ६ प्रेमसहित ७ नई ८ उपजी॥

मोह जलधि बोहित तुम भयऊ ❀ मोकहँ नाथ विविध सुख दयऊ
मोसन होइ न प्रत्युपकारा ❀ वन्दौं तव पद बारहिंबारा
पूरण काम राम अनुरागी ❀ तुमसम तात न कोउ बड़भागी
सन्त विटप सरिता गिरि धरणी ❀ परहित हेतु सबन की करणी
सन्त हृदय नवनीत[2] समाना ❀ कहा कविन पै कहै न जाना
निज परिताप द्रवै नवनीता ❀ परदुख द्रवहिं सुसन्त पुनीता
जीवन जन्म सफल मम भयऊ ❀ तव प्रसाद सब संशय गयऊ
जानेहु सदा मोहिं निज किङ्कर[3] ❀ पुनि पुनि उमा कहै विहंगवर

दो० तासु चरण शिरनाइ करि, प्रेम सहित मतिधीर।
गरुड़ गयो वैकुण्ठ तब, हृदय राखि रघुवीर॥
गिरिजा[4] सन्त समागम, सम न लाभ कछु आन।
बिनु हरिकृपा न होय सो, गावहिं वेद पुरान॥

कहेउँ परम पुनीत[5] इतिहासा ❀ सुनत श्रवण छूटहिं भवपासा
प्रणत कल्पतरु करुणापुञ्जा ❀ उपजै प्रीति रामपद कञ्जा
मन वच कर्म जनित अघजाई ❀ सुनै जो कथा श्रवण मनलाई
तीर्थाटन साधन समुदाई ❀ योग विराग ज्ञान निपुणाई
नाना कर्म धर्म तप दाना ❀ संयम दम जप मख व्रत नाना
भूत दया द्विज गुरु सेवकाई ❀ विद्या विनय विवेक बड़ाई
जहँ लगि साधन वेद बखानी ❀ सबकर फल हरिभक्ति भवानी
सोइ रघुनाथ भक्ति श्रुति गाई ❀ रामकृपा काहू यक पाई

दो० मुनिदुर्लभ हरिभक्ति नर, पावहिं बिनहिं प्रयास।
जे यह कथा निरंतर, सुनहिं मानि विश्वास॥

सोइ सर्वज्ञ गुणी सोइ दाता ❀ सोइ महिमण्डित पण्डित ज्ञाता
धर्म परायण सोइ कुलत्राता[8] ❀ रामचरण जाकर मनराता
नीति निपुण सोइ परम सयाना ❀ श्रुति सिद्धांत नीक तेइ जाना

१ बदला २ मयनू ३ दास ४ पार्वती ५ पवित्र ६ हमेशा ७ पृथ्वी ८ वंशपालक॥

सोइ कवि कोविद¹ सोइ नरधीरा ❀ जो छल छांड़ि भजै रघुवीरा
धन्य सो देश जहां सुरसरी ❀ धन्य नारि पतिव्रत अनुसरी
धन्य सो भूप नीति जो करई ❀ धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई
सो धन धन्य प्रथम गति जाकी ❀ धन्य पुण्यरत मति सोइ पाकी
धन्य घरी सोइ जब सतसंगा ❀ जन्म धन्य द्विजभक्ति अभंगा²

दो० सो कुल धन्य उमा सुनु, जगतपूज्य सुपुनीत।
श्रीरघुवीर परायण, जेहि नर उपज विनीत॥

मति अनुरूप³ कथा मैं भाखी ❀ यद्यपि प्रथम गुप्त करि राखी
तब मन प्रीति देखि अधिकाई ❀ तब मैं रघुपति कथा सुनाई
यहनहिं कहिय शठ⁴हिंहठशीलहिं ❀ जो मनलाइ न सुन हरिलीलहिं
कहियनलोभिहिंक्रोधिहिंकामिहिं ❀ जो न भजै सचराचर स्वामिहिं
द्विजद्रोहिहिं न सुनाइय कबहूं ❀ सुरपति⁵ सरिस होइ नृप जबहूं
रामकथा के ते अधिकारी ❀ जिनके सतसंगति अतिप्यारी
गुरुपदप्रीति नीतिरत जोई ❀ द्विजसेवक अधिकारी सोई
ताकहँ यह विशेष सुखदाई ❀ जाहि प्राणप्रिय श्रीरघुराई

दो० रामचरण रति जो चहै, अथवा पद निर्वान⁶।
भावसहित सो यह कथा, करै श्रवणपुट पान॥

रामकथा गिरिजा मैं वरणी ❀ कलिमलशमन मनोमलहरणी
संसृति रोग सजीवनिमूरी ❀ रामकथा गावहिं श्रुतिसूरी⁷
यहिमहँ रुचिर सप्त सोपाना ❀ रघुपति भक्ति केर पंथाना
अति हरिकृपा जाहिपर होई ❀ पांव देय यहि मारग सोई
मन कामना सिद्ध नर पावै ❀ जो यह कथा कपट तजि गावै
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं ❀ ते गोपदइव भवनिधि तरहीं
सुनि सब कथा हृदय अति भाई ❀ गिरिजा बोलीं गिरा सुहाई
नाथकृपा मम गत संदेहा ❀ रामचरण उपजा नवनेहा⁸

१ विद्वान् २ पूर्ण ३ अनुसार ४ कपटी ५ इन्द्र ६ मुक्ति ७ पण्डित ८ नयाप्रेम॥

दो० मैं कृतकृत्य भइउँ अब, तव प्रसाद विश्वेश।
उपजी रामभक्ति दृढ़, बीते सकल कलेश॥

यह शुभ शंभु उमा संवादा ❀ सुख संपादन शमन विषादा
भवभंजन गंजन संदेहा ❀ जनरंजन सज्जन प्रिय येहा
रामउपासक जे जगमाहीं ❀ यहिसमप्रिय तिनकहँ कछु नाहीं
रघुपति कृपा यथामति गावा ❀ मैं यह पावन चरित सुहावा
यहि कलिकाल न साधन दूजा ❀ योग यज्ञ जप तप व्रत पूजा
रामहिं सुमिरिय गाइय रामहिं ❀ सन्तत सुनिय रामगुणग्रामहिं
जासु पतित पावन बड़ बाना ❀ गावहिं कवि श्रुति सन्त पुराना
ताहि भजिय तजि मन कुटिलाई ❀ राम भजे केहि गति नहिं पाई

छं० पाइन गतिकेहिपतितपावन रामभजु सुनुशठ मना।
गणिका अजामिल व्याध गीध गजादि खल तारेघना॥
आभीर यवन किरात खल श्वपचादि अतिअघरूप जे।
कहि नाम बारेक तेपि पावन होत राम नमामि ते॥
रघुवंशभूषण चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं।
कलिमल मनोमल धोइ बिनुश्रम रामधाम सिधावहीं॥
शतपञ्च चौपाई मनोहर जानि जे नर उर धरैं।
दारुण अविद्या पञ्चजनित विकार श्रीरघुपति हरैं॥
सुन्दर सुजान कृपानिधान अनाथ पर कर प्रीति जो।
सो एक राम अकामहित निर्वाणप्रद सम आन को॥
जाकी कृपा लवलेश ते मतिमन्द तुलसीदासहूं।
पायो परम विश्राम रामसमान प्रभु नाहीं कहूं॥

१ नाशक २ गुणसमूह ३ मोक्ष ४ पापरूप ५ वैकुण्ठ ६ चतुर ज्ञानी ७ मुक्तिदायक॥

दो० मो सम दीन न दीनहित[1], तुम समान रघुवीर।
अस विचारि रघुवंशमणि, हरहु विषम भवपीर[2]॥
कामिहिं नारि[3] पियारि जिमि, लोभिहिं प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरन्तर[4], प्रिय[5] लागहु मोहिं राम॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने उत्तरकाण्डे
विमलवैराग्यसम्पादनो नाम सप्तमस्सोपानः॥ ७॥

श्लोक॥
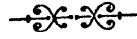
यः पृथ्वीभरवारणाय[6] दिविजैः[7] सम्प्रार्थितश्चिन्मयः
सञ्जातः पृथिवीतले रविकुले मायामनुष्योऽव्ययः॥
निश्चक्रं हतराक्षसः पुनरगाद्ब्रह्मत्वमाद्यं स्थिरां
कीर्त्तिम्पापहरां विधाय जगतां तं जानकीशं भजे १
यत्पूर्वं प्रभुणा कृतं सुकविना श्रीशम्भुना दुर्गमं
श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्तोतु रामायणम्॥
मत्वा तद्रघुनाथनामनिरतं स्वान्तस्तमश्शान्तये
भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसम् २
पुण्यं पापहरं सदा सुखकरं विज्ञानभक्तिप्रदं
मायामोहभवापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम्॥
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्याऽवगाहन्ति ये
ते संसारपतङ्गघोरकिरणैर्दह्यन्ति नो मानवाः ३

॥ इति॥

१ दीनों का सहायक २ संसार की पीड़ा ३ स्त्री ४ सदैव ५ प्यारे ६ भूभार
७ दूर करने के लिये ८ देवों ने ९ प्राप्त हुये १० पदकमल ११ नहाते हैं॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

रामायण

लवकुशकाण्ड

दो॰ श्रीभुशुण्डि के सुनि वचन, देखि राम पद प्रीति।
हुइ प्रसन्न बोले गरुड़, वाणी परम पुनीति ॥
सुरसरि[1]सम पावन भयो, नाथ हृदय अब मोर।
जन्म-जन्म छूटै नहीं, नाथ पदाम्बुज तोर ॥

सुने अखिल गुणगण प्रभु केरे ❀ पूरे नाथ मनोरथ मेरे
तव प्रसाद वायस-कुलनाथा[2] ❀ हृदय बसहिं अब प्रभु गुणगाथा
मन सन्तोष न चित्त अघाहीं ❀ यथा उदधि[3] सरितासर जाहीं
पशु पच्छी जड़ जङ्गम जाती ❀ चर अरु अचर बरण किहि भाँती
जे जन अवध बसहिं सुखधामा ❀ लिये सङ्ग सादर श्रीरामा
तजि सब अवध गये सह देहा ❀ यह मोहिं नाथ परम सन्देहा
अब प्रभु मोहिं सब कहहु बुझाई ❀ पिता जानि मैं करौं दिठाई
यह इतिहास पुनीत कृपाला ❀ जिमि मख[4] कीन्ह राम महिपाला

दो॰ अस कहि गदगद वचन मृदु, पुलकावली शरीर।
सुनि सप्रेम हर्षे विहँग, वायस मति अति धीर ॥

धन्य धन्य तुम धनि खगराया ❀ कीन्हीं अमित मोहिं पर दाया
रामकृपा तुम्हरे मन माहीं ❀ संशय शोक मोह भ्रम नाहीं
अति प्रिय वचन रसज्ञ[5] तुम्हारे ❀ लागत नाथ मोहिं अति प्यारे

---

१ गंगाजी २ काक-कुल-शिरोमणि ३ समुद्र ४ यज्ञ ५ रसीला ॥

अब प्रभुकथा विशद[१] विस्तारी ❀ सकल सुनावहुँ प्रभु हितकारी
तव मन प्रीति देखि खगराया ❀ मिटै अमङ्गल कोटिहु माया
सुनु अब रामरहस्य अनूपा ❀ चरित पुनीत अवधपुर-भूपा
अज[२] अद्वैत अमल अविनासी ❀ रहित सकल कलिमल कर फाँसी
नव सहस्र नव शत कम वासी ❀ कृत चरित्र रह पुर जग दासी

दो० विधिवर वचन सँभारि उर, राजत करुणागार।
युगल जोरि शोभा निरखि, लजितकोटिशतमार॥

अनुज सचिव प्रभु प्रजा बुलाये ❀ गुरुगृह सादर तिन कहँ लाये
मकर मास रवि पर्व सुहाना ❀ बिदा माँगि गुरुपद शिर नावा
काशी क्षेत्र धर्ममय जाना ❀ सकल सजायहु बाहन नाना
चतुरङ्गिनी अनी[३] सब साथा ❀ यहि विधि गमन कीन्ह रघुनाथा
बीच बास करि शिवपुर आये ❀ सादर पुरिहि शीश तिन्ह नाये
आइ सुरसरिहि कीन्ह प्रणामा ❀ अभय अनंत पाय विश्रामा
महिसुर दण्डि यती संन्यासी ❀ पूजेउ कृपासिन्धु सुखरासी
दीन्ह दान कछु बरणि न जाई ❀ धनद कुबेर सुरेश लजाई

दो० यहिविधिराहि प्रभुविपुला[४]दिन, सुखीकियेमुनिवृन्द।
आये पुनि निज नगर महँ, हर्षित करुणाकन्द॥

प्रतिदिन अवध अनन्द उछाहू ❀ दान देहिं प्रतिदिन नरनाहू
दुःख प्रपञ्च[५] सोच नहिं काहू ❀ व्याप न कबहुँ सुना खगनाहू
सुनहिं जहाँ तहँ वेद पुराना ❀ दूसर धर्म न काहू जाना
दिन दिन प्रीति देखि भगवाना ❀ अमित अनन्द सकलपुर जाना
शत संवत परिणाम हमारा ❀ भये शोचवश राम उदारा
अश्वमेध मख करौं सुहावन ❀ गाइ तरहिं भव दुःखनशावन
पुनि निज धामहिं तुरत सिधावौं ❀ विधि के वचन विलम्ब न लावौं

१ बड़ा २ जन्मरहित ३ सेना ४ बहुत ५ छल-कपट॥

प्रात जाइ गुरुभवन सप्रीती ❀ कहौं करौं सब सुन्दर रीती

दो० अस विचार उर राखिकर, कृपासिन्धु मति धीर।
किये चरित नाना अमित, हरण शोक भवभीर॥

कहौं सुनौ रघुपति प्रभुताई ❀ जो पुराण ऋषि नारद गाई
रामचन्द्र महिमा अति भूरी ❀ सो वर्णत कवि मन कद्[1]रूरी
मैं मतिमन्द कहौं किहि भाँती ❀ सोहत काग कि हंस सुपाँती
सुनिय न पुहुमि[2] कतहुँ अघ काना ❀ पढ़हिं चतुर नर वेद पुराना
गावहिं प्रभुगुणगण भयहारी ❀ निन्दहिं अमरलोक नरनारी
आज्ञा मातु पिता गुरु करहीं ❀ तप मख दान करहिं हरि भजहीं
प्रजा अनन्द राज्य प्रभु केरे ❀ मानहु शक्र कुबेर घनेरे
राजत सब रनिवास अनन्दा ❀ सुखी चकोर लखत जिमि चन्दा

दो० रघुवर राज विराज अति, सकल अवनि अघभाग।
विचरहिं मुनि काननविपुल, बसहिं सहित अनुराग॥

मही सुहावन कानन चारू ❀ खग मृग इक सँग करहिं विहारू
वैर न सुनिय राम के राजा ❀ मिलिविचरहिं वन सकल समाजा
नाना ग्रंथ स्मृति समुदाई ❀ सकहिं न गाइ राम प्रभुताई
सादर कोटि कोटि अहिईशा[3] ❀ अगणित चतुरानन गौरीशा
जहँ लगि जग कोविद[4] कविराई ❀ रामराज गुण नहिं सक गाई
अमित आदि कज्जल गिरि भूरी[5] ❀ पात्र समुद्र मसी भरि पूरी
कर जु लेखनी सुरतरु डारी ❀ सप्तद्वीप महि पत्र विचारी
सरसुति हरिहर विधि अरु शेषा ❀ सहस कल्पशत लिखैं विशेषा

सो० तदपि न पावहिं पार, रामराज कौतुक अमित।
सुन अब चरित अपार, जस खगपति आगे भयउ॥

१ कायरता २ पृथ्वी ३ शेषजी ४ पण्डित ५ बहुत॥

राजत राम सभा सह भाई ❀ तहँ आयो इक द्विज बिलखाई
परुष[1] वचन मुख कहत पुकारा ❀ हंस[2] वंश बूड्यो संसारा
रघु दिलीप अरु सगर नरेशा ❀ अतुल प्रभाव भये अवधेशा
पितु जीवत सुत त्याग्यो प्राना ❀ अन्तर्यामी सुन प्रभु काना
नरलीला कर राम कृपाला ❀ लगे विचार करन तेहि काला
कारण कवन मृतक सुत भयऊ ❀ द्विजदुख देखि विकल प्रभु भयऊ
प्रभु चित देखि गगन भइ बानी ❀ शूद्र तपै सुनु शारँगपानी[3]
विन्ध्याचल गह्वर वन जाहाँ ❀ द्विजसुत मरण हेतु नरनाहाँ

छं० यहिभाँतिद्विजसुतमृतकसुनिरथसाजिप्रभुआतुर चले
दुइ परम शैल विलोकि पावन मुदितचित सन्मुख भले॥
पुनिक्रोधसंयुतविशिख[4]छाँड्योशूद्रकोशिरकटगिर्यो।
वरभक्तिपावन जानि तेहि दै आप तीरथ व्रत कर्यो॥

दो० द्विजवर बालक मृतक सो, उठि बैठ्यो हर्षाय।
आये पुर रघुपति भगत, दुख भञ्जन सुखदाय॥

उठि रघुवर किय सन्ध्यावन्दन ❀ पूजे शम्भु भक्त उर चन्दन
भोजन शयन जगतपति कीन्हा ❀ आयसु पुनि सबही कहँ दीन्हा
रह्यो दिवस जब घटिका चारी ❀ सभा जुरी तब आय खरारी
सुनि पुराण प्रभु अनुज समेता ❀ सन्ध्या भई दान शुभ देता
भवन चले प्रभु आयसु पाई ❀ सबही सन्ध्या कीन्ह सुहाई
दूत अवध निशिवासर धावहिं ❀ आय साँझ सब खबर सुनावहिं
पृथक् पृथक् सुनि चरवँर[5] बानी ❀ बोल न एक सो सुनहु भवानी

छं० कछुकह्यो नहिं तेहिं पूछि सादर वचन वेग न आवही।
इक रजक[6] पत्निहिं कहत डाटत व्यंग वचन सुनावही॥

१ कठोर २ सूर्य ३ रामचन्द्र ४ बाण ५ श्रेष्ठदूत ६ धोबी॥

मुनि वचन कृपानिधान चर के मध्य उर राखत भये।
निशिस्वप्नदेखतजगतपतिउठिजागिदारुणदुखछये

दो० बीती अवधि प्रमाण युग, कीन्ह विचार कृपाल।
इक सहस्र पितुराज को, भोगहुँ मैं इहिकाल॥

त्यागहुँ जनकसुता वन माहीं ❀ राखौं श्रुतिपथ धर्म न जाहीं
करि मन तुरत सीय पहँ आये ❀ सादर बोले वचन सुहाये
निज छाया धरि यहाँ विनीता ❀ रहहु जाइ निज धाम पुनीता
प्रभुपद वन्दि गई नभ सोई ❀ जीव चराचर लखी न कोई
तेहि सन प्रभु अस कहा बुझाई ❀ मनभावत माँगहु वर गाई
नाथ साथ मुनिधाम विहाई[1] ❀ आयउँ तुव गृह मन सकुचाई
मुनि तिय भूषण वसन सुहाये ❀ पहिराये प्रभु जो मन भाये
हँसि कह कृपानिकेत सकारे[3] ❀ पूजैं मन अभिलाष तुम्हारे

दो० होत प्रात जब जगतपति, जागे रमा निवास।
याचकगन गावत मुदित, लखि मुख कंज प्रकास॥

भरत लषण रिपुदमन[4] समेता ❀ आये जहँ प्रभु कृपानिकेता
कीन्ह प्रणाम माथ महि लाई ❀ बोले नहिं कछु श्रीरघुराई
वदन विलोकि सशंकित अङ्गा ❀ श्रीहत देख वपुष[5] कर रङ्गा
थर थर काँपहिं तीनों भाई ❀ जानि न जाइ चरित रघुराई
ऐंचि श्वास अरु कुसमय जानी ❀ बोले गूढ़ मनोहर बानी
सुनि लघु भ्रात कहेउँ रघुनाथा ❀ ले वन जाहु जानकिहिं साथा
सूखि सहमि सुनि वचन कराला ❀ जरेउ गात[6] उपजी उर ज्वाला
हँसत कि साँच कहत रघुराई ❀ असमंजस मन दुख अधिकाई

दो० भरतादिक भ्राता विकल, मुख आवत नहिं बैन।

१ नाश हुए २ छोड़कर ३ प्रातःकाल ४ शत्रुघ्न ५ शरीर ६ शरीर॥

जोरि युगलकर शत्रुहन, भये नीर भरि नैन ॥

सुनि प्रभु वचन हृदय बिलखाना ❀ जगतजननि सिय सब जगजाना
जगत पिता प्रभु सब उरवासी ❀ जड़ चेतन घन आनँदरासी
कारण कवन जानकी त्यागी ❀ मन क्रम वचन चरण अनुरागी
सुनि प्रभु भ्रातन कर मुख बानी ❀ परम प्रीतिमय करुणा सानी
पङ्कज नयन नीर भरि आये ❀ कहि प्रिय वचन अनुज[1] समुझाये
आयसु मम टारहि जो ताता ❀ रहइ न प्राण तात मम गाता
विधि इच्छा भावी बलवाना ❀ तुम कहँ तात सर्व कल्याना
मम यह वचन पालु लघु भाई ❀ प्रात जानकिहिं जाहु लिवाई

दो० भरत कहेउ युग[2] जोरिकर, सुनि प्रभु वचन कठोर।
सुनि बिनती सर्वज्ञ प्रभु, नाथ हमहिं मति थोर ॥

हंस वंश जग में विख्याता ❀ दशरथ पिता कौशला माता
त्रिभुवनपति प्रभु सब जगजाना ❀ गावहिं जाहि शेष श्रुति नाना
सत्य शक्ति तव प्रकट सुहाई ❀ बरणि न सकहिं वेद अहिराई[3]
शोभा खानि जगत की माता ❀ रहित अमङ्गल मङ्गलदाता
छाया जेहि तिय पतिब्रत करहीं ❀ तुमहिं बिहाय क्षणहुँ किमि भरहीं
बिन जल मीन कि जियै कृपाला ❀ कृषी कि रह बिनु वारिदमाला[4]
जीवहिं क्षण तुमबिनु किमि सीता ❀ ज्ञानवन्ति अतिचतुर विनीता
सुनि करुणामय वचन सप्रीती ❀ कही भरत तुम सुन्दर नीती

दो० तदपि नृपहिं चहिए सदा, राजनीति धन धर्म।
वसुधा[5] पालहि सोच तजि, वचन प्रीति शुचिकर्म ॥

दूतन कहा सो अपयश कहऊ ❀ कुलकलङ्क यह दारुण भयऊ
तरणि[6]वंश नृप भये अनेका ❀ एक एकतें निपुण[7] विवेका

१ छोटा भाई २ दोनों ३ शेषजी ४ बादलों का समूह ५ पृथ्वी ६ सूर्य ७ चतुर ॥

स्वायम्भुव मनु रघु नृप जानौं ❀ सगर भगीरथ विरद बखानौं
दशरथ दीख सदा तुम नीके ❀ वचन न टारेउ लालच जीके
तेहि कुल रञ्जक सुनत कलंकू ❀ रहै जीव तौ अधम अशंकू
सुनु सर्वज्ञ सकल अघहारी ❀ बिनु कलङ्क अह जनककुमारी
विधि हरि हर दिवि देखि सुहाई ❀ पावक प्रविटि अनंट सब भाई
जो सुर नर मुनि स्वर्गहुँ माहीं ❀ यह चरित्र जग लखि हरषाहीं

दो० ते शठ रौरव नरक महँ, कोटि कल्प करि वास।
रहहिं कल्पशत रोगवश, भोगहिं नरक निवास॥

रिस रुख देखि नयन करि तीछे ❀ आयउ भरत लषणकर पीछे
सुन सौमित्रि छाँड़ि हठ शोचू ❀ जग भल कहै कहौ किन पोचू
तजि आज्ञा प्रत्युत्तर करिहौ ❀ मोहिंबिन सोच जन्म भरि मरिहौ
जनकसुता रथ तुरत चढ़ाई ❀ गङ्ग समीप फिरहु पहुँचाई
अति गह्वर वन जहाँ न कोई ❀ छाँड़हु तात यतन कर सोई
फेरहु तुम मति वचन उदासा ❀ मरण ठानकर चलेउ निरासा
सुभग विमान सीय बैठारी ❀ भूषण पट बहु धरे सँभारी
अति अनन्द मन चली जानकी ❀ अतिशय प्रिय करुणानिधान की

दो० विवरणलषण निहारिकर, सोच विकल भइ बाल।
हृदयविचार न कहि सकति, मणिबिनुव्याकुल व्याल॥

उतरि देवसरि यान सुहावा ❀ देखत घन वन मन भय पावा
कारण अपर जानि भयभीता ❀ बोली वचन मनोहर सीता
दीखत नहीं मुनिन कर धामा ❀ जात कहाँ प्रभुअनुज सकामा
खग मृग केहरि विषधर व्याला ❀ करि वराह वृकं बाघ कराला
कोउ मुनि मिलत न आवत जाता ❀ निकसत प्राण तात मम गाता
सीय विकललखि मनहिं अहीशा ❀ कहन लगे कह कीन्ह विधीशा

१ यश, कीर्ति २ कुण्ड, गड्ढा ३ झूठा ४ बुरा ५ सिंह ६ साँप ७ भेड़िया॥

मूर्च्छित रथ ते भे विकराला ❀ गिरत भूमि तब आप सँभाला
सिय विलोकि मन धीरज आना ❀ तृषा बिना अब निकसत प्राना

दो० धरणिसुता व्याकुल निरखि, प्राण कण्ठगत जानि।
तजन चहत तनु शेष तब, धिक धिक जीवन मानि॥

देखि लषण सिय मूर्च्छा आई ❀ गगनगिरा तब भई सुहाई
सुनु सौमित्रि जाहु सिय त्यागी ❀ जनकपुत्रिका जियहि सुभागी
ब्रह्मगिरा मुनि धीरज कीन्हा ❀ हाथ जोरि परिदच्छिण दीन्हा
ले रथ चरण वन्दि सिय केरे ❀ चले अवधपुर त्रास घनेरे
जागी सिया सकल दिशि देखा ❀ नहिं रथ अश्व नहीं कहुँ शेखा
सहि दुख प्रथम रहे हैं प्राना ❀ पुनि सोइ चहत न करन पयाना
करुणा करत विपिनँ अतिभारी ❀ बाल्मीकि आये वनचारी
पुत्री बाल्मीकि कह ज्ञानी ❀ वन आवन निजचरित बखानी

दो० मुनि पुत्री मैं जनक की, राम प्रिया जग जान।
त्यागन हेतु न जान कछु, विधिगति अति बलवान॥

देवर लषण गये पहुँचाई ❀ तब सब हेतु लख्यो मुनिराई
सुनु सीता मिथिलापति मोरा ❀ परम शिष्य मम अरु पितु तोरा
चिन्ता अब जनि करसि कुमारी ❀ मिलिहहिं तोहिं शेष हितकारी
सादर पर्णकुटी सिय आनी ❀ करि मज्जन पुनि सब गति जानी
विविध भाँति मुनि धीरज दीन्हा ❀ सिय तब सुरसरि मज्जन कीन्हा
सुमिरि राम मूरति उर राखी ❀ दीने फल मुनि आयसु भाखी
मुनिवर कथा अनेक प्रसङ्गा ❀ कहैं सुनैं सिय सङ्ग विहङ्गा
ज्ञान अनेक प्रकार दृढ़ाये ❀ लक्ष्मण अवधपुरी जब आये

छं० आयेजो लक्ष्मण त्यागि सीतहिं विकल निज आश्रम गये

१ सीताजी २ आकाशवाणी ३ लक्ष्मण ४ वन ५ आज्ञा ६ पक्षी ॥

बहु भाँति रोवत मातु सन कह सीय दारुण दुख दये॥
सुनिसहमिमूर्च्छितमातुवाणीविकलफणिजिमिमणिदये।
तिमिमातुबिलपतिजानव्याकुलकौशलहि दुखवशभये
रोदति वदति बहु भाँति को कह विपति यह दारुण अये।
सुनि शोर राउर सहित लक्ष्मण राम निज मन्दिर गये॥
निज ज्ञान दय समुझाय त्यहि तब खुले पट अन्तरनये।
हम जानि तुम सुत मान प्रभु जग भूलि भ्रम फंदन भये॥
अब कृपा करि जगदीश रघुवर देहु भक्ति सुहावनी।
जेहि खोज मुनि योगीश तापस परम अविचल पावनी॥
वर चहेउ सोइ सोइ दियो मातुहिं कारुणिक रघुपति तबै।
मन शोधकर निज योग पावक तजा तनु सादर सबै॥

दो० योग अग्नि तनु भस्म करि, सकल गईं पतिधाम।
भरत शत्रुसूदन[2] लषण, शोक भवन भे राम॥

विधिवत कर्म किये श्रुति गाये ❀ प्रभु ते गुरु सादर करवाये
दीन दान पुनि कोटि प्रकारा ❀ को अस कवि जग वरणै पारा
धेनु वसन हाटक मणि हीरा ❀ जटि गजमोतिन कोटिक चीरा
पुनि परलोक हेतु धन धामा ❀ दिये किये द्विज पूरण कामा
रही न चाह याचकन केरी ❀ रंक[3] धनंद[4] पदवी जनु हेरी
वेद पढ़हिं द्विज देहिं अशीशा ❀ चिरजीवहु कोशलपुर ईशा
राम दान दे सब विधि तोषे[5] ❀ भये निवर्त काजकरि चोषे
गृह द्विज याचक सकल सिधाये ❀ अमित प्रकार राम सुख पाये

दो० करहुँ अजय[6] मख एक पुनि, अश्वमेध जग जान।

१ सर्प २ शत्रुघ्न ३ दरिद्र ४ कुबेर ५ प्रसन्न किया ६ न जीतने योग्य॥

कलुष[1] सकल सन्ताप हर, जगत परम सुखदान॥

एक बार गुरु गृह अवधेशा ❀ गये अनुज सन सचिव[2] खगेशा
कीन्ह दण्डवत पद शिरनाई ❀ सादर हर्षि मिले मुनिराई
देखि कुशल पूछी मृदु गाता ❀ कुशल देखि तव पदजलजाता[3]
गुरुपद वन्दि द्विजन शिरनाई ❀ बैठे अमित अशीशहिं पाई
कहत पुराण नवल इतिहासा ❀ सुनत कृपानिधि परम हुलासा[4]
भाइन राम अमित सुख दीन्हा ❀ मुनि तन लख्यो प्रेम कर चीन्हा
दोउ कर जोरि सच्चिदानन्दा ❀ बोले वचन भानुकुल चन्दा
नाथ चरण तव सकल प्रसादा ❀ भय जग विदित मोरि मर्यादा

दो० समय समुझि करुणायतन, सादर वचन बहोरि।
प्रभु अन्तर्यामी करहु, सफल कामना मोरि॥

तव प्रसाद जग यज्ञ अनेका ❀ कीने अधिक एक ते एका
नाथ सकल पुरजन मन कहहीं ❀ देखन अश्वमेध अब चहहीं
जस कछु आयसु दीजिय नाथा ❀ सो सब करौं नाय पद माथा
तनु पुलके सुनि वचन सप्रीती ❀ कस न कहहु तुम सुन्दर नीती
पूजिहि मन अभिलाष तुम्हारी ❀ उठहु भरत अब करहु तयारी
सुनि मुनि वचन भरत रिपुदमनू ❀ हर्षि सचिव लछमण गृह गवनू
विविध प्रकार चरण करि सेवा ❀ चले भरत सँग सब महिदेवा[5]

दो० सेवक पुरजन सचिव सब, सादर तुरत बुलाय।
हाट बाट पुर द्वार गृह, रचहु वितान बनाय॥

चले सकल किङ्कर[6] सुनि बानी ❀ सुनत वचन हर्षीं सब रानी
रचहिं वितान अनेक प्रकारा ❀ देखि अवध निज मति विधिहारा
लगे सँवारन गजरथ बाँजी[7] ❀ सुनि सुर मगन दुन्दुभी बाजी

१ पाप २ मन्त्री ३ चरणकमल ४ आनन्द ५ ब्राह्मण ६ सेवक ७ घोड़े॥

तुरत सचिव चर विपुल बुलाये ❁ कहि जै जीव शीश तिन नाये
जाहु मुनिन्ह के आश्रम माहीं ❁ सादर न्योत देहु सब काहीं
वहाँ राम पूछेहु गुरु देवा ❁ आज्ञा देव करौं सोइ सेवा
प्रभु मन की गति मुनिवर जानी ❁ बोले अति सनेह वर बानी
पठवहु दूत जनकपुर आजू ❁ आवहिं जनक समेत समाजू

दो० सुनहु राम रघुवंशमणि. न्योति सकल पुर जाति।
वरुण कुबेरहि इन्द्र यम, पुनि मुनिवर सब ज्ञाति॥

गुरु समेत प्रभु अवधहिं आये ❁ देखि बनाव अमित सुख पाये
जनक नगर चर तुरत पठाये ❁ देश देश के नृपति बुलाये
जाम्बवन्त सुग्रीव विभीषण ❁ अरु नल नील द्विविद कुलभूषण
आये सब जहँ राम कृपाला ❁ वरुण कुबेर इन्द्र यम काला
चढ़ि विमान सुर नारि सिहाहीं ❁ करहिं गान कल कंठ लजाहीं
आये मुनिवर यूथ घनेरे ❁ देहिं कृपानिधि सुन्दर डेरे
शशि हरहरि विधि रवि सनकादी ❁ आये सुर जे परम अनादी
विश्वामित्र संग मुनि भारी ❁ सहस सात ऋषि इच्छाचारी

दो० पाराशर भृगु अंगिरा, नारद व्यास अगस्त्य।
नाना यूथप मुनि सकल, देवल सहित पुलस्त्य॥

मख थल वर अति दीख सुहाये ❁ नाना भाँति देखि सुख पाये
मिथिलापुर जे दूत पठाये ❁ देखि नगरवासिन मन भाये
द्वारपाल सब खबरि जनाई ❁ अवध नगर सन पाती आई
सुनि विदेह सहसा उठि धाये ❁ तन मन पुलकि नयन जल छाये
भयो नृपति मन आनँद जेता ❁ कहि न सकैं शारद अहि तेता
शिथिल अंग नृप द्वारे आये ❁ देखि दूत अतिशय सुख पाये
कहहु कुशल रघुपति सब भाई ❁ पत्रि देय सब कुशल सुनाई

१ दूत २ बन्धु, भाई ३ प्रसन्न होना ४ बहुत-से ५ समूह ६ सरस्वती॥

हृदय राखि पुनि नयन लगाई ❀ गद्गद कंठ न कछु कहि जाई

दो० भूप प्रेम तेहि समय जस, तस न कहहिं मति धीर।
तुलसी भयउ उछाह[1] वश, जय जय शब्द गँभीर॥

बाँचत प्रीति न हृदय समानी ❀ चर वर बोलि कही हँसि बानी
नगर गाँव पुर मंगल साजे ❀ अमित अपार बाजने बाजे
सचिव बोलि नृप पाती दीन्हीं ❀ उठिकर जोरि विनय कर लीन्हीं
पढ़ी सचिव अति प्रेम अनन्दा ❀ सुमिरि राम कोशलपुर चन्दा
घर घर खबरि व्याप चण माहीं ❀ मंगल कलश साजि सब पाहीं
भयो अनन्द न जाय बखाना ❀ कीन्हीं विविध भाँति नृप दाना
धरि तनु देव अमित नभवासी[2] ❀ आये भूप नगर सुख रासी
कहहिं वचन नृप के हितकारी ❀ चलो अवध सब काज बिसारी

दो० कहि कहि सुर सादर चले, वाहन रचे बनाय।
जोरियुगलकरमुकुटमणि, अस्तुतिकरहिंसुभाँय[3]॥

छं० सुमिरत चरण श्रीराम रघुकुल चंद सीता नायकं[4]।
श्रीसहितअनुजसमेत सुस्थिरबसहुममउर[5]लायकं॥
अम्भोज[6]नयनविशालभालकृपालु दशरथनन्दनं।
शत कोटिमार[7] उबार शोभा अतुल बलमहिमंडनं॥

दो० पूजे विविध प्रकार नृप, सादर दूत हँकारि।
गुरु गृह गवनेउ मुकुटमणि, पाय पदारथ चारि॥

सकल कथा महिपाल सुनाई ❀ शतानन्द आनन्द अघाई
चलहु नृपति मख देखहिं जाई ❀ साजहु जाय सकल कटकाई
करि बिनती नृप मन्दिर आई ❀ बाँचि पत्रिका सकल सुनाई
आनँदयुत सब करी बधाई ❀ दिये दान महिदेव बुलाई

१ उत्साह, आनन्द २ स्वर्गवासी ३ सुहावनी ४ पति, स्वामी ५ हृदय ६ कमल ७ कामदेव॥

याचक[1] सकल अयाचक कीन्हें ❀ सादर बोलि युगल चर लीन्हें
बिलग बिलग सब पूछहिं बामा[2] ❀ सुने राम के पूरण कामा

छं॰ सब काम पूरण राम के सुनि विपुल बाजन बाजहीं।
पुर द्वार घर रखवार राखे सैन्य भट सब साजहीं॥
दश सहस सिंधुर षष्टि शत रथ वाजि वर्णत नहिंबनै।
जगमगतजीन जड़ावरविमणिदेखिकवि कैसे भनै॥
चढ़ि शूर प्रबलप्रवीण जे असिचलत सबसादरभये।
सुखपालपरमविशालयुग चढ़ि गुरुहिंलै आदरनये।
महिडोलधसकतकमठ[3]अहिदलदेखिअमितविदेहको
रथयूथपदचरअमितवर्णहिंजगतअसकविमूढ़को॥

दो॰ चल्यो राव मुनिगण सहित, विपुलनिशान बजाय।
प्रात तीसरे पहर सोइ, अवध नगर नियराय॥

पुर बाहर सरयू शुचि तीरा ❀ वास दीन हर्षित रघुवीरा
सौंपि अनुज कहँ राज समाजू ❀ आये प्रभु जहँ नृपमणि राजू
मिलि पुनि नृपति निकट बैठारे ❀ गद्गद ह्वै मृदु[4] वचन उचारे
बदन मयंक[5] निरखि सब गाता ❀ आनँद मगन न हृदय समाता
प्रभु विनीत सब करि सेवकाई ❀ सचिव भरत पुनि लिये बुलाई
नृप सेवा सब भरत सँभारी ❀ सुनु खगपति जस कीन्ह खरारी
आय गुरुहिं सादर शिर नाई ❀ मनभावत आशिष तिन पाई
पुनि प्रभु सकल देव गुरु वन्दे ❀ अभिमत[6] आशिष पाय अनन्दे

दो॰ दस सहस्र मुनिवर सहित, आये प्रभु मखधाम।
बोले वचन विनीत गुरु, मंत्र सुनहु मम राम॥

१ माँगनेवाले २ स्त्रियाँ ३ कच्छप ४ मीठे ५ चन्द्रमा ६ चाहा हुआ॥

धर्म सकल जेहि वेद बखाने ❀ संत पुराण लोक सब जाने
बिन तिय नहिं फल होय खरारी ❀ अब चाहिए मिथिलेश कुमारी
सुनि मुनि वचन मौन गहि रहेऊ ❀ सत्य असत्य न एकौ कहेऊ
मम प्रण विरद जान मुनिराया ❀ रहै सुकृत जेहि करहु सुदाया
द्वै गुरु मिल नारद सनकादी ❀ वचन कहेउ सुन परम अनादी
कनक[1] जटित मणि सुन्दरबाला ❀ रचि सियरूप सुशील विशाला
अंग अंग सब भूषण साजे ❀ तासु रूप लखि रतिपति[2] लाजे
सहसा लखि न सकहिं नरनारी ❀ सिय देखेउ सब अचरज भारी

दो० तेहि अवसर शोभा अमित, को कवि वरणै पार।
जग दातार कृपालु प्रभु, कीन्हें चरित अपार॥

जटित कनक सुन्दर मृगछाला ❀ तिहि आसन आसीन कृपाला
सिया सहित लखि सुर मुसुकाहीं ❀ कीन्ह प्रणाम सबन हर्षाहीं
भीर अपार देखि गुरु ज्ञानी ❀ ऋधिसिधिबोलिसकलसनमानी
कहा जाय जो उचित सो करहू ❀ जो जेहि चहिय सकल अनुसरहू
मुनि रजाय[3] रघुपति रुख पाई ❀ रचे कोट[4] गृह विधिहु सिहाई
सुर सुरभी[5] सुरतरु[6] सुखखानी ❀ शारद शेष न सकहिं बखानी
पुर गृह बाहर गली अटारी ❀ भरि सुगन्ध सब रची सँभारी
रहे तहाँ दिशिपाल[7] अनेका ❀ जे परमारथ निगुण विवेका

छं० जे निपुण परम विवेक पावन भरत लै राखे तहीं।
निजभाग्यप्रबलसराहनिदरहिंधनदकीपदवीसही॥
आये त्रिलोकी नाग खग सुर असुर जे विधि ने रचे।
सनमानि सकल सनेहसादर रामसनकोउ नहिंबचे॥

दो० युग सहस्र जे विप्रवर, सुन्दर परम प्रवीन।

---

१ सोना २ कामदेव ३ आज्ञा ४ गढ़ ५ कामधेनु ६ कल्पवृक्ष ७ दिशाओं के रक्षक॥

जानहिं श्रुतिकर मत सकल, रहिमख संग अधीन ॥

मकर मास ऋतु शिशिर सुहाई ❀ मख मंडल बैठे रघुराई
तब बोले गुरु वचन सुहाये ❀ आनहु वाजि जो वेद बताये
लक्ष्मण सुनि गुरु वचन अनन्दे ❀ बार बार पद पंकज बन्दे
हयशाला सादर चलि आये ❀ विविध विभूषण तेहि पहिराये
श्वेत वर्ण सुन्दर श्रुति कारी ❀ रविहय निदरि मनोज सँवारी
जीन जराव न जाय बखाना ❀ चढ़ि रविरथ आवत जगजाना
माथे मोर पच्छ मणि लागे ❀ सोइ नभ नखत देव अनुरागे
सेवक चारु पाट मय डोरी ❀ दामिनि दमकि निपट अतिथोरी

दो० षष्टि सहस दश वीरवर, रामानुज रणधीर ।
मध्य ताहि आनेउ तहाँ, जहाँ राम रघुवीर ॥

पूजेहु हय प्रभु जय जग हेतू ❀ जस कछु कहा गाधिकुलकेतू
दीन्ह विविध विधि दान अनेका ❀ लिखो पत्र सोइ करि अभिषेका
एक वीर कौशलपुर माहीं ❀ अरिदल दलन सुरेश सकाहीं
जेहि बल होइ गहै सोइ वाजी ❀ दंड देहु वन जाहु कि भाजी
लखि बाँधो हय शीश सँभारी ❀ या सुन वचन चले मुनिचारी
भार्गव आदि सकल मुनिसंगा ❀ रहे जहाँ रघुवंश पतंगा
कथा सकल लवणासुर केरी ❀ मुनिन त्रास जिन दीन घनेरी
मुनिऋषि वचन नयन जल छाये ❀ विहँसि राम निज त्रोण मँगाये

दो० दीन्हें रिपुसूदनहिं सोइ, बाण अमोघ कराल ।
मंत्रमोर पढ़ ताहि हति, जीतहु सकल भुवाल ॥

बहुरि विभीषण राम बुलाये ❀ सादर आय माथ तिन नाये
लवणासुर के चरित अपारा ❀ पूछेउ दिनमणि वंश उदारा

१ घुड़साल २ कहने ३ कान ४ कामदेव ५ तारे ६ विश्वामित्र ७ सूर्य ८ तरकश ॥

कर युग जोरि निशाचर नाहा ❀ सत्य कहौं अब सुन अवगांहा
भगनि विमात्र[2] नाथ सोइ मोरी ❀ कुम्भनिशा तेहि नाम बहोरी
मधु दानव कहँ रावण दीनी ❀ बहु बिनीतिकर विनय बसीनी
तनय[3] तासु लवणासुर भयऊ ❀ शिव सेवा सादर मन दयऊ
अगम तासु तप शंकर जाना ❀ दीन्ह त्रिशूल सुकृपानिधाना
जेहि कर रहै अस्त्र यह भारी ❀ चौदहभुवन जीति सब झारी

दो० तेहि बल प्रभु सो नहिं गनहि, अमर दनुज[4] नर नाग।
जीति सकलवश कीन्हसोइ, हठ पथ सबके लाग॥

तासु चरित सुनि मन मुसकाने ❀ रिपुहंतहि बल दै सनमाने
सैन्य सुभग चतुरंग बनाई ❀ लिये साथ दोउ तनय सुहाई
सुनि प्रभु वचन निशान अपारा ❀ तीन सहस्र हने इकबारा
धसकै वसुधा कुंजर[5] गाजै ❀ दश सहस्र रथ रवि रथ लाजै
पूरो शंख चलो दल साजी ❀ अमित अकाश दुन्दुभी बाजी
पुर बाहर सब अनी सँभारी ❀ तनय युगल लखि परम सुखारी
द्वादश निशि बीते मगमाहीं ❀ पहुँचे जाय यमुनतट पाहीं
दिन प्रति दान देहिं बहु भाँती ❀ प्रभुपद पूजें दिन औ राती

दो० रवितनयां[6] पद बन्दिकै, सादर पूजि पुरारि।
चलेहु शत्रुसूदन सुमिरि, स्वामिहिं राम खरारि॥

चमूँ चपल अति सुभट जुझारा ❀ घेरेउ नगर वीर बरियारा
विपुल निशान हने तेहि काला ❀ सुनि निश्चरपति गर्व विशाला
षष्टि सहस दशशूर जुझारा ❀ लवणासुर सँग अनी[7] अपारा
सुभट प्रचारत गर्जत आवा ❀ देखि कटक निज अति सुख पावा
मारहु खावहु नृप धरि बाँधहु ❀ जेहि जय होय यत्न सोइ साधहु

१ महान् २ सौतेली ३ पुत्र ४ राक्षस ५ हाथी ६ यमुनाजी ७ सेना॥

असकहि सन्मुख सैन्य चलाई ❀ कज्जल गिरि जनु आँधी आई
मारू शब्द सुनहिं भट गाजहिं ❀ विपुल बाजने दुहुँ दिशि बाजहिं
निज प्रभु कहि जय जोरी जानी ❀ हर्षि भिरे भट मन हठ ठानी

छं० हठ ठानि प्रबल प्रवीण जे असि[1] भिरे अति रिपु प्रबल से।
इक मल्ल युद्ध सराहि रोकहिं एक एकन कर खसे॥
शर शक्ति तोमर[2] शूल परशु कृपाण[3] शूर चलावहीं।
कर चरण शिर हति तीर धारहिं भूमि जान न पावहीं॥
भट गिरहिं पुनि उठि भिरहिं धरु कहि करहिं माया अति घनी
प्रभु तनय सुन्दर वीर बाँके हनहिं रिपु निश्चर अनी॥
देखहिं परस्पर युद्ध कौतुक सुभट एकहिं इक हनें।
सजि कोटि रथ सुर आय नभ पथ सुमन वर्षा करि भनें॥

दो० बिचलत अनी विलोकि निज, लवणासुर बरबंड।
संग तनय मातंग भट, दूसर केतु अखंड॥

अरि सुत ज्येष्ठ सुबाहु विशाला ❀ भिरा मतंग हृदय जनु काला
यूपकेतु अरु केतु प्रचारी ❀ लड़हिं सुखेन न मानहिं हारी
अनी समूह जानि निज जोरी ❀ अस्त्र शस्त्र गहि भिरे बहोरी
विषम युद्ध लखि देव सकाने ❀ पूछेउ सुरगुरु कहि मुसकाने
जनि हिय सोच अमरपति करहू ❀ राम प्रताप सुमिरि उर धरहू
यूपकेतु कर कोप अपारा ❀ हन रिपुकेतु खंड महि डारा
इहाँ सुबाहु मत्त गहि मारा ❀ कर पद काटि अवनि[4] पर डारा

छं० महि डारि करपद शीश आतुर तूण शर प्रविशत भये।
रविवंश के अवतंस दूनों समर महि राजत भये॥

१, ३ तलवार २ लोहे का डंडा जिससे शत्रु को मारते हैं ४, ५ पृथ्वी॥

सुनिमरणयुगसुतविकलनिशिचरभूमिपरघूर्मितगिस्यो।
पुनिजागि शूलसँभारि प्रभुके समरसम्मुख सो भिस्यो॥
दोउ प्रबल बीर प्रतापनिशिचर सैन्यदुहुँदिशिमुरि चली।
शिरबाहुचरण उड़ात नभपथ योगिनी आनँद भली॥
बहुरुधिर मज्जन करहिं सादर गुहहिं नर शिरमालिका।
आनंद ह्वै मन मुदित गावहिं गीत खेचर[1] बालिका॥
धुनि बढ़हिं शंख मृदंग की सुनि शूर हर्ष बढ़ावहीं।
गतिलेत नृत्यत प्रेततिय शिरमाल हरहिं चढ़ावहीं॥
कहुँ करत पान प्रमाण नर कहुँ भरीशोणित[2] शाकिनी।
सब मेद मांस अहारकर नभ मुदित बोलहिं डाकिनी॥

दो० मारे रघुबर बीर बहु, परे समर रणधीर।
क्षण इक निश्चर बध निरखि, अंतर हुइ बलबीर॥

करि छल प्रगट सो विविध बरूथा[3] ❁ अस्त्र अस्त्र लै सब मुरयूथा
धाये अज हरि शिव सनकादी ❁ जे मुनि अपर कहे श्रुतिवादी
शक्ति शूल असि चर्म मुहाई ❁ गदा परशु धनु बाण बनाई
धरु धरु मारु मारु सुर करहीं ❁ लरत न भट विस्मित हो रहहीं
निश्चर प्रबल भये रघुनाथा ❁ केतिक धीर मलैं निज हाथा
सैन्य विकल लखि नारद आये ❁ समाचार सब कह समुझाये
रिपुसूदन प्रभु विशिख[4] सँभारी ❁ जोर धनुष सुमिरे त्रिपुरारी
जिमि तम[5] अँचै तरणि गो सोई ❁ समर अपर नहिं दीखै कोई

दो० मंत्र प्रेरि चल कोटि शर, रहे जहँ तहँ नभ छाय।
मनहु बलाहक[6] प्रबल बहु, मारुत[7] देखि बिलाय॥

१ आकाश में चलनेवाले २ खून ३ समूह ४ बाण ५ अँधेरा ६ बादल ७ हवा॥

सुर समाज कतहूँ नहिं देखा ❀ चलेहु सुबाहु काल जनु भेखा
खल सँभारु गहु शूल मुरारी ❀ अस कहि गदा कोप उर मारी
सहि न सका सोइ तेज अपारा ❀ मूर्च्छित अवनि परा विकरारा
निज पति विकल देखि भट भारी ❀ धाये बहु कर शस्त्र सँभारी
कैटभ नाम वीर बलवाना ❀ मूर्च्छित लवणासुर मन जाना
तीन सहस्र लिये रण गाढ़े ❀ आइ सुबाहु सामुहे ठाढ़े
कटुक वचन कहि छाँड़ेसि बाना ❀ तिन काटे सुबाहु बलवाना
तब खिसियान शूल ले धावा ❀ यूपकेतु के सन्मुख आवा

सो० मारेसि हृदय सँभारि, गिरे जपत करुणायतन।
मूर्च्छित बेर पुकारि, रामचन्द्रदिनमणितिलक॥

मूर्च्छित बंधु सुबाहु बिलोकी ❀ भै रिस अमित रहै नहिं रोकी
कठिन बाण कर क्रोध अपारा ❀ छाँड़ेउ तीनि सहस्र इक बारा
ताहि बिकल करि अनुज समीपा ❀ आतुर आये निजकुल दीपा
लागो बाण तासु उरमाहीं ❀ पर्‍यो अवनितल सुधि कछु नाहीं
खैंच शूल उर बाहर कीन्हा ❀ राम नाम वर ओषधि दीन्हा
उठि शुचि अंग अनुज के संगा ❀ लीन्ह बिहँसि धनुबाण निषंगा
आय समरमहि सुभट प्रचारा ❀ बाणते विपुल देव अरि मारा
मूर्च्छा गत कैटभ बलवाना ❀ रथ चढ़ाय तिहिं तुरत सिधाना

दो० कर उपाय रथ राखि तेहि, पठै भवन रणधीर।
आय समर गर्जत भयो, संग महाबल वीर॥

जागा कैटभ पुनि घर जाई ❀ आयो कुमक संग निज भाई
शूरवीर जेहि काल सकाई ❀ हारेउ समर सुनहु खगराई
नायउ माथ आनि कर जोरी ❀ तात समर रुचि पूजेउ मोरी

१ कठोर २ देखकर ३ बेचैन ४ रणभूमि ॥

रावण रिपु लघु भ्राता जानू ❀ तनय तासु बलरूप निधानू
कोटिन शूर समर हम मारे ❀ बालक नृपति निरखि हिय हारे
रिपुगुण सुनि करि उर अति दापू[१] ❀ कह्यो करहु जनि हृदय बिलापू
रवितनया महि सैन्यहि डारूँ ❀ तनय अनुज समेत रिपु मारूँ

छं० रिपु अनुज मारूँ सैन यमुनहि डार नृप शिरनायऊ।
तज सोच सैन सँभार चल भट वेगि जो अरिपायऊ॥
दोउ मत्त गर्व विशाल निशिचर आयरणगर्जतभये।
इत यूपकेतु सुबाहु शर धनु हाथ लै आतुर[२] गये॥
भटभिरेनिजनिजजयतिकहनिजजानजोरीसमरकी
शिरकटतखंडनचरणयोगिनिखातबालकबालकी॥
हठिगीधजंबुक[३]काकशोणितपिवहिंअतिसुखपावहीं
बहु दान देहिं अनेक मनमहँ बिहँसि मंगल गावहीं॥

दो० भिरे शूर सहरोष अति, फिरे आकरे क्रूर।
लागे लोहे रूप रहे, समर धीर वर शूर॥

कहहिं शूर किमि होन न ठाढ़े ❀ फिरे लजाय क्रोध कर गाढ़े
भिरे प्रचार सुभट समुदाई ❀ भयो युद्ध तेहि वरणि न जाई
वर्षहिं समर शूर शर कैसे ❀ प्राविट[४] समय जलद[५] जल जैसे
हय पग उठे धूर नभ छाई ❀ भयो प्रदोष[६] सुनहु खगराई
समर देखि रिपु प्रबल प्रभाये ❀ प्रभु समीप सादर सुत आये
देखि तनय बल विपुल विशाला ❀ रिपुहन हर्ष मनुज सुर व्याला
यातुधान[७] बल बुद्धि गँवाई ❀ निजपुर गये राज यश पाई
निशि निशिचर सब बात बिचारी ❀ होत प्रात पुनि लाग गुहारी

१ घमंड २ व्याकुल ३ सियार ४ बरसात ५ बादल ६ हलका अँधेरा ७ राक्षस॥

दो० साजि बाजि गज बाहनहिं, गह गह हने निशान ।
आयो समर सकोप अति, लवणासुर बलवान ॥

शिवहिं सुमिरि लै शूल विशाला ❀ रिपु बल पस्यो मनहुँ यमकाला
च्चणक माहिं मारे बहु योधा ❀ चलो सकोप अनुज करि क्रोधा
आवत शूल हन्यो प्रभु छाती ❀ गिरे घूर्मि अवनी रिपुघाती
मूर्च्छित देखि खड्ग लै धावा ❀ निरखि सुबाहु क्रोध उर छावा
प्रबल गदा रथ सारथि भंजा ❀ बिहँसि महाबल रिपु दल गंजा
रथविहीन व्याकुल मन माहीं ❀ मूर्च्छित पस्यो अवनि सुधि नाहीं
पुनि उठि गर्जि सकोप सुरारी ❀ अस्त्र सँभारि क्रोध करि भारी
उठे शत्रुहन मन अनुमाने ❀ सादर सब हिय ते सनमाने
विस्मित[1] विकल देव सब जाने ❀ राम बाण अति सादर ताने

दो० सुमिरि अवधपतिचरणयुग, छाँड़े युग नाराच[2] ।
परेउ अवनि तनु भिन्न ह्वै, व्याकुलविकट[3]पिशाच ॥

तासु मरण सुनि सब सुरयूथा ❀ चढ़ि विमान नभ सकल वरूथा[4]
बाजहिं दुंदुभि वर्षहिं फूला ❀ आज नाथ बीते सब शूला
जय जय धुनि सब देव सुकरहीं ❀ वेद मंत्र पढ़ि आशिष वरहीं
यातुधान पति दीन विलोकी ❀ कैटभ पुनि रिस सक्यो न रोकी
करि किलकार गर्जि अति घोरा ❀ शिला एक लै आयहु जोरा
शर शत शैल सुबाहु प्रचारी ❀ काटी दुष्ट भुजा महि डारी
वदन पसारि ताहि तक धावा ❀ देव सुबाहु प्रबल पहँ आवा
खैंचि धनुष पुनि श्रवण[5] प्रयंता ❀ छोड़्यो बाण सुबाहु तुरंता
काटि शीश तिहिं भूमि गिरावा ❀ सुनासीर आतुर[6] चलि आवा
जोरि युगल कर अति अनुरागे ❀ बोले वचन प्रेम रसपागे

१ चकित २ बाण ३ भयंकर ४ समूह ५ कान ६ व्याकुल ॥

हमहिं सहित सुर कीन्ह सनाथा ❀ अस्तुतियोग नाहिं हम ताता
अस्तुति विनय शक्र पुनि कीन्ही ❀ बार बार बहु आशिष दीन्ही

दो० देवन सहित सु देवगुरु, आये जहँ मख धाम।
समाचार सादर सकल, कहे सबन के नाम॥

तहँ युग नगर रचे अति रूरे ❀ राखे तनय युगल बलपूरे
मथुरा नाम जगत यश जाना ❀ दूसर विश्व जो वेद बखाना
ज्येष्ठ तनय बल बुद्धि विशाला ❀ नाम सुबाहु विदित महिपाला
राखेउ यमुना तट बल भूरी ❀ विश्व नगर पश्चिम दिशि दूरी
यूपकेतु पुनि साथ रखावा ❀ राजनीति दोउ सुत समुझावा
सौंपि नगर बहु आशिष दीनी ❀ नृपमणि गवन विजयकहँ कीनी
चिरंजीव करि हन्यो निशाना ❀ दक्षिण अश्व चला जग जाना
सचिव समेत राखि सुतसंगा ❀ उतरे सब जल यमुन तरंगा

दो० रवितनया कहँ बंदिकै, चली अनी हय संग।
हर्षित शूर समूह अति, देखि सैन्य चतुरंग॥

बाल्मीकि थल सैन्य समेता ❀ कानन[2] घन गे कृपानिकेता
सिय सुत युगल वीर बरबंडा[3] ❀ भुजबल अमित दिनेश[4] प्रचण्डा
वीर बली हय देख्यो आई ❀ पत्र बँध्यो शिर बाँच्यो ताई
घोड़ा तिन तुरंत तरु बाँध्यो ❀ नेकु विचार न उर में साध्यो
कटि[5] कसि त्रोण हाथ धनु तीरा ❀ समर हेतु उमगे बलवीरा
शूर सहस्र साठि हय साथा ❀ आय गये जहँ रघुकुलनाथा
तरु[6] तर बाँध्यो बाजि बिलोकी ❀ बालक जानि सकल रिसरोकी
देहु तुरँग घर जाहु सुहाये ❀ धन्य मातुपितु जिन तुम जाये
माँगहु भीख समर चढ़ि भाई ❀ क्षत्रिय कुलहिं कलंक लगाई

१ सुंदर २ वन ३ पराक्रमी ४ सूर्य ५ कमर ६ पेड़ ७ घोड़ा॥

छं० जनि क्षत्रिकुलहिं कलंक लावहु समरशूर सुहावने।
बलहीन तुरँग प्रवीन छांड्यो धरा[1] बिनु भट[2] जानने॥
मुनिवचनकटुकंक[3]कठोर बालक जानिभटधावत भये।
शर तानि एकहिंबार लव हँसि हने तनु जर्जर[4] भये॥
महिपरे पुनि कछु फिरे योधा जाय रिपुहन सों कहा।
मुनिबाल हति संग्राम सैन्यहिं बाजिलै रणमहँ रहा॥
सुनि कोप करि अतिशत्रुहन तब सैन्यलै धावत भयो
रणमाहिं गाजत वीर बांके कोप लखि लज्जित भयो॥
सो० सुन मुनि बालमराल[5], देहु अश्व[6] तजि कोप निज।
पूजितुमहिंतेहिकाल, करिहहिं जन्म सफल प्रभु॥
कौन नाम नृप किहि पुरबासी ❀ फिरहु विपिन[7] सँगसैन्य प्रकासी
छाँड़उ वाजि हेतु किहि लागी ❀ लिख्यो पत्र बाँध्यो भय त्यागी
नहिं तव तनु बल पौरुष भाई ❀ छोड़हु पत्र वाजि गृह जाई
सुनि रिपुहन कटु गिरा लजाने ❀ गहहु अस्त्र अस कहि मुसकाने
हमहिं प्रचारत नृप बल भारी ❀ डरहिं सिंह बाजते तारी
अस कहि धनुष बाण कर लीना ❀ मुनिवर विनय चरण शिरदीना
मारेसि रथ सारथी तुरंगा ❀ कोटिन बाण हने सब अंगा
करि मूर्च्छित नृप कटक[8] सँहारा ❀ खाहिं मांस अति गीधकरारा
दो० एकहि एक प्रचार कर, हने सकल रण शूर।
आये तब रघुवीर पहँ, कायर करनी धूर॥
पूछेहु सकल भानुकुलनाथा ❀ रिपु के सबन कहे गुणगाथा
मुनि बालक दोउ सेन सँहारा ❀ रिपुहन आदि समर महँ डारा

१ पृथ्वी २ योद्धा ३ तोता ४ शिथिल ५ हंस ६ घोड़ा ७ वन ८ सेना॥

रिपु बालक सुनि विकल खरारी ❀ विकल होय पुनि कहेउ पुकारी
लक्ष्मण संग जाउ दोउ भाई ❀ मुनि बालक बाँध्यो बरियाई
मारहु जनि आनहु पुरमाहीं ❀ ऋषिसुत बधन उचित नहिं काहीं
चल्यो शेष सँग सैन्य अपारा ❀ आयउ तुरत समर जेहि मारा
लै घर जीव जाहु मुनि बालक ❀ दिनंकर वंश देव द्विज पालक
आँखिन ओट होहु अब ताता ❀ लखि अतिकोप बढ़त मम गाता

दो० सुनि लक्ष्मण के वचन तब, बिहँसे बालक वीर।
अनुज बिलोकहु जाय अब, प्रबल महा रणधीर॥

अनुज बिलोकि वचन सुनि काना ❀ धनुष चढ़ाय गहे कर बाना
वेष विलोकि बाल मुनि जाना ❀ निजकुल समुझि करौं मन काना
निज सहाय शठ[2] आन बुलाई ❀ केवल तोहिं हते न भलाई
सुनि कुश कठिन बाण संधाने ❀ काँपी पुहुमि शेष अकुलाने
छूटे विशिख रहे नभ छाई ❀ बाण भानु प्रतिबिंब छिपाई
रिपुहिं प्रबल लखि चल्यो सकोपी ❀ डरा न मनहिं रहा रथ रोपी
काटे विशिख विशिखमन भाई ❀ कौतुक करहिं विविध खगराई
झपटि गदा लक्ष्मण तब झारी ❀ गिस्यो भूमि कुश मूर्च्छित भारी

दो० मूर्च्छितकुशहिंनिहारिकरि, धाये लव करि शोर।
आवतही शर उर हन्यो, गिस्यो न महिबल जोर॥

मल्लयुद्ध दोउ भिरे प्रचारी ❀ लरहिं सुखेन[4] न मानत हारी
भिरहिं उपाय विपुल बल करहीं ❀ गिरतहिं धरणि बहुरि उठि लरहीं
विकल सैन्य सब भानु सँहारी ❀ सुमिर कोशलाधीश खरारी
मास्यो बाण लवहिं क्षिति डारा ❀ मूर्च्छित होय गिस्यो विकरारा
सुमिरि सीय मुनि चरण सुहाये ❀ गत मूर्च्छा कुश आतुर आये

१ सूर्य २ दुष्ट, मूढ़ ३ सूर्य ४ सुख से ५ पृथ्वी ६ व्याकुल ॥

विकल विलोकि बन्धु लघु जानी ❀ चल्यो वीर मन बहुत गलानी
लक्ष्मण देखि वीरवर आये ❀ धनुष बाण धरि आगे आये
शत्रुजीत अरि जे शर[1] मार्‍यो ❀ ते सब बालक काटि निवार्‍यो

दो० रामानुज विस्मित विकल, देखि सबल आराति[2]।
सीय त्याग उर शोच बड़, प्राण देन वर भाँति॥

कुश करि क्रोध विशिख सो लीने ❀ मंत्र प्रेरि मुनिवर जो दीने
नाक[3] रसातल भूतल माहीं ❀ यह शर छुटे बचै कोउ नाहीं
मोहन अस्त्र नाम तेहि जानो ❀ विष्णु महेश ब्रह्म जेहि मानो
मारेसि ताकि शेष उर माहीं ❀ परे धरणितल सुधि कछु नाहीं
चली सैन्य सब भागि अपारा ❀ कोशलपुर महँ जाय पुकारा
करनी सकल युद्ध की बरणी ❀ लक्ष्मण वीर परे जिमि धरणी
जेहि विधि कटक सकल संहारा ❀ निज लोचन हम नाथ निहारा
वयकिशोर[4] दोउ बाल अनूपा[5] ❀ तव प्रतिबिंब मनहुँ सुरभूपा
काकपक्ष शिर धरे बनाई ❀ बालक वीर वरणि नहिं जाई

दो० भरत जोरि कर कह्यो तब, वचन अमित बिलखाय।
सीयत्यागफल दीनविधि, प्रभु कहि देखहु जाय॥

अनुज समर महँ तुम हियहारे ❀ साजहु हय गज रथ मतवारे
रहो यज्ञ रिपु देखहु जाई ❀ बालक रावण के दुखदाई
तीव्र वचन सुनि भरत लजाने ❀ बहुत भाँति रघुपति सन्माने
जाम्बवन्त कपिराज विभीषण ❀ द्विविद मयंद नीलनल भूषण
प्रथम सखा सब लिये बुलाई ❀ हनुमदादि अंगद समुदाई
रिपुहिं मारिकै समर भगाई ❀ तात अनुज दोउ आनहु जाई
माथ नाय सँग कटक विशाला ❀ चले भरत उर उपजी ज्वाला

१ बाण २ शत्रु ३ स्वर्ग ४ थोड़ी अवस्था के ५ बेजोड़॥

शोणित सरिता समर बिलोकी ❀ डरप्यो वीर आश रण रोकी

दो० समर सीय दोउ वीरवर, आय गये बलवान।
देखि डरे कपि भालु सब, तब बोलेउ हनुमान॥

धन्य मातु पितु जेहिं तुम जांये[1] ❀ पुरुष युगल घर जाहु सुहाये
समर बिमुख सुन भट बिलखाने ❀ हनुमत प्रति बोले रिस ठाने
नहिं बल होय जाहु घर भाई ❀ हतौं न खेत जो रण कदराई[2]
भाषे वचन भरत सुनि काना ❀ लेहु सँभारि बाल धनु बाना
कटकटाय कपि[3] भालु समूहा ❀ लीन्ह उपार प्रबल तरु जूहा
एकहि बार सकल तिन मारा ❀ लव काटहिं तिल सम करिडारा
रिपु शर काटि निमिष[4] एक माहीं ❀ यथा मनोरथ खल मिटि जाहीं
कर लव क्रोध बाण फटकारे ❀ मारे वीर भूमि च्चण डारे

छं० पलभषहिं कंककराल जहँतहँ गीधसबप्रमुदितभये।
तहँ प्रेत सिद्ध समाज सोहत ब्याह प्रति मंगल ठये॥
तहँ डाकिनी मन मुँदित[5] डोलहिं शाकिनी शोणितभरी।
दोउ करन खैंचहिं कालिका शिवगण करत क्रीडाखरी॥
अन्तावरी गहि गर लपेटहिं पिबत शोणित आतुरे।
गज खाल खैंचहिं भूत शंकर प्रेत संगर चातुरे॥
वैताल वीर करा॑ल[6] करवँर[7] करीकर[8] इक कर[9] धरे।
वै भार रुधिर प्रवाह पूरण पान करत हरे हरे॥

दो० विषम युद्ध दोउ बंधु करि, जीते कपि संग्राम।
आयउ पुनि तहँ नृप भरत, समर विधाता वाम॥

कपि भालुहि घायल सब आवहिं ❀ बाण त्रास मन अति दुख पावहिं

---

१ जनमाया २ कायरता ३ बंदर ४ पल ५ प्रसन्नता ६ भयंकर ७ बड़े हाथी ८ सूँड़ ९ हाथ॥

जाम्बवन्त कपिराज बुलाये ❁ अंगद हनूमान सुन आये
सब मिलि सहित निशाचरराजा ❁ धरि आनहु दोउ बालसमाजा
आय जुटे कपि भालु भवानी ❁ तिन कछु प्रभु महिमा नहिं जानी
बोले कुश सुन बालिकुमारा ❁ तुव बल विदित जान संसारा
पितहिं मराय मातु पर हेली ❁ सकल लाज आये तुम पेली
सो फल लेहु समर महँ आजू ❁ त्यागहु सकल कलंक समाजू
सुनत क्रोध अंगद उर छावा ❁ गहि गिरि[१] एक ताहि पर धावा

दो० आवत शैलविशाल लखि, तिलसमशरहतिकीन।
जस अंगद बल गर्व अति, तस फल रघुपति दीन॥

तमकि ताहि कुश बाण चलावा ❁ अंगद नील अकाश उड़ावा
आवत जानि पुहुमि कपि भारी ❁ मारे बाण प्रचारि प्रचारी
इत उत जान कतहुँ नहिं पावै ❁ पवन बहै जिमि[२] महि नहिं आवै
क्षण अकाश क्षण भूतल ओरा ❁ बोलेउ शरण नाथ अस तोरा
रहेउ गर्व[३] हम कहँ भगवाना ❁ अगे जग नाथ न हम पहिचाना
पाँच बाण बेधेउ कपि दोऊ ❁ दीन जानि त्यागेउ हँसि सोऊ
भिरे भरत के सन्मुख जाई ❁ दशा देखि कपि दिशा भुलाई
जाम्बवन्त हनुमान कपीशा ❁ धाये तरुगिरि ले बहु कीशा[५]

दो० हँसे कुँवर कुश देखि कपि, अनुजहिं कहेउ बुझाय।
आजसमरजितिहहुँभरत, भालुकपिन बिलगाय॥

प्रभुसुत समर कीन्ह जस करणी ❁ निगम[६] शेष शारद नहिं बरणी
चरित तासु सुनु शैलकुमारी ❁ मारेहु समर शूर कपि भारी
समर धीर दोउ बाल बिराजे ❁ निरखि भालु कपि मन अति लाजे
ऐंचि धनुषगुण छाँड़ेउ सायक[८] ❁ कपिपति आदि हने कपिनायक

१ पहाड़ २ जैसे ३ अभिमान ४ अचल ५ बन्दर ६ वेद ७ पार्वतीजी ८ बाण॥

मूर्च्छित सैन परी महि माहीं ❀ नहिं कोउ कपि घायल जो नाहीं
देखि भरत सब सैन निपाती[1] ❀ कोपि[2] बाण मारेउ लव छाती
मूर्च्छित विकल परेउ महि माहीं ❀ अति अचेत तनु[3] की सुधि नाहीं
दुखित देखि कुश अमित रिसाना ❀ चाप चढ़ाय बाण संधाना
श्रवण[4] प्रयंत खैंचि धनु बीरा ❀ भरत हृदय मारेउ शत तीरा
भयो युद्ध तहँ विविध प्रकारा ❀ वीर बाँकुरे सुभट अपारा

दो० समरभूमि सोये भरत, लवहिं लीन उर लाय।
सुमिरि मातु गुरुचरणयुग, रहे समर जय पाय॥

आये खबर लेन चर चारी ❀ भरत सैन्य तिन सकल निहारी
शोणित सरिता देखि डराने ❀ हय गज बहे जात रथ जाने
देखी सरित भयंकर भारी ❀ कठिन कराल सुनहु उरगारी[5]
बहुतक उछरि बूड़ि पुनि जाई ❀ चर्म मनहु कच्छप की नाईं
महातरंग बीर बह जाहीं ❀ घायल पैर तीर लपटाहीं
फिरे दूत कोशलपुर आये ❀ समाचार सब राम सुनाये
चरवर वचन सुनत दुख पावा ❀ त्यागेउ मख निज[6] कटक बनावा
चले सकोप कृपालु उदारा ❀ आये जहँ प्रभु कटक सँहारा
मुनिवर बालक देख सुहाये ❀ शिर नवाय प्रभु निकट बुलाये

दो० पूछेउ बाल बुलाय दोउ, कहहु मातु पितु नाम।
देश ग्राम निज कहहु सब, बड़ जीतेहु संग्राम॥

गहहु अस्त्र जनि कहहु कहानी ❀ पूछहु नाम गाँव कह जानी
समर बात बहु अति कदराई ❀ छाँड़ि सोच अब करहु लराई
वंश नाम बिनु पूछेहु ताता ❀ हतौं न बाण मनोहर गाता
माता सीय जनक की जाता[7] ❀ बाल्मीकि पाल्यो मुनि ताता

१ नाश हुआ २ क्रोधित हो ३ शरीर ४ कान ५ गरुड़जी ६ अपना ७ पुत्री॥

पितावंश नहिं जानहिं आजू ❀ लव-कुश नाम सुनहु रघुराजू
सुनि सब कथा राखि मनमाहीं ❀ बाल विलोकि बधब भल नाहीं
आवत सुभट समूह हमारे ❀ लरिहहिं तुमसन समर मुखारे
अस कहि अंगद नील उठावा ❀ जाम्बवन्त कपिपतिहिं बुलावा

छं० कपिराज अंगद जाम्बवानहिं बोलि निशिचरनायकं।
हनुमान द्विविद मयंद नीलहि सुभट जे अति लायकं॥
तब हरण शूलहि पाप नाशन कह्यो हँसि रघुनंदनं।
भरतादि रिपुहन सहित लक्ष्मण परे खल मंद गंजनं॥
लंकेश आदिक सुभट मारे बीर जे महिमंडनं।
ते आज बालक विप्र[2] सों रण परे रिपु मद गंजनं॥
कुलकान अब निज जान लरहु सो शैल तरु बहु लै चले।
दै हूह वानर जूह पर्वत डारि पुनि रण मुरि चले॥

दो० सावधान धनु बाण लै, धायउ लव बलवान।
सम्मुख आनि विभीषणहिं, बोलेउ बहुरि रिसान॥

सुन शठ बंधुहि समर जुझाई ❀ शत्रुहिं मिलेउ निपट[3] कदराई
पिता समान बंधु बड़ तोरा ❀ त्रिया तासु लै घर बरजोरा
पापी मातु कह्यो कइ बारा ❀ सो पत्नी यह धर्म तुम्हारा
बूड़ मरहु सागर[4] महँ जाई ❀ मर गर काटि अधम[5] अन्याई
समरभूमि मम सन्मुख आवा ❀ लाज होत नहिं गाल बजावा
आँखिन आगे ते हटि जाई ❀ नहिं तौ मृत्यु निकट चलि आई
सुनि खिसियान गदा तेहि लीनी ❀ शर हति खंड खंड लव कीनी
सप्त बाण मारेउ करि क्रोधा ❀ गिरेउ धरणि शर लागत योधा

१ घमंड २ ब्राह्मण ३ बिलकुल ४ समुद्र ५ नीच॥

गिरत कोप करि शूल चलाया ❁ लव तनु तड़ितं[1] समान समाया

दो० दूरि शूल करि बन्धु दोउ, शर मारेउ पुनि दापं[2]।
जाम्बवन्त कपिराज नल, अंगद करहिं विलाप ॥

जो गिरि तरु कपि डारहिं आई ❁ रजं[3] समान तेहि देहिं उड़ाई
निज बाणन कपि घायल कीने ❁ जो जेहि उचित सुतस फल दीने
रघुकुल तिलक प्रचारति पाछे ❁ वीर धुरीणं[4] हते सब आछे
अंगद हनूमान भट भारी ❁ ते धाये तरु शैल उपारी
डारि शैल दोउ भिरे रिसाई ❁ खड्गन हने वीर बरिआई
कपिन कोप करि उर हत तेहीं ❁ जिमि खग मशक चोटगज देहीं
हति दोनों कपि भूमि गिराये ❁ जाम्बवन्त कपिपति पहँ आये
इहि तनु कोटिक समर लड़ाई ❁ जीते लड़े बहुत हम भाई

दो० ये बालक त्रिभुवन बली, जीत सके नहिं कोय।
चलहु प्राण दीजिय समर, अमरजगतनहिंकोय॥

आये भालु बली भट नाना ❁ तानि शरासनं[5] शर संधाना
हृदय तानि लव मारेउ शायक ❁ योजन सात गयो कपिनायक
धाय भालु कपि कोप बढ़ाई ❁ मल्ल युद्ध कुश कीन्ह बनाई
निज बल भालुहि अवनि पछारा ❁ दोउ कर चरण बाँधि विकरारा
हनुमन्तहिं बाँधेउ पुनि जाई ❁ राखेउ निकट अश्व थल आई
रखवारी छाँड़ेउ लव वीरा ❁ आप चल्यो रघुनायक तीरा
देखेउ रथ पर श्रीपति सोये ❁ फिरेउ वीर निज लाज बिगोये
सुभट अस्त्र पट भूषण नाना ❁ चले अश्व धरि लै हनुमाना

छं० शुभअस्त्रपटं[6]भूषणसुमर्कट ऋच्छं[7] सँग हय घर चले।
सिय निकट नायो माथ दोउ सुत भेट भूषण जे भले॥

---

१ बिजली २ क्रोध ३ धूल ४ धुरंधर ५ धनुष ६ वस्त्र ७ भालु ॥

पहिंचानि कपिदोउनिरखिभूषणसहमिसियधरणीपरी।
इहिबीच मुनिवर सदन आये सियहिं अतिबिनतीकरी॥
हनुमान भालुहिं छोड़ि देगहिं त्यागि बहु समभायऊ।
रिपुदमन लछिमन सहित भरतहिं रामसमर सुवायऊ॥
सुत कीन्ह कर्म कलंक कुल महँ मोहिं विधिविधवा करी।
तजि सोच चंदन अगॅर आनहु जाउँ पिय सँग अबजरी॥
मुनि धीर जानकि देइ लव कुश संग लै सादर चले।
रण देखि बालक चरित देखत बिहँसि मन प्रमुदित भले॥
रथ देखि हय पहिंचानि प्रभु कहँ जाय मुनि आगे भये।
उठि बैठु कोशलनाथ आरत तनय तव आगे छये॥

सो० सुनि मुनिवर वर बैन, जागे रघुपति भयहरन।
बिहँसि उघारे नैन, लीन्हें हृदय लगाय मुनि॥

प्रभुहिं देखि मुनि अति हर्षाने ❀ बार बार निज भाग्य बखाने
जेहि विधि शेष सीय वन आनी ❀ मुनिवर सो सब कथा बखानी
लवकुश कथा सकल मुनि भाखी ❀ शिव विरंचि[4] सूरज करि साखी
मिले तनय दोउ हृदय लगाई ❀ सुधावर्ष सुर सैन्य जियाई
भरत आदि जागे सब भ्राता ❀ लक्ष्मण चले जहाँ सिय माता
बहुरि[5] राम लक्ष्मणहि बुलाई ❀ सुनहु तात अस वचन सुनाई
ऐसे वचन मानि मम[6] भाई ❀ सिय सन सपथ लेहु तुम जाई
लक्ष्मण जाय शीश सिय नावा ❀ कुशल कही बहु विधि समुभावा
हरि इच्छा सियमन अस आवा ❀ शेष सहस फणि आनि दिखावा

दो० जटित मणिन सिंहासनहिं, सादर[7] सीय चढ़ाय।

१ घर २ एक सुगंधित लकड़ी ३ प्रसन्न ४ ब्रह्मा ५ फिर ६ मेरा ७ आदर के साथ॥

भये अलोप पतालमहँ, महिमा किमि कहि जाय॥

लक्ष्मण चरित देख सब ठाढ़े ❀ नयन प्रवाह चले अति गाढ़े
सकल चरित सुनि कृपानिधाना ❀ चलन हमार सीय मन जाना
तनय सहित निजपुर प्रभु आये ❀ दान दीन शुभ यज्ञ कराये
जेहि जेहि विधि सुर आयसु[1] दीने ❀ कोटिकोटि विधि सोइ प्रभु कीने
कोटिक धेनु धाम धन धरणी ❀ दीन कृपानिधि सक को वरणी
भोजन विविध भाँति करवाये ❀ बिदा कीन्ह मुनि वृंद[2] बुलाये
जनकहिं पूजि बिदा प्रभु कीना ❀ सुत प्रभु पूजि पयोदक[3] लीना
आये जनक गुरुहिं पहुँचाई ❀ बैठे प्रभु महिदेव बुलाई

दो॰ लक्ष लक्ष वर धेनु धन, पूजि पूजि द्विज पाय।
एक एक विप्रन दई, हर्षित कौशलराय॥

गे सब मुनि सज्जन निज धामा ❀ पायो अमित अमित सुख रामा
पुरवासी आये सब भारी ❀ सुनहिं पुराण अनंद सुखारी
जे जड़ चेतन जीव घनेरे ❀ सचराचर कौशलपुर केरे
तिन सुख बढ़त सुनत सुरराया ❀ करहिं विनोद विहाय[4] अमाया[5]
इहि विधि विपुल काल चलि गयऊ ❀ निज पुर गमन सो अवसर भयऊ
बीती अवधि ब्रह्म तब जानी ❀ नारद मुनिसन कहा बखानी
निज पुर आवन कहहिं खरारी ❀ धर्मराज कहँ करहु हँकारी
बिनती बहु विरंचि तब भाखी ❀ चलेउ धर्म रघुपति उर राखी

दो॰ आयउ यम रघुवीरपुर, मुनिवर वेष बनाय।
तेजपुंज[6] सुंदर तरुण, कटि मृग त्वचा सुहाय॥

द्वारपाल लक्ष्मण कहँ जानी ❀ बोलेउ तापस अति मृदु बानी
तुरत शेष तब खबर जनाई ❀ सुनत वचन आये रघुराई

१ आज्ञा २ समूह ३ चरणोदक ४ छोड़कर ५ कठोरता ६ तेज का समूह॥

मुनिहिं निरखि प्रभु कीन्ह प्रणामा ❀ सादर उचित कहेउ श्रीरामा
अर्घ्य दीन्ह आसन बैठारी ❀ मुनिवर सुंदर गिरा[1] उचारी
सुनु सर्वज्ञ[2] कृपालु दिनेशा ❀ आयउँ मैं मुनिवर के वेषा
हम तुम रहैं और ना कोई ❀ तिसरे सुनत नाश तेहि होई
सुनै शब्द तेहि देउँ शरापू ❀ विधि[3] हरि हर आवैं जो आपू
सुनहु लषण चलि बैठहु द्वारे ❀ ना कोउ आव न गिरा उचारे
इतनेउ पर आवै पुनि कोई ❀ मरहि सत्य यह वृथा[4] न होई

दो० बोलेउ तापस वचन मृदु, पाहि पाहि रघुनाथ।
कहा सकल इतिहास मुनि, कहि पुनि नायो माथ॥

प्रभु इच्छा भावी बलवाना ❀ दुर्बासा मुनि आय तुलाना
मुनिहिं देखि लक्ष्मण चलि आगे ❀ गये निकट बिनती अनुरागे
पूछेउ मुनि कहँ रघुकुल ईसा ❀ जाउँ तहाँ मैं सुनहु अहीसा
जो उत्तर प्रति करि हौ आजू ❀ भस्म करौं तव[5] घर पुर राजू
कंपेउ लषण सुनत मुनि बानी ❀ निज बध जान सो चलेउ भवानी
दोउ करजोर कहे प्रभु सनहीं ❀ दुर्बासा मुनि आवन चहहीं
बड़ अपराध कीन्ह तुम भारी ❀ काल कर्म गति टरै न टारी
कीन्ह वचन दिनकर[6] कुलकेतू ❀ सुनहु खगेश कथा कर हेतू

दो० तुरत कहेउ मुनि आनहू, सादर कृपानिधान।
चलहु वेगि मुनि तुरत अब, कहा राम भगवान॥

छं० अतितेजपुंजविलोकिप्रमुदितउचितउठिआसनदियो
जल आनि सादर चरण धोये सुभग पादोदक लियो॥
जन जानि मुनिवर देहु आयसु वेगि सो सादर करौं।
बहु काल क्षुधित कृपायतन अब अशन[7] बिन भूखो मरौं॥

१ वचन २ सब कुछ जाननेवाले ३ ब्रह्मा ४ झूठ ५ तुम्हारा ६ सूर्य ७ अन्न ॥

मन भाव भोजन दीन रघुपति बहुत विधि बिनती करी ।
संतोष पाय मुनीश अस्तुति करि विनय आशिष भरी॥
करि बिदा मुनिवर देखि लक्ष्मण हृदय दारुण दुख भये ।
भरतादि अनुज समेत पुरजन ताहि छिन देखत भये ॥
पद बंदि ठाढ़े जोरि दोउ कर बदन लखि अति कंपहीं ।
भरि नयन पंकज नीर आरत[2] भरत सन प्रभु सब कहीं ॥
अब गुरुहिं आनहु वेगि सादर दुखित अति आतुर गये ।
सब कथा गुरुहिं सुनाय आतुर यान[3] चढ़ि आवत भये ॥
आये वशिष्ठ विलोकि रघुपति विकल उठि चरणन परे ।
संवाद सुनि मुनि समय जान्यो त्यागि हैं हमको हरे ॥
सुनि वचन शेष विचार निज उर राम बिन धिकजीवना ।
गहि चरण सरयू तीर आये देखि जल शुभ पीवना ॥

दो० कटि प्रमाण जल मध्य में, कीनो ध्यान अखंड ।
योग यत्न[5] करि राम कहि, फोर्यो निज ब्रह्मांड ॥
रामधाम पहुँचे तुरत, लषण चतुर्थम भाग ।
सुनि व्याकुल रघुपति भरत, मिटेउ सकल अनुराग ॥

मैं नहिं तज्यों तज्यो मोहिं ताता ❀ अब करु यत्न सो देखहुँ भ्राता
करहु भरत पुरजन्म सुखारी ❀ सुनत गिरेउ महि व्याकुल भारी
चलन चहत अब प्राण गुसाईं ❀ प्रभु लक्ष्मण बिन रहि न सकाईं
तात चलहु कहि तनय बुलाये ❀ कीन्ह तिलक बहु नीति सिखाये
भरत तनय सुतक्ष वै नामा ❀ दक्षिण नगर दीन्ह तेहि रामा

१ कठिन २ दुःख से ३ रथ, विमान आदि सवारी ४ पकड़कर ५ उपाय ॥

दूसर पुष्कल जेहि जग जाना ❀ पुहकर नगर दीन्ह भगवाना
चित्रकेतु अंगद रणधीरा ❀ लक्ष्मण तनय सुभट गंभीरा

दो० पश्चिमदिशा पिशाच बहु, जीति हते संग्राम।
तहँ राखे सुत सरिस दोउ, बिलगबिलगकहिनाम॥

अवध नृपति कुश कीन्ह बहोरी[1] ❀ सिखय नीति पुनि कह्यो निहोरी
भ्रातन पर सुत दया करेहू ❀ राजनीति उर माँहि धरेहू
उत्तर नगर सुउत्तर दूरी ❀ सुख सम्पदा जहाँ अति रूरी
लव कहँ दीन्ह कृपानिधि सोई ❀ पटतरि अवध नगर नहिं कोई
आठ सहस रथ तुरँग पचासा ❀ दश सहस्र गजमत्त[2] बिलासा
लजहिं इन्द्रगज तिनहिं बिलोकी ❀ दिगपालन निज प्रभुता रोकी
शक्र[3] कुबेर देखि सकुचाने ❀ तिनकी महिमा कौन बखाने
इक इक सुतन दीन रघुराया ❀ बरणि को सकै सुनहु खगराया
धनँद[4] कोटि सम भरे भँडारा ❀ यथायोग्य करि भाग उदारा

दो० सकल तनय परितोष करि, बिदा कीन्ह रघुबीर।
बिप्र वृंद याचक सकल, लिये बोलि मतिधीर॥

धेनु बसन धरती धन धामा ❀ दिये द्विजन किय पूरण कामा
याचक सबै अवध के वासी ❀ बोले प्रभु सुन अज[5] अविनासी
हम भरि जन्म चरण अनुरागी ❀ अंतकाल अब होत अभागी
जो जन जान लेहु प्रभु साथा ❀ करहु कृपानिधि सकल सनाथा
सुनि सनेहमय वचन सुहाये ❀ चलहु कहेउ प्रभु अति सुख पाये
समय जानि कपिपति तहँ आवा ❀ अंगद राज दीन सुख पावा
जाम्बवंत लंकापति वीरा ❀ नल अरु नील द्विविद रणधीरा
कोटिन कीश जु सुअवतारी ❀ आये जहाँ कृपालु खरारी[6]

१ फिर २ मस्त हाथी ३ इंद्र ४ कुबेर ५ अजन्मा ६ भगवान्॥

सो० कह प्रभु सुन लंकेश, राज कल्पशत करहु तुम।
वचन अचल मम शेष, अंत अमरपुर गमन करु॥

जाम्बवन्त सुनु मम मृदु बानी ❀ रहु द्वापर भर अस जिय जानी
कृष्णरूप धरि मिलिहौं तोहीं ❀ समरभूमि तब जानेसि मोहीं
सब कहँ सब विधि धीरज दीन्हा ❀ आप गमन सरयू तट कीन्हा
दक्षिण भरत बाम रिपुदमनू ❀ पुरवासी सब निजकुल तरनू
अग्नि वेद गायत्री छन्दा ❀ धरि निज रूप चले सुर वृंदा
पीताम्बर पट सुन्दर धारी ❀ जड़ चेतन चर अचर सुखारी
अमर रूप धरि सुन्दर आई ❀ जस कछु कीन्ह सो सुनु खगराई
समय जानि तब पवनकुमारा[1] ❀ बोले वचन कृपा आगारा

दो० चिरंजीव सुत रहहु तुम, जब लगि रवि[2] शशि[3] शेश।
तुहिंसेवत मिटिहहिं सकल, दुस्तर कठिन कलेश॥

चतुरानन पहँ धर्म सिधाये ❀ सरयू तीर जगतपति आये
चले देव अज भव सनकादी ❀ जो मुनि परम अलौकि अनादी
कोटिन रथ वाहन विधिनाना ❀ अरुण[4] अकाश[5] न जाय बखाना
नभ पर जय जय जय धुनि होई ❀ पावहिं वर सुर याचहिं जोई
देखि नाकरथ मग परछाई ❀ जिमि गिरिक्रिमि[6] नभपंथ उड़ाई
करहिं परसि जल जो तनुधारी ❀ पाय चतुर्भुज रूप सुखारी
चढ़ि विमान प्रभु धाम सिधाये ❀ सकल अमरपति कहँ सकुचाये
सुमन[7] वृष्टि नभ होत अपारा ❀ होइ नाद[8] विधि वेद उचारा

छं० उच्चरित वेद प्रसन्न भरत कृपालु हँसि सादर लयो।
जल परसिकर रिपुदमन सादर पद्मवन राजत भयो॥
कपिआदि यूथप राखि उरप्रभु सकल निजनिजघरगये।

१ हनुमानजी २ सूर्य ३ चन्द्रमा ४ लाल ५ आकाश ६ टीड़ी ७ फूल ८ शब्द॥

सुग्रीव प्रभु पद वंदि बारहिं बार रविमंडल छये ॥
सुरसहित दिनकर वंशभूषण आय जलआश्रित रहे ।
तेहि समय बोलि अनादि प्रभुजू वचन पावनमय कहे॥
इक मास रहु तुम नीर यहँ ममपुरी जीव जु आवहीं ।
तेहु सुभंग[२] देहु विमान पद निर्वान[३] जो मम पावहीं ॥
अतिप्रीति सरयूसहित मज्जहिंममचरण रतिकरसदा ।
तरि जाय सुरपुर सकल सादर सुनहु ममवाणी मुदा[५]॥
जे जन्म भरि ममसंग कोशलपुर रहे निशिदिनसदा ।
तिन तुरत आनौ धाम मम सादर सुनहु वाणी मुदा ॥
कहि वचन अंतरध्यान प्रभु जिमिदामिनी[६] घन मेंधसे ।
नभ जयतिजयजयकार जयजयजयतिकरलैसुरलसे
इहि भाँति रघुपति सह चराचर लैगये निज धाम को ।
सो कह्यो उमहिं कृपायतन उर राखि सादर राम को ॥

दो० गिरिजा संत समागमहिं, समनलाभ कछु आनं ।
बिनु हरिकृपा न होय सो, गावहिं वेदपुरान ॥
इहिविधि सबसंवाद सुनि, प्रफुल्लित गरुड़ शरीर ।
बारबार तेहि चरण गहि, जानि दास रघुवीर ॥
तासु चरण शिरनाय करि, हृदय राखि रघुबीर ।
गयउ गरुड़ वैकुंठ तब, प्रेम सहित मति धीर ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने लवकुशकाण्डे
विमलवैराग्यसम्पादनोनाम अष्टमस्सोपानः ॥ ८ ॥

---

१ पवित्र २ सुंदर ३ मोक्ष ४ प्रीति ५ सुहावनी ६ बिजली ७ दूसरा ॥

अथ आरती श्रीरामायणजीकी ॥

आरति श्रीरामायणजी की * कीरति कलितललित सियपी की ॥
टेक ॥ गावत ब्रह्मादिकमुनिनारद * बालमीकि विज्ञान विशारद ॥
शुक सनकादि शेष अरु शारद * वरणि पवनसुत कीरति नीकी ॥१॥
सन्तत गावत शम्भु भवानी * औ घटसम्भव मुनिवर ज्ञानी ॥
व्यास आदि कविपुङ्ग बखानी * काकभुशुण्डि गरुड़ के हिय की ॥२॥
चारिउ वेद पुराण अष्टदस * छइउ शास्त्र सब ग्रन्थन को रस ॥
तन मन धन सन्तन को सर्वस * सार अंश सम्मत सबही की ॥३॥
कलिमल हरणि विषयरसफीकी * सुभग शृंगार मुक्ति युवती की ॥
हरणि रोग भव भूरि अमी की * तातमात सब बिधि तुलसी की ॥४॥

सप्तदेवस्तुति ॥

गणेशस्तुति आरती ॥

जय लम्बोदर ईशा । संकट दूर करो तुम मेरो जिमि रवितमखीशा (टेक) बिघन निवारन काज सँवारन तुम सबके सुखदाता । जनरंजन दुखभंजन हो शिव गौरी ताता (१) एकदन्त करि बदन सुहावे मूसे असवारी । ऋद्धि सिद्धि दोउ सहित बिराजे छबि अतुलित भारी (२) इन्द्रादिक सब देवन पूजैं गगनावैं भीरा । तूर्य्य ढोल मिरदंग बजावैं जय जय बलवीरा (३) तुमसम दीनदयालु न कोई बेगि कृपा करियो । रामगङ्ग इक शरण तुम्हारी संकट सब हरियो (४) जय लम्बोदर ईशा ॥

सूर्य्यस्तुति आरती ॥

जय रजनीतमहारी । जड़ चेतन के प्राण अधारा तीनलोक हितकारी । (टेक) नीलवर्ण वरवाजि विशाला रथ के राज रहे । ज्योति स्वरूप अनूप दिवाकर शोभा अमित लहे (१) कानन कुण्डल जगमग छाजै ज्योतिकला चहुँओरा । सुन्दरवदन सदन मुद मंगल मनसिज मन चोरा (२) गणेश महेश करें गुणगाना चन्दन धूपसजैं । अगुरु कपूर सुहावत बाती भेरी बीन बजैं

मदन-दहन ।

सौरभ पल्लव मदन विलोका । भयो कोप कम्पेउ त्रयलोका ॥
तब शिव तीसर नयन उघारा । चितवत काम भयउ जरि छारा ॥

(३) जगउजियारक मोहनिशि घालक प्रकट प्रभाव खरो । रामगङ्गपै कृपाकर स्वामी हियतम नाश करो (४) जय रजनीतमहारी ॥

दुर्गास्तुति आरती ॥

जय जननी सुखदेनी । मङ्गलकरणि अमङ्गलहरणी त्रयताप निसेनी (टेक) शुक्लवर्ण अरुण तन वस्त्र भूषण भूरि सजै । नयन बिशाल लाल सम वारिज मृगमन देखिलजै (१) बेंदीभाल जाल मणिमाला नाक बुलाकलसे । नूपुर धुनि सुनि मुनि मन मोहे धीरज ध्यान नसे (२) सिंहचढ़ी कर गदा विराजै असुर सँहार करे । रक्तबीज सम नीच घनेरे चण में सकल दरे (३) सुरेश महेश अन्त नहिं पावैं महिमा अलख बनी । जगकरणी इक चण में हरणी माया अमित घनी (४) जानु युगल कर जोर करत हूँ बिनती तुमपाहीं । रामगङ्ग की सुधि जनि भूलो निजहिय वर माहीं (५) जय जननी सुखदेनी ॥

शिवस्तुति आरती ॥

जय गिरिजाहितकारी । जटाजूट गल रुण्डन माला गङ्गा शिरधारी (टेक) श्वेतवर्ण तनु भस्म लसत है मृगअम्बरधारी । भूषण भूरि भुजग छवि छाई सहित उमा प्यारी (१) नयन विशाल भाल शशि बालक आनन पांचबने । भानु कोटि सम वदन सुहावन भृकुटी धनुष तने (२) करधर डमरू विषम त्रिशूला वाहन बरद तरे । भूत प्रेत सहिसेन अपारा भयंकर वेष धरे (३) ब्रह्मादिक सुर असुरन नागा अस्तुति वेद करे । ढोलक डमरू डफ धुनि झाँझर जय भव ईस हरे (४) हे जगदीश्वर ईश्वर स्वामी प्रभु तुम अन्तरयामी । रामगङ्ग स्वप्ने जनि भूलेउ अतिमूरुख कामी (५) जय गिरिजाहितकारी ॥

महावीरस्तुति आरती ॥

जय अञ्जनीसुत बीरा । बलप्रताप जग रेख तुम्हारी प्रथमै रणधीरा (टेक) रक्तवर्ण तरुण तनु तेजा. गिरिसम देह लसे । गमन दमन मद चलन खगेशा बलनिधि असुर खसे (१) रवि को फल भल जान्यो ताहि कियो भक्षा । देवन त्राहि करी तब छाँड़्यो वेगिकरी रक्षा (२) लक्ष्मण मूर्छितपरे रणमाहीं

रघुवर शोकभरे। लाय सजीवन जीवन कीन्हों देवन सुमन झरे (३) रावण दुष्ट हरी वैदेही चिन्ता राम भई। लङ्का जार सँभार सुधि सीता रघुवर आन दई (४) बल अतुल तुव बिपुल बड़ाई निजमुख राम कही। रामगङ्ग त्रयताप न बेख्यो तुम्हरी शरण लही (५) जय अञ्जनीसुत वीरा।

आरती श्रीस्वामी श्रीरामचन्द्रजीकी ॥

जय रघुवर धनुधारी। खरसि लखन दलनदलदूषन सन्तन हितकारी (टेक) श्याम शरीर चीरधरपीता भूषण छवि भारी। बाहु बिशाल धनुष कर सोहै सहित सिया प्यारी (१) क्रीट मुकुट कर्णकल कुंडल हार हरण मन बिलसे। चरण चिह्न उर महिसुर राजे मस्तक तिलक लसे (२) सुन्दर वदन-सदन मुद मंगल चितवत चितचोरा। लोचन ललित दलित मद खंजन चाल मराल किशोरा (३) गौतमनारि उधारि हति निशिचर ऋषि की यज्ञ कीन्हों। चाप फोड़ ताड़ बल राजन जनकसुता वर लीन्हों (४) शबरी तारि मारि रण रावण धरणी भार हरा। रामगङ्ग कलिमल को ग्रस्यो तुम्हरी शरण परा (५) जय रघुवर धनुधारी ॥

आरती श्रीकृष्णदेवजीकी ॥

जय गोबर्द्धनधारी। सुरपति गर्व सर्वकरमोचन राखी व्रजसारी (टेक) मोर मुकुट शिर गच कचकारे कुण्डल मनहारी। मोतिनहार चारु बनमाला नूपुर धुनि न्यारी (१) पीत वसन वर बरण तमाला मुरली अधर धरी। गौर वरण तरुण सँग राधे जोरी अमित खरी (२) कंसदुष्ट बहु दुष्ट पठाये महिमा नहिं जानी। ताको मारि पछारि सब असुरन सुखी कियो रजधानी (३) कौरव अनीतिकरी बरजोरी द्रौपदि चीर खसे। भक्ताधीन वसन बहु कीनो उतारत हाथ घसे (४) वेश्या विप्रसम नीच घनेरे छण में तार दियो। रामगङ्ग शिरमौर पतित को काहे राखि लियो (५) जय गोवर्द्धनधारी ॥

इति ॥

श्रीरामचन्द्रचतुर्दशवर्षवनवासतिथिपत्र ॥

विश्वामित्र के साथ श्रीरामचन्द्रजी और लक्ष्मणजी श्रीअयोध्याजी से जाकर ऋषि का यज्ञ सम्पूर्ण करके सहित विश्वामित्र और लक्ष्मणजी के मिथिलापुर में गये वहाँ राजा जनककी यज्ञशाला में धनुर्भङ्ग किया और श्रीजानकीजीने जयमाल श्रीरामचन्द्रजी के गले में डाली तब राजा जनककी आज्ञानुसार दो दूत श्रीअयोध्याजी में दशरथ महाराज के पास जाकर सब वृत्तान्त धनुष तोड़ने और जानकीजी के जयमाल पाने का कह सुनाया ॥

उस दिनतक १५ पंचदश दिन श्रीरघुनाथजी को सहित लक्ष्मण और विश्वामित्र के श्रीअयोध्या से गये व्यतीत हुये थे और श्रीरामचन्द्रजी और जानकीजी का विवाह हिमऋतु अगहनमास शुक्लपक्ष पंचमी तिथि वृश्चिक के सूर्य्य और मीनलग्न में हुआ विवाह के समय १५ वर्ष के श्रीरघुनाथजी और ६ वर्ष की जानकीजी थीं और विवाह के पीछे श्रीअयोध्याजी में श्रीरामचन्द्रजी ने १२ वर्ष निवास करके सहित जानकी और लक्ष्मणजी के वनको पयान किया ॥

निम्नलिखित तिथिपत्र श्रीमद्रामचरित्र का है इसमें वह चरित्र कि जो भगवान् ने चतुर्दश वर्ष वनवास में किये हैं सब दिनोंकी संख्या से लिखे हैं ॥

(१) श्रीराम लक्ष्मण और जानकीजी ने श्रीअयोध्याजी से गमन करके तीनदिन जलमात्र पान किया तब श्रीरामजी की आयु २७ वर्ष और जानकीजी की १८ वर्ष की थी ॥

(२) चतुर्थ दिवस राम लक्ष्मण और जानकीजीने शृङ्गवेरपुर में पहुँचकर फल फूल खाये ॥

(३) पाँचवें दिन राम लक्ष्मण जानकी श्रीगङ्गाजी पार उतरकर भरद्वाज तथा बाल्मीकिजीको मिलकर चित्रकूट पहुँचे और जयन्त का नेत्र भङ्ग किया और वहाँ कुछ दिन निवास किया ॥

(४) राम लक्ष्मण जानकी चित्रकूट से चलकर विराधवध शरभङ्ग सुतीक्ष्ण से मिल अगस्त आज्ञानुसार पञ्चवटी में पहुँचकर १२ वर्ष निवास किया और १३ वर्ष के प्रारम्भ में शूर्पणखा की नाक छीनकर खर दूषण को मारा ॥

(५) माघशुक्ल ८ के दिन श्रीजानकी को मध्याह्नसमय रावण हर लेगया ॥

(६) पाँचवें मास श्रीराम लक्ष्मणजी ने मारीच वधकर श्रीजानकीजी के विरह में जटायु को उद्धारकर कबन्धमार शबरी को सद्गति दे आषाढ़ महीने में सुग्रीव को मिले ॥

(७) ४ मासतक श्रीराम लक्ष्मणजी ने बालि को मारकर सुग्रीव को राज्यदे प्रवर्षण पर्वत पर निवास किया ॥

(८) मार्गशिरकृष्ण ११ को हनुमान् वानरों सहित सीताजी को खोजते २ विवर प्रवेश करके सिन्धु तटपर पहुँचे वहाँ संपाति से सीता की सुधि पाय सिन्धु काँद पार पहुँचे ॥

(९) मार्गशिरकृष्ण १३ को श्रीहनुमान् ने श्रीजानकी को मिल मुद्रिका दे अशोकवन उजारा ॥

(१०) मार्गशिरकृष्ण १४ को हनुमान्जी अक्षयकुमारादि राक्षस मार लङ्कादाह करके सीताजी से चूड़ामणि ले सिन्धु को उतर अपनी सेना में आये ॥

(११) मार्गशिरशुक्ल ६ को हनुमान्जी सेनासहित समुद्रतट से पयानकर पाँच दिन मार्ग में व्यतीत कर किष्किन्धा में पहुँचे ॥

(१२) मार्गशिरशुक्ल ७ को हनुमान्जी ने श्रीरामचन्द्रजी को प्रणामकर चूड़ामणि दे सीता सुधि कह सुनाई श्रीजानकीजी के हरजाने के १० मास पीछे फिर श्रीरामचन्द्रजी ने सुधि पाई ॥

(१३) मार्गशिरशुक्ल ८ को श्रीरामचन्द्रजी ने सेनासहित मध्याह्न समय उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में लङ्का की ओर पयान किया ॥

(१४) मार्गशिर १५ पूर्णमासी को श्रीरामादि सातदिन मार्ग में रहकर समुद्र तटपर पहुँचे ॥

(१५) पौषकृष्ण १ से ३ तक श्रीरामादि सेनाने समुद्रतीर पर निवास किया ॥

(१६) पौषकृष्ण ४ को श्रीविभीषणजी श्रीरामजी की शरण आये ॥

(१७) पौषकृष्ण ५ से ८ तक श्रीरामचन्द्रजी समुद्र के आगे विनय करते रहे ॥

(१८) पौषकृष्ण ९ को विप्ररूपधर सिन्धु श्रीरघुनाथजी की शरण में आया ॥

(१९) पौषकृष्ण १० को सेतु बाँधने को प्रारम्भ किया और १० दश योजन लम्बा तिस दिन बाँधा ॥

(२०) पौषकृष्ण ११ के दिन बीस योजन सेतु बाँधा ॥

(२१) पौषकृष्ण १२ के दिन तीस योजन सेतु बाँधा ॥

(२२) पौषकृष्ण १३ के दिन चालीस योजन सेतु बाँधा सब १०० योजन लम्बा और १० योजन चौड़ा सेतु तय्यार किया ॥

(२३) पौषकृष्ण १४ से पौषशुक्ल २ तक श्रीरघुनाथजी सब सेनासमेत सिन्धुपार उतरे इस सेना में अठारह पद्म यूथप थे ॥

(२४) पौषशुक्ल ३ से १० तक श्रीरघुनाथजी ने लङ्का को घेर लिया ॥

(२५) पौषशुक्ल ११ को शुक और सारण मन्त्री रावण के श्रीरघुनाथजी की सेना देखने आये ॥

(२६) पौषशुक्ल १२ को श्रीरघुनाथजी ने अपनी सेना की चार अनी किया और इस दिन श्रीरघुनाथजी ने एक बाण से रावण के मुकुट और छत्र मन्दोदरी के कर्णभूषण पृथ्वी पर गिरादिये ॥

(२७) पौषशुक्ल १३ से १५ पूर्णमासी तक रावण की सेना सन्नद्ध हुई ॥

(२८) माघकृष्ण १ अंगदजी लङ्कामें जाय रावण को बहुत समुझाय फिर रघुनाथजी के पास आये ॥

(२९) माघकृष्ण २ से ९ तक श्रीराम रावण दोनों की सेना का महायुद्ध हुआ और मेघनाद ने नागफाँस डाली ॥

(३०) माघकृष्ण १० को गरुड़ नागफाँस काट निज लोक को गये ॥

(३१) माघकृष्ण ११ से १२ तक बहुत युद्ध होकर धूम्रलोचनदैत्य मारागया ॥

(३२) माघकृष्ण १३ से अमावस्या तक नीलादि दैत्य मारे गये ॥

(३३) माघशुक्ल १ से ४ तक रावण वानरों से लड़कर लंका को चलागया ॥

(३४) माघशुक्ल ५ से ८ तक रावण ने अपने भ्राता कुम्भकर्ण को जगाया ॥

(३५) माघशुक्ल ९ से १४ तक कुम्भकर्ण श्रीरघुनाथजी से लड़ता रहा और अन्त को मारागया ॥

(३६) माघशुक्ल १५ को रावण कुम्भकर्ण के मारेजाने से शोकान्वित हो नहीं लड़ा ॥

(३७) फाल्गुनकृष्ण १ से ५ तक श्रीरामचन्द्रजी ने नारान्तकादि दैत्योंका वध किया ॥

(३८) फाल्गुनकृष्ण ५ से ७ तक बहुत दैत्य रावण के श्रीरघुनाथजी के हाथ से मारे गये ॥

(३९) फाल्गुनकृष्ण ८ से १३ तक श्रीरघुनाथजी के हाथ से कुम्भ निकुम्भ दैत्य मारेगये ॥

(४०) फाल्गुनकृष्ण १४ से फाल्गुनशुक्ल २ तक जुमक दैत्य दैत्यों की सेनासहित श्रीरामचन्द्रजी के हाथ से कालवश हुआ ॥

(४१) फाल्गुनशुक्ल ३ से १३ तक श्रीलक्ष्मणजी ने मेघनाद को वध किया ॥

(४२) फाल्गुनकृष्ण १४ को रावण ने पुत्र के शोक से युद्ध नहीं किया ॥

(४३) फाल्गुनशुक्ल १५ पूर्णमासी को रावण समरभूमि में लड़ने को आया ॥

(४४) चैत्रकृष्ण १ से ८ तक रावण ने श्रीरघुनाथजी से बहुत युद्ध किया और रावण के सब सेनापति मृत्यु को प्राप्त हुये ॥

(४५) चैत्रकृष्ण ९ को श्रीलक्ष्मणजी रावण के हाथ से शक्ति लगने से मूर्च्छित हो गये और इसीदिन श्रीहनुमान्‌जी के सजीवन लाने से श्रीलक्ष्मणजी सचेत हुये ।

(४६) चैत्रकृष्ण १० को रावण और श्रीरघुनाथजी का बहुत युद्ध हुआ ॥

(४७) चैत्रकृष्ण ११ को श्रीरघुनाथजी के वास्ते इन्द्र रथ लाये ॥